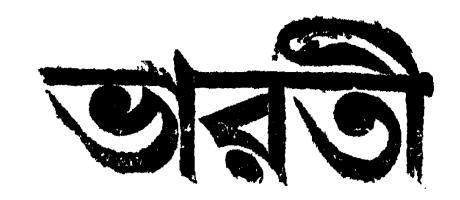
"वर्षे अर्ने शाप्ति।" रविषे रविषे वर्षे भप्ति, अन्य अस आश्रुन।"



स्था किन स्मनाध (DMC 2-69)



সভিত্ৰ মাসিক পত্ৰিকা



সম্পাদক—

শ্রীমণিলাল গঙ্গোপাধ্যায় শ্রীক্রমোহন মুখোপাধ্যায়

(५०२१ कार्डिक श्रेटिं रेजि)

প্রতি সংখ্যার মূল্য ।/০] ভারতী কার্য্যালয়, [বার্ষিক মূল্য ৩০/০ ২২, স্থবিদা ব্লিট, কলিকাভা।

১৩২৭ সালের ভারতার বর্ণানুক্রমিক সূচী (কার্ত্তিক—চৈত্র)

| বিষয় | • | লেখক | | পৃষ্ঠা |
|------------------------------|----------|---------------------------------|-----------------|--------------|
| कामस कीवन (नांविका) | ••• | শ্ৰীস্বেশচন্ত্ৰ বন্দ্যোপাধ্যায় | | 784 |
| অপরাধী (গর) | ••• | শ্রীক্রমোহন মুখোপাধ্যায় | বি-এল | 6)6 |
| অব্ভার (উপ্রাস) | ••• | শ্রীজ্যোতিরিজ্ঞনাথ ঠাকুব ৫ | (b, 600) | , 950, |
| ••• | ••• | • | 16¢, bu | १, ३५१ |
| অভীত (বিঘ্ডা) . | ••• | ্রাকু মুদরঞ্জন মল্লিক বি-এ | ••• | 992 |
| আদর্শের বিড়ম্বনা | ••• | শ্রীপ্রবেশ্ব ট্টোপাধ্যায় বি-এ | | 469 |
| আথেরী (কবিতা) | •• | গ্রীসত্যেন্ত্র নাথ দত্ত | • • • | 38€ |
| षा(गांहन) | ••• | শ্রীযোগেশচক্র ভট্টাচার্য্য | | ५ ३ २ |
| আলোর পাথার (কবিজা) | ¢ • | শ্ৰীসত্যেন্দ্ৰনাথ দৃত্ত | ••• | 689 |
| এ ধরণী (কবিডা) | ••• | শ্ৰীমতা প্ৰিয়ম্বদা দেবী বি-এ | ••• | 4 23 |
| একটা পুয়াণ গীত | ••• | | | 906 |
| কলপের প্রসার (কবিতা) | ••• | ঐজ্যোতিরিজনাথ. বন্যোপা | খ্যা স্থ | b e 3 |
| ক্ষিক্তপ সুকুন্দরামের ধর্মমত | ••• | की ठाक ठक वत्ना भाषायं वि- | Ā | 6 49 |
| ক্ৰিতার কথা | ••• | শ্ৰীজীবনক্ষ সরকার বিতার | | 909 |
| কবিৰয় দেখ্যজ্ঞনাথ (সচিত্ৰ) | • • | শ্রীমোহিতলাল মজুমদার বি | -এ | 968 |
| কোনো নেতার প্রতি (কবিত | | শ্ৰীসভোজনাপ দত্ত | ••• | 452 |
| গান ও প্রাণ (কবিতা) | ••• | শ্রীকৃষীরকুমার চৌধুরী বি-এ | 3 ••• | P#10 |
| খুমতী নদী (কবিতা) | ••• | শ্ৰীসভোক্ৰনাথ দন্ত | • • • | 47 C |
| চক্র (উপস্থাস) ' | ••• | শ্রীমতী অমুক্রপা দেবী | £84, 6 | 88, 303 |
| 547 | | | | |
| অভিনেতার সংগ্রহ | ••• | শ্ৰীগোধনাথ সাহা | ••• | 969 |
| অপ্টোকে। (সচিত্র) | ••• | শ্ৰীবামাপদ বস্থ | ••• | ₩•• |
| 'ইকেবানা' (সচিত্ৰ) | | শ্রীমুরেশচন্ত্র বন্দ্যোপাধ্যা | A ••• | 4.> |
| একশো-বচ্ছরের বব (স | চিত্ৰ) | শ্রীপ্রগাদ রাম | y p 4 | 496 |
| চিরযৌৰনের প্রথম ধাপ | (সচিত্র) | ঠ | ••• | 918 |
| ছায়ার কায়াগাড (সচি | a) | & | ••• | 184 |
| | | | | |

| বিষয় | | লেখ ক | | পৃষ্ঠ। |
|------------------------------------|------------|----------------------------|-----------|----------------|
| 53 | | | | • |
| দাতের ব্যামো | ••• | শ্রীপ্রসাদ রায় | ••• | 96. |
| দার্নসিও (সচিত্র ০) | • • • | . ক্র | • • • | 26. |
| নরওয়ের ভাঙ্কর (সচিত্র) | | ঠ | • • • | b9 • |
| ুন্তন 'গম্ভীর বেদন' | ••• | A | ** * | 987 |
| भन्नत्मादक दिनिएकान | ••• | ্র | ; | 45 |
| পরীর কোটো (সচিত্র) | ••• | ঠ | *** | 455 |
| বেতার টেলিগ্রাফে ফটোতোল | 1 | (3) | •••• | 965 |
| ভাবুকভার ক্ষমতা (সচিত্র) | | ঠ | ••• | ۶×۹ |
| मण् कि काष इस ? | • • • | | ••• | 400 |
| मरनम यम् | ••• | ् वीनरभक्त (मव | ••• | (4) |
| মনের বদতি কোথায় ? | • • • | শ্ৰীপ্ৰদাদ বায় | • • • | 94. |
| মানুষ-থেকো গাছ (সচিত্র) | ••• | ঐ | ••• | 965 |
| ম্যাপ আঁকা | ••• | (a) | • • • | e 2/2 |
| मूथ-मर्भन | • • • | • ञीनरत्रसः (११ | ••• | 695 |
| ক্ষৰ-লেখক সোলোগাব | ••• | শীহেশেক্স সার রাম | ••• | 44 |
| লেথার সময় | ••• | क्रीव्यगाम त्राप्त | ••• | 643 |
| ষ্টিভেনসনের প্রিয়ত্যা (সচিত্র | i) | ঠ | ••• | b-63 |
| मव-८ हा श्रात्या थे (महिल् | a) | ঠ | • • • | b 28 |
| সভ্য অসভ্যতা (সচিত্ৰ) | ••• | ঐ | | 242 |
| (मकारनम इंडि मृश्र (महिख) | ••• | B | ••• | 869 |
| (मकालात्र मानव (महिज) | ••• | ঠ | | ३ ४६ |
| স্থিটস্লার | ••• | ঠ | ••• | bec |
| शम्बून् (मिळ) | ••• | ঞ | ••• | b 26 |
| হাড়েব 'কলম' (সচিত্ৰ) | • • • | (2) | ••• | 299 |
| ठाँदमत्र व्यादनात्र (कविडा) | ••• | শ্ৰিকবণধন চট্টোপাধ্যায় | এম-এ,বি-এ | 1 4 649 |
| চুড়ির আওয়াল (কবিতা) | • • • | শ্ৰীমোহিতগাল মজুমধার | বি-এ | ace |
| চোর (গরা) | ••• | শ্ৰীৰবিশ দন্ত | ••• | 661 |
| ছোট মা (গল) | ••• | শীরবীজনাথ বন্যোপাধ | াায় বি-এ | 999 |
| ব্দহর থাওয়া (গল) | ••• | শ্ৰীবিমলচন্ত্ৰ চক্ৰবৰ্ত্তী | ••• | 308 |
| वानिविचा निगानिन | ••• | विद्यामीखनाथ नमामान | বি-এ | 110 |

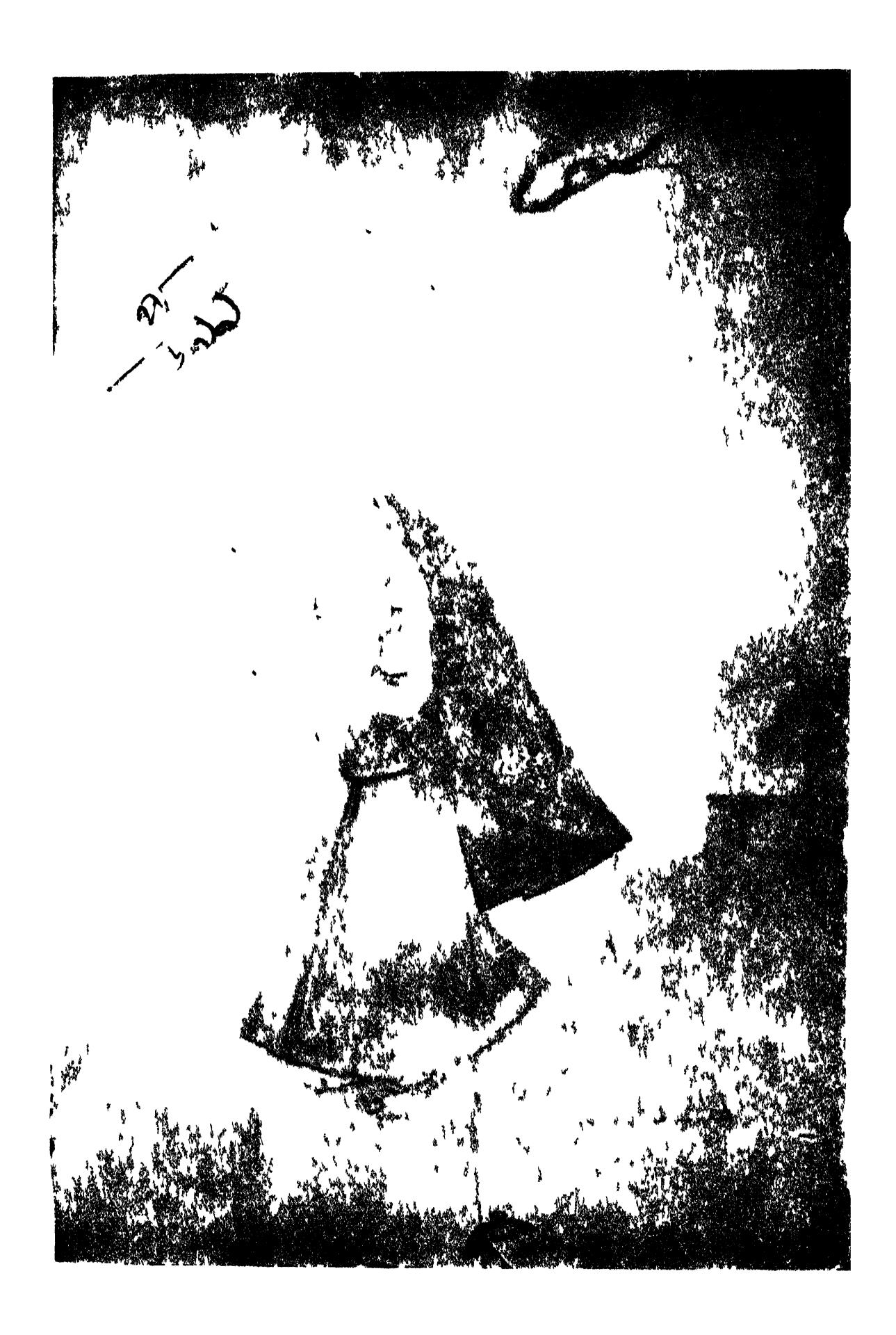
| বিষয় | | \ ে থক | পৃষ্ঠা |
|-----------------------------|-------|--------------------------------------|---------------------|
| জেশু-সভা | •• | শ্ৰী অবনী ক্ৰনাথ ঠাকু র | @ & @ |
| ভকাৎ (গল্প | ••• | শ্রীবিষণচন্দ্র চক্রবর্ত্তী ••• | १०२ |
| ভানপুরা | • • • | শ্ৰীআগুতোষ ঘোষ,বি এল | ৬৪৯ |
| ভাবকা ও ফুল (কবিভা) | • • • | শ্রীমোহিতলাল মজুমদার বি-এ | ४७ २ |
| ত্ৰয়ী (কৰিতা) | • • • | শ্রীপ্যাবীমোহন সেমগুপ্ত •• | 242 |
| দভি (কবিঙাু) | • • • | শ্রীকিবণধন চট্টোপাধ্যায় এম এ,বি- | এল ৭১৫ |
| নান্তিকেব গ ৱ | • • | শ্রীভূপেন্দচন্দ্র চক্রবর্ত্তী বি-এ | 965 |
| পতিতা (কবিঙা) | • • • | শ্রীহেমেন্দ্রলাল বায় •• | ৬ ৯ ৬ |
| পথের গান (কবিতা) | •• | শ্ৰজ্যোতিবিক্তনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় | 6 58 |
| পাঁচটা টাকা (গল) | - 3./ | শ্ৰীমতী নীহাববালা দেবী | ৯ ৪৯ |
| পুরুরবা (কবিতা) | L. | ্শ্ৰীৰোহিতলাল মুজুমদাব বি-এ | 9>> |
| পূর্বরাগ ও অমুরাগ | ••• | শ্ৰীনিনিকান্ত গুপ্ত ··· | 580 |
| পোষের অবেশায় (কবিতা) | ••• | শ্ৰীজ্যোতিবিজ্ঞনাপ বন্দ্যোপাধ্যায় | 950 |
| প্ৰব্ৰদ্ধন ও উপনিবেশ স্থাপন | ••• | শ্ৰীকালীপদ মূত্ৰ এম-এ, বি এল | b 79 |
| প্রশ্নোতর (কবিডা) | • • • | শ্রীদত্যেন্দ্রনাথ দত্ত · · · | 5 • 8 |
| প্রিনার উদ্দেশে (গল্প) | ••• | শ্ৰীপ্ৰধ্বাধ চট্টোপাধাায় বি-এ | ¢ o |
| বাহবা বেড়ে! (কবিতা) | ••• | শ্রীকরণুধন চট্টোপাধ্যায় এম এ,বি | -এশ ৯৭৪ |
| বারোরারি উপস্থাস | ••• | শ্ৰীঅবনীক্ৰনাথ ঠাকুর | (२৯ |
| 5 | ••• | শ্ৰীশবৎচন্ত্ৰ চট্টোপাধ্যায় | 69 0 |
| | ••• | শ্রীহেমেন্ত্রকুমাব রায় | 904 |
| ্র | ••• | শ্ৰীহ্নবেন্দ্ৰনাথ গঙ্গোপাখ্যায় বি-এ | 400 |
| ঠ | • • • | শ্রীসত্যেন্ত্রাথ দত্ত ••• | 69. |
| & | • • | শ্ৰীপ্ৰমথ চৌধুরী বার-স্যাট-ল | 694 |
| বৈহ্যতিক বিশ্লেষণ (সচিত্ৰ) | ••• | শ্ৰীকাশিদাস ভট্টাচাৰ্য্য | २६ ३ |
| ঙাৰান্ন উৎপত্তিতত্ব | • • • | শ্ৰীশীতলচক্ত চক্ৰবন্তী এম-এ | ३ २७ |
| ভোমরাব গান (কবিতা) | ••• | শ্রীনবকুমার কবিরত্ব | • 63 |
| मज्ञन-वाहरनत कथा | | শ্রীপ্রফুলকুমার সরকার বি-এল | ಅ್ಥಲ |
| মজল মঠ (গল্প) | ** | শ্ৰীপ্ৰেমান্ত্ৰ আতৰী | 69 6 |
| মাভূহীনা (গল) | ••• | শ্রীমতা ইন্দিরা দেবী ••• | 926 |
| ৰদি সে (কবিতা) | ••• | শ্ৰীকিরণধন চট্টোপাধ্যায় এম-এ,বি | এব ৮•৫ |
| ुद्वोयदमत किं (शन) | ••• | শ্ৰীক্ষীরকুমার চৌধুরী বি-এ | 699 |
| | | | |

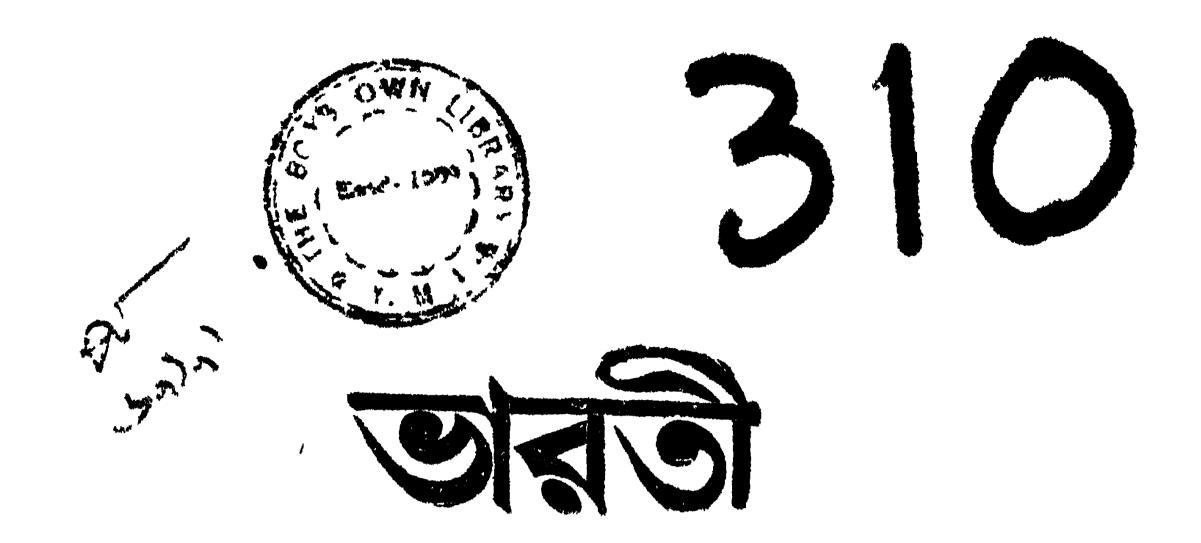
| বিষয় ় | | লেখক পৃষ্ঠা | |
|--------------------------------|-------|--|----------|
| রস ও নিরস (সচিত্র) | ••• | শ্রীঅবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর ৭২৩ | 5 |
| লাজ (কবিতা) | ••• | শীহ্রধীরকুমার চৌধুরী বি-এ, ১৬৮ | |
| েথার ইতিহাস | ••• | শ্রীভূপেক্সচন্ত্র চক্রবর্ত্তী বি-এ ৭৮২ | |
| শ্রীক্বঞ্চ কীর্ত্তনের মাহাদানী | ** (| শ্রীস্থরেক্তনাথ দেন এম-এ,পি,স্বার,এস, ৫৩ | ' |
| সর্থু জোর (কবিভা) | ••• | ী ভীজ্যোতিরি জ নাথ বন্যোপাধ্যায় ৬৮৫ | |
| সর্যু (কবিভা) | ••• | শ্রীসভ্যেম্রনাথ দত্ত | |
| मक्ना | | <i>*************************************</i> | |
| বর্ত্তমানের সমস্তা | ••• | শ্ৰীনলিনীকান্ত গুপ্ত ৯৮৭ | |
| বাঙ্গালী কি আগ্য ? | • • | ্ঞীনরেশচন্ত্র সেনগুপ্ত ৬৮১ | |
| বিলাতের পত্র | • • • | ত্ত্বীতিকুমার চট্টোপাধাায় এম-এ ৮১৭ | 4ic) |
| নিলাত্যাত্রীর পত্র | ••• | শ্রীক্রনাথ ঠাকুর ৬৭৮, ৭৫৩ | |
| শिक्षात्र माधना | ••• | শ্রীস্থরেশচন্দ্র চক্রবন্তী ৬০৪ | |
| मगाटना हना | ••• | শ্রীসতাত্রত শর্মা ৬২৩, ৭৬২, ৯০৬, ৯৯০ | |
| (A) | | শ্রীসোরীক্রমোহন মুখোপাধ্যায় বি-এল ৮৩০ | |
| সম্ভোগ-ভত্ত্ | • • • | बियजीसनाथ बाब ७৯৯ | |
| সাদেকা (কবিভা) | . • • | क्रीकाष्ट्रमणा चिक्र | |
| সিমলার কপা (সচিত্র) | ••• | AND THE STATE OF T | |
| সোনার গৌগঙ্গ (কবিতা) | ••• | ভারত প্রথা পিংহাব-এস্, সি ৬৬২ শ্রীকুমুদরঞ্জন মল্লিক বি-এ ৭৪৫ | |
| স্বলিপি | • • | Mrzestia Camptol from | |
| স্বর্গীয় হরেশচন্দ্র সমাজপতি | • • • | 28) 7 5 7 31 22 3 4 32 3 3 4 32 3 4 3 4 | |
| হিন্দুস্থান (কবিতা) | ••• | শ্রীসভ্যেন্দ্রনাথ দন্ত ৮৮৯ | |

•

চিত্ৰ সূচী

| অন্ত দিয়ে কোঁচকানো স্বকটেনে ং | का कर | ८ ४८ व | প্রেহাত্মার মুথে সংশ্রম ecto | plasm | 986 |
|----------------------------------|-----------|----------------|--------------------------------|------------|-------------|
| অন্বের ছাপানো বইয়েব গান-শো | | 90> | ফুলগাছেব কেয়ারি | | ৬০৩ |
| আটবিদ ও বেঁটে যক | ••• | P5> | ভাষান্ (বছবৰ্ণ) | | |
| আঁকা গয়না ্ | ••• | ३४ ६ | শ্ৰীযুক্ত অবনীক্ষনাথ ঠাকু | র অধিত | ৫ २१ |
| আালিস ও পরীব দল | | ४२० | বৰ আৰ বউ | ••• | 696 |
| ইগুয়ানোডন ও আদি মানব | | ३ ४६ | বুন্দিনী মা | ••• | ৮ 95 |
| ক্রক্স্ ও কেটিকিংশ্বের প্রেভান্স | ••• | 9897 | "বল দেখি আমাব গায়ে কি | ? | 46 |
| গবিলা ও মাত্র্য | | | নাস্থী (নভ্ৰৰ্ণ) | ••• | 4 22 |
| ছায়াব কায়াল'ভ | / | 986 | মান্ত্ৰ ^হ থেকো গাছ, | ••• | १७२ |
| জ্যোৎসা রাণে (বহুবর্ণ) | | | মান্তব্যুব পিঠে গরুর হাড় | ••• | عود |
| শ্ৰীযুক্ত যতীক্ৰকুমান সেন অধি | 3 | pse | যক্ষ মন্দির ও বানব | • • • | ৬৬৬ |
| দারুনসিও | ••• | るりる | यक्तमन्ति (य शुर्हार्फ महेनि | ককাব দৃশ্য | 669 |
| ত্হাজাৰ বৎসরের পুবানো মান্ত্রের | भृद्धि | 969 | বণ-বঙ্গিণী | ••• | ৮ 9> |
| দেবেজনাথ সেন | ••• | 990 | সন্ধাব পাণী (বছবর্ণ) | | |
| নিভূত আলাপ (বলবৰ্ণ) | | | धीयुक मुक्न हस (म चाइ | 3 | 274 |
| প্রাণীন চিন হইতে | • • | ७२० | বাত্তি | ••• | ৮१७ |
| सूर शम्ब्न् | | ५२७ | ष्टिनमन | ••• | ৮৬৯ |
| পশ্পির-একটি পুরানো বাডীর ভিত | রের দৃহ | 1) (78 | সরায় ধরা | ••• | 90 > |
| পশ্পিব একটি রাজপণের ধ্বংসাব | শেধ | ৬৫১ | मन-८हरत्र भूरत्रारमा भर्छ | *** | ५२ ६ |
| পশ্পির একটি পুরাতন থামওয়ালা | | | সিম্লা বাজায় ও গিজা | •• | 666 |
| প্রাসাদের ধ্বংসাবশেষ | | ৫৯ ٩ | নিভিং | ••• | ۴۹ ۶ |
| পম্পির একটি প্রান্সনৈর বিস্তৃত ব | ** | 460 | द्यनार भृष्ठि | ••• | 9 -4 |
| পৃষ্ঠে পটে চিত্র-পঙ্গ | • • • | ० रह | দেকেটাবিয়াট বিভিং | ••• | 466 |





88শ বর্ষ]

কার্ত্তিক, ১৩২৭

[१य मः था

বারোয়ারি উপত্যাস

মশায়কে একটা ভার কোরে উত্তরের অপেকায় त्रवेदना ; कि ह देशज-भनात्र ज्थन यात्रिन मिहि-वरक निष्य कनका जात्र तडना श्राह्म, कार्यश সভাশেব ভার বিনা-উত্তরে কালিগায়ে যেমন গিমেছিল, তেমনি ফিরে এল। কালিগাঁরের পাচ ক্রোশ দূরে বেলভলী-ষ্টেশনের পোষ্ট-মাষ্টার সতীশের তারের জবাব লিখলেন-"এডেमी नहें का डेख।"

টেলিগ্রাক্ষের তারের মতো রুলটানা নিম্ফল গোगाणि कांगकों हाट कांद्र मडीमक **७क्ट्या-मृद्ध जामट** एएएथरे इनीमणि व्यापन, थवत्र थात्राथ। जिनि जात्र कारना कथा ना खिंदित्र गडीभटक रहान--- वांचा, जामि जक-वांत्र (मर्ग्य वारवा, (कारनांशिक्त बामारक त्मवादन भांकारक भाविम् ?"

गठीय थानिक (छद्य व्हान-प्राचि।

দারাগঞ্জের সতীশবাব্র জীর অস্থ; দেখতে তুর্গামণির প্রামর্শ-মতো সতীশ মৈত্র- তাঁর মা কলকাতার বাচ্ছেন; তুমি উচ্চের সজে গেলে বেলভলিতে ভাঁরা ভোমার নামিরে পান্ধি চড়িমে দিতে পারেন। কিন্তু তুমি **(मृद्य यादि कि कद्राक क्र अव्यादि एक) दिया** একরকম-"

> ত্র্গামণি সভীপের কথার বাধা দিয়ে বোলে উঠলেন—"ना ना, जामात्र ना शिल छलरव ना। चात-এकि ভালো মেরে দেবে তোর आवात्र विद्य निष्ठ इत्त।"

क्यंगात्र छुन्। य त्रिटिय दंबनामि ठिठिए। भा ख्या অবধি সভাশের মাথার সন্ন্যাস-কর্মার এ ১টা প্লান ক্রমাগত ঘুৰছিল; এবং এই প্লানটা निद्य मि जांत्र अक्ष्मिय जांचानन जांनीकोर সঙ্গেভ ইতিমধ্যে ত্ৰ-একবার খুব গন্ধীরভাবে আলোচনা কোরে একরকম সংসার ভ্যাপ করাই স্থির করেছে; কিন্তু আৰু হঠাৎ ভার মা ভাকে व्यात-এक बात्र मः गांद्रत काम-करम दक्षमान

চেষ্টার অভিছন জানতে পেরে সভীশ বিষম काविक राया क्रीमिनिक किहू जात्र ना वाल- वनल, खक्र की यूप्य-कात्र क्रे हिला मठील त রোদে একটা ভাঙা ছাতা-মাথায় বেরিয়ে अक्रा ।

গোমতী नमौत्र धारत्रहे मिक्ति এक है। ट्याटिं।-খাটো ইমারতে সতীশের গুরুজা গুরু-মাতার मद्भ व्याथका दौर्ध व्यत्नक खिन वाढानी के किन चात्र क्यानि ८६ गात्र अर्थ वाग রোদে তেতে-পুডে-क्रवरहन । তুপুরের मठोभ रमधारन हासित्र। छक्रको उथन चाहा-রের পর মুগচর্মের আসনে আধ-বসা আধ-শোরা অবস্থার ভাগবভের পুঁথিকে বালিশ নিত্য-নৈমিত্তিক शादन हिल्लन; कारकरे मछौनरक वार्रे व जार्थका कर्रे ह्ट्या ।

আৰ্ডার বারাপ্তার সামনেই গোমতী নদী মস্ত একটা বাঁক টেনে চলে গেছে; তার ওপাবে ध्य मार्ठ ; मिरे मार्फ भाषा-कालक द्यांशा वाल-किन्छ व्यामि य छ र समञ्जात मरशा গোক শুকনো ঘাসপুঁজে-পুঁজে চোরে বেড়াচেছ; - পড়লুম ! এদিকে মাতৃ-আজ্ঞা—বিয়ে করতে; --- अहे हिविछ। मिथएज-मिथएक वाश्मान विक्रो গওগ্রামের ধর কল্পার গোটা-কতক দিন সতী-भित्र मरनत्र मरशा चाक अमन न्मेहे हरत काना-পোনা করতে লাগলো ধে এক-সময়ে ভার সন্ন্যাসের প্লান গোমতীর লোভ ধােরে কভদূরে **८७८म (शम जात्र किमानाई (नहे। ह्या** चरत्रत्र मरशा त्यां हो शंगात्र अक्हो ख्वात्र अत्म हम्दर-উঠে সতीन व्यत्न, अक्को (करशहन। म बाख-बाख हाना बात क्रिन विदेत (त्राचं चात्रत्र माधा श्रीत्म कत्राम। ज्यन বেলা প্রায় জিনটে।

. दूत (बरक अक्नेबीरक छिन् (कारत अक्षे।

প্রণাম দিয়ে মাটির উপরে সতীশ সোজা হয়ে

মতীশ হাতহটো থ'নিকটা জোড় কোরে, थानिक है। मूर्छ। कारत छेनान ऋत्त वरत — "वर्ष বিপদ স্বামীজী! মা আবার আমার বিবাহ **प्रवात करण (मर्म हरमह्म — (मर्म एम्थर्ड ।"**

श्वक "हाँ!" (वाटन दक्वन এक है। नियान ক্ষেত্ৰই আসন ছেড়ে ওঠবাব উপক্ৰম করছেন বৈথে সতীশ একেবাবে তাঁর পা জড়িয়ে বলে—"আমার এখন কি উপায় ঠাকুর ?"

গুরু আকাশের দিকে হুটো ঝাঁকড়া ভুরু थूव-थानिक है। जूरण वर्ष्णन—"वाशु, मश्मात्र **गात्राग्रा! (मर्शान व्यानकात्र व्यञ्ड (नहे, व्याना**ख অত্যন্ত। আমি ত বলি তুমি সোজা বেরিয়ে পড; আর দেবি কোরো না।"

সতীশ মুথটা অত্যস্ত কাচুমাচু কোরে ওপিকে প্রভু বলছেন, সংসার ছাড়তে!"

গুরু একটু গন্তীর হয়ে বল্লেন—"ভাহলে মাতৃ-আজ্ঞাই পালন কর। মুক্তির আশা (हर्ष (छड़े।"

बर्ट 'हिए (छक्ष' क्षांटक्ट खक्रत वाढांट्न त्राश এक देशनि विशिक् मिस्त्र शिन। मछीन আরো কাচুমাচু হয়ে বলে—"ভা কি হয় ? আমি সংসার না করাই তোঁ স্থির করেছি TAR-"

अक्षी मख এक है। हो है जूरण कुफि मिर्स रहान-"७१ किन्नरे राला मर्कनारमंत्र मूल! এইটুকু থাকে বোলে সাধন কোরেও তিন

অন্মের পূর্বে মুক্তিলাভ করতে কাউকে বড লোটা-হাতে উপস্থিত হলেন। **कि हो (मश्जूम ना ।**"

সতীশ অবাক হয়ে বল্লে—"বলেন কি ! जिन **जन्म क**र्छात्र नाथन किराद जिल् ?" •

"जिन्छि कम्र जानांक गांश (मथिছ।"

সভীশ নিশাস ফেলে বলে—"তাহলে আমার তো কোনো আশাই নেই দেখছি! তিনের উপবে তিন ক্ষয়েও আমার 'কিন্তু' त्वांटि कि ना जत्कर।"

থুব গভীর হয়ে বঙ্লেন— "গুরুতে ভক্তি-নিষ্ঠা বেখে, তাঁর আদেশ পালন भारत ।"

সভাশ অভ্যস্ত কভির স্বরে বল্লে—"মনে (य 'किन्द्र' जाभना जाभनि - ६८ठं! ना इट्ल धीत्रानम (इटम वरक्रन-"जात्र जामि एकि कब्रिहि।

व्यापानम खर्थार्जन- "कि विवरम् राज्यान किछ राष्ट्र छनि ?"

मिं दोर्टिक हिन्दिन क्यानिक श्री विवास करते विवास करते ।" 'किन्द' त्रात्रहि। नर्कश्रीनै—श्टब्ह जागात्र জীর চরিত্রসম্বন্ধে, ওই বেনামি চিঠিটাব উপরে। ভার পর ছিতীয়—সংসার করা, কি नय ? निर्फान वारम यां खत्रां, कि वां मात्र वरम সাধন করা ? সবার চেরে শক্ত কিছটা रुष्क् ठाकवि ८६८७ मार्क जनाशांत मात्रा, ध्वर कमनाटक एइएए निरम् भन्ना कि ना ?"

मजीन स्मारम टिटल-शूरङ এमেছिन, आत শুক্ত ছিলেন ঠাণ্ডা খন্নধানিতে খুমিরে; কালেই শ্বক্ষ অভি কোমল হুরে ডাকলেন—"সুধীর, यांचा, এक्टिक এन एका।" श्रिक्त्री-कानशानी-भन्ना त्मफा-माथा थोन्नामक याचाकी अक्षेत्र भीनामक अक्षेत्र दश्य---"यि ठाक्तिरक

गडीमटक दिशास वन्ति—"वावा स्थीत्र, अरक करू कग-छेग थाहेरत ठांखा कारत **जान**; আমি ভতকণ হাত-মুধগুলো ধুয়ে আসি।"

সতীশ গুরুজীর ধড়ম-জোড়াটা এগিছে मिर्ग जिनि थे**डा**म्-थेडाम् रकात्त्र अव्यत्तत्र मिर् हाल (श्रांत्र । अक्टी वानत्र चक्रमत्र मार्क चूम ভেঙে শুরুজীর বৈকালি-ভোগের প্রসাদ কণার लाटक यून् कारत हारमत उन्दर्भ नाक्रिय भएला।

সতীশ নিখাস ফেলে ধীরানন্দের দিকে कारत हाल, अक कारबारे मुक्ति भावता (यटक हारत वन्ति—"कामात जारे, मुक्ति मिरे! গুক্ন বল্লেন, অন্তত তিন জন্ম ফেরাফি'র করতে र्द्य।"

আপনার আদেশ তো আমি ষ্ট্রায়থ পালন এমন ওযুধ বাৎলে দিই যাতে এক-ক্ষেই মুক্তি, তো কি দিবি ?"

> সতীশ কাতর হয়ে বলে—"আমার আর कि चाट्ह ? बग्र-बग्र ट्वांत्र टक्नां-ट्यांनाव

धोत्रानम गर्छोद्रभन्न भित्र ठानएए यस-"बादि এक बदग्रे भृष्ठि (श्री एक) बन्ने, जावात जन्म जारम (कमन कारत ? बुन्धावरम **हल या ; मिथारन अयुत्र वानव अव अव-कर्ण** मुक्तिगां कंत्रह (मथर वे भावि।"

সতীশ গম্ভীরভাবে বল্লে—"কিম শুরু মে वरनन कामारक हिमानम शिरम निकान वाम कब्रटा जाव्हा जाहे, टाव कि मदन हम ? कमनाटक (ছড়ে, माटक (ছড়ে, এখন यनि চলে यारे, ভবে তাদের উপর অবিচার করা रूरव ना ?"

बारणवादत देखका निष्म भागान, ভবেই অবিচার হবে; না হলে 'সিকৃ লিভ্' নিয়ে বড-বড় দাড়িওয়ালা নাজির আর কাজিরা ঠাণ্ডা হয়েও আসতে পাববি।"

"ভোর কথাতেই রাজি। আজ চুটির দর্থান্ড শব্দ কোরে আর ঝিন্-ঝিন্ ঘুঙুর বাজিয়ে

"बहेपाटन बटन कव्। वानाम शिल **कावा**ने ममछ। 'किस' कर्राज भारत। हम अथन किছ थानि।"

সতীপ মাধা দীচু কোরে ভাষতে-ভাষতে পোরিয়ে একটা পোড়ো বাগানের বিভকির शास्त्र स्थोरभन्न बरन शिरम हकरना।

একবার বিষে করতেই সতাশের আপত্তি क्षिण ; दक्ष्यण क्रमणांत्र रम्था भाउत्रा गिर्मिह्न ৰোলেই সেবারে তুর্নামণি সতীশকে বাঁধতে ' পেরেছিলেন। বাধন এক টুথানি আল্গাহতেই मछोटनत्र देवज्ञाना-८ज्ञानि। व्याचात्र ८४था निरत्न हरू এবং সাত্মারাম স্বামী ও জী তুজনেই সতীশের मर्जार्थमीन कामरे उत्ह जूल गाम्बन ; कार्यह দিতীয় বার বিয়েতে সতীশ ঘাড় পাতবে না, শুর্গামণি বেশ জানতেন; কিন্তু তবু লক্ষোমেয় यानाष्ट्रीत यदन ना त्थरक, क्यानी मश्दत्र कित्त्र লেলে ভিনি যে একটা-কিছু উপায় করতে भारत्यम, रमहा छात्र अविधाम। आत्र रमहे बारक्षरे प्रतीयनि मजीत्मत्र श्रम-वाष्ट्रि व्यवक दुक्तांत्र चारणकात्र ना त्थरक निरक्षत्र काशक्-क्षांभक्ष बाक्ष-त्येष्ट्रेया शाक्षांटक वरम श्वात्मन ।

সন্ধা হয়ে এল। কাছারির ফেরভা দিনকভক গা-ঢাকা হোলে এই নানা হুর্ভাবনা আল্পাকার জোববা আর মোড়াসা মাথার সরু (थरक मुक्ति क्ला भाविह, ब्लाय-এक ट्रे माथांछ। शिनिहान मरधा निर्व्वय-निर्व्वय शतीवथानाय . ্ ফিরে আসছে। একাগাড়িগুলো ঝাকানি সভীশ উৎসাহের সঙ্গে বোলে উঠলো--- দিভে-দিতে পাথবের রাস্তায় থট্-থট্ থটাস্ ৰিলে মাকে বাড়ি পাঠিয়ে আসবো।" কোতোয়ালী থেকে বেবিয়ে সোজা সহরের धोत्रानम ट्राम वरक्र—"या कत्र छ इस अवेटत हालाइ—हिक्छि केत्र मर्छा त्यांना-অবস্থায় ভরো-বেভরো সোয়ারী সতীশ্দের বাডীর সাম্নের বাডীর লাল कार्छत्र अक्षे एहाँ वाक्राश्वात्र अक्षे नाहनी नाना-वर्छत्र ७एना-चाचराम् य्यम मत्क हिन्ना স্থারের পিছনে পিছনে আখড়ার উঠোন পাণীটি সেজে একটা গডগড়ায় কেবলি টান দিচ্ছে; আরি নীচে একটা পানওয়ালার त्निकारन मानकान कृष्मित-मरने ।- भन्ना ज्यानक গুলো মাস্রাসাথেকে ছুটি-পাওশ্বা থান ও থানানের ভিড জমেছে। রাস্তার ওধারে नवावी-आमरनत्र এक है। हेमामवात्रा शुरना आत সন্ধার আলোর মাঝে একটা ঝাপ্সা রঙের न्युक मिर्य अत्नक्ठी आकाम (एरक द्रायह । দুর থেকে একটা বিউগিল্ ভোঁ ভোঁ কোরে একটা একবেয়ে বিজাতীয় হুর সহরের সব গোলমালের উপরে ছড়িয়ে বাজতে লেগেছে। ছুর্গামণি আপনার বাসার দোতলার সরাদে-দেওয়া জান্লার ধালে বলে সতীশের আসার व्यापका कत्राह्म, असम मुमन्न स्थीत उत्राक थोत्रानम वा थोरत्रन-वावाको धरम वरत्र-"बा, আপনার কি সমস্ত গোছালো ECACE? ও-পাড়ার সতীশবাবুরা ষ্টেশনে वाटक्म। **हमून, जागनादम्छ** छारमन्न कारह श्रीरह नित्त्र कानि।"

"আর আমার সভীল এল না ? ভার সঙ্গে আর সাধন—এই ছটি কথা তর্গামণি বুঝলেন। , त्मश ना कारब-"

চিরকুট কাগজ বার কোরে ছর্গামণির হাতে ছর্গ্বার্মণি স্বপ্নেও ভাবেন নি। তিনি আঁচলে मिरत्र वरहा—"পডে দেখুন, সভীশ कि চোথ মুছে চলেন। ধীরেন-বাবাজী পৌটলা-निर्थिष्ट ।"

বাবা, আমি পড়তে পাবিনে। সে ভালে ওঠাতে দকে চল্লো। আছে তো ?"

স্থীর চিঠি পড়তে লাগলো। চিঠির মর্মটা এই---

योक्ट। श्रिव করবো না। পাকে-চক্রে মুক্ত কোরে দিয়েছেন। এ ক'টা मिन रयन नरखरनत्र कछ। পরিচ্ছেদ উপ্টে-भाष्टि পড়ে शिसिছि। এখন श्वाधीनভाবে कीवटनत्र जामण मक्त्र-माधन कत्रवांत कामात्र मभन्न जरमह्ह, दूबहि। चात्र छक्रान्य छ जरे কথা বলেন। স্কুতরাং তাঁরি আদেশ नित्राधार्या कार्ति कामि कि इतित्व खर्थ श्मिन दश्य दकारना निष्क्रन वारम माधन-छक्षन क्रवं हाल्य। जायां क्यां (क्रिया **এই कामात्र छक्-छाटे शैत्रानक, टेनि ट्ला**मात्र শভীশবাৰ্দের কাছে টেশনে পৌছে দেবেন। কিন্তু তবু এক-এক-সময় ভার ভিতর থেকে नमक रत्नावक जामि ठिक कारत निरम्हि। ইভি সেবকাধন সভীশ।"

তুর্গামণি একটু অবাক হয়ে বল্লেন— অভ বড় চিঠিখাসার মধ্যে কেবল হিমালর चात्र वृष्टानन, डांटक त्मरण व्यटक हर्दन, मजील সুধীর আল্থালার পকেট থেকে একটা আসবে না। এমন কোরে সভীশ পালাবে, পুটলি মুটের মাথায় চাপিয়ে একাগাড়িয় ত্র্গামণি বল্লেন—"তুমি গড়ে শোনাও পদাটা নামিমে দিয়ে সতীশের মাকে ষ্টেশমে

* সতীশের স্বভাবটা বরাবরই কেমন-একট্র देवित्रशी-रशारहत। इठाए कमलारक मिथवांभांक क्राप्तत (नम् जारक (भरत वरमिन ; धवर "मा, जामि বুঝেছি, তুমি কেন দেশে কমলা আসা जबिंध সতীশের বৈরাগ্য-বারিধি জেনো আমি আর সংসার প্রেমবারিধিছেয়ে একেবারে উছলে উঠেছিল ভোমার আদেশে মামি এবং ক্রমেই সংসারের কুলের দিকে ভার মদের প্রথম-সংসার পেতেছিলেম—শুধু ১তোমার ডেউগুলোও এগিয়ে আসছিল, এটা ছর্সামণি व्याप्तन वरक मिर्था वना इग्न, त्नवारत रयमन नका करत्र हिर्णन, धमन बात्र, रकछ আমারো একটু তাড়াছিল সত্যি—কিন্ত নয়। কিন্ত আজ তাঁর লক্ষী-বৌ কমলার বিধির ইচ্ছা অক্স-রকম। ভিনি আমাকে চাঁদমুখটি সরে গেছে; সতীশকে নিঙ্গে ভার বৈরাগ্য আর-একবার অকুলের দিকে (कत्रवात अप्रेशक्य कत्रहा (हरणत्र गणात्र আর-একটি সংসার না ঝুলিয়ে দিলে সে পালাবে, এটা হুর্গামণি বুঝেই কমলার খুক্ত আসনটি আর একটি কান্সী বৌ দিয়ে ভর্তি করবার চেষ্টায় দেশের মুখে ছুটলেন—সভীশকে (वांवावात्र वा त्मथवात्र कारणका ना त्ररथहै।

> छित्र गडीम कम्ला-मध्य मिनास्म **हिठि**টा পেয়েও বিশ্বাস করেনি, কমলা এডটা कत्रदा तम मत्न-भरम याथा भाषिक्त, (क (यन वनक्ति—मा ह्वांत छ। ८छा इस्स ८भगः अथमः जात्र ८कम १ द्विज्ञित्र ग्राहे

खारणा । नारधन्न दौधन यथन हिन, उथन हिन; কিন্তু এথন বখন সেটা আপনা-হতেই থস্লো, **७थन वृष्टि इ**टव (मही श्रुक्क्क्या-वटन्हे মটেছে; অভএব এই মহা সুযোগা; আর नश्नाद्य (क्या नय! व्यावाद मत्न वृत्र, কমলা কি সভ্যি দোষী ? একটা বেনামি চিঠির উপরে নির্ভর কোরে তাকে চিবকালেব মভো ভাসিয়ে দেওয়া কি উচিত হয় ? এক-একবার সভীশ মনে করে, সবিশেষ ভদস্ত প্রাড নেড়ে বল্লে—"না, একবার সভীশের সঙ্গে করার অত্যে একবার তার কালিগাঁরে যাওরাটা যাওয়ার চেয়ে বেশি দবকারি, হিমালয় কিছ ভথনি মনে একটা ভ্রাস জাগে— গুজবটা যদি সত্যি হয় !

সভীশ এমনি হিমালয় ও কালিগাঁ চটোর मध्या छ्लट्ड ; आत এकवात आक्तिम, এकवात ्क्रामीमशूट हर्टल शिष्ट्र ।" থালি বাসা, একবাব গুরুর আথড়ায় যাতায়াত क्राइ ।

ও, আর, আর, গাড়ি পাঞ্জাব-মেলে ক্ষণান্তরিত হরে গুর্গামণিকে বেলতলিতে একবাব বোলে আসি।" माबिए कनका छात्र भीटि बावात रथा- कमनात्र मरन मिरत খানেক হয়ে গেলেও সতীশ-ছোকরা এল-একটা সিগারেট ধরিয়ে মুধে দিয়ে, আর **विधानका**त्र महेशांमहे त्रहेलां,--- এक-পांड हिमान्टलंब निटक शंन ना। किंद्ध मन्दि ভার মুক্তির অভ্যেত্রধড়ফড় করছে, সেটা छात्र यूथ (मर्ट्सरे पाथफा ७ पाकिरमत मवारे (कान् निटक नफ़्रव,—छेखत-भूरक्, ना निकन-পুর্বের, সেটা নিয়ে তার পরিচিতদের মহলে বান্ধি খেলাও চলতে হুরু হয়ে গেল—সভীশের गांबरम धवर बाष्ट्रारम।

20

मञ्जीम मधन करेत्रकम स्माद्यामान कार्यात, योखांत्र कार्यक निर्धाम स्टन।"

(महे ममन् 'एश्वाद आक्रम मक्वादम क्रिके कमनात्र हिठि वृदकत शरक नित्र कि जी स्था हारमव टिविटन এटम वमटना। अ-जानान, टम-कानान, थरत्वत्र कांत्रक, ठारत्रव रभवाना, সিগারেটেব ধোঁয়া আর বাইরের শুঁড়িশুঁড়ি वृष्टि ও সার্গি-বন্ধ ঘরের জ্যাপ্রা গরমের मर्था এক-সময় किलोम अञ्चलक खर्थातम, "এই বৃষ্টিতেই কি অরুণ দেশে যাবে ?" অরুণ (मथा (कारत जरव एमरण याव।"

किलोम (वारम উঠলো—"गरक्को **या**र् নাকি ? সেখানে তো সভীশবাব নেই। व्यागदा मिन (थांक निष्म এल्य, जिनि স্ত্রীর অস্থথের ছুভো করে তাঁর মাকে নিমে

चातुः न हारम्य (भम्रामाहे। नामिदम (म्रह्य वरन উঠলো—"না, আমি জগদীশপুরে যাছি — माउठे। উन्पकारम्ब गाफ्रिक। निनिद्

(शाष्टी-चाष्ट्रिक मात्र दम्मानादत्रत्र वास्त्रही ডোরাটানা টুইলের কোট্টার পকেটে কেলে। र्द्रन क्टल-"र्द्रनमा हत्य।" जात्रभन চটি-জুভোটা চটাস্-চটাস্ করতে-করতে বুৰলে। ছুটিটা মঞ্জ হয়ে এলে সতীশ বেরিয়ে গেল। কিতীশ থানিক চুপ কোমে 🕆 (थरक यहा-"अक्रम कि मछोभयावूत रमभा भारवन ?"

> रूरत्रन व**रहा—"(পতে** ७ পারে।" ক্ষিতীশ থানিক অগুমনত্ব থেকে বোলে **डिटला—"बागांत टक्मन महन रहत, ज**

बदन कि ভাৰতে गांगरणा।

বেলা একটার বেলতলিক্তে অরুণকে নানিয়ে তার মুটে সদর-রাস্তা ছেড়ে ইটো-পথে কোন্ দিয়ে চলে পেল। অৰুণ তার ব্যাগ আর ছাতাটা भारिकत्रमञ् मानां कार्छत त्रनिष्डत शास्त्र ঠেসিমে রেখে একধানা গাড়ির সন্ধান করতে कड़ेटकत्र पिटक हरनार्छ, (नथरन, এकमन ষাত্রাপ্তরাশা প্রেশনের হুটো কেরাঞ্চি আর **ठांत्रथाना ८शांक्य शांकि मथल ८कारत कांशरक्य** क्न, नाज-यदत्रत्र एठातक, हात्रत्मानित्रास्त्र वाका हेजामिएक वाकाहे हरह कून् वाकारक-**हिर्त्वार** छन्दित পান व्यक्रप्तं (५२) সব-শেষে (कारत हरहा। একটা মুটে ছটো এগ্রাসেটিলেন গ্র্যাসের বাভি याथात्र काटत्र शाव्हिन ; त्म काक्रगरक एउटक वाल-"कालिशाँदि याद नाकि वाव् है तन 4) I"

"क शती मशूरत्र त्यर् हर्य।" त्यारम व्यक्रण भूटिएक बागिया किटम बदल-- नजीर नज बागाम B# 1"

"সভীশবাবুতো নেই। বাসার মাঠাকরণ धक्ना चाट्यन।" (वाटन-मूटि इन्श्न् काट्य विशद्य हटका ।

অকৃণ একবার ভাবলে—ভবে আর शिर्य कि माछ ? जावांत्र वरहा—"তाই हम्; मा-छ्नीटक (मर्थ ना इस का निनीदिस्हे यादा একবার।"

ভাষরের আকাশ মেবলা হলেও বাভাসের লেশমাত্র ছিল না। ভার উপর সাম্নে याजां क्ष्रामारम्य हम्कि माफिक्टमा त्यरहे अक अय।" त्यथारम काय्य भार्त, वाद्यात्रात्री

हर्यम (कार्या क्यांच मा बिर्म कार्यमान प्राचात्र विषय धूरणा छिड्रिस्ट । कार्यन अक्षेत्र পর একটা সিগারেট পোড়াচ্ছে আরু মাজান্ধ मकाम माउठे। উन्शकारमञ्ज भगारमञ्जात अधिकातीरक अख्मिश निर्छ-निर्छ हरनाई र **मिक मिट्स क्लाबास (य क्लाइ)** जात जात क्लांस क्लांस तिहै। अयन भयत्र भाष्ट्रमत्र अक्षांना क्रित्रां कि গাড়ি চাকা ভেঙে হঠাৎ রান্তার মাঝে কাৎ रुष भएरमा। गाष्ट्रित छाप (थएक भाषे:-क्ठक कृत्रे क्रात्रिश्टन । वाशनात्र-वाशनात्र वेक्ति (इएए अवर शाष्ट्रित मध्या (बटक निरक्तित আসম ছেড়ে গোটা-ছয়েক ছোকরা এবং व्याधा-वन्नमी याजात्र मटणत्र वांद्र भारतत्र शिक्-माथा मार्डे कात्र भम्य नित्य ছिট्टक ध्टनाय পড়লো। অক্লণ এই ত্র্বটনার দিকে দ্কপাত ना कारत इन्हन् कारत लाका वितिस लग । তারপর আর-এক-সময়ে রাস্তার ধারে আর-একটা ঠিকে-বোড়া যোজ আমার হাতে ব্যাগটা। গাড়ি পাওয়া যাবে ছিঁড়ে কেবলি লাথ্ছুড়ছে আর গাড়ির मर्थाकात (नाक छरना (कवनि स्वापा आद গাড়োয়ানকে গাল পাড়ছে; কেন্ট বা গানও धरत्रष्ट् । अयनि नाना घटेनात्र यादा पिरम्, श्रुलात्र जात चारम मिलिएत এकটা जाशू-শুক্নো আধ্-ভিজে চেহারা নিয়ে অক্প वार्य (शैह्ला—(वना माटक हात्रहेत्र।

> গ্রানের একটিমাত্র রাষ্টা; ভারি ভ্রানে षर-वाष्ट्रि, त्राकान-भाष्टे, भक्षाननक्रमा, क्रिक-গাড়ির আন্তাবোল, ইস্কুল-বাড়ি, ডাক্তার-थाना जमछहे—मात्र এकछा ट्राइटिंग्स् फिल्लन्गात्रि—त्यथात्म क्रेनारेत्नत्र वद्या मयणा मग्रमात्र ७ एका व्यवता स्मः, जान धक्टा "जगमीम रग ७ भवनिक् माहेटजनि

ř

পুজো, করপোরেদন মিটিং, ম্যাজিষ্ট্রেট অরুণ ভাড়াভাড়ি বোলে উঠলো— मार्ट्दर থিমেটার যাত্রা বা বায়স্কোপে জীস্বাধীনতাও कथरना-कथरना रूर्य शास्त्र ।

সভাপের বাড়ীর সদর দরজায় এসে দেখলৈ নিজেদের সঙ্গে নিয়ে গিয়ে ডাক্তার দেখিয়ে ভার মুটে দাঁডিয়ে আছে। অরুণ একবাব তাকে ভয়ানক অন্ত্র থেকে বাঁচিয়েছে।" मदकाष्ट्रां माफ़ा मिरत्र अकरो। हाक मिरन-"মা-তুর্গা ঘরে আছেন ?"

অনেকক্ষণ দাঁড়িয়ে ছ'তিন বার হেঁকেও यथन कांक्र जाड़ा পেলে ना, তथन मूटिंव त्वालाहे व्यक्रण हाम्रत এकवाव निष्मंत्र मुथिं। দিকে চেয়ে অরুণ বল্লে—"ভূই যে বলি, মা বেশ কোরে মুছে নিলে। ঘবে আছেন ?"

মূটের উত্তর হলো—"আছেন কিন্তু সকাল থেকে জবে বেহোঁস।"

"এতক্ষণ বলতে হয়বে গাধা!" বোলে व्यक्तन मत्रकाठी शंका मिट्र थूटन, वाछीत्र मध्य দাওরার উপরে ব্যাগটা রেখে, ভাড়ার পয়সা মুটের হাতে দিয়ে, অরুণ গোকটাকে একবার ডাক্তারবাবুকে ডেকে আন্তে পাঠিয়ে ঘরে हुक्दना ।

অন্ধকার ছোট ঘরটির মধ্যে তুর্গামণি শুয়েছিলেন। অরুণ গিয়ে আন্তে-আন্তে তাঁর পায়ে হাত ৰিভে চম্কে উঠে হুৰ্গমাণ বলে फेंग्टिन-"(क म ओमं ?"

অরণ তাঁর কাছে সরে বসে বলে— "সতীশ তো নয়, আমি এসেছি, মা-ছুর্গা !"

"अक्र !"— द्वाल इर्नामि जात द्वागा राज्यानि जक्रावंद दकारण दकरण खरधारणन— "बाफ़ीत नव खाला १ जानात—" (वाटनह मठीटमंत्र मां हुल कंत्रलन। এक्टक्रीहें खन ८ हार्थंब क्लार्थ गिष्ट्रिय ज्ला

গলায় মাল্যদান ও ওইদিন "তোমার ৰৌমা ভালো আছেন, ভেৰোনা। গঙ্গালান করতে গিয়ে ভিড়ে হারিয়ে शिद्योद्धिकः ; इद्यनमामा नार्य--- त्रांखाम वरम অৰুণ তেতে-পুড়ে এই লাইব্রেরীব গায়ে কাদছে। সে আর তার বন্ধু ক্ষিতীশ ভাকে

> र्छ्याभिष **अकृ**ष्यत्र मिटक ८५८म् **अ**र्था**रमन** "— **এখন दोमा** १"

"এথন দিদি আমারি কাছে আছে।"

ছুৰ্গামণি একটা নিশ্বাস ফেলে বল্লেন— "তবে সে গুজোবটা ?"

"সবহ মিথাা।" বোলেই চট-কোরে অরুণ দাড়িয়ে উঠে বল্লে—"আমি একবার বাইরে দেখি, ভাকাৰ এল বুঝি।"

ত্র্যাম পর সাম্নে বসে থাকা আব নিরাপদ नग्र वृत्यं काक्न ७। छ। त्रांत्र मान (कार्य তবে বরে চুকলো এবার। ডাক্তারের মুখে व्यक्रण अनल, इर्गार्मानत हाहेक्द्रफ; दक्षे নস না করলে চগবে না। এটুকুও ডাজার वद्यान द्य का के हैं इन रमन मन्न भाषान दे द्यान কেউ এব সেবা কবতে রাজি নয়। ডাক্তারের कथात्र नाथा निष्त्र अक्रन व्यन उठित्ना—"म কথা থাক! আজ রাতটার মতো আপনি व्यापनात रहन्त्राना पात्रोठोटक धाँत काटह পাঠিয়ে দিন। আমি আজই কলকাভা থেকে নস আনতে চলুম। আমার আসা পর্যান্ত भाशनि औरक रमथरवन किना वनून ?"

"निष्ठित्र (मथरवा।" वर्ण खांकांत्र हरण (गरनन।

ज्ञांकात्रक विवाद कारत जरून क्तीयनित्र वारे; कान विविद्य अपन विक्रि। काष्ट्र अपन बद्ध-"मा, मठीएमत ठिकानाछ। কি ? ভাকে ভার করতে হবে !"

ছুর্গামণি বল্লেন—"সৈ তো তার পাবেমা; वियां ने हरत्र क्लाथांत्र हिमानत्र श्राट्ट।"

অরুণ বল্লে—"তবে উপায় ? আমি তোমার बस्य कनकाठा (शरक नम व्यानिशा"

नम् त कथा खरनरे छ्त्रीमिन छूक कुँठरक वर्ष्वन-"ना, ना, नर्ग काक (नरे! (छाणा কেউ—"

व्यक्रण फ्रीमिणित मूरथत काट्य मूथ निरंत्र खरधारम--- "मिनिटक जानरथा मा-छर्ना १"

"সেই ভালো।" বোলে ছুর্গামণি চোথ বন্ধ करत्र जाएछ वरहान—"तो भारक विनन, जामि श्रद्धाव-कथा, दिनामि-िठिटिक जिक्ट्रेड विश्वाम সতীল্ছী আমার कब्रिनि, कत्रद्वां ना। वो।"

সেই সময় ডাক্তারের দাসী রামদাসিয়া এসে অহথ।" উপস্থিত লেখে অকণ বল্লে—"আজ রাতের · মতো এই দাসীটাকে তোমার কাছে রেথে

बागिं अदेशात्मे ब्रहेरणा।"

তুর্গাদলির পাছের খুলো নিয়ে অক্লণ **(वर्त्तारक, क्र्जीयणि जायणामिश्रारक वर्ण्य-**শুও ঘরে বাতাসা আর ভাব আছে, অরুণকে (धरत्र (यट उन्।"

मत्रकात जामत्न मां फ़िर्म व्यक्तन क्र-बाना বাতাসা চিবিয়ে ডাবের সমস্তটা পলার মধ্যে **ঢেলে দিয়ে মুথ মুছতে-মুছতে সোজা আবার टिम्टिन प्रिंक हिला।**

পব্লিক লাইব্রেরীর কাছটার অকণের वक् यजीन এक है। এमि हिनिदन है ए बाहित्य वाख हिन; जक्र निरं करन केंद्र ना-"किरत काथात्र हरनिष्ट्रम् ? एकरना स्वि (य। थवत कि ? পড़ाखना हगहा (कमन ? আজ রাতে বারোয়ারী পুজো; ৰাজা হবে; আসিদ্—বুঝলি!" এমনি নানা প্রেরে অক্লণ অফুপের চোথ ছল্-ছল্ কোরে এল। একটি-মাত্র উত্তর দিয়ে গেল—"মা-ছর্গার বড়

> ক্রেম্পঃ* শ্ৰীঅবনীজ্ঞনাথ ঠাকুর।

बोक्क कोर्डान्त्र मार्शानो ।

প্রাচীন কাগজ-পত্র আছে, ঐ সকল কাগজ বাজালা নদী-মাভূক দেশ। প্রতি দশবৎসমেই क्टेट रमधानकात्र त्राकाभामन-भक्षिज-विषयक এधानकात्र ननीत्र गिवत्र मित्रकांन इत्, সকল তথা জানিতে পারা যায়। গ্রামেব প্রকৃতির এই থাম-থেয়ালের ফলে জামাদের পাটীলের পাওনা হইতে পেশবার পাওনা অনেক পুরাতন গ্রামনগরের চিক্ষাত্রও পর্যন্ত গ্রামবাদীগণের দমস্ত দেনার তালিকা আরু থুঁজিয়া পাওয়া যায় না। তাছাড়া

মহারাষ্ট্র সাম্রাজ্যের দপ্তরধানায় অনেক ঐ সকল কাগন হইতে তৈয়ার করা যায়।

^{*} ष्मानात्री मरबाात्र रणवक----शियुक्त भवरतक तरहानाधात्र ।

এখানকার আবহাওয়াও অত্যন্ত থাবাপ। धरे गरुण कांब्र एवे अथारन প्राचीन कांबन-পত্র বেশী পাওয়া খায় নাই। মারাঠী কাগজ-**পত हहेट कानिए भार्ति, म्यानकात ममर्**ड ব্যবসাধীকেই পণ্যের জন্ম কি পরিমাণ क्य मिटल इहेल। (भगवा-वृत्त्र त्राधाना-मिश्रक ची এবং ভেলাদিগ্রক ভেলের অংশ রাজসরকাবে দিতে হইত। ফিরুজ সাহ ভূমলক বে সকল কর রহিত করিয়াছিলেন ्र खाकात्र मध्या 'त्र ७ चन- हे- खत्र तृ,' क्ल्राम (एक या श्वरञ्ज উল্লেখ আছে, সাধারণ তেলের उद्याप ७ चाट्हरे। चात्राच मूनगमान नृशा७-গণের আবিওয়াবের তালিকা হইতেও 'রওঘন' वाष यात्र नाहै। वाष्ट्राणां व श्राटम श्राटम बहे नकन कत्र कि श्रामानीटक चामात्र कता इहेफ, छाहा कान आठीन मनकाती मनीन ब्हेटक कानियात्र जिलाब नाहे। किन्न नाहक ममय श्राठीन महित्छा (मत्मत हे डिहारमत (मर्थी द्या दिशकाव भगता। "অনেক উপাদান পাওয়া যায়। সহাকবি কোন বপুলাই। জাহা মপুরা **इंशिक्षात्मत्र श्रीकृषः कौर्खान्छ এই जान .** ক্রিছাসিক তথ্যের অভাব নাহ। পাঠান স্বত দধি চধ আওর ঘোল श्रिशंक्षकारम श्राप्य वारमायीत भाषाय व भव भारत भाषी। मुलात बर्भाष किराप कर बाबार करा (ভाष्म ना कमन कार्राण कार्राण হুইত ভাহার বিবরণ ক্লফ-কীর্তনের দান- চাহ ইহার বিচারা॥ ৪॥ ৰঙ্গ হইতে সঙ্কলন বঁরা ষাইতে পারে।

কুষ্ণের প্রাণ্য-প্রস্তাব লইয়া বড়াই রাধার निक्र तियां প্रजायााज, ও नास्टि रहेया चांत्रिशाद्दन। कुक रेरात्र अिंटिमार नरेट চাছেন আবার রাধাকেও পাইতে চাহেন। किमि बढ़ाइटक विनातन, त्रांशाटक नहेत्रां मधूतात्र (इन निनत्री जानी। हाएँ विध चुछ दिहिए यारेख, जामि भर्ष जातिक সমএ मधुरात्र भर्ष माहामानी या छे। मार्थामा नावित्रा नाष्ट्रिश चुक ছ्ट्य माहामानी ॥ ७॥

थाकिव, मान-कन्न चामारमन ছলে ভাহান পথরোধ করিরা ভাহাকে লাহিত করিব। সেকালে পথে দাঁড়াইয়া হাট ও বাজায় 'भाशामानौत्रा' किजारा कव जामात्र कतिराजन, ভাহার একটি স্থলার চিত্র মহাকবি কৃষ্ণ-রাধিকার বাদ-প্রতিবাদ ছলে আঁতত করিয়াছেন।--ক্লবি রাধা শুন সমূথে পুছে। মোএ স্থীকেশ। কঁথা না রসসি কথা তোর খর काहेर्वे कांगन (मर्म। म जाया ॥ ১॥ গোকুলে থাকোঁ মো গোঝাল জাতী ভোক্ষ না পুছহ কিকে। ৰোল শতগোপী পদার সাজিজী मध्रा काउँ (था विदक ॥ २ ॥ ওলাহোঁ রাধা মাথার চুপভী ভাহাব দেহ বিচারা॥৩॥ তোএঁ ন জানসি মোএঁ মাহাদানী এদান সব আক্ষারে। ভাত্তে ষে'ল পণ দি আঁ মাহাদান **हम अधूदा नगरत्र ॥ ६ ॥** विधन्न कारम विधन धनी

व्यासनी प्राथा (डा व्याचानी वड़ी রাথহ আপন মানে॥ १॥ (म देखन कश्तात्र (मत्म। (ইহার পর ১৯।১ পাতা নাই) কীর্ত্তনে আছে।— — মাহাদানী এতকালে শুনী হেন আচারিক বাণী। ভোর জপমাত্র লাজনাহি ভাত্র ७न (पव हक्तभानी॥ ५७॥ • त्कार्य कार्याक['] त्राधाव जक्षर धति मदन मदन शास्त्र। वामनी हत्रण भिरत विमच्या গাইল বড় চণ্ডাদাসে॥ ১৭ (ত্রীকৃষ্ণ কীর্ত্তন পৃ: ৩৬।৩৬ 🛝

তৃঃথের বিষয় গ্রন্থানি খণ্ডিড, সকল পৃষ্ঠা নাহ, তাই রাম-রাজ্য তুল্য কংগের व्राच्छा अशामानी दकन इञ्च, मिथ इर्थव উপর আবার ভাওে বোলপণ করিয়া याखन (कन रहेन डारांत्र कांत्र अथारन (म ७ वा नाहे। बी बाधात व्यक्ता छत्र हरेए व স্পষ্টই প্রতীয়মান হুইতেছে মধুরার হাটের পথে মাহাদানীর উপস্থিতি নিত্য-নৈমিত্তিক সাধারণ ব্যাপার নহে এবং দ্বত-ছথের উপর মাণ্ডল লওয়াটা অসাধারণ অত্যাচার বলিয়াই পরিপণিত হটত। 'আবালী' গোরালিনীর व्यक्षक ध्राष्ट्रां व्यवक 'मारामानीत' व्यारेन-मक्छ व्यक्षिकारम्य मरशा हिन ना, खरव देवस्व ক্ৰি তাহার প্রের প্রেমের দেৰতাটিকে चरनक चिकान्न किनारहम, छोहान्न रिंग भारति महिला किर्फ ॥ > ॥

শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক রাধার এই লাহনা। স্নাত্ত-হেব পাঞ্জী পরমানে। কোষে অর্থের বিশেষ অন্টন ছইলেই রাজার আপন চিহ্নিজাঁ দিআঁ যাহা দান অভাব এইরূপ মাণ্ডল আদার করিরা পুরুৰ করিবার ব্যবস্থা ছিল, এবং কোন লোকের পুরুবে শুনী এঁ বা বাম রাজ্য নিকট হইতে কিছু অগ্রিম টাকা লইয়া এই মাওল বা মাহাদান তাহাকে ইজারা বসিশ জনে কড়ী— দেওয়া হইত, তাহারও প্রমাণ জীক্ষ-

> কিনা মোক ভৈল এভকালে। माहानानी टेडरान शाक्रान ॥ अ ॥ चटनक कड़ीत्र शताती। হাট জাইতেঁনা পাইলোঁ মথুরা॥ রাজা কংসে করিব গোন্ধারী। ভবেঁ কাহ্ন লেজা যাবোঁ ধরী॥ ২॥ ানতি নিতি দ্বধি বিকে জাওঁ। मानित्र ऋषा नाहि भाउँ। এবে রাজা ধনের কাতর। চাহে यदवै ছথে निर्दो क्र ॥ ७॥ श्रुन=5-গুনত স্থাৰি বাধা পাঞ্জীর বাধান। ষোল শত কুতৰাটে মোর মাহাদান। ১॥ এবেঁ রাজা হরিল ধনের কাতর। পথে माहानानी श्रीत्रण एक व्याहिनत्र ॥ २॥ **এবং— মোরে দান দিখা যাহা স্থলরি রাধা ॥** * * * * অসত্য না বোলোঁ বোলোঁ সভ্যপরমান भटिक कूष्टिक द्रांधा देनत्या मारामान मशान शहरणम यावना (व नर्यमा हरेज ता, जारात्र उत्स्थ भातक प्रहे जक इत्न चार्छ। वका---

নিতি নিতি রাধা বাসি বিকে।

নিলজ বড় গোকুলের কাহ। কোণ চিতে ভোর মাহাদান॥ ২॥ ত্মত দ্ধি ছ্ধ তোর পসার। মাহাদান কিকে ভাগ আকার॥৩॥ विभन्न कारन विशन खनी! चुक मिथ क्रथ वृत्र मार्गानो ॥ ८॥ ু পুছি আঁ চাহা বলভক্ত ভাই। Cमान मारानाम C ानान ठारे॥ e॥ কিবা পুছিবোঁ মোএঁ বলভদর। তোক্ষাথো আধিক সে আছিদর॥ ७॥ বড়ার ঝি তোর ভাল নহে মতী।

11911 এ লোক ও লোক সে জন মাতা। সেছি এহা পথে মাহাদানী বোলোএ॥৮॥ বার বরিষের আন্ধার দান। বান্ধিতা তোমার লইবোঁ পরাণ॥ ৯॥ (एथा याहेरछ ছে বে বার বৎসরেও মাহা-দানের ভাষাদি হইত না। কারণ ক্বফ বার্ঘারই यात्र वरगदत्र मान मावी कत्रिट उत्त-বারহ বরিষেকের মোর মাহাদান।

বারহ বরিষের দান গুনহ মুগধী মেহোর করমে ভোক্ষা আনি দিল বিধী ॥।॥ মাধাদান কেবুল পথে আদায় হইত না, हाटि यथात्रीं याचन जानात्र कता इंडिं। कुक-कीर्खान 'वाहेमान' 'हाहेमान' उछरत्रहरे फेरमथ चारह।

শুন তোকো আলে রাধা পালী পরমাণ॥১॥

चाउँमान रुपेमान महेला। त्राक्यदत्। ্ভেক্ষারণে আইলোঁ মোএঁ যমুনার ভীরে॥ নিতি নিতি যাহা তোকো মথুরা নগরে। মাণিক জিনিয়া দশন শোহে।

मिटवर्ट मधित माम खमर शाकाणियो। कररमत्र विषय व्याद्या हरेय मार्शामानी ॥माञ्जा মাহারাষ্ট্রের ট্যান্থ-দারোগারা কিন্তু কেবল मिध इध एडण धित्रु छे भन्न कन नहेमाहे সম্ভষ্ট হইতেন না। তাঁহারা সকল প্রকার 🦠 विविद्य निक्षे इहेट है नक्न वाशांत्र कत्रिएम-পণ্যের জম্মই কর যদি না ভাহাদের সহিত ছাড়-পত্র থাকিত। বাঙ্গালা দেশেও যে বছমূল্য পণাগুলি কর হইতে অব্যাহতি পাইত না, ভাহাও বঙ্গীয় মহক্বির অজ্ঞাত ছিল না, তাই তিনি রাধার

क्रिश्वनाम्हरण क्रुक्षरक मित्रा वणाहरण्डल — হাতে খড়ী করী বোলোঁ মো কাহ্ন चाहेम (म ताथा तथा करित मान ॥ ५ ॥ আছঠ হাথ কলেবর তোর। • ছই কোট দান তাহাত মোর॥ ২॥ মাণতি কুন্তম মাল-রচনে। এ হতে আক্ষার লকক দানে।। ৩॥ চামর জিনিআঁ চিকুর তোরে। এহার দাম তুঈ লাখ মোরে॥ ৪॥ সিদের সিন্দুর ভূবন মোছে। এহার দান তিন লক্ষ হও।। ৫॥ নিশাল শশি তোর মুথ দেখো। **এহার দান চারি লাথ লেথোঁ॥** नोग উৎপশ তোর नम्रत्न। এহাত মোর পঞ্চ লাখ দানে॥ १॥ গরুড় সমান তোহোর নাশা। এহাত ছয় লক্ষ দানের আশা॥৮॥ শ্রবণ কুণ্ডল শোভএ ভোরে। এহার দান সাত লক্ষ মোরে॥ ৯॥ नय ऋविधान बान ८वर्ड जाकारत ॥ > ॥ । এर्। त्र मान जार्ड मान नरह ॥ > ।।

বিশ্বফল তুল তোর আধরে। मद नक मान छाउ जाकार्य ॥):॥ কণ্ঠদেশে ভোর কন্ম সমানে। मन्नक रुव विशेष्ठ मान ॥ ३२ ॥ বাহ্ মূণাল কমল করে। এগার লক্ষ দান তাহারে॥ ১৩॥ মুখ পাতি তোর চন্ত্রিকা জিনে। বার লক্ষ হত এহার দালে॥ ১৪॥ শ্রীফল যুগল ভোহোর তান। এহার দান তেব লক্ষ ধনে॥ ১৫॥ ত্রিবলি মাঝা বাঞ হেলে ভোরে। कोम नक मान এशंक भारत ॥ se ॥ উক্ল ভোর রাম কদলী সমানে। ॥ १८ ॥ क्याम होइक क्ल क्लक्ष পদযুগ থল কমল আকারে। ষোল লক্ষ দান তাহাত আঁকারে॥ ১৮॥• হেম পাট জিনি চৌষাঠি পাথ ভাত মোর দানে॥ ১৯॥

স্তরাং দেখা বাইতেছে চামর, মানিক, কমু, মুণাল, প্রীফল, হেমপাট, প্রভৃতি সকল বস্তমূল্য দ্রব্যের জক্তই কর দিতে হইত। আবার মাহাদানীকে কেহ ফাঁকি দিয়া এই সকল বস্তমূল্য দ্রব্য লুকাইয়া না লহয়া যায় গাহার প্রতিও তাঁহার প্রথম দৃষ্টি ছেল। তিনি সকলের পসরা নম্মাইয়া পোটলা প্রটলি তম্ম তয় করিয়া খুঁ জিয়া দেখিতেন।

সোনার কটুআ ছটি মাণিকে পুরীআঁ।
নৈত বসন তাত ওহাড়ন দিআঁ।।
আন্ধা ভাতী লআঁ যাহ আমুল ভাতার
কাঞ্লী থুচাআঁ লৈবোঁ তাহার বিচার॥ ২॥
স্থতরাং মাহাদানীয়া বণিকদিগের উপর

হিসাব কারবার জন্ত পাঁজিপুথি থডি প্রভৃতি সরশ্বাম মহাদানী মহোশয়ের নিকট প্রস্তুত থাকিত।

হাতে থড়ি কবী বোলোঁ মোকাছ।
 আইসল রাধা লেখা করি দান ॥ > ॥
 আবার রাধা বলিতেছেন—

মিছা থড়ি পাড় কাহ্নাঞি কপট নাটে। কংশ গুনিলে পড়ি যাহবে টাটে॥ ১॥ কিমোর ঝগড় ভৈল মথুরার পথে।

পাজী পুণী ভোক্ষার চিরিবোঁ বামহাতে॥ **Б** छोताम मरञ्जू कानिएन, मरञ्जू क्षांक बढना কারবার মত জ্ঞান তাঁহার ছিল। দান শক্টি সংস্কৃত স্থতরাং আপত্তি হইতে পারে যে মাহাদানা মহাশয় হয়৩ হিন্দু-যুগের কোন সংস্কৃত গ্রন্থ বণিত রাজকশ্বচারীর প্রতিক্ব'ত মাত্র। ाक्छ এ সংশ্রের নির্শন ছক্ত নতে। মাহাদানী শ্ৰীক্লফ বালভেছেন ষে "যোলণত কুভ খাটে মোর মাহাদান।" এহ কুতথাটগুলি পাঠান 'যুগের পরিচায়ক না হইয়া বায় না। কবিয়া व्यापनारमञ्ज कार्या व्ययनक मभन्न ममनामनिक সমাজের চিত্রই অন্ধিত করিয়া থাকিবেন। **ठ** श्रीमारम द माहामानी कुछ भाक्षान-यूर्ण व छे। आ-मारताशांत्र छ्वछ ठिख हो रहेएछ शारतन, किन् এরপে হাটে ছাটে ও বার্টে পসাবিণীর পসরা নামাইয়া ভাও প্রতি মাওল আনাম করাম প্রথা হয় বোধ চণ্ডাদাসের জীবিত কালেই প্রচলিত ছিল এবং জীবিত মাহাদানীদের আদর্শ সমুথে ছিল বলিয়াই ভিনি মাহাদানীর কুতবর,ভাতে বোলপণ প্রভৃতির উল্লেখ করিয়া একটি समात्र चारमथा । हिवा क कतित्राह्म।

क्रि बिडिंगिर्हिड रुडेक ना (कन, क्रिटिड इहेर्द। (म मक्रमन এक्स्याद ঐতিহাসিক তথ্য সংগ্রহের নিমিত্ত প্রত্নু- নিখুত না হইতে, পারে কিন্তু একেবারে किछाञ्चर এই গ্রন্থানি আদর করিয়া পাঠ বিশ্বাসের অযোগ্যও হইবে না। कतिएक रहेरव। आगारमत এर श्राजीन

कुक-कैर्डिन टाइश्रामि कारात्रमिक ७ मनीन रिक्किंड रक्षामान त्रामा-मानन भवकिंव ভাষ্যভত্বিদের পরম আদরের বস্তা ইহার মাল-মসলা প্রাচীন সাহিত্য হইভেই সংগ্রহ

শ্রীসুরেন্দ্রনাথ সেন

· 500

व्यक्तामम वर्षीय এक वामटकत महम मानात्न वाहित श्रेषा जानिया जनकाळी **षाकित्वन, "तोमा। य तोमा।" छाँशत त्म** উচ্চ কণ্ঠস্বরে অপ্রসমতা বেশ স্পষ্টই ফুটিয়া উঠিল।

नीटनटमत्र ध्यकाश्व हक-भिनादना वाफ़ी---শার-মহলের বিতলে বারালায় মোটা মোটা **ब्लाफ़ा बारमम भारम कार्क्ट्र इतिहा** अकि मनम वरीया वानिका माज्येया हिन। ৰাটীর গৃহিণীর ডাক শুনিয়া সে মেয়েট ঈষৎ অগ্রসর হইয়া আসিল। ভাহার পরিহিত পাঁচপেড়ে নীণাম্বরী শাড়ীর প্রাস্তটুকু তাহার माथात्र थाट्डा हूटनद उपत्र हाका हिन, छारा लिहे जानहे प्रहिन, जात दननी वाफिन ना। वानिकात कुछ नगाउँ क्षाक्रिक्षिक इरेन, भ ভীব্ৰ চঞ্চল নেত্ৰে শাশুড়ার সম্ভিব্যাহারী वागरकत्र भारत वादतक कृष्टिंग किंगक निर्द्या -क्रिश ভাহাকে জিজাসা ক্রিল, "कি মা ?"

শ্ৰাজ আবার ভূমি বিহুর গায়ে হাত कुर्णह ? त्यथ त्यांच, याद्यात्र मूथथामा च्यांक्टए

शिंठएं कि कदत्र निष्त्रह। हि हि । ভোমায় যত বলি, যত শেখাই, কিছুতেই কি क्रिक क्रिक्ट मिस्टर ना नाहा ? जमन क्राल আমি ভোমায় কি করে পেরে উঠ্বো!"

তির্সতা বধুমাতা বারেক তাচ্চ্ল্য-ভরে স্বামীর শুবের উপর নিজের কীর্ত্তি-চিহ্ন দেধিয়া লইল। সভ নথকত তথনও রক্ত-সরুস রহিঃছে। দেখিয়া সে কিছুমাত্র লজা বোধ করিল না, বরং ভীত্র রোবে অলিয়া উঠিয়া जोक चरत कहिन, "आहा त्रा! आमिरे यन खधु के तक्य करत निस्त्रिष्टि, खेत कि त्थाका ছেলেট रियन कि कुछे करत्रन मि। এই দেখ ना, जामात्र शिर्छ वृत्क थामरह हान जूरन নিষ্ণেছে কে,—কে 🕶 এই বলিয়া সে সভ্য সভাই এমন এক প্রমাণ বাহির করিয়া (मथारेन, वाराज भन्न विठातकरक विठादन त्रात्र উन्टोहेन्ना मिट्डि रून !

"हैंगरत रजनाता, जूरेल जा लरक त्मरत्रिष्ट्रम् थूर, रमथ रमिष, थूरन रकाषाकात !" মাতার সহামুভূতি পাইয়া পুত্র এওকণ द्याक्ष्यांन रहेमा माजारेमा स्निट्टिश, जर्भन মারের সহামুভূতির গতি সহসা পরিবর্ত্তিত (मिथिय़ा निष्कत निक्छोटक त्रका कतिवाव চেষ্টায় অভ্যন্ত ব্যস্ত হইয়া ক্রন্দন-বিজ্ঞাড়ত শুকোচিছ্ল, এই থেকে কঙখানি ছিঁছে নিয়ে উচ্চকণ্ঠে প্রতিবাদ তুলিয়াণ্সে বলিল, "ও যে কালি স্নোছা হয়েছে,—ভাই ভো আমি কলম

"মিপুকে! মিপুকে। আমি আগে দেখতে পেলেই দেব।" মেরেচি। নামা, এর সব মিথো কথা। "আমিও তো তাই চুল ধরে টেনেছি— ভূমি শুনো না। ও আগে আমার চুল এবার এমন চুপিচুপি পেছন থেকে এক টান धरत टिलिছिन,—এमन आरत टिलिंছन,—. स्व स्वित्र प्राव्य प्राप्त स्वाम् करत्र नर्ष ষে আর-একটু হলেই আমি মুথ পুব্ড়ে পডে সথের সব চুড়িগুলি মুড়্মুড় করে জেলে (स्थ्रा"

"हम्। চুल धरत টান্তে নাকি অবিার "তবে আমিই বা মারবো না কেন ?" (क डे मुथ शृंद एक পएक यात्र। मुथ श्रृंद एक (य भाग कामि उ वरण नार्थ्ह, **এ** वात्र खन्न धरव होनि नि—७ किन आयात मूर्य अछ করচে— "বলিয়া বালক আহত স্থানে হাত বুলাহল।

হহা দেখিয়া या बिलियन, "माछा बाह्य, তুমি একেবারে মুখখানায় কিছু রাথোনি। মেয়ে**শাহুষের অত দক্তি**পনা কেন ?"

বধু এইবার কালার ক্লোধে উচ্চ্লিত ररेबा উঠिया मगर्कात उखर मिन, "ও তোমার होनरवरे। ७ यथन व्यामात हुन धरत्र होन्रान, भात था ध्यारेया र्यानरकत्र नाम त्रका कतिरव ज्यन तृथि किन्दू त्याय हत्या ना ? — हैं।, वेड भाव भव जामात्र देवनात्र !"

"जूरे किन जागात कमम ভেঙ্গে मिनि, वाक्नी ?"

"थूव करब्रि । जूरे जाना ब काशफ हि ए जाना ब शाका हुन जूरन निवि, जान-"

तिम्नि ?—हैं।, **এठक**ण मारक म कथा विनिन यरग,--ना ? এই দেখ ना मा, আমার काপড় व्यामात्र कार्श (मरत्र हि, जात्र (वनाय- ?" (एक निर्मिष्ट्। (वन कर्त्राष्ट्-कार्याद

यादि। (पथ्द ७थन मद्या।"

পড়ে,সে ভো ধাকা থেলে! শুন্চো মা, কার যত কাপড় আছে সব আমি কুটি কুটে করে कथा मिथा—निष्कित कारनक क्रिम छन्टक हिँए द्राप परदा, अत्र हून किए निव, পাচেচা। তা আমি তো আর খুব স্থোরে চুল ওর পিঠেব চামড়া বেতের বাড়ী ভূলে নেব, তবে আমার নাম।"—এই বলিয়া জগদাতী জোরে আঁচড়ে দিলে ৫ উঃ। যা জালা ঠাকুরাণীর সেই বিনয় নামধারী পুত্রটি মহাবেগে (वाध क्ति (व्लाप्यर्गेह श्रेष्ट्रांन क्रिन। ত্থন অপর-পক্ষও মহা আক্ষালনে আতভারীর বিক্লজে কিব্ৰূপে শোধ ভোলা ষাইতে পাৰে, ভাহারহ বাবস্থায় জিহ্বায় একেবারে মা मद्रचाद देवठेक बमारेश किल। तम जाराद्र वहेरत आश्वन धत्राहेत्रा नित्व, चूजि हि जिन्ना ফেলিবে, দোয়াত ভালিয়া, আরও কত কি আপনার ছেলেট কি না, তুমি তো ওর দিক করিয়া তাখাকে ক্ষতিগ্রস্ত এবং মাষ্টারের নিকট हेजानि रजानि। शृहिनी आत्र कि कतिरवन १ ভান অগত্যা একটু হাসিয়া "ছটোই সমান कुरिंटि विश्वा वध्व मिरक धक्छ। हाक बाड़ाइब्रा डाकिरगन, "आंत्र शांत्रीम, आंत्र।

"हाः चामि निनूम छ।। क्न चामि তো দেব না,—তুমি ভারী একচোখি।"

একদণ্ড যে চোপ বুজে শোব, সে ভো হুবার ভেকে দেব।" যোটি নেই। কাল পেকে হুটোকে হু'গরে 🔻 ভীম্মলা এ শাসনে অভ্যস্ত , সে নির্ভয়ে मात्र वस करत्र द्वरथ मिरत्र करव निष्क শোব। দীড়ানা।"

পালিয়ে গি'র লুকিয়ে থাক্বো, তুমি ঘুমিয়ে তাছলেই হশে না, মা তোর পর ?" পড়লে প। টিপে-টিপে না এসে---"

बा इब कतिम्। कि भारत देश कुरे अराहिम्, मा, मा १ आमात मा न ७ १" छैर्षिणा। लात्क कि वन्त्व, वन् पिथि? জগদ্ধাতী वधुत्क निष्मन्न वृत्क होनिश्रा লোকেদের বউরা কেমন শাস্ত লক্ষ্যী, আর লইয়া তাহার মুখে চুম্বন করিয়া হাসিয়া कृदे किन किन रचन थिकि रुक्ति।"

"(यम कत्रिह, धिक कि कि । क्रिय अल्पन क्यानकात्रहें मा।" णभी वर्षे अक्टो हिस्स नांच नां बावू, अठहे "छन्ट (भरण। या कृषि कारक दिनी यि जान (नर्भ थारकु। जामात्र ना रुप पूत्र जानवान मा ?" करत्र माख वाष्टी (वंदक।

"वानाहे। वाष्ट्र" वनित्रा त्यरमयी भाखको । त्यरहत्र रामि हामिरनन, उखत्र मिरनन— रामिट्ड गागिर्णन वषुत्र शिक्ष्यम श्राशित সর্বনেশে হাসি, এটুকু জানা থাকিলেও ইছাকে পরিহার করিতে তাঁহার সামর্থা ছিল না। বালিকা বধুর তাই এত প্রশ্রর।

তোমার পাকাচুল ভুলে দেব ? ভুমি কি রাত্রে শরন-মন্দিরে মারের ছই পাশ ছই আমার মাণ তুমি যার মা, তাকে তোমার জনে অধিকাব করিয়া শুইত। সে রাজেও हुन जूरन मिर्फ बरनारा ना, रम रमरव এथन। छाई इहेन। विनीय मार्यय भना ज्ञाहिया च्यामि व्यामात्र वावात्र हुण जुल (भव, ভোমাব মাকে নিজের দিকে ফিরাইবার চেষ্টা কবিতেছিল, উর্মিলাও তদমুকরণ করিতে "হারামজাদিব মুথ দেণ। কি এক- যাওয়ায় সে তাহার হাতটা চুড়িয়া কেলিয়া চোখোমি করেছি রে ক্যাপার বেটি ? নে, দিয়া গর্জন করিয়া উঠিল, "থবরদার, আমার আয়, এথুনি আৰাৰ হুটোভে লেগে ঘাৰে। 'মার গায়ে ছাত দিস্নে, দিলে ভোর হাত

उछत्र विन, "इम् धंत्र এक नात्र मा कि ना!"

"একলার না তো কি ? ভুইই তো "আমি কাল ভাত থেয়েই সইমাদের বাডী তথন বলেছিন্, আমি মার আপনার ছেলে—

"रुए, रुला वर कि! कक्करना करणा "আছো, এখন তো আর নয়,—সে তখন না,—ই্যামা, হলো মাণ তুমি ওর একলার

कहिलान, "नाः, क वरण,—जामि ভোদের

মা পুনরার সেই রকম পরম পরিভূষ্ট

"গ্ৰুনকেই সমান ভাগবাদি রে।"

আসল হেতুই যে ঐ সর্বা-অপরাধ-সমর্থনকারা বিনয় সদস্তে কহিল, "উহুঃ, ভোমার मत्म (नरे मां, जूमि जामारकरे अत्र চारेएज একটুথানি বেশী ভালবাস। সেই যে व्यामात्र व्यष्ट्र जमत्र कृषि निम त्राक व्यामात्र काट्ड थाकटड, दक्विंग इतित्क छाकटड--

ওর কাছে ওতে না, আমি ভাল হলে "ডাব।" কত সন্দেশ বাতাসা হরির লুট দিয়ে "তোর সন্দে আমার ভাব। মা, এবার हिला।"

দারটি এ অপমান সহু করিল না, সেও ইহাই। ঝগড়া চলিলে গল শোনায় বাধা তেমনি আগ্রহে আর একটি উদাহরণ বাহির कत्रिम ।

"আমার পান-বসস্তর সময় ডাক্তাববাবু मारक जामांच कारह जामरं वात्रं करत्रहिएनमें, মা কি তা শুনেছিল ৷ তোমার তো শুধু জ্বর, সে তো দোষের নয়,আমার কাছে তবু মা দিন-রাত পাকতেন, থাকতে না তুমি মা 🕍

मा তাড়াতাডি বলিয়া ফেলিলেন, "তা থাকবো না বাছা, তোমার মা বাণ কেউ বিপিনবিহারী শীল দেশের মধ্যে একজন কাছে নেই,—আমিই তো অথন তোমারু বিশেষ গণ্য-মান্ত বিদিয়ু লোক। তাঁহার মা। সে মাধা করতো, আমি কি ভীনা করে চালানী ও ভেজারভির মন্ত কারবার। থাকতে পারি। উঃ, বা অত্থ করেছিল— পোয়াতির বাছাকে যে শীতলা শেতল কবে निरंबर्**ट्न, এই आ**यात्र महाखाता !" जननी কুভজ্ঞতা গদ্গদ স্বরে এই বলিয়া সেই त्रकाकात्रिनी (मनीव উদ্দেশে छ्रहे हांड योष् क्रिया निष्कत्र नगाउँ न्नामं क्रियान। তা দেখিয়া তাঁহার এই ছটি সম্ভানও তাঁহার অমুকরণ করিল এবং এই আক্সিক শেব-ভক্তির অতর্কিত আবির্ভাবে উভরের চিত্তেই কেমন করিয়া তাহাদের অজ্ঞাতে **क्रिंग (यन भाष्टि त्रत्य क्ष्रवार वरित्रा** গেল। তথন ভাহায়া পরম্পারকে হঠাইতে **शांत्रा मछव नव्र मिश्राहे होक, क्रव्या** (प अञ्चर रहोक, এकটा मधा १११ कार्यक्रम कतिन। विनव कहिन, "आंत्र करव, चाक्ररकत মত ছক্তনে ভাব করি—বল ভাব—

একটা গল্ল—"

মা শুধু একটু হানিলেন। কিন্তু অংশী- 'ভাবে'ব প্রকৃত উদ্দেশ্র বোধ করি পডে। তা এমন ঝগড়া ও ভাব তাহাদের এই বিবাহিত ছুইটি বৎসর ব্যাপিরা নিত্যই চলিতেছে। কতবারই গাডী ডাকিয়া আড়ি रम ;--- कठवात्रहे छाव चानिमा छाव रहेमा যার। তা তাহারা তো হটি কচি ছেলে,— • ममख मश्मात्रके ट्या এইরাপ मक्ति-विटब्ह মিলন-বিরহান্তক !

ভাছাড়া সামান্ত কম্বেক্ধানি তালুক ইভ্যাদিও আছে। বরে ছেলেদের অর-বল্লেব অভাব নাই। কিন্তু আধানক কালের অধিকাংশ পিতার স্থায় তিনিও ছেলেদেব সুল-কলেজে লেখা-পড়া শেখানোর পক্ষপাতী হইয়া পড়ার, বড ছেলেট প্রথমে কলিকাভ-বাদী হয় এবং পবে পিভার বিনামুমতিতে বিলাভ পর্যান্ত পলাইয়া গিয়া ব্যাবিষ্টার হইয়া বিশির্মা क्षिका डाट्ड थाक्षिम् बात्रस क्रिशास्। রাগ ঝন্ধার করিয়াও পিতা তাহার পরচ **हानाइट**क्टब्न। विरम्दम शिक्षा ८४ मनकामि তিনি করিয়া আসিয়াছেন, নিজের উপার্জনে ভাগারই খরচ আঁটে না। ছোট ছেলে विनत्रक्रमारतत्र উপর আশা-ভরসা ইহাদের कानमिनरे विनी हिन ना, अथन चात्र अकरे क्रिशारह। यह ह्हाल विनार्ड विनार्ड बटेनक मानवात्र-(मानिष्ठ-विञ्जिष्ठ रेखेर्द्रामित्र कन्ना विवाह कतिया विनिष्ण, मन वर्गत्त्रव ছোট ছেলে বিনয়কুমারের এথানে এক সাত ৰৎসমের স্থ-ৰরের মেরের সহিত শুভবিবাহ-ক্রিয়া সম্পন্ন করানো হয়। षायादमञ शृर्व्वान्निष्ठ नाम्रक-नामिकारे এই एखविवार मच्य मण्यां, विमम्क्यात ଓ উर्मिया।

দশটা বাজিলে সান সারিতে বাটীর মধ্যে আসা বিপিনবিহারীর চিরস্তন নিয়ম। তা चिष्टि त्मरे ममेशे विकास ना विकरिस्टरे शुज्यथ् छिष्पिंगाञ्चमत्री त्मरु वाहित्तत्र देवर्ठक-थाना चरत्र पर्नन पित्रा উচ্চকণ্ঠে হাঁकिलन, "ওগো বাবা, আজ কি ভোমার চান করবার नमम् रूटव ना नाकि रहा ?"

এই রক্ম সে প্রায়ই ডাকিতে আসে। वात्रण कतिया (कान कन পाওया यात्र नाहे।

থাতাপত্র বিছাইয়া তেজারতির গোমস্তা ৰসিয়া; বধু-ঠাকুরাণীর সশক আগমন ও সদর্প আহ্বান-শব্দে কুণ্ডিত হইয়া সে বেচারী মাধাটা একটু হেঁট করিল। চবিৰশ ঘণ্টাই শুনিয়া আসিতেছিল, তাহার সম্বে খণ্ডরের মন্তব্যটুকু क्षित्रा क्छात्र क्ष्णाम, ठारे এ छाक छारात कात्म इकिएररे मेश्रकाल क्षातिमधी जिला কানে পশিলেও মনে পৌছিল না। তিনি क्रेडें। गरे ठिक अक तकम (मथारेटकट्स कि ना, একমনে ভাহাই পৃথামপৃথক্ষপে মিলাইভে ভো কি ? সেই কথন্ থেকে ভাকাডাকি नाशिरनन ।

"বাবা! ৰলি, ও বাবা, ভাক্চি, তা বুঝি?" Al for ?

"বিপিনবাবু वर्ष-वक्रमनद्रष्टार्व উত্তর দিলেন, "আঁচ ্ কিরে পাগ্লি ?"

"মা—গো এডকণ পরে বলা হলো কিনা,—কিমে পাপুলি টান-টান ক্রতে रूटव ना वृति जाक ?"

"हैं।दिन, रूप्त वहे कि। এই य शहे।" कवाव निम्ना वृक्ष वधाकार्याहे कृतिमा রহিলেন। তথন উর্মিলা বিশেষ রাগিয়াছে, সে भत्रकात्र थाका भिन्ना এक है। हमक श्रम भक्त क विन्ना সরোষ গর্জনে চেঁচাইয়া উঠিল, "বাবারে বাবা! ছেলে यन এক্জামিনের পড়া পড়চেন। এই চল্লুম আমি, থাকো তুমি তোমার বই নিয়ে वरम।" विभिनवाव उष्टेश इहेश उৎक्रशार থাতাপত্র ভূমে নিক্ষেপ করিয়া উঠিয়া পড়িলেন। ভৎসিত বালফুের মত করণ কণ্ঠে প্রস্থানোম্বতা वानिक विध्व भारत हाहिया छाकित्नत, "अरत, विभिनवां व ज्थन टांटथंत्र जैभन्न हममा नां द्व नां, बाम्नि, बाम्नि—्व्हे य जामि লাগাইয়া কি সব কতকগুলা পুরাতন উঠেছিরে! ওহে গোষ্ঠ, তুমি ওসব এখন হিসাবের কাগজ-পত্ত-পর্যাবেক্ষণে নিবিষ্ট তুলে টুলে রেথে দাও। এরপর এক সময় ছिলেन; সাম্নে এক তাড়া থেরো-বাঁধা ওসব নিমে আবার বসা যাবে এখন, এখন चात्र इटक ना, चामात्र ८ हा छे-मा-छि अथन (वकांत्र (करशरह ।"

> উर्पिना চলিয়া याইতে याইতে कित्रिया চুলের রাশি নাড়া দিয়া বাঁকিয়া কহিল, "ই্যা, षावात्र वना र एक, — (करण हि! क्लिश्व ना करत्र भवा काठाकि--- वनरछा, त्राभ इत्र मा,

कथा कहेटहा ना त्व वज़ ? जन्त्व शास्त्रा, विशिनविहाती हि सूछ। इहेटात मत्या शा भगारेट भगारेट राजिया देविया योगारमम्, 苏

"আয়তো দেখি, গণাটা কতথানি ফাট্লো?

কৈ, কোথাও দেখতে পাচ্চি না তো।" এই
বিদ্যা হাসি-হাসি-মুখে সমীপবর্ত্তিনী বধ্র কঠমালা-পরা কঠের দিকে লৃষ্টি বিস্ফারিত করিয়
চাহিরা দেখিলেন এবং অয়-একটু মাধা নাজিয়া
বেন আত্মগতভাবেই কহিলেন, "হায়রে, ও
শানারে গলা না কি আবার ফাট্বে।" মন্তব্য
শুনিয়া উর্ত্মিলা খিল্ খিল্ করিয়া এবং বুদ্ধ
গোমন্তা মুচ্কিয়া হাসিয়া ফেলিল। উর্ত্মিলাখশুরের হাত ধরিয়া টানাটানি করিয়া বলিল,
"যাও, তুমি বড্ড চুষ্ট হয়েছ। অমন করে কথা
বলো ত তোমার সলে আড়ি দেব, তা কিছে
বলে রাখিচি।"

" ज इरन जामि यमि वरन कामि?" বিপিনবিহারী ততক্ষণে বৈঠকথানা ধর হইতে वाहित रहेना मणूथक वाताला मिन्ना वन्मदनन मिरक व्यक्षमञ्जू इहर छ हिरमन ! छ सिमा विकरतन হাত ধরিয়া তাঁহাকে টানিয়া লইয়া বাইতে যাইতে বৃদ্ধ-বালকটির মুখে সেই সন্দিন্ উত্তর खनियारे खरकनार अयकिया मांडारेया পড़िन, এবং হুষ্টামি-মাথানো সমস্ত মুথথানিকে ভাহার এক মুহুর্জেই গভীর করণামণ্ডিত মেহে উত্তাসিত করিয়া পূর্ণনেত্র খণ্ডরের মুথে স্থাপন করিয়া বলিয়া উঠিল, "বাবা, বাবা, তুমি क्लिमा। এक देख किमाना। आमि कि কথনও ভোষার সঙ্গে আড়ি করে থাকতে পারি ? ভূমিই বল ভো, পারি কি ? সে वदः यात्र गटक रूटक शटत, ट्यायात्र मदण एटव ना ।"

বিপিনবিহারীর চোধের কোণগুলা হঠাৎ বেন সভাকার বালকের মতই তাঁহার এই ক্ষা মারের এই সাম্বা-কেছ-প্রকাশে আর্জ হইয়া আগিল। তিনিও নিবিড় ক্ষেত্তরে তির নীড়ের ক্ষুত্র পাথীটকে নিজের কাছে টানিরা লইয়া তাহার মাথার চুলের উপর নত হইয়া চুখন ক্রিলেন; তারপব মমতা-মথিত মৃত্তকঠে কেবল মাত্র করাট কথা উচ্চারণ ক্রিলেন, "তুমি যে আমার মা।"

कथा कहिए कहिए इहेब्स्न वागित्र मर्था আসিয়া পড়িয়াছিল। বাবুকে আসিতে দেখিরা বাবুর চাকর মধু ব্যস্ত-সমস্ত হইরা তেলের বাটি ও তেল-ধুতি-হাতে ছুটিয়া আসিল। তথন শীতকাল, রৌজে সেবিভ বারান্দায় ছোট একটি পাটি পাতিয়া তেল মাখা বিপিনবাবুর নিয়ম। গড়গড়ার তামাক সাজা ছিল, আসিতে একটু বিলম্ হইরাছে, আগুন ঈষৎ নিচ্ছাত। উৰ্মিলা সেদিকে वाद्यक ठारियारे मधूटक উদ্দেশ कविया विशेश, "ও তামাক সব পুড়ে ছাই হয়ে গেছে। या, তুই শীগগির এক ছিলিম ভাষাক সেকে নিয়ে আৰ, আমি ভতক্ষণ বাবুকে তেল মাথাই।" ় বলিয়া তেলের বাটি টানিয়া লইয়া খণ্ডরের পারের থানিকটার সে তেল মাথাইয়া मिन। मधु कि वनिष्ठ याहेष्ठिम, উर्णिना বাম হাত নাড়া দিয়া অপ্রসন্ন স্বরে বলিশ, "ना, ७ भूष् (शष्ट्र। जूरे जाग करत्र (मरक निदत्र कात्र रश या।"

जरे कुछ मनिवरीय एक्म य कठ-वर्ष जनका मध्य, मध्य जाहा जालाक्रमहे बामा हिन, म्म जनबंधे हरेला जात्र विक्रिक कतिन ना। कनिकार। केंग्रेश नहेश जाश्रा जाश्राज्ञ जान्यक ममस हत्रण हिनश श्राज जरश कित्रिक्ष यथा-माधा विनय कतिश श्रीक्रिमां कृतिवात हिंडी क्रिन।

मधु मृष्टित वाहित्र इहेन्रा शिला चेखरत्रत्र नध পিঠের উপর ভেল্যাথা হাত্থানা বুলাইতে वृणाहरू वध् छाकिण, "वावा !"

বিপিনবাবু তথন তামাকের ভৃষ্ণায় ঈষৎ বিষয়। মুখের নিকট প্রসারিত চুম্বন-প্রয়াসী অন্তমনস্কভাবে তিনি উত্তর দিলেন, "মা।"

"সভ্যি, বাবা ?"

"**कि** मा ?"

वन्त्र, (त ?"

এখুনি বল্লে না ?"

"হা। বলেছি ভোরে। তবে বুড়ো हरब्रिह कि ना, डाই कि रव विन, मत्न शांक डथन निस्त्र कौर्डि हार्थ পড়িতে नज्जा ছেলের ভুল-টুলই না শুধরে দিবি।"

উর্মিলা মুথের আপ্রাম্ভ কল্যাপ্ময় স্নেহ-হাল্যে মণ্ডিত করিয়া জোরে জোরে পিঠের তাঁহার পিঠের তিনভাগ তেল বধুর মুখে উপর তৈলাক্ত হস্ত ঘর্ষণ করিয়া সাগ্রহে বলিয়া মাথায় ও কাপড়ে উত্তিয়া আসিয়া উহাকে উठिन, "हा।, धे कथा। धे कथांने कि मांचा त्रका कतिन। धारिक उउक्रत्य जामाक योग ?"

"कहे, कान् कथा दा ?"

"আঃ, বড্ড বোকা তুমি!" এই বলিয়া यहात्र जुणिवारे क्ठांप विनौज ७ कामण कर्थ সে উষৎ ধেন শজ্জার সহিত পুনরার প্রাপ্ত করিল, "সভি্য কি সোমি ভোমার মা হই ?"

विशिन वाव উচ্চকণ্ঠে হাসিয়া উঠিলেন, আলবোলার নল মৃত্যুত্ত সাদরে আহ্বান হাসিতে হাসিতে বলিলেন, "শোন একবার कत्रिरङह्— अथि (প্রয়মী প্রাণময়ী নহেন! কথা! মা হয়ে আবার বেটি বলে কি না, সত্যিকারের মা হই ? মা বৃঝি কারু আবার ্নিথ্যেকারের হয় ?"

উর্ণ্মিলা এই উত্তরে অত্যন্ত খুসী হইল। উর্দ্মিলা একটু ইভস্তত করিল, পরে আনন্দাভিশয্যে যে কি করিবে কিছুই স্থির বলিল, "এই যে তুমি বলে ?" বিপিনবিহারী কলিতে না পারিয়া খুব থানিকটা তৈল লইয়া ঈষৎ বিশ্বিত হটয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, "কি সেই সন্থ-সাব্যস্ত হওয়া বুদ্ধ ছেলের সঙ্কীর্ণ পৃষ্ঠে সে চাপড়াইয়া দিল। বিপিন বাবু হাসিয়া "মাগো! তুমি বড়ড ভূলে যাও! এই কহিলেন, "মাগো, আবার কি আমার তুই ' তেলে-রোদে শক্ত করছিল মাণ কত তেল **जिम्हिम्, वन् तिथि ?"**

न। তবে আর মা হয়ে কি হলো, यमि বুড়ো পাইয়া মা-ঠাকুরাণী ছেলের সেই তৈল-সিব্রু পিঠের উপরই নিজের লক্ষিত মুখখানা লুকাইয়া ফেলিল, এবং এই উপায়েই সাজিয়া মধুও আসিয়া পৌছিয়াছে।

ক্রমশঃ

শ্ৰীপত্রপা দেবী।

আলোর পাথার

কে বাজালে মাঝ-দিনে আজ প্রহর-রাতের স্থব সাহানা।
শহা পৌর মেঘের মেলায় জন্ধ-চিলের মিলায় ডানা।
জদা-কাঠির গম্বজতে ময়না জেগে স্থপ্ন দেখে,
শিউলি-ফুলি হাওয়ায় ভেসে ঘাসের ফুলে কড়িং ঠেকে।

গাছের সোড়া গোল্টি ক'রে নিকিয়ে ছায়া আয় নিভৃতে, সেই চাঙালে রাথাল আসে এক টুকু গা গড়িয়ে নিতে। জলের ভালে । ল্ছে মাঝি বাঁধা নায়ের ছই-ভলাতে, টুন্টুনি ধায় এক্লা কেবল করম্চা-ভাল টল্মলাতে।

পালান্-ছোঁয়া শাঁওলা ঘাদে বাছুর গোরু চর্ছে পালে, নাড়িয়ে হ'কাণ তাড়িয়ে মাছি লোটন্ ল্যাজের ছেপ্কাভালে, দীখির জলে ক্রপোর ঝিলিকু দেখছে ব'দে মাছরাঙা সে, চল্-নামা জল থিতীয় গাঙের যায় স্থাখা তাব পাড়ভাঙা যে।

পতর্-আঁটা গতর নিমে চল্ছে গেতো বোঝাই ভরা,—
মাঝাই বেলার গোড়েন্ স্বরে গোড় দিয়েছে নেইক ত্রা।
দূর কিনারার পাঁজর-থোলা মেরামতের নৌকোখানা
প'ড়ে প'ড়ে ধেয়াল ভাথে ব্যাদিনের প্রলম্ব হানা!

চরের পরে ঝিমার কাছিম, চোথের পাতে মোতির দানা, পিঠেতে তার ঝিমার ব'সে শামুক-থুলি পাথীর ছানা। মরালী ধার লছর তুলে মরাল তাহার ফেরে পাছে, দোলন্-টাপার নিথর মোহে মগজটা তার ভ'রে আছে।

মাজা আলোর সাজন সাজে, বিজন গেছে মুঝ চোধে,— বাজন বাজে বুকের তালে,—আরনাতে মুথ দেখছে ও কে! আতর-ভরা চাওনি দিয়ে আপনাকে ও বরণ করে, টাপাই আলো সাত্ররোকার ঝাঁপার রে ওর চরণ পরে। चारनांत्र बाठत विভिন्न यूचि এই बनक्रन क्रन रनरवर्छ, करणत श्रापत रगोत्राज जाम्यान ह्रात्रह जान ह्रात्रह, व्यान्यात्म व्याद शद्रात्व व्याव त्यामात्र त्थार्डन त्यामात्र होना, **खेकि-थ्वन प्राप्त प्रमाप्त इंग-मिथून मिनाव खाना**। •

শ্ৰীসভোজনাথ দত্ত।

প্রিয়ার উদ্দেশে*

याक् जब हृत्क (शहर । जामात्र कझना-প্রবণ মবিংকে সেটা শুধু একটা শ্বপ্লের মত **टकरशिक्ण**। কাছে আমাদের পরস্পারের বিশায় নেওয়া र्प ভোষায় জানাই নি। কতবার বলি-বলি করে বলা হয় নি—প্রতি সন্ধ্যায় তোমায় किरत धरम निकरक কাছ থেকে त्रकरम सायी करत्रिं, मात्रा द्रांख धरत एटर्नि, व्यापात्र यथन (प्रथा रूटन, एथन (क्रमन करत ভোমার কাছে সব কথা গুছিরে বল্ব। কিন্তু রাতের আসা-যাওয়ার ত একটা শেষ चाट्छ। ट्यांबात मटक मिनटनत टमेंच मका। **(कर्छ ८ अरह। किन्द एकामात्र किहू है विनि।** कान युक्त काटब किरत बारबा, ट्यामात मरक अथम मिनरमम मिन ध्यमन चर्छना हिन्म, অপরিচয়ের সেই সমস্ত ব্যবধান আবার व्यामारकत्र मायेथारन क्लारंग डिठरन ।

আমার মনে হয় হয়ত তুমি আমার

ভেবে আমি খুব খুসী হয়ে উঠছি। কোন্ অধিকারে ভোষায় ভালবাসা निष्कत कीरमित्र 'शरत यात कारना हाङ গেছে--আর কিছু নেই-মাসের শেষে বাঁচ্ব কিনা তাই जानि ना! ध भव (काल-खान काला মেয়েকে ভালবাসা জানাতে যাওয়া আমার कारक बिजास व्यापोक्रस्य वरण यस्न इय ।

कथां छोटक निष्कत्र काट्स ट्रां ट्रांस न्मा है করে নিতে চাই, যাতে সেটা কীটার মত ममन-व्यमभारत मान्य मार्थ ना वारक, कारकत বিন্ন না ঘটার! ধর, তোমার আমার প্রেনের কথা জানাতুম আর তুমি যদি व्यामात जानवानारक वत्र करत्र निष्ठ— তার कन হতো कि ? म छ क्विन छ:थ! যুদ্ধ শেষ না হওয়া পৰ্য্যন্ত ছজনে একত্ৰ 🕆 হতে পারতুষ না, আর এই স্থার্থ সময় তোমার কাছে কভ নিংসক কভ নির্জন মনে হোড। তুমি কেবলই ভাবতে, কেমন अत्मन्न कथा गव वृत्यह। जुनि मा खानल करत्र चामि छान थाक्व, नित्रांशस थाक्व! কি আর তোমার এত ভালবাসতে পারি। অথচ ভাবনাই সার হোড। আমি যবি কিন্তু না—ভোষার বে কিছু বলিনি ভাই আছত হতুম, তুমি আমার মৃত মনে করে

Love of an Unknown Soldier—Published by John Lane, London.

निर्द्धत भी वनस्क नर्य-शोत्रव-विक्षिण मरन व्यवस्थान श्राह्म (वर्ष क् र्यन (केंग्स করতে। আমি আহত হলে তুমি ত আর কেঁদে উঠছে। যৌবনের প্রথম জাগরণের व्यामात्र कार्ष्ट थाकरक পেতে না—তোমার সমস্ত চাঞ্চল্যকে একটা 'না' प्रिय नित्रष्ट ভো নিজের একটা কর্মজ্জে আছে, প্রাত্যহিক করি কেমন করে ? না, এ সব নিয়ে আয় 'कर्छरा আছে—सुबूब मार्किन (शटक এमে তোমরা যে অসহায় ফরাসী শিশুদের সেবার ভার নিয়েছ! ভার পর ধর আমি হয়ত विक्लाक २८७ পারি— ফরাসীর পক্ষে যুদ্ধের আৰাত-চিহ্ন তার প্রসাধন—আত্মোৎসর্গরূপু নব ধর্মের সে যে বিগ্রছ। আমাদের কাছে কিন্তু তা একেবারে বীভংগ। বিকলাঙ্গ लाकरक मात्रा कोवरनत मुको करत द्विवात्र তঃথ দেবার মত হীনতা আমার নেই—-আর সভ্যি বশতে কি, রোজ তুমি আমার দেখে बाखरत बाखरत कष्ठे भारव, छ। बामि कान् ट्टार्थ मिथ्व ? स्विक्शा करे, युर्क मानि মরতেও পারি—ভারই বা ঠিক কি•? যদি তোমায় বিয়ে করতুম, তাহলে সর্বস্থ থেকে বঞ্চিত করে তোমার জীবন কেবল বার্থতায় ভরিয়ে তুলতুম ৷ না, তোমায় ভালবাসার कथा य किছू कानाह नि, जाहे एउट पाक আমি বড় থুসী।

व्यावात्र (मथ--यमि वा मूथ कृष्टे वमकूम, कुनि इत्रक कामात्र উপর বিরক্ত হতে, রাগ ট্রেঞে ব'লে শীতে যথন মনটা নিরানন হয়ে করতে, আমায় প্রত্যাথ্যান করতে; কারণ উঠবে, তথন গত দিনের স্থ-স্থতিটুকু কত আমি ভার চেয়ে বেশী পাবার মোটেই উপযুক্ত প্রিয় হয়ে উঠবে! ভোষার সঙ্গে আমার নই। তোমার পক্ষে আমার প্রভ্যাথ্যান প্রথম সাক্ষাতের পরীর গল রচনা করে **बरे तकरमत्र वाजनान, बरे गव ভाषाणांक कत्रवात्र कथा नित्य क्यम करत्र घटेनाहरक ल** वित्र, जामात्र काष्ट्र जात्रि विममृत्र किएक- कथा भिर्ण द्वरथिह, मिरे भन्न। <u> এश्रमारक जामि करे</u> विश्वाम करेड <u>माम करेडक जारभकान-</u>म ब्राह्व

ভাব্ব না—ভাবতে গেলে মন একেবারে বিরস হয়ে ওঠে!

এথনও কিন্তু তোমায় বলবার সময় আছে! ওধু টেলিফোনের রিসিভারটা উঠিয়ে নিয়ে তোমায় বলা—আছা, যদি বলি—ভূমি তা হলে কি জবাৰ দাও ? বিবাহ-প্রস্তাবের একটা অস্কুত উপায় বটে! রাভ ছটোয় **জেগে উঠে প্রেভের মত এফটা ক্ষীণ গলার** আওয়াজ শুনছি—আপনি অমুক—? আজ मात्रा मस्काष्टा त्व व्यानमात्र मध्य हिन, व्यामि (महे लाक—एश्रु चाक मस्या किन, भारितम ছুটীতে এসে वछ मस्ता काण्टिमाइ— व्यामि (य व्यापनारक पूम (एटक व्यापिस जूरनहि, रन ७४ এकটा कथा किछाना कत्रवात्र জন্মে—আপনি কি আমার বিয়ে করতে भारतम १

এ जीवत्न या किছू श्रंड भाव् छ। আর ভাব্ব না—স্তিই শুধু আমার কাছে প্রিয় হয়ে থাক্। মাটীর নীচে সঁয়াভা করাটাই উপযুক্ত হোত, কারণ যুদ্ধের সময় নিজেকে শোনাব—ভোষার স্কে দেখা

शांति मा। किन्न वक्ति विशा-कान्यदावन कथा कि एकामान मान शरफ १ वर्ष कान्य

ব্রিটিশ মিশনে আমি আমেরিকা जिएमहिन्य। जात्र किह्नाम आर्थ आरम्बिका व्याचारमञ्ज ममञ्चक इत्याम् । (देशकत म्दरा यानव आषात्र (शोतव व्याशा कवाई छिन আমার কাজ। বভুতার শেষে হল্টা য্থন প্রায় থালি হরে এসেছে, কে একজন, ভোমায় निष्य अरम स्थामात मह्म भारतम कहिएस मिरम। শুনলুম যুদ্ধের অভ্যাচারে যে দব শিশু নিঃসহায় र्ट्सर्फ लार्षिय रगवात्र छात्र स्मराज्ञ কৰ্ছ। তোমার চোথের পানে চাইলুম। কি দেখলুন ? সে রহস্তময় দৃষ্টি আনম क्रिंग्सिकारम खूमर्ड भात्र न'-- भागात्र मागरन कृषि माँ फिरम्हिल-मीर्थ, शकु এक हि ভষী, গোলাপের সক্ষ ভালের উপর ছোট একটি কুঁড়ির মত—পাপড়িশুলো তথনও (यन कान करत (थारन नि। गुरक रय जव वाम ७ नगत महे हरत थरःम-छ भ शिवक হয়েছে তালের কথা আমি বেল জান--- এহ खारमञ्ज काटक व्यामित कटनक माहाया करत्रछि। कांबारनत्र Cत्रानात्र चारत्र बाह्य बाह्य (करहे त्य-मव गर्ख स्त्याक, जात्र मत्भा ज्यानाश्व कल भल भव शहरक। किस रम छ्विय मरश्र भिष्ठे विषठ वीखरमछात्र मस्या स्थापक দাড় করাতে পারবুষ না—ভোষার স্কুকোষণ ञ्चाणिक मार्गा (यन (म्थारन क्यांमायर क थान थात्र ना ।

उथन कि वालाह्नुम सानि ना—छ। चार्यात्रं मत्न ८न्छे—कवामीत्मन्न शुला-घाँछ। (हरणरमञ्ज कार्शक्रिक बडाज वर्श द्वांध क्रि-निष्ठांख बाटक, এटकवांट्स ध्वतांखन्न निष्ठम् ।

काट्ड विशास निज्य। तम ब्राइटी किन्द 1510) (सर्ग नाना ভাবনায় কটিভে হয়েছিল-পর্দিন ভোমার গুভবাতা জাপন करत टिनिकान संत्रम्म, तम ख्रु ट्यामात মধুর কণ্ঠস্বর শোনবার লোভে। জুমি ख्यम कारारक हरफ़ ए ज्यम मरम मरम প্রাভজ্ঞা করপুম, ফ্রান্সে ফিরে গিয়ে বেমন করেট হোক তোমার সঙ্গে দেখা কর্ব। ধ্কমন করে যে তা সম্ভব হতে পারে তা তুমি একদল গেয়েব সঙ্গে ফ্রান্সে দাত্রা আমি নিজেই ঠিক করে উঠতে পারিন। নিজের কাছে প্রতিজ্ঞা করেছিলুম-এবং त्म खेलिका चाार भागन करब्रि ।

> এই कि व्यमुष्टे। (काशाय मिहे सन-কাদার রাজ্য থেকে প্যারীতে চুটা পেলুম, व्यथि ख्यन ,व्यामात कृषी भाषात्र (कारमा সন্তাবনাট ছিল না। অবশ্র ছুটা পাবার একমাত্র কারণ, যে আমার উপরওয়ালা प्यत्न करे ज कौरन ८०८क प्यत्न निष्युक्त বাকি যাঁরা আছেন তারা বড় একটা ছুটার ष्यानात्र हिल्लन। भारीएक ष्यानवात भरम भरम भरत भरति क्रा कारक कारक (मश्टल शांव। माळ **এक** हि (मरत्रत्र महन আমার পরিচয় ছিল—ভার সঙ্গে দেখা करार शिर्म अनम्म, कृषि छात्र मासह আছ—বোধ হয় এরই নাম ভাগা। আমার किक मान इस जात मार्था चात्र किह आर्छ।

खाशम मिन তোমার मज स्वर्ध हम मा; भरत्र मिनरे किन्छ फूमि नित्य धाम यामाम **एक्टिंग । जामांत क**श्चि **गर्थ वट्स जागात क**हे कुमि निष्प्रह, अहे गाभाषि जामान कारह मध्यम् कर-मित्रज गत्र बाधरा भवन्भरित्र ७७ मक्न यर्ग मान रूगा थ्य न्भारे ना

हरण ७ जी द्वानूम, ट्यामात प्यामात रमह হঠাৎ পরিচয় একটা আকম্মিক ব্যাপার নয়, व्यामारमञ्ज ठाविभिष्क त्यन अक्टो ब्रह्त्अव कान বোনা চল্ছে, আমার সম্বন্ধি তাই বেন তোমার এত কৌতৃহল। সেটা আমার আত্মগর্বও হতে পারে, কিন্তু আত্মগর্ককে ছাপিয়ে আরও একটা কিছু ষেন এর মধ্যে ছিল। আত্ম-भर्त्वब्रहे वा लाम कि, वला १ रेमनिरकत कीवन ७ कान-- काथाव कान युक्तक्व नीर्फ স্থাের মত দিন কাটে—অতীত জীবনের সকল গৌরব ও আপদসস্কুল ভবিষ্যতের आविखर्के ७ म्हिशान्हे काष्ट्र। कीरानव এই अझडाटक এमनि करत्र मृलायान करत তোগাই ত তার সভাব।

टामात्र निक त्यनिन त्मश्री हण, तम निन রবিবার। আমি থুব সাহদ করে তামায় ছিপ্রহরে আহাবে নিমন্ত্রণ করপুম এবং তুমি অস্তুত কিছু ঠেকি বলে এই চিস্তা বীভিষিকার (म निमञ्जल निःमक्काटि शहल करत्र कामांक मठ कामात्र (भएत यरमिक्का। कि कानि ंटकवादत्र व्यवांक कदत्र मिटन।

Elysees যাবার পথে আযার প্রতি পদক্ষেপ ष्यात्र প্রতি মনোভাষ আমার মনে গাঁথা পাবে কি না সে বিষয়ে সে মোটেই নিশ্চিত আছে। কোমর-বন্ধ আর জামার বোভাম यरम (मर्ब्य भित्रकांत्र कंदर्ड जामात्र रंग कंड সময় গেছে, ভূমি তা ভাৰতেই পারবে না! সভাি পুরুষরা এই রকম! ভূমি বোধ হয় খুব ছাস্ছ--কিন্ত তুমিও বোধ হয় নিজেকে রমণীয় করে তোলবার চেপ্তায় এই রকমেই ममम काहित्मदछ। यमि ना-७ काहित्म थाक ज्यु अरे कथा। जातर जारमा मागर ।

मत्नत मात्य कि ट्यांनाभाषाई हमछिन। मत्रमङाद्य मव कथा वन्द्र कि १ जामात

अञ्चन विकास विकास किया विकास का व्यापाल मत्नाकावण शएक केटहेिल, जामा, वाममा, সন্দেহ আর তোমার কাছে পাছে অভুত কিছু ঠেকি এই ভয়ে। তোমার অভে আমার বড় মন কেমন করছিল—তোমায় পাবার বাসনায় আমার সমস্ত ८नश्-मन छद्र উঠেছিল। আশা হচ্ছিল বে ভোমারও মধ্যে হয়তে। এমনিধারা এই বাসনাই জাগছে। गत्नहरी (कन, कान? मत्नत्र मार्स (कामात्र যে - মৃত্তি গড়ে ভুগেছি, তোমাম দেখে পাছে সেটীর হলভত্ত নষ্ট হয়ে যায়, পাছে তা সাধারণ इट्स शर् । जामात व्यक्ति (मर्बह्र ? जिन्दारमञ् ष्पात्र कात्रशा भारे-नि। ष्यामि नाकि ष्यानका ক্রছিলুম তুমি হয়ত সাধারণ মেয়ের মত-मनवानत गड, बनाड यात्रत गढ थाडार দেখা হয়! আর তোমার কাছে পাছে মেয়েদের এই ভাব হয় কিনা! দেখেছ, ভাল-মনে হচ্ছে, ভোমায় ডাকতে Champ বাসায় পড়লে পুরুষকে কি ভয়ানক ক্সুবিধা পোয়াতে হয় ? ভার ভালবাসার প্রতিদান নয়। আর আমার ত এ সম্বন্ধে নিঃসন্দেহ হ্বার कारना कथिकात्रहे त्नहे—मूर्यत्र कालाश ছাড়া আর সব বিষয়েই তোমার কাছে আমি একজন অপরিচিত বই আর কি।

> তোমার হোটেলে গেলুম। দরোয়ানকে যথন ভোমার কথা জিজাসা করসুম, সে আমার দিকে একটু সন্দিগ্রভাবে তাকিয়ে कड़ा सुरत कानारण रय कानांत्र कानांत्र थनत ट्यांबा द्यारा । द्यांबा का इत्या करत निजा अनिक्शियक्र (यन नदम त्य धीमजी

अधमहे नामरवन। चामि चरशका कत्ररू লাগল্ম। কভক্ষণ অপেকা করেছিল্ম, তার ठिक (महे-चून मखन शांठ मिनिए; कि छ । भ সময়টা भीर्ष এक भेडाकी व ये यटन .इत। धक्छ। कदब रमरक्छ छिक् करब हरण गाम, भात्र निष्यत्र वान्शादत्र निष्यत्र छेशत्र विद्रास হয়ে উঠি—কত সামাগু পরিচয়ে তোমার উপর জুলুম করচি, এতে আমাম ভূমি কত আহাত্মক মনে করবে, ভাই ভাবছি।

সিঁডিতে তোমার পারের শব্দ শুনতে भारन প্রসারিত ক'রে সামনে এনে দাড়িয়েছ আমার সর্বাবে বিহাতের মত থেলে গেল। বিধ গুৰ্গতি থেকে মুক্তির দিনগুলো হাস পাতালে খমে খমে গোণবার যে হুখ, এ খেন ভাই। এ সৰ যা লিখেছি এতে কিছু বলা रुष्क ना। এ একেবাবে অপস্পূর্ণ—या আমি অমুভব করেছি ভার কণামাত্রও এ চিঠিতে म्मार्मित कथा वम्हि, किस अथन मत्न इटाइ, তোমার চোথের মমতা-মাথা দৃষ্টিই আমার সব চেমে অভিভূত করেছিল।

मूर्थ धरम गांगरह—गरदत्र दिख्छ तांकभर्षत कारह धर दहरत कान्हर्सात्र विका आंत

उপत्र आयत्रा त्वकाछि । এको द्वारम केर्छ चायवा गव शाम करत्र स्ममूय-चार्यात्र चात्र अक्**डा द्वीय हर**फ काथात्र यार्चा, ठिक कत्रमूम। স্ব সময়টা আমরা গল্প কর্ছিলুম, প্রশ্ন তুল-ছিলুম। আব পরস্পারের উত্তরের অবকাশে আবার নতুন প্রশ্ন কেগে উঠছিল। ভারপর द्वीम (अटक दमरम हलांत्र क्यांनरक क्यांमद्रा श्रुव বেড়াে । কাগলুম। তোমাকে আমার পাশে পাওয়ায় আমার মনে কভথানি গর্ক জ্যা হয়েছিল তা তুমি লকাই করনি। কভ লোক পেলুম। মৃত্ একটুথানি থসথস শব্দ—ার থেকে-থেকে ভোমার দিকে চাইছিল—না, পর দেখি তোমার স্তকোমল কব আমার ুমি ত কথনও লক্ষা কর না—তোমার এচটিই সব-চেম্নে আমার ভাল লাগে---—বালিকাৰ মত সহজ, বন্ধুর মত হায়। সে ভোমার নিজের সম্বন্ধে এই আনন্দময় हाङ्थानि म्लोन कत्रनुम - এक जाशूर्स शूनक खेमामीख। माञ्हा, जामात्र हरियाना এकरात्र কল্পনা কর। আমি তথন সমস্ত প্লানি, যুদ্ধ-মনে হল খেন বেঁচে উঠলুম—দীর্ঘ দারুণ ক্ষেত্রের সমস্ত মালিক্স থেকে মুক্ত হয়ে পরিশ্রমের সমস্ত ক্লান্তির পরে বিশ্রামের এসোছ যেথানে মানুষের একমাত্র ভাবনা, আবেশ স্থাবের মত আমার উপর নেমে এল। কেমন কবে বীরেব মত মর্ব—বেধানে মেরে युष्क्रव वर्त्तवका, नीक बात्र युक्त रूप वाना वा निक्र (भथा कान कार्निक स्मर्ग मा----মাতুষ বেখানে মনেব কোমগভাকে প্রাশ্রয় मिट्ड मार्म भाष मा, भाष्ट् काश्वर वटम यात्र— त्यथारन ज्याचात्र त्नोक्या हाए। जात्र कारना भिन्मर्ग तिरु, - स्थारन खरियारखन मकन फेक्ट ज्ञामा व्यवमुखा वाहेदवरनत्र मह প্রকাশ কবতে পার্নছ না। তোমার হাতের কুটে লাজারসের (Lazarus) মত আমি र्यन नवकौवन माख करत्र পाति महरत्रत्र **म्बर्ग स्मा**त्रीत्र शांत्म शांत्म (वड़ांक्टि। **এ** अभिन की बत्तित मम्ख मिन्या, ममख व्यथम मिनात्नम नक्का ७ महका उथन जानम (थरक विकेट इस धूरनाकाना चूट्टिक्-- बाय्-विकिश जूबाब-कवा जाबादमंत्र जात्र मिनजात्र मध्या देव भएक्छिन, जात्र

कि हट्ड शादा १ चाव्हां, ट्डांशांत्र कि मत्न स्य १

Cafeco lunch খেতে গিমে কত যে मका रुण ट्यांमात्र मदन, चार्छ ? कि चार • ভाই ঠিক করতে গিয়ে কি ব্যাপারটাই হল! व्यामात्र कदाना वलएक नाधिक्त वरल कृमि मूथ छिट्ट छिट्ट इंगिइटन, त्न्य निष्क कथा করে আমার সে যাত্রা বাঁচালে —অদ্ভূত লোক-গুলোকে দেখে আমল কি রকম হাসছিলুম —সবাই যে ভন্ত, তা নয়, কিন্তু বেশ হান্ত বলে गत्म हुन।- आंत्र आंभताहे वा दकान् अधि-काद्र ज्ञानद्व प्रतिक ८५ हानि – शृक्षिवीत কোন্ পারাপার থেকে অকন্সাৎ কিসের ফেরে আমরা ত ছলনে কাছাকাছি হয়েছি! সেটা কি সব চেয়ে অস্কৃত নয় ?

वत्रक পড़ हि—नत्रम कून हिना वत्र एक का জামার পশমের উপর চক্ চক্ করছিল। তোমার ছেড়ে बिट ইচ্ছে হচ্ছিল না তাই Luxemburg বেড়াতে यावात धाराव করবুম। ভাগাক্রমে একটা ভাড়াটে মোটর গাড়ীও পাওয়া গেল—দরজা বন্ধ—দেই আমরা একলা হলুম। সে এক বিচিত্র অহভুতি। व्यामारमत्र कथा कफ़िरत्र शिण; व्यामत्रा क्रकरन टिविटनत्र मायथारन वीजि व्यन्टक, ছেन्त्रा धारक वादत्र हुन रूपत्र (शंगूम--वृत्कत्र मादव रवन विफ वहे छिन। अहे वोहेरव्रे ब्रेश (शरक তকাৎ হওয়া, এই একলা হওয়া,—্যা আমি खर कर्वाङ्ग्र, अर्थे भारतर शत यात्र महन महन **अर्हेट्हेटक्ट् दिनी कदत्र हार्हेहिनुम।** ट्वामात्र সম্বাদ্ধ আমি অভিমাত্তার সচেতন হরে উঠলুম, ছিলুম। ভোমাকে ত সেই Chestnut এর **(जामांत्र (जोनार्य) जामांत्र शक्क शिक्षांमक**

হবে উঠ্ল—আমার বেন ভিতরে ভিতরে আবাত করগে! আমি তথন ভাবছিলুম-সে শ্বনা আৰও আমায় ছাড়োন—হয়ত তুমি व्यामात मरनत कथा वृक्षरक (পরেছ। ভোমার বেন এখনও প্রত্যক্ষ দেখছি, বরক-ঢাকা জানলার গামে ভোমার একপাশ বেশ উজ্জল, আর দেগছি তোমার যুক্তকরের শচঞ্চ বিরতি। সে সময়ে তোমায় একে-वादत्र व्यव्याभा वरण मरन इरम्राह्म — वरश्रत भड जूमि ६६७ निरमस्य मृत्य मिनित्र स्वर्छ भारत माथाव मत्या नाना वर्षा हणा-दक्षा " कत्रहिन, कड य कानाकानि! किंद कथा-श्वरणा अर्थान भेजा (व मूथ कृटि यहा जाति হাস্তকর শোনাভ, নিশ্চয়ই। আর সময়ও ত थूर दिनो हिल मा। आभि ভাবছিছুম, यनि Cafe थ्एटक यथन देवक्रमूम ज्थन क्लारम थारक उरव आभात हुन क्र्रावांत्र व्यार्शरे कांभारमंत्र विरंग्न रुख यार्व।

হীরের টুকর্নোর মত ভোমার চুলে আর আবার ধধন ভিড়ের মাঝধানে এসে পড়লুম, আমাদের চিন্তার ধারা বদলে গেল--চিন্তার গাতও যেন বাড়্ল। পরস্পারকে षात्र ভবের চোথে দেখলুম না—षाभाष्ट्रत याया (थरक खरत्रत्र बावधान चुरुएका। जाना-विट**ङ এकथाना ছবির সাম্**নে **আম**রা व्यदनकक्षन मेर्गिष्ट्य हिनूम--- ८ हरनदम्य व्यवस ठांत्र भारम रथगरह, कांत्र भाष्ट्रत ठाम कांनामात्र कें कि निष्टा इति त्मर्थ भरत्रत्र कथा, স্থৃতির-ভাণ্ডারে-জমা অনেক ব্যথা মনে জাগুল।. ছবিখানা একজন মচ শিলীর ভাঁকা — अञ्चरकार्ट পড़राज ममन्न छारक स्वर्थ-**ভাগ চুরির কথা বলেছি—তাঁর একথানি ছবির**

পিছনের দৃশ্র তৈরী করবার জল্ঞে ভোরে উঠে warden এর বাগান থেকে ভাগটি চুরি করতে হয়েছিল।

Luxemburg वाजात्मन मत्था . ष्यामना বেড়াতে नाभनूम—िक ञ्लब वि! युक्त विन কোপার দুরে সরে গেছে। পথ পিছল ছিল वरण ट्यांत्र होड धरत माहांग करत्रिह्यूम, অথচ তোমার অনিজুক হাত তুথানি আমার হাতে রাধার মনে মনে ভারি হাসি আসছিল। পুকুরের উপর বরফ জমে গেছে—লোকেরা **मिथारन फिए करत्र १क्टे करारह , तुर्छ।-एहरन-**CACA-देर्मानक नवारे ठौदकांत्र क्वरह, व्याहाङ थाटक्ट, जादमङ कानम कांत्र शदर ना !

Boule Miche Mrs Notie Dame এর দিকে অগ্রসর হলুম; মেয়েরা সেথানে প্রার্থনা করছে—লোকান্তরিত থাবা, তাদের कत्य। क्राय भागता मीन नहीत्र छीरतत्र मिटक हज्ञूम— अञ्जामी ऋर्यात्र अञ्चिम कित्र (मर्ब बक्तधांतात मर्ज मीम बरत्र हरनहरू। मृजुाव সজে বোঝাপড়া করবার ত সময় আসেনি---चामारमञ्ज वन्नम चुव ७ (वनी नत्र। (मरे সময়ে তুমি বল্লে, আর কোথার তোমার নিমন্ত্রণ এডক্ষণ জমা হমেছিল তা এক নিমিষে নষ্ট रुस्य (श्रेटा ।

"আপনাকে বাড়ী পৌছে দিয়ে আসতে পারি ?"

"(यम क ।"

ভাড়াভাড়ি একটা taxics লাফিমে উঠ্যুৰ—আমি প্রাণপণ চেষ্টা করছিলুম

বিয়েটাবে যাবে ঠিক করেছিলে-একথানা টিকিট বাডতি ছিল—আমায় তুমি সঙ্গে याचात्र निमञ्जन कत्रत्नः यत्न यत्न छाचनुय, ज्यामात्र अच्छा ८ शमात्र किছू मनम जाएक —বিদায় নেবার পব এই চিস্তাটাই মনের মাঝে গানের মত বাজছিল।

তুমি কভ আন্তে আন্তে এস! বোধ হয় সে রাত্রে আমি ও জিনিষ্টি প্রথম লক্ষ্য ক্ষরি—ভোষাব আসার শব্দ ত কেউ গুনতে পার না। এই তুমি নেই, আবার দেখি, তুমি नागरन এरम माँ एरब्रह — ट्यांगांत्र ट्यांथ इति (यन भनारे এकि, भाष्ठ (भोन रामिष्ठ ममुब्बन ! **जाता (यन या-कि**क्र कानवात मव क्लानहरू, व्यात जह इंख्यांक त्यांगरमाल क्यांच्य माना व्याभारत जाती प्यारमान भारक । कीवन ८४ তোমায় কোনদিন বাস্ত করেছে, তা আমি ভাষতেই পারি না। আমাব মনে যে সব কথা জাগছিল, তা যদি তোমায় বলতুম, তা হলে তোমার মুথেব আর চোথের ভাবের কিছু কি পরিবর্ত্তন হোত ? কি জানি!

প্রথম থেকেই তুমি আমায় এত বিশ্বাস করেছিলে, প্রেমিকের পক্ষে বোধ করি चाहि। चन्नि मत्नत्र मत्या এको य कृष्टि । त्रिष्ठ छज्जकन। नव ८५८म चान्कर्या उकरह এই যে, যুদ্ধে কামানের মুখে এগিরে ভর জর করে' আচন্বিভ-মৃত্যু-সন্তাবন'র সারাকণ নির্কিকার থেকে শেষে এক তরুণীর কাছে **(कैंप्स (केंप्स मात्रा किंछ**।

তোমায় এতকণ ধবে যা লিখেছি, ভা পড়ে দেখ্ব বলে লেখা থামালুম--- আছো, আমি লিখছি কেন ? তুমি ত এ সব কোনো याटक टकामात्र ना छाएटक एत-"ताटक मिनरे পড़दि ना। पनी क्रे पार्श क कि क्यरवन कि करवरहन ?" कृषि ट्यामाय ध मन कथा नरक्रहे भात्रकूम। धथन छ

व्यानक (मन्नी करन्न (शिष्ट्राः मास्य मास्य আমরা ছ-এক ছত্র লিখ্ব এমনি কথা হয়েছে — আমরা ত এমনি করেই বলি। তার চেয়ে तिनी कि हु लिथा याद्य न। द्यामात्र कार्यम ঁথে চিঠি পাঠানো, ভা একেবারে কেভা-ছরস্ত নীরব ছিলুম। সৈনিকদের বিয়ের সম্বন্ধে সে-আর যতদুর সম্ভব ছোট—পরিমিত—পুরুষ वा महिलादक रवमन करत्र शिथि ठिक ८०मान करबह निष्य। किन्न छतु हैं।, अहेर दि मरन व्यामार मर ८५८४ (वर्षी करत्र ४१८७ – এছ ८वाथ इस ८७।मात्र मटक (नय ८५०।--- ८७।मात्र कारह (चर्व विशेष निषयां । यूरक्त गुर्थ (शरक फिरत जामवाव कथाण क'ब्रानित ? य विभाव चारत्र आयात्र को वन गारव, छ। त्वांध वत्र ज्ञ-कर्ण कार्यान वासम्भानांत्र क्या हर्ष रशरह। ट्रिंक्षत्र थात्र भिष्म हर्लाष्ट्—िक् जक्छ। हूटि धन, बाद्र धक्छ। थाका नाश्न- कन्नकात---वाम् भव (भूष। अभन करत्र मश्टकर्म विशास **(मश्राष्ट्री कामात्र कार्ट्स जात्री वि**र्जी धक्रवाम-- राज्य अकर् म्लान-जाव शव मव कि तमरे बक्रम करत (र्मिह्रियन १ कथा का-वना (त्राथ कामीय मूना जांत्र शान বেরিয়ে পড়া!

বা সব লিখছি, ভোমায় তা পাঠাব না। এই वक्ष करत्र 5िठि गिर्थ गरनव मन कथा वरण याव। याम वाहि, युरक्तत्र त्नरम अकामन र्शिष जूमि नव विशिष्टालाहे পেয়ে যাবে--पान्न भारे यथान याहै। यावान नमन नाम भारत ৰণি ভার আগেহ মনি ভাচলে ভূমি किहूरे जानरव ना-जामात्र এरे लाभन ट्याम তোমার কোন বাথাই দেবে না। তোমার मयरका ज्याम नाना चन्ना दर्भाष,—दमहे दमदनत्र

গতের মধ্যে ! সেই অবাস্তব জগতে ! মনে হয় তুমি প্রেক্তই স্থামারি!

हुभ करत्र ८९८क ८वाभ व्य खान क्याना বোধ হয় একটা মিথাা গবেবর বশে আমি দিন ভোমার এক বন্ধুর সঙ্গে কথা ছচ্ছিল--আমি বল্ছিলুম, সে কাজটা নিভাস্ত স্বার্থ-প্रचा। र्डिन প্রথম । नीव्र ছিলেন, स्वन (भाष्टिके मनार्याश मिटक्कन मां; जात्रभन হঠাৎ আমার দিকে ফিরে অপ্রত্যাশিত Coica आभाव वटलन—"जाटक आभि विदय করেহ ঠিক কর্তুম।" তাঁর গলটা আমি পরে ভনলুম-এক ফরাসী সেনানায়কের সজে বাগ্যান হড়েছিল, ভাবপর ভিনি মারা ইনি এখন রেড-ক্রশে যোগ (शट्डन। निर्देशकन, अवः अ वावर युक्तकाजित्र मिरक একান্তমনে এগিয়ে আসছেন। কি অশান্তিই िनि वश्न करत्रका चाका, विशासित ठिक ছে—পরস্পারের হংখের আশা জাপন করে। সময় আমরা ধেমন করে হের্নেছিলুম এঁরাও

(भव क'मिन प्यायदा कि स्टब्स् हिन्स-পরস্পারের মধ্যে কভ সে জন্তভা ৷ সেই সব তুমি ত আর এ-সব কোন কালেহ পড়বে অতীত স্থাধের কাহিনীতে স্বতি আমার ভরপুর —বিচারবৃদ্ধি বা অভিজ্ঞভার পাকা রঙে নই रूरत्र यात्र नि । ज्यांक त्रांट्य - ज्यांक (भय त्रांट्य ऋत्थंत ठ्यम करत्रहा आमारणत थित cafe-ज जिद्मि**ल्य---**- वन्नरक छाक[ा], श्रथम न्निविदा क्छ दनती रूदा रगन दय शिरा दनिय ज्यानतात्र श्राधम मुख्य पालिनस रूट्स (शरहा आमका त्मार्टिहे सूझ हहे नि, व्यक्त आमि क नरे। (जानात काटह द्यमीकान बाकटक भाव

याहि ७ व्यापदात्र योगात्र श्राप्तां करत्रिकृष । সন্ধ্যা রাত্রিটা কি শীগগির কাট্ল' আবার boulevard-এ বেবিয়ে পড়লুম। তোমায় वाफी भौटि (मवात ममन हटहट - अनु ট্যাক্সি পাবার চেপ্তায় আমরা কি মন্ত্রাটাত कत्रम्म । (न्य এक है। वाडी त्र शाड़ी त लिंग्स्क-चात्रक पुर मिट्र शांडी (शंभूम। (महे (नेय মুহুর্জে ভূমি কি আমার কাছ থেকে বিছু षाना करत्रिष्टण ? षात्रि शुनन्त्र, षात्रि निष्य मन निजास माधात्रन कथा वर्म यां कि, किन्द्र दम भगात्र च्यव त्यन कामात्र नम् । कथा वरमारे । दर्मा छ — क उपन विकास के वितास के विकास ±ত দিনের অম্বরু—তার পর আমরা **ও** ১মত থেয়ে গেলুম, ভিতরে ভিতরে চঞ্চল হয়ে **डेंग्नम।** कृषि वरहा, "विशाव"— व्यामिश्र छात्र खिखानि कून्नूम। "bb निषट जुनदन না ত 🖓 হাত ছথানি আমার মুঠোর মাঝ र्शिक रहेरन निरम् कृषि माथा नाफ्रल, कान्नज शिष्ट्रम क्रिट्स कोटड **डेशट**व डेटर्स शिटन ।

ভোষার সঙ্গে দেখা হরে মন আমার এখনো সামলাতে পারি নি। কিন্তু ভারী খুসী হয়ে উঠেছে। যে বেদনা বহন পারি আর যুদ্ধক্ষেত্রে প্রথম সার কা করে আমি যুদ্ধে ফিরে যাবো তার জন্তেও আমি মাঝে কোন টেলিফোনের লাইন নেই।

থুসী। আমার মন-প্রাণ যে একান্ত নিঃসল আর ফাঁকা ছিল, তার উপর এর আগে আমি কোন মেরেকে কোন্দিন ভালবাসিনি। এখন তু ভাবতে পারে া—ুমে বোধ হয় জানতে পেবেছে, কেন, আমি তার কাছে সব কথা শুধ কৃটে বলি নি। হয়ত সেও এমনি কবে আমার কথা মনে করছে। ভোমাব সম্বন্ধে কত গল্লই নিজের কাছে বল্ব, বেন তুমি সুতাহ আমার! ভোমার মুঝ্খানি আমার সক্ষেই থাকবে—ভোমার কণ্ঠত্বর, ভোমার স্বিশ্ব বাবহাব সব, সবই । এবার আমি আমারেক ছাপিরে উঠ্ব, ভোমাকে যে আমি নেথেছি। যদি মরি, খুসী হয়ে খুসী হয়ে মবতে পাবব।

রাত অনেক হয়ে গেছে—এপনি আবার তাব জেরে, উঠবে। ঘণ্টা পাঁচের মধ্যেই আমায় সহর ছেড়ে যেতে হবে। তোমায় খুব কাছে ভাবতে ইছে করছে—এত কাহে যেন কথা কইতে পারি—দেখেছ টেলিফোনের লোভ এখনো সামলাতে পারি নি। কিন্তু হায়রে, পারি আর যুদ্ধকেত্রে প্রথম সার কামানের মাঝে কোন টেলিফোনের লাইন নেই।

व्यद्यां हरहे। भाषात्र।

অবতার

চিকিৎসাও বৃদ্ধকৃতি শক্তির জর্ভ, পাবী লগরে ডাজার বাল্থাজার লোরবেনোর থুব প্যার হইরাছে; সভাই হোক্, যিখ্যাই হোকৃ ভার এই-সব আজগুরি কাণ্ডের দর্শ. সর্বতেই তার এখন আদর সন্মান। কিন্তু রোগী পাইবার চেপ্তা দুরে থাক্, তার নিকট রোগী আসিলে, দরজা বন্ধ করিয়া উহাদিগকে ভাগাইয়া দেন, অথবা এরূপ উষধ-পত্র লিখিয়া দেন যাহা অভি অনুভ এবং এরূপ নিয়ম

ব্যবস্থার কথা বলেন যাহা পালন করা অসম্ভব। 'निউমোনিয়া', 'এপ্টেরাইটিস', 'টাইফয়েড'— এই-সব চলিত সাদামাটা,সাধাৰণ ইতব জনো-চিভ রোগে আক্রান্ত কোগীদিগকে অতান্ত অবজ্ঞার সহিত তাহাদেব আগেকার ডাকার-त्मत्र मिक्टे कितिया भाठाहेत्र तमन। छवाटवांशा उरक्टे भोशीन त्यार्श बाक्रांश त्यांशीत्रहे ां जिन हिक्दिन। करतन, ध्वर छाँव हिक्दि-সায় রোগী অভাবনীয়রপে আরোগ্য লাও করে। রোগ শ্যার পার্শ্বে দাড়াইয়া, তি'ন এক-পেয়ালা জলে ফুঁদিয়া মায়ামন্ত্ৰ উচ্চাবণ ক্রিতে ক্বিতে নানা প্রকার শুদ্রাভঙ্গী করেন। মুমু যুর অল-প্রত্যেক শক, আড়েষ্ট ও ঠাওা *হহ*য়া গিয়াছে, উহাকে সমাধি ভূমিতে লইয়া বাইবাব উত্তোগ চলিতেছে ; েশেই সময় ভিহাৰ যন্ত্ৰণায় আড়ষ্ট দৃঢ়বছ চিবৃকী শিথিল निग्रं वे मञ्जूष कालत करहक ক বিষ্ (काँ। उहारक जिनाहेमा (न ७मा हम. ভাহাব পবেই রোগীব দেহেন স্বাভাবিক সমস্ত বিশ্ব-যন্ত্রে একটা বিশৃত্যলা ঘটিতে পারে। नमनीव्रका, श्वादश्वाय तः व्यावाय कितिया আসে। রোগী শ্যার উপর উঠিয়া বসিয়া বিশ্মভভাবে চারিদিকে দৃষ্টি নিকেপ কৰে। তাহ শেন্বোনোকে সবাই মৃত্যুর ডাক্তার বলে, मृज्यकीवरनत डाक्नात वरण। এখনো ডाक्नाव শেরবোনো সব সময়ে এই সব রোগের চিকিৎসা করিতে দশত হন না; অনেক দময় ধনা মুমুমু রোগীদেব নিকট হইতে প্রভূত অর্থের অঙ্গীকার পাইলেও উহাদিগকে প্রত্যাখান করেন। যদি কোন জননী ভার একমাত্র দস্তানের জীবনের জন্ম তাঁহাকে কাতর অমু-নয় কলে, কোন প্রেমিক তাব প্রাণ-প্রিয়ার (थामनाटक इंडान इहेबा डीहाब माहाबा हाटह,

अथवा यपि जिनि मत्न करतन, (र गुक्तिन जीवन मझडेशिश खोदान कार्यात्र शतक. বিজ্ঞানের পক্ষে, বিশ্বমানবের উন্নতির পক্ষে, वित्यम् श्रामनोत्र, তবেই তিনি তার মৃত্যুর সহিত যুঝায়ঝি করিতে সম্মত হন।

এইরূপে তিনি 'স্কুপ'-রোগে রুদ্ধ-খাস একটি কোলেব শিশুকে, यक्तांत्र শেষ-অবস্থার উপনীত একটি রূপদা ললনাকে, অরা-বিকাব-গ্ৰস্ত একজন কৰিকে, মন্তিকের রক্ত-জমাট-বোগে আক্রান্ত একজন যন্ত্র-উদ্ভাবককে দিয়াছেন। তাঁর আবিফাবের বাঁচাইয়া হদিশটি তাঁর সঙ্গে সঙ্গেই মুদ্তিকার গর্ভে নিহিত হইবে, তাঁহার আচরণে এইরূপ মনে रुम। आवात जिनि এक्रभ कथा उराम (म. প্রকৃতিকে উণ্টাইবার চেষ্টা করা উচিত নহে, कতक्छनि লোকের মরাই উচিত—ভাহাদের মৃত্যুৰ বুজিদঙ্গত হেতু আছে; ভাহাদেৰ মুহ্যুতে যদি বাধা দেওয়া যায় ভাহা হইলে এখন স্পষ্টই দেখিতে পাইতেছ, ডাক্তার শের-বোনো একজন স্ষ্টিছাড়া লোক, বাভিকগ্ৰস্ত শোক, তাব এই বাতিকটা তিনি প্ৰাপুরি ভাবতবর্ষ হইতে অজ্জন করিয়া আনিয়াছেন। किन्छ छाँशत्र मत्यास्मकायीत थाछि। हिक्दि-मरकत्र थाणिक्छ चिक्रम कत्रिमाहिन। অল্পংখ্যক বাছাবাছা লোকেব সন্মুখে ভিনি करत्रक दात्र देश्येक निमाहित्नन, तमरे देश्येदक এমন সব অতুত ব্যাপার প্রদর্শন করিয়াছিলেন, যাহাতে ক্রিয়া লোকের সম্ভব-অসম্ভবেব সমস্ভ সংস্থার ওলট-পালট হইয়া গিয়াছিল, এবং व्यमिक याञ्चल कार्गामामहालोक जाव्छ वेल-লালিক ব্যাপারকেও অভিক্রেম করিয়াছিল।

ভাকাৰ একটা পুমাতন হোটেলের এক-ভশায় বাদ কহিতেন। আগেকার দস্তরমত ভার ঘরগুলা দারি-দারি এক লাইনে অবস্থিত। (मह-मन घरतत उँठू कान्ना इहेटल नीटित বাগান দেখা যায়। বাগানে বড় বড় গাছ; जारहत क फिक्का काला, - लचा लचा जवुड़ा পাভায় ঢাকা: শক্তিমান কতকগুলা ভাপ-প্রবাহ যত্ত্বের মুথ হইতে তাপের জগস্ত প্রবাহ 'बाधित रहेग्रा वड़ वड़ घत्रखनाटक श्रम ু বাণিয়াছে। এখন ঘরের ভাপ মান ৩৫ হইতে ৪০ ডিগ্রী। ভারতবর্ষের প্রথর গ্রীমের উত্তাপে ज्ञां पाकात (महत्वाता, जाभारतह (पर्न र्याकित्र, ध्राध्र করিয়া काकिरिन कॅाभिट्डन—ठिक म्ब ज्याकातीरात्र यब याहाता नील-निषेत्र एकश्वान मशा चाङ्गिका হইতে কেরো'তে ফিরিয়া আসিয়া শীতে কাঁপিতে থাকে। তিনি গাড়ী বন্ধ-সন্ধ না করিয়া গুহের বাহিন হইতেন না; এবং শীত-কাতুরের ভাষ দর্কশরীর পণ্ড-লোমের আলথালায় वाष्ट्रामन कतिया गतम-जटन-ভता এक छ। हिटनत চোঞ্চার উপর পা রাখিতেন।

তাঁর এই ঘরগুলিতে কতকগুলা অমুচ্চ
পালক ছাড়া আর কোন আস্বাব ছিল না।
পালকগুলা মালাবার দেশের ছিট-কাপড়ে
আছোদিত,—তার উপর অহুত-আফুতি হন্তী
ও কার্যনিক বিহলাদির চিত্র অন্ধিত, ও
সিংহলের আদিমবাসীদিগের হারা রুচ় ধরণে
রং-করা ও সোনার গিলিট করা; বিদেশী
ফুলে-ভরা কতকগুলা জাপানী ফুলদানী এবং
মেজের জন্তার উপর, ঘরের একপ্রান্ত হুইতে
অপর প্রান্ত পর্যান্ত,শতরঞ্জি বিছানো রহিয়াছে।
কালো-সাদা ফুল-কাটা এই বিষাদ্যর শতরঞ্জি

कात्रां शास्त्र मध्या ठेरशका वृत्तिषाटह । ভारात्रां व लादनत त्रिटिक भनाम साम नाभारेक, সেই সোনের স্ভা দিয়া ইহার বুনানি হর্মাছে। পাথরের ও কাঁসার কতকগুলা शिन्तु-(मन्दान ने मुर्खि त्रश्चिष्ट; नानामि ष्पाकारत्रत्र मीर्घ काथ-नाक गाक्ष-राज-ময় সূল ওষ্ঠাধর, মুক্তার মালা নাভি পর্যান্ত ঝুলিয়া রহিয়াছে; উহাদের স্বরূপলক্ষণ অভুত ও রহস্তময়; মৃতিগুলা তলদেশস্থ বেদি-কার উপর আসনপিঁড়ি হইয়া বসিয়া আছে। (मर्वागरमञ् शारम शारम छन-त्रछत्र छिळ-भछ ঝুলিভৈছে; এই সকল চিত্ৰ কলিকাভা কিংবা লক্ষ্ণের পটুয়াদের হাতের আঁকা। মৎস্তা, কুর্মা, বরাহ, নরসিংহ, বামন, রাম, क्रस्व (यादक द्रकान दकान श्रध-मर्भक किन्नू श्रुष्ठे মনে করেও) বুদ্ধ, কলি এই নয় অবতারের िक । " नर्वाभाष नाताग्रामत गृष्टि—कौत-मम्दाल मध्या अवज भक्षभीय-मर्भ-द्विमकात्र উপর নিজিত—কোন এক সময়ে খেত-অখের উপর আবেহিণ করিয়া শেষ-অবতার কলির মূর্ত্তি ধারণ করিয়া ভাগতের প্রালয়সাধন করি বন তাহারই প্রতীকা করিতেছেন ৷

সব-মনের পিছনে যে মন—সেই মন্টি
আনও বেশী করিয়া গ্রাম করা; সেই মরে
পাশাপাশি সংস্কৃত পুঁথিতে বেটিত হইয়া
রালথাজার শেরবোনো বাস করেন।
পুঁথির অক্ষরগুলা পাত্লা পাত্লা কাঠফলকের উপর, লোহার লেখনীর দ্বারা উৎকীর্ণ;
কাঠ-ফলকে ছিদ্র আছে, সেই ছিদ্রের মধ্যে
দড়ি চালাইয়া, ফলকগুলা একতা গ্রথিছ
হইয়াছে।

कारणा-मामा कुण-काठी এই विवासमय भाउनकि जामना मुस्तारण योगाक शुखक विन, ध

म्बर्भ धर्मा नर्ह। अक्टो देव्हा जिक-यञ्ज —কাহা সোনালি ফল-কাটা কভকগুলা বোভলে ভরা: বোতলের কাচেব মুথে হাতল লাগান আছে-এ হাতলের ছারা• উহা ঘুরান যায়। बेरे हक्कण ७ किंग यञ्च होत्र क्रांत्रामृद्धि घरवव या अथादन याथा जुलिया विध्यादछ। পাশে मत्याङ्ग कार्या-मरङ्गाख এकछ। इहाउँ कार्ट्य , जातान जारह जरः जेश इहेर ज्ञानक खला. लोक मेगाका विकित क्षेत्राह्य। त्मवद्याता একজন গড়ড়ে ছাড়া আর কিছুই নঙে; ्मर्क्छ (चंवर्यात्नांत शक्रुड देवछानिक াবীক্ষায় কোন উছোগ ছিল ন। কিন্তু তবু ূৰ্কেকাৰ 'আলুকিমি'-বাদায়নিকেৰ প্ৰাক্ষা-। १८७ भारतमा कविरम यर्भन राज्य छात महें हे, दीव अहे व्यक्ति में पर्वा प्रक्रिणाशास के व्यक्त कि दिए हिन, धार्कात वृत्ति वा प्रात्रा-शर्यम कार्यन मरन रमहेरान धकछा । ां इहेबा यात्र गाँ।

জলৌকিক চেষ্টা সফল ফইয়াছে; ভাই তাৰ ৯-তি-বিশ্বাস-প্রেবণ কৌতুহল উদ্দীপ্ত হইল। ার্গন ভাক্তারের সহিত সাক্ষাৎ করিনে ८९'रवान ।

यथम दकोण्डे छाख्याद्वत शृद्य श्रद्यभ ক্ৰিলেন, ভথন তাঁব অমুভব হইল যেন এবটা अल्लेष्ट आंशिष्या कारक चित्रा आह्न , ठारांत ममञ्ज भन्नोद्रिय ब्रज्ज माथाव मिटक প্রবাহিত হইল, ভাঁহার রগেব শিবাওলা দব্দব্ করিতে লাগিল; ঘরের ত্রুস্ফ উভাপে তাঁর (यन यामद्याय इट्ला । श्रामीट्न (य ट्ल्ल अंडिटाइन, क्नमानीटा बाजाबीटाव (य मन डाकांव कांड मन्नाडांटव विन्नन,—

मगनानात्र बुरु९ भूष्ण छ्निटङ्किन—एमर्डे एडम ও পুপ্রের ভীত্র গজে তাঁর মাথা ধরিয়া গেল। गाडार्टीय मक छेनिएक छेनिएक, छाख्यारसस অভিমুখে কোণ্ট কিয়ৎপদ অগ্রসর হইলেন। **डाङोबं (अवरवारना मन्नामीतिराब मह बामन-**পি ড়ি হটয়া পালকে বদিয়াছিলেন। পরি-क्ट्रा चाक्हां पि छ। कार्त्रव भी व चन- शहा क य ভাবে দেখা याहर छिल, मिरिक मरन इस (यन এক্টা মাকড়শা জালের মধ্যে থাকিয়া ভাৰার শিকারেব উদ্দেশ্য নিশ্চলভাবে বসিয়া আছে কৌণ্টকে দেখিবামাত্র ভাঁচাব ফদ্-क्रवम-मोश्र (ठाथ-इरेटा महमा क्रमिया উठिम। কিন্তু পরশ্বেই কৈছা কবিয়া উহা নিভাইয়া र्गित्वन। श्रदांत्र श्रम छोड्नात्र, क्यांट्यत पिटक कांक वाष्ट्रांश नित्नन। अनाक व्यत्माग्राञ्च ছিলেন—ভাই, ছই ভিন্বাৰ হাতের 'ঝাড়া' দিয়া ভাগাব চারিদিকে বসজের আব-হাওয়া কোণ্ট ওলাঘ-লাবিনন্ধি লোক মাথ উৎণাদন কবিলেন,—এই উত্তপ্ত জালাময় ঘটাইলেন।

> "এখন ৩ আপনি ভাল বোধ কর্চেন ১ আপান বণ্টিকের তুষার-শাতল কাওয়ায় অভান্ত, তাই ঘনেব এই উত্তপ্ত হাওয়া, কামারের কাবধানার হাপরের জলস্ত হাওয়ার মত আপনাৰ মনে হচিচা—কিন্ত ভানতেৰ लानब स्राकित्रण मध-विमक्ष (य आमि, अह উত্তাপেও আমি শীতে কাঁপছিলাম।"

कोचे जनाक जकता इनिक कांत्रश প্রকাশ করিলেন যে এখন আব তাহার গরমে কণ্ট হইতেছে না।

"আপনি অবশ্র আমার "ঝাড়া-দেওয়া"র কথা, বিলোপ কবতে পারি, কোবোফর্ম প্রভৃতির व्यागांत्र मरवाहन विद्यात कथा खटनट इत्याहरू ভবে कि এकটা নমুনা এখন দেখতে हैक्। क्रबन १

टकोन्छे উखन्न कतिरमनः—

"আমার কৌতুহল ওরপ ছেলে-মান্বি धत्ररगत्र नत्र। पिनि এक कन विकारनत्र मञाहे, তার উপর আমার শ্রদ্ধা ভক্তি উহা অপেকা च्यत्नक है। दिनी।"

— "देवछानिक वरहा ए। वर्ष द्यानाम আমি সে অর্থে একজন বৈজ্ঞানিক পণ্ডিত महे, वतः विद्यान य नकल किनिमटक मान्। मस्त्रिक-भट्टेव डेभव इन्हाम्बिक् ভাৰজ্ঞা করে সেই সকল জিনিসেব অহুশীলন বলে প্রতিফলিত করতে পাবি। কিন্ত করে' আমি অপ্রযুক্ত কুতকগুণি গুঢ় ভাবতের সিদ্ধপুক্ষ যোগীরা যাহা করেন শক্তিকে আয়ত্ত কবেছি, এবং ভাব থেকে ভাছাব কাছে এ সব কিছুই নয়। আমবা ব্যাপার দেখাতে পাবি যা প্রাকৃতিক হ'লেও অভ্যস্ত বিশ্বয়জনক বলে প্রকৃতি, অভ্যস্ত বিশিপ্তচিত, অভ্যস্ত অসাম; মনে হয়। বিডাল যেমন ইতুর ধরবার জন্ম আমাদেব কাদা-মাটিব কাবাগারটি আমাদেব খাপ্টি মেমে বদে থাকে, মামিও তেমনি নিকট এতই প্রিয় যে, আমরা অনম্ভ ও व्यर्भको करव (थरक अभग्न दूर्व छोक अजीरमत्र नृह्द कानम'-छरम। थून्ट भावि न। দৃষ্টিৰ প্ৰেজাৰে, কোন আত্মায় বচ্ছা বাট করে ধরে ফেলতে পাবি; সেই আত্মাটি তথন সৰ কথা খুলে আমাকে বলে; —তাডেই আমার কাজ হাসিল হয়, আমি তার কতক-श्वाम कथा मत्न करत्र' त्राथि। व्याचाह সৰ, অড়-জগৎ শুধু একটা বাহ্য আবিভাব। বিশ্বজগৎ সম্ভবত ঈশবের একটা স্বপ্নমাঞ व्यथवा व्यमोरमत मर्था, नव-उका हरू निःक्छ একটা বহিবিকাশ মাত্র। আমি ইচ্ছামত भनीतरक हो बरस्त्रत यङ मक्रुहिङ कररङ भाषि, कीरनीमिङ्कित्क व्यक्तिराज भाषि বা জত চালিয়ে দিতে পাবি, আমি আকাশকে

माहाया ना निरम्न कष्टरक नहे कन्नरक भाति। मानमिक छिष्ट এडे य हेन्हा-मिक्टि, এই हेन्हा-मिक्टिक मिक्किक क्टारी व्यामि की वस मान कति, काउँ कि वा विकाश कि बना नामी कि नि । जामान **हत्कत मगरक दकानल किनिमहे व्यक्त नम्र** আমি চিন্তার রশ্মিগুলি স্পষ্ট দেখুতে পাই। रयभन द्वरनाम्। ति कार्टित कल्टमव मधा मिर्द निश्लिष्टे न्य्यादमादकत वर्षक्छ। भक्तात्र छेभन श्रीकिश्र इस, मिहेन्न । ज्यामान अपृश्र (नर्णामानि কলমেবদিয়ে আমি ঐ চিঞ্জা-রশ্মিগুলি আমার যুরোপের' লোক,—আমরা অভ্যস্ত তথাপি আমাৰ পরীক্ষা হতে আমি কতকওাল व्यान्त्रश क्ल (शर्श्रह. डा (मथ्रल व्याशनि निष्के विहान कर्वा भावत्वन।"

এह कथा विनम्न एकात (भत्रवामा अक्री यफ पत्रकाम छाकारमा धक्छ। शक्ताम निरक्त উপৰ দিয়া কতকগুলা আঙ্টা স্বাইয়া দিবা-भाज परत्र भन्ठाखारात्र अकडे थाञ्झ कुठेती বাহির হইয়া পড়িল। তাঁবার টেপাইম্বের छेभव स्वामादिक कशिमिथा क्रिटिक, काशम जारमारक टकोन्डे अमाक् द्य पृश्च দেখিলেন তাহা অতি ভীমণ তাহা দেখিয়া ध्यम (य माहमी भूक्षय कोणे डांश्यक मर्याण

উপর কটিনেশ পর্যান্ত নগ্ন একটি যুবাপুরুষ महान-भटदत मट्डा शिम्हन। भत्रभगाभाषी ভীয়ের মতো তাহার দেক্টেকডকগুলো শলাকা বিদ্ধ হইয়া রহিয়াছে, কিন্তু তাহা হইতে এক-विमुख त्रक विविष्टा मा। पिथिया मन হয় যেন কোন ধর্মবীর 'মার্টারের' মুর্ত্তি, ज्ञात्रा नियाद्य।

ख्नाक भत्न मत्न **ভাবিলেন, এই** ডাক্তার বোধ হয় শিবের একজন ভক্ত উপাদক— দিবার মৎলব করিয়াছে।

विम्षि (करि (मथून, अत्र मुर्थत क्रिकेष (भनी छ গদি হইতে আল্পিন বাহির করিবার মত একটি মৃত্-মধুর হাসির রেখা দেখা দিল— উঠিয়াছে। একটা ইন্সিড করিয়া ভাক্তার मृत्यम योग-दमथा-खना दननी भाकाहेम विणिटम्स,---

रम्मुटल भाग्रजाम,—७ ट्रियंश रभज मा। भारत्याहिरममः छाराद विलयमः—

भिहित्रा छेठिन। এकটा कार्टना छिविरनत आमि छ। कतनाम ना, दकन ना, आमि এখনো স্ষ্টি করতে পারি নে। এ বিষয়ে মানুষ টিক্টিকি হতেও অধম, মান্তবের এভটা পক্তি-विभिद्धे , कीवन-त्रमं त्नरे त्य कांग्रे। जन আবার নতুন করে গড়ে তুলতে পারে। আমি সৃষ্টি করতে পারিনে বটে কিন্তু আমি नवरयोवन जरम मिर्ड भारि।" जरे कथा কেবল ক্ষতস্থানে চিত্রকর যেন লাল রং দিতে বলিয়া তিনি এক বুদ্ধা রমণীর অবশুষ্ঠন উঠাইয়া गইলেন; কালো মার্কেল টেবিলেন অনতিদুরে, সেই বুদ্ধা এক আরাম-কেদারায় চৌম্বক নিজায় নিজিত ছিল; তাহার ारे लाकिंदिक द्याध र्व भिद्रवंत्र निकंडे किल मूथ्यों, मत्न र्व, এक मम्द्रव ख्यात्र छिन, এখন শুক্ষ স্নান হইয়া গিয়াছে, এবং ভাহার "ওর কিছুই কষ্ট হচেচ না; ওর গামে বাছর, ভাহার কক্ষের, ভাহার কক্ষের শীর্ণ গঠনের উপা কালের উপদ্রব স্পষ্ট লক্ষিত হয় ! नफ़रव ना।" এই कथा विश्वा काल्भिर त्र एाउनात चीत्र नीम ठारांत व्यथत कित पृष्टि थूव चाडारङ्क महिङ, करमक मिनिष्ठ धिक्रम ভাক্তার উহার গাত্র হইতে শলাকাগুলো বাহির তাহার উপর নিবদ করিলেন; ক্রীণ-कतिया गरेलान। উহার উপর ভাড়াভাড়ি মেখাশ্রুলি আবার পূর্ববিৎ সরল হইয়া ক্যবার হস্ত-সঞালনের পর বা 'ঝাড়া' উঠিল; কুমারী-স্থলভ বন্ধের স্থােগাল-मिनात्र भन्न, উহার ওষ্ঠাধনে যোগাননের গঠন আবার ফিনিয়া আসিল। কঠের শাৰ্ণতা আবার শুল্রবর্ণ সাটিন্-আভ মাংকো বেন সে একটা অথকথ হইতে জাগিয়া ভবিয়া গেল। গাল বেশ অগোল হইল; ध्यवः भिष्ठ् कटलात छात्र क्रेयर त्रांग ७ त्रान्य त्नित्रदारना जारक हूं ि मिर्निन। कार्छत काङ्ग- इहेशा स्थोत्यत्म जाना कार्यान थात्रण ; कार्या-कृषिक जे श्राक्त श्रादकार्षत्र कार्छ- उन्नीनिक (नज्जूनन, এकश्रकात मजीव कतन कार्ठाटमब मधान्तिक अक्टी काठी मध्या मिन्न। ब्राटम कतिया शिन्ना विक्रिमिक् कतिएक नाजिन। त्म श्रद्धान कदिन। युष्ठ हामित्र इत्न छ।क्लात्र, त्यन याष्ट्रमञ्ज वार्कतकात्र यूथमहे। थिमहा त्यन, व्यवः वस्काण-अस्टिंश (मरे स्मनी युवलीटक जानांत स्मिथिए भाख्या भाष्या "वामि खत्र এक्টा भा किश्वा हाछ क्टि अहे जाशाखत-मर्गतन को ए इन्त्रीक हरेगा

যৌবনেব উৎস হইতে নিঃস্ত অলোকিক কতকটা জলে এচ রূপান্তর ঋল-ধাবার পটিয়াছে ? আমি বিশাস করি, কেননা, মাক্ষ নূত্ৰ কিছুই উদভাবন কৰতে পাুরে क्रमा, माञ्चारक खालाक चन्नर धकरी छविषाए দর্শন কিংবা একটা অভীতের শ্বভি।—কিন্তু আমার ইচ্ছানলে এই মৃহিটিকে প্রাক্তবে পবিণ্ড কৰেছিলাম, এখন মুহুর্ত্তের জাল ওকে टहरफ़ दम उग्रा याक्। जाव के दर्गादन दय स्मारमणि द्यम भारुखारन निक्षा यादक, এथन श्वत मान वकरे भवामन करा याक्। के श्रांकाण्डव भारत य छान भणिमाहिन, **म्या**यिव দূর-দৃষ্টি। বোজিমিখা প্রদেশে আপনাব যে লামা বিশ্বক ও রাণা াচিত একটা বাক্সোব **७८क जा**शनि शाठिए पिट्ट आमारम भारतन, जाभनात (परांदक मद-८५८स গোপনীয় জিনিস কি আছে ওকে জিজাসা कक्रम- ७ वरण (मार्ग) (मर्थादन (पीहरू ওর আত্মার এক-দেকেত্তেবও বোশ পাণ্বে मा। यहि रहाक्, नााभात्रो थुनन जान्हर्या कतिरमा मा, এवः छैशिरक दक्षा छितिरमञ् या है; दकन ना के अकर ममस्त्रत्र गर्था ভাডিৎ ৭০ মাইল লীগ্ অভিক্রম করে, আর, রেলের-গাড়ীব কাছে খোড়াব গাড়ী যে রকম, চিস্তার কাছে ভাঁড়িংশক্তিও সেই রকম। প্রাপ্তি সম্বন্ধে ওকে জিজ্ঞানা করাও আবশুক হবে না। ও আপনাব মনোগভ প্রা এম্নিট জানতে পাববে।'

स्मरम् कि कि की भारत छारात छेखन मिन :-- बारमांम मिरक भारत। करे बन-भारतन

"আপনি কি বিখাস করেন, এই স্তলে "সিডার কাঠেব সিন্দুকের ভিতর, অতিস্কা বাশিব ভাড়ার মত এক টুক্রা মাটি আছে তাব উপর একটা ছোট পায়ের **इ**नि (पथा यात्र।" ॰

> ডাক্তাৰ তাঁর স্বপ্তদনী মেয়েটির অভাস্তভায় ষেন দুঢ়নিশ্চয় এই ভাবে কোন বিধা না ক্ৰিয়াই বলিলেন :--

> > -- "(भरत्रां क्रिक् वरवाह कि ना १"

यो एउँव गाम नाम करेया छिठिन। বম্ভত তাহাদেৰ ভালবাসার প্রথম তাবস্থায়, किका प्रेमवरमय यानुमन मन्त्रभए क्या एजिंकित भूरति किर्णित (६११० वाजुमस गांविमरम ० ८ मह छा शृ वि को के हिर्शिक्षा পটি ছুর্গ-প্রাদাদ আছে তাবল কোন-একটি ভিশ্ব, দেই ছাপ-দমেত মৃত্তিকাখণ্ড সভি-क्रिक्क मियर के शिक्षा निमास्टितान। जान উংাব অভিকুদ চাখিটি একটি খুব সরু চেনে বদ্ধ হইয়া ভাঁহাব গলায ঝুলিত।

> শিষ্টাচারে অভান্ত ডাক্তার, কৌণ্টের भक्ता-मरकात सका कविता आप भीषाभीष অভিমুখে শইয়া গেলেন। ঐ টেবিলের উপর হীরকেব স্থায় স্বন্ধ থানিকটা জল বাথা হইস্নাছিল।

"যে ঐক্তজালিক আনিতে, মেফি-আপনার সজে ওর সম্বন্ধ নিবন্ধ করবার ষ্টোফেলিস্ ফোষ্টকে হেলেনের মুর্স্তি দেখিয়ে-জাতা আপনি ওর হাতে হাত দিন, আপনার ছিল, সেই আশির কথ' োধ হয় আপনি खटनट्टन ; प्यामात दत्रमगी दमाकात क्रथा (याफान थून ७ कामान हेलिए इहें। কুঁকড়োৰ পালক না থাক্লেও, একটা Cकोन्छे मरन परन रय-छात्र क्रियान, क्रे चान्कर्या काछ दम्बरम चाननारक निर्द्शाय

উপৰ আপনি ঝুঁকে থাকুন, আন যে রমণাকে গুলোর উপৰ চুঞ্চল স্থান হাভছটি ছুটিয়া আপুনি এখানে আন্তে চান, একাগ্রচিত্তে বেড়াইতেছে। ছবিখানি এমন চমৎকাষ डीटक िष्ठा कक्न। कोविङ क्षिक्, या चौका (य, ठाठा किर्ल खनी । हमकद्वदा छ मूक रहाक्, मृद्र थोक्क या निकटि थाक्क - निया मायग्रा याहेक।--জগতের শেষ-প্রাপ্ত থেকে, ইতিহাসেব গ্রহন , ইনিই বাণী প্রাম্বেচিভ লাগবন্তা: त्रमाञ्च (शंदक दम ज्यापनाव ए। दक ध्वशारन दकोरण्डेत ज्याद्यन्यम ज्याञ्चान एनिश्रा এদে উপস্থিত হবে।"

বিশিষ্ট বিচিন্ন বৰ্ণচছটার বিভাষত কইল হয়। যেন একটা ছবিব ফ্রেমের মত হল্প। ভাক্ত'ব উত্তক বাত্র দ্বাবা জড়াইরা ছবি আগেই জাঁকা হয়। श्वाह—'क हु धांतरण।, এবং হাল্কা পালভকৰ **মডো**

क्य कुआमाले मिलाहसा (शल। अम्ब স্বাচ্ছ অংশের উপব এক কর্মণীর ছবি মুটিয়া ভতাকে ডাকিলেন। ভূতা দর্শার চৌকাঠে पिठिया। अतिशास्त व्यामधानाय छोत्र अक्टा कामिया मैक्टाहरा। डाकात्र यामस्य मिधिन भित्रम्ह , त्यागुश्राम् वर्ष भगु ए • "कार्क्र छ व अथार्य मिद्रा जाग्र।" থাবৎ, কুঞ্চিত স্বর্ণ-কুণ্ডল, পিয়ানোর পদা-

কাসিণা উপস্থিত ১ইয়াছেন। ডাকোর, রপর ঝুঁকিয়া বহিলেন। একট গবেই জল-পাত্রের একটা পায়ায় উলবে উহা ভাগাৰ দৃষ্টিৰ প্ৰভাবে, পাছোৰ জল বিক্লব্ধ স্থাপিত কৰিলেন। বৈহাতিক চুম্ব-শক্তিতে ংইয়া 'ওপাল'-মণিব বৰ্ণ ধাৰণ কৰিল, ভৱা ঐ ধাতুখণ্ড একটু স্পৰ্শ কৰিবামাঞ जन-भारतम किनामा। क्लामार्गान केलाम एकोनी एमन तज्ञाक्त करमा पृक्षा भाष्मा (शटन ।

िशं मानारहे (यरण प्राध्यम् अध्या अध्यारक्। ऐंडाईया नहेंया करेंद्रा करेंद्रा नामरक्षत छिनद खब्राह्या पिर्दान । जात्रश्य चन्द्री वाकाह्या

(西叫")

श्रीरकाणि विस्तानाथ श्रीकृत।

জেন্ত-সভা

জন্তজাতীয় মহাসমিতি

नण्गानक भन्नाकत्र ह्यून्यनीका हिन्ननी वर्षाः---(প্রস্তাবনা)

कथा। कीय-एष्टि हरम कार्याय, मग्न कांत्र रमहे जीना कथा, कारकह माग्न यक्षहे जीक

(क छ-मकात श्रथम काधिरमध्मत काषामी व्यक्तिकारण विक्रि (थरक व्यानक क'रम अ- गर्याच माञ्चना मुर्थि व'ला जाम् ए जी द मया,' किन्छ कांट्यन दननात्र आभारमत कांक्रिक मामा देमजो नाधीनला — এ दक्षण कथात्र (पर्य जीएक लाएन जन जारम—हारच नम् নেছে বলুক 'নীবে দয়া', কব্ছে ঠিক এর উন্টোটা। এই কাবণে যত লীব-জন্ত, এমনকি পোকামাকত তারা পর্যান্ত জালাতন হয়ে
উঠেছে। একেত্রে মাহ্যুষের সঙ্গে আর ভাব
বাণা চলে না, বান্তবিক মান্তবের শাসনে চলতে
হবে, ভ্রুমের চাকব গ

মানুষদের সঙ্গে কোনো আর বাবাবাধক। না রাখাই স্থির ক'বে, ছোট-লড় সব
জানোয়াথ মিলে এক সভা গঠন কবা গেছে,
যার নাম হচ্ছে—মত ভাড়না জান্তব হিতকরী
জাতীয় মহাস্মিতি বা কেন্ত-সভা।

ইতিমধ্যেই সভাটিব প্রতিষ্ঠা ইয়ে গেছে।
গত পুণিমায় আলিপুবের সরকারি চিড়িয়াখানার গোল-চানকাতে এই সভার প্রথম
অধিবেশনের বন্দোক্ত কবা গিয়োছল, কেননা
পৃথিবীর জাব-জন্তকে একত্র করার পক্তে এমন
স্থান আরু বিভীয় নান্তি। একথা বলাই
বাছলা যে, সেদিনের সভার কাজ পাশব
প্রোথা-মতো যতদূর সম্ভব বাঘাড়ম্বর ইভ্যাদি
মারায় সর্কাক্তক্ষর ক'বে ভোল্বার জন্তে
প্রাণপণের ক্রটি হয়নি।

(অভিভাষণ)

স্বাধীনতার মহামত্ত্রে অমুপ্রাণিত হয়ে
মহাপুরুষ বার বনমামুষ—তিনি উৎপীড়িত
লীব লগৎকে মৃত্তি দিতেই যেন বাসন্তা
পূর্ণিমার দিনে গভীর রজনীতে বিশ্ব যথন ঘুনে
ঘুমারিত, সেই শুভমুহুর্ছে পশুশালার ভালাবদ্ধ
লোহ-পিজরাবলার অর্গাদি ও লোহ-শলাকাসন্তুল শুদ্ধালাবদ্ধ বারাদি উল্লুক্ত ক'রে দিরে

रगटलन। व्याकीयम यन्ती, हिन्निम यक कीव मुक्तित मधुताचान (भट्य तीय-यटमस स्विता-यान वनीयान ह'न ७ ऐनुक आकाम-जरम श्रमद्रोग माफिएम मिश्हलीम (इमा दृश्हक ही दकान চিচিকার করে একে একে এসে জাস্তবীয় ८ छत्र व एक च च चान किश्व क'रत र्वम्म । ভাতি-নির্কিশেষে গৃহপালিত গৰাদি চক্রের সমুধ खाटन, भाष्यामि वज्रान हिटक्य भन्हाटक ज्यार गरी रिशामि क्रियान हिट्यान क्रियान क्रियान থেচরগণ চক্রের উর্জদেশ আশ্রয় কর্পেন, আর বিরাট এই জেন্ত-সভাব বায়াবলী निशीक्षण कश्चाव त्यांनरम्हे त्यन एख्या दम्पन পুর্ণকলায় উদ্ভাগিত হয়ে, অন্ধকাব তরাশিথর ছাডিয়ে জ্বে আকাশে আরোহণ थाक्तान। (माधु माधु) माञ्चरमत मरधा त्राह्र নীতি সমজে-সংস্থার এম্নি-সব ব্যাপাব নিয়ে বিরাট সভা অনেক হয়েছে এবং সে সৰ সভায় থিটিমিটি ঝগড়াঝাট হাতাহাতি গালাগালি এমন-কি জুতো-মারামারিও হ'তে বাকি নেই, কিন্তু জন্ত আমাদের এই জেন্ত-সভার বড় বড় भक्-कारा चाफ्-काद्धारमञ्ज्ञ क्या मृद्य थाक्, म्या মাছি টিকটিকিটি পর্যান্ত যে শান্ত-শিষ্ট ভাষ दिविद्यट्न छ। किरिनाकारण किरिना मखात्र গিয়ে মাত্রৰ পারেনি, পারবেও না। হেড়েলের छाटकत्र गरशा दक-कारन रमिन रकमन-धक्षि অপূর্ব্য-কোমল তার লেগেছিল অন্গালের তিন সপ্তকে যতশুলি কোমল-কালো শুর म्दर्शन এक्ट्रे मद्भ । जात्र त्राक्ष्श्राम्त्र श्रामा ८ थटक कां पु स्ट्रिय यत्रगा काक्रगात्रण भया है टक विशंगिक ध्यास क'रन मिटमहिन। (त्यम, त्यम, षाश।)

প্রার্থনা

কী অপূর্বে সঙ্গীত, কী অগাঁর স্থানয় स्यव! आशं की (नश्राम, की अन्यम, कौरन थरा रेंग, व्याचा भरित र'ग, (पर मन कुफ्रिय राम! माखिः, माखिः, ठातिमिरक माखिः। উত্তরে শান্তি, দক্ষিণে শান্তি, পুবে मासि, भन्टिय मासि, উर्फि मासि, अस मासि, ভি •বে শান্তি, বাহিরে শান্তি, অস্তবের অস্তরে• গভীর প্রেম বিপুল শান্তি। কে পশুপতি, তুমি কত কক্ষণাময়, তুমিই ধহা, ধহা তোমার शृष्ठि, व्यत्वाध व्यत्वाणा को न झश्रामत्रक श्रीर्प এত মায়া, এত ভালোবাদা, এত প্রেম, এমন ণজীর প্রকিতেষণা—আহা। সামুষ দেখ, ्नथ, मश्र हड, नाडिवच को वःहाय, मश्रीक।

জাতীয় দশাত

वाद ना-वाद ना-

আৰ না— আব না— हासुब श्रंबुव श्रंबाटन, काँ भूक जावन करन करन, ত্রাসিত মান্ধ রণে-বনে উঠুক ভীষণ কারা,

আর না—আর না— ((कांत्रांग) षाभगाविनी, भागशाविनी, निश्चनागिनी (१।। নধমালিনি হো या या मा भी भी

ঘুণাক্ষর রিপোর্ট

সভার আরভেই ছোট-বড় খাছাধাদক व्यक्ति ममख कीय-बद्धत्व भिरम दकामाकृति, म जिक जिल्डापूर्व जिल्डापनीय मृश्र, नकरणक এমন আনিষ্ট श्राहित्वन य आनिष्न-চুष्टनत হলোড় হয়ে গেল! আর কোলাকুলি পলা-नाम भाक्षा-भाकि ए ८०८क इ- धक्छ। ब्रक्तभाक যে ঘটেনি, তা নর। আমাদের শূগাল ভাষা এম্মি প্রেম্ভবে পাতি-পুরুরের ইাস গিরির **भगः** अफिरम धरतिहित्यन त्य, ठाटक क'रत গিলির স্কুগলা তথনি বাতাহত মূণাল-দণ্ডে ৷ गःडा (७८७ भफ्रा), (नक्ष्फ्-वार्षित मरक বোলাকুলিতে ভেড়ার, আব গো-বাঘাৰ সজে জাপ্টা জাপটিতে ঘোড়ার দেই একই দশা रुरअधिन ! প্রতিপক্ষেরা হয়তো বল্বেন, যে थाग व्याप यादक थान । व इकारन दर्का किन कत्र (शामहे এই कन, किन्न जामदा कार्त्र व अथादित काटमा कवा— (मरमादित व्यरमा छोना मरक वम्दर भावि द्रश्यम खांखनग्रे हरस् करे मामान प्रविनात मून, जाका है। तुर्द कारम भगन क्राइटे **बा**टक। अख्याः ध-मव ह्याडेथाउँ ত্র্তুনাতে মন না দিয়ে সভাগণকৈ সভায় कान हा निया (यट जासूरवांध क'रत्र शंत्रन जन-পকী—ভিনি তারস্বরে যে তিন মহাপ্রাণ জীব কেন্ত-সভার স্ত্রপাতেই স্বাধীন শর জন্মে প্রাণ দিলেন, তাঁদের অমন আত্মান কল্যাণেব জন্ত পশুপতি-ভোজ পাঠ ক'লে এক মর্মান্সশী বকুতা কর্লেন।

> णार्मरमर्भक महाकृषिव (भडहरही व 'मर्ख-कार्य मन्ना' नात्म व्यवक भाठ व्यवः कीव পিচক্চক্ কাঁা কোঁ। (কবভালি) হিংসা-নিধারণ-কল্পে এক পিঞ্জাপোলের आखान कवात्र कथा हिन, किस चकुन्छा-मरक

७५ नाव गुर्थक डीव शामा-भारवव ठाभरन अक्छा खेडे जिलि गांत्र लिली निका-नः भ थवः म रूर्य राग, (श्वक्षी। (महा अवब्रेड इ'ल मा। (काला वा! कहेकहे क'रत्र छ'कथा क्षनिया बन्हीय मृष्टि এहे दुर्घतेना व निरंक काकर्षण कतात्र, तमक व्याकाय নিকার পাঠ ক'রে অমুভাপ কবতে থাক্লেন, কাজেই তাঁৰ ঐ প্ৰস্থাৰ-চটোই আৰু সভাতে উপস্থিত করা হ'ল না।

C* A

शतिरमर्य वक्तवा (य. ट्वाटानाम वावाजी (यमन करेलन, जण्णांपक जनांक ठड्डणांनी ट्र खाके विदय मिर्गन। এই ब्रिट्मिंह क्रियारमय **(कारमा काराग (मर्डे, (कममा এ कामा कथा (ग,** তোতা— তিনি যা শোনেন তাই আইতে যেতে একেবাবে পাকা। আর মাছি, তিনি মাছি-মারা কাপি যথন নিয়েছেন, ভখন এতে ভূল-खांखि नांचे रहत ९ हरण। त्मरे यांगारमत थ्य-कामन गांग-शांम श्रेकांम करा त्रान नां, (कननां ইমানীং তাঁরা বাজনীতি সমাজনীতি এসব (थरक जाफ़ारन आवफारन शाकाहे भागम कर्तिक्र, एक बन आभाव मनिर्वेश जञ्जरवारश्रे এবাবেব মতে৷ এঁরা আমাদের সভায় নিপোর্টার ও কাপিইট পদ গ্রহণ ক'বে-ছিলেন। অপর পৃষ্ঠায় তোতারামেব বিস্তাবিত किर्पार्ट खकानिक र'न। इंख

অস্থায়ী সম্পাদক

জেন্ত-সভার বিস্তাদিত বিবৰণী **इंडिशारमय क्रिंड्, कारमब-एकाशारमय** ভোতা-পণ্ডিত এবং মিষ্ট্র হন্ন্যান অফ ্কলা-গাছি দ্বারায় লিখিত ও প্রকাশিত।

সভার স্থান—আলিপুব চিজিয়াথানার ८श्रामयाशिष्ठा। ...

कान-इटनरन् थाछि नि-अभ, मून्टफ, यां हे दम भा कुमानि।

কার্যা- গালিকা-- 'ক) সভাপতি-নির্কাচন। (ণ মানন-জাভিকে জাত্যুত করাব প্রস্তাব अवः ভविষয়ে কি উপায় অবশ্বনীয়। टम निषद्य शत्यस्था। गोहादा **गानव-का** जिन्न দফা-রদায় মত দিবেন, ভাহাবা বামহস্ত উঠাইবেন, ঘাঁহাবাু মানব জাতির সহিত বফা य विद्या हिनाएक हार्टम, जीराता मिन्नण इस ট্ঠাইবেন। (গ) প্রধান প্রধান বক্তাগণের नाम---मि॰र. गाप, रुग्न, रुखी, द्रश्याना, শগাল, কুকুর ইন্ত্যাদি (ঘ) চিড়িয়াখানাব छाङ्गरिष्य मृत्रारक त्माक श्रकाम । । जाश्य স্মাত-বন্ধাৰ জন্ম টাদা-সংগ্ৰহ এবং মূত ৰাদের পাত্র মাছি ও শেতারাম, তাদের ডাক্তাবের স্থানে মাত্র্য না হইয়া ঐ পদে (कारना পश्च किन ना वामर्तन, धारे मर्त्य পার ব্যান্ট মহা সভাগ শোক প্রকাশকারী এক ল্যামেন্টেব্ল দরণাক্ত প্রেবণ ও अस्तरण बोजियक व्यानिएमन् वा व्यारमाणन কবাব প্রস্তাব।

> मृहित्थांनात (थरक नात्रस क'रत (यथान-काव यह मध्य काव वरकत भागक-शावीरमञ ि क्याथाना कारह, मनखरना **(धर**य ह भाक्त माञ्चव नामकाना यरशक्षणन एका जरमरहमहे, मजाक - अ ছाড़ा थाँ हो- तीक मचाना कि शाक्रिशका চুনোপুটি মাকড-ধোকড় ফিড়িং-ফড়িং কাগা-বগা কেউ আর আসতে কমুর করেন নি।

> > षानिभूरवव थाछ-वड़ ८य वांशान, जाव

व्यक्ति-गाँक मार्ठ-मञ्जलांन এएकवादव ची द की वावना रूप रशरह — निः यूषि आत्र नार्ष গিস গিস্ কব্ছে, কিন্তু সভাব পূর্বেদিনে চিড়িয়াখানাব সিবিল-সার্জনেব হঠাৎ মশার কামড়ে অকালে মৃত্যু হওয়ায় সকলের মুথেই — এমন-কি উত্থানের তর্ম-লতা গুলিব উপবেও -- (यन कि-(यन कि-()क हो विषालिय होग्रा मर्पा यात्रा ডाव्हावरक পডেচে । **७**च আন্থবিক ভক্তি-শ্রদ্ধা কবরেন শ্মন-দন স্থসভা खारनामात्र, ठाँता ज्याणोठ हिङ्क काधा भ'रद्रहे এসেছেন আৰ হাম্বড়া নবা জানোয়াবের দল, তারা কাছা-কোঁচা তুই বক্ষন ক'বে বালোর উপবে কালো এক-একটুক্বো ফিতে লাগিয়ে শোম্সা মূথে এদিক ওদিক কবছে। এখানে-ওখানে হোম্রা-চোম্বা সভ্য জন্তরা मन (तैर्घ थुन छेरमारात म्हण[®] मुख्य काख" কি ভাবে চল্বে, কি কি নিয়ম-কামুন হবে, বাকেই বা সভাপতি কবা যাবে, এই-সৰ নানা मत्रकावी ७र्क-विज्ञांक नाष्ठ नाष्ठ नाष्ठ नाष्ठ ना কোট্-চলমাতে ফিট্ফাট্ মিষ্টর গুরুম্যেন্কে আস্তে দেখে গাছতলায় বন্মানুধ ব'লে **७**ठे लान,—"होन य मासूर्य निक छे-সम्मर्र्क (कड़े, टमछ। বোঝাতে এँ त्र ए विल्में ए एडे। বয়েছে তা বেশই বোঝাচ্চে ওঁব বেশ।"

বছরাপী বল্লেন—'মামুষের অন্তক্ত বণটা কিছ করেছে দিবিব।'

বনমান্ত্র চোথ মট্কে বল্লেন—'সমুকরণ এক, আর হতুকরণ অহা জিনিয়।'

शास्त्र मस्था (शरक नाभ किंग क'रव न'ल উঠ्ग—'हेम्, ভिक्तियां (मथ। लब्बा (नहे, जम्!

বুড়ো দাড়কাক গাছের উপর থেকে জবাব

দিলে—'চাা:, মানুষের চাল-চোল বানরে কথনো সাজে ? ভারতচন্ত্র তো স্পষ্টই ব'লে গেছেন 'যার যাহা ভারে সাজে'।'

ভতুম-পেঁচা দাঁতকাককে সাধুবাদ দিয়ে হত্মর দিকে চেথে কেবলি বল্ভে থাক্লো— 'ত্য়ো ত্য়ো, সাত্তনকলে আসল ভেন্তা।'

গোদাচিল সে ছড়াও জানেনা পড়াও পড়েনা, কিন্তু তবু কাক আব পৌচার দিকে চেয়ে গুড়ীর ভাবে খাড় নাড়ছে দেখে, হব-বোলা পাথী চিলকে ঠেম্ দিরে ব'লে উঠ্লো—পগুডে পণ্ডিতে পণ্ডিতে যুদ্ধ-সমন্তা প্রায়, মূর্যে নাহি ব্রে তাহা জ্ল-জ্ল্ চায়।' বছরাপীর বিশাস ছিল বংভামানার লার মতো কেন্ট নেই, কিন্তু হরবোলা গোদাচিলের সঙ্গে ভালো বং ক'রে নিলে দেখে হিংদেতে বেচারা প্রথমে আগা-গোড়া রাঙা—ভারপর একেবারে নীলবর্ণ হয়ে গেল্।

এই সময় ধান ভেত্তে কচ্ছপ থোলা থেকে
মুণটি বান ক'নে বলে উঠ্লেন—'ব্ৰেচো
কিনা, জীবনটা অতি-প্ৰকাণ্ড একটা সপ্লবিশেষ, এরি-জন্মে আবান নগড়া-নাটি নারামারি। আপনাব মধ্যে আপনি একবান
তলিয়ে দেখ দেখি, জগংই বা কি ভূমিই বা
কে আব—জগং স্বপ্ন ও সুমুপ্তি'—ন'লেই
কচ্ছপ ঘূমিয়ে পড় লেন। আকাল থেকে
একদল তাল-চডাই কিচ্মিচ ক'রে ব'লে
উঠ্লো,—'হেসে থেলে নাওরে যাত্র মনেব
স্থান।' নভুন-পালক-ওঠা পি'পড়ে, লোনাযার-না এমন মিহি স্থান একবান বল্লে—
'কবে যাবে ভূমি লিঙে ফুকে,' তারপবেই দে
আকালে উডে পড় লো আব সলে সলেই ভার
পীপ্ডে-গীলাও সাল হ'ল। ভ্রো-পোকা

१ इं किट्स अंग्रि-श्रीक कृतिया चार्डण्य 'পী প্ডের পালক ওঠে মরিবার তবে।'

এইবার সভার কার্য্যানজের ঘণ্টা পড় লো। গোল চান্কাতে এদে 'গলি দেবাব জগ্নে লোজ আব বকুতা শোন্বাব জলো কান थाएं। क'रव वमरणन। मवाहे हुপहाश वर्षाहन, এমন সময় গাধা, তিনি হঠাৎ 'গোল হচ্ছে' न'ल ही एक दि क'रिव के लिन। अकही काना मााह छांछ। शांधांव काट्ड जांत्र क्लें शांन क्षशंत्र नि, शांण চানকাতে সবাই গোণ হয়েই চুলচাপ বদেছিল। কিন্তু তবু গাধা 'চোপ চোপ' म्द्र भागत भवशवम क'द्र ट्रांम्वाव ८० हो। थाक्टनन । গাধাব বন্ধবান্ধববা क अर क মিশে তাঁর জন্মে একটা বক্তুতা লিখে দিয়ে हिन, द्यवन गनाव (कादबरे जिनि नवारेक মাভিয়ে ভুল্ভে পাববেন এই বিশ্বাদে প্রথম ও চারঝন ছষ্ট্র জন্ত কাণাকাণি কবতে লাগ্লো क्रमन क'रव विक्रम अस्ति हैर्शाइय ^अर्थ मधानव र'एक रूति, शांधा आर निष्या हे बनातन। যাহোক গদভ, কে কোথায় বাহবা দিচ্ছে ভামি একটুও হাততালি যেন না এড়িয়ে যায় এই মৎলবে ছ০ কান থাড়া ক'বে, লেজ त्नए वकुछ। ऋक कत्र्राम ।

"मधाकान बाज् ভाইগণ, চাব-ঠেং গ্ই-ঠেং चरमनी-विरमनी भाषांभक्षां ७ वनवानिशन, আজিকার এই জন্জু-সভার সভাপতি নির্বাচন र'ण এकि छिथान काक। अहे। कार्ता कान्छ বাকি নেই যে যিনি আঞ্জ এ সভায় সভাপতি হবেন, তাঁকে গুরুত্ব কাজের ভার নিতে ह्र वह ह्रदा माञ्च कार्छ मान्य कर्

कराख ५: एथव दांचा वहेटल वहेटल कामादिक **biaथाना था ८७८७ थएवाव यानाए इत्यट**, পিঠ ধমুকেৰ মতো বেঁকে গিয়েছে, এ অবস্থায় সব জাবেব ভার পাঘর ক'রে নিজেব স্বদ্ধে নিতে পাবে এমন-একজন আমি চাড়া আব কে আছে গ আমরা চতুদ্দা পুরুষেরও চতুদ্দা-পুক্ষ ধ'বে ভাবই বহন ক'রে আস্ছি, দেব গ থেকে ধোপার মোট পর্যান্ত কি না আমাদের বইতে হচ্ছে, ভার বইতে বইতে পিঠে কঙা পতে গেল এম্বল যে, সেটা বংশ-গত একটা खर्नन मरथा नैगाउरम लान कामाग्नन । अ नकत এদ আৰু আকায়-কুটুম, এদ দেশা-বিদেশী পাডাপড়্সী, যে যেখানে আছ সনাই মিলে সভাপতির গুরু-ভাব আমার উপবে চাণিয়ে **मारु, आमि जनाग्राटम** ভোমাদের সব কার্যাভাক, বিপদভাব, আপদভাব, আনন্দ-ভার তাহণ করছি, দাও। এটা ভোমাদেব बङ्खांव छात्र शांधांव উপরেই পড়েছিল। ছ'নাব ক'বে বলঙে হবে না যে, যেমন সইতে হেমনি বঈভে, তেমনি আবাব গোঁদ। क'रव । नरक (ी। वकांत्र ताथ एक कांत्र किंद्रत डेभदत भाषा । कवा ज, शांधा व मत् श का कय-त्रिक दक्षे (लह- "

> গাধা ব'লে চলেছেন এমন সময় জীরাফ্ তার রে।ের মতো গলাটা উ চিমেব'লে উঠ্লেন — "চিবটাকাল মান্তবেব গোলামি আত যমের वा धीत्र शाकोत्मव शाफी दिवन जत्म ज्यम दक्ष সভার সভাপতি হ'তে চার গাধা, এ কি আম্পর্ক।।"

कीशारकत कथाम शांधा कीयन ठटढे व्यक्तांम-मर्डा क्लाप्तानारम नाबि हानारक शर्यन, अमन मगत्र छह्नक शामा शामा' वे ला এक समत्क भाषात्क विगरित्र मिरा निस्क वन्द उन्न क्यरणन-

"ভाই সকল, একে এই কল্কাভার ছরস্থ গ্রমে ভিষ্ঠানো ভার, ভার উপর ভোমরা সবাই যদি গ্রম হয়ে উঠে হাতাহাতি লাথা-লাথি কর্তে থাক, ভবে আমাকেও পৃথিবীরু भिष वत्राक्षत (मार्म किरत (यर रूद्व, यावात शृद्धि इ-हात हड़ा कथा छन्दिय। वत्रक्त मिर्म विम्निम् चामि यथिष्ठे थ्लिक भारे, किवन ভোষাদের মুখ c5ctই আমি কন্ত ক'রে—এক तकम উপোস क'रतह—এथान काँगिछि, এখন সবাই যদি মান্তবের মতো অগ্নিসৃতি হয়ে এই সভার মধ্যেকার এবং প্রভাকের প্রাণের सर्धाकात क्यां टिल्लामत क्यांनधातां पर्धाक खिक्स रक्ष्यात रहें। कत्र, ख्र खाला इत ना वन्छि।"

वदरकत (नरमंत्र ,ভानूरकत नमा (পर्य উত্তর আর দক্ষিণ সাগরের 'শীল' আছ্ শুলোঁ তোমাদের সঁবার জ্ঞাে থোলা রয়েছে! এস কাঁপ্ছে দেখে, সিংহ 'চোপরও' ব'লে ঔলুককে वक्क का कातक क'रत मिर्टन। छ-এक कथात्र भ्याम भव कारनामात्रामत वृचिएम मिरम एय, পশুপতির যেমন ত্রিশূল, ইন্দের ধেমন বজ, প্রজাপতির যেমন কমগুলু, তেম্নি সভাপতির একটা অন্ত হচ্ছে ঘণ্টা, আর সেই ঘণ্টা একমাত্র ধর্মের ঘাড়ের গলাতেই ঝোলানো দেখা যাচেছ, অতএব যাড়ই সভাপতি হবার একমাত্র উপযুক্ত পাত্র!"

गर्कमञ्ज्ञिक्तम यो ५३ ग्रम्थकी जात ग्रम-ক্ষল তুলিয়ে সভাপতির আসনে গিয়ে বদ্লেন। ডালকুভো এতকণ খুমিরেছিল, मनीत्र भटक र्छाए हम्दक উঠে ভাব লে তার मनिव चाकिरमत्र वाबूरक छाक्रक वृत्रि एनी जनत-यत्मत्र वाथ এই छत्म काईशामि

मिरमन, अम्नि कूरखा। 'रका हे स्वाम' व'रम है।क मिरा ठातिनिक ठाइट लाग्राम। कूरखात तकम् (मध्य निकाछ-याच अकवात नाक সিট্কে মুখ ফেরালে। বেরাল হাঁসের একটা কলম কেড়ে রাজের শিশিরে ভিজে গা একবার बाड़ा मिरब, महेशहे नांछे निर्ड लार्श श्रम। ভোতাপাথী গিয়ে বক্তা আর শ্রোতা হুইন্সনের मर्या वर्ग विर्णार्ध निर्ण नाग् लन-

এইবার রক্তমাথা কটা-চুল সিংহ ঝাক্ড়া माथा साफा नित्र शखीब गूर्थ मछात्र मधार्थात्न উঠে বল্তে अक्र कत्रामा। (यम भ्या छ। करह এম্নি গুরু-গভীর আওয়াজে সিংহনাদ ক'রে ভিনি যাসুষের অত্যাচার আর অবিচারের कथा वर्षना क'रत वरहान-" এই मास्रमत हाल থেকে বাঁচ্বার এক রাস্তা, আর সে রাস্তা আমার সঙ্গে জন-মানব-শৃত্য স্থদুর খাওব বনে। থামিয়ে দিলেন। এই ফাঁকে রভা-শেয়ালটা অভি-নির্জন দে স্থান ভেপান্তর মাঠে যেরা, ক্থন্ গিয়ে বক্তার মাচায় উঠে জাঁকিয়ে মরুভূমির মধ্যেকার ওয়েসিদ্ সেটি, বর্বর মানুষগুলো তার ত্রিদীমানায় ষেতে পারে না এমন ছুৰ্মম ভীষণ দে স্থান! মান্ত্ৰের যত विष्ठि (नाकानदात हाज्ञबाना (मध्यादना मदशा, ফাঁকায় আর নিরালায় পেলেই আমরা তাদের ঘাড় মট্কে রক্ত পান করি।"—এই সময় বাবের দিকে চেয়ে একটা গরু ছবার গলা-बाँकानि मिटल, जिःह এक्ट्रेशनि मूह्दक द्राम वाहान—"এ-कथा श्रामि का खेरक है कि किया टिम् मिरा वन्ছित्न, मिछारे बनि मासूरवत्र मरशा जिश्ह-निक्रम क्रमम एक चार्छ त्य त्रत्न यत्न कामारमत्र मामत्न अरगारक পারে !"

ছেসে ঝাটা-গোফ গু'বার মৃচ্ছে একবার ভাঙা গলায় বাহ্বা ব'লে হাভতালি দিলে তারপর সিংহ মরুভূমির চমৎকার শোভা শান্তি মুক্তি निर्जित्र ज्याननामत्र जीवरनव একটি বিচিত্র বর্ণনা দিয়ে বক্তৃতা বন্ধ কবলেন।

र्गाज উঠে প্রস্তাব করলেন যে, সকলকে নিয়ে ছোট-নাগপ্তমে নাগাপকতে ষাওয়াই ঠিক, কেননা সেখানে হাতি চোথের গাছ यत्वष्ठ भाष्ट्रमा यात्र, माटन চিবিক্তে थावान भागशीय क्वार्नामन काय्रय अञ्चात भावना, ভবে থাবার-জলেব একটু কষ্ট হবে, কিন্তু যদি উট মোষ হাতি আৰ মশা এঁবা মোষক কুজো পিচ্কিরি আর নল ভ রে ড'বে পাহাড়ে তুলে रमन, তবে कवात्र वन ममछर भाराट शिख উঠ্বে জালা আলা, জাবের জল কষ্টও সঙ্গে भटक पूत करव।

হাতির প্রতিবাদ ক'বে জল-হন্তা ব'লে मणल, मिष्टिं अंक्रि ठी छा छ शोक्रि, नग्नर्छा হাতিবা সবাই গিয়ে জলায় জল তুল্তে নাম্লে खन कानाम **दमन (चाना हर्द (य. (म छन** কাকৰ আৰু মূখে দিতে হৰে না।'

কুকুব এই সময় হঠাৎ মাথা গ্রম ক'রে cbfb द्य 🕏 ्ना—"তোমরা साहे वन व्याभ ८७। বলি, সহরে থাকায় যেমন স্থুখ এমন আব (काषां अ नव्र ।"

গো-বাঘা, নেকড়ে আব হেড়েল ভিনজনে ण्ए कुकूरत्रत कार्टित लिख ४'वि दिन ৰসালে। তথন স্থলর-বনের বাঘ ভটার দিয়ে माहाय नाकित्य উঠে লেভ আফ্সে বভূতা कांत्रष्ठ कत्राम-"कांग्रेश केंद्रिता, शून क्रथम मुक्तभाक क्राट्या, मासूर्यम बाक-दक-

कां शृथिवी (धरक लांश क'रत (मर्या। এসো সব বড় বড় জানোয়ার দেনাপতি হয়ে এগিয়ে এসো, আর ছোটখাটো জীবজন্ত, ভোমরাও জ্ঞা পিছিও না 'ছোট হ'লে কি হয়, গ্রীদের হতিহাস যদি পড়ে দেখ তবে দেখ্ৰে, অত-বড় 'টেবাগোনা' তাকেও জনকতক यद्याम भिटल दमाउटल পाठिएएছिल, वीत গ্যোলাব কাছে পরাভত হ'লেন, আর व्यामाण्यस अञ्चान वानावत वका एक कत्रामन, काठेरवज्ञाणी ममुफ वैधि त्यन, এएएकू नाइत्यत ফলায় অতবড় সত্ৰ-বংশটা ধ্বংস হয়ে গেল। বোপ বুঝে কোপ মাবতে পারলে টুনটুনিও मास्यखानाट्क निकाल कर्टि भारता ना १ আর নিশ্তার নেহ, জগৎ-জোড়া মানা রাজত্ব এচবার শেষ হ'ল দেও্ছি। গুরন্ত মানুষ জন্তদেব উপবে। আমাদের ঘর-ছাভা কর্ছে, कन्न क्षानिय फिट्छ, गाठ नव हरस दक्ष्य । নিজেদের ঘব ৬ঠাতে, কেত বসাতে, গলিক সহর ওঠাতে, রেলগাড়ী চালাতে, চুলো ধরাতে, গোরপা পৃথিবা—িযনি জীবজন্ত সবার মায়ের তুলা, ভাঁবও বুকে সাবল আৰ কোনাল বসাতে মান্তৰ একটুও ইভন্তভ: করছে না, আর নিজের গায়ে শক্তি বাড়াবে व'ल याञ्च चाफ भहित्क श्रिष्ठित चन्त्र भाषी থেকে আরম্ভ ক'রে জলের ভলাকার গুগ লীটা পর্যাস্ত—কার মাংস যে না থাছে তাতো জানিনে। তুহাতে ডাইনে-বাঁরে মায়ুষ স্ব জন্তকে খুন ক'রে চলেছে। হরিণ আর বাঘ त्यदत्र होन हो फिर्स निदत्र जोत्र छे भरत्र यस्म

বোল ধাল না করলে ভাদের ধশাকশাই হয় না, স্থাথে ঘর করা কব মানুষ যেম্নি এল অমনি जानव कुशीव छोड़ांच चांच (गरव जानव नाचव भाम माम जन हांच वन्तून, छात्र वन होंद হৃষ্টিকৰচ ধাৰণ ক'রে আৰ আমাদেৰ চবিব नालिम क'रत्र, जावा निर्कारमत्र शारात्र वाक সাবাতে চলে। চিডিয়াধানায় আমাদেব বন্ধ বেথে ভারা মজা দেখে, আর ভেন্ত অবস্থায় খাচায় বন্ধ থোকে শগন আমবা আপ পেটা থেয়ে থেয়ে গুকিয়ে মবি, তথন সামাদেব **जानवानां मार्था थेफ श्रेष्ठ गाज्यां कांट्रिय**े ानम्हरक, अवः नाना छकोट अश्चत मट्डा শানাদের সাজিয়ে বাথে, এমান বজ্জাত মানুধ-গুণো। দাও ভাষের ঘাত মটকে, খাও *राज्य सामा छटमा कर्मा छटत ।"

वारचव वकुला खरन कांठ शांत्रा खरनाव bi अ निरम्भ कर कर करेरन क्षण १५ ट्राइ नाग्र ८१। त्माच नात्यव निष्यत्र किट्ड च कल जैन, वात्यव नथक्ता जङ्गा भावाव मसा अस्मिति इस नय (यन ८मङ ছाগमहानाटनय आनान्याम क्षांव करम द्विराय जन। नाम जात्न नाम जम २८व कानमांदेत मिटक २१७ वाफिरव व'रम ৮লেন—"আহা বাছা কাদ্বে বইকি, মার্য নিজেব ছেলে মেধের বিয়েতে ভোমাব মানবাপ छानत्कर कानिषाटि राफ्काटि वान प्रिय নিজেব জ্ঞাভি-ভোজন করিয়ে যথেষ্ট সামোদ পেয়েছে, লেজা মুড়ো ছাল চাম্ড়া এমন-কি क्त-कथाना ७ - जारा (कल्ट) (मग्रीन, ध्यन किए भूट है जाता शाही व त्यान त्या का त्या का व्यामि (स वाच-वामि ९ ८ ७मन हि कहर ५ ४ ७५) भारे, कि मक्जा कि मञ्जा। करे ममानदा थ्<mark>षिवी (ज। এककारम आमारमवर्हे किल—</mark> अ्थन ट्या दकारना नामाई हिन ना-था । भाव

মৃগ্য, ১ঠাৎ অপঘাত মৃত্যু, অপমৃত্যু, তঃখ-শোক, ভয় ভাবনা আর যম্বণা বনবাসীদের জাতা। বনুগণ, একভাব ধ্বজা ভোগো, एए विषय नन त्याक के के का कारण व निरंक, वल এकछार 'अंग्र कोव कल कलनम्।' **कृत्नां**ग যাকু মান্ত্ৰেৰ প্ৰচাপ " হাসুৰ হাসুৰ ক'লে তিনবাক ঠাক দিয়ে বাঘ আদন গ্রহণ কবলোন।

त्वाफ्रांशिएव भाप्र ८थरक रशका-शास्त्रा পি জরাপোপের একটা বেতো ঘোডা থোঁড়াতে নাতি ক্ষেত্র আমার নয়, কেননা সবুজ ক্ষেত্ত আৰ মাঠে বাজির থেলা নিয়েই আনি সারা-ভাবনটাত প্রায় কাটিয়োছ, অতএব আমি – আমার এ জীবনে মান্তুষের সম্পর্কে बरमहिन, भोठात छिन्क रमर्थ धार्ताला मन अम कि इ:थ रभरत्रि, स्मक्ट्रेक्ट रक्तन বলি। একদিন ছিল যখন ভাজা খোড়া ব'লে ৰাম্ব আমাকে সোনাব গাম্লাতে বাজার হালে দানাপানি দিয়েছে,ভারপর একদিন এল যথান কেবলি অনাদর আব চাবুক আব হাড়ভাঙা थार्हेनि। हेट्सब डेट्फ अवाव नः मधन काबि, আমাব শিবার শিবায় রুক্তের বদলে সোমরস চলেছে- সবুজ খাদের, সবুজ পত্রেব কাঁচা আব টাটুকা রস। কিন্তু হাল ৩বুও আমি আমার মাত্র-মনিবকে ঘোডদৌডের বাজি-रथनात्र कुर्प्राচ्तीरङ जिल्हिय भिष्ड जनात्रभ হলেম। মনিব হতাল হয়ে আমাকে গোলামের মতো বাজারে ৮িয়ে বিক্রি ক'রে গেল! কিন্ত তথনো ছকিশার চরম হর্মন, আমি রাজার ডাক-গাড়ী টান্বার ভার পেলুম।

আর যাই কোক সুথ আর মান-সম্ভূমেধ কানি उथरमा यफ़ এक है। इश्रमि, किन्द्र यिपिन थिएक মান্ত্র কলেব গাড়িব ডাক এনে হাজির কব্লে, (महेमिन एथरक कांगांव कम लिन, • ५:८थव পব ছঃখ, ছদিশার পর ছদিশার আমি মবণাপর इस्त्र टिक-शांडिव व्याखांचन ८०१क मूनिशि-পালের ময়লা-গাড়ি টানতে টানতে খোঁড়া करम त्नरम निक्वारभारम शिरम भक्तम । व्यथन মলেই বাচি, কিন্তু তার পূর্বে আমি ভোমাদেব সকলকে অনুরোধ কবাছ, শোমবা বেমন ক'রে পাবো কলেব গাড়ির বাস্থা বন্ধ কব,আব महा (शरक जकते जकते। त्थांमा त्यात्वार्थव माटिय यावश कत--याटल-क'टव छवान जागवा আন একবার সবুজপত্র সবুজ যাসেব আসাদ ८भएत, नवकोवन नांच क'रत (बंध-मंचारक धश्योम मिटल मिटल श्रीक्षयांक , शाफ़ा-नरश अर्थ-भर्थ थांजा कवि। देटेक्ट अर्थात (भर-সম্ভান আমবা, বাস্তবিকট আপনাদের কুপাপাত্ত এ বিষয়ে সন্দেহ নাস্তি।"

সভাপতি বাঁড় বোডাব তৃংথ-কাহিনী আর
পোচারণের মাঠগুলির কথা শুনে এতই
কাতর হ'লেন যে, দশমিনিটের লগ্রে সভার
কাজ বন্ধ বাথ্বার জন্তে তিনি ঘণ্টা দিরে,
একবার বাইরে বিশ্রান কর্তে চল্লেন। জলচরগণ এই সমস্ন একবার খালে-বিলে নেমে
জলযোগ ক'রে নিভে লাগ্লো; থেচরদের মধ্যে
কেউ কেউ উড়ে উড়ে একটু হাওরা থেয়ে
নিলে, আর উভচর আব স্থলচর, ভারা—কেউ
মুরগীর ঠেং, কেউ-বা মাছের কাঁটা, কেউ
মুরগীর ঠেং, কেউ-বা ভার চেয়ে মোটা
হাড় দাতে ভেডে চট্পট্ ব্রেক-ফাই ক'রে
নিতে, লাগ্লো।

দশ-মিনিটের পবে আবার টুং টাং ক'রে গলবলী বাজিয়ে বাঁড় মাঠ থেকে এদে মাচার ঢুকলেন, স্বাই যে যার জারগার বস্লে, কাবেশবী বা'গণীতে বার বাবিনীদের জাতীর সঙ্গীত আরম্ভ হ'ল:—

(বা'গণী বাবেশ্বরী)
নীলাং অম্বরাং মেবৈমে দূবাং নমামি
| ভোমাবে !

ত্যা-জালিকা মেঘমালিকা বায়ুরূপিক।
ক্যোধবলা ক্ষনম-দায়িনী।
জগজন-মন-মোইনা, পশুপতি-শিশুপালিনী

(কোরাস) সংশং জলং ফিড়ি॰ ফডিং পী চব্ চক্ ফটাক্ জল্।

মাথবি উপরে আকাশ আরো নীল,হয়ে
উঠক, নিশাচরদের হথের বাজি নিরাপদ
হয়ে থাকুক, মশাব গুজন মাছিব ভোঁন
ভোঁন দিনে-রাকে শোনা বাক্, পৃথিবীর বুকে
কেঁচোমাটি কুগুলী পাকিয়ে রমনীর থোঁপার
মতো শোভা পাক্, উইচিবিব কীর্তিক্ত মেঘও
ছাড়িয়ে উঠক, হয়ের এম্নি-সর নানা প্রার্থনা
আনিয়ে চাতক-পাখী গান শেষ করবার
পূর্বেই সরাই চেঁচিয়ে উঠলো—"বাজে,
বোকোনা, কাজের কথা কও, কাজ কাজ
কাজ।" গাধা ব'লে উঠ লেন—"ওয়ে পক্রি,
ওই বাগিণীতে 'গা' আর 'ধা' হটো হারই তুমি
একেবারে বাদ দিয়ে গেয়েছো! ওটা ভূল
হ'ল, বাজেরী ওতে ফুটলোই না।"

কান্দাহারের উট্ প্রস্তাব কর্লে—"যাতে ক'রে মাত্রব নিজেব পারে হাঁটিতে লেখে ও ইাটিতে-শেখার অভাস্ত হয় এবং ভবিষাতে

विक विक् वार्तियात्रिक्षित शृह्य ना छ छत्राव ত্ৰতে পাবে ঐকপ একটা ৰন্দোবন্ত সভা ট্রাকে তুবন্ত যাতে করা হয়, আমি তাহার জন্য প্রেম্ভাব করিতেডি ". এবং সইভাগণের ও সভাপাত্র দৃষ্টি এ বিষয়ে আকর্ষণ कविरक्षि।"

সভাপতি যাঁড় দেখলেন সত্যিই পন্তাণটা উট करवरहर मनः नम्, जिन डेरमाहिक कर्भ डेहेरक (उरक लर्शालन—"अंडे डारमा कारक मन भे किला कुत्राभव त्थक **ब**वर **का** का आत्व দট্পাথী এঁরা বিছু অর্থ-দাথা 🕏 ৪ সহামভূতি अछोत्र मूर्य ५ भ दरेरम् । आद्र कास्त्रागर्यत उछ '८ शता' व'रम क्र'वाव चाफ नारु एम, हैं।-ना किडूरे दांका दान ना। मुरगाव डेटर्र বল্লেন-"মান্তবভলো বতদিন না বৈধ্যবধ্যা (नग्र, व्यात क्मार्थाना छात्रा वक्ष काप्त व जीरवन छःथु (यांना मंखन। म्ह्यूव नार्य কেউ মাল্বে গম্ম, কেউ শ্যোব, কেউ পাসা - ध ३'८म भीरवद त्रदण (कारनाकारम অস্ভব ৷"

वम-वज्ञार टिम् निष्य व'त्न छेठ्दनम-"मृत्याब या वर्ष्ट्रान ठिक वर्षे, किस कमाञ्चानाव मरक चारता-मय नाना कांग्रशाय नाना चार्यक्रना गाञ्चवा कोवत्क प्रःथू (प्रवात करण करण करत्राष्ट्र, त्मश्राला मस्या मृत्यात कि বলেন ৪%

क्रमारक थाबिएम वर्ष्यम—"याक्, चरम रक कि अवरमव मिर्न 'गू' करना ছोअन एकड़ा

খায় না খায সে নিয়ে প্রকাশ্ত সভায় मां भनो दिन व डिंडिंड इस ना अंतर्छा करा।"

धरेयाय नुगान छेर्रानन—এ७कन जिनि ्क कि . বলে মন निष्य **खन्**छलन আব নোট-বইরে টুক্ছিলেন--আন্তবের লভার মাচায ভব দিয়ে ত্রিভঙ্গ হয়ে দাঁড়িয়ে শেয়াল আৰম্ভ কব্ৰেন—"পূৰ্ব পূৰ্ব বক্তাৰা যা ব'লে প্ৰস্তাৰ क'रव (गरनन, जावि मधरक छ'ठा । छ कथा य'त्न कामि काछ रता, किन्दु (मर्भ मन প्राप्तान ানযে নাড়া-চাডা করাব পুর্বে আমি উপস্থিত म जा जा वर्ष करावाम भिष्ठ। এ का बाब मार्थि অনেক সভায় গিয়েছি, কিন্তু এমন এক পাণে একমনে লেজ-লাডা আমি কোথাও দেখিনি, (मथ्रवा ना। माय्रयव निष्मव लाख त्मह। াই অভেৰ লেজ দেখ্লে তাৰা হিংদেতে জলতে থাকে, মানুষ গের স্বাই তালের মতো निलक्त (लक्ष काही इत्य अभ्य गर्था (कदल कुम्राफा-वांग हांग इश, अर्जामन (पांधांव लिख जावा वांति, कुक्रवत लिख छ, शक्त (बाक, स्याप्तत (बाक्स किकूके वाम ्मग्र ना ।'

(अग्राटन कथा खरन मु ए।-रनव खानकूरखा (कॅ'क्ट्स डेर्ड ट्या- "क्रिक वटनक मामा-তোমাকেও ভারা ছাডে না!" শেয়াল সে कथाय कान ना पिरत व'रण ठरहान..." এथन कारकात कथा (काक...किश्ह्य श्राच-मरण बाखन-वर्न वक्छो च छ পछ वाञ्च द्यापन कर्रण मन्भ इय मा, किन्छ এটা আমাদের ভুল্লে **ठम्द**न ना (य, था ७४-४न युविष्ठिदं का याना শুমোর ঘোঁৎ ঘোঁৎ ক'রে তু'বার গলা যেমন ছিল এখন আর তেমন নিবাপদ থাঁকানি দিয়ে বরাহের কথায় একটা কড়া নেই; প্রথমত: জায়গাটা গুরস্ত গ্রম. সেই कवाव (मरवन, এমন সময় সভাপতি যাঁড় , গ্রীক্ষপ্রধান দেশের মধ্যিপানে, বেথানে

भवरशीम अम्नि-मन एकां छ जागा व इरन व विद्यास कांद्रक मार्श, ध्यम-मन खस्त्रा दमश्रादम টিক্তেই পারবে না, এর উপর সেখানে भागानत्वक खग्न चार्छ, भागते बाज्यपत्रम षर्ध थाटक। कुकूत (य महत्व थाकां मह প্রস্থাব করেছেন, সেটা আবামেব দিক দিয়ে **(एथएक दशदा यक नम्र, किन्छ कुक्**र विविधित्रहे মানুষ-ঘেঁসা এথনো শুজ লে হয় ভো তাঁর नामा कलारत अकडा (वदाछा तकर्मन नाम **(मथा यारव।"** कूकूत्र कथांछ। खान पाड़ हुल्कार क नाश्राम, हरत्यांना भाषी स्वत क'रत वन्द्र- "कानकाष्ठा ना रु'रन कि गानूरवन मा कु दिख् इत १। १० (भाराम व'त्य हल्ला---"বাথের তেজন্বী ভাষা শুনে আমাবো একবাব मन् हरत्राष्ट्रण - लिल यारे कामव तिर्ध नेष्ठारत्र। क्रक किरमरव नफ़ांडे मना नय.—नरफ़ दर्देरह ' আস্তে পার্লে। নয়তো কতকগুলো অনাণ व्यमाश निष्य ना लड़ात परक वर्ड विभए छ (कर । या ७ म । घर व घर व का नांथ-का खारतव ठामार थाणा निरम छा को यम व व ५३ विभम घढास, काटकर वम्एक रूटक गडारे भृताभूवि ভালো नम, ७८७ मन ७ मिर्गण जारक, विरमर সতোর জয় যে সন সময় ভা নয়। শুয়োর যা बरणरहन कात्र मरशा कारणा-मन्म छुटे कारह, जार नवाद्धंत क्षेत्राचं क्रामाद्धदान वाकादान উন্তির জভ্যে তুলে রাথ্নে মন্ হয় না, **मृत्यांत** कांत्र वतांद्यं कथांत्र यज्हें मांव थाक् ना, बाजनी जि-त्करक दमिंग दकारना जिनकारब व्याम्द्रय मा । काटकडे मकरण रमथ एवन गाँखि किया युक्क, व्यथवा मिश्टन्त्र श्राय-मरका স্বাভয়তা অবলম্বন—এ তিনই জীব-সমাজের मनाय भटक मधान कन ८०८५ ना । এकथा

धकवारका श्रीकांत्र कत्र्ए हरव रम, कार्थाश्र व्यक्षे त्रांन चाइ व्यव त्म त्रांनों मिर् করা দরকার (সাধু সাধু)। আমি যে উপায় ৰাৎলাৰো দেটা সুম্পূৰ্ণ নতুন, আৰ এ-পৰ্য্যস্ত পশু-সমাজে তাব কোনো পরীক্ষা হয়লি (শোনো শোনো, চুপচুপ)— এস, আমবা मकरन कानमारजंब बर्ग प्रेंटिं भ'र्ष मानि— (कनना खानिय जान विखानित शेशहे र एक . শ্রেষ্ঠ পথ, 'জ্ঞানাংপবতবংনহি'— মালুষেই वर क्षा वरमरह। दक्तमा वामना मानव-काछित है जिल्लाम त्या क चेहा निरंभ त्या न चारारमबर्-वा ्क्नना विश्वविद्यालय शाकरव, জাতীয় মহাদাম্ভি থাক্বে, খাব থাক্বে একটা भूथभाव राथारम भरत भरत जाभवा निर्मरन অভাব-অভিযোগ-গুলো ভাগতে বিশ্ব-সমাজের मास्टन र दिन मिल्न भाति, कांगाटमन आणा, উश्चम, बालि-लोलि, ध्रतंत्र कथा, वाकेरतं कथा স্বহ বেননা ছাপার অক্ষরে খুদ্রিত হয়ে স্বার कार के शक्त भ

মাত্রবারে মধে। বারা প্রাণীত স্থানয়ে নাডাচাড়া কবে, ভারা ফনে করে ছ-একটা মবা
জানোয়ার নিয়ে ঘাঁটাঘাঁটি ক'রে ভামাদের
হাডহদ সবই জেনে নেবে, সেটা বড় ভূল।
জানোয়াবের কথা এক জানোয়ারেই লিপ্ডে
পানে, কিসে তাদের রুখ কোথায় তাদের
ব্যথা সে কেবল ভারাই খুলে বল্ডে পারে,
যাদের যাদের হুথ-ছুংখ আনন্দময় জাবন
জলো মামুষের চাপনে শুড়িরে ধুলে। হয়ে
যানায় উপক্রম হয়েছে।" এইথানে আবেলে
শুগালের কঠবোধ হ'ল, ভিনি একটু আভ্রুরের
রসে গলা ভিজিলে আবার হার কর্লেন—
"আমাদের ছুংথ-কাহিনী জামাদেরই লিখ্তে

वन्छ हल्लाइन ध्यम ममन मणामिक मणा- ममर्थन, क्षार्म किया किहुरे र'न ना। ज्या पर्छ। पिरम कठार बार्टिस पिरक थाञ्चान् कॅवरणन-म्रांभिङ्क भग्नवान रमवान श्राखाव

हरत, रमजरक जयन रभरक खेकड बेटमा इलमान चारमहै। कारकहै जनमस्य मछा रचरक ठाइटे ठारे!" मृगान উৎসাহের <u>मध्य चाद्या</u> म्याहेटक ठ'ल (यटक र'न, कादमा **প্রভার**ই শ্রী অবনীজনাথ ঠাকুর। (ফরাসী হইতে চুরি)

देशोवदनत किं

भूँ किभागे नित्र महत्त्र वाहरत यार्ठत द्या व्यवस्त्र भारक रामा व्यवस्त्र भारक व्यवस्त्र व्यक्ति भावायात्म त्य जाकवाश्माणात्क चामि शित्य छँम (महे। আশ্র নিলাম তা' থেকে কুডি গল আন্দাজ এ বয়সেও প্রতি অঙ্গ তাঁব স্বাস্থ্যে নিটোল, দূবে নদী। বাডীব স্থমুথের ককালদার শ্রীরের বাঁধ শক্ত মজবুত কর্মিষ্ঠ। আর बान्डाडी (यथारन महरत्रत्र मिरक भाष्ट्र किर्द्राष्ट्र, त्रमबीत्र मर्छा छन्मत्र कममीत्र मुबर्गिए अक्टा ्मद्शात्म, सांख्यत्मन मध्या, नमीन পाफ़ कृथित र्हाम त्यम क्रत्यत्र खात्म हिह्हहे रूत्र (परम এक छो, दो छोरमंत्र कम भिन-त्रोड भित्रेष्ठे करत्र माङ्गरषत्र काटन **काना ना**शिरम मग्रा-कावश्र महरत्रत्र वाहरत्र अमिकछोर्ड মানুষ বলতে কেবল আমি, আর সেই বোতা-्भत कन्नित्र मानिक। এकना वरम वरम गथन चात्र ভाলো লাগ্ত না, এক-একদিন খুব বেবিয়ে আদেন, আমার বাড়ীর স্থুমুখ দিয়ে হচ্ছে হত, লোকটির সঙ্গে পরিচয় করি, কিন্ত আমার রাজের যুমের বাাঘাত সমস্ত वां अरत आभात मिल्निक (यंगाकात एमरे हेक्कात कारम कूमज्ञना मिरम मिरम छारक निम्थ করে দিত।

লোকটির নাম শচীপতি। তাঁকে প্রথম ध्यमिन (पथि, मिहेमिनहे, किन कानितन, व्यामात्र किन्न कि ावत्र बादक बूदथ एउँदन विद्य छै। त्र कै। वरत्रम ्यन भूमित्व शर्फ चश्च (मण्टा । जीत्र यातात्र निनिष्ठ काहित्क बाटक।

ल्यार्ग निष्मतक, कि कूटल क्रांफारना याटक ना ।

चात्र (मथ्डाम, विकास स्टब्स् अकि পাতা-ছেড়া পুরানো বই হাতে করে ঝাউ-वटन (चत्रा वाफ़ीछाव ছात्राक्षत्राम एथरक शायक কপাট সরিয়ে ভিনি বাইরের সোনালী আলোয় (य ब्राष्ट्रांठी (छाउ-अक्छि-यार्ड भात हरत्र अक्छ। े পুরানো পোড়ো বাড়ীর কাছাকাছি গিয়ে শেষ ক্ষেছে, সেই রাস্তা ধরে গিয়ে दगरे त्थाएं। बाष्डीहात्र मामत्म किमि धम्दक দাড়ান, ভারপর একধার চকিভ চোখে **हात्रशामों। दश्य भित्र दहादत्रत मट्डा मधु अथह** यत्न इर्प्नाह्रण, भाका हृत्णत्र माना এकवानि चामात्र कारक मन वरम मा। त्यांना कान्नाप कामफ हरत शिक्टित कामात्र विनिष्टित शत

धर्मान करत्र यथन मितन इस ना काक चात्र बाट्ड रह मां युम, उथन এकामन चार ना পেরে ভাব্লাম, যাই, লোকটার সঙ্গে কোনো व्यक्षारक अंक देशानि सगए। करन सामि।... महीপতি बाफ़ीएकरे हिरमन, थवब रभरस हुरहे ५रम कानावश्रक উত্তেশনার সঙ্গে আমায় কভার্থনা कत्राना এङकान डंग्न ५७ काट्स तराहि, **ख्यू (मथ्**याम, यामात मयरक এकে वात क्यांना कथाहे जांत्र जाना त्नर । स्थानि छ এक क्षांत्र कामाव श्रविष्ठ मिट्र वन्तांम, वस्म ब्रम कारमा भारत ना काहे कांत्र क महारक स्मर्य नरम करमिए। कामात्र खेणात्मा काखिनिणात्क नामिए काणियांथा काटल है जामात्र को उ ८ ६८० धर्य िर्जिन व्याभात्र ८ उटम निरम्न इल्टिन, ८ एथानकार या मर्व व्यामात्र वृत्यास्य मिरत्र-मिरत्र ममन्त्र वाफीठा আমায় দেখিয়ে নিয়ে বেড়াতে লাগুলেন। আমি मिका मिका कोकुङ्बी स्टब्स्ट स्थाइनाय; হ্ঠাৎ এক আয়গাম কল-কজাম ভিড়ের यशा कि-जक्छ। जन्छ थन्न ८० ८०१न युर्क भएक द्वेक नेक करत किल एम टाटक मायट क (मट्डा ८ डाटनाम । मां फिर्य मां ५८व चामांत्र भा धरत्र (श्रम । व्याभाव मचरक उंदिक मटहरून कत्वान कट्छ कारजन गाविद्यारक वान-कडक মেখের উপর জোরে জোরে ঠুক্লাম, ভারপর कारनकक्रण सरद कानामश्रक कुरकाव भवा करत পায়চারি করে বেড়িয়ে, মদের বিরজিকে किंग्रिके किएम द्वितिस हरण जनाम ।

शाखिर द्राकारमत करण विषेष कारम निरम चूमिरम भएए चटा सिथ्गाम, 'क्रक्रीम स्व भक्षरक नीम्रम कार्यशैन राम मार्ग करबाह, काल छात्र क्रिक्रमांच मार्ग क्रब्लि कामान कारह राम क्लिक्रमांच मारम। क्रिक्लिक्सां, क्रक्रमांच এই জলের মতো ভাষা আমি বুঝুতে পারিনি।

মুম ভাত কেই জান্লা থুলে বোভামের

কলটার মিকে চেয়ে চোথ খুল্লাম। কে যেন
জলেনা কাতে কেটালক সেইনিকে আক্রার

, অদৃশ্র হাতে ক্রমাগত সেইদিকে আমার টান্তে লাগ্ল। কাল যে থুব প্রীত হয়ে ফিরিনি সে কথা একটুও মনে হলোনা।

এর পর রোজই একবার করে বাই;
বিস্ত কলের কাজে শগাপতি এত বাস্ত
থাকেন যে ভালো আছি কি না সে ধবরটুকু
নেবার পর্যান্ত এক-একদিন কার অবসর হয়ে
ওঠে না। আমার সঙ্গে চোথোচোখি হলে,
একটু কেবল হেসে এমন গাবে চোথ ফিরিয়ে
নিয়ে চলে যান যেন চিরজীবন ধরে তাঁর এই
কলটাধ মধ্যেই আমি আছি।

वित्रक करत काणि अकवाव याउता वक् करत किर्याह्माम, किन्न मिश्र मिश्र मिन, माम्रान मे। फर्टिंग यांत ट्रांट्थ शिक्ष नि, ब्यांड्रांम श्वर कर करत बामांत मंत्रक जात उंश्रमीक मकांग करत के मा बामि रान याकेन, वाखी वर्ष जिन का कान्र जिन जिना होंग्र तथा कार्य व्यांत्रक करता किन-किनवाव जिन बामांत ब्यांक करत रगरहन।— निर्म अ मुद्दक केंदिक अवश्र किन्न वन्र किनिन।

অন্ত লোক! কোনো-কিছুতে মন নেই,
ভাষচ ইনি মনসা। যেন দৰ্বস প্ৰি নিয়ে
জীবনের স্ফতি মন্ত একটা বাজি রেখেছিলেন জিত্লে সে প্ৰি সহস্তপ্ত হয়ে ফির্বে,
হার জিত এখনো সাবান্ত হয়নি! একটা
জাতলম্পর্ল রস-সঞ্চয় ফি-এফ-রক্তম জ্বাট বর্ষ হয়ে গেছে; আন্ত জিনিম্টা ঠিকঃ
জাছে,-পানাথীর আশা নেই।

कि जामा ना करवर जर स्टिश्य লোকটিব সঙ্গে ঘনিষ্ঠভাবে আমি মিশ্তে माशमाम। ज्याम य्वा, महीमां जुक, धा সংস্থেত আমাদের বন্ধত্ব কলো। ভার একটা। कार्य, এक कार्यास जामात्मस मञ्ज এक है। মিল ছিল; আমরা ত্তনই অবিবাহিত। কিন্ধ বিবাহ কব্বেন না এরকম কোনো সময় ात चाहि, এमन कथा कार्तानिन । इनि रम्टिन ना। जर्कत त्वांत्र शहत लाक ान परम निष्कृष्टि পেছে, कांटलब दनलाब ্সই গচহাব প্রত্যেক কড়িটি স্থদ স্থদ্ধ আদার कार विश्वा किन कार प्रकार । এই ভাবে िट्डिंग लावी शक्नी मचस्क भिरमंत्र शव मिन নাশক যুবক বৃদ্ধ ভিন সমাজে প্রচুর গরি বাস রসের স্থষ্টি করেও বে অবধি তিনি क्रियांक्ष्क्र एथरक ८१८नन।

আমার সঙ্গে কথা কইবার তার অবসর শেখ্তাম না। करमा कामन्न ज्ञान कला भाष्ट्राम । ्यरकाषत्र मिक् (शरक खाश्रामर सर्थाष्ठ मचा कि সাড়ার প্রয়োজন আছে কি না, এ কথার জনাবে তিনি ৰল্ডেন—কোথাও কোথাও बाह्य, द्वथादन छात्रा छात्मत्र छान्द्रीरमत्र 'हरत मार्माकक वा अञ्च काटना हिमारव থানিকটা উদ্ধৃত, সেথানে স্বাভাবিক নিয়-भित्र वाण्डिक्म करत्र छ। जारम्बर् छ। थार्थमिन অগ্রসর কতে হবে, এই ছিল জীর মত। প্রেমের অকুভোভন্ন হওয়াই উচিত, কিন্তু সে थेजाथान महरू भारत, अवद्या महरू भारत मां, रमज्ञ जारक मार्म स्वात मत्कात আছে।..তিনি এও বিশাস কর্তেন, वांगात्मय त्मरचंत्र त्मर-यम, गर्गाय ७ ब्राइडेंब त्य मयोषा, जान श्रीजकांत्र त्यरब्रहान व्ययरनाथ-

मुक्तिय गरभा बरवरक । এश्वरणंत्र ८मरय-भूकव মাত্রে মানুষে স্বাভাবিক সম্বন্ধের জান্ত্রগার্টিভে যভদিন মিল্ভে না পারবে, ডঙদিন স্বান্তা-বিক মান্তবের যে স্বাহ্য-সাভাবিক মান্তবের (य म् छ। छ। --- (कारना-त्रकरमत्र माधनात-धाता है ভাচে পাবার চেষ্টা আমাদেব সার্থক হবে ना। जामता एव श्रुतम्ब, धेंडा मत्न कतिरम मिट्ड (यरम्या प्यायापाय भाष्य त्नहे बरमहे বৃহত্তর জীবনেও সমস্ত চিস্তার এবং কর্মের **८क्टाक कामना काश्चन वटन जिल्लाह**, चाद्रा याव। वाडियत (वर्ग (वाडांम-कन আর সেই পুরানো পোড়ো বাড়ীটার মাঝধান-কাব পথে পায়চাার কর্তে ক্যুতে এমনি वात्र महत्व विवद्य कामाद्वत व्यानाहना **व्याध्या करणात्र कारक्षत्र क्वांश्रम का এटन** কোনোদন তাকে ক্লান্তি বোধ

একটু একটু করে তাঁর জীবনের একটি
নিগ্রচ অঞ্-ভরা অধ্যারকে তাঁর জজল হাসিপরিহাদের মধ্যে দিয়ে তিনি আমার কাছে
অনার্ভ করে ধর্তে লাগ্লেন। যথন
আর-একটু হলেই সে হতিছাসেব একেবারে
সোড়াটাকে আমার পাওরা হয়, এমনি সময়
আমার এক বন্ধুর অহুবের খবর পেরে কিছুদিনের জল্জে আমার ভাগলপুর চলে বেভে
হলো। সে সেরে উঠতে উঠতে প্লোর ছুটি
আসর হয়ে এল, মাঝ্রানকার কটা দিন ছুটি
বাড়িরে নিয়ে এই ফাঁকে একবার পশ্লিমটাকে দেখেঁ নিতে বেরিরে পড়্লাম।

किरत এসে দেখি, পথের পালের পাতাররা শাখাবিরল গাছের আশ্রমে বসংস্কর একমাক যাত্রী-পানীর মতো, সেই পুরালো জীর্ণ মাড়ী- **छात्र अञ्चलकात्र खक्क निजाटक महिक्छ करत** পাড়ার একবর নতুন লোকের সমাগম হয়েছে। ভাঁদের সৰবাইকেই ঠিক নতুন লোক বলা চলে ना ;—পরিবারের যিনি গৃহিনী, ভিনি জুমি ৰেভে পারো a' এथानकात्रहे स्याप्त, भीष्ठि अक्रम सामी जात একপাল ছেলেপিলে নিয়ে তাঁর পিতার পরি-ভাক্ত বান্ধভিটের আশ্রমে মাথা গুৰুতে **धरमरहम ।**

दिन कानित्न, कामांत्र मत्न रत्नां, जामत मर्क महीপতির জীবনের কোন্-এক জারগায় धक देशनि (यन (याश चार्टा भंडी शं टरक वम्टि जिनि दर्दम बामादक এक है। शकः नित्र बन्द्रिन, 'मूत्र পাগण।'——ভারপর শিভের ভৈরি

আগেকাৰ মতন কৰে মিল্তে পাৰিনে।— भारका वाकीवात्र काहाकाहि ननात के भारकृत छेभन्न मां कृत्य चारभकान मरका स्वारक्षत्र (भाषा (पथ्र केंद्रिक भात्र निर्क शाबित। आफ्नि बर्डवात याहे, डिनि बामात ष्याभाव कावन काम्एक हान, त्यन ष्यामि निष्मत किक खोन शक्य अध्यान दिले की विकास वित्रक का का मा-या अयो क्यं वि । करण व कारक छ त्व जीव यन व्याटि, ध्यम् अ यत्न रूप भा।

णांचे बाधा करण चार्यकानि हाम्रज काम्रज क्वीजि**णांकर**न्यू---मिनिकांत्र थायात्र शूनकिक कत्रक रूमा।

करत्र वर्णायान, 'ब्यायान एउन कांक ब्याटक, यक्त्रां कट्ट कामात्र किन काटि ना, काटना १ टिलामात्र यमि काछ टकारना काक ना थोरक,

वाद्य खर्ब खर्ब मरम करणां, त्वाकारमञ् কলটার সেই জলের মতো ভাষা আৰু আবার **क्विल (यन क्विम पूलिए गाएक ; खाना छ** (**इंटा** करत्र ७ जात्र वक्त वाहोरक (म म्लेष्ट 'कब्राड পারছে ना।

আমি যে অপমান বোধ করিনি, ভা নয়, ভবু ভোর ২০৬ই বোভাদের কলটা নিভাকার भटकी कामान हान्टि नाग्न। वायमा करा যাদের মঙলব ভারা চিনির ব্যবসা করে কি নতুন পাটোর্ণের কডকগুলি বোভামকে হরিতকার করে লতে কিছু এসে বার না, আলোর কাছে ধরে ঘুরিয়ে ঘুরিয়ে অভিরিক্ত অবশ্র হলি লাভের অন্ধটা সমান থাকে। এ মনোখোগের সঙ্গে দেখতে লাগ্লেন। 'কেত্রে জাঁমার লাভ ছিল কৌতুক; সব আমি একটু অপ্রতিভ হলাম। প্রতিজ্ঞা অবস্থাতে সেটা সমানই জোট্বার কণা। তবু कर्गाम, এ मयस्क তाँक कालामिनर बाव ममछ मिन्छ। रेख्छ करवर केछिनाम। खाँव कि इ वना करव ना। कि स ा कि भाश्री यात्र ? अत्र विस्करणय मिरक का भाष हा भाष निस्न ম্পাষ্ট দেখুতে পাই, আমরা আর ঠিক সেই ভৈরি হচ্ছি এমন সময় শচীপভির চিঠি নিয়ে कांत्र करणत्र भित्रन मदकात्र अत्म हाँक मिरण। যদি সে-সময় কেউ এসে বল্ভ শচাপতির বোভাষের কলটা ক্রমাগত কাজ করে করে हाँ भिरम शिरम थांछ। निरम निमित्रिविशास्त्र कविछा णिय एक नाम (शरक, कान पामधी) বোধ কর্তাম, তাঁর কাছ থেকে বাবো পুটার मछ वफ़ कानी এই চিঠিথানি পেনে ভান চেনে वक् कम कान्ध्या बनाम मा !

व्यागात्र कागटकत्र काख्या रायश्दित भन्न ध्यान जिनि जन्नानक ६८६ निष्य हो। सून मान । कृति जान जामान योकीन होताल माज्य ना

जािम क्यानि। व्याभिके वां दकान् मूट्य दिलामात्र আব আস্তে বল্ব ? আমাব তথন কি करशिष्ट्रण स्वानित्न, किन्द्र कशवान कार्नन, ट्रामारक जावाङ कर्ता. जामाव जिल्लास ছিল না। সম্ভণত আমার জাবনে এখন এ৩ (यमना (य त्मनारवार्धिय শক্তিটুकु পर्यास আম খুইরেছি, নিজের বেলাতে ৭ যেমন, भर्तत्र (बनारकेड रक्सांन।

ভবে আমি কও বড হঙভাগা তা জান্দে হরত পুষ আমায় ক্ষা কব্বে। সেই আশাতে বিথ চি।

। टामांत्र व्यक्तमान वर्षार्थ्। व्याम अवटना जाम्हर्गा के कि जर ८७८व, ज वसूमान जाम नमन करत्र कत्र अत्रा न्दम्य (म क्थाटक ज्यक्षकान म्हानन (भाभन-श्र (क्वन क्यां अक्ष क्ष क्ष व्यक्ति व्य द्रार्था**रि, वाङ्गरेत्र आरमारक अक्षि • मिर**नेत्र धनाम्रारम जूमि छाएक एकरम एक्नर्य, তোমাকে ডেকে কাছে ব্যিয়ে বল্ভে পারার ञ्चिष्ठ कृषि व्यामाम । १९७७ ८५८४ ना, এ কেউ সহতে পারে ? ভুমি হলে কৈ কর্তে ? কিন্তু ভার আগে সমস্ত অবস্থাটা ভোমার शाला कर्य क्लान (नक्या होर ।

খুব ছেলেবেলায়, আমার এক মাস্তুত বোনের বিষের নিমন্ত্রে সিয়ে তার সংস্ক্র शाक्टन १

त्वरक है न्यां न कित्रको वरनव भन्न प्राचारम् मठा প্রতি মুহুর্তি ভাকে মলে করেছি। रमर्हे लिख दबर्ग मगब म' इटडर दशरमञ् काक त्यारक त्य अने काशाय किर्मिक्साय, अक वश्रम धर्म वरम वरम एम्ड्रेटिंग्कड आभारक LMाम कत्र 5 काक वृक्ष दा।

পৃথিবীটা যে এত मिদম রকমের বড়, (म वश्रम ७ ८म कथांछ। आव काना किन ना, काद - दकाषां अ दमरम्हल कर्ना दम्य दल्हे व्यायांत्र मुथ मान रूप है है है, मत्न इन, भ ानक्त अब गर्या कार्छ, वामि एम कावशांत ত্রিসীমায় হেস্তে পার্ভাম না। কোনো कान मगार्यरमञ् जात्रशांत्र ।शरम गान इक **5ार्रामक त्थाक नव्यमग्र करव दम द्यम व्याभाव** (मथ्रह, आमात्र ठाँउ कॅल्स्ड शाक्ड, व्यामि (याम উঠ्ভाम। (त्राम श्रीमादन (यदं वाम्टक, क्वार क्वाशां अक्टा शुकूरवन्न भारक काला यात्र काटक ध्यंम्टक निर्दान, अठ धनवत्नव क्रावाव विश्व-वाखिल्या अकिं गृरु ्मर्थ मरम इक, अहे यां जी थानिटक रे म शारक, ान³⁵त्र। ज्लेष्ठ (मथ्काम, खनाशार्व गार्छत्र ছারায় অক্ররের দেউড়ির কাছে ভার ছোট ভाठ युश्च दकारण करत रम नेर्मा इस ब्यार्ट । ঘাটের পথে বাসনেব বোঝা নিয়ে ভার আনাগোনার পায়েব চিহ্নগুলিকে আমি वश्रम जामना ছ- এक मारमव ছোড-वड़। खत्म वरण मिर्फ शांत्रुअम। वाड़ीडिंटक गङ्क्ष (मथा (यङ, जामात्र CSICअ भणक পড्ভ না, তারপব গ্রাম-প্রান্তের বনাঞ্চলর व्यामात्र श्राच्या (मथा इत्र। क्यामि (य ८मर्टे काखतात्म (मछो मुक्टिस ६६)(ध्र क्याफ्राम (यक्टे जारक भरन करत रत्ररथिकगाम, रमिं। इस्म रगर्ग त्वमनाकृत माथामारक रय-रकारना কিছু আর ভার জানা ছিল না,—কেমন করে এক জারগার ভাকে দিয়ে ভাবভাম, ভার जिल्ला क्रिक क्रिक क्रांनरम याचम व्यापि किन्छ त्मिरे क्षायम त्मिश्रीम किन्छि क्राली मा। यत्म रूक, त्कान्-अक्ली विश्रुण-

नित्र চলে याटक,---व्यागात वृत्कत नित्राप्र শিরাম ভার টান কঠোর হয়ে বাজ্ত।...

কল্লনায় ভাকে এভ বেশী কৰে পেলাম य वाख्य कार्टात कर्ण এक है का नाक ए । उन्न क बहेन ना। भोष इस उरमदा এकि দিলের জন্মে তার দেখা পেলাম না। তার পর দেখা ধণন হলো ভখন টোটের क्शारित छेशत्र जामग्न-योवदनत्र कारमा-इत्ररक्त भरतात्रामा ध्वरम भौतिहर्त । आमारमञ वाड़ी (भग्नोत्रो गांह हिन, (कैं। हड़-सत्रो (भग्नोत्रो निरम शिरम ভার मঙ্গে ভাব কর্লাম। সে थुनि रुप्त कार्याय जात याद्यत काट्स निर्ध গেল; তার ছোট ভাই ঝুলু তখন বেশ বড়-সড় হয়েছিল, ভার সঙ্গে আমার পরিচয় করে দিলে; তারপর আমাকে যথেষ্ট ক্রমে আমায় একটু একটু বাঙ্গির কর্তে व्याभाषिक कर्ता रुपारक मत्न करते निन्दिक नाग्ना व्यामात करन मत्नत ममन्य व्याधाक

काम देश जा मान जीवरनत शिम्रज्य श्रानिष्ठ प्यानात्र मूहे करत निरम्न जिस्स छारक सिर्ह्य থেকে আমায় যেন জোর করে ছিনিয়ে লাগ্লাম। চুপি চুপি তাকে ভাষের থিড় কিম বাগানে ডেকে নিমে যেতাম, খুদীতে তার মুদ্ধে হাসি যেন কেনিল সরবতের মতো উপ্তে উঠুতে থাক্ত। একটা চাল্ডা গাছের ঠেলে-ভঠা শিকড়ের উপর ছবনে भाभाभाभि भी छिड़ित वरम आठाइ (थरक থেতে কত রাজ্যের গল যে আময়া জুড়ে দিতাম, তার ঠিক নেই ৮ আমি যে দিকটায় বস্তাম, সেদিকটায় ছিল কভগুলো বিঘ-পিপড়ের ठणा- ८कतात दाखा। আমার অসহায় অবস্থাটা « সে হভভাগাগুলো টের (পয়েছিল কি না জানিনে, দিব্যি নবাবের मटला कामान था (बर्ग डेर्ट मत्नद्र माथ मिरिस তারা আমায় কামড়াত, তবু তার পাশটি থেকে আমি একচুল নড়ভাম না। সে হুয়ে পাড়ার ছ-ভিনটি মেয়েকে জুটিয়ে এবং নির্ভরতা দিয়ে তারই উপর বিরাট থিড়কির পুকুরের পারে পেয়ারাগুলোর একটা স্থের ইনারত আমি রচনা কর্লাম। मक्ने कि कर्दक हटन रोग। (कर्ग-चूमिरम कामात मिन काहेरक माग्न।

পর্দিন ইন্ধুল যাবার পথে তাদের বাড়ীর একদিন শুন্লাম, তার বিয়ের সম্ব দেউড়ির গোড়ায় ভাকে দেখুলাম; সম্ভবত এসেচে। তার সজে দেখা কর্তে গিয়ে পালিয়ে এনে থানিকটা আচার তার তাকে পেলাম না। তারপর আরও করেকটা भारक नुकिर्य त्म थाछिन, ष्याभात मिरक मिन छात्र त्याचात यत्रहे। त्यरक त्म त्यक्त ८६८व श्रथमणे हम्टक উঠে ভারপর निष्कत्र ना। चामि ভাবলান, বুঝি चामात्र मरण कुण वृत्य एक त्थरम अकट्टे काम्र्टण। त्महे क्रांफाकां कि क्वांत्र क्रःथरक ब्यामान समूर्य रामिष्ट्रेक्टक बामि मान्ना भाषा वृत्तिक निष्म मुक्ति भान्त मा वर्ष म निष्म पूर्व हाल ट्यामा । जामांत्र ममञ्ज कार्क धवः मित्र वाथ हा। जारक छेजाङ ना करत पाकांक प्राथात्र त्यांक प्राप्त कांक कांक कर्तक त्य त्यांकित मत्य जान कांक कांक्रिया, भागाम ना । हिं करत कांभड़-हांभड़ भरत निया छात मरम बाष्ट्रीटल बकुनि मदय, शामि श्रामि श्रक्याति (स्था कत्नाम।' लाकिति नाम कानीभा

বস্থ, এম-এতে গ্র-ছটো পাশ দিয়ে উকিল আমি তাকে থিড় কির পুকুরের পারে हरा मरव रम महरत जरम बरमिक्षा। मख थ्व এक है। निष्ठ काम्राम निर्म रमणाम, পণ্ডিত লোক বলে চারদিকে ডখন ভাব ভাবপর ছহাতে শক্ত করে ভার হাত-ছটোকে थुव नामछाक। आर्मात्र यञ्ज करत्र निहत्र ८५८० । धरत छारक-- छारक वन्नाम। कि विभिन्न, व्यामि दक्त এरमिष्ठ, छ। । । असे कान्रिक वर्षिकाम भरन रनहा किছू कि वन्रिक वर्गम मा आह जा कर्वात यट जा मत्नत व्यवसाख डथन कामाय ছिल ना, ठाटे এक वादबर বল্লাম, 'আমি প্রবালাকে ভালোবাস।' '

(म (हा (हा करत (हरम फिर्ड वन्स्म, ' (দে। ভুমি ভার।ক হওণ ভাই বুঝা ৮'

व्यामि मुबरोटक शञ्जीक कर्प वर्णाम, वाटक ना, व्यामात्मत्र এक भाषात् वाडी।'

त्म वस्टम, 'डा टबम (बम। পाए।त्र मव (इत्न-(मरत्रवार्ड काटक थूव ভाলाबारम, विश्व १

कामा त्य कार्य कार्य कार्य अकूक दमशास्त्र दमझा कामा कर्न १ না করে আমি উঠে ধেরিরে চলে এলাম। সেহ বছসেহ আমি বুঝোছলাম, সমস্ত ना भारत अद्रवामारमंत्र वांछी शिर्म कांक्रिय म्हावनारक विकास करत्र कुल्ट এक হলাম। সে তথন চুল বাঁধা শেষ করে উঠে প্রেমহ পারে. এবং এই সম্ভাবনার দিক্ थायना किक्रणी कृत्म चदत्र नित्य शिक्ष त्राथ वात्र **एभक्रम क्वरह। जामात्र ८५८७ थम्**टक पंष्टाम । जामात ममन्ड म्बीरतस मरश छात म्ब अक अख्टिवरंगन बाकाछ। विद्यादं उन्न भटका थांका मिरत भिरत वरत रंगल। यन्नाम, 'भारमा।'

त्म इम्र डाव्टन, त्मम्या कि जातम् । ৮ট করে একবার আমার হাভটার দিকে डांक्टिय निदम भा दिश हुटि अगिरम अस्म बन्दन, 'कि १'

োরেছিলাম ৮ তবু সে গ্রীবা বাঁকিয়ে टाथ भावित्य चन्ता, का १

षाम शत-इपि छाड करत वन्नाम, 'দোহ' ভোমার। তুমি হচ্চে হলে আমার विमुभ कदत्र कितिरम भिटल भाव, किन्छ कागांत्र कारखा कत्वात (कारना व्याधकात्र (नरे।'

म हो कि किएन अक देशान करम बन्दन, 'পুমি ভাহলে কৈ চাও গ'

বল্লাম, 'জোমায়।'

८म काम्टि वाम्टिक वन्दन, 'टिनामान এ প্রস্ত্রে আমার এও অপমান বোধ কি আছে, কি দিয়ে পুম আমায় বাঁধ্তে

ध्वभन्न कि कन्ना फिन्छ । कि कन्द्र . कुछ्क स्थाना 'क्ष'न्द्रम् स्थाना व क्योग । मरम विठात कत्। म शृथिवीर ७ वर्ष हाउँ व टकारमा ७का९चे ब्लंचे , (मरु का अपे Cबाय-হয় যে-প্রেম খাঁটি তার চোর্যে কিছুই ক্ষম্বন্দর नम, कार्किकिदकन नम।— এই कथा खरनारक भागातिका जाणू है करव छाटक ज्यांच द्याबारक ८६ हो। य मुनाम। किन्द टम कि छारना ८वरमां छल य युवा त्व १ व्याम ना वरमञ् भ প্রতিবাদও কর্লে না, মুখটাকে বাঁকিয়ে रण्टम, 'कृषि ७ मिनकात एकाम, कामान एहरम् वगरम (इस्टे—'

ছোট पौक्य ना।'

পেৰে হাসিয় ভুফানে বেণুশাখাৰ মতো মুমে মুমে পড্তে লাগ্ল। তারপর সোজা करम मां फिरम हैं। भार कें स्थार क वस्ता, 'त्यम গো বেশ, ভূমি বড হতে হতে আমার চেয়েও (यामम कार्नकथानि यक करत, दमहोमन এসো। আৰু ভাহলে যাওয়া যাক্, কি বল প মা-গো, একরতি একটা ছেলে ভাব কঙ **ज्राह्म कथा।**

গুনিয়াচাতে প্রাচীবের যেন অভাব ছিল, ভার উপর আবাব এই একটা বয়সের প্রাচীর।—আর এ একে বাবে অসহা। এমন ৰাণা কেন পাকুবে যাকে ভাভ বার উপায় टनर ? किছू ना भारे, शां**ल रा**ख कित्रट <u>८ अ थाकृत्व १</u> जभक्तात । श्रीकात ८ थरक কেন বঞ্চিত হ্ব গ

হার মান্তে হলো; হাসি আস্ভেল, संब मान्ट ।

ভারপর ভালের এবিয়ে হয়ে গেল। স্বামীর व्याभार गार्वत हारक त्म तम् था कत्र धना । পাদের ধরে তার পরিচিত গলার শ্বর অনেক-क्मन भटत (क्माना (शन। कांत्र ज्ञूननत्र (छ। छ मूस्रामि, सङ्ग निटिंगि शीया, পार्रमा पूर्वेटक छ्ि ठिं। ध्वनित्र ज्ञान निष्त्र आयाद नर्वाक्रक क्राम त्यन न्थ्री कर्ज़िय ; क्यामि क्रमफ़ काछहे हरत भएए हिमाम। क्यां सुशुक्रत अक्टा एडंडा यमार्टेंब वहे सामात व्रक्त काइहोत्र

আমি গলাম স্থারে আত্রহ ভরে ভাড়া- এলে পড়্লা। চম্ফে উঠে বলে পড়্লাম। ভাড়ি বল্লাম, 'আমি চিরকালই ত আর চকিতে দরজার উপর তার দেহজ্যোতির একটি বেখা টেলে দিয়ে আমার জীবন त्म कामान व कथान काराख कारमान द्शिक ऐकान महली विन्निम्सन करण दम ছুটে বেরিয়ে, চলে গেল — চির-দিন!

> वर्हेिएक किहूतिन काला कामात्र कास (शरक रम পড়তে চেমে निम्निक्का: मध्या-Cन अप्रांत भाषा कृष्कित्व शिर्व श्रिका ।····· धारात खरत शर्फ तूरकत कांड त्थरक शंक निरत्र चार्छ चार्छ वहेगरक चामि ঠिल দিলাস, ঝুপ করে মেঝেব উপর পড়ে গিয়ে ভার वुक-ध्यामा भाउन्ह खाँ एकत्र म्या (थरक द्वित्रस পত्न, अत्रवाना।—अत्रवानात्र छवि !

না গো না, এ তার অপরাধ নয়। किह्र मिट्र शन ना।— यावात द्वना आयात ंना-পা ७ शार्र एः थटक এই ছবিটির स्था मिर् नुक्तिय अभि करत (म (त्राथ । ज्ञान । ज्ञान । হয় তাতে যায় আগে না, বিশ্ব স্ন্তাবনার কেন বহটির পাতার সেই ভাঁজের মধ্যে সেই ছবিটি আমার কাছে আছে। ছঃখীর ভগবান यमि क्षे पारकन, उत्व ध्वेष्टिक ছाइनक করে নিয়ে তার দরজার আমি চুক্ব।

> किन्छ त्यारमा,—यात्रा खारमावारम, खारमञ्ज অন্তরটা যেন বস্তহীন, শুন্তের মতো; একটা-किहू मिर्य भिर्म एकोर्ड इस, नये छ। दा वाह एक भारत मा। आमात्र कोवटनत काक-টাকে আমি টাকা দিয়ে ভরাতে প্রাকৃত रुणाम । किन्छ तमथ्याम, देका कटम रह मा-कात रात्र शार्ठ, जाएक कीवानव काक करत ना, जीवन क्या कात्राकाख स्त्र। ञ्च्याः व्याचात्र श्वाचानात्र मध्यः (मथा कत्र्याम। ভাব্যাম, দিয়ে যে ভর্তে পার্লে না, নিয়ে बाब्रक रम दबशाहे मिएक भारत्य।

তথন তারা ভারি ছ্রবস্থার পড়েছে। ভার স্বামী কালীপদ এম-এতে হ-ছটো পাশ াণয়েছিল, আইনের কৃটতর্কেও তার সঙ্গে जारह छेठे एक भारत रम 'अकरम अमन दक्षे उथनकात्र मिल्न किन ना। किन क्शारणव लिथन, र्काद (म बारमाव পড़्न। डाक्काद्वरा वम्ता, थूव (वभी वष्रम शर्गाञ्च प्र (वैटि থেতে পারে, কিন্তু কাজ কবা লেখাপড়া আর क्का-जाडा भवकाव महाजाः চিবকালটা প্রতি মুহুঠে একটা অনিশ্চয়তা ানয়ে তাকে বেঁচে থাকুতে হবে।

आभि तमहे ८६ त्न-नम्म त्थ्रात्म हे जी नत्मन मक्न भिटक चात्र-मकरनत (शरक त्कमन-·क हे कामामा।—कामि निटक मिटा कानि। সব জিনিষকেট সহজ স্বাভাবিকতার पृष्टि क'रव कारना-किছूक्टर थूव (हड़ी केरत्र আমি দেখতে পারিনে। তা ছাড়া আমি ानाक या ভালো বৃঝি, আগুপাছু ना ভেবেই ा करव याहे। जुत्रवानात्र मदन (नथा করতে আমার একটুও বেগ পেতে হলো न', कानीशनत जामाटक मटन हिन, निटक मर्फ करत्र छात्र कार्ट्स रम जामात्र स्मीर्ट मिरत जम। जामि जिंदन वार्य कथा भाष्ट्रभाम। वस्त्राम, 'टिशमात्र दमरमिटिक ভার এবারকার अन्यामित আমার নদীপাড়েব वाशानवाना व्यामि उपशक्त किट्ड छाই। कुमि जागांदक विकिष्ठ करतिष्ट्रिंग, अरे निव्यापांध 'मक्रिक विक्रक करवा ना।'

मरन कत्र्व ? এ-गम्छ कथा वन्यात्र व्यक्तित्र তোমার কে দিরেছে ? তুমি যাও 🔎

এক মুহুর্ছে আমার এডদিনকার প্রাণ-পাতের পুরস্কার, জ্লামার বাড়া-মর-বাগান द्वां जार्य कम मयुष्ठ की नभगा निवर्षक्र না হয়ে গেল। ভাব উপর আমি রাগ কর্ডেও পারণাম না; আমি আমার ডুচ্ছ সম্পদ নিমে ভাকে অপমান কর্তে গিমে-ছिणाम, • आमात्र फितिरव नित्न जात य कि म्बा. बामाय (म ज कानित्य मिर्व । (कार्या-द्रकॅटमडे (म (य ञ्र्जास हम्मि, जाय मचरक (महे भरवात अधुकू चाक्त वर्णहे क चामात উদেশুহান তপশ্চর্যা তার বার্থতার বোঝা वहन करत मिन थिएक मिरन अगिरम छम्टल পার্ছে, নইলে সে কি বাঁচ্ত ?

। महा (पथा व्यामात्रा अञ्चाव, व्याहरूत महा महात्र भाष् धदत मकाशीरनत महा पूर्व বেড়িয়ে অনেক রাভ করে বাড়ী ফিরে এসে चारमा होटक ध्रतार्ड गाहि, अमन ममत्र कामी-পদ এসে ধরে চুক্ল। একথা ওকথার পর वात्र-कत्र क्टान, अनिक् अनिक् क्टान कहरन रम वन्रम, 'जाबारमंत्र मर्था बाक या कथा रूपाइ जन व्यामि श्रद्धाः अत-বালা ছেলেমান্তব, তার বুদ্ধি-মুদ্ধি বে কি রকম কাঁচা, ভা ভ ভূমিও কানো। ভার কথা ধর্তে নেই। ভূমি তার আলকের ব্যবহারে किছू भाग करता ना ।

> यामि ५१ करन छटन नाजिहारक छैटक मिट्ड मिट्ड दन्नाम, 'आमि किছू मन कतिन।

त्म बन्दन, 'कामात प्रतिदक এ**ङ कां**डाम कि हुक्य कृत करत तथरक अक हिन नक्ष पूर्वि कि काश्च छात् ह (व छावात এই कशू- विद्य मूर्थ अक्ट्रेथानि वानि अस्न मिवा, গ্রহের দান লা পেলে সে নিজেকে ব্যক্তি জামাদের মেয়েটিকে ভূমি ভার মামের व्यापनाट्यन जानी करता ना द्यन। वल्ट গেলে ভূমি ভ তার নামা।'

कानीनम कि मङ्बद्ध अटमट्ड (महा आँ। भात्रद मा।' কৰ্তে পেৰে আমাৰ মনটা তিক্তাৰ ভবে . সে ঠোঁট বাঁকিছে এক টুথানি ছেলে বল্লে, किंगा जात्र फिक त्थरक ट्रांथ किंत्रिय 'आंद्रां, त्म स्था याद्व।' चार्छ चार्छ वस्वाम, 'आमि ভার (य-रे हरे, ७१८क आभात्र किंदू (मरात्र तिरे। आभारक क्लांगमिन (म कान्द्व ना।'

त्म यम्रम, 'कान्रव। टामारक कान्रव

CRU एक नाश्म। ज्यामि এবার আর আমার वित्रक्ति नृद्धावात्र ८५ हो ना कदत्र वन्नाय, '(अश्रेम, कांभाव मत्म कांक वर्ष (वन्ना।---कारनकिनकांत्र এकिटा ज्रूटनत त्यार आयात हरिट । अलाख्टनत्र मत्था यामात्र यात्र छान्द्वन ना। कामान्र मुक्ति पिन।'

त्म मांक शिंहित्य निक मुर्खि धर्य यम्दन, 'कुमि डा वम्ट भारता। किस क्रिम माना क्रिंग भूगर्जीय क्षांत्र ज्यारमा व्यक्तित यरका भिरम এरमङ चमः मौकारमवीरक अह CNTM विना-काणतारथ कि खक्रमख वरून कब्र्ट हरब्रहिन ? इर्बर्गाना (समनारहर नव, रम ध्रहे **(मरभवरे (मरप्र) फूमि यनि छति ममर**ङ खान मा श्रद्ध कत, करद जामि डाटक मार्क-जानाजानि करत्र ভ্যাগ कत्र्व, त्य कथा जाश थाकद्ख यरण वाय कि।"

व्यामि ८५ योज ८ इ.ए. माक्टिस छेटके व्यादनन-ভরা গলায় বল্লাম, 'কৃমি কিছুভে ভা

আরও একবার হার মান্তে হলো। **अमनके अमुष्ठे क**रत এসেছিলাম **সর্কর্ম দি**রে দিয়ে ফড়ুর হয়ে গেলাম, সে-দানেও পরা-'करत्रत्र कलक व्यक्तत्र रूप (मर्ग त्रहेम। उपन দিতে হবে। তুমি যদি তাকে ভালোবেলে থাকে। খেকে এই কুড়ি বৎসর নিয়মিত-ভাবে ভবে ভোমার ভালোবাসাতে প্রীভির দেবতার প্রভি মাসের একটি নির্দিষ্ট দিনে রেলষ্টেশনের नित्रम कात्र मार्ग मांजिए राष्ट्र। केल्क श्राहिकन्दम कामी भनत्र मामात मधा কর্লেই ভূমি ভাকে বঞ্চিত কর্তে পার না।' হয়েছে। আমার মাসাভের সমস্ত পুঁজিপাটা थुव डें इकरमत এक छो-किছू दिन नाश- नीत्रदिष्टे छात्र हाट आमि छूटन निष्टिह, সই করে বলা গেছে, এই রকম একটা ভাবের সে ফিরে গিয়ে গাড়ীতে উঠে বস্তে না গর্মে সে মিটমিটে চোথে আমার দিকে চেয়ে বস্তে পত্তির শিটি পতেছে। জুরবালা (कमर्म चारह, तम दवैटह चारह कि ना, तम কথাটি পৰ্যান্ত জান্তে চাওয়ার অবসর কোনো मिन जामांव करम अर्टान।

> किन्द काली भवत मनदक्ष कांगात भटन दव चारूभाव विरवाध क्या हरबहिन, त्मछ। उत्तरम (करि (त्रण। <म क्रिं। **এম-এ পाम क्रि**म-ছिল। বোগ্যভার দিকু দিরে বিচার কর্লে স্ববালা তার উপযুক্ত ববই পেরেছিল। দেখতেও সে ছিল মালপুত্রের মতো,—ভার कांट्र आमि ? अमन अंबीटबंब मध्या कि करब ८व व्ययम योत्राश्चक ८ वाश मुक्तिस व्याञ्च-लाभन करत्र हिन ভाব ल भाग्वर्ग करक रहा। व्यादा ८वठारा ! का हाका व्याक कार्य है, आत्रीय कोह (बटक ठीकांठी आश्रीय केन्द्रीय এই किंकित करब रम आंभात वक्तत कांकर क करबहिन, आमात्र कीयनी कारक (मरग

োল। আমি ভ দিকেই চেষেছিলাম, ভারা জীবিত মাহুষের হুৎস্পান্দনের মতো মনে হতে हाऊ (পতে ना निरम ना-इम साँकि विरम्हे निर्मरह । त्न खन्ना निरम कथा। भाषात्र भन्न क **७ कानकारमध्यामात्र हिंग ना ।**

व्यामि वृविद्य वन्दि भात्र ना कि स एउ পেয়েছি। তার উপর আঞ্চ জান্তে পার্ছি, ——चाटक, ८म ८वैटि चाटक। आभार थुव गाइहर तम बारह। जांदक तमथ एक भावित, তবু ভার সেই পুরানো দিনের নিঃখাদের ' অন্যুট সৌরভ আমি খেন অন্নভৰ কর্তে শাৰ্চি। ঐলিকে ভাকালেই আমার মনে **ংখ. বাভারনে ভার শুল্র স্কুডৌল বাছটির** प्राप्ति- एषि ज्यारम्तामन (शरक (शरक राम আমার চোথে পড়ে; সে যেন দাঁড়িয়ে (थरक एथरक हेर्डा कूटि भागित्य यात्र, कांत्र कारना চूरमत त्वाया छ्निएम याम, वार्डाम्रत्नत्र हुक्छे छत्र करव स्नारनत्र रकाशाफ़ क्यूहि, শুগুতা পশ্চাতে পড়ে হাহাকার কর্তে शांदक।

्य व्याटल, व्यांत्रात्र এल काटल त्य व्याटल। ...काटना, ডाक्टात्र कि बरगरह? बरगरह, আমার রজের চাপ এখনো পঁচিশ বৎসরের युवरकत्र मर्छा। कम करत्र कारता कृष् वरमत आभाज भवमात्। आद्या कुछ् वरमत আমার এই জীবনটাকে তার কাজে আমি गांशित्व त्यर्फ शास्य ; এ त्य की स्था ! ...

শচীপতি।

আহা, বুদ্ধ! নিজের তুর্ভাগ্যের ইতিহাস रम्टि या जिल्ला ख्वाकरे खिल्ला करत িল থেমেছেন। তথনি তার সলে দেখা ক্রতে গেলাম, কিছ তাঁকে বাড়ীতে পেলাম ेमा। त्म प्रांटक र्याकारमञ्जू करणत्र थेप्रेथिमिटक

माश्रम ।

जाबरे करवको। निम शर्म अक्सिम • मक्षादिका कठांद कानीभन्न मूकू इरला। भहीश्रांक त्मानन किहूरकरे बामारक रहरक क्टिंगन ना। जामात्र मदन कटना, हाटल नूकित्व मुक्तिय जिनि कैं। स्वात पुरत्न पूरत रक्वनहें कानीभनत कथा। भ **এম-এতে छ-ছটো পাশ দিয়েছিল, ব্যামোর** ना शक्राण (ममलक त्माक काक এক-ভাকে চিন্ত, ভার উপর অমন রাজ-প্রত্যের মতো চেহারা—আরো কভ কি।

ভোরবেলা তাঁকে ব্রিয়ে-ছ্রিয়ে একট্ট ठांखा करत ८वटच वाछी ठटन जनाम। **डा**टकब **विशिश्यांटक (मर्थ, शा**ष्टांक्रके এরই মধ্যে তিনি আমার বাড়ী এসে উপস্থিত। আমি সানাহার ভূগে গিয়ে তাঁকে ঘরে এনে বসাগাম। ভয়ানক ব্যস্ত হরে অসহায় দৃষ্টিতে আমার দিকে চেমে তিনি প্রথমেই প্রেম্ন কর্লেন, 'ভালের এর-পর চল্বে **क्यान करत** १ काणि सामि, काणीशम सूत्र-वालां कि कान्ए एम्बर्ग, नुकिए মালের পর মাস আমার দানকে সে গ্রহণ করেছে। স্থানিতে পেলে রসাতগ কর্ত ৷—এখন উপায় ?'

আমি ভেষে বল্লাম, 'এরপর লুকিরে मान कतात्र भागांठा উঠে পেण। अथन मार्नित शदर्य कुक कृष्णिय अदकवादत छात्र मूर्वामूचि ष्णांनारक जित्र मैं। इंटिंग स्ट्रा (यद्यरण्य আমি বডটুকু জানি ভাতে আমার মনে হয়, ज्याननात्र अहे कुछि वदमदत्रत्र ज्यान्ध्या महत्त ७

নিষ্ঠার ইতিহাস শুন্লে তাঁর মন হয়ত নরম ছটি নিমেষ। তারপর ভূত দেখালে লোকের हरव। छ। विष मा हम, छरव चाशनारक (यमन हम, मिह-त्रकम करत्र हिन्छ हिन्छ ভিনি অন্তভ ক্ষমা কশ্বেন। এ ছাড়া বেরিয়ে এসে তিনি ছহাত দিমে ভড়িয়ে আর কোনো পথ আমিত দেখতে পাছিছ আমাকে আশ্রয় কর্লেন।...বে তরুণী কুলাধর। न। ।"

মাথা নীচু করে ভাবতে ভাবতে ভিনি বাড়ী চলে গেলেন। তারপর একদিন मकान मूर्थ कामारक एएक मरक निरम --- (मरीमर्नेटन यांवा कत्र्लन! खाढा रीफ़ी होत रमग्रामखरमा रमिन जागारमत रमरथ जखत-थमा हैटिंत में ७ वांत्र करत राग वर्फ ५: रथत हानि (इस छे इन। आमि स्टि एक वाहे त इड़ि जन्न मिरन्न माफिरन नहेगाम, महीপত किङ्का আমার হাভটিকে ধরে থেকে সহাস্থা বিব্রত দৃষ্টিতে বারবার আমার দিকে ফিরে ভাকাতে ভাকাতে ভিতরে গিরে চুক্লেন!

একটা ইাড়ির তলায় কতক গুলো ভালের লজে কেমন করে লবজ মরিচ প্রভৃতি কি कडिला मिट्न हिन, अकि त्मार वात्रानात अक दकारन अक्टो कुरनार्ड डाई स्मरन निया । ख्रवानारक यत পড़न। वामि अक्टो बास्ट याथा ने ह करत्र वाष्ट्र उटमिष्ट्रण, जात्र शाधा, कि वण...? स्मूर्थ शिक्ष माफ्रिक महीश्रक डाक्रन, 'WC31 1'

(मरत्रिं माथा जूटन टिएस्ट हम्टक क्टनांत अवस्य खान वाष्ट्रिक छिएत स्कटन छट्ट अङ्ग, जात्रणत कृटि चरतत मत्रजात कारक शिंदम काशांत सुरत छाक्रां, 'अ मा !'

बद्र त्थरक दर्बाद्रस करणन । जांब दर्काछेद्रशंक द्वरथं भा हित्म द्विद्रस हत्न क्रमाय।

এই मीर्च क्रिका वरमद्र डाँम कर्जा उमीशना मिरब्राष्ट्र, आखिर्ड हिस्राष्ट्र(थद अभिवर्धात्र) क् शिरम्राष्ट्र, यात्र श्वांक कथ्न रूर्म याद्र करा शिष्ठ দেহের নীচে অজর প্রাণের তারুণ্যকে সতেজ করে বাঁচিয়ে রেথেছে এতদিন, তার জায়গায় এই লোলচন্দ্র পলিড-কেশ দম্ভপংক্তি-होना नाबी।

বাড়ী এদে আয়নার সাশ্নে দাড়িয়ে भाकाहुमखरमात्र मरथा चाड म ठामारच ठामारच মুখে ভারী করণ একটু হাসি এনে তিনি ्वन्द्रान, द्रारप्रते द्वाध इत्र कामात्र मापा हून-खरना दूनरथहे खन्न रशरन रशन, कि वन ...?

একট পরেই একটা চেয়ার নিয়ে আমার क्रिक चुदत्र वरम वन्त्रमन, 'मिला, स्मरमित व्यमन करत्र जय शाहरत्र निर्माम। व्यामात्र

তথনি উঠে গিয়ে একটা ছেঁড়া ময়শা প্রানো বইয়ের পাতার ভাজের মধ্যে থেকে একটি ছবি বার করে এনে আমার কাছে ধরে তিনি বল্লেন, 'তুমি মেয়েটিকে লেখেছ ত १ मिं करत वन मिंब, भागात जुन क्र भारत एम अमारण र्डम् भिरम नाष्ट्रिय छन-कड़ारना कि ना ?' তারপ**न आ**मान छेखर तत करक कारणका ना करवरे ছविटिक होट निस्त्र जिनि शानक मिलाहे हाटक निरम এकि वृक्षा ठाफ़ाठाफ़ि हरत्र शक लागा। आमि छै। कि महे बादशान

हि। बहुद्वित मर्था महीशिक निर्कात मृष्टिरक द्यन शरतन मिन छात्र मर्क रमथा कन्न कि ट्याधिक कमूटल माग्रमम । किन्न तम स्थाप दर्शम, भन्नद-त्मरम सन्ना भाकान मरका तमहे क्रिकिटिक महन्त्र-द्विजा करत प्रमुख क्रिक्ट्र आग्रनात निष्य पुरत्र, निष्य भाषाणिक करे कत्र करना निरम् । श्रीन वरन जाष्ट्रन । ात (नरकत मर्वाज वार्कका जरम भौरहरत । याक यात्र व्यक्तांतरमत्र मत्ना वान्तरक त्मर्थ কার চোথছটি সি**গ্ধ প্রেসর**ভার উ**ল্লেশ** করে फुठ मा। आभावत भरन करन भागम, धक রাত্রিতেই ডিনি যেন আমার কাচ থেকে ष्यानकथानि मूट्स मदत हटल शिर्म्स्ट्रन, ्कान'हनडे कामि काव डाँव नाशाम भाव ना। कांत्र मटक ठिक चार कांत्र कांत्रशांदिक मिन्दक भार्व ना ।

विक्टापन मिटक माठि छव भिटम पिटम व्यावाव र्राची प्रकारमा जाहा वाडोहार ७ এদে হাজির হলেন। পাচে পড়ে যান এই ॰ अ कामारक छ मरभ कामर छ करणा। अत्रवाना দেশাহ নিমে <u>ধারান্দার ব</u>দেছিলেন, ভারই गार्ककात्र छेठारन गाठि-शाष्ट्रांत्र छेलत्र वरम लएए कृषि हरना।" मार्गार्थ अंदर्गाद्व वन्द्रम्भ, दिशादक ভাবা আমার বোধ হয় এই শেষ, কিন্তু 'সে কি করে হবে। সমাজ ভ আছে। ভুমি কোমাৰের জন্তে শেষ পর্যান্তই আমি ভাবতে কি আমায় লোকলজা ছাড়তে কল ?' পার্ব। খে-কটাদিন আছি এই অধিকারটুকু कृषि व्यामात्र मिटमा।'

अब्रवामा (मणाके कृतम खेटके भट्ड वय्तमन, 'আমাৰ স্থামী ষতদিন বেঁচে ছিলেন, তুমি বেশ ভাগো মাহ্ৰটি হয়ে ছিলে, আৰু আবার অসহায় পেয়ে আমাকে অপমান করতে এশেছ। আমাব ছেলেমেরেরা এখনই হয়ত उक्र (शरक वाफ़ा जरम अफ़्र्व, कुमि याछ। আমার ভাবনা ধার ভাব্বার ছিল তিনি गट्यहे करत का ८कटच ८वरथ ८वर्षन । ज সাম্বাটুকুমাত্র ভোমার আমি বিভে পারি।

किंद्र (१८म, इन करत्र माथा नीटु करत्र **(शरक, गरमग्र ममन्छ मिमन्डि ७८**त महोश्रि वस्तान, 'आहा, द्यम, याहित। किन्द क्यम একটিগার ভূমি আমার বাড়ীতে চল, একটি मर क्षत्र क्षत्र । (मथ्दर, क्षीत्र न्या व्यक्ति (ठो खिम व<मद बार्ग (७। यात्र क्रास्त्र वा व</p> আমি জুটিয়েছিলাম, সব যেমনকার ভেমনি त्रदश्क, वरेदत्रत्र मनाएषि व्यवसि वननादना क्यानि। তাবপর এক এককাল বে এশ্বর্যা আমার क्राय फिर्फिट, एक्रमा छान त्य मुख्य ति करमर्छ, कुल कुटिंटिल, कल सदब्राक, टम कांत्र बांध-কাঠির স্পর্শেপ ভোমাকে ভা বলে লাভ तिहे जानि, उप् अकिंगित एजामात्र क्विंग দোখায় দিয়ে এ-সমস্ত আমি ত্যাগ কর্ব। कृमि निरम्न ना, किन्न टकामान किनिय टकामारक विवास भिरम अनमूक रूप यागा। यत्र नाष. नक्टन मरत्र कामात्र वाष्यात मुक्ति क्टन ना।

ख्रवाना नाक खरत रहेरन रहेरन वन्रानन,

लाकनका १ धरे कराशक मृक्षामूथ (मामन्य वृक्ष वृक्षात ।... मही पण्डि डेक्क कर है বিকট অট্টহাক্ত করে উঠ্লেন, দিবদের প'ড়ে-আসা রোদ সে হাসির শব্দে ভাষে বিবর্ণ হয়ে (शल। कत्या मनास, खच्छ मनास, खनिड गगान, (य निष्यंत्र कूर्यम् क्य्रमादक एव क'रत्र जारवाश निखटक । भारति न निष्या न बारत, নিক্পার বার্কিনকেও নিশ্চিত্ত হয়ে রেহাই रमस्याः। शरखन्न गाठितारक ठेक ठेक करन ঠুক্তে ঠুক্তে যেন হাওয়ার আগে তিনি বাড়ী क्टित हम्दान, कामि वाच हरत यत्र जानाम,

कामात्र शंका क्रिय महित्य क्रिका। थानिक-ভাঙা-বাড়ীটার দিকে पूरत माँড়িরে বিকট গিয়ে বোতামের কলটার গোড়ার মুথ পুর ড়ে স্বমে তিনি হেলে উঠ্লেন, নদীণ ওপারে ফিনি পড়ে গেলেন। রাজি ভোর হ্বার প্রতিথবনির পরক্ষারা সেই হাসির শক্ষাকে আগেই ডা/জারের ভবিষাৎ বাণী বার্থ হয়ে - मृत्र (थेंदक पृद्र वाख खेळ क्रा क्रा वहन कत्र লাগ্ল। ষরের সিঁড়ি উঠ্তে হাসিব ক্লান্তিতে

তার পা উল্ভে লাগ্ল, কোন রক্ষে দূর গিয়ে মাঝপথে থেমে আবার একবার নিজেকে সাম্লে, পড়তে পড়তে এগিয়ে গোল ৷

প্রীক্ষীরক্ষার চৌধুরী।

ভোম্রার গান

Cक जारम खन्छनिए, Cbरम जांत्र कमन Cbरन। অবসিক হল চেনে ভার রসিক চেনে বস-ভিমেনে। কালো তার অঙ্গেরি রঙ্ মাখা তায় পরার্থ হিরণ, 🍃 🔭 **50ल यांत्र वाटल मात्रर वित्रांत्र (मार्श्) का अग्नेत्र (हेटन ।**

चारम यात्र चान्यरन ও ध्रीनरत्र किन ८६८न ७ क्न-म्नूट्कन क्नि-ग्रि। ওরি মন্তরের কমল মেলে তার তার লত দল, श्वारत्रत्र मांख-मरुना थूटन छात्र वक् दमरन।

कुरम एउड खक्ष-गाथात्र कुरम त्यादत मधु-विश्व मिलिटम विधि शङ्दल खदन, मात्न ७ रुग् रकारोट बात्न ७ जून हां होट পারে ও ফুল ফোটাতে প্রাণের তারে গনক হেনে। শীনবকুমার কবিরত্ন।

চয়ন

यद्भव वय्रम

সমবমুদী ছেলেদের মধ্যে কেউ প্রতিভা- ধরুন বেমন "তোমার নাম কি ?" এই यांनी, (कड़े निर्द्धां इर्ष किन, এই निर्देश खाइत फवाव (य-कान अकिए जिनवहरत्रत বৈজ্ঞানিকরা অনেক মাথ। ঘার্মিয়ে স্থির ছেলে দিতে পারে। "ভূমি থোকা না খুকী ?" करत्रहरू ८४, मरमञ्ज वद्यरमञ्ज कम-५वनीत क्रजाहे এहे जावज्या हव। (यमन (कान ्ङ्*रमत्र वस्म*, इस्रट्डा **क्या**-डानिथ (शटक क्रिन्य क'रत्र ठिक मन्यकत्र क्रम्स्क, किञ्च ाव मन्छ। ठिक वयरमञ्ज मरण-मरण मन वहरत्र মন বেদ্ধে উঠতে না পেরে হয় তো প্রায় তন বছর পেছিয়ে এথনও সাত বছরের (वाषाटकः शदक चारक्। जावाव दकानव (क। नछ (छटनात वत्रम इत्र दक्ष) मदन नम्बद्धत्र, कि ख जान मनी वंत्ररमन क्रियं व जार्ग व्यव्ह উঠে তেরো-চোদোর নাগালে গিয়ে পৌছেচে। এই সব ছেলেই জগতে একদিন প্রতিভা-भागी त्नाक व'ता भित्रशिष्ठ रूप सात भूर्याक ছেলেরা নির্কোধ ব'লে অভিহিত হয়ে शांटक ।

(ह्लाप्त्र मटक मार्गछ इ'ठाव क्या क'रबरे व्यार्क भाषा यात्र (म. कि इंटबर চেলে, অর্থাৎ তার বয়সের সঙ্গে মনের সামঞ্জ कारक किना ? योग शांदक, छत्व वृक्षरक कृत्व ্য ভবিষাতে সে একজন সাধারণ লোক ব'লেই পরিগণিত হবে; কিন্তু মন যদি ভার वंश्रामय ८५८म ८१ ছिर्म भए थारक करव (म निर्देश क्रब निष्ठत्र । जात्र जात्र मरनत्र वत्रम यनि छोत्र निरमत व्यमस्य छाज्रिय जीत्र ⁵ टिन ट्रिक्श वास, कार्टन निःमटनटर প্ৰিয়াৰাণী করা থেতে পারে যে, সে अक्षिन প্रक्रिकामांनी य'रण जना हर्दा करे

একটা চার বছরের ছেলে অনায়ানে এ প্রশ্নের সত্ত্তব দিতে পারে। "তোমার বয়স কত 🖓" জিজ্ঞাসা করলে একটা পাঁচবছরের ছেলের পক্ষে সঠিক জবাব দেওয়া সম্ভব। কিন্তু তাদের গোটাকতক সামাভ রকম ঠকানো প্রশ্ন बिक्कामा कर्राक्रे जात्मत्र मत्नत्र वस्मित সহজেই ধরা পড়বে। যেমন জনকভক সাভ चाउ वहत्वत हिलाक यनि किकामा कश यात्र—"व्याटका वन प्रिथि, त्राम श्राटमत्र ८५८इ यांन दिनो ८२८७ পाद्र, आत्र श्राम, बङ्ग ८६८म (नभी (थएक भारत्र, काइरम मन-एहरत्र (नभी (थर्ड शार्त्र (क १" "এकमन कृत्मा (वनी हाल्का, ना अक्रमण (नाला (यनी हाल्का ?" "वत्रक किरमत यखन ठाखा ?"—"ভिनের ডবল यमि ছत्र इत्र, ভাহলে সাড়ে-ভিনের ডবল কভ र्द १ " 'वन' कल ब्रक्म आहि १ -- रल्यानि।

তেরো-চৌদ্দ বছরের ছেলেদের প্রীক্ষা क्राट र्'र्ग क्रक्खरमा महस्र मस्याभूत्र कत्राक मिरक इन्न, रयमन-"यह मथुरक एएक वनल, क्रिय विश व्याख हे कूरन यां छ कार्र क आिक वाज़ीरक शांक ; आब आम या वाशीए थाकि, जार्य कामरे हेन्द्रल बाब, अथन वण (मथि, एक हेकूटण (भण चात्र एक मिरक (यर७ त्यर७ मिन यमाम, त्यथ मनी, जाक यनि ভाই টেপথানা 'লেট' হয় ভাহ'লে আময়া त्मरण जिद्ध मामाव त्यथा भाव ना, क्यि, द्विक

थाना यि '(णि)' ना इत्र छाइ'ल आमत्रा (वांध इम दोन (कन् इरवा।' তারপর ষ্টেশনে গিয়ে कांक्रा तुबारक भावरम ना त्य दिविधाना 'मिंह' हरत्रद्ध, कि, इस नि। अथन ट्यामता कि बन्दि भात्र त्य जात्रा त्मर्भ शिद्ध मानात्रं त्मथा পেয়েছিল কি না ?"—এ ছাড়া অফ, কথার भारम, हिर्देश मन्त्र, ध-मव जिल्हाम। क'रदेश मत्नन्न बभ्रम धन्ना यात्र—; स्वात এक छ। मध्य खिलां । इटाइ अटलं त्र त्र वन्त वन्त जाव क्रिड इटिस् क'रत मार्यायात्व किहाकह ख्न खवानवन्ती केरत्याख्या। त्यमन, " এक कर्म নিঃসম্ভান সওদাগর তিনটি ছেলে রেথে মারা গেল, ভাদের একজন চোখে কিছু দেখতে भाष्रमा, आंत्र छ'कन अकः। এकिमन छात्रा তিন ভাই পরামর্শ ক'রে দেশ-ভ্রমণ করতে (वक्रामा। व्यानक पृत (याक (याक कांत्रा (मथ्टन, माम्रन अक्छ। यक नमी अविदश ভাই তথন कि करत, यामरकाठा (वेंस्थ भारत।

चारनक करहे जाँजान (करहे नहींहे। भान र'ग"—हेखामि।

विनाटि ছেলেদের ইমুলে ভর্ত্তি করবার मगर এখন এই ভাবে তাদের পরীকা ক'রে निख्यो हरू_। (व ছেলেদের যেমন মনের বয়স, সেই হিসাবে শ্রেণী-বিভাগ ক'রে, যে, যে বিষয়ে শিক্ষালাভের উপযুক্ত তাকে তদমুরূপ শिक्षा ८५७३। स्था स्था स्थानकात्र মত মুড়ি-মিছরির একদর সাব্যস্ত ক'রে যোডা আর ভেড়াকে এক রাসে ভর্ত্তি ক'বে (मग्र ना।

মনের বয়স হিসাবে—শ্রেণী-বিভাগ ক'রে যোগ্যতা-অনুসারে বিশেষ বিশেষ বিষয় শিক্ষা দেওয়ার একটা মন্ত স্থাল দেখা যায় এই,— त्य, भव्रवर्डी कीवरन मःमारव প্রবেশ क'রে সে-পৰ ছেলেকৈ প্ৰায়ই ব্যৰ্থ বা অক্তকাৰ্য্য হতে হল না; কেন না ভারা তখন ঠিক ब्राव्हार्क, धू भ क्वार्क वांगित्र वांभ। जिस जात्वत्र উপযুক्ত कांकिए दिस्क सिर्क

মুখ-দর্পণ

বেঁটে হয়—তাহৰে সেটি তার নিৰ্ব্যদিতার পরিচায়ক।

भाजना-मूर्या (बारकत वित्करो। यपि दवन टिटिकाना (मथा यात्र, कांबरण व्यटक हर्द (य, क्रमें बार्टा ध्रमन-कि त्म कार्ट (म-तकम लाक कारनकमूत्र भरास धात्ररस्थ (यर्

পাত्णा मचार्छ यूथ मार्नामक ७ देनिक भार्य, किश्व छोरका चाय विटि लाक्या मांक्र हिन्ह, किन्छ मूथथाना यिन होटका जात वाथा त्रांचा छाए। এक পा हम्ह भारत ना, আর সেই গতাত্থাতিক পথেই ভারা চিরকাণ व्याहित्क शर्फ शांतक।

यारमञ्ज मूथ ठिक लाम न्य व्यथह वामामी ७ नम, छ'रमन यायायाया- ८ । १५-५ । इ । ভার ইচ্ছ'-শক্তি খুব প্রাবল আর ভার ভিতর বেশ থোলা আর ভুরুর রেখা খুব স্পষ্টি একটা কোন নুজন কাজের প্তাপাত করবার ও সমান, তারা প্রায়ই ব্যবসাদার, কাজের (नाक रहा।

यारमञ्ज ५ ७ छ। कथान ठिक स्टार्थन छे पत

থেকেই আরম্ভ হরেছে তারা সঙ্গীত-বিভার शावनगी। यात्मव कशांग मकीर्ग তात्मव यम वर्ष छ्वर्वन ७ व्यक्ति। यात्मत्र कशात्नत ट्राटथन डेलन मिक्छ। डेठू, किन्छ मीथान मिटक ক্রমশঃ নীচু হয়ে পড়েছে—তারা কাওজান-होन निर्द्शांभ, लाटकंत्र कुरमा क'रत्र विভाएं हे ভাগবাসে, किन्छ উপকার করতেও চার— यनि द्वाद्य (य, তাতে निष्कत दकान कक्रि इरव मा।

চোথই হচ্ছে মাতুষ চেনবার প্রধান উপায়। यारमज छुटि जाम्रक हेन्मीयज्ञ नम्रदन दवन मत्र द्यम्ब मृष्टि— जात्म थूत कभनीम निर्माण अञाव। यात्मत्र कूप्त ट्रांथ महीर्न, তারা ধৃত্তি, প্রবঞ্চক, কুঁড়ে আর স্বার্থপর হয়, शांद्रपत्र दहाथ এই ছ-রক্ষের মাঝামাঝি অর্থাৎ থুব ডাগরও লায় বা বেশী সন্ধীর্ণও লয়, তারা विश्वामी मानासिट्ध थाष्ट्रा लाक।

যাদের নাকটি বেশ বাঁশীর মতো, ভাদের मरनत रकात चार्छ--पृष्-मक्स चार्छ--चात কার্যা-কুশলভাও যথেষ্ট।

यारमञ्ज्ञ नाक्छी नक क्रू ठाटना, ভारमञ्ज्ञ नकन वियदम दकोकुर्दान माळाडा अकर्छे अधिक। थाटो नाक ख्याणा (लाटक जा शृष्टे, व्यागम् ७ নিল্ভ হয়। নাক যাদের চ্যাপ্টা তাদের প্রকৃতিতে গুণ্ডামির ভাবটা প্রবল থাকে।

ঠোট-পুরু লোকেরা নিতান্ত তামসিক ভাবাপর, বিষয়ভোগ-লালগা-লিপ্ত--বিলাগী ও পেটুক হয়। পাত्লা ঠোঁট যাদের, তাদের रेष्ट्रामिक थ्व श्रवण स्म चटडे, किन्छ रमकाक বড় থারাপ হয়।

महर्मित्र कृष्यभूत मर्छ। सुमान व्यथन्त्रपृष्ट যার, তার মুখথানি যদি বেশ দুঢ় স্থগঠিত হয়, ভবে দে আদর্শ-চরিত্র লোক হয়। ভার উপর দিক জমশঃ ঢালু হয়ে গেছে, অর্থাৎ অস্তরের মধ্যে বিশ্বের কল্যাণ-কামনা নিহিত थाट्क । त्य चाक्टांच, मनानन, मर्द्यकांकि, मकरणत इः १४ महास्कृष्ठि-मण्लान, अक्षि আন্তরিকতার পরিপূর্ণ, ক্রায় ও সভ্যের व्यव्य द्वा

> टिम्टका विवृक यात्र, दम এই সংসামে मह्टा प्रःथ-संक्षात्र महा काभिक्विकरम युक्त ক'রে, বিজয়পৌরবে উন্নতির মুখে এগিয়ে ষেতে পারে। যাদের চিবুক গোল, তারা व्यवन ও विमानी रुग्र। शास्त्र हित्क অভ্যন্তরগত অর্থাৎ ভিতরদিকে সঙ্কৃতিত, ভারা प्रवित रूप ७ नकन कार्क्ट देन्छनः करता।

माथात्र मिटक (चँमा ছোট ছোট কান यारमञ्, ভारमञ्ज योनिमक भोनमधा ७ উৎকর্ষ **८मशा यात्र। अक्रमात कला-विद्यात उ**लात जारमत त्यांक थारक बात प्रतिज विश्वक इम्र। नफ तफ त्याला-कान अक खँ सिम, त्राकामि ও পাশবিক প্রবৃত্তির পরিচায়ক। কোন कान लाक कान नाष्ट्र शासा यात्रा এই শক্তির পরিচয় দের, তারা অঞ্চলিনমাত্র মানুষ হয়েছে। তাদের প্রকৃতিতে অভাত পশুভাৰত অত্যন্ত প্ৰবল থাকে। কান বে मासूरवत रश्भ-পति उद्यव थात्र। निर्मेन क'रत দিতে পারে, নৃত্তবিদ্ পঞ্জিরো সম্প্রতি তা वाविकात करबर्द्य । छात्रा वरमन, बाह्रमत ष्टाण-C5नाव मङ, दक्**रण कान द**नदश्ये—अमूत-ভবিষাতে অপরাধীদের সনাক্ত করা চল্বে।

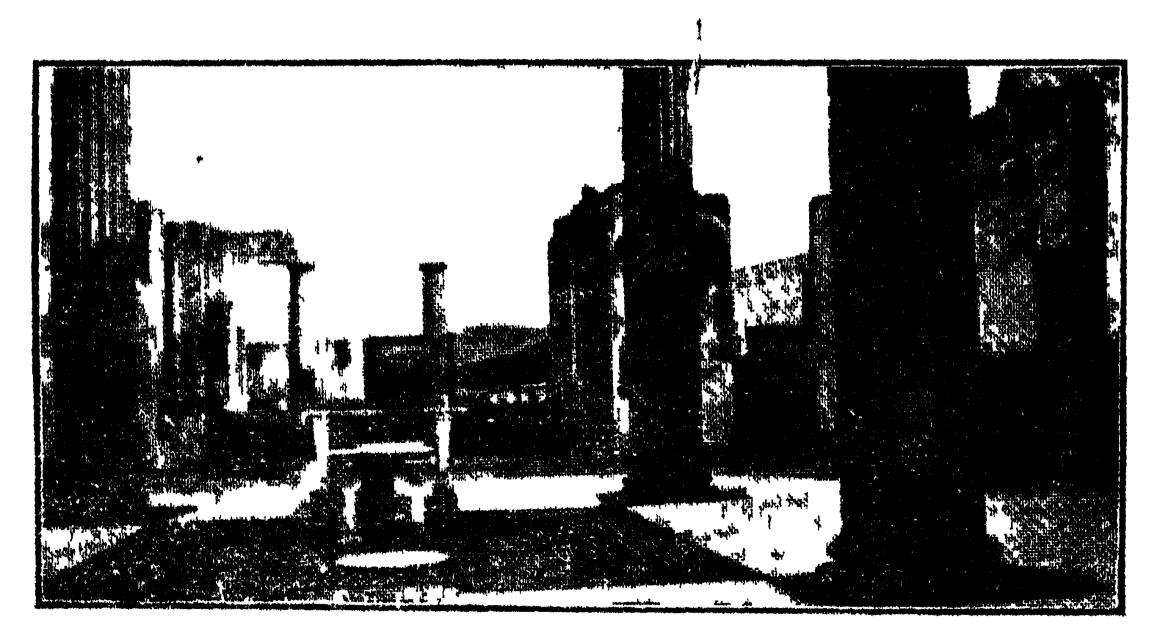
क्षीमदब्धाः स्था

(मकारलज क्रिंग मृण्य

খুজিয়া বাছির করিয়াছে, এ কথা এখন मकरमञ्जू काना चार्छ। किन्छ (मर् আবিদারের পর, অল্লকাল পুর্বেই পাম্পর আর এক নৃতন অংশ আবার খনকদের কোলালের মুথে আত্মপ্রকাশ কবিয়াছে। ভাষার মধো প্রধান ছইভেছে Street of Abundance নামে একটি রাস্তা।

সংহারকতা ভিত্তভিয়াস, খৃষ্টিয় ৭৯ সেই অদুর-অতীতের শ্বভি-মাত্রসার মাত্র্ব-শতাব্দীতে ত্মন্দরী পশ্পিনগরীকে বিরাট এক গুলিকে বড নেশী পিছনে কেলিতে পারে. চিতার তলার চাপা দিয়াছিল; এবং মাত্রষ নাই। বর সৌন্দর্যাবোধে এবং কলাজানে ছাই স্বাইয়া রত্নের মত আবাব ভাহাকে একালের চেয়ে সেকাল যে অধিক উন্নত ছিল, পশ্পির এই নবাবিশ্বত রাজপথে পদে পদে ভাষাই প্রমাণিও হয়।

ভিস্তভিয়াসের অন্থি-উদগাবে পশ্পি নগর যথন ধ্বংস হয়, নগরের বাসিন্দাদের চিত্ত তথন এক রাজনৈতিক আনোলনে বিকিশ্ত ছিল। একালে রাজনৈতিক নেতাবা নির্বা-চনের সময়ে থবরের কাগজ ও প্রতকের ছারা পশ্পি ইতিহাসের সেইদিনের একটি আপনার বক্তবা জনসাধাবণের সাম্নে খুলিয়া मुर्खिमान माष्णीत मछ—ए। किन आंत्र नारु, वटनन। कि अ शिल्म (य-गुरंगत महत, तम আর আসিবে না। তাহার ধ্বংসম্ভণের যুগে মুদ্রাষ্ট্রের সৃষ্টি হয় নাই। তাই মধ্যে একটি আশ্চর্যা সভা দর্শকের মনকে তথনকাব নেতারা কতকগুলি নির্দিষ্ট বাড়ীর वादश्यांत्र व्याचांक (मग्र। व्याक कुरु शंकांत्र (मश्राटनय छेभय व्याभनार्गत व्याटनम निवित्रा, वरगरतत्र किका अध्यक्षक । अ कान विकारनव नाभादनक निष्कत्र निष्कत्र निष्कत्र निर्देश পরে০, একালের উন্নাত-গবিষ্ঠি মানব-সভাগ চেষ্টা কবিতেন। এই প্রতিযোগিভার মধ্যে



পাম্পর তবটি পুরালো লাডীর ভিতরের দুপ্ত



इहाकात वरमत्वत्र भूतात्ना माञ्च्यत्र मूछि। मारि एथक यूँ ए वात्र कता।

এমন-সব নাাপাবও ঘটত, যাগতে একালেন । প্রথম খনন আরম্ভ হ্রয়াছিল ১৭৪৮ খুষ্টাকো। সে যুগের নেতারা প্রাতপক্ষের আবেদন সাতশো আটতিশ্বালা ছাব, সাড়ে-তিনশো সকলেব চোথেব আডালে রাখি।ার ভতা, পাথরের মৃত্তি এবং একহাজার ছয়শো সাত-ভাগার উপনে ,লুকালয়া চূপকাম করালয়া আপনাদের আবেদন দাগিয়া দিতেও সস্কুচিত इकेटलन ना--- একা**লে (यम**न (म न्यादा-मादा এক ব্যবসায়ায় বিজ্ঞাপনেব 'প্লাকার্ডের' উপরও অক্স বাবসায়ার লোকেবা আসিয়া व्याणनारमञ्ज विख्डाणन यात्रिया मित्रा यात्र ।

কেবল পশ্পি নয়, ভাহার সঙ্গে হাকু ল-নিয়াম নামে আর-একটি সহরও ভিত্র ভিয়াসের অগন্ত ক্রোধে ভস্মস্ত পে আত্ম-গোপন করিয়াছিল। কিন্তু সে সহরটি এখনো **अक्टमा-कृ**ष्ठे शङोत्र किंत शक्क, माष्टि छ ভশ্রনশির ভিতরে সমাধিস্থ হট্রা আছে। ভবে পশ্পির উপরকার আবরণটা তেমন শক্ত ছিল না বলিয়াই মানুষ সহজে ভাহার কলালকে খুঁড়িয়া বাহির করিতে পারিরাছে।

পশ্পির থনন-কার্য্য এথনো শেষ হয় নাই।

আমরা কিছু হাসিয়াও লইতে পারি। কারণ, প্রথম সাত-বৎসবেহ পশ্পির ভিতর হইতে চল্লিশটি অভাগ্র খুচবা দ্রব্য পাওয়া গিয়াছিল। গরপবে আজ-পর্যান্ত বে আবো কও শিল্প-विष्ठि ज्यामि ज्यान करेट भा अम शिमार्छ, **जिश्त जात मः था। इत्र ना। खना वाहेट उट्ह.** হাকু লানিয়ামকেও শীঘ্ৰই পুনক্ষাৰ করিবার (58) इस्ट्रा

> পশ্পির সাধারণ আকার অনেকটা ডিমের यछ। ইशात ठाविधादत शाहित्वत (वफ़ हिन প্রায় তিন মাহল। সহরের সান্তাগুলি ভেমন **हिला ना (जब-८६८म इन्छा मारा**हि ব্যত্তিশ ফুট মাত্র চওড়া ছিল) বটে, কিছ প্রত্যেক রাস্তাই পাধর-বাঁধানো হইত। কিন্তু পশ্পির রাস্তাগুলি সক্ষ হইলেও সুক্ষব ও পরিকার-পরিচ্ছন। পশ্পি ধ্বংস হইবার (एए-राष्ट्रांत वरमत भरत्र , मखन ७ भावि गरदात्र পথ-पाठेखिन दिनी-५७ए। इट्टाइ---



পম্পির একটি রাজপণের প্রংসা *সেষ

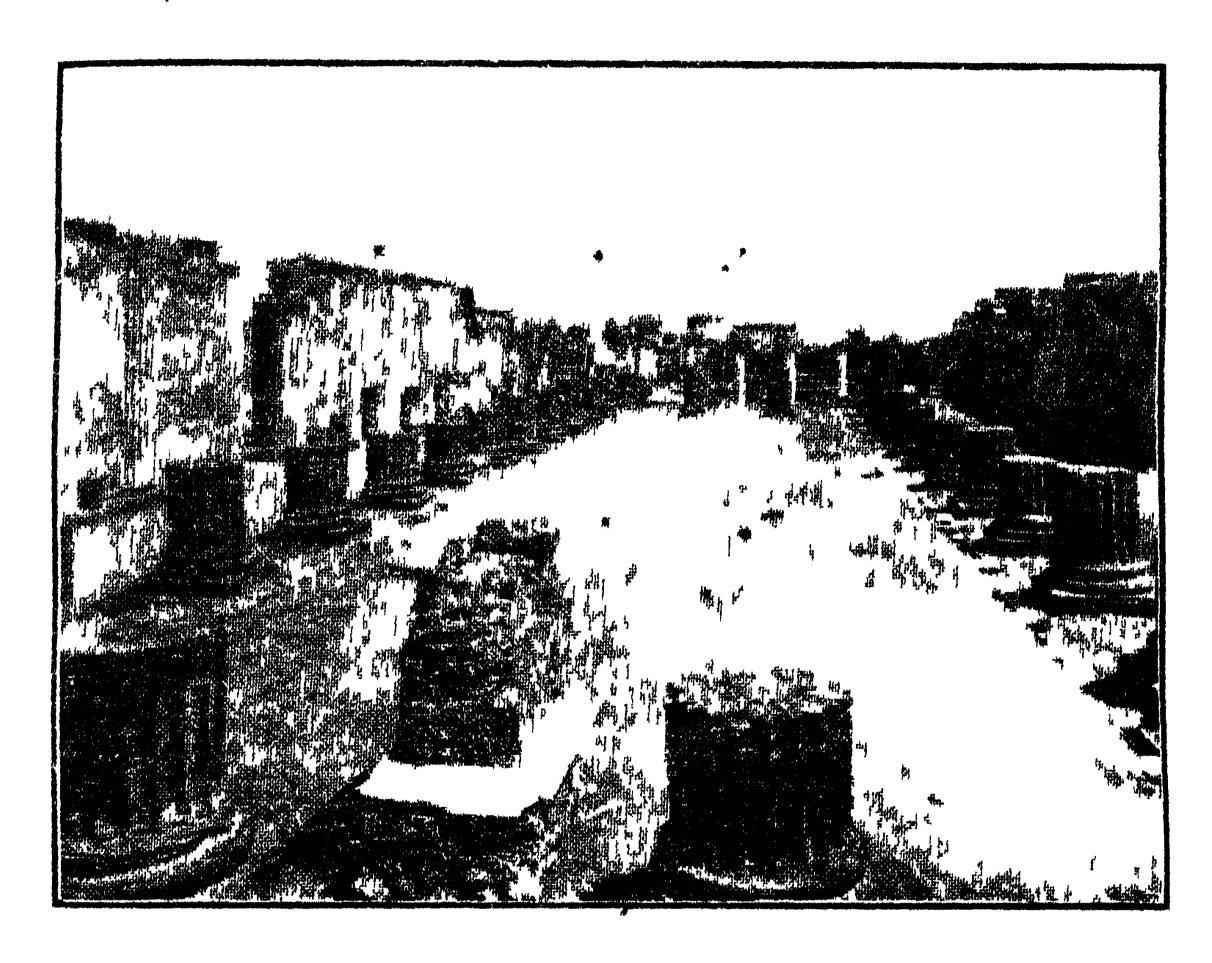
🖫 চের বেশী বাবাগ ছিল।

পাওয়া াগয়ছে, ভাগ দ্বারা প্রথাণ কারত। অন্তান্ত বিখ্যাত অভিনেতার সঞ্জে হুহয়াছে যে, আধুনিক প্রথম শ্রেণার নগর রোটিকা নামে একজন জনপ্রিয় অভিনেত্রীর গুলিতে সভাতা ও বিলাসিতার যে-দকল নামও জানিতে পারা গিয়াছে। মাডিয়েটররা উপকরণ দেখা যায়, প্রাচীন পাম্পনগরে ভাষার যেখানে ছন্দযুদ্ধ করিত, সেই "অ্যাম্পি অধিকাংশই।বস্তমান ছিল।

সকলকে মোহিত করে। এখানকার সব-আশি ফুট ও চওডায় আশে ফুট। (मथारन **छें हुनरवत्र भा**र्यन পायत वावक्र कविशाहि।

जार्गाम्य कराष्ट्रा । म्यान ब्रांकायाय ५ ०० व कर्नाका कर्मा विषय व व व व व व व व व व व व व व व व व পাঁওবা গিঃছি। ভাইাদের একটিতে এক সেই পুরাতন দিনেও সহর হিসাবে পশ্পির সঙ্গের প্রীচহাজার ও আর একট্টিতে দেড স্থান প্রথম শ্রেণীতে ছিল না। বিস্তু পশ্পির হাজাব লোকের স্থান সন্থলান ইইতে পারে। ধ্বংসাবশেরে ভিত্র ইহতে যে-সর সামগ্রা এথানে দশকরা ধাতুনিম্মিত টিকিট ন্যবহার থিয়েটার'টিও কম বড নয়। ভাহার ভিতরে পম্পির অনেক্ঞ'ল প্রকাণ্ড অট্যালক। একসঙ্গে বিশহাজাব কোকের জার্মনা হইত।

ভ্যাবস্থায় আবিস্তুত চল্য়াচে, ভাহাদের পশ্পির ছোট বড অসংখ্য বাদ্রীর আকার, গঠন-কোশল ও কারুকার্যা এখনো দেওয়ান্টেই শত শত ভিত্তি-চিত্র আবিষ্কৃত হুহুরাছে। এ-সব ছবির বিষয়-বৈচিত্রাও टिया वर्ष প্रामानित वाकात्र क्याय এक मा व्यक्ष, - भोतानिक ও ঐতিহাসিক कारिनो, প্রাক্তিক ও কার্লানক দুখ্য-সমস্ত বিষয়হ অধিকাংশ অট্রালিকাতেই যথেচ্ছভাবে যেথানে- চিত্রকরের বিচিত্র তুলিকা-স্পর্শ লাভ



भाष्यत्र এकार भूत्रा ७०० शाम उन्नामा व्यामारकत धनः मानस्मय

লোকের দ্বাবা তাহার কলা-ভাতাব লুন্তিত যায়। একটি দেওয়ালে কোন শিশু বাডীর इर्७। किन्न मिटे घराध-लूर्रेन ध्यन एक कछात्र नामि श्राम्या त्रााथमाहिल-एमिटे া রয়া দেওয়া হুণ্যাছে। প্রক্ল গার্করা আজ প্যান্ত টি কিয়া আছে। ५थन इ७७५-বिकोन ७थाःमर्छान यथास्रारन (बाढाडाडा विया माकाइया, (यदायड कांद्रश्र), অনেক পুরাতন ঘর-বাড়ার সুত্তি আবা 1 সম্পূর্ণ করিয়া তুলিয়াছেন। শ্রগুৎপাতের मन्य अंखेख नामिनाना भनाग्र भनार् (यथात्न-दियशाद्य পछिय्रा महिया हिन, नाशादिन धार छाका कठिन (पश्छानक এथना ठिक मरु (मर्डे कायगाय माज्यहर्या वाथा रह्यार्थ। এक का बनाब अवि । विषय ना एक हिं ए ० किन, দেহ সনর তপ্ত ভত্মরাশে আসেয়া গাছপ্র

পাম্পর পুনরাবিষ্ণারের পরে, নানা বেচারীব দেইটি এথনো দেখিতে পাওয়া

*

গ্রহণ্ডবিদগণের দ্বাবা রোমের আর একটি গুপ্ত এশ্ব্যা, এই সবে আবিষ্ণুং क्रमार्छ। अपि शाहान (नारमन अकि রাজকায় সানাগার। ভাতৃহত্যাশাবা সম্রাট কারাকালার দ্বারা ২১৬ খুগ্রাব্দে এটি নিশ্বিত **२२४११६८।— अर्था८** भाग्भेत मगाधि-माटलत এक त्या-मर्टिया वरमत भरता खु वार এह অপুকা স্থাপারটিকেও প্রায় সেই সময়েবহ সভ্যতার নিদর্শন বালয়া ধরিতে হইবে। ভাহাকে পুঁতিয়া ফেলে,—সেহ-খবস্থায় সে আর বাস্তবিক-কথাও ভাই। কারণ পশ্পির



भाष्म् व दक्षि शामात्मव विद्यु । क्या

किशालात हिंभारत (य সোলার্যার ও বৌশালোব কথা ভা।বয়া স্ত^{ক্}ন্তত হংতে G1E1 व्यवस्थित (म्था यात्र, ठिक (मर्ट এक्ट्रे व्यामस्थित मिन्छ। कात्राकालात्र सामाभारतत्र मक्ववह ७३ सामाभारतत्र अथन अधिवाक इडेब्राइ

এई ज्ञानाशाद्रि हिल श्रकां छ—लंबां व ও চওড়ার ১০৫০ ও ১৩৯০ ফুট। প্রাচীন রোমবাদীরা সানগৃহে অতুল বিলাদিতার পরিচয় দিতেন এবং সেই বিলাসিভার সৌন্দর্যা ध्यादन कावात्र हत्रदम डिजिम्नाहिन। धर् বিরাট স্থানাগারের তলায় ১০৫৩৫ ফুটবাপৌ অসংখ্য হুডঙ্গ-পথ ছিল। সেই সব পথ मित्रा कौ उमामवा मक लाव व्यागाठित व्यामार्गामा করিত। তাহাদের কর্ত্তব্য ছিল, স্থানাগারের विভिन्न शृहरू मझकात्र-भक क्षण ७ आलात ग्रावश क्या। (मह-मव ग्रूएक-भथ (मांश्राम मिकारमञ्ज सामाजाविष्णात्वे सामार्था सिक

ख्यमभा । নিষ্ঠ্র কাল ও অসভ্য মান্ত্র একসঙ্গে তহার উপবে অত্যাচার করিয়াছে। সেই वस्कानवाभो अजाठात्र ९ यरथक मूर्शनत कत्व, ज्ञानाशात्वत अमुगा कांक्रकार्या-थाविङ মশ্মর শিলাপট ও প্রতিমৃত্তিগুলি এখন কোথার व्यमण वा तमामभाख्य धित्र इहेत्राष्ट्र, नत्र তো ভাজিমা-চুরিমা চারিদিকে ছড়াইমা পড়িয়া আছে। এখানকার একটি হাত-পা-माथा ७। छ। मृष्ठि (मिथ्रां, এक ममरम मिझी-<u>त्यिष्ठं माहेरकण धाक्रिरगांत्र मरम्ख</u> **चा**श्रक् বিশ্বর ও ভাষাতীত প্রশংসা জাগিয়া উঠিয়া-हिग।

श्रीश्रमाममात्र द्राव ।

ম্যাপ আঁকা

मानिह्य जाकात्र कथा वज्-दिनी त्याना याष्ट्र ना वटले, किन्न अकारण मानित्व अक्ला॰ म्याभरक ब्रेडिन कन्ना रूप । अवस्य पूर वड़ मत्रकांत्रि जिनिय।

পৃথিবীর স্ব-চেম্নে পুরানো মানচিত্র আছে, টিউরিন সহরের যাত্তরে। এই মানচিত্রথানি প্রাচীন মিশরের গাছের পাভার थाका। छाहार्ट नानात्रकरमत्र त्वथा-त्रथा **हिट्छत मटक नम-नमी जांका चाट्ड,-- এमन** কি জলের কুমীর ও মাছ পর্যান্ত বাদ পড়ে नाइ! (महे मानिष्वधानित्र व्यक्त-काम २७१० शृः भूकीयः !

মানচিত্র আঁকায় মামুষের দক্ষতা এখন এ৩-বেশী হইয়া উঠিয়াছে ষে, সমগ্র ইংলভের দিয়াছিলেন। ইহার আকার সব্দিকেই খুব অজ-পাড়াগাঁরেরও কোন কোণে ক'টা চল্লিশ ইঞ্চি করিয়া। শ্লেট-পাথরী রঙের শাছ আছে, ম্যাণ দেখিয়া অনায়াদে তাহা "জ্যাস্পার" মণিব ফ্রেমে তাহা বাঁধানো। अाग यात्र। विवादक त्य भव गारिभ भैंतिन क्षित्र (करण এक এक मार्चेण धन्ना क्रेन्नार्छ, ভাগতে সারা দেশের প্রত্যেক কুড়েবর,

वार्ग निर्धाशास्त्र भाष्ट्र स्किमा माभ চাপা ১ইত-এখন হয় ম্যালুমিনিয়ামের

পাতের উপরে। ভিন্ন ভিন্ন পাতে ছাপাইয়া স্বেৰে ম্যাপ আঁকিয়া, ভারপর আলোক-চিত্রের সাহায্যে ভাহাকে ছোট করিয়া আনার मकन गार्भित श्राट्यकि दिश्या इत्र थ्र व्या ও ঝর্ঝরে। জনেক সময়ে এক-একথানি মানচিত্ৰ আঁকিতে ত্ৰিশ-চল্লিশজন বিশেষ বিশেষ বিষয়ে অভিজ্ঞ চিত্রকরের দরকার হয়।

ফ্রান্সের লুভ্র নামক বিখ্যাত চিত্রশালায় পৃথিবীর মধ্যে সব-চেয়ে দামী ও আশ্চর্য্য মানচিত্র আছে। এই মানচিত্রথানি রুসিয়ার শেষ-সম্রাট ফরাসী জাতিকে উপহার সমস্ত ম্যাপথানিত পাকা সোনায় গড়া এবং দামী রত্নের বোভাষে আঁটা! ম্যাপের সমুদ্রের ছবি মাবেবলেব ছারা আঁকা এবং गांह वा বোপেঝাড় পর্যান্ত অঙ্কিত আছে! সুল্যবান চুনা-পান্না বসাইয়া নগর বুঝানো তামার পাতে ম্যাপ ধোদাই করা হয়। হইয়াছে। এই মানচিত্রপানির আত্মানিক মুল্য বাইশ লক্ষ পঞ্চাশ হাজার টাকার কম नग्र!

লেখার সময়

"(রাম-সাম্রাজ্যের উত্থান ও পতন" নামে বিখ্যাত ইতিহাস্থানি রচনা করিতে গিবনের সময় লাগিয়াছিল তিশে বৎসর। কেবলমাত্র প্ৰত্যেক থণ্ড লিখিতেই উাহাকে ছই ৰৎসন্ধ ক্ৰিয়া সময় ব্যন্ন ক্রিভে হইয়াছিল।

হার্কাট স্পেন্সারের দার্শনিক পুত্তক-গুলির নাম ভিন্ন ভিন্ন বটে, কিন্তু ১৮৫০ খুষ্টান্দে প্রকাশিত তাঁহার Social Statics रहेट ১৮৮० शृष्टोर्स প্রকাশিত Man versus the State প্ৰান্ত আট্থানি शृख्यक त भूग विषय क्ष (Society is an organism subject to evolution) 1 স্তরাং এই একটি বিষয়কে সম্পূর্ণরূপে হাজার পর্যান্ত শব্দ লিখিয়াছেন। প্রকাশ করিতে ভাঁহারও স্ময় লাগিয়াছিল প্রায় মুদীর্ঘ ত্রিশট বৎসর।

निधिए करेबाछिन।

বিখ-সাহিত্যের অনেক ডালো ভালো কিন্ত "In Memoriam" লিখিতে টেনিসনের টেলিসন নৃতন কার্যা শিথিয়াছিলেন। উপস্থাস লিথিয়াছিলেন।

কিন্ত আকার-ছিলাবে Gray's Llegy (क) नाकवरनत्र सित्रा व्यक्तमान निर्माहित्तने। स्त्राहिन।

वित्राधी मृष्टीख ७ व्यानक व्याद्ध । এकारण त এইচ জি ওয়েশ্স্ বলেন, একদিনে জিনি দশ 'ডবেল একটানা বারোহাজার পর্যান্ত শক निथिया, न्येद दछक छा जिया छिठियाद्य ।

বিখ্যাত ঔপত্যাদিক জোসেফ চেন্রি প্তিতেন্সন অনেক সময়ে একটি কথা সট হাউদের John Inglesant নামে বদলাই বাব জন্ম পাতা-কে-পাভা নুভন করিয়া উপস্থাসথানি পাকা সাভটি বৎসন ধরিয়া লিখিতেন বটে, কিন্তু তাঁহার বিখ্যাত উপস্থাস Jekyll and Hyde মাত্র সাঙ্গিনে সমাপ্ত रुवेशाष्ट्रिया।

कविका कल नगरमन गरमा राथा राथा करेमार्छ वरते, करिव ठाफ़ाकाफ़ि निधियात मेक्तित कथा मकरण इं कारनम् । पूर्माम् किल् । अक्रिक कम অন্তত দশ বৎসর কাটিয়া গিয়াছিল। ধরিতে বাহাত্র নন। অনেক কাল ধরিয়া প্রতি গেলে, প্রায় তিশবার এই কাব্যথানিকে সপ্তাহেহ তিনি এক-একথানি করিয়া নূতন

आगारमज नाःगारमर्भ वनीसमाथ जाम्हर्ग অধিব তর দীর্ঘকালব্যাপী রচনার ফল। তাড়াভাড়ি লিথিতে পারেন। গিরিশচন্ত্র এই কবিতাটিতে লাইন আছে নোটে খোষ ও রাজক্ব রায় কিন্তু এ-বিষয়ে একশে। जारोगिर किस এই টুকু कांबरोर जांच मन वाक्षाणी (मध्दक्त जेनद्र दिका

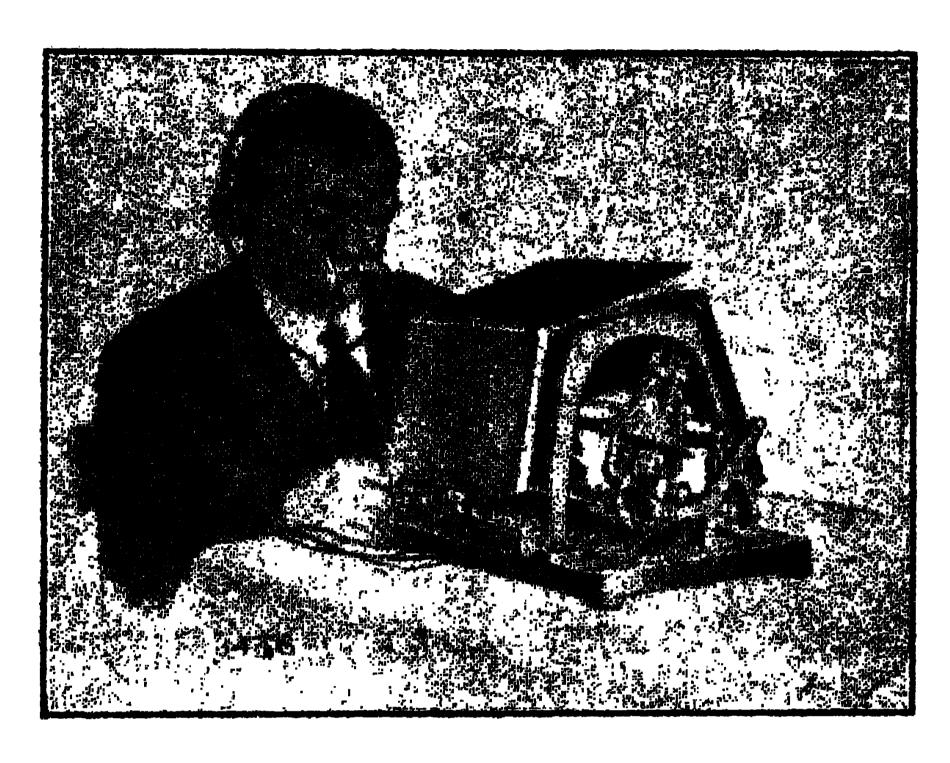
"बाटकोटका"

या क्याराज्य माथायन छात्राय यह त्रक्ष यह ।

স্ম্রতি অপ্টোফোন্ নামে অন্ধদের বুলিরে পড়ত —এ-রকম বই ছাপারও অসুবিধা भाग्नद्य ।

क्रांचन व्यवसार्रार्क्ष व्यवस्थित व्यवस्थित व्यवस्था প্রবর্তিত উচু ছাপার হরফে আজুল যন্ত্রীর উপর বই রাথবার একটা কাঁচের

পড়বার এক বন্ধ ভৈরি হয়েছে! এই এন আকারেও সেণ্ডলি আভ জ বড় আর यश्च भिरम व्यक्तत्रा वृष्टि-पाकि-मन्त्रम लाटकरमत्र जाती र'क, म्बद्ध व्यक्तरमत माहिका मछ ছাপার সমস্ত वह, এমন-কি টাইপ্রাইটারে পৃথিবীতে বড়ই অল হ'লেছিল; কিন্ত এথন कांगा ठिकि-भरवास रहक भर्गास भक्ट वह यह मासार्या, भृषियोत यावकोत्र खान-कालाव मान महिहोदनरमत्र कारह कावार्य



व्यक्तित्र छाभारमा वहेरत्रत्र भाग-त्यामा

পাতাথানা উপুড় क'त्र আট্কে निতে•হয়। ह'त आगा। টেলিগ্রাকের বারুরা "টরে-প'ড়ে ছাপার বর্ণমালাকে ক্রের বর্ণমালার পরিবর্ত্তিত ক'রে দেখ। এই হর টেলি-भा**ठेटकत्र कां**ट्न भीक्षित्र। अकटमत्र टावन- भाग्नी यात्र दश्या शिरत्रद्ध। শক্তির স্বাভাবিক প্রাথ্য্য বশতঃ এই স্থরের

त्रिष्ठे यत्राम थारक, त्रिहे काँटित द्रार्के वेहर्पेत " वर्गमाना किहूमिरमत **चलारमहे जारमत चात्रक** প্রত্যেক অক্ষরের উপর পর-পর আলো টকা," "টরে-টকার" ভাষা যেমন সহকেই লিপিতে অভান্ত অন্ধণ্ড অক্ষরের স্থানের সাড়া সহকেই বুঝতে পারবে। এর সাহায্যে কোনের রিসিভারের মত একটা বন্ধ বিদ্যে অক্ মিনিটে পচিশটা কথা পর্বান্ত সহজে "পড়তে"

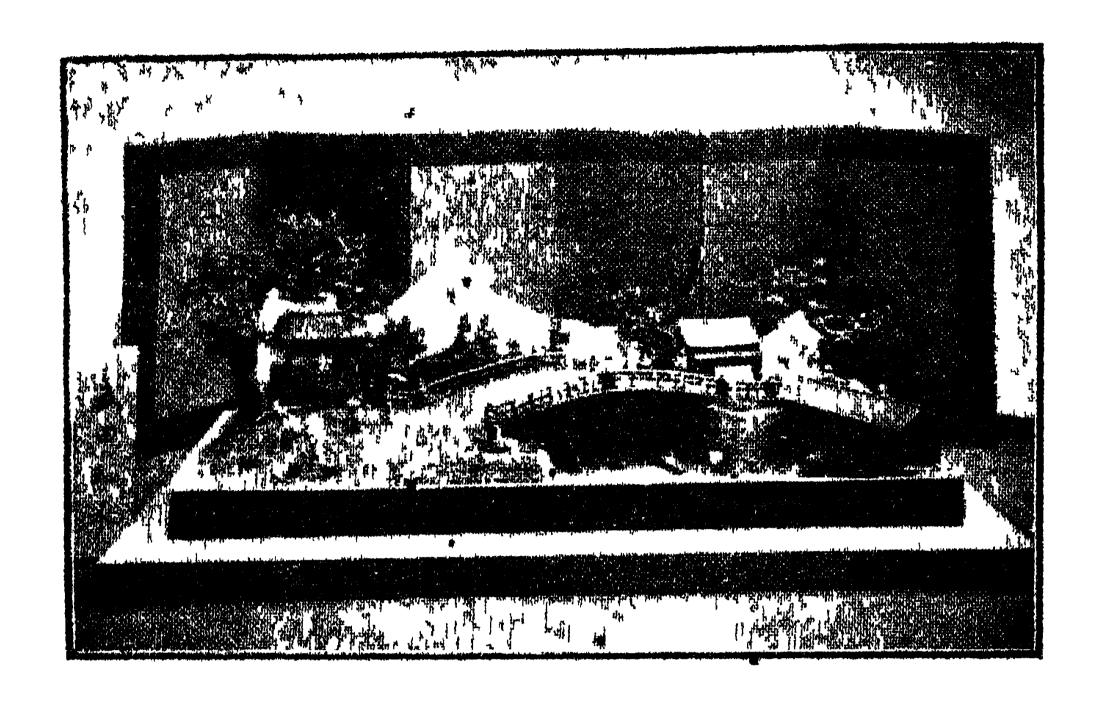
वीवामाश्य वस्।

'हेटकवाना'

देशनियम की बदमन काकि कुछ वार्शित क देशकार 'हेटक बाना'। व्यिमन्नदार ममुख्याम, रमपारम मुरमम चामम (व ध्वहे, हेश जाव विक्रित कि। कूम ७ (नार्फाकू फाहेनि (०१५- ७२५थः)। कटेनक फान-भाकाम खनक-महन्ना रमधानकात अकठि स्थाई कांत्रजीत जांडारवात व्यवसाय-मरण देनि

काभाग गणिक क्षात्र गोगा-निरक्तन। विस्मृत कार्षे अहे कार्षेत्र कार्भानी मान

हेटकरानाम श्रावर्षक कार्यातम ब्राक्क्यांम



সরায় ধবা

करत्रन।

व्यथुना (मर्गामन भर्थाक करकवानांत ठाई) क्रिंतर • राज---निवक्त। नकन ऐक वानिका-विश्वानस्य এই कार्टि या दिनार उक्रि भयमा িছ্যা শিক্ষা দেওয়া হয়। রাজ পরিবাবের अवर म्छ। य चरवत मांग्नालित हरा अवि छि योन क्या है, अरव चरकिरक विद्निष निक्निम विश्वा। नगदत व शादम, কোথাও এই বিভাব শিক্ষক বা ছাত্রীর অভাব नारे।

खातीन कारण किस रक्षण मार्डनात्त्र मधाहे এই सुक्रांत्र विशांत कालांग ३ कान्य क्षत्र-প্राणित कृषा नात्म कृत নিবন্ধ ছিল না। দার্শানক, সা'হত্যিক, मरशा अ व्यानत्क अह विश्वात्र विनिष्टे बार्द्धा शी हिटलन।

जां भारत कुल दिनी जनाम ता, प्रशिक्ष कुल

বিবেচিত। ভাপানে বৌদ্ধ মহাযান সম্প আদর অসাম। সে দেশের অসংখ্য গৃহ দামের প্রভাব-বিন্তারে হান যদেই সহাঃ চা. পুশেপদত্রেব বহু বিচিন্ন পবিকল্পনাম রমণীয়। ष्यस्द हेरात्र। निष्ठह मस्यानत উक्ति यात्र

> थान्न किन्द्रा क्रुधात्र नाति, ফুগ কেনে নিয়ো, হে অনুবাগী।

বাজারে বিকায় ফল ভণ্ডুল त्म खधु मिछोत्र म्हरत क्षा, ত্রানয়ার মাঝে সেই ভ সুধা। थर्षपासक, बाहेरे-रिक, अमहाक अर्ज्ञाक अर्ज्ञ हेरकवाना वा भूष्ण পরিকল্পনা প্রাথানত একটি ত্রিভূজের আকার ধারণ করে। এই ভিনটি ভুগকে যথাক্রমে 'তেন্' বা খৰ্ম, 'हि' या धति छी ध्यदः 'बिन्' वा मानव आधा ভো একান্ত বিষল। অথচ সেথানে কুলের দেওয়া হয়। এই মূল ভিনটি ভূজের সহিত

श्रीमण्डासमाथ प्रत्यंत्र "कृत्यत्र क्रमल"



ফুলগাছের কেয়ার

যথাক্রমে ছই, চার বা ছয়টি সহ-ভুজ যোগ বর্তমান ও অনাগতকে স্থকৌশলে রূপ-দান করা যাইতে পারে। মোট সংখ্যা সর্কাটি করা হয়। অবিভাজ্য থাকে, যথা—পাঁচ, সাত, নুয়। জাপানের ও পাশ্চাত্য দেশের পুষ্প-প্রাচীন কালে এই ভুজগুলির নানাপ্রকার রচনার প্রভেদ এই বে, অস্থান্ত নেশের মত, নামকরণ হইত, যথা—বদাগুতা, বিশ্বস্ততা, কেবল পুষ্পপত্র ধারা উহা রচিত হয় না। জ্ঞান, সত্যবাদিতা, সৌজ্ঞ। অথবা সূর্য্য, ডালপালা ফুল সমস্ত দিয়া অল পরিসরের চক্ত্র, তারা ইত্যাদি; বাধরিত্রী, অগ্নি, জল, মধ্যে বিশেষ বিশেষ ফুলগাছের কাঠামোটি थाकु हेलामि; कथाना या त्रः एत्रत नाम, कृषिहेश (लामा हत। **(यमन इ**दिला, नौन, नान इक्शिन। आत हाउँ हाउँ छान्नभागत थ**७ वावश्**छ এক মতে এই পুণ্প-পরিকলনার পাঁচটি जूकटक यथाकरम ज्ञाम, माहाया, जारूथि, কৌশল ও সমাপ্তি আথ্যা দেওয়া হয়। ভলিমার অনুযায়ী। ইহা কি-পরিমাণ স্থা-कथिक चार्क, এই विश्वा यांश्रात्रा ठकी। करतन। शर्यारवक्षण-भक्ति-मार्शक, , छांशा महरकहे ভাঁহারা ধর্মভাব, সংযম, নত্রতা এবং মানসিক শান্তির অধিকারী হন।

ভবে উহা সাধারণত ব্যবহার হয় না। এই রাখা হয়, সেগুলিও তেমনি চমৎকার---পরিকল্পনাম ফুলের সঙ্গে থাকে ভিনটি পাতা। সাধারণত বাশ বা কাঠের তৈয়ারি, এবং ভাছার একটি অইওফ, একটি সভেজ, ভৃতীয়টি উপন্ন নানা মনোরম চিত্র উৎকীর্ণ। कृषिक विकासाय्य । धरे ध्वकारम व्यक्तीक, व्यवसाय व्यक्तारमा ।

হয়। সেগুলি যথাস্থানে সন্নিবিষ্ট করেন শিল্পী—ঐ বিশেষ বৃক্ষের স্বাশাবিক গঠন-षासूरभव ।

ছোটর মধ্যে বড়র আফ্রতি ফুটাইয়া ভোলা পুলোর মধ্যে সংব্রধান স্থান পজের। যেমন স্থলর পরিপাটি, যে-আধারে ইকেবান।

প্রয়োত্র

(সংক্ষত হইতে)

ভাষার ভাষি কি লাছে জগতে ?

কি দেখি ক্ষধিক হুও ?

ক্ষিণ-নম্নী ভ্ৰমণী প্ৰিয়ার
প্ৰোম-প্ৰাসম মুখ।
কোন আজাণ ভোষে প্ৰাণ ?—ভার
খনিষ্ঠ নিশ্বাস।
শ্ৰমণ অমৃত কিলে বা বরিষে ?

—ভার সে মুখের ভাষ।

মধুর তেরেও মধুর কি ?—ভার

অধর-পূতপরস !

পরশে অমৃত ? — চম্মন-খন
ভন্নীর অপরশ।

ধেয়ানে ধরিরা কোন্ ধনে হিরা

সব চেয়ে হয় অধী ?

মরমারা কয়,—ভার নাম হয়

(প্রায়ী ইন্যুম্থী!

শ্ৰীসভোজনাথ দত।

সকলন

শিল্পীর সাধনা

একার বংসর বয়সে ইয়াণ-তুরাণের বাদশা গুণেন শাহ খনন সাভার-সংখ্যক বেগমেন পাণি-পীড়ন করলেন, তথম -তথম কে জান্ত যে তারই রাজপ্রাসাদে জারবা উপস্থাসের নিছক রূপকথাগুলোর একটা এসে শিক্ষের বাস্ত্বতা প্রমাণ করে' বাবে।

সে বাই হোক। বালপা নতুন বেগমের পাণি
সীড়ন করে' তার'হারেমে প্রকোন, এদিকে সেই সজে
সজে তার দরবারের আমীর ওমরাহ্দের মধ্যে কেনন
করে' জালাজানি হরে পেল বে, নতুন বেগমের মত
কুলরী ত্রিভ্রনে নেই। জলরী দ— অলারীরা ত সব
চির-বৌবনা। যা চিরদিনেব, যার করবৃদ্ধি নেই, বা
ছির, তা হাজার ফলর হোক, কিন্তু তাতে মোহের
জারসর নেই। ফুলগুলো ফুটে ইঠে করে' যার বলেই
ভার সৌলব্য মুহার্ডের তরে নিবিভ্তম হ'রে দেখা
পের,'নেই ব্যক্তই ভার মোহ আন্ত কালের। নতুন

বেগমের ভোগরা রঙের রেশমী চুলের রাশ বে একদি
শণের মুড় হ'রে উঠনে—ভার আঙ্গুরের রসে ভিজানে
হিলুল রঙের ঠোট-ঘুখানি যে একদিন শুকিরে চামড়া
মত হ'রে উঠনে—ভালা ফুলের মন্ত গালছটো বে
শুকনো পাতার মন্ত চুম্ড়ে বাবে—চোধের কো
থেকে ভতিও ঢালাঢালি যে আর চলবে না—ভার কু
যে আর ছলবে না, গ্রীবা বে আর ছেলবে মা, জন
যে আর ছলবে না, গ্রীবা বে আর ছেলবে মা, জন
যে আর চলবে না—এই চিন্তাই যে ছুলেন লাছ্যে
চতুগুর্ল মাতিয়ে ভুলেচে। স্বভরাং অলারী !—ন
নতুন বেগমের সঙ্গে অলারীয় ভুলনাই হল মা। জলারী
ত নমই—মানব-মানবীর মধ্যেও গ্রমন রূপ আর ক্রমণ্ড
ছাই বা নি—আর ভবিষ্যতেও হবে কিনা সে বিশ্বর

किए यामीत-अमहाहरात मर्था महूम र्यम्पम मर्थित कथा तरहे याखनात मरण मरण अक्ही ज्ञानर्यात्वत कथाख खारा एका। अस्म सम्बद्धी या महूम र्यमम्बद्धा याम राष्ट्र विषक्षी होत रहाई आदिकांच क्षाण व्यक्ति

करत' निरम्भ नात्र पूजा समती मनानत्र। भृषियोख (मर्ड, जंभन्नाविधीएक (मर्ड, जंबार्विध्वारक (मर्ड---(छभम क्षण अकित्मित्र खट्डाल कार्या नवन्त्राहित क्रव मा, এই হচ্চেই ভাঁদের আপশোদের কথা। ভাঁদের মধ্যে प्रे अक्काना मार्निक अनतार उत्तित व्यक्ष छल मास्टिट हां बुटनाट बुटनाट गोनिहांत्र बुटनाटना नेत्रिन मयुत श्रामातक नित्रोक्तन करते करते वनाक मांगरमन-- अ जामल मोअपी जिनियों मकलब क्राया इसमा कि उ — विरमम् कार्य (एथरण क्राय्य क्यार्य) क्यांच्य অথচ দৰ্শকের মহা লাভ।

আমীর ওমরাহদের কানাকানি বাদশা হুশেন শাহের कारम श्लीहिएक वर्फ़ विरामस विकास ह'मा मां, हरामन শাহ ছিলেন প্রজারপ্রক রাজা। কাজেহ স্থানীর **७** महाश्राम्य अङ् जानामात्वत्र कात्र मृत कत्रवात्र कात्र हेट्स् क्राट्स्म। डाइ मनष्ट क्राट्सन त्य, मजून त्यर्गम একথানি পুর্ণায়তন তস্বীর অন্ধিত করিয়ে তাঁর আম **डि**बित्राक **डार्केटलम**— তার প্রধান करत्रह "本面配 名! !"

ক্ষক্ত থা পামিরের মাধার উপরকার বরফের মড माना नचा माफ़ि ट्रिनिया এटम कूर्निम करत्र माफान-"জাহাগনা"—

यामणा यमारम-"উवित्र, वर्षमारम এ সমাগরা পৃথিবীতে সর্বভাষ্ট চিত্রশিলী কে 🚩

উলিয় হাতের পাঁচ আজুল তাঁর লখা দাডির মধ্যে हालाटक होनाटक चुलिमकिमारक छेत्र करब' नित्र উত্তর করজেন—"ভাহাপনা, ঘর্ত্তমানে এ স্সাগরা পৃথিবীতে সর্বাংশন্ত ভিত্তশিল্পী হচ্ছে হিন্দুস্থানের কোশন त्राजनचात्र विजनत-नाम त्मोकूल त्वर ।"

रिम्हारनब नाम खरन नामगा मूहर्छत्र करक विकासिक किन प्रदर्भाद (यम दम मानारात्र अकिं। नवायान करत्र' वनरमन-"कब्म थी, कामन-प्राथमधात्र कियमिसी रेडोन-कुशार्यम याम्याम मन्त्रीरज्ञ कर्म (स्ट्र desirated minimum cutar in

कसणू थे। छोत्र किसीय दशकिरत कृतिन करव कलरमम --- "टार्ज अङ्गोर्गाच्छ द्रकटनत्र त्रक्क प्रकटनत् भोगक देवान कुत्रारणम योगमां छटमन भारहत रय काखा।"

जान नन्निम भूव-भगरन উवाद्यक्ती क्वन जाननान व्यवश्रक्षेत्रं উष्णाहन क्यूर्यन कि क्यूर्यन ना कार्याहरणन. ज्यन रेण्णाशास्त्र अम्छ लायत्र-देशि ब्राज्यलय कालिए বাদশার পাঞ্চাব্দিত পত্র নিয়ে তুরুক সোরার কার্লের পৰে হিন্দুস্থান অভিমূখে যাত্ৰ। করল। ক্রন্তগামী অখ্যুরের ঘটাঘট শব্দে নিজিত নাগরিকেরা চকিত হয়ে **एटिंग वमन्। द्यमा इ'रल इंग्लाइर्गन वाकाद्य वाकाद्य** বেগদের তদবীর আঁকবার জয়ে।

বাদশা আমীর ওমরাহদের নিমে তার খাস-মরবারে रता हिएमन। ইয়াণ-ডুরাণের সর্বভ্রেষ্ঠ কবি তায়েজউদিন দেদিন হেমন্ত সন্ধার মত করুণ কঠবরে দরবারের বিশাল ককে মসনদেব পিছনে দেয়ালের স্থানে, বাদশা সমীপে কুন্দরী ভরনীর অশ্রুভেজা ব্যবিভ युनिया (भरवन) वामभा मरन मरन এই বাবছা ঠিক कारमा औषि-ভারার মত একটা নব-রচিত গ**রা**ন্ माद्राकी महत्यांदर्भ शांन कन्नहित्यन। श्रक्तम् वलहित्य---"রূপোয় দেয়ালী লেগেছে—এমনি নিবিড জোছনা, খেন मत्म इस का मुर्का दबैरथ नमा शाकित्य छिल ह्याँ जाएँ जि খেলা যায়, শিশির-ভেজা পাতার পাতার জোচনা ছল্ক উঠে পিছ্লে পড়ছে—দুর এলবুক্ত পাহাত্তলীয় दूल्यूल्यां गव जात रमिन चूम्रक यात्र नि-छारस्त्र शारनत एत पन टकाइनात चूक हिस्त हिस्त हाति। मरक ছড়িয়ে পড়ছে—এম্নি বাতে নিঠুরা পিয়ারী বাছয় वैषिन काल्यां करते कछिएक किहू ना वरले करत टकान् व्यवानात अथ यहत दकावात हरका दक्ता--क्षिप्त श्रम•···.."

> गांत्रिक त्मरम त्मरम त्मरम त्मरम निरम**्—मा**रमा कारमा त्यम, विद्याप-यूटक-कन्ना त्यम। এकपूतका भाराएडमी,व मगुटदत्र एम र्मिथम फूरम मूका करत' करत्र' ाट्यत ८कका-त्रस्य ठासिकिक मुखन करने पूरणहरू। वाति कत्त्व चात्रक करून, - वत् कत् यत् यत् - विद्राम (नरे विश्वति द्वारे---क्ल-विग्रकात्र कांत्र व्यक्त---दकान् व्यवकात्र त्काम् काकारीय-असूनि मानम-वृद्यत्व बदवा बदव सदम

क्ष्य विभाग विभाग कैं। एक - ध्यन पिन ७५७ विश्वादी क्षिप्र अभ ना-किन ध्यान

भिशांत्री क्ष्मन करते कितरव — शिशांत्री त शेथ धरते जित्रहा त्म क दक्षत्रवांत्र शेथ नश-- त्म त्य त्ववृत्त यादांत्रक शेथ त्म शेथ—त्म त्य गत्रतंत्र शेथ

मार्थकोत्र भिष्टि स्टाइत मरक व वित भिष्टि इत गिर्ट भक्रकत याषां छन। का^रस्मी यानभात भाग प्रवादित्र क्षांच वर्णन कार्ग कार्म (कार्य श्रीहर्य मृज्या कारक शुरक दवर्षाट आशामा । एवं मानीन अनेनार्न गुषक, लाटमब कि এव है। वाथांत जानत्म "वृक गुरम **७ठेक, हेटल १ ठेल- बाम्मात भ्राम कामी वहन वरामत** वृक्त देवराम थीत भर्याष्ट्र वृक्षामा नाका तांभव्रता । एल् क्रम् करत्र' উঠग। গান भ्य करत्र कवि मारत्रेजी ও ছড়টা গালিচার উপরে নামিয়ে রাথকোন--চারিদিকে निसक्ता. (करल मछा ममाश्र शक्तल स्व यो गारमद यूक **क्टिन काकारणेन शरम शरम अक्टा दन्न किंद्र अंटक** मिर्म पिरम पुत्र श्ट पूर्वायुद्ध हत्या (या वाना नाम नाम के सद्दर्भ रचन कार्या नियान धायान भागत भागत ना--- अमृनि निषिक् निष्ठका। তারপর দরবারের স্বাই যেন হঠাৎ हमक (एटक टब्राम नमक्दन वरन छेर्रालम—"कार्याद कार्वाद !!

বাদশা স শাত হাস্তে কবির দিকে কিরে বলালন— "তারেজ, তোমার কাব্য-সাধনা, সজীত সাধনা, যন্ত্র সাধনা, সবই সংর্থক !"

কবি তারেজ তার বিনম শির আরও নত করে'
কি বলতে বাচিতলেন, এমন সময় উজিয় কলপু থা
প্রবেশ করে' বাদশা সমীপে নিবেদন করলেন—
"আঁহাপনা, হিন্দুখন হ'তে কোশল রাজসভার চিত্রশিলী
মৌকুল কেব ইরাণ ভুরাণের ব দশা, প্রবিলের রক্ষক,
প্রজনের শাসক প্রবল প্রভাপান্থিত হশেন শাহের
সরবারে হাজিয়।"

योगमा यमरलम—"তारक এইখানে নিয়ে আসা হোক।"

উक्षित एरकनार व्यवस्त भाषान, जावात्र भन्नकरन्हे किरम এरमम-अवारे प्रचरमम, जीव आत्र शासम क्रम अक काकि कुम्मत कक्षण पूरकः

অতি ক্রশর তরুণ যুবক। তার চোখছটোতে বেন
বিদ্যাতের রেথা টানা—কুঞ্চিত কেশ গুরুত্ব গুরুত্ব
গলে নার বলিষ্ঠ করে ছেয়ে ফেলেছে—আতি চিন্ধন
গোলের রেথার চ্ছিল তার ফ টনোমুধ গোবনের
ঘোনণা করতে আছুলওলো যেন ছবির মত ফুলী—
বাদ্যা বিশ্বর প্রকাশ করে' বললেন—"এই ব্রক পৃথিবীর
শেষ্ট দিরবর ?"

াবক নার সাথা তাবনত করল, উজির ফল্পু থা তের দিলেন 'হা জাহাপনা।'

এমনি ভক্ণ ৰয়সে।"

উজির উত্তর দিলেন 'জাঁহাপনা, শুভিভাঞ্নরী তর্মণের গলেই ঠার বর্মালা প্রদান করতে জান্তবাদেন।

াদশা প্রসন্ন দৃষ্টিতে শিল্পার দিকে ফিরে বললোন—
"প্রন্যাব বিদেশী ঘূর্ব চিত্রবিদ্যায় তোমার কভদুর
পারদর্শিতা ?"

শব্বক উদ্ভর দিলে— 'জাহাপনা, কবি, চিত্রকর, গায়ক এবের পারদর্শিভার মাপ্রস্তা অন্তের কাছে। আমার বে কি রকম পারদর্শিতা তা আমি নিজ্ঞে বেনন করে' বলব দ জবে আমার আহিত চিত্রে হিন্দুছানের অনেক নুগতি অনুগ্রহ করে' সজোব প্রকাশ করেছেন।"

বাদশা বললেন—"শোন যুবক, ইসলাম রমণী কোনদিন বিধন্মী পুরুষের কাছে তার মুখাবরণ উল্মোচন করবে না, শাস্ত্রের নিষেধ—না দেখে ভূমি তার আলেখা অন্তিত করতে পারবে ?"

শিলী বিশ্বিত হ'য়ে জিজাসা করলে—"না দেখে কি করে' ছবি আঁকা চলতে পারে জাহাপনা ?"

বাধা দিয়ে বাদশা জিজাসায় হুরে বললেন—"ক্ষেত্রত তার বর্ণনা শুনে।"

युगक गणरण—"এमन कवि का बाह्य खाँशांभा, या भक कर्ष छ क्या पिरम ज्ञाक्यारम छ पर्नरक अमृनि कर्त्र' मृर्डिमान कर्त्र' कुलट्ड भारत था आयात्र मुर्छ छ कुलिट्ड भविष्ठिक क्या खाड भारत १"

গৌর্বাবিত সৃষ্টিতে বাদশা উত্তর নিলেন—"বিদেশী বুৰক! আছে, ইরাৰ-জুমাধের জেষ্ঠ ক্ষবি--জার

क्रेश्ट्र नंबर-छ्याब एक्क्न चाकान जाका अभारतस मङ वाथिक र'रव ७८ठे-- एस्यब-मकानि कन्नन वानिनी वम्छ ऐवांद्र मक राज्यमस स्थ्य ७८५---यात मारद्रश्रीत यानार्थ अठ७ निर्मार्थ वर्षात्र रेन्डा यामच्य करते' व्यादन-नीटिन खन मानिटन मनुन ते बानिय दर्गान-वृवक पूमि निटम्पर्ट विठात कत्रदर"—व्यापना कवि **डार्राक्राक शान कराज आरमण कर्राणम ।**

मारतभोत्र क्षत्र ८क्षरंग छेर्रल—िक्षांत्र विद्यात মত মোলায়েম—দে ফ্ৰের রেশ প্রিয়ার অঞ্চের-न्यार्मित्रहे मङ ख्यार्गिन्यहरक वृत्तिरह यात्र।

"পুরমা-আঁকা চোখ—পিয়ারি দে **८कम**न । कुन्न १ - त्रज्ञनीत कारमा जीधारत्व भाषा पुछ (भाषत्र বুক থেকে বিদ্বাৎ কেমন জি টাক্ হানে ? — তাই পিধারার কালো চোঝের চার পাশে ফরমা আঁকা পিয়ারীর কালো ভোখের ভারা সে নেয-ভোখের পাতার আঁক। স্থরমা সে রজনীর আঁধার-- পিয়ারীর নে কেমন চাভুরি 💅 👚

' श्रुत्रभा-काँका ८ हां भ-- भिग्नात्रि कांनि पानि ८ म কমন চাতুরী। পিয়ারী যে চোধ-ছটোতে হারমা एएक छोत्र मात्रा एएट्स व्याकाष्ट्रानाटक रगालन कत्रए७ हाग्र-- डांब मत्बब भका मत्काह मत्रम न्याहे करवे' ভুলতে চায়—ভার চঞ্চল দুষ্টিকে নিবিড় কবতে চায়— ভার হাস্তমর দৃষ্টিকে বাথা-ভরা দেখতে চার--- হরমা-र्जीका ट्रांच-- निशाबि बानि जानि एम दक्यन ठांजूरी।"

गांन भागम--- त्रहेश एथ् এक्टी युठी-एखा त्रामंत्र णांध-जूख जांध-रूख तर्गन्।

ख्यूप विज्ञकत धनःममान त्नटक चलत्न—"हेत्राप-जूत्रार्शत कवि, हिन्द्रारनत्र, विजकत्तत्र अधियानन शहन कक्षन।" ভারণর বাদশার দিকে ফিরে বলকো —"काशभना, कवि তারে: छत्र कमठा व्यमाशात्रण। कवित्र ऋत्त्र ऋत्व भागात्र जुलि हलत्व--- छैति गांदनव সলে সলে নতুন বেগমের ছবি ফুটে উঠবে---জার टिंग ट्यारम केंद्र काम ब्रुक क्रम केंद्र नाथ

ভাব গোলাগ ফুটবে---হাতে ভার চাপার কলি, জাগবে—পায়ে তার মন্তকমল বিকশিত হবে—তার अङ्ना छेड़रव, रवनी फ्रमरव, याग्द्रा युगरव, किस তার আখার কথা আমি বলতে পারব না জাহাপনা। कवि छोट्राटकान श्रदान महक महक वक्त दिनारमान বাহিষুকেই আমি দিতে পার্ব—জাহাপনা, জার আত্মার সন্ধান আমি দিতে পারব না।"

वाम । मिछामां कत्रत्वन — "८कन निद्यो ?"

म । एक ठापेनित गर्डा मिष्टि जात (त्रणमी कृत्यत प्यापेत । भिन्ना ए छत नित्य- कौश्यापना, बाम्रा त्य मानुमा দায্ন দেখবার জিনিষ--হাজার বর্ণাজেও তার আদল পরিচয় নেই। শিল্পার আত্মা দিয়ে নজুন বেগমের আহা। স্পর্শ করতে না পার্লে ভার ভূলির সঙ্গে তা কণনও ধরা পড়বে না। এ আত্মায় আত্মায় ম্পর্শ অমুবানের ভিতর দিয়ে হ'তে পারে না। জাহাপনা, আমি ছবি আঁকৰ, কিন্তু তাতে আত্মায় मकान कत्ररान ना।"

वामणा वरमा केंद्रमन—"किन्छ नकुम द्वरारमञ्ज द्व দৃষ্টি সে বিত্যাৎ –দে বিত্যাৎ কেমন উচ্ছল, কেমন তাৰেছের চাইছে আত্মা হালার —আত্মা হালার বলেই ভ ানবিড, কেমন ভার--সর্মা-আঁকা চোধ-ভাগিরারি তার দেহ স্বন্দর-নেই আত্মাকে বাদ দিরে শুধু দেহের ছবি পাঁকি—থেন গন্ধ বাদ দিয়ে গোলাপ ফোটান— त्मना योग मिट्स यस किंग्रान: किन्छ विध्योति काटह इंज्ञाम त्रमणी (कमन करत्र' मूच श्रूजरव १---- डेलान कि १" नामना छ। त मत्रवादवत यामीत अमनाश्रमक विरक তা किरम डिजिश्त क मत्यायन करन वना जन-कमन् थी, **छि**शांत्र कि 🕶

> रत्रान माञ्चारजात ध्यमान উजित्र विमना शतन। व्यामीत अमनाश्ता भन्भारतत मूच ठांखवा ठांखवि कनारक नाग्दन। मछ। गिरुक-- ठातिनित्क এकहुकू जन নেই। দেই নিস্তৰতার নাবে বৈরাম খাঁ তার অ্বীর্য শরীর নিয়ে উঠে দাঁড়ালেন। ভার পর জার मीटपांत्रठ मनोन्न द्वैक्टिश क्निंग क्दन वन्नदान-क शिशना, উপাय चार्छ। मजून त्वशयत्क विधयोब माम्त्न मूर्व थूगाल श्रव ना—छ। अक्यांनि सर्गान्य मात्रदन कत्रदगरे हनद्य। त्मरे पर्नत्य व्यक्तिविक नकुम **दिनागटक दमचंदन है निकीत উटक्का मकल क्दर। भावक** बक्त इटक-क्जूंड हरेका बाक्राय मा।"

रेयद्रोम चीत्र कथा छत्म भवात्र विवश गुब धामझ क्रव एक मा वालभा धनः ममान टनटक थून ठाउँ रेवद्रोस शीव निरक डाक्टिय छिक्रियरक कथा करत बनार्कन-"कललू था, थूनजां रेगनांम थीत गुरिक गुंठीज हाक ."

मत्रराम प्राप्तम । आगोव उगराङ् ता देवसम थीव गुक्षिमखोत अभागा कप्रट कत्र गंगज निज ग्राह्मारम क्षित्रदेशन ।

(* *)

द्यारत दादत भूत द्रामांग शतमः— उर्गि भारम भारम जिनम कृषान कारक यमपूरकत मक कारका दाव मो त्थां । ' ज्यां न त्रीय कृष मध्म कार्रित अत्या ক্রবার পথ নেই। এখানে বৃাবা আর কোন শব্দ নেই, (ক্বল ছুধের মত সালা ব টিন পাথরের টিপবে बक्क कमरलात्र मंड दांढा (कामल शा (करल हरल'-यांख्यां রাপসীদের নৃপুর নিঞ্ন, কেবল লিলায়িত তন্ত্র ভঙ্গীতে ভঙ্গীতে ভাদের ভত্বা-স্পূর্ণ হথে বিহ্বল ঘাগরার थम् थम् भक्ष, (करम छात्रत्र कोजूक उच्चाम उपा छ উচ্চ দিত গোলাপললের বিরতিহান বার্ কৃষ্ শক। এখানে বৃবি আম কোন গক নেই—কেবল কভ কভ ভঙ্গণীদের নিশাস-বিচ্ছু রত হরভি, কেবল ভালের स्मोर्ष स्मोर्घ वनी-कूछन एटड छिएमा इड चश्रव गमांगरला , ८करम ভाষেत्र मार्ग अन क्ट छ एर्न्छ এক আবেশময় আভাদ। এখানে বুঝি আয় কোন क्रग ८मरे, ८क्वन मछ स्माठी शालागत्राणित खबक, **८करन कृष धक** छिक हम्मक्परमञ् छे अरु। এখানে बुबि जात्र (काम त्रम त्नहे, (क्वम माकित्र जानन-ट्डांना विकल्डा, क्वन नित्रक्षित्र मकल-एडांना मामक्छ। मार्यं जीवनत्क श्रात्रं त्रांश्ट शाहत्र मा, ক্সিত্ত যৌবনকে ধরে' রাখতে চায়। এমনি বাদশার श्राद्रभ ।

এখানে কত কত রূপদী তর্গার কমল-চোথের टकांमल पृष्टि कृगांभाग एएटक श्राम—दकांमल मृद्यम कमन-रामि शक्रिक छेठन-शीवा आत रश्मृत ना युक चात्र प्रमुण ना, तत्रप चात्र त्न्य ना ; किन्द (भार त्महें, जानात कड कड मद मत उसनी क्रांत कारमज

स्तर्न-त्योचन मिट्स अथानिहाटक कट्स कुल्ला। छट्यम भारकत्र कारला हुल भाषा रु'रत रगन, पद्धांणाद्य গণ শীর্ণ হবে পড়্ল, ভড়িতাভাবে দুটি শলিন হয়ে উঠল: কিন্ত এশানটার তার রূপ-বৌৰনের সম্পর্ ভাগাহত। এমনি চরাণ-ভুরাণের বালশার হারেম।

সেই হারেমে কড় কড খারে কড কড পরদা সহিয়ে কত কত কক তা তক্ৰম করে' কত কত হাবদী त्शाकात ज्_रत भाष्ण्य पृष्टित मायत्य पिट्रा फरान भिष्णी বাদশা হুশেন শাহ্ও উজির ক্জমু থার সঙ্গে প্রেশ ক্রল। হাবেমে বিদেশী বিধন্মীর আন্তাস পেয়ে বেগমদের পোষা ময়ুবের গল একবার ভীষণ কেকারতে এক প্রাপ্ত হতেএক প্রস্তুত বাছুমন্ত্র বলে নিমেৰে त्यन এय है। भूक निष्क कात भर्गलहा विकित्य भाग । अख কত মরাল গতির চন্দে ছন্দে শিঞ্জিনী নিক্ষনীর অর্থেক ফুটে আর অর্জ যোটার অবসর পেলে না—কভ কভ रामित्र गिर्विक कि मायाभाष अरम क्षेष्ट हिक्ट एथरम हामित हम्मभन्न शिंहेकिमि, रक्षम कल कल উৎम करला राज-एयन मन्नाय या रचवारन हिम मब रमहे रमहेचारनहे দেই অস্থাতেই দহস। প্রস্তারের মত কঠিন হ'লে পেল---চারিদিকে কেবল নিস্তব্ধতা—সেই নিবিত নিস্তব্ধতার मात्व (करण शालाभ-राजित रात् रात् भवा। (मई নিস্তকতার মাঝে বাদশা শিল্পী ও উজিরকে নিয়ে একটি थकां करक शर्वन कत्रामा।

> करकत्र এक शास्त्र रमग्रारम-ग्रीश। এक श्रुष्ट्र मर्गन--একটা ক্ষচকু যোর রক্তবর্ণ সাটিলের মাঝখালে অভ্যেত্রা कारजब এकটা ध्यकां छ व्यक्ति खाँका नामां म व नार्शिका ঢাকা। वाष्णा উछित्र ७ मिली जिन सदन अदन दमह पर्यापन मामना मामनि कत्कन्न व्यापन आहिए के प्राप्ता । व्यमुख रुख्य होटन श्रमा भट्य क्षेत्र। सक्ष्यक्रिक সিংহাসনে উপৰিষ্ট নজুন বেগমেন্ন প্ৰভিবিদ্ধ দৰ্শণের भारत कुटि छेठन--

> रयन गरी-विश्व क्यांवकात क्यांकारम्य विश्वि शह्दत हर जन्म भूनियात जन्म हैं। महमा अक्रकादन **(सर्ग ७३**न—र्यन किन तमहीन व्यानहोस लासार्यम वुक हिट्स अक्काटम-रकांके। यदमानाम राज्ञान कूटि किंग-- त्यन त्यांत्र अमानिभात्र शुक्ष व्यापत्र पूज विदेश

विद्वारक्षत्र द्वाची कृष्टि काठकण रूट्य ठाविषिक छढानिक करत्र' त्रांचन-- (यन--। वापणा वनरम--"णिही, এই তোমার আলেখা।"

वामभा भिन्नीत मिटक टांथ कित्रिया एमश्यान, বুৰালেন, ভার কথা শিল্পীর কানে যাব নি—ভার দৃষ্টি মতিমঞ্জিলে শিল্পীর বাসস্থান নির্দিষ্ট ছোক্।" पर्णां निवक्त- निजी अञ्जम्क-वाञ्चागर्क जात कार्य जिनकान शास्त्र जांग कतालन। इसिन, একটা পৌরবের, যেন একটা বিজয়ের निः भक्त रामित द्विश व्यक्ति इ'रह द्वि ।

শিলীর দৃষ্টিতে কি ছিল—দর্পণে অতিবিশিত-भूर्खित व्यवस्क टार्थ छूपि भीरत भीरत स्वन मजा। निक হ'মে উত্তোলিত হয়ে মন্ত্ৰমুদ্ধ শিল্পীয় প্ৰতি নিবদ্ধ হল—সেই চোথ ছটিতে বিস্নায়ের একটা ক্ষণিক প্রভা যেন সূত্রের জন্ম থেলে গেল—ভার পর আজীবন দংগোপিত অন্ত গোপন আক্জিল আকুলতাব আদাল থেকে ছটি ভক্লণ চোৰ আন্ন ছটি ভক্লগ গেল—ভার পর নারীর দৃষ্টি অবনত হ'হম গেল— পুরুষের চোথে পলক পডল ন।। দপণের মস্ত্ शादात्र छेशदत गरन र'म एक रयन मिँ हूत एएक मिन। क्षमूछ रूटखन होटन श्रमान्न क्यून होका शहन। िसी हमक ८७८७ ट्यार्ग केंग्रेल राष्ट्रण होतिएक যেন সন্ধ্যার মক্ত মাজিন হ'রে উঠেছে।

यामभा यमरमन-"निजी--"

खन्न यूयक **मश्यक श्रदम यम्माल—"काँ** कार्यना, व्यामि हिन्तुइ। त्वत्र द्राक्षक्षवर्शित व्ययनक व्यवन्त्र-মহিলাদের দেখেছি কিন্তু এমন রূপ কথনও আমার नयनत्राहत्र रयनि।"

श्विक हाटक बामना बनटनन-"मिही, यो टांटब रमभरम, काई यमि विजाभरहे स्वित्र कुम्रक भाव, करव लक दहरी-ग्रहा (कामांत्र भूतकात ।"

निही উত্তর করলে—"क হাপনা আমাকে ছয় মাস সময় দিন। আর আমি চাই একটি নির্জন নিভূত ছান, অতি নিভুত, যেখানে বাইরের জগতের রাগ-রঙ্গ হানি-

जङ जामात्र आदन काम एउउ-१ जूनवात्र श्रूरयांन भारव না যেখানে একান্ত ভাবে থাকৰ আমি আর আমার व्यादनशा ।"

यानमा উভিরের দিকে ফিরে বললেন-"ক্রালু,

লোপ পেরেছে। বাদশার ঠোঁট হ্থানিতে একটা আবার তর্মণীদের কলকণ্ঠ ফুটে উঠল। তাদের পায়ে পায়ে কত কত লাভ নিয়ে নুপ্র-নিক্ষন জেপে উঠল,তাদের হাভোচ্ছাস কক্ষে ক্ষে রণিত হ'বে উঠল; কিন্তু সেপ্নি সেই হারেমে এমটি নিভূত ককে একটি ভরুণীৰ অন্তরে অন্তরে একটা নবীন স্বপ্নের আভাসে বে একটা নব ভন্নী বামভে লাগল, ভার সঙ্গে সেই ভুচ্ছ প্রতিদিনকার উদ্দেশ্যহীন ছাসি-গানের কোনই মিল ब्रहेल ना !

(8)

সসাগর। পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ চিত্রকর সে, দেশ-বিদেশে চোথের দক্তে মিলিত হ'ল-দর্পণের মুর্ত্তি যেন ভার্রক্ষে কোটা কোটা নর নারীর মুথে মুখে ভার নাম ফিরে शक्का भूमक निरम किंग फंडम-- भिन्नीय परिष्ठ : किन्छ रम निरम এकपिन काथाय हिना ! প্রায়তে আগুতে বেন একটা তড়িৎ প্রবাহ । চারিয়ে কোথায় তাপন-ভোলা হ'য়ে খুরছিল? কি জীবন त्म এত निम योशन करत्र ए कि की यन ? क्यांन् একান্ত বাইরে বাইরে সে তুলি আর রও নিরে কেবল कि-এक कुष्क (भेटा करते (विधियरह ? निही मि, किन्द्र এই এভদিন ভার কাছ থেকে জীবনের অমুতের উৎস এম্নি করে' গুপ্ত হয়েছিল বে, ভার অন্তিত্বের সন্দেহমাত্র তার মনে জাগে নি! তার তুলির মুখে কত কত ইশালীয় ভোন্যা-কালো আঁথি-ভায়া विय-विद्यादिनी पृष्टि निरम खारण छैर्छर , जांत्र जुनित সোহালে সোহাণে কত কত তরুণীর হাদরের উপরে व्यक्त-हाका खन्ना-तूक वाग-वाकाम नित्र भाषा कुटलटहः ভার তুলির আদরে আদরে কত কত কমলের মঙ হাত টাপার কলির মত আঙ্ল নিয়ে ফুটে উঠেছে, কিন্ত ভার পিছনে কি ছিল? আজ বে সে জানে বে, ভার পিছনে ছিল ভার কেবল অপুর্ণভা—আন ज्ञ शूर्न छ। - जात्र शिष्ट न हिन मा निजी जात्र मध्यानि निष्य, हिन ना : शिक्षीत निगृष् सीबदनन निविष्ठ एत्रम कानस्मन क्यूकुठि, क्यि नां निवीत

নিষ্ণেকে নিঃশেবে চেলে দেওয়া। সে কেসন করে'
কাটিয়েছে, কেমন করে'।—এই অসম্পূর্ণতা নিয়ে,
এই বিরাট শৃশ্বতা নিয়ে—কেমন করে সে এতদিন
ছিল, কেবল এই রঙ তুলি ও চিত্রপটের বিরাট
বার্থভান্তরা বাজ নিয়ে? হায়! তার নিগৃঢ় জানন্দের
উৎসটি এতদিন কে এমন করে' নিষ্ঠুরভাবে তার অলক্ষ্য
করে' রেপেছিল।

কিন্তু আরু তার কোন্ নিগৃচ অস্তরের গোপন কক্ষে
কোন্ একটা মণি-মুক্তা-থচিত বাণার স্বৰ্ণ-তারে কার
অদৃশ্য অস্থালর পর্ণ পড়ল—সেই পর্ণে যে স্বর বেজে
উঠল—সেই স্থরে তার আন্ধ এ কি হ'রে গেল। এ কি
বেদনা, এ কি আনন্দ! তা ত আন্ধ তার ব্যবারও
ক্ষমতা নেই—আন্ধ যে কেমন তার বেদনা আর আনন্দ
একেবারে ছড়িয়ে গেছে, গুটোকে আর ত তার আলাদা
করবার উপার নেই—আন্ধ যে কেমন তার মনে হছে,
বেদনাও আনন্দ—আনন্দও বেদনা। মৌকুল, মৌকুল,
এতদিন কোন্ মরুভুমির মধ্যে পিপানা-নিবারণের ব্যক্তে

ते य निगृष (गार्शन रौगांत्र ठात्त सकात—िक तैथर्गामा प्र सकात — (गरे सकात्त म्राज्य माज या जाज तक निम्मा भाषान स्वाप्त कार्यपूर्व राष्ट्र छेठेल—(हार्थ या किरमा भाषान स्वाप्त शाला— वरे धतिजीत माणि कार्या वा गान, वा स्वयं, वा स्वाप्त वार्या— वरे या माणि कार्या वा या कार्यां, वे या क्यम्यक्ष, वे या ना विकान— मा या कार्यां, वे या क्यम्यक्ष, वे या ना विकान— मा या कार्यां, वे या क्यम्यक्ष, वे या ना विकान— मा या कार्यां, वे या क्यम्यक्ष, वे या ना विकान— मा या कार्यां, वे या क्यम्यक्ष, वे या ना विकान— मा या कार्यां, वे या क्यम्यक्ष, वे या ना विकान— मा या कार्यां, वे या क्यम्यक्ष, वे या ना विकान— मा या कार्यां, वे या क्यम्यक्ष, वे या ना विकान— मा या कार्यां कार्यां कार्यां कार्यां विकान कार्यां कार्यां कार्यां कार्यां कार्यां कार्यां कार्यां विकान विकान विकान कार्यां कार्यां विकान विकान

इति जरून होष । जात इति जरून होन — जात्तत मिलान अमृनि त्रहर्णित यष्टि, अमृनि जम्राजत छेदम, अमृनि मिर्क मिर्क भूणक खार्ला छेक्रेस, जाकारण वाजारम विद्योग (बाल शंक, क्रम एस त्रहिन हरत छेक्रम)

म्बाल हित व्यक्तिय-नकून त्वश्यत्र । नकून त्वश्य । ना-ना-ना-नकून त्वश्य कि व विकास करते वाल मा-वान नकून त्वश्य कि निक्षीत्र कामहे विकास करते वाल ना-मा-तम नकून त्वश्य नय-हेन्नाव-कृत्रात्व करते कर नय यालना हरान नाव्य तक नय-हेन्नाव-कृत्रात्व कर कर नय यालना हरान नाव्य करते कर नय न्यान

হারেনের কেউ নয়—েন বে শিলীর নিভ্ত গোপন মনের
নিদরের দেবী—বে কোনল পর্শে তার হার্য-বীণার
নোহন রাগিণী বাজিয়ে তুলেছে—তার দৃষ্টিসম্পাতে তার
হান্য পদ্ম প্রত্যেক দলটি নিয়ে ফুটে উঠেছে। না—না
—িনে নতুন বেগম নয়—ইরাণ-তুরাণের কেউ নয়—
বাদশা হুসেন গাহের কেউ নয়—তার হারেনের কেউ
নয়—েনে যে শিলীর নিভ্ত গোপন হান্য-মন্দিরের
প্রথানী—যার গত কপোল কণ্ঠ শিলীর দৃষ্টিতে লাজলালিমার রক্তিমাভার ছেয়ে গিয়েছে—যে শিলীর ছিটি
বিনিময়ে তার রক্ষে রক্ষে পুলক নিয়ে কেঁপে উঠেছে—না
সে বৃদ্ধ হুসেন শাহের নতুন বেগম নয়—সে যে চিরতারণার লীবন-মন্দিরে যুগযুগান্তরের সঙ্গিনী!

ভারি, কেবল তারি ছবি সে আঁকবে? নতুন বেগম? নতুন বেগম বলে কেট এই পৃথিবীতে নেই— —নেই—নেই। নেই—এই ব্রহ্মাণ্ড ইরাণ-ভুরাণ বলে' কোন স্থান নেই—বাদশা ছশেন শাহ বলে' কোন ব্যক্তি নেই…ভার হারেম বলে কোন কারাগার নেই— গৈথানে নতুন বেগম বলে' কোন বন্দিনী নেই। আছে শুধু অনপ্ত পুঞ্ছ অনস্ত অবদরের মাঝে ছটি ভক্ষণী, ছটি প্রেমিক প্রেমিকা…আছে শুধু ছটি হার্ম্য, আঁথি, একটি অনস্তকালের নিবিড় চুম্বন। এই, আর কিছুই নয়।

কেবল তারই ছবি সে আঁকবে। যে-ছ বি সে আঁকবে

•••কেবলই কি তুচ্ছ রঙ দিয়ে ? তুচ্ছ রঙ দিয়ে ! তার

ফার্য-লোণিতের বিন্দৃতে বিন্দৃতে যে আলেখ্যের প্রত্যেক
অনু পরমানু প্রাণ পাবে—তার নিশাসে নিশাসে বে তার
অল-প্রত্যক্ষ জেগে উঠবে, তার আশ্বার স্পর্লে আর
তা চিত্রপটে ফুটে উঠবে—তুচ্ছ তুলি আর
রঙ ?—না।

শিলী এক সনে মতিসন্তিলে ছবি আঁকতে লাগন।
থীরে ধীরে তার কাছে বাহ্যলগত লোপ পেরে গেল।
মতিমন্ত্রিল তার বিস্তার্থ উদ্ভান—বিশাল , তরুপ্রেলী—
নিবিড় লতাবিতান, সব অনুস্ত হ'রে গেল—রইল ভর্
তার চোথের সাম্নে একটি ভল্পীর মূর্ত্তি—ক্ষল বার
নিবিড়, দৃষ্টি যার গভীর, বক্ষে যার ইলিড, কলে ধার
সঙ্গীত, জলা যার বিরহ-কাতর, চরণ যার নিগড়-বার্থা।

निष्ठी अक मान हिंद जीका जाना।

(¢)

(मन्दे प्रमुख इ'मान क्टिं (नन)

रगाध्नित वर्ष वर्ष शन्दिमाकारण रेगतिक उद्गा উডিয়ে পুরবী রাগিণী বেজে উঠেছে...বাদশা ছপেন শাহ্ एक मू बीटक मटक निष्त्र मिक मिक अपिक अटम उपे दिख শিল্পীকে বললেন..."শিল্পী, ভোমার ছ'মাস শেষ।"

শিলী আভূমি প্রণত হ'মে উত্তর দিলে...'জ হাপনা, व्यातिश्रं (भर।"

বাদশা বললেন, "আজ হিন্দুস্থানের চিত্রকরের ক্ষমজা क उपूत्र, छोत्र विठांत्र रूप्य लिखी।"

শিলী বিনম্ভ শিরে বহু কম অভিক্রম করে' বাদশা ও উজ্ঞানকে মভিমপ্লিকের নিভূততম অংশে একটি কক্ষে निष्य এन। रगाधृनि-नरश करम वै मरथा जाँधात ३'रय ्रम्ह । भिन्नी दोशा मेशमारन कृष्टि मीश व्यक्तिय ভার চিত্রপটের হু'পালে রক্ষা করন্য। চিত্রপটের উপরে भत्रमा एकि।

शत्रम् मित्र निदय धक्याप्म এम मैं। ज्ञान ।

वांत्रभात्र कार्य कांत्र सन्यन् करत्र वरक केंक, তার হাতের আকর্ষণে পাপ থেকে তা অর্জেক বেরিয়ে I PER

শিলী ভৃত্তির হাতে শান্তমরে বললে—"জাহাপনা व काटनथा भाव।

ইরাণ-ভূরাণের বাদশা লজ্জিত হ'বে তরবারি আবার पार्ल भूत्रत्मन। क्र हे एक वहमूला मनिहास चुरल শিদীর গলাম পরিয়ে দিলেন। তারপর বাদশা আর উজির প্র'জনে বিশ্বর-বিক্ষারিত চোখে আলেখার দিকে তাকিরে রইলেন। এ ত রও দিরে আঁকা ছবি নয়---अ त्य मुर्विभान ब्रख्यांश्टमंत्र भन्नीत्र। त्क बलात्व नजून रवशम जांक वाममा करमन मारक्त्र श्राद्यरम---- रम जांक मिल्मिक्क विक्र कि निष्ठ करक ब्रह्मिक मिरहामरन **उभिन्दे!**!

व्यथम विकारमम कर्षाकि ए छ्रान्य वाम्मा वजरणन... "भिन्नी, दक्षांत्रांत्र महिल कारमोकिक, क्षेत्रतिक…जक रहवर्ग

মুজার পরিবর্ভে পাঁচ লক্ষ ভোমার পুরস্কার—ছিল্ছানের मृপতিরা না বলে ইরাণ-তুরাণের বাদশা শুণের আদম कराट बार्टन मा! जात्र भिन्नी, काम बार्ट जनुहत्रवर्श नित्य क्लांका कांभरन, कारमधा त्रांककांभरित स्रामा-खति छ के त्रवात कार्यः. टमकार्य श्रास्त हरत त्यारका। শিল্পী, জুমি নতুন বেগমের ছবি আঁক-নি, ষিতীয় নতুন বেগদের সৃষ্টি করেছ।"

বাদশা ও উল্লির মতিমপ্লিল ত্যাগ করলেন।

७: धनम। मुहर्डन मर्या निजीन शासन नीए কার কন্ধতল প্রলয়-যুর্বনে ঘুরতে লাগল! ককের णामवाव मव जान हारचन्न समृत्य त्यम मख र्'रम नाहरज मानल, ठातिमिटकत प्रमाम त्यन प्रमुट्ड मानम, मीभ-দানে দীপ যেন মরণাহত মামুবেব হাসির মত বীভৎস হ য়ে উঠল, শিল্পী টলতে টল্ডে চিত্রপটেব সাম্নে মেঝের छेशाब राम शएम।

यक्ष । यक्ष । मय यक्ष---आभाग । जिल्लिक यरधन कान दूरन এতদিন कि व्यवकनात्र मार्केह ना रम পর্মা-ঢাকা চিত্রপটের সামনে এসে বাদশা ও উজির ১এই ছ'মাস কাটিয়েছে ৷···কোথার সে ? কে সে পিডালেন। শিল্পী ধীরে ধীরে চিত্রপটের উপর থেকে — শিখা।...শিখ্যা...শব শিখ্যা। ভার চাইতে অনেক বেশি সভ্যি, লক্ষ কোটী গুণ সন্ত্যি, ভরকর্মণে সন্তিঃ, এই ইরাণ-ভূরাণ, ইরাণ-ভূরাণের বাদশা ছলেন শাহ, रूरणन भोरहत हारत्रम, जात्र रमहे हारत्रस्य विमानी नकून বেগম—সভাি সভাি ওগো অভি সভাি, নিঠুর ভাবে সভ্যি, নিশ্মন ভাবে দভ্যি, মৃত্যুর মত সভ্যি।

> मिने इर्निन भोरहत त्राज्यामारम এই जारमधा श्वानां स्वां इट व काम-- अकि माज तकनीत व्यवमारन। এই আলেখা, বে আলেখাের প্রতি অণুতে অণুতে ভার व्यक्ति विक्रिय बाटक, दय काटनशा माटम माटम मिटन पित्न नित्मत्व नित्मत्व जाननात्र धालाक हिन्दां पित्य, প্রত্যেক বিশাসটি দিয়ে, প্রত্যেক ইচ্ছাটি দিয়ে, প্রত্যেক व्याकांकां हित्र, तम क्षांत्रित्र कूटलटह—कार्ट अक्करनत्र এकि माज कथात्र वित्रमित्नत्र खटळ जात्र काष्ट्र थ्यटक जानात्रिक हत्य। योगभात्र आमगत्रयोदा এই जारमधा যুলবে, লক্ষ লোকের চোঝের তৃত্তির অঞ্চে—তার অঞ্চে त्रहेट्य खबू लक कर्छ ब्राह्म याद्या। नित्रा ह'एक विन्तू विष्यु करत्र' त्रक हैं हैएव बार्खा लोक! ना-ना-होंदे

त्म बहियां, हांडेरम लक्क प्रभ लक्क, काही लक्क, उपर्व मुखां, आभाग रिक्तरम भास-किश्वरम मास दक्षण अह ष्णात्मवाबाना ।

याष्ट्रम-- वाज्य, এই जात्मधा १ ७८३ मिल्री, ७८३ मूष भोकूल, काशाम छात्र मानगी काशाम । এই कारमधा १ कांत्र मानभी त्य व्यक्ताक निरम्यित अवास्त्रां हर्णन भारकत जलक्ष्यभूत्रवामिनी, ऋरगात्र जारमात पर्याच शांत्र मुच मिचदांत्र व्यक्तित (नरें, এই व्यारमधा १ कर —অড়—কেবল রঙ আর রঙ আর রঙ—জড—জড— माणिक--। य. वे त्य यूक छल्टि ना कि?. वे त्य कारबंद्र भाडाय ज्याकिन् कांशक, ये त्य कि इशानि शांख क'रत्र खेठेण- छ**ए ?** नय-नय किছूट ५३ नय-के त्व भीध निश्वास दूक मध्य शिक-के त्व घोषद्रीत व्याष्ट्रिंग एकेंग ना कि १ भागन - भागन- व भा

ছ्यान योष এकरात क्वल अकरात माल नए ७८%, একবার মাত্র ভাকে—"। भन्नी"। ঐ cচাবের ভারা ছটি यि एक वन अकिंगांज निरमस्त्र अच्छ छक्त इंद्र अर्छ, যদি—যদি—আঃ কি নিচুর শাণিত তরবারির একটুকু স্পলে ভার স্কল কোমল মধ্যের জাল একেবারে किस किस र'रध व्यपुष्ट र'रस रगल, राख्यास मिलिएस **(पण। मिस्री निस्न रू**'रत्न वरमरे त्रहेस—मरख्त गत पख **क्टि यार्ड मानम, मकान्न जामान धीरन धीरन नि**विष् কালো হ'মে উঠল, মতিমঞ্জিলের বৃক্ষে বৃক্ষে পাথার **डाक मन नीवन, इ'रब रमन, मरक मरक क्र**क काउँएक मांगम, मिन्नी क्रांख (पर मन नित्य धीरत धीरत কৰন্ নিজাভিভূত হ'বে গালিচার উপরে টলে পড়ল তা जानगढ ना।

এদিকে মধারজনীয় নীরবভাকে মুখরভার ভরিয়ে षित्य योषणा छ्टलन भाष्ट्र काट्यटम महा छिदमय हम्ह्छ । महद्य मीनांटमांटक द्राजित व्यक्तकांत्र मूच व द्रहरू, व्यवह छ। ब्रिटमंत्र धकाष व्यष्टिकात्र काम ब्रिटकर ममाश्चि होटन मि

--- अवह त्यम त्ररुश्चमश, खाष्टाममग्न, हेकिएमग्न। त्यत्या-यात्री साएएत रून्ठाम्, वणग्न कक्षानत ठिनि, मृश्न নিক্রনের রিনি-ঝিনি। কত কত রাপদী ভঙ্গণী হীরে মণি মুক্তা জহরতে ভূবিত। প্রত্যেক কাল সঞ্চালনে শীপ-বশিশপূর্ণ তাদের আর সারা দেহ হ'তে যেন ভারার हेक्द्रा किहित्य किहित्य शक्ष्य । जात्मत्र निविष् कात्मा আথিতারা হ'তে অবিনাম করিত হচ্ছে অমৃত ও रुलांहल, जोदन ও मृङ्गा—े य दि दिशो साम्र छोट्नम আবেশবিহবল আঁথি পাতে পাতে আঞ্চিত অমরার অভি অভ। অড় ? না— না—কে বললেঞ্জড়। ওবে দিংহাসন আর গভীর গছন রসালভলের বিরাট গ্ৰহাৰ।

> खमःथा एकनी कार्यमे जारमन्न कार्यन छोन निया, চটুল চাহান নিযে, হাসির ভরক জুলে, উঠছে, বসছে, श्रतक, कित्रक, हलक। এই उद्भनीस्पद स्मात मस्या মুদ্ধ ছদোন শাহ।

একেবারেই অড়—শক্তিকীন, গতিকীন, ইচছাহীন! কি নিগুর উৎসব ' কি নির্দ্ধম এই অসংখ্য তরুণী-শিলী উদভান্ত দৃষ্টিতে সেই কক্ষতলৈ বদে দ্ধেন একটি বৃদ্ধকে যিন্নে তাদের আশা আকাঞ্জা সাধ আলেখোর দিকে অ,নমেষ চোখে চেমে রইল। এ ঠেটি আহলাদের সমাপ্তি। না জানি ঐ চটুল চাহনীর পিছনে কভ শভ দাঘ নিখাস সংগোপিণু, ঐ হাল্কা হাসির পশাতে বত কত হতাশার গুরুভার অটুট, কত কত को वर्भत्र वार्थला, ये উৎসব अक्षमोत्र शम्हारक जाशमात কডা লান্তির হিদেব টেনে চলেছে ' ধাবল প্রভাগ-শালী তশেন শাহ, ঐ বিরাট বার্থতার বিনিময়ে কিছু দান করবার জমতা ভোমার হাতে নেই।

> নতুন বেগম গান গাভিত্ত—িক করণ কি কোমল সে হর ! যেন তার জাঁথির পাতে বিষের অঞ্রাণি থম্কে যাজে, যেন তার ঠোটের কোণে সারা জগতের বিবাদ গুদ্রে মর্ছে, আর ভার কণ্ঠহরে কি মিষ্টি বীণার তানেই অশ্রুসাগর উথলে উঠছে।

> "ওগো অভেনা, তুমি এমনি পরিচিত—এতদিন তবে काथांत्र हिला ? यथम टाथम त्ल्तूल् एएक्कि हिल, यथन थानम नित्रां कित्र प्पार्थ पात्रुटक पात्रुटक ठातिस निरम्भिक, व्यमिन व्यथम मिशरखन्न कारण कारण कारण कार व्यामान সন্ধানে ফিরছিল, সেদিন তুমি কোণার ছিলে—কোথায় हिर्ण १—"

"युग्यूग्टक धौरांत्र भूरत शिरण, मित्रांकि करत्र-

मिक शिश्राणांत्र त्रिक्क रूक, (চাब्बित माग्रन जांशांत्र निय्म क्ष्म, क्षांत्रमा क्ष्मि कांक क्ष्मिन करते' कांशांत्र थिएक क्षण !—"

"ওগো পরিচিত—কেবলই জল বারবে, মেঘ থেকে কেবলই জল বারবে, জোজন আরু খেলবে না, ফুল আর ফুটবে না, বুল্বুল্ আর ডাক্বে না, ওগো তুনি চির-পরিচিত—

"ও"—গান আর শেষ হ'ল না। সহসা নতুন বেগম ছ-হাতে বুক চেপে গালিচার উপরে লুটিয়ে পডল, ভার মুথ পাংশুবর্ণ হ'য়ে গেছে, চোবের তড়িৎ মলিন হয়ে গেছে।

বাদশা তশেন শাহ চক্ষের পলবে এসে লুঠিতা নতুন বেগমের পাথে নতজাত্ব হ'য়ে বসলেন—দেখলেন নতুন বেগম আত কণ্টে নিম্বাস প্রশ্বাস নিচেছ। বাদশা শক্ষিত কঠে ভাকলেন—"পিয়ারী, পিয়ারী—"

ইাপিয়ে হাঁপিয়ে অতি বটে নজুন বেগম উত্তর
দিলে—"জাঁহাপনা, বাদীর গোণ্ডাকি মাপ ক্রবেন।
ব্বের ভিতরটা হাদাপগুটা যেন কে চেপে চেপে ধর্মছেলেই,
বেগমের স্থাস ফুরিয়ে এল, আর কিছু ফুটল না।

তৎক্ষণাৎ বাদীরা ধরাধরি করে নতুন বেগমকে ককান্তরে নিয়ে গেল, শ্যার শারিত করে দিলে, প্রতি মুহুর্জে তার স্বাসকষ্ট উত্তরোজর ব্যক্তি হ'তে লাগল। হাকিমের জন্যে লোক প্রেরিভ হল।

কিছুক্দণের মধ্যেই নতুন বেগমের বেন নিমাস প্রমানের কপ্টের কডকটা উপশম হ'ল, তার মুখ থেকে ধীরে ধীবে যজ্ঞণার চিহ্ন দুরীভূত হ'রে গেল, শান্তির নিমাস কেলে নতুন বেগম ধারে ধীরে চোথ ছটি নিমী-লিভ করল, ধীরে ধীরে তার রভিন ঠোটে রভিনতর একটা হাসির রেখা অভিত হ'রে গেল।

হাকিম এলেন, নিজিতা নতুন বেগমের নাড়ী প্রার্থ করলেন, একটা বিপ্মরের ক্ষণিক আভা তাঁর চোধ প্রটোতে থেলে গেল, আত্মসম্বরণ করে' তিনি আবার বিশুণ মনোযোগের সফে নাড়ী অমুভব করলেন, তার পর ধীরে ধীরে হাতথানিকে শব্যার নামিয়ে রাথলেন। গভীর কঠে ছমেন শাহের দিকে কিয়ে বললেন— "ইরাণ-ভুরাণের প্রথল পরাক্রান্ত বাদশা জাঁহাপনা, নতুন বেগম এ নম্ম জগত ত্যাগ করে' বেহেন্ডের পথে যাত্রা করেছেন।"

वालगांत्र मुख भिट्य यथा महल ना ।

* * *

শিল্পী ধরা দেখছিল। হিনাজির কোন্ গইন গভার নির্জ্জন গুহার একমনে সে আপনার মানসীর ছবি আঁকছিল। দিনের পর দিন, মাসের পর মাস, বৎসরের পর বৎসর সে অনাহারে আন্দ্রায় ছবি আঁকছিল। সহস্র বৎসর পরে তার ছবি আঁকা শেষ হ'ল। তথন শিল্পী সভ্যে দেখলে, এ ত আর কেউ নয়—এ যে নতুন বেগম। দেখতে দেখতে গিরিগুহা পবিবর্ত্তিত হ'রে মতিমঞ্জিল হ'রে গেল। হতাশায় শিল্পী তার অন্ধিত আলেখ্যের সাম্নে ল্টিয়ে পড়ল।

সহসা শিল্পী দেখলে ছবিতে আঁকা গুড়না ধেন একটু কেঁপে উঠল, আলেখ্যের চোথের পাতা মিট্মিট, করে উঠল, চোথের তারা উদ্দেশ হয়ে উঠল, ঠোঁট হটো নডে উঠল, ধীরে ধীবে আঁকা মানসী-বৃত্তি চিত্রপট থেকে কক্ষতলে নেমে পড়ল, তার কানে এসে বাজল "শিল্পী—"

শিল্পী যুম থেকে চম্কে উঠল, জেগে দেপলে, জার সাম্নে দাঁডিয়ে এক তরুণী জিমিত থেকে তার মুখ দেখলে, ভয়ে বিশ্বয়ে তার মুখ থেকে বেরিয়ে পড়ল— "নজুন বেগম!"

স্থান্যী বললে—"শিলী, নতুন বেগম সরেছে, আমি তোমার প্রণায়িনী, এস—রাভ স্থার বেশি নেই—"

নিমেবে শিলীর ঘুমের যোর কেটে গেল—ভার দেহের প্রত্যেক অণু-পরমাণু জাগ্রত হ'য়ে উঠল, ভার শিরার শিরার ভড়িৎ চারিয়ে গেল। এত স্বপ্ন নর— এ যে সভ্যি—অতি সভ্যি। ভৎক্ষণাৎ ভরুণ যুবক উঠে দীড়াল, ভরুণীর হাত ধরে' বাইরে বেরিয়ে এলো। রজনীর শেষ শুক্তারা পূব পগনে অল্-অল্ করছিল। গেই শুক্তারার আলোকে আলোকে প্রেমিক প্রেমিকা হাত ধরাধরি করে' দুর দিগস্তে কোথার মিশিয়ে গেল।

(•)

मासूर्यत्र श्वात्र लाक त्रांक् वाजात वाजकारी

वक शास्क ना। शत्रमिन राममा श्रमन महि नित्य महिमक्षिण উष्णाटक हमाराम। स्थाममत्य कित्र এসে वामणामगीरा निर्वास कर्नाम-"क शिला. मिकिमिक्षित्व निवीत्र मांकांद পांखता त्रिल नां।"

वाम्मा विश्विष्ठ हटनम. উजिन्नदिक मटक निद्र यस्त्रिक উप्पटनं योजां कत्रत्वन। এटम दम्भवन कत्य प्रवास शार्यम कत्रतम । सम्बद्धम (कृष्ठ (काशांख । किन्छ शत्र ष्टेशकांत्र मणून र्वशस्त्र विष्ट्रमांख निष्टे । নেই। আপনার স্থানে পরদা চাকা চিত্রপট—ভার ছপাশে রজতাধারে তৈলহান প্রদীপ ছটিতে সল্তের ভেস্মাৰশেৰ।

वामणा ठिळा न एट एट एट र एक । কোতোয়াশকে মজিমপ্লিল থেকে নতুন বেগমের ভস্বীর "উজির, চিত্রকর না থাক, চিত্রপট রয়েছে—ডাই আনবার জন্ত পাঠালেন। কোভোয়াল অনুচরবর্গ আনাদের যথেষ্ট। চিত্রকর যদি পুরস্কার প্রভ্যাশা না করে সে দোব ইরাণ ভুরাণের বাদশার নয়--" •ৰলতে বলতে তিনি চিত্ৰপটের পরদা অপনাত্রিভ क्यामन ।

वानभात्र भाभन कथा मृत्यह भिनिष्त्र त्रका। प्रकारम সন্ত্র সৃষ্ণের মত চবির দিকে তাকিরে রইলেন। চিত্রপটে শিলী অদুশু। শিলী যে কক্ষে ছবি আঁকিছিল সেই বছুুুুুুুুুুচুত সিংছাসন যেমন আঁকা ছিল তেমনি আছে, রত্নিণ্হাদনের রত্নগুলো যেন প্রাণ পেরে অস্ खन् कत्ररः।

> শ্ৰীহরেশচন্দ্র চক্রবর্তী। সৰ্কপতা। ভাজ, ১৬২৭

পথের গান

কাজল আঁথির কপালি স্ভায় वूरन' वूरन' পথशानि, নীলাম্বরীর আঁচল ভিজায়ে ফিরে গেছে অভিমানী। বিজুরির জ্রী-ফিডেটি সে ওই क्टल शिष्ट हुन थूरन',— শরৎ-মেবের শাদা ককার কে তার বুনিয়া পুলে ! আল্ভার টোপ্—খাস ফুলে ছোপ शरफटक ५३१ (थरक, धरेथान नित्र हरण' रन नित्रह धरे थान क्रिया (नैंटक।

इनाद्य मिला क् हानित माग्र কাশের ও' ছথে হাসি, কনক ধাতো সোনার শোলোক व्रव्या कविष्क वार्षी। वूम्का खवात त्वरनात्रात्री वाफ्---সিশ্ব আলোর ঝারা 🕈 গন্ধ তৈলে বনের মিছিলে बुंगारम ट्यटबट्ट का'ना ? আলোক-গতার দেখন-হাসি সে বুক কুড়ে' আছে বসি';---प्रहे ट्रांष एक्टक काठरण-अमिटक गिरबट्ड कि जन्मनी।

সাধী-হারা কোন্ পাধীর করণ
ক্রন্দনে বন-থল
সমবেদনার সাড়া দিরে দিরে
কেঁদে' মরে অবিরল।
নিথর পাড়ার শিররে ঘুমার
নিশ্চল ছারাধানি,—
ঘুমের স্থপনে বন-কৌতুক
সকলি ফেলিছে জানি।
ললাট ঘামিয়া চন্দন-চুরা
পড়েছে কচুর পাড়ে,
এই পথ ঘুরে চলে সে গিরেছে
লারণ রোদের ভাতে!

গ্রাম-সরোবরে সন্ধ্যা-মেবের
রাঙা ছায়াটুকু পড়ে,
নিবিড় সোহাগ—ক্ষণ যৌবন
' ড্রাঁকডি' জাঁকড়ি' ধরে!
তক্ষ-বীথিকার ফাঁকে দেখা যাম
টুক্রো আকাশধানি—
জীবনের ছোট প্রহবের শুধু
এই টুকু জানাজানি!
অংশুমানীর মুকুটের সোনা
ঠিকরি' পড়িছে কোথা,
না জানি সে কোন্ রহস্ত-ছার
খুলিতে গিয়েছে কোথা!

বিদ্বির গালে—বিদিরে বিদিরে

স্থানিরে পড়েছে পাথী,
নীলিমার মাগ্য-মস্তর তা'ব

অভিরে ধরেছে আঁথি।
বনের মাণার পাতার পাতার

বলি' উঠিছে কি রে?—

ছড়িয়ে গেছে কি তা'রি কপ্তের

সোনার কন্তী ছিঁড়ে'।

ফালি চক্রের খালি বুকখানি,
তিমিরে হারায় দিকৃ!

এরি মাঝ দিয়ে চুপে চুপে সে গো

চলে গেছে ঠিক্—ঠিকৃ!

সোসর হারারে দোসর করেছি
আজিকে পথেরে তাই,
এত কি পথের রহস্ত ওগো,
অন্ত কি এব নাই!
নির্ম রাতির উন্নাসী আঁথির,
সামাহীন দিঠি' পরে
অধবেব হাসি অশ্রু মিশিরা
একি কৌতুক করে!
কই আমি। কই ঘন-কুন্তলা!
পথ কই,—পথ কই!
চিন্ত-মরমে নিত্য ছড়ার
"গানের স্থাটি ওই!
শীক্ষ্যোভিরিজনাও বক্ষ্যোপাধ্যার।

অপরাধী

ज्यन कार्र एवा कि छान्य।

দেখিতে গিয়াছলাম: হঠাৎ সারা আকাশ ब्यान राजारेयां अकामरक कुछ मिनाम। निहरन **डाक ड**िन्हाम,—आमारमव वाड़ी बादन, আঞ্জিত বাবু। চাহিয়া দেখি, আখনী। व्यामारमत्रवे मक्षाठी (म, शार्यत्र এव है। वाः नाव वाश्राना १६८७ जामात्र छाकिट छ। नानत्म ভাহার আভিথা গ্রহণ করিয়া সাগ্রহে তাহার বাড়ী গিয়া উঠিলাম। অশ্বনীয়া নেটিভ বেন একথানি ছবি!

বিস্গাম।

অশ্বিনীর বিধবা মা আসিয়া সঙ্গেচে অভ্য-র্ধনা করিলেন—কি মধুর সেহ-কর্পায় তাঁহার মুখথানি বল্মল্ করিতেছে—শান্ত স্থলর শ্রীতে ममुब्दम, (यन गाष्टानात मृद्धि। धकवात (मिथान कीवत्न तम मुद्धि (छाना यात्र ना। गातंकरणरे किया जिला,—(यवा।

विभ वर्गद्वत भृत्सिकात कथा विविद्धि । • हेक्हें क् नान तर्छत्र भाषी छ जाभनात मुद्भारत्वत्र करणात्क পড়িভাম। वत्रम व्यामात्र एकशानिक व्यात् क विशा त्रांकात नव्या গায়ে মাধিয়া এক বালিকা ককে প্ৰবেশ গোরাবাজারের ভাদিকে ফুটবল ম্যাচ কারল। অন্তণামী সুর্যোর কেরণচ্চটায় সমস্ত আকাশ যেমন এক অপূর্ব্ব স্থিয় বর্ণে আপনাকে **भारत हा**िमा अफ् जूनिया मुस्नसीरत तृष्टि प्रश्चिष्ठ कविया তোলে, বালিকার সর্বাক্তে নামিল। মাথা বাঁচাহবার উদ্দেশে দিখিদিকের তেমনি এই অপরূপ কপের হিল্লোল। তাহার म व्यथक्रिय क्राप्य क्रिया व्यवसंस्कादत আঞ্জ দেই ঘরধানি মুহুর্তে অমনি চকিত উদ্রাসিত হইরা উঠিল। কুঞ্চিত ক্লফকেশে দোগুল বেণী,মাথার উপব টক্টকে লাল ফিডার ব্রে বাধা—দে এক অপূর্ব শোভা! আমি ভাহার भारत हारिया हिकटल ट्रांथ नामारेगाम।

অখিনী বালল,—ইনিই অভিত বাবু, क्लैम्टान्। वाकालीभाषात्र वाहित्त थाक्। क्लब-हित्म (थलन। त्रांभन त्रांत्रारमञ् ছোট कहेदक भाषा একটু कम्लाउं ७ । जाहि, मान करनाइ य माहि विषि, তাত - जाओ পविष्ठता कम्भाष्ट्रिक माम नाम श्लामि र्निक मिर्मिष्टमन। जैरक हा নানারভের ফ্লে-ভরা ছোট বাগান—ঠিক থাওয়াও দেথি। এর অভ্যর্থনার ভার ভোমার উপর।

ভিজা কাপড় বদগাইয়া মাথায় ত্রশ্ সলজ্জ মধুর জঙ্গীতে ঘাড় নাড়িয়া রেবা চালাইয়া ভর্তোক সাজিয়া ভিতরে আসিয়া বাহির হ্হয় গেল। ষাইবার সময় ভাহার टाथ जात टिंग्डिंब क्लार्य त्य जानरमात्र দীতি কৃটিয়া উঠিয়াছিল, সেটুকু আমার लका अज़ा नारे—मायात्र मर्टन रहेल, द्वन হাসির একটা জীবস্ত বিতাৎ-শিশা আমার मण्य रहेट मित्रा दशन ! अहे ट्लार्यामंत्री राणिकांत्र हाट्डत टेड्यांची छाट्य स्थापन অমৃতের আদ পাইলাম!

দে রাজে খুমটার বড় ব্যাখাত হইল। কেব্লি द्यवात टमहे समात मूच जामात छाण्य खोबन्दर ममञ्च वामना-कामनात्र श्रामीपिटिंड, শিখার মত জগু জলু করিতে লাগিল। রেবা कीन्छान, कौन्छान, कौन्छान,—এই कथाछ। বার বার মনের মধ্যে জাগিয়া উঠিয়া তীক্ষ ছুরির মতই আমার সমস্ত আশা সমস্ত कझनाटक ক্ষত-বিক্ষত রক্তাক্ত করিয়া তুলিল।

ইহার পর হইতে অখিনীর সহিত ঘনিষ্ঠতা व्यामात्र श्वरे वाड़िश्रा উठिन । नाना व्योह-লাম ভাহার বাড়ী গিয়া হাজির হইভাম—সন্ধার **हारमंद्र दहेवित्न देन्नाहिश्दमंद्र नाना व्यवास्त्र** व्याद्याहमात्र चिष्ट्रिक कथन् त्य मन्हे। जशाद्याहा ना। आमि एषु द्ववाव क्रश्यक्षा आब छोहात হাতের তৈয়ারী চা পান করিয়া আমার সেই হাতে-গড়া এই ধর্মের ক্বত্রিম বেড়াটাকে व्यथम योवत्नत्र अष्ट्र्सं म्यूर्ककिष्ण क कि कि कि भावित्व ना-कामिया म्रूकेन्यक विध्य त्रभनीय छात्र शतिशूर्व करिया वाड़ी এक करिया मिरव ना ? (त्रवा मासूय, आमिछ ফিরিতাম |

প্রোপে ভূথিই কি তেমন পাইতাম! ष्णमञ् (यमना (याथ रहेड, यथन वृक्षिडाम, **এই दिशाकि कामनि आमात्र** পाইবার আশা নাই! সে ক্রীশ্চান্! এই রেবা,— কি জানিবার জন্ত কলেজের ছুটির পর তাহার क्षिय कार्य कार्य कार्यनात्र के कानिका- वाफीट काणिय रहिनाम। अभिनीत अस्मत की वन-श्रूक्णि डिएमर्स कतिया नित्य— मा विगित्यन,—दिवरात्र विरम्न कथा इति लगन काबाब शाकित्व तम, बाब कावाहे व्यक्ति छाहे द्वरणितक दाबर त्यरह ना जामि। हात्रात्रः, अथनकात्र अहे मुह्छिखनात नारहरनाय--नक्न गुडिरे ज्थन बडीएडर कान् बडन बामार दूक (कने दक गुखरतन बा श्रवदेव जगारेषा बारेटव । तिनी जाविरक्ष मात्रिण । द्ववान विरम । भाकिष्यमा। चार्यत्र विरव ममन्छ मन्छ। विवाहता किषानीत मा विगरणन,—दबवा, हो जान

व्यत्नक त्रांत्व वृष्टि थानित्न राष्ट्री कित्रिनाम। উঠिত। त्रांत्व राष्ट्री कित्रियांत्र नमय कठवांत्र मत्न कतिजाम, जांत्र नां, द्ववादक जांत्र द्विश्व ना ! देनबाटकात काखदन क वामनात हैकन मिथा। भारत (कन क्वांशाहे! दिवा भरतत, दिवा खन्द्रतः। किन्छ भन्निम व्याचात्र करणद्वन हुछि श्रदेश दे दिवात मिर जिल्ल करान सार कि প্রবল আকর্ষণে আমায় আবার ভাহারই গৃহের चादत्र होनिया चानिछ! ७३, मिक जीवन मूह्र्डिखनाः। निष्कत्र महन युक् कतिवा क्विन আখাত পাইতাম। তবুও দে আঘাত পাইবার আগ্রহে আবার সে-যুদ্ধে মাতিয়া উঠিতাম। कामि रयम शाशन इहेग्राहिनाम।

चात्र পातिनाय ना — এक निन ভাবিলাय. द्रिवाटक मव कथा थुलिया विल, —यनि वृबाहर्ड পারি,—কি ভাত্র পিপাদা, কি প্রবল অনুরাগ वाकियां साहेड, मितिक काहारता छँ न शाकि । आभाव खार्त। हाक् म की नान। अखरवन এই यে প্রবল আকর্ষণ, সে কি মানুষের মানুগ। তবে १

> धकमिन धक्छ। ऋरवाश मिनिन। स्मिन षिनी (काशाय कि काट्य वाहित इहेग्रा शिश्राष्ट्रिंग, करमर्छ । आरम नाहे। ब्राभाव

व्याभिन ।

मकाति ज्ञान हाजा उथन शीरत धीरत घनाहेगा आंभिटिं छिल। कार्छ्डे এक मार्ट्स्त वांडलां निथात गउरे स्म यत रहेर्ड वाहित हरेगा इहेटक शिशारनात अकारत **এक** हो नार्शन स्त মাতাইয়া ভূলিয়াছিল। আমার প্রাণণ্ড সে স্থরে মাতাল হইরা উঠিয়াছিল। তাহার উপর সমূথে দাঁড়াইয়া রেবা—ভাহার ভারুণেরে অপূর্ব " দীস্তি লইয়া! গোধুলির সেই মৃত্ আভায় ভাছাকে कि अপूर्विरे ए (मथारे ए ছिन!

মত রেবার হাত ধরিয়া ডাকিলাম—রেবা—

🧸 खत्रों। भव वाहित इहेम्राहिल कि नां, कानि ना— (म श्रदं कामात्र क्षारत्रत ममन्द्र कार्यत्र कामक कामकाय-उत्पर्श এक वास्य मुक्शिक्त रहेश পড़िया।

বেবা ভয়-চকিতভাবে আমার পানে **हाहिल।** डाहात्र छ्हे ह्हाथ विश्वरत्र প्रतिभूत्। আমি বলিলাম,—রেবা, আমি তোমায় ভালবাসি, বড় ভালবাসি। হও তুমি ক্ৰীশ্চান—ভাতে কি বাধা ? আমিও ক্ৰীশ্চান হতে রাজী আছি। রেবা—রেবা—

खहारेया ठिक करे कबरे। कथारे विनया-ছिनाम कि ना, कानि ना। তবে এই ভাবের क्षां छनाई कामांत्र मत्नत्र मत्था ভाषात्र कृषिवात्र জন্ম আতালি-পাতালি করিতেছিল। তারপর এক-নিশ্বাদে আরো কত কথা যে বলিয়া গেলাম

द्विवा एक रुरेष्ट्रा विश्वा ब्रह्मि—(कान कथा विना मा। आभि छाहात्र मूर्थत भारत সাগ্রহ শিপত্মি দৃষ্টিতে চাহিয়া মহিলাম। তাহার

षा। जिनि हिन्त्रा शिटनन ; दावां हा गरेशा आंका कृतिशा केंद्रिक हिन, काशांत्र होत्यत পাতা কণে কণে युनिया चानिए हिन।

र्हा कि कि नियान किन्त्रा देवता विद्यार-গেল। ভারপর আমি কভক্ষণ যে মুক ইমান উচ্ছিসিত হইয়া উঠিয়া সমস্ত বাতাসটাকেও পুতুলের মত সেথানে বসিয়া ছিলাম, আমি না। হঠাৎ বড়িতে দশটা বাজিতেছে গুনিয়া আমার চেতনা হইল। আমি চোরের মত নিঃশব্দে বাহির হইলাম। ফ্রোরের নীচে এক-ঝাড় হাস হানার পাশে শান-বাঁধানো ছোট চাতালটার উপর রেবা চুপ করিয়া বদিয়া-ছিল। ওথানে রেবা কি করিতেছে। মন (कोकृहनी इहेरमंख भा मिरिक र्गम ना। महान भर्ष जामिया मैं। एक्निया क्षुनिश्रा ভাবিলাম, এ कि कतिलाम। यूद्राखंत ক্ষণিক উত্তেজনায় একটা তুৰ্বলভায় বাগিকার কাছে এমনভাবে—ছি!

সমস্ত মন ভরিয়া माक्रन धिकादत উঠि। द्विया कि ভाविन ? পাছে প্রবিন অश्विनीत्र मक्ष (मथा इहेल এ क्था खर्ड, ८महे ७ स्म करणस्क राजाम ना। देवकारण कष्टभात्रिमी चार्षेत्र मिरक हिम्बा श्रामा। वानाम कितिमा अनिमाम, अभिनी कि करति कारक जामात्र थूँ किएक जानिबाहिन। तुक्छ। ছাঁৎ করিয়া উঠিল! ভারপর ছই-ভিনমিন करनरकत हुछि हिन-वामा हाष्ट्रिया कारक कांटक चूरिया ८वड़ाहेगाम, -- क्यामनहे कार्यनी আসিরা ছই ভিনবার আমার খোঁজ করিয়া गित्राट्ड!— दकन १ दकन १ जालात मानाम मन ছिनमा উঠিত—আবার এক मारून गण्डा मन्द्रोटक ठानिया पत्रिक। त्विम करणारण करण करण करनात्र श्रविम ध्यान ध्यान काणायन हरेगा ध्यक्ते। कारस्त्र

অছিলা ভুলিয়া একদিন হঠাৎ কলিকাভায় পলাইলাম।

চট্ট कत्रियो क्या (भग ना। वाड़ीरङ विवार्**डी এकत्रकम शामिमा**लित অকলাৎ नाना अञ्चय-विञ्च एवत्र । हालायां नात्रा हरेग्नाएइ--- अधिनी, द्वरा कि या আসিয়া আমায় প্রায় ছই মাস • বাডীতে আটক করিয়া রাখিল। খাঁচাব পাধীব মতই বাপের কাছে বাড়ীটা বাঁধা ছিল—ভাহারা গড়িয়া ছট্ফট্ করিলাম—অগিনী কেন यागांत्र (थीएक यागिशांडिन १ ७८व कि द्ववारक. পাওয়া সম্ভব্ তবে কি মুঙ্গেরে ছুটিয়া गारें व १ अक्टो ि कि विश्व १ कि कानि, खिनलाग,—आगि हिना शार्श कि विश्व भागति হয়ত হাতের নাগালে পাইয়াও কামনার धनिएक हिन्नीक्टनन क्लाई त्थान्नोई हा विभिनाम ।

भन्न, करणक थुलिटन। किन्निमा नकान्ति भन्मम ভাতান্ত সন্তর্পণে অশ্বিনীদের পাড়ার দিন্দে কর্মার পরামশ ছিল! রেবাকে যে কথা हिनिनाम। ঐ यে वांधी मिथा याम्र। , त्महे वाडो! व्यामात्रं भाषात्र मरशा त्रक्रो। ह्लाद व्याधनी निर्द्ध व्यानिप्राह्नि! ७८व कि द्रियाय করিয়া নাচিয়া উঠিল। কম্পিড চরণে অগ্রসর भ्डेगाम। এ कि, क्छेटकंद्र मगूर्थ ছোট ঘোড়ার পিঠে চড়িয়া এক সাহেব-বালক (वड़ाहेटलट्ड (४,—मटन এक उक्रवी (२४। य छटकम मञ्जूष्य दर्शाय, कार्टिम द्वां माहेनद्वार्छ, তাহাতে একটা বিলাভী নাম লেখা। কে यन जामात्र नित्मरय कान् छेक शर्यक-शिथा **इटेटल अटकवाटन कालकल्लार्य कास्कान शह्बटन** ঠেणियां भिना।

निक्टिंरे এक ভুটাওয়ালার দোকান। मिथारन मद्दान नहेरछ निवा तिथ, अधिनीतिव यां भीत्र त्महे मिश्रा माहे है। এक कार्या विश्रा ब्हों भिक्टिल्ह। डाहात्र मूर्य खिनगाम---अधिनी जाज भागपारसक रहेन,--- त्यारमत्र वियोह नियात शबरे--कि-जक्ती होक विकास गरेवा द्वकरम

চলিয়া নিরাছে—বিধবা মাও সজে নিরাছেন। যাইবার সময় বাড়ীটা বিক্রম করিয়া গিয়াছে। —কীহাবও মত ছিল না। জামাইয়ের মানলা-মকদ্দমা করিয়া ক্রোক দিবার চেষ্টায় ছিল, তাই এই বিবাহ দিয়া সেসৰ দায় अफ़ारेब्रा वै। किवारक। करनरक वकुरन ब मूर्य মত আমার সন্ধান করিয়াছিল। আমার কলিকাভার ঠিকানা কেহ জানিত না— তার পর মুঞ্জেরে ফিরিলাম,একেবারে পূঞার কাজেই বলিতে পারে নাই—আমার সঞ্জে व्यक्तिव नाकि এই विवाद्धित वााभाद्य छात्री জিজ্ঞাসা ব রিয়াছিলাম, তবে কি তাহারই জবাব कार्ट जाननारक धना नित्राहिनाम,— ८मडे ভর্সায় দেনার দায় কাটাইবার জন্ম বেচারী অখিনী আমারই কাছে ছুটিয়া আসিয়াছিল! (क कारन।

> তারপর আঞ্জ বিশ্বৎসর পরের কথা ৰলিভে বসিয়াছি। সংসাবের প্রবল সুণাৰতে পড়িয়া কোথায় গিয়াছে রেবা, আর আমার **७**क्रन (योयम्बद्ध स्मार्थ स् বিবাহ দিয়া নাতি-পুতি লইয়া আমি এখন मखत-मङ मःगात्र कांनियां विमाहि। याःना नएडएन एटारमन कथा পिए न गीकाथूनि चिन्ना (म वहे हिंक्सा (किंग्रा किं; अक-अ भाष कतिया क्यांद धनी चल्दात । बादत পতियां कारास कर क्यांक महिल बाद्यकारी

কাটাইতেছি। মফঃখলে ডাক্তারি চাকরি কবি ष्याचारम मिन कांग्रिकटह ।

ছই-চাবিটা স্থান্ত মুখে তুলিভেছি, এমন সময় খপর আসিল, এক ভরুরি এয়াক্সিডেণ্ট **८क (म এখন इ वाहि एव गाहै एक इट एवं।**

ভাডা-গাঙা দাভাহয়াছিল— গাডাতে গিয়া তাকিলাম— রেথা— উঠিশাম। গৃহিণী মথ ভার কার্য়া দাঁডেছিলেন। किन्द डेभाव हिम न। वाहामी जावा क छत्याव **डाक— এই किनिय**होत्र अर्थ বোঝে ना। ভাহার। চায়, স্বামীগুলি ভাহাদের হাতে নাথা গুলিয় व्यानत-(मार्गाण महेब्राहे—कियु (म कथा शाक्।

জীর্ণ নাংশাব সম্মুথে গাড়ী পামিল। गांडी श्रेट नामग्रा भोर्न वांनात मरश प्रकिशं (मिथ, मन्यूरथे माठ-मां उपि ८ इस्ट्रिय খেলা করিতেছে—ছিন্ন মলিন বেশ,—স্কুমার মুর্ত্তিগ করাজাণ। তাহ।দেব খেরিয়া, সমস্ত श्वानिराक (यतिया मातिरामा न विकर मीर्ग विवास,—दन्नवा, दर्गमान अहे मणा। ककानभाना • यन थहे थहे कत्रिया पूर्विया বেড়াইতেছে।

ভিতরে গেলাম। রোগশ্যায় শারিতা धक जक्नी—दानी, हेराकि एपिएड हरेक। व्यक्तारम आरम्ब धर्मा विक्री कर्कम बहेशा निशास्त्र हेन्छ्। — कुल जीन, ट्रांटिंव नीटिं, काणि পण्डियाद्ध— (कान कथा विभाग ना—विणयांत्र मोकिश इस्मिनी अक्कारण समात्री हिला वटिं-- এथन हिला मा। अहे दिल्ली—दिलहे दिल्ली। अक

টাকা ষয়ে ভুলিয়া পরম পরিভূপিতে কাল সৌন্ধর্যার একটা ধোলস্ মাত্র ভাহার অক লাগিয়া আছে। তরুণী অচেতন পড়িয়া —পবিশ্রম কম, থাতির থুব,— বেশ নিশিচন্ত আছে। ব্যাপাব গুনিলাম—মাতাল শম্পট স্বামী •পর্সার জ্ঞা ভজন করিয়া গ্রীর কাছে যথন এই চাকরিতে ঘুবিতে ঘুরিতে আৰু পর্দা পায় নাই, তখন জুতা-শুজ পা ভুলিয়া চারমাস হইল, কামালপুবে আসিশা উঠিয়াছি। নিভান্ত পাষণ্ডেব মতই পদাঘাতে বেচারীকে জর্জারত করিয়া গিয়াছে। থানিককণ গোদন সন্ধার সময় গৃহিণীর হাতে কৈয়ারী শুক্রায়ার পর বোগীর চেতনা ইইল। রোগী চোথ মেলিয়া চাহিল। এ কি—এ যে আমার পরিচিত দৃষ্টি। কোথায় দেখিয়াছি ? চমকিয়া डेठिगान। ठिक !— a त्य द्वता। স্বিশ্ব

> না, ভুল নয়। তক্ণী আমার পানে কিরিয়া চাহিল—চাহিয়া চাহিয়া মুদ্র স্বরে ব্দাল—জ্জিতবাবু—

তারপর এইজনেচ নির্বাক। কাহারো गृत्थ कथा नाङ। द्ववाव छ्रे छाগत दहारथत রেলোম্বে-ব্যারাকের ধারে গিয়া একটা কোলে মুক্তার মত তই বিন্দু জল ফুটিয়া টিরি। ঘেণ্টা বড হইল—তারপর গ্রহ গাল বহিয়া ঝরিয়া পড়িল। আমাব সুক যাটিয়া কভদিনকার একটা বিশৃতপ্রায় রুদ্ধ বেদনা ভীত্র নিশালে ফুটিয়া বাহিন্ন হইল। আমি ৩ই হাতে রেবার চোথের জল মুছিয়।

> ত্থামার বুকের উপর এক অসহা বেদনা পাহাড়ের মত চাপিয়া বসিয়াছিল—চোথে क्रव चानिम।

রেবা আকাশের পানে একটা ছাত वश्रम दवनी नश्र ज्य मात्रिक्ता जात्र दिशहन, जाद्रभन्न भीत्र भीत्र भीत्र भीत्र भीत्र भीत्र भीत्र भीत्र भीत्र भीत्र

অভকিত মুহুত্তে ক্ষণিকের উত্তেজনার ঘাহাকে বৃতি, খাছিলাম---

জিজ্ঞাসা কবিলাম—অশ্বিনী কোথায় ? , — कानिना। এই বিমের ব্যাপার নিয়েই, भागात त्रांश व्या क विराय केरिया गर्क हिन ना। नानां ९ क विद्य वस कंबर ६ ८४। করোছল, কিন্তু হল না—সবট প্রভুর ইচ্ছা।

হারে স্বার্থপর! বর্ষর কাপুরুষ! এই विवाह वक्त करोत्र ८० होते। इब्रज एजांत्र भिन्ने व्यामिया । जामात्र हाटल हातिहा होका खँ जिन्ना क्षा छोटक इं दिखा क्रिया । (क न्या मात्र স্বালে তীব্ৰ কশাবাত ক্রিল।

আমি আজ ঐশব্যের প্রাচুর্য্যের মধ্যে— আব আমার সেই প্রথম-যৌবনেব কামনার আগুনের মত বোধ হইলেও টাকা চারিটা ধন রেবা—! কেন তাহাকে সেহ সন্ধ্যায় হাতেই রহিল। আশাব উচ্ছালে মাতাইয়া তুলিয়াছিল্বাম! গাড়ী চলিল। সন্ধার অন্ধকার তথন

bo — बादव दबवा ?

(ववां विषय, -- ना।

আমার বাড়ীর কাছে অন্ত বাড়ীতে থাকবে,--- মনটাকে লইয়া নতশিরে সরিয়া পাড়বাব জন্ত कामात्र (मथवात्र ऋिंगा हृद्य। (ছ्ट्णियारप्रम्य १५४ थ्रीक्या मित्रर्छि। **每1000-9**

ত্ত্র সেই এক উত্তর—না।

ঠিক জবাব দিয়াছ রেবা। नात्री, এই তেজেই চুর্ক্ল অসহায় হহয়াও লক্ষাছাড়া বিশ্বে নিক্লেকে ভুমি খাড়া রাথিয়াছ!

खेयरधत्र वावका करिया डिजिनाम। डिजिया বাহিরে আদিলাম। গাড়ীতে উঠিব, এমন সময় দশ-এগাবো বছরের একটি মেয়ে ছটিয়া मिन, मिश्रा विनन,—आभनात जिन्हि।

कान कथा योगगाम ना, विगटक भाविणाय না— হাতটাও সরাইতে পারিলাম না। গ্রম

ভার পর কাপুরুষের মত পশাইয়া—ছি। "।বেশ নিষিড় হইয়া উঠিয়াছে। সেই আছা-द्रवादक विनाम,—आगात उथारैन कृषि काद्रत्र मर्गा म्लाष्ट्रे मिथिनाम, द्रावात कि मीथ महिमामम मृष्टि,—ब्राटककानीय मङ निःहांमरन रम विषया **बा**ह्य—बात बाबि —আমার বাড়ীতে না হঃ না গেলে, ভাহার সমুথ হটতে আমার ধিক্ত কুঞ্জিত

वीमोजीक्तमाहन गुर्थाभाषाय।

এ ধরণী

ध धत्रनी धूलांध्र मिलन, এরি পরে ভোমার অঙ্গুলি নিশিদিন, मतुष मांगाणि नीत्न, वंश्वात्र कात्नात्र শোণার বলের মত উজল আলোয় বরণের আঁকে আল্পনা, কত ছবি, কত ছালা, কতই কলনা এই धृणि त्रांट्य दूटक करत्र, यां किङ्ग श्रांतरित्र यात्र, यांश भारक भएएं, कार्रे नित्र वादत्र वारः, त्वत्र किदत्र किदत्र, তরুলভাফুল, চারিদিক খিনে

> তরুণ তুণের আন্তরণ, समा मुद्री जानदत्तत्र भगा स्वायत्त्रभ । :

माजित এ चांडिभांत्र भरत **हिस्त्र त्राहरू कार्ट्स होया कर्य**, कारमा (मग्र विममी, वमस भंदर পুষ্পা বৃষ্টি কবি ঢাকে, ০ ধ্লির পণ, ত্যুলোকের যতেক আলোক व्यारम यात्र, ८७८त्र ८५८थ ८को ५३ ली ८५।

মন্তাৰাসী আমবা সকলে क्षितिक त्र ८ शिमिक व्यागता, भरम भरम ষা কিছু হারায়ে যায় ভাই ভালবাসি, क्त्रमुद्र त्योयन, व्याद्र श्रांग्र श्रांगी, कुफिरनेत्र मधुमान करत, कुनारमान (थमां कवि खानरम खानरम ।

धवनीत धक्र शुल्मकानि নন্দন মন্দার সম নিয়ত বিকাশি অক্ত শেভার আর তন্ত্রান সৌরতে **८मिथा योग मिक कल्न, जरव होत्र करव** वमरस्व **का**रग्राक्टन नाहे दकान लून, ঘুচে 4েত সৰ মোহ তার.

এই যে থসিয়া পড়ে যায়, চোথ ভরে না দেখিতে ভকার মিলায়, যে সৌরভ পলাতক পরশের আগে ক্ষণ-প্রভা সম ঘেই পুল্পাদোভা ভাগে, ছি ড়ে যায় বে ফুলের ডোর তারি লাগি' সারা প্রাণ বাসনা-বিভোব।

এ ধরণী শিশুর মতন, निध्यस निध्यस इत्र क्विन नुखन, এ এখানি ভালবাসা তাই তার 'পরে, 'এ ভরুণ খ্রামলতা নহে চিরতরে, উষা, সন্ধ্যা, শুক্লা বিভাববী তুট দত্তে চলে যায় প্রাণ মন হরি।

. (रुथा मुठ्ठा दकरफ मास, মিশন মলিন হয় বিরহ ছায়ায় বড় বাসনার ধন, বন্ধন কঠিন, তাত্ৰ বুচে, আসে মুক্তি সবল স্বাধীন ञानत्म बारमना चरमान. চিরদিন অভিনব রহে তার স্বাদ।

श्री यहर्त अम्छ-छोतम. णभान कारवाक उस कारमना जनन, नध्न निरम्य-हीन वार्यनांक कृत, **८थम थारक हिन-वन्ती इरम्र**, চাহিতে দেখিতে ভুল হ'ত কত্বার। জনাহীন থৌবনেব অসীম আলমে।

> হায় অৰ্গ, গতি মুক্তি হীন, व्यमत कीवन-ভात्त व्यावक व्यक्षीन, পূর্বভাব পরিণামে নাই বৃদ্ধি-ক্ষয়, नाइ जाणा, नाइ भका, एक णाडिमन অচেতন সে অমরাবতী— জাগ্ৰত এচিত নাহি চাহে এক রতি! शिशियमा (मरी।

मगादन | हन।

बिट्याह्नमाम 'शेटकानाधाः व ८मानात्र यात्रा। ५ ब्रामां छन नाल भाजां भाषा य अने ह। का विक त्यारम এলিত। প্রকাশক, রায় এম, সি, সরকার বাহাত্ব १७ मण, ग्रांत्रिमन (ब्रांड. कनिकांछ।। मुना बाद्रा गाना। नव पिक पियाई ध वहेंथानित विटमयक चाटक। প্रথমতঃ এशनि গলের বই, ছেলেবের গল, আবার সে अस निश्रिप्राट्म छि एको एक्टन । स्मार्ननान छ श्रमणाण क्रेड छाड़े, क्रडळान व वयम पण यांच वशादा বৎসব ৷ এই অল ব্যসেই তাহাদের গল বলিবার কারদা আর ভঙ্গী ভাহারা এমনি আরম্ভ করিয়াছে ্য সেগুলি পাঁচ্যা আমর। ভাহাদের প্রতিভার পরিচয় পাইয়া মুদ্দ হইয়াছি। গলগুলি ু্যুম্নি সহজ ভঙ্গাতে হাল্কা ঝর্ঝরে ভাষায় লেখা তেম্পি गर्गादाय मध्या क्ष्म कक्रण विक्रित त्रम 3 a किस् 'रियार्थ बार्फ,- - किथा अन कम भर्फ नाई, वा कार्था वमाधिकाल घट नाहै। मत्त्र श्राप्त वह कुई वालक (मधरक त्र निम ययन "मर्जिन" शिक्र का का शि क्र তথন সে গল পড়িয়া সাহিত্য সম্পাদক মহাশ্য যে ामित्राहित्तन,—त्य वयस्म ठाङात्मत्र भक्ष खनिवात कथा, (गरु वत्ररम कोश्यो अमनछार्व भन्न खनाहरङह्छ द्य व्यत्नक भाका धारीरमध टडममि भारत ना। कथा। युन ठिका द्वां गरलात त्य व्यक्ति, तम व्यक्ति 'तमानात्र यंत्रगांत्र' (येण वकांत्र जांदक्। भज्ञकांत्र मध्या (कांबां छ একটি অনাবশুক লাইন বা একটা অনাবশুক শব্দ নাই। भटित मत्या क्लाथां भा-कृति এक है। व्यारमाक्र मत्र घंहा नार, मन्त्र्र व्यनाष्ट्रत, काटकर मक्टकर गद्यक्षि दरम अभिन्नो উठिनाट्य। पूर्व कार्रेट्सन त्यथा माठि शन वरे থানিতে সংগৃহীত হইয়াছে; সেগুলি সচিত্ৰ,—ছবি जीकिशाद्दन, वानिक निली कीयुक एकुमान नाम ७ कीयुक **ठां क्रम्म तात्र।** त्याथात अक्षेत्र नमूना बिट्ड ठाई—डाहा হইতে এই ছুটি ভাইরের প্রতিভার পরিচর পাওয়া

बाहेर्त। भाजनमान "ईड्रतंत्र जिन ছেলে" ग्रह्म निथि-তেছেन, "এক ছিল ইছর, এতটুকু ছোট্ট। বড় বড় कारनाशांत रमस्य रम कर्श कांभड, गर्ड स्थरक वांत्र रहेड পারত না। তার যথন বাজ্ঞা হবাব সময় হল, তথন তার धाति इत्हा इत त्य आमात यनि श्व (कात्रात्ना এक वीत बाष्ट्रा रम, छोरटल आंत्र खात्रि काउँदक छम्न कत्रि ना। कि आंक्ट्या, या भटन कत्रा, ठिक छाई। वाष्ट्रा हत्ना काटला ट्यांबा-कांग्री वाद्यत हाना। हेंद्रत क अवांक। छान। त्मरथ उात्र ठेकठेक् त्कारत कै। श्रीन थारम ना। छात्रभव यथन छोटक मा वटन छाकटन, उथन न्यांक जूल कूटि जिट्य छाटक आंत्रत कत्र का जाना ।" श्रीमा दलवा। এই লেখাটুকুর মধ্যে animal psychologyর যে সহজ ম্পান্ত কথা ফুটিয়াছে তাহা অপূর্বে। কোন প্রবীণ পাক। **ट्या**भरकत्र शास्त्र दाषात्र हेष्ट्रतत्र मनश्च अपन कृष्टि कि ना मत्मह। आत- এक छात्रशांत्र आंटल, "ट्लिलि वट्स,— "म कि मश्राणः। भूठिक टेंछ्त्र । यद्या हाडीत महन लफ्ट भारत कथरना।" (मानात अवना, ১१ शृक्षा) এই त्य विद्यायन प्रति 'भू ठाक' आंत्र '(कैटन।'--- अमन लागमह विध्ययम ध्वतीरमन भाका हाउ मित्रा कथनह वारित हरेल ना। व्यथह এ छ्रेडि विट्नाबन कि गर्स, আর কি লাগসই। এমান প্রচুব নমুনা তুলিয়া যায়। বহিখানির কভারে ছবি আছে— **ट्रिथाटना** পাহাড়েব পা বহিয়া বরণার সোনালি জল অঞ্জলধারে यात्रिया পডिডেट६—जात शाकाटजय नीटि में छ। इस धकि वामक भरनत्र जानत्म ८मई करन क्षान कति उट्छ। ছেলেটির আনন্দ চিত্র শিল্পী এ চিত্রে চমংকার ফুটাইয়া जूनिशांष्ट्रन । 'मानात यनगा' विष्णानिए जागारगांछ। এই সোনালি करनबरे यह हिलान हु । बाद - एक दन-মেরেরা তাহাতে গা ভাস, ইরা মাথা ডুবাহয়া প্রচুর व्यानम शहिट्य। त्म्यां, हिव, भारमञ्जा, होशां, भ्रव क्कि किया "भागात्र येत्रवा" भागात्र गेर , इहेशाएछ।

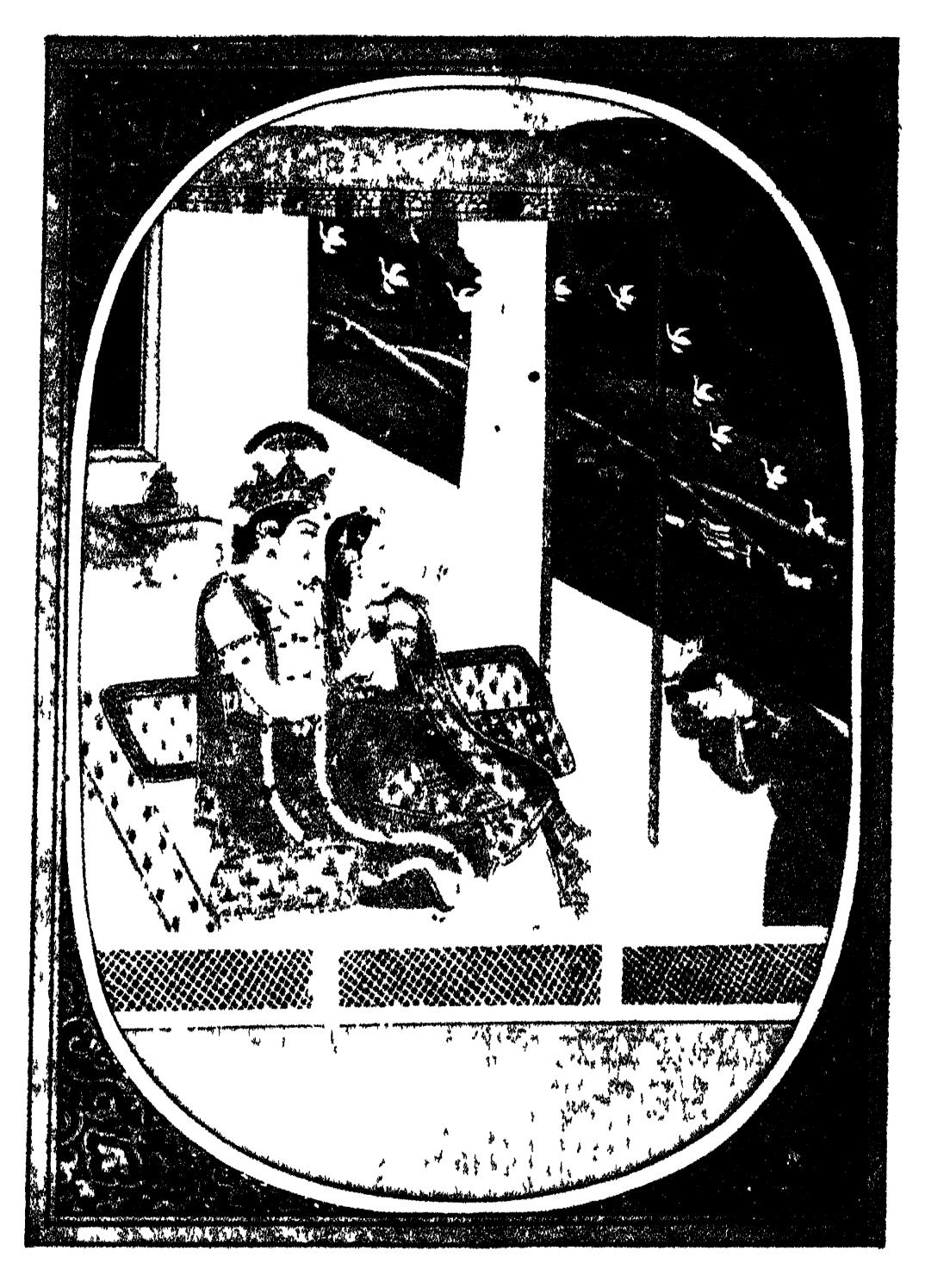
८गरि अकते। कथा मा विमित्स कथा कामण्यूर्ग भाकिया यात्र, ८गिष्ठि, এই यामक ८म्बक छ्षित्र अन्तित्र अप्रतिम **ट्यांटनलान ७ ट्यांडमलान कार्गाटनत रक्**, छाउडी সম্পাদক আযুক মণিকাল গঙ্গোপাধাংয়র ছই পুর। **८**नवी छ। ब डी व ञानी कारम टमाइनलाम छ ८मी छनला त्मत लेखन छिष्यम् हिष्यमञ्ज त्राक्, छ। ब्राम् रमवाय काशास्त्र ८एका सकल निवाशन ८ काक, मनीय नीदर्शन थाकृक.— कृषिका (जयरकत मत्क इंश्वें व्यामात्तत আন্তরিক প্রার্থনা।

नीगुक (अभाक्त को क्यों क রংমশাল। शिष्क हाक्ष्ठक जांग मण्याषिक । अकांभक गंग, मि, क्यांत्रिमन ८०। छ कलिकांच। मद्रकार এछ मन्ग काश्विक त्थात मापछ। माम न' । मतक। এथानि ८६८मध्यदमस्य जन्म शृक्षात्र 'वार्थिकी' উপহাব-গ্রন্থ। স্কান্মের একুনা; পল আন কবিতা ইকাতে স্পৃহীত क्ट्रमारक : क्वित मः ना अठून । १ क्ट्रिस्नान, जनार्या লিখিয়াছেন,বাংলা সাহিত্যে ভাষাদের খ্যাতি অপরিদীন। त्रव (मथा छाल एक कार्टिय (चला आएक - मिछिल यांटक नग्न 'त्रभगातम्न' थाग्य आत्मा खामारुगात्हन कवि মত্যেক্সনাথ। ধবিভাটিতে সহাহ তিনি ধরেক ততের प्याका कृष्टीक्शात्कन। िकि टिकें निविद्यात्कन,-"आंटमांग्र ज्याता। जास्वांत्र कारे वित्र भाव अक्रकाञ्चा" वाक्रवानिक मध्यक अक क्यांत्र विगट भारत हर्ष विवाद इंग-- "वारमांत्र ज्यादना।" मर्जाञ्चनारथा 'तरमणान,' 'भिष्ट्रिय वर्गभित्राय'— स्रोपा कुछ," समिलात्मत कविङा অবনীন্দ্রনাথের 'রাজের কুটুম' আর 'চড়ের চর্কি,' দৌরীক্রমোহনের 'বোকা তাঁকি,' স্ববেশচন্ত্রের '+তের আঁচিড,' 'বেজির वार्शक्रो,' (स्थमक्रुक्शद्वत 'क्रिमारमञ পাত্ৰ श्रांग,' 'ডाकरश्यामां,' 'माख ছেলে' ও বাঘের মানীর गमायाजा,' कित्रणभटन्य 'नाग्नकांछा ८मशाङ,' १३ 'क्रममा-त्नयुत्र दशःभः भिष्ठ-दक्ष्यक स्माधननाम-त्माछन्नारमय 'वामभारी आंक्ष्रिं '७ 'वामरत्रत वसू,' स्क्यांत अरत्य

'काखित्मत्र फिक्टमनात्री,' सम्बद्ध टमदनत्र 'कड़ाहेखांखां', नद्मक्त त्मद्वत 'कृत्मत यासना,' 'कांनि चात्र सून'--সমস্ত রচনাগুলিই উপভোগা, চমৎকার। তার উপর हरि, शर्शन-मनार्थत्र 'भूष्कांत्र क्ल,' व्यवनीतानार्थत যতীলে কুমারের 'ল্যোৎসা-রাজে,' • '८्एट्याथका, ग्रं नक्त नारमन 'वान,' 'श्रु निनिविश्योत शाष्ट्र, 'हि हकैं। इनी (क'— तटक ब्रटां वश्यभारमञ्ज्ञ थालि भुक्ते। ब्रहीन क्रिक्शां कुलिशाटक। श विरुषानि वांख्या (भरण नवांत्र-दमता · इटेशाए७—वाल्ला माहिएला अभूति मामश्री दहेशाटछ। गज कविश धरित এই व्यनिमाञ्चल मरशहि व्यक्ति গ্যালাবির মতহ একটা দর্শনীয় বস্ত হইয়াছে -- ইহার गत्नावम देविहित्वा, इंशांत मर्लाकीन त्मीन्यर्गा जवः উহাব আভনাতে এ কথা আমরা জোর করিয়া विलिट भाषि। मन्नामक-धून्नत्व मासु क्हे। मन्न्र गफन क्वेंग्राटक। डीकांत्रा ८एटनटमटमटमटन शुक्कांत्र कानम এই, वीमकी कलशास्त्र भ्य लाख खन बाज्दिया আটথানি পাতা-জোড়া'। শল আর কবিতাগুলি বাঁচারা—ইলিবান বাবসা করিয়াছেন, এজগু তাঁহাদিগকে আন্তরিক ধনাবাদ নিতেভি। বহিখানি যেকাপ ভাহার कुलनाम এই प्रभावा टार निम् देशा युवा त्या स्वाप्त इन्द्राहरू

> छिभनिम्भानली। अथम ७ विजीम मछ। नीएक श्रामन हटछोलासास मन्यापिक। পणिक नीयुक मरान्यनाथ मिकाछभाषा नकुक मरम्भिक। ১२ नः ২বা চকী বাগান শাল্পকাশ কাগালয় হইতে প্রকাশিত। श्वां क्यां प्रमान भूत भर्म के द्वारम म स्वा अखि ५७ এक छ।का। व्यथम थए७ छम, रकन, कहे, व्यथ्न, देक्यमा, त्रका, द्रकारिका, आवांग, कावांक ७ द्रकाविछा। वर कि छोग चर७ लाभानभूत्रं जाभीय, लाभालाख त-ाशनीय (कोवोडको अमुडिनमू, आश्वा, कामिका, নৰ্বাদার ও অনুজনাদ—মূল জোক ও ডাছার ভাষা টাকা शक्षिण वक्षां योषमह मः शृही छ इहेबार । प्रहेबानि अर्छन्ड व्याकात रहा है, शरक है आबा यात्र। बार्स थएल ममश ১১৪थानि छेन्निस् ध्यकानिक इंडेटन।

শ্রীসভারত শর্মা।





88শ বর্ষ]

चार्यशंग्रन, ১७२१

চিম সংখ্যা

কবিকঙ্কণ মুকুন্দরামের ধর্মমত

व्यागारमञ्ज त्मरभंत्र व्याठीन कविरमञ्ज कारना छ ९ शिखत्र विवत्रत्य निधिन्नारह्मन— जङ वम् अदयन जारमंत्र की वनहत्रिक निश्चित्रा हित्रित्रा मारमन व्यटम वाबिएकन ना , कवित्रां अ निरम्भात्र काञ्च । हिन्दिका विभिन्न काहिबा । **চারত লিখিয়া রাখিতেন না। কেবল শ্বর্**চিত का वाष्ठिनात्र क्षारक क्षारक निष्यत्र निष्यत . श्रुका देकसू कूमूम-क्षास्ट्रन। পরিচয় কবিরা ছড়াইয়া রাখিয়া যাইভেন। বন্দদেশের প্রাচীন সাহিত্যমালার মধ্যে क्विक्क मुक्तवारम् हिंधीमक कावा विस्थ একটি मुनामान तकः, कविकद्दन छात कार्या ভালো রকমই রাথিয়া গিয়াছেন। কিন্তু মহামন্ত্রজাপ নিত্য নিত্য ॥ পরিচর দ্যান নাই; আভ্যন্তর প্রমাণ হইতে আজ্ঞা দিলেন রচিতে সঙ্গীত। **छे**शाय नाहे।

গইবারই প্রমৃত্তি হয়। কবিক্ষণও গ্রন্থ- স্বপ্নাদেশে কাব্যরচনা প্রচার দরা

কবির শিশ্ব-দেশে

कार्यात्र मरशा मार्थ मार्थ छिन्छात्र छ जाअत्र भूथि जाए।, देनरवता भागूक भाषा, कृषा ভग्न পत्रिद्धारम निजा बाहे महे थारम, **5 खी (क्या किटनन जगरन ॥** रुटि नगा शब मनी, जनि कन्दम दनि नाना इत्या नित्यन कविष्। আত্মপরিচয় অন্ত কবিদের চেয়ে বেশ একটু হেইমন্ত্র দিল দীক্ষা সেই মন্ত্র করি শিক্ষা कविकद्मन जीत मन्यमं जनदक्ष कारना न्नाहे (त्व हजी महामाया निर्णन हत्रनहास), অমুসন্ধান করিয়া অমুমান করা ছাড়া আরে চঞীর আদেশ পাই শিলাই বাহিয়া বাই, আড়রার হৈছ উপনীত। **Бजीमक्षरणत कविरक भाक्त बिलाबा धित्रवा** (वक्रवामी मश्करण, ७ गुर्का)

প্রাচীন কবিদের একটা প্রথামাত্র ছিল। অভরা-চরণে প্রণাম লক্ষ লক্ষ। व्यापिकवि वान्यीकि (पर्वारपर्भ त्रामात्रभ त्रामा व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त क्षा कार्य-महना-वाका ॥ (छन, यथा—क्रकात्राम नारमत त्राप्त-मक्रम, विकश्करत्यंत्र भगाभूत्रांग,त्रांमध्यमारमत्र कानिका-मक्ष्ण, ভারতচল্রের অসদানক্ষ্ण, রাজা জয়-नात्रायम श्वासारमत ठखीममन कारा, कुछि-বাসের রামায়ণ, মালাধর বস্থর ভাগবভ, সঞ্জ রচিত মহাভারত প্রভৃতি কাব্য স্বপ্নাদেশে রচিত। এইসব দেখিয়া দানেশবাবু লিখিয়াছেন —"যে-সে পুস্তক লিখিলেই ভাহা সাধারণ कर्षक गृशेष करेष मा।.... এই बक्र आहीन वनीय रमधकशालद कारनकरकहे প্রত্যাদেশের छान कत्रिया क वा निधिष्ठ इहेज। स्वास्त्र कारात्रहमात्र हाल नित्राट्टम, এकथा (यावना করা সাহিত্যের ব্যবসাদারী ছিল।"—বঙ্গভাষা ও সাহিত্য।

श दात्र अधु व्यायात्मत त्मरणत क विरमत्र हे ছিল তা নয়, এ রোগ বিশ্ববাদী —

That a god inspired his soul expresses the ordinary belief of early historical times.—Encyclopaedia Britannica.

ক্ৰিক্ষণ চণ্ডীর চরণে ভক্তি ও নতি भार्य मार्य क्रिशंट्सन त्रथा यात्र— উমাপদে হিত-চিত রচিল নৌতুন গীত ठक्व विकास

শুস্পীর চরণে মজুক নিজ চিত।

करतन; आपि देश्रतक कवि किए मन पियां- किन्न हु हु छो। इत्र अधि इत्र किन्न हु हु वा हु छोत्र (मर्ग गाम वाँरधन; वांश्नांत्र७ व्यत्नक कवि . व्यारम्भ भावेत्राहे 'स्य कविकद्मन छात्र कावा দেবাদেশে কাব্য রচনা করিয়াছিলেন ব্লিয়া- রচনায় প্রবৃত্ত হন নাই, তার প্রমাণ্ড তিনি রাথিয়া গিয়াছেন। তিনি বারবার বলিয়া-(इन--

त्राका देकन मकन श्रकारन। (8२ शृंधा)

দিলেন অনুমতি ব্রাহ্মণ ভূপতি, ত্রীকবিকঙ্গপে গান। (১৪০ পৃষ্ঠা)

চণ্ডীপদ ভাবি চিত বিচল মুকুল গীত, त्राक्षा त्रधूनात्यत्र **(को**जूटक । (क्ष्म्पृष्ठा)

দ্রাহ্মণ রাজার কুতুহলী। (২০ পৃষ্ঠা) वाञ्चन दाका द्रघुनारभद्र जारमरम कविक्षन কাব্য রচনায় প্রবৃত্ত হন- এইটিই আসল কথা; চণ্ডীর আদেশ বা ভক্তি রখুনাথের আদেশের ष्यञ्ज्ञ भी भीन काद्रण रहेशा छेठिशाहिल।

काव निष्मत शामवामी ७ शूर्वश्रक्रवरमञ् পরিচয় দিবার প্রসঙ্গে তাঁদের ধর্মবিখাসের একটু পরিচর দিয়াছেন— দামুন্তার লোক যভ দিবের চরণে রভ, त्मरे भूती हत्तव धत्री।

थ्य थ्य क्लिकाटन রত্বান্থ নধের কুলে অবভার করিলা শঙ্কর। यति छ्कानिका नाम शामुका कश्रिमा याम ভীর্ঘ কৈলা সেই লে নগর॥

গলা সম অনিৰ্দ্বল ভোষার চয়প জল (১) চণ্ডীমললের একেবালে প্রথম স্কে-म्बर्ध ज शूर्यात्र करण कवि इरे भिश्वकारण, कवि खार्थना कवित्रां एकन

गर्दिचंत्र-ष्यसूकांक यहां मिळा कश्रांध এক ভাবে পুজিল শহর।

াশবরাম বংশধর, কুপা কর মহেশ্বর, 'গোবিক্ষ-খ্রাদার্থিকা- বিগলিত-মকরক্ষ-

কিন্ত আবার পাই—

কবিত্ব মাগিয়া বর, মন্ত্র জাপি দশাক্ষর, তুমি হরি গুণের আশ্রয়। মীনমাংস ছাড়ি বছকাল।

কবির পিতামহ একবার "একভাবে পুজিল শক্ষ্ম" আবায় "একভাবে ফেবিল গোপাল।" তিনি আগে বোধহয় মীনমাংসভোজী रेलन हिरमन, भरत्र देनस्थन धर्म छार्थ कतिया 'बीनगाःम ছाफि वहकान' शाभारमञ्ज नमाकत মন্ত্ৰ গোপীজনবদ্ধভার খাহা লগ করিতে श्रवृष्ठ रून। शिकामदर्व करे द्रशाशान-दगवाब कथा कवि निर्जुत कार्या जिन-जिनवात উष्टिश कविषाद्धन।

ুইছা হুইতে অনুমান হয় ক্বির পিতামহ (भव-वद्रात देवक्कार्यरवत्र क्षकारव देवक्व धर्म व्यवनथन कत्रिया शांकिएनम। धार्यः देवक्य वश्यम् ह्रिल विषयं कविष देवकवरे हित्यम । ध भवरम् क्विक्रप्रम हार्थीमञ्ज हरेरक वक পোৰক আমাৰ পাওয়া বায় ।—

शांन देकच्च भिष्ठकांन देहद्रक। शांद्रक्ष माम्बाह्यद्रम् श्रद्श्यन्यमाना त्या कृष्टिया विनाम कामात्र महीर्छ॥ शहरव कामात्र चारम भारत सामिन-छक्छि बारम চক্ৰবৰ্তী শ্ৰীকৰিকমণ।

(> शृंका, यमवानी नः)

এই গোবিন্য-ভকতি তিনি আয়ো চুই वाद्यय छणिकांत्र धार्थना कविद्याद्यन -मण शूर्व (शोर्व विनम्नान। . जान कविकक्ष शास्त्र। (१ शृक्षे) हैनव शम हहेरछ कविएक वरमाञ्चल्य कि कव ट्लामांत्र चार्त्र, शाविम-छक्छि मार्श

(२) महाराव-वनानात्र कवि महाराव्यक देकग्रिफ वश्मकाक महामिक्ष कशकाथ विषयाटहन—"निशूह विषय-नाशायन।" **এ**वश-এক ভাবে সেবিল গোপাল। , তুমি হরি যোগরাজে এ ভিন ভূবনে পুজে,

> মহাদেবকে ভিনি नात्रावण ७ र्जि क्राप्त (क्रिएक्ट्रिन, ध्वरः मिर्चनवान यात्राणगीरकछ विकृत्माक देवकु विजया ब्रुयान कतिरक्रहन-

कृषि रुवि श्रावाणि, भूग-वाद्या यात्राणेशी बाहाटक देवकुर्क कावकातः (२ शृक्षा)

- (৩) ডিহিলার মামুদ পরিণ "ব্রাজ্ঞ্ন-देवस्थरवत्र रुणा जाति" विणया जाणातात्रभीजिक कवि ब्यञ्ज्यात्र ७ इ:थ कवित्राट्स्स । (७ शृंश)
- (8) मदम्बं मूख (छम्टनम यहारमद्वत्र व्यमारमं निवास्त्र ननी "हांशरमञ मुख मदक कतिम (बाएन।" किन्न कवि (मिथियान—^ककृद्क्षत्र कुनाव सक नाहेन बीयम।" (५७ शृंधी)
- (c) नीणायुत्र यथन व्यक्तिमश्च स्टेश (सर्वाम स्टेप्ड मर्ख व्यक्तीर्व स्टेबांस शूर्व

"cbोनिटक वास्व-८मणा, गणाटक कुलगीमाणा।" এবং নালাম্বরের পদ্ধী ছায়া স্বামীর সহ-

देवसायी वना इङ्ग्राष्ट्र। (यथान (यथान ৰতবার যে-কেউ চণ্ডার স্তব করিয়াছে, তার मर्था हे श्रीमाहारचात्र ८ हर क्रिक क्षेट्रे श्रीवन ও প্রধান হইরা-উঠিয়াছে; চণ্ডীর গৌরব (य "नाना व्यवভादा माठा विकृपशांत्रनी।" বিষ্ণু বা কৃষ্ণকে সাহায্য করিতে পারাতেই (यम छ छोत्र छत्रम महिमा প্राकाम शाहिमा छ। **एखी "वणारे-शृक्षिण वलामादित्र जिनी"** (২৫৫ ও ১৬৯ পৃষ্ঠা)। "নন্দগোপস্তা হয়ে व्राधित (शक्त ।"

"यभागा-नामनी कत्रा यम्ना यामनी। यक्रत्याया यूनकता यळविनाभिनी॥ (२०४)

(१) हा विश्व वर्षाटक काँ हुलि निर्मार्थ নিযুক্ত করিলে বিশ্বকর্মা কাঁচুলিতে ছবি কাছে বর্ণনা করিতেছে— निषिद्यान छश्चीत्र समयश्विष्ठा ऋत्भन्न कीर्छ-কাহিনী অবল্ঘন করিয়া নহে; সেসব ছবি हरेण विकृत मणावजारतत कार्याकणाभ এवः व्यव्याधा मथुता मात्रा नाहि धरत जात हात्रा, विट्यं किया क्रयः व्यवভाद्यं काहिनी।

- (৮) नगत्र পত्তनেत अञ्च न्यां कांगरक कृ চণ্ডীর ন্তব করিতে গিয়া বলিতেছে— "আরাধনে হরি হর তুমি ভিনজন।" (৮০ পৃষ্ঠা) চণ্ডীর কুপান্তাজন কালকেতু চণ্ডীকে ভূলিয়া শারাধনার যোগ্য তিনটি মাত্র দেবতার मर्या केंद्रि कडाश्ना !
- (৯) छीत मछीन भगादक पित्रा कवि **५७ दिन जनार्शिट्स**—

সেই প্রভু গভি স্বাকার।

(60 对例)

मद्रावत ममद्र वहां इति शास्त्र विधान्।" . (>०) हसीर क्रमांटिस मूस्त सम्बन (৪২ পৃষ্ঠা) নগর পত্ন হটয়াছে। কিছ সেথানে দেখা (७) हां छोटक वांत्रभात नांत्राभ्री ७ यात्र—"माँवि मात्रि विकृत क्रिन।" এवং— দিয়া হীরা নীলাখণ্ড বসিতে বিষ্ণুর পিণ্ড, অনল-বিজ্ঞী-সমাকুল।

এবং —

দিয়া হীরা নীলাখণ্ড নিরমিল দোলপিণ্ড कमघ-कानन-मन्निधान। (१२ शृष्टी) ্এই গুজবাটপুরী—"রূপে জিনে দ্বারাবতী" শ্রীকুষ্ণেব রাজধানী, এবং "অযোধ্যা সমান পুবা" বিষ্ণুর অপর অবতার শ্রীরামচন্দ্রের রাজধানী (৮০ পৃষ্ঠা)। গুজরাটের ক্ষত্রিয় বৈশ্র "কৃষ্ণ দেবে অমুক্ষণ।" তা ছাড়াও ज्यानकं "देवस्थव विमाण खखताएँ" यात्रा "मना লয় কৃষ্ণনাম" (৮৭)। কলিজরাজের কোটাল গুজরাট দেখিয়া আসিয়া রাজার

দেখিলাম গুজরাট, প্রতি বাড়ী গীতনাট, বেন অভিনব মারাবভী। বেন দেখি ইচ্ছের বস্তি 👢 (७) পृष्ठी) व्यक्ति वाफ़ी त्मवन्द्रम, देवस्वरवंत्र कालका, হুই সন্ধা হরিসন্ধীর্তন। (৯৪)

> (১১) क निषद्भारकत गरक , युरक्त समग्र "र्हात्र "प्रखन्नरण बीन ध्वरफ मजरम" (৯৭) ध्यर छ्थीत कुशान कागटक्कु क्रिन्नत्रां क्र কারাগার হইতে মুক্তি পাইয়া ও স্বাধীন রাজা रहेश मिनिष्ठ मटन--

विकास विकारण बीत छत्मन भूतान। (১৪) ताका त्रपूनात्थत भतिहत्र-क्षामरणं क्ररकत्रं करत्रन शूका रुत्रा भावधान॥ (১১०) कविकक्षन विलिट्डिट्डन--

(১২) धनপতি সদাগরের সঙ্গে পাররা আরড়া উচিত ভূমি, পুরুষে পুরুষে স্থামী, উড়াইতে যে কজন বন্ধু গিয়াছিল তাদের প্রায় • ज्ञ न न न । ---

मुकुन्न भाषय यनभाना नाताग्रव । রাম ক্রফ জগরাথ ভরত লক্ষণ॥ কংশারি গোপাল হরি ভাষর অঞ্চিত। र्शिष्त्र समाधिम कूल-भूरवाहिए॥ मारमामन गमाभन ऋवल ऋगाम। হরিহর পীতাম্বর আর শিববাম। नमहाम भन्नमानन विलाम भैवजन्म। বাহ্নের কামদের আর সনাতন॥ मथूरत्रम ख्रीरकम कीशिक खीराम। श्वरुषाख्य जागा। जात श्राम रतिमान॥" অনন্ত অচ্যত আহল আর অভিরাম। চক্রপাণি চতুত্র কাল্যা ভূগুবাম॥ মুরারি দৈত্যারি শ্রীগোবিন্দ ভবানন্দ। পাররা উড়াতে হৈল সভার আনন্দ।।(১১৫) (> ७ ७कटक वन्हीं क विद्या वाश्य ७८क व কাছে ভত্তান লাভ করিয়া বলিভেছে— "देवस्थव क्रमात्र मक्ष निस्टाद्वत्र वीक्ष" (১२१)।

वृत्सायन रेपक्क द्धान, काणिनीरक साम मान, জন্ম মোর কল্পতক্রন্তে। वृक्षांवरन ठान्त्रम्थ (मधिम्रा भव्रम ख्थ, चाछिगाम चानम मगरण॥ গোপের বালক সজে ছিলাম পর্ম রজে नित्रविध दम्बि हानामूथ। वृग्गायरम यांग कवि निवयि एकि इति,

রাজা বিক্রেমকেশরী জাতিমার শুকের পরিচয়

ঞানিতে চাহিলে শুক বলিতেছে—

· (गवरन शोभांग कारमध्र । (১৪:)

- (১৫) केवि आकाम मत्यत शतिवर्ध সংস্কৃত আভিধানিক শব্দ ব্যবহার করিয়াছেন বিষ্ণুপদ; এবং আকাশে চণ্ডীর আবিভাব ্তিনি দেখিতেছেন—"আজি বিষ্ণুপদতলে फेरिका करानी।" हजीरक विकुट्टन स्राभन করিয়া চণ্ডীমঙ্গল-রচয়িতা কবি আপনার ইপ্তদেবতার প্রাথায় প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন মনে रुत्र। এইটিই কবির বৈষ্ণবজের চরম আমাণ
 - (>৬) धनभिक मनागदित পিভূজাজের সভার হরিবংশ ও রামায়ণ পাঠ হইয়াছিল। (>96->99)

বলিয়া আমার বিশাস। (১৪৯)

(১৭ চণ্ডীর বরপুত্র শ্রীমন্তের জন্ম रहेटन "प्रयोग किन्नत्रो गात्र कृत्यन চবিত" (२5२)। नौनावछी मधी नश्नात मणत्रीत পুত্ৰজন্মহে চু —

"তাণ থতিবার তরে মধুর মধুর স্বরে ভাগৰতের গান গুণগাধা।" (২১৩) এবং--

"श्वामी व्यागिद्यम च्दत्र कवित्रा कामना। প্রতিদিন ভাগবত ওনেন গইনা। (২১৩) বালক জীমন্ত—

শিশুগণ সঙ্গে করে ভাগবত থেলা ৷(২১২) क्रुश्वनौना अञ्चल मिल करत्र (थना।(२)७)

(>৮) बीमस मनागत्र कशशांचाकत पर्यन कतिएक भाग्रेशिया कवि विष्यासम विश्वम वर्गना कतिशाद्यन, ভाহাতে कविन कथा विधि शिक्षा विका छ्य । (১२৮) क्षत्रशायात्र श्रीत्रहत्र शाख्या यात्र । (२०८)

(७৯) डीमस उक्रामीबारक्य भविष्य निर्फ शिया विगिष्टि — किश्वि (भवाव (महे हर्ष कि काक्न !! (१०५) পবিজ নির্দাল হেন গলাজল, मनाहे कु**रा (१३**1न। (२८६) विकारकभन्नी त्राका किन्न छेिङांगिक वान्ति, दश्हे र्यंग गाहि करन राष्ट्रामान शूक्ता। এবং তিনি শৈব ছিলেন, তার প্রমাণ আছে। সেই'নর কিবা কানে কুফের ভজন।

- निश्हरमञ्ज काठीगरक विगटण्डम কোটাল, তঃথ পাই নিজ কর্মানেরে। किनिया हे सियान ना मिरिया ना दायन, कांशाद्य ना त्राथिन् अखाद्य ॥ (२६२)
- (8>) यमारन निमस **कार्वाम्य** चक्रताथ कविराज्य — "स्ट जुनमीत माना।" (१७५)
- (২২) সিংহলেশ্বর চন্ত্রীর শুভির সময় यिनार्क्टाइन---''बरशक्तवाहन-महादी।" (२१८)
- (২৩) এমস্ত পিতাকে সিংহলরাজের कांबाशास्त्र मिथिएक मा भारेबा विणाभ कविया विनटक्टक् —

काश्वात्र कारे, बाउँ हम एक किया मिश्हम । थत ८० देवसाय-८यण, हनर जानन ८४ण, ख्यिकां कन्न **भएवान मचना।** (२१७)

(२८) धीमस पंखन्नवाफ़ी हाफ़िन्ना (मर्प्प ফিরিবার সভয় করিলে তার জী স্থালা काम चामीटक निटकत शिकागदा त्राधिवात बक्र नार्नावश धारणांखन त्रशाहरकिन; कात्र मर्था अकि विस्मय व्यामाञ्चन अहे-সানন্দ হইয়া গাব ফ্রন্ফের পিরীত। (২৮৬) (২৫) শৈৰ ধনপতি সদাগন চণ্ডীকে পুজনীয় দেবতা বলিয়া স্বীকার করিয়া গুৰ निहरण कविरक चिन्रर कर्मन

সিংহলরাজের কাছে যে জন তোমার নাহি করিল সেবন। কলিজরাজও চণ্ডার তব করিবার সমূর

(२०) कत्र हो बाक्ष नीत्र (वन्धात्रिनी हां हो । (२५) हां चूल नाटक चटर्न कहेंग्रा यादेवात ८५ होत्र नाना भाख উপদেশ मित्रा খুলনার পৃথিবীর প্রতি মমভা শিথিল করিতেছেন; তথন তিনি থুলনাকে "গভেজমোকণ উপাধ্যান" এবং অঞামিলের উপাধ্যান শুনাইতে শুনাইতে ৰলিভেছেন— र्दिनाम र्दिक्षां कनुवनामिनी।

> ुष्णका करहन, बिरत्न छन हे जिहान। ছরিনামের মহিমা কহিল ক্রন্তিবাস॥

সর্বভৌর্থন্ন নম ক্রফস্কার্ডন। (১০৭) (२१) श्रष्ट नमाश्चित्र चार्ला कविक्षण প্রার্থনা করিভেছেন-

হরি হরি বলহ সকল বজুজন। यहरन नहेश कर देवकूर अभन॥ (७५०) श्रद्ध मनाश्र कविया कविकस्त विकास (要到----

नर्यत्नाक रित्र यम रूप भागीनाछ। नमारा रहेन এই जास्त्रात तीय ॥ (७५७) চত্তীমলল কাব্যে হরিকথার এত ছড়া-मधी मिनि गांव गीठ, मथा मिनि गांव गीठ, इष्टि मिरे कारने छेन्द्र देवस्व खाडाव व्यथना देनकन त्यांकारम्ब म्टनान्यरनन क्ष र ७ वां व महावनां व ८ ठ ८ व व व व विद्या ধর্মতের জন্তই হওয়া বেশী সম্ভব বলিয়া वायात्र बस्यान।

कांक बरकाराशायमंत्र ।

বাড়ীর নিস্তব্ধ প্রাঙ্গণে ডাক্তারের মন্তপুত জল-পাত্রোথিত গুরুগুরু গর্জন-নাদ त्यांना निवाहिन; छनियांमाञ श्राप्त ज्थनहे, অক্টেড ডাক্তানের সমুধে আসিরা উপস্থিত रहेग। पार्केक रूक्युकि रहेश माजारेश चारह,—धमन ममत्र जाकात्र, चर्छेषुरक (मथारेन-कोन्छे खनाक जैक्छा भागस्त्र উপর হাত-পা ছড়াইয়া মৃতবৎ পড়িয়া षाट्न। श्राप्त षाक्रेटछत्र मदन इहेन वृत्यिया (कह कोन्टेक खश्रजाद हेंडा। করিয়াছে,—অক্টেড কিরংকণের জন্ম ভয়-ক্ষীণ খাসপ্রাখাসে একবার উঠিতেছে আবার ভূতিকার উপর দিয়া একটা অস্পষ্ট কাৰ্চ্চার পড়িতেছে। ডাক্তার বলিলেন:---

"এই দেখ, ভোমার ছ্য়বেশ প্রায় প্রস্তুত বাগ্রেন:— र्ष्याह । এ ছন্নবেশের বোগাড় করা বড় "তুমি যদি মন হিন্ন না করে থাক, कान्ड, क्लिएइड, टेनमे कावकडरन बायुड यादन ना । र्ष खेशरमम कामगाम लाम वाम वारावां। तम यारे रहाक, रकामाम र्यारक

क्ष जाम्हर्या जवश्रा त्यांच्या जाकित्ज्य ৰে ৰাড়ীতে অক্টেন্ত বাস করিত সেই চিন্ত-এতটা বিক্ষুক হইয়াছিল যে সে কোন উত্তর করিল না। লে ক্রমাগত কৌণ্টকে सिविटिं गामिन, सिविन, कोर्न्डेन मसक পশ্চাতে অল হেলিয়া একটা বালিলের উপর গ্রন্থ। পথিক মঠের ভিতর সমাধিসালের উशद्य, त्य मक्न वीत्रश्रक्तवत्र व्यक्तिमूर्डि स्था यात्र তाहाट पाएक नीटि थामारे-काब-कन्ना এक छ। भार्ट्सलात्र वाणिम बाटक--- এ यम ঠিক সেই রকম। এই সুন্দর ও মহান মূর্জির অভ্যন্তরম্ব আত্মাকে অক্টেড বেদধন कतिए याहेरलएक,—এই চিস্তাম जाब मरन একটু অমুতাপ উপস্থিত হইল।

खिक रहेमा विश्व बात अवर्षे बार्छक अर्डेस हिसा करिएहिन, किस मत्नारकाश विश्रा प्रिक्षियात्र शत्र, शक्या कतिम, छाउनात्र मत्न कतिरमन, दुवि व्यक्ति अथरना क्षे निजिक युवरकत वक्षरम आत्र-मनरूखवा हेल्खक कतिरक्षर। छाकारतत द्वारित ক্রিস চলিয়া গেল—ডাক্তার অক্টেডকে

णक । अ क्ष्मदर्भ क्षाकारन भाव भावता कारण कामि क्षेत्रकेटक वागिरव मिटल भाविता यात्र ना। किन द्वामिश्व यथन दण्डतानात जामात्र टोपक मण्डि दग्देश न्यान्ध्या करत् वाबाखात छेनात छेट्रीहरू, उथन ात्र बाज (यमन जिनि এम्बिएनन एकमनि जावात किर्य णारवात मधावनामा भाषा मध्य द्यामित्र करण गारवन ; किन्न जान करत रज्द राम् िख्य दिवा कर्ण भारत नि। तम ज तकम सूर्याम काम क्याना भारता भारता

क बट्ठ'। टकोटल्डेम् आट्याकित्र मुना कार्नुएनडे- चामात्र ८वण ध्वकर्ते काल कट्याहरू, ध्वकरी शिकांत दहरत त्रक कम नम् ।"

চেষ্টা করিনি। আমি ডোমার কাচে এ কথা হাত দিয়ে ভোমার অন্তরাত্মাকে কিজাসা কর। বলবান।"

অক্টেড ওধু এই উত্তৰ দিলেন :--—"আমি প্রস্তুত সাচি।"

উঠিলেন :-

"८वल वावा ८वल। ८काम वाधार्व्य **(मर्थ कामि उष्टे इलाम। ध क्रांट क्रुडि मात** किनिम थार ; जार्वश साम रेक्शमिकि। कृषि यि श्रियों नां ३७ त्म निण्डम् व्यायात (मार्थ नय । खक्रम्य उच्चात्मात्रम् । ज्ञान्।-मणीज-पृथविक हेसालाक हट क्रिय क সব দেখছ:—ভোমার মৃত ককাল পবিত্যাগ कत्रांत्र मभव जायां व काटन ८ए महायञ्च উচ্চারণ করেছিলে, তা কি আাণ বিশ্বত स्टाइ १ ना, त्मरे यञ्ज, त्मरं-मन यूजा उन्हो আমার বেশ মনে আছে। ভবে এখন কার্যা ष्यांत्रख ट्रांक! अहेरांत्र ष्यांमारमंत्र कहारह ध्यक व्यथ्य द्राज्ञ। हिस्टब-माक्टबरथन भिर्म किनी एवं में में कि राम कार्य कि कार्य कि नी । अप्रत्यंत्र जाकिनी-मञ्ज शाक्र व ना। कायात मधुर्थ धरं कात्राय-एकनात्राय कृति

সে রকম পরীক্ষা যুরোপে আমি কথনো বোসো। আমার শক্তিতে সম্পূর্ণ বিশ্বাস ष्ट्रांशन करत बाजाममर्थन कत्र। (तम ! লুকোতে চাইনে যে এই আত্মার বিনিময় আমার চোথের উপব চোথ রাখো, আ্মার वााभारत अकट्टे विश्रम बार्टि। ट्यामात वृत्क ्राटि हाड ग्रांथ। अथिन मस्त्रत कांच আরম্ভ হরেছে। আকাশ ও কালোর খারণা कामात रोजन-भाषात या भर-८**६८**घ वर मुख २८६६, अ३१ छान ७ **वाष्ट्रहरू व**र्भनेडि मान ७। भावाव क्य कि कृषि मुक कारम इल्ड, हार्थिव भाका न्या अरम्ह , मारम-ভোমার জীবনকে সঙ্কটাপয় করতে রাজি পেশী মন্তিম্বেব কথা আর শুনচে না,— व्यक्ति भारत व्यक्ति ८ अम मुक्तिने मन भिष्य हरत्र भारत । ধে-সকল স্কুল বন্ধনে আত্মা শরীরের সহিত धारक (मञ्जन रक्तरमय श्रष्टि छिन्न रुप्तरह। দর্শ হাজার বুৎসর পুরের ব্রহ্মা স্বর্ণ-অত্তের ভাকার তাঁর খামলনৰ শুদ্ধ ছাং হাত মধ্যে অথ দেখুছিলেন, দেই একা এখন খুব তাড়া গ্রাড় ঘদাদাদ কবিয়া বলিয়া আর বহির্জগৎ হথে পৃথক নন। বাজের ঘারা তাঁকে পার্গাক্ত কবা যাক্, রশার ছার। তাঁকে স্নান করিয়ে দেওয়া যাক্।"

পিছপাও হয় না—তোমাব এই প্রেমের আবেগ ভাক্তার মধ্যে মধ্যে বিভিন্নভাবে যথন এহ সকল কথা বিভ বিভ করিয়া বালয়া যাহতেছিলেন, তখনও তার হাতের "ঝাডা দেওয়া" এক মুহুর্তের জন্মও রচিত হয় नाहै। धिन ५० ठा० वाफ़ाहेबा (महे हाक इंडेंट अनीख बाग्राक्त । निर्मा করিভোছলেন—সেই রশ্মিচ্চটা সম্মোহিত वाजित्र कथारम ७ वर्ष निया गांगरजिल्ला। ক্রমে ভাচার চারিধার রাশ্ম-মপ্তলের স্থায় একটা দুখ্যমান ফস্কবস-গড়িত খায়ু-মগুল গড়িয়া উঠিল।

> व्यापनात्र कारकत्र क्रम्म व्यापनारक व्यापनि वारुवा क्रिया डाकान्न (भन्नदवादना विवाहा डिठिटनम—दिन्न दिन। ध्व क्वांन! श्वभन একটু भागमा यथन मिधियान, वाकिएवत ख्यान এक वादत द्वाभ भारेबात भूक्त वाकिक-

ं और व्याचांत्र यानित्नम, "त्मथा याक्, त्मथा व्यात्र छथनि छात्रात्र टेवर्ककथाना-बन्न ঘাক্—কে আমার মন্ত্রের প্রতিরোধ করতে আবার প্রথর উত্তাপে উভগু হইল। না জানি কোন্ বিজোহী মনোভাব আদিম দেখিয়া ডাক্তার বলিলেন— এই উপর অমা হয়ে আমার প্রভাবকে থেকে নথাবস্থায় বের হয়ে আসবে, কবতে পারব।"

प्रदेशन मधानको प्राप्त नाम्या न्यामितनने— प्रिया क्यांकित । किन्न क्रिया निर्माण ্য স্থানটি আত্মার গুপ্তভাম পবিত্র স্থান, প্রক্রিয়া শাস্তিবসামিত। क्ष्रमा क्रिमान।

০ইলেন। তিনি ঐক্তৰাণিকের ভার সেই মন্ত্রই আবার তাডাভাড়ি আবৃত্তি धक भन-निर्मिष्ठ পোষাক পরিধান করিলেন, করিলেন।

জान वकांत्र प्राधिवांत क्य चार्किएम मार्थात । এই-मन चर्छान (नम इट्रेल, जिनि डलत जथन अ थून अक्टा (5ही हल्रह, जथन 'উखार्भन वर् वर्ष मूथ भूनिया मिरनन, পারে! মস্তিক-পাকের মধ্যে তাডিত হয়ে, পরময়েটারে ১২০ শাগ তাপ উরিয়াছে শরমান্তর উপব, জীবনের কেন্দ্র-বিন্দুর অগ্নির তুই **স্ফুলিন্স, যাহা এখন দৈহ-শিঞ্**র এড়াবাব চেষ্টা করচে। আমি নিশ্চরই আমাদের শুবার-শীতল হাওয়ার ঐ স্ফুলিজ-াকে পাকড়াও কবতে পারব, তাকে কাবু ছটিকে ঠাণ্ডা হতে দেওয়া হবে না—বা নিকাপিত হতে দেওয়া হবে না।"

এই অনিচ্ছাক্ত বিজ্ঞাহ কমন করিবার ভাক্তার সাদা বস্ত্র পরিধান করিয়া জড-শক্ত ডাক্তার তাঁর দৃষ্টির 'ম্যাগনেটিক্ পিগুবং এই ছই দেছের মধ্যে দণ্ডায়মান গাটারি'তে আরও বেশি শাক্ত সঞ্চালত রহিয়াছেন। দেবীর নিকট যাহারা নর-কারণেন এবং দেই বিজোহা চিস্তাটাকে বলি দেয় সেই ভাষণ রক্তাপপাস্থ डेलमारूक e त्मक्र**ा**एक मञ्जा— এই পুরোহিতের স্থায় এই সময় ভাঁছাকে

एाकार धीर्त्र धीर्त्र व्यक्तम्ब रहेन्।, डांत्र ভখন তিনি মহা গান্তীর্ঘ্য সহকারে সেই মহামন্ত্র উদারণ করিলেন, ভাহার পর এক অশ্রুত্রপূর্বে পরীক্ষা-কার্য্যে প্রারুত গভার নিদ্রায় নিমন্ন অক্টেভের নিকটে গিয়া

একটা জ্বভিত জলে হন্ত প্রকাশন ভাকারের বে চেহারা সচরাচর অভি কারলেন; বি িয় বাক্স হহতে কভকগুলা অন্তুত দেখিতে, ভাহা এই সময় এক ওঁড়া লটয়া গাল ও কপাল চিত্রিভ কবিলেন, অপূর্ব মহিমায় মণ্ডিভ হইয়াছিল। াত্মণের যজ্ঞত্ত বাহুতে জড়াইলেন, গীংার এই সহস্তময় অনুষ্ঠানেব সময় ভাঁহার २० डिनहे। (ज्ञांक बार्ज़्ड कब्रिटनन, मूर्यंत्र विमुखन द्वर्थाक्षणि हिनम्। जिमा ामका।न्छ।' खरात मन्नामी य-मर षुँ हिनाहि मूथऔर छ करें। मान्र जार पानिश्राहिन, माधान-व्यक्षकारमञ्ज दिल्लम क्विमाहित्यम, ब्रुद्धाहित्याहित्याहित्याहित्याहित्याहित्याहित्याहित्याहित्याहित्याह व्यक्ति । विद्यालिया

এই ममन कठक छणि आग्ठर्गा या। भार हरेटक मानिम। একটা যন্ত্ৰণার ভড়কার जिक्रे भगत्य निष्या उतिम। उराप्तिन. मुभ विक्र छ हरा, छेशापत मूर्थ 'शाख' **উঠিতে লাগিল। পাত-6न्धं मट्दर মত** विवर्ष इरुल। ख्यामि श्रीं कुछ नामाक ७थन मन मिट्द कि-ट्यांबाका वाथि ?" विक्विक् कविशा ज्वांगटक मानिक्य-किन्निक ध्येत्रदारना, य-त्रिक्षन केंद्रांत द्रश्रेश निर्कत्र क्रेंट जानिय

(यन काकारम ककिं। दब्धा-भर्थ निर्मम कांबर डाइन এই ভাবে ডাক্তার স্বকার বিতাৎ-প্রবাহী হস্তামুলির একটা ইগিত কবিবামাত कमक्र अम्-शंभ विमुध्य होगर ह আরম্ভ कतिका, धारः पेरारिय श्राटि धकेटी व्यारमारक द द्रावाहिक, वाविया निया, जकीय काचा भोन्छे नामिक्य अवीवरक काधिकात विछार कृष्टिक नाशिन। কবিল এন॰ কোণ্টের আয়া অক্টেভের भदोत्रक कांधकांत्र कार्य ? - व्यवशास्त्र कार्या मण्लीश द्रेल ।

(य-छ्टे मृजाय यानव-जावान करत्रक (मटक्छ আত্মাহীন হটগা ছিল এবং ভাক্তারের বিহাৎ-भांखन व्यावक्रमारन यमत्राक याशारक व्यावनात कर्ता आनिवाकित्नन, अन्मां तिर्हे पूरे मुखिकाबरखन किठरत कीवनामिक প্রবেশ कविशादह ।

कानम-उद्यारम छाङाब (लब्र वारनाव চোৰের ভারায় বিছাৎ ছুটিতে লাগিল। ভিান भरक्र मर्था नया नया भा रक्षिका हिन्छ চশিতে ভাবিতে লাগিলেন; "খযন্তরী

প্রভৃতি যে-সব চিকিৎসক্ষের ধুব নাম-ডাক, মানব-দেহের ঘড়ি বিগ্ডাইয়া গেলে মেরামৎ स्वाप्त (कोन्छे ९ कार्छेड উखरबद म्ह कदिएड भारतन वांग्या वांस्य थून क्रकारी,---আমি যা করিলাম এই কাজ তাঁরা কক্ষন मिकि।

বধন কাত্রা আমার একডিয়ারে আছে.

व्यात्माक-प्यानिक উशामित याथात छेलत এर वाका निर्शाम त्मिक कतिया, छाउनात मूथ किंबिड कविशाहित्मन, তाहा मृहिशा रक्तिया, এব॰ खा**का**लिक भक्तिका ফেলিয়া, অক্তেব আত্মার হারা অধিকৃত कि कि महोर्वे मन्नर्थ कामिया में कि किर्णन। ভারপর, সম্মোহন-নিদ্রার অবস্থা চইতে উদ্ধার করিবার জন্ত সম্মোচন বিভার উপদেশ व्यकुमाद्य हार्ड्य याधा मिट्ड मानिस्मन ;— नुडन आवारम श्रादम क्रिन:—आहेरिख्य (मई এक এक साफाय क्रूमोशास क्रेंटिड

व्यात यरप्रक ।मनिष्ठेत भव, व्यक्तिन-नाविन्कि (नाभारमह वर्गना विभम कारवार कब्र १थन इड्रेंट अर्केड्स अर्केड-लाबिन्कि গালের একটু রক্তিম আভাম বুঝা গেল, বলিব) স্থায় আসনে উঠিয়া বসিলেন, চোথে ाङ तर्शाहरू माशिरमन अपः हातिषर् विषयभूर्व पृष्टि नित्काम कत्रिएक मानियान-এখনও তাঁহার অহং-তৈওক্ত ফিরিয়া আ্সে नार्। यथन कार राष्ट्र-खान न्नाष्ट कितिया व्याभिन, ७थम अथरम्ह मिथर नाहरमम, তার আপনার বাহিরে তাঁর আক্বতিটা একটা भागात्कत्र छेभन्न स्थाभिक इस्माहि । व (य ম্পন্ত দেখা যাচেত। আশির প্রতিবি**দর**শে ना— श्रेष्ठाकलाद्य त्यमा मारळ्। व्यक्तिल गायिन्थि हो दकात करिया छे डिटमन-

৬কাৰ স্থতি ধরিয়া রাখিতে পারেন নাই,— াই তিনি একটা অভূতপূৰ্ব অসোয়াঙি অমুভব व दिएकिएमन। এখন অका नुष्ठन है सिम्न नाना पुक्-छारक द किनिन चारि ।" গ্রাসিয়া ভাঁহার চিছবুত্তির সেবাম নিযুক্ত অক্টেড-লাবিন্ধি উত্তর করিলেন— भाग (यज्ञान क्य हेश क उकट्टी (महजान) "।'श्री-विरुक्ष ठीरे-श्राण रहेश धकेला —"ना वाना, एन खन्न क्यादाना, खन्न भ्धां बिष्टि मस्डिक-**(धांटन त ग**रधा, शांधां त ाण्डा मातिएक मातिए मेखिएमत किए। ा' के ब गरभा Cकाषात्र (यन काजाहेश जिम्राटक---गर मेखिएकत मरमा अभितिष्ठि धादनासित ু তকটা রেথাচিত্র এখনো বহিষা গিয়াছে।

অক্টেভ-গাবিন্দ্বির বিশারটা বেশ-একটু प्पाचान क विश्वा छोदनात्र योगरमन ;—"बाका, পন ভোষার এই নতুন আবাসটা কেমন াপ্চেণু যায় মত স্কারী এই ভূমওলে বরণ সেই স্থন্দরীর পতি বীরপুরুষ কোণ্টের पक-मन्ति कृषि cam शहे हत्य वरम नित्त्रह *

প ভোমার বসৎ-বাড়ীর সেই বিধাদমর गात्र व्यामि यथम ट्यामाटक व्यथम स्मिथ খন ত তুমি মৃত্যু কামনা করছিলে। এখন को के नाविन्धित्र धानारमत्र नमक बाहरे .ठायात मञ्जूरथ উদ্ঘাটিত; त्रांनी व्यारकाणित াছে ভোমার প্রেম জানাতে গিয়ে তথন ांग डांग्र काह त्थरक मूथ-धावका त्थरग्रहिता, 'থল আর ভোষার সে ভয় নেই। এখন

धारे हीएक । त-भारक छात्र कर्शकार वस कान वान रवाथ क्य जूमि मुठ्ठा-रेक्टा कराय ना । इन ना-- এই भरिष छात्र मन्न ८ कमन এक हो। এই स्व वानद्र-मुर्था वृक्ष वामधान्नाद শালির সঞ্চার হটল। 'আগ্রেটক'-নিদ্রার শেরবোনোবে দেখ্ছ--এখন ভূমি বেশ ন্ময় এট আত্মার বিনিময় ছুওয়ায়, অক্টেড বুঝ্ডেই পার্চ ভার অসাধা কিছুই নেই---আবার ভোমার আত্মাকে অক্স শরীরে প্রবেশ कतिरत्र मिटल भारत—लांत बुनिएक धन्याना

रशास्त्र। এकक्षन अमकीवीद निवर्षे "ए।क्युन, व्यापनात्र मस्मिमामर्वा स्वरकात्र হতে তাহার অভ্যন্ত হাতিয়াব সকল মত—অন্ততঃ দানবের মন। আপনার এই 'ठावेश महेश डाहाटक काछ हाजियान मिक, देवनी किश्वो माननी मेकि ना हट्य यात्र ना ।"

- ভিতরে ভুতুছে বা দানবি কাপ্ত কিছুই নেই। ভোমার মৃত্তির পথে কোন বিদ্ব হবে ন':---ভেশ্মার সঙ্গে চুক্তি করে সেই চুক্তি-পত্রে वन्हित्। এই-मव या घटेला, खान्न रहस्त সহজ জিনিস আর কিছুই হতে পারে না। त्य भूक अब आरमारकत्र रुष्टि करत्रहम, जिम কে' । আত্মাকেও স্থানান্তরিত করতে পারেন। ভাতে আর আশ্রেষ্য কি ?"
- -- "जापनात्र এर जम्मा उपकारतत जम কি বলে' আপনার নিকট ক্বভক্ততা প্রকাশ করব প্রত্যাতিদান কি ক্রব পুকি मिर्म এই খাণ পরিশোধ কবন ?"
- ---"তুমি আমার নিকট একটুও খাণী नड, ट्यांबाब উপব আমার একটা होन् क्टब्रिका। मःभावानरम मध्, त्रोज-मध वुषात्र काटक बारवन किनिमधे। वक्टे वित्रम । ভূমি তোমার প্রেমের কথা আমাধ কাছে প্রকাশ করেছ। আমাদের মধ্যে কেউ বা

একটু রাসায়নিক,কেউ বা একটু এলজালিক. (कड वा अकडे मार्नीनक— (कान-ना-रकान षाकारः नवांके कामना चन्नमें, वामना काइविका मवाहे शिवशूर्व कामारमंत्र मकान করে থাকি। সে খা ছোক, ভূমি এখন खटो, bमा-रक्ता कत, र्वाख्य त्वखं । **(मभ, (कामात्र नृक्न গাত-5 न्यंत्र मक्र**न, এই वाक् भितरबष्टरनक गर्या धकरे वार्या-वार्या ঠেক্চে কি না ?"

षाक्रिक-नाविन्छि, ডाक्टादित पेशाम-মত খরেব মধ্যে ত্রু-চারিবার একটু পার্চাল कतिराम । ध्रथन जांत्र (स्थन वार्था वाद्या मदन क्वेटल्ड मा , दकोल्डिस महोदत्र মধ্যে, অন্ত আত্মা বাস কবিতেও প্ৰব-व्यक्तामधनात्र धक्छा त्याम, जक्छा त्वश कोरकेत एक्टर ७थन ९ काकुश किल, नव আগত্তক অক্টেভ লাবিন্থিও এই সবল দৈহিক শ্বতির, উপর বিশ্বাস স্থাপন করিল, কাবণ व्यथिकांत्रहा । शुर्वारमञ्ज्यामीत हान हनन, कांच-ভিজি সমস্তই একণে নব আগন্তককে প্রকণ क्रिएक क्रेंग्व।

ভাকার একটু शमित्रा विल्लान:--

তা হলে আমাব বিশাস হত,—আজ রাত্রে यांहा किছू षटिएक मवहे महन्नाहत्र घटना, আর ভূমিই প্রকৃত বৈধ ও প্রামাণিক লিথুনিয়াব কৌণ্ট ওলাফ লাবিনৃষ্কি। এখন ভ আসল কোণ্টেব আত্মা ভোমার পবিত্যক **८मरङ्ग रथामरम् त मर्या खेथारन निजा**य 期間!

किन ध्वांन त्रांकि । इत्यारतम पणी थून केटेक: यदन निमा :-- काटेक्!

বাজ্ঞাব। এই বেলা রাণীর কাছে যাও--ভাস-পাশা খেলে দেরী করে বাড়ী এলে बर्ग देश्व काछ (थरक धमक (थरक ना क्या একটা ঝগড়া কুরে বিবাহ-জীবনের আরম্ভ করাটা ভাল «ম—সে একটা কুলক্ষণ। ততক্ষণ আমি থ্ব সাৰ্থানে ভোমার পুরোনো থোলোসটাকে আবার জাগিয়ে ভোলবার (,চষ্টা করব।"

ভাক্তারের কথাগুলা যুক্তিসিন্ধ বিবেচনা করিয়া অক্টেভ-লাবিন্স্নি তাড়াতাড়ি খরের वाबित केंग्र । मिं जित्र धारणत नीरह दकोरकेंत्र काँकारणा नान-स्माजात्र युक्ता व्यथीय जारव খুব দিয়া মাটি খু।ড়তেছিল। মুথের লাগামের लाइाठी कामफान्टकिन ध्वर लाबालिय मुभ्-ानःश्रुष्ठ ८६-न-भूटक मधुर्भत ग्रीध्दत वाधारना दानहा चाह्य कर्या शियाहिन। कर न्युवरकत श्रामक कानवामांक ककान कांकारणा डिफ भन्ना महम शिक्षेत्र भा-सानीत काटक दमोक्सि कामिया ममदक भा-मामीछ। नागारेषां मिण।

चार्क्रिक व्यागाय काक्राम-वर्ग सञ्चयद कांत्र নিজের সামান্ত-ধরণের ব্রহাম গাড়ার "আমি যদি তোমাদের আত্মার এই অভিমুণে অগ্রসর হইয়াছিল,—ভারপর এই विनिमय-প্রক্রিয়ায় পরং লিপ্ত না হতাম, উচ্চ জাকালো 'চেরিয়াট'-গাড়ীতে উঠিয়াই महम्दक शखराष्ट्रान व्याष्ट्रा मिन-महम क्ष्मिगानरक विज्ञ-"(श्राटिका ह्या।" গাড़ीत पत्रका यक कविटल ना कतिरलहे, व्ययुगन चारु यांकाहेश मटलट इंडिन। পৌছিতে বিশ্ব ধ্ইল না। ক্রতগতি অধ্যের ক্রত গতি পথের দূবছকে খেন আস করিয়া **(क**निन। श्रामात्म (नेकिश एकार्रम) দরোয়ান আসিয়া কাটকের এই প্রকাপ্ত কপাট ঠেলিগা দিয়া গাড়ী-প্রবেশের বাস্তা করিয়া দিল। পাড়ী একটা বালুময় বুহৎ প্রাঞ্গণে এবং সাদা ও গোলাপী বঙ্কের ভোবা-কাটা একটা টাদোয়ার নীচে ঠিক আসিয়া দাঁডাইল।

অক্টেভ-লাবিন্ধি এক-নজ্বে স্থানটা
দেখিয়া লইল। প্রাঞ্গণটা বিশাল, স্থাসনান
কতকগুলি হুমাবতে বেষ্টিভ, ভাবার লাপদণ্ডের উপর কাচের ফানদের মধাস্থিত দাপ
হুইতে শুলু আলোকচ্চটা প্রক্রিপ্র হুইয়া
চারিদক উদ্ভাসিত করিছেছে। বে-ধর্নপর
সেকেলে ফানস, ভারতে এই বাডাটা
হোটেল অপেকা প্রামাদের মুক্ত মনে হয়।
তর্সাই-আলন্দের যোগা কতকগুল ক্মলনেরুর ট্ব, আসফ্যান্টের কিনারার উপর,
একটু দূরে দুরে স্থাপিত হুইয়াছে। মণাস্থলে
বাসুময় ভূমি—এই আস্ক্যাল্ট কিনারাটা
গালিচার কিনারার মত মধ্যন্থিত বাল্ড্রামকে
খিরুরা রহিয়াছে।

এই বাপান্তরিত প্রেমিক বেচারা, দরজার চৌকাঠে পদার্পণ করিয়াই থমকিয়া দাঁডাইল, তার বুক ধর্তীদ ধড়াদ করিছে লাগিল। তাহার দেহ কৌণ্ট-ওলাক লাবিন্ত্রির দেহ হলৈও, সে বাহ্ছ-দেহ মাত্র; মন্তিছের মধ্যে বে সব সংস্কার ও ধারণা ছিল, তাহা মালিকের থারার দক্ষে পলায়ন করিয়াছিল,—এখন হলতে বে বাড়াটা অক্টেভ-লাবিন্তির হইবার কথা, উহা ভাহার নিকট অপরিচিত; —উহার ভিতরকার বন্দোবস্ত লে কিছুই অবগন্ধ নতে। ভাহার সক্ষ্মেথ একটা সিণ্ড দেখিতে পাইল, সে কপাল ঠুকিয়া সেই

সিঁড়ি যাহিয়া উঠিতে লাগিল। ঘসা-মাজা পাথবেব ধাপগুলা কইতে শুক্তাফটা বাহির হলকেছে, এবং সেই ধাপগুলার উপর ঘোর রক্তার্য গালিচাব এক বিভ্তুত ফালে তাঁনার আউটার আটকানো রহিয়াছে; ধাপে-ধাপে স্থাপত ফুল্লানিতে স্কর ক্রমার বিদেশী পুষ্প শোভা পাইতেছে।

षत्र कांचा-कांचा अकता अकांच मार्थान धक्छ। द्यांचे। दिश्रांन द्रम्यो माष्ट्र युग्नाट ॰ एक — श्रीक बाक्ष बादनादत्र विकृषिन। घटतत्र (महमान गार्यरभन्न मक शांकिम-कन्ना मामा চূপ-নালির কাজে মাওত; দেয়ালের গামে কানোভা-রাচভ "আত্মায় প্রেমের চুম্বন" এই हांवत এक हि सकन-हिंदा युनिट टए--- लागब **উপর লাঠান-। २:२५** ७ मन्छ आरमा काठी शिकिश श्रद्यादि । निष्ठ माथादी त्माद्यिक काककारया व्याष्ट्रक, निष्त्र (मध्यारणय গামে চ্যারজন বিখ্যাত চিত্রগুণীর চারিখানা চিত্ৰ ব্ৰেশমী ছাড়তে ঝুলিভেছে—চিত্ৰগুলি এই জমকালো সিঁড়িব সহিত বেশ খাপ থাইয়াছে। र्मिं डिन्न माथान डिलटन, त्मानान त्लदनक-माना একটা পশমা কাপডের উচু মরজা। व्यक्तिक-नार्गावन्थि महका ঠেनिवामाव এकটা বিশাল পার্বপ্রকোঠে আদিয়া পাড়ল। (मह भाषे शरकारक सम्कारमा मारक मिक्कि কতক গুলি ভূতা নিদ্রা যাইভেছিল। অক্টেভ त्मशास्त्र आमियामाळ, कम-काछि छिनिएम বেক্লপ হয়—তথান ধড়ফড় করিয়া উঠিয়া, थाठारमरणंत्र रंगानारमत्र मरछ। रमत्रारन्त्र शास्त्र উগরা সারি-দিয়া দাঁডাইল।

অক্টের ব্যাবর চলিতে লাগিল। পার্থ-প্রক্রের ব্যাবর সামা ও লোকাল রভের এক

मा। मार्केच् এको मनोध होन नियामाळ कत्रह्म ; এकहे भरतह (मधा (मर्यन।" এক রমণা আগিয়া উপস্থিত হঠল।

"गृष्टिनी-ठेरकुरानीय मर्जन कि পाएग (मएक मार्य १%

বৈঠকথানা। এই বৈঠকথানায় কেচই ছিল — "রাণী এখন কাপড় ছাড়বার উদ্যোগ (哪和 " *)

ঐত্যোতিরিক্তনাথ ঠাকুর।

পূর্বরাগ ও অনুরাগ

পুকারাগের আনন্দ জমিয়া উঠিয়াছে না-পা श्यांत्र याथा, व्यञ्ज शार्शत का गन क या छित्रिशाटक भावसात्र भारका। ८कान् काननाति (वना १ (कान बानन (वनी वना इकत, কারণ, এই অমুভব নির্ভিন্ন করে আপন আপন শভাব ও সংস্থারের উপর ৷ আব ৰাভি-গত শ্বভাব ও সংস্কাৰকে যদি এডাইয়া উঠিতে পারি তবে নিরুপাধিকের (absolute) मिक कहेरल ६ हेडे (वाश क्य क ममान ; পार्थका राष्ट्र धर्माल, माळाम नार्का

ইউরোপ পুর্বরাগের পূজারী, প্রাচা ष्यक्षारशत (मदक। किन्छ ष्यान्ध्या, এ यन क्षांत्यंत्र कामण-यमण इत्या शिवाटकः। (य हेफेटब्राप्थत ममन् द्यांक भारतात मर्या, कि निष् ম্পষ্টভাবে পূর্ণভাবে হাতের मुक्रांत्र मत्था माँ थरिएक भावित्य क याकात . अथ नारे, जृखि नारे, मिर हें डेटवानरे नाकि व्याचात्र यू किया পড়িয়াছে না-পাওয়ার মধ্যে, ना-धनात निटक! आत्र त्य व्याठा हुविवादक उधाक करेगा ठानग्राट्स टक्वनर पानटखन

অসামের পানে, ‡ সেই প্রাচ্যই দেখি মধুত্র-व्यानसरक हाविद्यारक मनीय स्थीय भाउषांत धक्षा-ताधात्र मध्या । भाग्नाटकात्र कवि पशिकाटक বলিভেছে --

She was a Phantom of delight— ভাহার রূপকে মুছিয়া যতদূর পারেন বাতাশে व्याकाद्रम किमाहिया क्रिमाहिया निट्ड ठाहियाट्डन, তাহাবে করিয়া তুলিয়াছেন •

A voice, a mystery— আর প্রাচ্যের কবি প্রণারিশীর মৃর্তিকে বতথানি পারেন স্থপষ্ট স্থান্থর করিয়া ধরিতে চেষ্টা করিয়াছেন, চকু দিয়া দেখিতে পারি, হাত দিয়া ধরিতে পারি এমন স্থাবর ক্রিরেট করিয়া স্থাপিত কৰিতেছেন—

'ठळाणिचात्रख रेवायटरच्- " ইহা প্রস্তুতির ক্ষতিপুরণের দাবী কি না অথবা মাহুবের অন্তরাত্মার পূর্বতা প্রয়াদের নোল, তাহা আনিনা; কিন্ত দুল্লটি আশ্বা-কর ও শিক্ষাপ্রাদ।

हे डेटब्राट्शब **डिउगार** ह প্রাণ ছুলিয়া

^{*} সারণ কমন-A buil in hand is worth two in the bush.

[🕆] क्षूरेमन स्थर माटल स्थमकि । 🤺

কুমারীকে বিরিয়া, ভারতের চিত্ত রুসাপ্লত कांबाटक कांबाब कांबाब। क्यांबाब ठावि-ामरक त्य व्यट्शिका,त्य च्यानिहरमन चालिमरनन অতকিতের খেলা, সব ইউবোপ ভাচাতে মুক্ষ। ভারত বোধ হয় একটু ধীর গভীর স্বভাব, বালস্থাত চপলতা বালয়াই হয়ত रुप्रेदारभन्न এर यार-त्रामारक, এर कारमा-जांधात मत्मह-निन्द्रित नृत्काहृतित्क, তপভোগ করিবার উদ্যোগে সে কিছু করে नाइ जाम्राज श्रीती हात्र मत्था (य जानन স্থির নিশ্বিড় গভার শাট ও ম্পার্ড হচ্ছা ,ধরা मियाटक, व्यक्तामनीटक मश्यिमीटक व्यक्तिया त्य ज्थि निहा श्रमाणिक, श्राधिकात्र-शां ठर्छ, বধীয়ান ভারত তাহাই চাহিয়াছে। ওশণ इ देदब्राभ च्यां ७ छ्वां ब अञ्चादब्र व्यथम मालादन मिष्गिरेश — जार दको कुरु विश्व दिश्व दम हिन् थ क्रेया अस्यार्टक, काठ वाडाइया । एयारक आंत्रक आंत्रक'त किरक, পान्या किनियंत्र मरमा खान दे। धम्रा मिट्ड (भरण र म मरन कांत्रशाहरू, भव (अब इर्ग। ভावड (वाध क्य ना-शास्त्रात्र (व्यय म'गार्थ शिया পৌছিয়াছে, ভাই না-পাওয়ার ভয় তাংগর (नहे, कितिया वृत्य छाई भाउयात मर्थाई भव পাহরাছে। कुमान्नी-পূজাকে ইউরোপ ভাহার धर्मात बरधाल महेमा निमा वनाहेमार — युष्टे धरमात्र नात्व कार्यक्रन .मही (Virgin Mary), ভারতে লোখ একসাথে অভিন্ন দেব ও দেবী, যুগল মৃতির পুঞা।

<u> (श्रम-कोवरम इंडरज़ार</u>पत्र 'रश्रमाण' (त्रम वा तामनीना) मिन्दित पूर्व भर्याख; ভারতের প্রেমের শীলা আরম্ভ হয় কিন্ত बिनार्मित्र शत क्रेट्ड। ध क्था वस्

शृर्ख व्यानारक क्रष्टे त्वारथ शिष्ट्र वा ভারতীর সাহিত্য ও উপ্যাদের পত्न विवाह पिया, इडेरब्राभीव माहिरछा विवार-इटेटिडि, शक्षमाह्य--- यविका। ५३ि काकांना कारहना कामग्र (कांचा हहेटक करम व्यामित्एटा, भन्नम्भद्रत्र निक्रेवर्खी इहेट्ड्स्, উভয়ের মধ্যে কি রকম একটি সুক্ষ উপনাভের श्व खराय दाया निम, भरत खारा ख्यर् मुब्धारम भौरम : बर्ग - अरे वेजियाम निवादक इप्रेर्तापन माहिन्। एक्षमकीयरनन अध অংশ ভারতবর্ষ হয় ত একেবারে ভোক বাদ मिया नियाटक व्यथना भूव मामाञ्चलाटन উল्लেখ कतिशारक, भरतन ज्ञानिका धतियान क्या। इरिं श्रिम अकल रूट्र भन्न, अकि ष्णश्चित्र जार्थ मिष्णवाज भन्न कि जकरम रमभा-**(मन) करिएटाइ, कि छा**रव **(महे विमार्**मश श्रकाम करिएउटह, डाबाबर हिन्न मिट्डह ভারত্বর্ধ। ছইটি অস্তরাত্মার স্পর্শ কি कांत्रमा इहल, डाहाय त्रक्छ পाई नाम्हारका ; अर्थ न्नार्मित्र भन्न इङ्क्टिक मिलिया कि ভाव कि मोमा कमार्या जुमिए ७ हि, अश्व वाखी भार शाद्या । कथ्या, माधनात कथा (यन विविद्युष्ट जरून माधक इंडिस्तान चात्र निषित्र কথা বালতেছে সিজপুরুষ ভারতবর্ষ।

পূर्वद्रार्श अञ्चय कवि ना-भो छम्रा किनियत পাওরার চেপ্তার যে জানন ; অম্বরাগে বা উত্তব রাগে অহুত্ব করি পাওয়া বিশিষের সভোগে (य बानना। भृक्तिशांश (यम 'त्रामाणिक' बानमा-আর উত্তর-রাগ যেন বিয়াণিটিক বা বস্তভাত্তিক ज्याननः। याञ्च একদিকে अभीय — भ ठाडिए छ छ क्विन हा**फाइमा हा**फाइमा हान्छ, निहत्नम मकन वक्षनरक हि दिशे निका-नुकरनम पिरक

णा खप्तान धर्ट्ड, এই अमारमत देशनहात्रात » একাশ মু'क्कद वन ভিন্নাহয়। উ'रोगाट পূর্ব-ब्रात्यव भट्सा । किंख ब्राय जकांबरक माजून ममाम—निकटान भागिष्टित वक्तरनत . मर्था त्म bifec oce भा छत्र ज्ञां छत्र ज्ञां कर वानन व्यानमा व्यमुद्रश्च ५४-म् ७न , नि'म्हर ७३ वानम ष्ममाम कानन कि एक वन ष्ममारमन मर्था ३, ममार्भव मर्पा ७ कि समाम स्थानक शांकरण भारव ना १

शुका क्षा करिए एक मानम-ক বিয়া श्वमात्रीरक। ८व वखारक कालात श्रुक-त्राश कांग्या पिठि (५८६, ७१३) व्यास्थ माञ : जाभाव ভিতরেব আনন आकाश्चा त्रम्थिका ठाक्टि एक इक्टा कृषि । ज कृष्यं कार्ष्ट्रारुया भावपाहि, करत्र । ८भक वाक्रिया काशास्त्र मध्या । ७ ७ ६ तत्र मिल्म ७ । कानिएम ३ প্রবৃত তৃত্তি আসিতেছে সেই ভিতরের ष्पानत्मत्रष्ट् अक्टी (त्रामष्ट्रान ; कात्रन বাহিবটার সাথে নিবিড় পরিচয় এথনও হয় नार, जमनल जारा पूर्व पूर्व, जारारक ভিতরের হচ্চানতেই প্রতিনিয়ত গাওয়া কুলিভোচ, তাহাক উপর বং ফলাইভেছি। পুर्वत्रार्शित (ध्यांग्लाम मौगांत्र ভिত্তের CCICमग्र रहि—(मर्गा, नहामाभो। अञ्-त्राराध कानमा किल ज तकम जक्मिर न्य जानन, जायगढ जाल-गायार्या गरहः व्यक्ष-बारगद व्यानम् (य वर्गाहरत्रद्र वखाँदेव म्भू म

ग्लार्भ शिष्ट्रा छानाई हहेया छैठिएछए — मिथारन क्यांच (श्रमान्निपटक शिक्टकी ना, क्यांमाव (ध्रमाम्भागः जामादक शिष्टिंड, উडदा , উভয়কে আপনাধ মত করিয়া লইভেছে भृका-बार्श ज्यामात्र कछर्वत ज्या यथन रयमन -- कहाक छेखन-ब्रारंशन मान। द्यान्हिक हार्टिकहाई जकहा निम्बद्ध धानमा ज्यन CEIG, Cकान्टिक वर्ष्ट्र विविध वानाम्हर्टिव स्मर्थ वर्ष वम राज्यात कविशा मान्टिक्ट गर পূক্বাগ । ৮४-न ७ न क सा । म ८७८७, जाह कि क्यारया यात्र, भूदा उन को १ दर्शा १ ५ ए । । १ ५ वर्ग निर्धा निर्धा निर्धा निर्धा भक्षराभि चार्छ जक्छ। पिउरम क्रम ८काग्र। ८ थामाण्येभटक यथन श्रीतरक शासि, পরস্পার গবম্পারকে নিবিড় আল্লেষে মিশাইয়া महर भारि, अक अय युत्र नम्ब नम्ब विद्यार श्रिया ब्रांशिटन भारि, छतु ७ (य (म ज्यानम क्राध्या यात्र भा, প्राफन इन्या পড़ে ना, ভাহাব বারণ প্রেমের রদায়নে প্রেমের काधार छ ए। रखन भरश है नव् अर्थास्माय नव (बाजां व वावमा वाक्रिक अका बाधावरक चिट-एक- अ खर्च जिल्हा व सिम मेहि भिन्न भिनाटिश मधार जिन गुरुन न्थन तर्भव বিকাশ ও লীলা। অন্ত-রাগে এই উভয়ের भरधा हिन्द ०८६ ८य अव अव अव यख स्ट्रि, 'कार्श यथन वक्त इक्या यांग, उथनह व्यष्ट-शार्गत व्यानन खकाबेबा अतिया भटड ; ठिक (महे नकरमहे পুৰা বাগেৰ মানস স্টি বভক্ষণ বাছিরের वछित्र मार्थ व्या-পड़ा करत्र, यडक्र कर् ानकरा वार्ष्ठव-मरम्भार्म व्यामित्रा मरबर्धन करण कामाक दिनमा ना धना भरफ, ७७कम्बर टारान ष्या कि क व वका श्र शास्त्र ।

পুশারাগে পোমাম্পদকে ধরিতে ছুঁইতে आशनात बांकटल भारत नाई, काटलह टमशारन काट्छ कात्राह्यात कालका ; धहे कालकाके

श्रुक्तिवारश्र व्यानस्य विवाह अक्टा छाउटा। व्यक्षतार्ग कांब्राह-कांब्राहे जाव ८२ व्याह् ভা্হারও পিছনে গোপনে আছে, কিন্তু একটা वदांहा व्यर्ध्य वस्तित व्यर्ध्य, এक्टा मार्च्छ, পা छत्रात्र निम्हत्रछ। , ष्यञ्ज त्रात्र श्रृ स्वारत्रत्र (म ठौडा) तम बाल नाहे, तमशांत आह প্রসাদ-শুণাত্মক গভারতা—বোধ হয় ভ ভাষার नाम मिष्ठेजा। मनोरिंदर आहार जान मा व्रमाभाक्षा भाग, य क्षात्र इन्द्रेय दकान कृष्टि विनायम जक कथां प्राप्त भारतन १ दम याः। कडेक, त्य किनित्यत छेशत कातकात थार्गात यङ कम. तम किलिएसक मुला जामान कार्छ कह अधिक, जावात्र य किन्य आभात्र नर्भ व्याधकार्य, श्राह्म स्ट्राह्म स्थान । ि। जब के अकरम मुगानां ज क छ्या का , आब " क अर्ग -- श्रा अरुद्र एखं मा, क्या या मम न मुना। होस छ। इन्द्र भइटक भार ना निया म् ज्यान। योगर ॥ । त ना कि भूस्त्राणित

আর এক ভিসাবে কিন্তু অনুবাগের रात्रार्यात कानका त्नमा, भूसतारण रात्राह्यात व्यानका कम ; ७२म व्यक्षत्रार्श्यक मर्सा भार धकिं। छोदछा, आत श्रुक्राल्य मत्या । भार अकिं। विश्वका श्वाकारण भारमज माजाज रवनी, शिंदनारनंत्र श्रमण (भाषांत्र ७८) ना, ज्या जित्म यथन अञ्चत्रारशत मित्क निका পড़ে, ५ अन्हें (महो भाषा कृषिया गां। ३ हें ८० थाटक। श्रुव्ययादश आमि दक्ष्यण व्यामादक क्षिमा क्रिक्टिक, जानवानियार जामात्र कृषि— रूपन मदन रुग्र.

त्यथारन প্রতিষানের অপেকা নাই, সেধানে ভ रातारेवात्र कि नारे, आश्नादक निःश्नाद्य जाणिया भिन्ना छिएमर्ज करियाह हिन्छ अक विश्व कारवर् ८ ने भाष का । कर्तरार्श कि मात्न्य गाडा य ७ थानि, श्रां जमात्नत्र गाडा ७ तम ততথানি চায়—দিই যতথানি, আমি চাইও আবার ততথানি। দেওরাটা আমার উপর निर्देश क जिल्ल क जिल्ल भारत कि छ भारत है। ं आभाज उलन निख्य करन ना, जल्ड भाखना 515--- अर्थ अञ्जारतत वसन निविण क्रमा या दृष्टिया यात्र। काटकर आनका उनिष्ठ इत्र, পाइएकाफ कि नां, भाईव कि नां, खाई निरिध निनिथ हा शहे।'

যে স্পর্শ দিয়া অন্তরাগের পত্তন, তাহা हास्त्र कहरण्ड वाविर्वन स्विनिय—स्मिथारम कर्रां मेखा पृथ्वत्रारम (यमन, **८७मन सूर**त मृत्य ना पाकित् । ज्यन । मन्त्र्य मिनिङ সুলাবাল, জল-বাভাস সব সমরেই আমার বলিয়া হয় নাই, উভয়ে উভয়কে চুইয়া আছে वटा, किन्छ वर्षास्ट्र वाश्वित वास्त्र अन्धः-व्यानम ध्या मा, बहुबार्शन भानम बनुवा १ (शा + म्याबा यात्र मार्ट। कारकर नीवरक रहेत्व क्रञ्चवारशंत्र मधा ७ शृक्षत्रारशंत्रह अक्छा · জর ব' রেশ তথন ও চালতেছে— অমুরাগের মধ্যে ও পূব্ৰরাগেরহ প্রতিক্তবি দেখা বহিতেছে। এই দিক দিয়া দোপলে পূৰ্ব-রাগ ও बाध-जारशं भाषा धक्छ। काठीक्रीने भाषका कि भार ना। जन जान या कानवानात सर्ग-शार्ग এक वक्स मिट्र भाह--क्रणात्म ९ मार्ग (ज्यादम ७ ७), (ज्यादम বাহা এণাবেও তালা — আলো-ছায়ার তার- श्री क्रिक के अकड़े-वाधड़े क्विंग निर्माण করিতে পারি।

Sweeter to love than to be loved.

348 AMMICH MILE AMBI CAIR,

আনুবাদ বাহা দিতে পারে না। বিবেকাননা
না কি তাঁহার জীবনের শেবাং বি এক দিন
হালিয়াছিলেন, "বিবেকাননার চেয়ে নরেন্দ্রনাথই
বড় ছিল।" তাগুর থোঁজে চাললেও মান্নবের
কেমন থোঁক আছে অতাপ্তর উপর— শেষের
দিকে চলিতে চলিতেও সে চার
আর্থ কিছু পথ আর্ও সাধনা। সীমার
মধ্যে সাস্তের মধ্যে অসামকে অনুধ্রে
পার্রা যার বটে, কিন্তু মান্নহ হ্য সামার
হারা সাস্তের হাবা আ্রুমান্ন প্রিড্র, গাই
ভাহার প্রাণ চার অসামের অনুজ্রেই মধ্যে
অসামকে অনুজ্রেক ধবিতে অথবা ধরি ধরি
ক্রিয়াও না ধরিতে। মান্নহ স্ব্রাবন্ধার চার
তাই একটা মৃক্ত থায়াবর ভাব।

वक्षत्मत्र मध्या थाकिया छ मूळ ह छत्र। यात्र छत्त को नयू कि व्याप्तका देक दना मुक्ति है मास्ट्रिय भागरक दनी चाक्ष करत, मालाहेशा एडाएग। ज्ही हहेशा छ जानी ह छत्र। यात्र, छत्र महानि कहेशा छ। जी ह छत्र। यात्र,

আর অনুরাণে একই আনন্দ থেলিভেছে বোধ
হয়; তবুও মানুষের মধ্যে একটা কি
পূর্বারাগের উপরই সুঁকিয়া পড়িতে চার!
আমাদের ভারতে পূর্বারাগের রোমান্দ থেলিয়া
উঠিবার তেমন স্থোগ ও স্থাবধা পার
নাই। কিন্ত হলকে কি হর, মানুষের প্রকৃতি
শেখানেও আপন পথ তৈয়ার করিয়া
লংয়াছে—পূর্বারাগের পরিবর্তে তাই
পরকায়া।

পারশেষে একটা কথা বলা প্রয়োজন
মনে কারতেছি। পূর্বরাগ ও অমুরাগের
ভাল-মন্দ আমুরা বিচার করি নাই, সমাজের
কল্যান-কল্পে অথবা বাস্টির শ্রের পক্ষে
ক্লোন্টির মুল্য কি, ভালা আমরা মোটেই
নিজারণ করিতে চাহি নাই, আমরা বিষয়টি
দেখিতে চেঠা করিয়াছি ব্যান্তিগ্র প্রের
দিক দিয়া। আমাদের এই দোধবার ভঙ্গা
ঘর্মি কালার মনংপুত না হয়, ভবে আমরা
নাচার।

श्रीन'गनोकार खरा।

500

দিন এম্ন কার্যাই কাটিতে গাগিল।
মাহ্যের শরীরের কোথাও যদি একটা মন্ত
ক্র থাকে ত, বাহিরে হাজার চাপা
দিশেও একটু নড়া চড়াতেই ভাহাতে চাড়
লাগে! কিন্তু দীর্ঘকালের অভ্যাস
সেটাকেও কালে সহনীয় করিয়া ভোলে।
জ্যোষ্ঠপুজ্যের নিকটে অপ্রভাগিতরংশ

প্রতারিত হত্যা বিশিনবিহারী ও জগ্রাজী
মর্ণ্যে যে আঘাত পাইয়াছিলেন, প্রচণ্ড একথানা
কতের মতই দে আঘাতের বেদনা তাঁহাদের
হৈতে চিরুস্ফিত হইয়াই রহিল; কিন্ত
কালের প্রবেশ যে উচার দাংজ্ঞালা জনেকথানি
প্রশ্মিত করিয়া দিয়াছে তাহা তাঁহাদের
মুখের ভ্রুজাবেই বাক্ত হইতেছিল। বিশেষ
জগতেয় সর্বব্রধান শোক চিয়াপগভ ব্রিয়

ভ্ৰের অভাবত মানুষ ধ্বন সহনীয় করিয়া অবাবহার্যা ক্রণে কভক্তণা সিন্দুক-বাজ্যের लहुता वैक्तिं पादक, एथन এ'टिश एवं ७ एक्डा अमि-वानिष्मित एमाम इनेता करमक डाहारमञ्ज व्यक्तिवरभन्न छः व नग्र। एएटन বাঁচিয়া আছে, হয় ত সেঁ ক্লখেট আছে! চাই কি—এমনও আশা করা যায় যে,ভবিষাতে এक मिन (म निष्मत यायदारत क्यू व्रथ इदेशा না-বাপের কাছে ক্ষমা চাহিতে আসিবে।

कत्र वरमदत विमन्न ७ छै. ग्रांभात मरधा छ কিছু কিছু পরিবর্ত্তন ঘটিতেছিল। বিপিনবাবুকে বুড়ি কবিয়া যদিও এখনও **डाशामित्र (ठात-८ठात वा अल्डिश-८**फ्रिक ध्यमा इहेग्रा थाटक, खतू मनदत्रेष्ठ वाजादन जयन আর শে খেলা চলে না; ভাহার পবিবর্তে व्यक्त अपूर्य व्याभिना वा छात रम्जू मन कान कियान न जिल्लाहा कन्छ विवास উভয়ের মধ্যে কিছুমাত্র কমে নাই বটে, उथानि यादायादि ज्यम ভाशास्त्र निजा-कर्या नव, क्लाहिर छाहा घटि। अमित्क छ र्यानाव चारहा हुन कथा कहेगा व्याप्त निर्फ का इंग्लंब পড़ে, मिरे हुल बाब-कान मि किकनी खांबबा माथाटकाका (याँभा चाँदि। कांग्रा मर्क-শরীয়ের অপুর্ণতা এখন দেখিতে দেখিতে वर्षात्र छन-नामा शाहारफ-नतीय यङ क्रिया **देतिटलाइन**।

छार्यमात्र मागात्र वाफी निकटिक,—पन्छ। करत्रक त्वाजाय गाजी या त्नोकाय कविया या उम्रा यात्र। सच साम्। सामाटका खाई अत्र विवादक मिन-कट्यटकत सञ्जा तम मामान वाफी निम्जन রকা করিছে গিয়াছিল; ফিরিয়া আদিয়া (मिथन, याड़ीत जिल्दा करतक है। जान ब्राज्य माथ्य अक्टांत मान्याव बागारगांका अधियास्य प्रतिश निशादस् । **बर्ग का मा** CH

विन **इटे**एडरे পড়িয়াছিল। हठांद **आक** সেধানে বেশ এক লোভনীয় শোভনভা বিশ্ব জ্ঞ क्तिष्ठ है। स्था (को कुरु) हरेगा चत्रहोश प्रकिशं भिष्कि, आयर हेशत हातिनिद्य ८५१थ फिदाईयां किताहेश मिथिए नाशिन।

ভা ঘ্যখানায় দেখিবার জিনিসও নেছাৎ ক্ম ছিল না। প্রশন্ত কক্ষের এক পাশে এক-খানা ঝক্ঝকে পালক, ভাহাতে একটা ধ্বধ্যে विश्वाना-एषिएमङ सून कविशा छहेश न एट हेका करतः ;—ममाबिहा—मा अहे मिन (यि (मनाहे क बाहेशास्त्र) के मजनरव वृक्षि कत्रा इत्रेम्नाङ्गि १ चटत्रम व्यथम पिटक याहेबानात ठिक माम्ना-माम्नि चरत्रत स्थर**ा**व খুব বড় গোছের একথানা পাসিরান বার্পেট পাতা। ভার কোণ চারিটার ফুটত গোলাপ এবং মধাস্থ্যল একটা সভেল সবল আরবী (याफा केंका। त्याभाषा वाफ वीकाहमा अप्राप्तित अक भा कृष्णिया भोष्यात अक एक क्योर कक्षिक कहेबारक। जवामा महदाहद बारबब विदाना-(७,गा हामूनिए **टिंगा थाटक।** कांत्र क्छ नामारना हरेतारह ? ध षायात्र कि । वाहित्त्र यत्त्रत्र अक्षे। हाष्ठे टिविन माणात्र काटना बना ड पाँछा, अनिदय-त्मित्क माठि। थाभ-युवित **हामा** (महास, (महे। ९ त्य व्यामियारह। छित्रिमा हिक्छ हरेश कृषिया व्यागिया व्याख्य निविष्टे विद्य (पश्चिम, **मिरं दिविमाधीय छिनय विमयक्याद्यस मण्ड-**मक्षिक जन्द किर्माना वर्षामनकात विरामम टमास्त्रीय काटलकश्वीम भगवं, यथा, काळात्र त्यक शक्रावा देखवाची कावान काक-पश्चिक

"बाः। वाः। ७ इत्छ वि १ (माथा, , अ नव व्यामान।" रधन आभात्र किनिय जव लाभारे करत छिन्तिगाद मूथ अर्थाय करिया बहेया छिन। टकटना ना।"

"আমি যেন চোর! ভোমার জিনিষ **इति कदर्छ अम्बि। ना ४**

প্রভাতর দিরা উদ্যিলা স্পিং-এর মত ডিট্কান্যা ফিরিয়া আতভাগীর সহি + ঠিক মুখ্নুখী ভাশাব সঙ্গে সঙ্গেই ঠিক ছারের বাহিব मैं ज़िले । ज़िला मृत्य (ठारथ त्म जाव कटर के र्यमान माम्स माम्स आमिस्र (नी जिन, बाक करेटकिन, कारुटिक व्यारुटिन गन महस्र कांभगान महसर । हां एन हारिया व्याचां छो। त्य (कानशात्न, ८म्ट्रेत , तमा सुम्माल বুঝা ষাইতেছিল। সম্প্রধার পুরারোণিত किर्माणवाम एव किष्मणादन धामन कार्शक क कुक नक्ष्म हिमाम कर्या छ'ठेवा। दम एक्सवाद व्यक्तिम्याय পরিবর্তিত কারতে পারেরাছিল, শহমার ভাতাও এমন অক্সায় ^{বি}ষাস ভাগে नाहे; किष्ट्रमाळ व्यक्तां का स्हन्नाह (प्र উচ্চ হাস্ত করিয়া বলিল, "তার পবে छोषामाञ्चलित, कथन जामा कटना १ हेक पुक् करत्र ८५८म ८५८म (भथ ८५) कि १ ७ चत्र আমার। তথ্ আমার একলার। এই এবন আর সের্লা করে না, ক্সিড এক টা टिविटन बटम এবার থেকে আমি একলাই তাবে এখনত নিজেদের কার সম্পন্ন করে। Cमधामा क्यादा। यूम प्राप्त के शहह खरम এका प्रायरम পড़रवा। - - न महरू योगएक विनय प्यानिया नारतक छायरमञ् माम्टनम को कथाना छानिया छाहार ७ वामया भिष्म, अवः भाराव ड०-३ छेतिया मगर्य भगरकर्भ थाएँद मन्त्राभ आमिश्रा हिंदिकु छ। ब्बाफांटी पुनियां थेंेेंगा क्रियां क्रियां क्रिया

ক্ষাগজ-চাপা, কোয়াজনান, কালী হইতে খণ্ডর পডিল, ভারপর পরাজিত এবং একান্ত कर्ज् क बानीक शिक्टाब्र (माग्राक-कनम, विमर्थ शांडक्कोत्र शात्न भीवन मेश्व महाख हुनार्यय कुलमानि हेलार्गि माकारना योग्यारह । हक्ष्यय किराह्या शामिया विलल, "रम्थ निर्छ। व

> त्म भागती खर कर्छ धादन भारय किछामा कतिन, "एक एकाभोटक अ गव मिरल १"

"'ক আবার। আমার মা দিরেছে।" भीवनकार्य भावन कान्दिगारभेत नुर्भ त्यानमा है जाना कानम ऐक को नारवर श्रात छोकना डिविल, "मां, मां।" ज्यून॰ िरान चात्र प्रेक एनन कार्यान कुरन्य (कर्न छ আক্ৰালেৰ ামুদ্ৰ উন্মিশ্য অপমানাছত युथ किया या किया कहा। वा धार्म जावर कारांत साभौतिय मदनत প্राप्त এक এहकाण मान्यकारक कानाह्या पान ८म टम र्धिश्व छेभव का गण वाश का उपारक।

> क शका गाँ ध मर मान-क जिमारन रवन का डा अ कारहता हर- এक बदमत्र शुर्क हराता न्नाष्ट्रवारका डेंग्डाटक न्यांनाडश मि**७ (य.** "আম তোমার উপধ রাগ বরিয়াছি।"

> কাচে আসিয়া থপ করিয়া বধুর মাথা नुरक छोलियो कर्या शामरङ शमिरङ जिलि विणिश्नाम, "योश इरका दकनद्य ?"

खिलामा कराव मिटन ना मटन कतिश हिन, ७५७ चाठम्का कम् कतिया विनया टकांगण, "यांच, आांच ट्यांचार मरण कथा কৰো না।"

भागमी १

कारमम मा !" छित्रिंगा निर्धित भूँ दि (ष्रा (थौंशासक माथाएं। नास्त्र के के के कि , याहन-८७ द्वांध क्र के विका यादिया। देशांभाग यांधांत्र ८७ टण कार्यात घटतत वाागम नार्या काहा का-कालात पुत्रत छला कार्यन वास्यम करिया बाध्य पिक्रिन।

२१८७ व्यवसा विनय अध्यक्त का महा कु छ-+ छि छ- ८७ हिला। टम मार्यस भना नव दमां यहा न्त्रिक क्ष क्षानन्त कार्य न कार्या (का (का मटक कामिश्रो चावाश्री चेठिल, "नवार मानेटिश ना कार्य कार्यात सह ख्र रगर्य भागात । शिकि रिश्टमस कारण समा । ।

"ह्याटः या ।"

"गाम, ज्याच ८५ मात मा नर, काना। मायात भा। भाम 'नटकत ८५ टमिनिटक पंत-तत त्यम १ कृत्म मा।" ग्राव भिरग्रह । कामांत्र भिरम् रिक १"

कांत्रमा थीमरमान, "(न' भागम, (श्वर तन) धाकविभ" **अ**न्।"

क्षिक करके बिनन, " ५ जन वार्क वो आभि खाँ। हम धर्म भारति भारित ।" ल्ब्नाटक धार्याच अभागांत्र अन्ति। यन मदन कि ना, नाश शिव बदना १

মার াদকে ছুটিরা আদিয়া ত্রুকাভ জোড ভয় পাত, তা বলতে পারিনে। আমি অমন না মা, ভোমার পামে পড়ি মা, ওবে मिड मा।"

मा विषयान, "तम किरत, ७ य भागात ঘরের লক্ষ্মী। তা এ ঘর তো ভোষের "বাবা, ভোমার আৰু চান করতে

मा कावात्र शांत्रमा विकासन, "दकन दव अलगरक हे मिरम्हि। এरथान काल एएक कुरु छ ८ र प्राट्य छोच (य भागोजा।"

" (कम त्र भागभो, यह कि। — कि एपन विभन्न खराम मर्गापक हैं एकांत्र कत्रिश् উঠिन, "न वावादा। दम कराष्ट्र ना। परक व्यामि योगार यात्र ७८७ (मर्सा मा। छत हरम य'रन, अन महा-भन्ना भा जामात बार्फ श्रम हर्द्य- ८म अर्थि श्रम्ब नार्व नाया।" "

> मश अपनानि । ८ गार्थ आवक वर्षा चित्रियां स्थिना माण्ड्रीय शास्त्रत माण मिनियां গিয়া সভজ্জনে ধলিল, "মা, ভাম জানো ण युनारक युगुरक एक श्राटक এटम श्राट । नावा भाग टिनाम शाल वालिम कर्त्र व्यक्ति धरत भूम का बिरम दमम। जन् कि ना क्षेत्र वस्टा वात्राम कार्य मटक खट ० १

भा विकासन, "अद्यः ट्याप्रा य व् शुंहिनी श्रामित्रा मदल्दर वधुव जमारि दुधन किका, विविधन कि मात्र औदित्य खनाव

ावगर वाजन, "ना धार्क चात्र नाहे खिलिलो मरवर्श मुगर्थानो महाडस लम्स थाकि, ७। वाल एम जान ७३ साकुमीत

হুহার শোধ লহবার জন্তুহ উর্দ্ধিলা পান্টা गाहिन, "वाण दश । दहान या नाक छाकान. াবনর এডা । ছি খাত হইতে উঠিয়া কাতে পুন লেগে গিরে কভদিন যে আমি भारभन्न गर्कम खर्क ठाकरम, ब्याभाम ध्वकछा व्यानामा मन कृषि त्मटम कि ना, बतना १ त्तरव ? जांक्हा, ७८व अक[ा]न (मरव, अटना।"

चागरक द्यमा करत्रहा करवेहे एका, अथन क्ष्ठीए स्म थाउँया एकाक गिनिएक ভো আর আমার বৈঠকখানায় গিয়ে ভোমায় লাগিল। सदत कान्यात (या (नहें।"

"(म ट्यायां बाबा क्टब मा वादी, (मथह मा একবার কত বেলা হলো।"

"তবে আন্।"

खिलिंगा উৎসাহ-সহকারে পড়ি আনিয়া किछामा कतिरमन, "এ कि! षष्टि रकन ভাষা, মাণু ভুই ভেষে ফেলি নাকি ?"

"खर्व खात्ररणा (कमन करत् ? এक्वार्त सका दका इटम टमट्स त्या काटना, त्क CECACE ?"

वधु मखक (इनाईम्रा छानाईन, छाटन। चात्र किছ बनिन ना।

নিশ্চর এ সেই বিনে হডভাগার কাজ। ब्राट्यमिं (त्रंग क्लांबाय १

বিনর অত্যন্ত গভীর মুখে আসিয়া योगन, याँ भ छाटा माहै। (क छाहारक

ঘড়ি ভাঙ্গা এবং মিণ্যা বলা,—এ "नात भागिन, त्वमा त्कम रूत्या. कि । एडेठा व्यभ्वात्यव खरारे विभिनवात् छ भना मंगरम्हे अरमिह ।" कि दिशा ८ इटलाटक विमाग निटलन। त्नाच "कक्षाणा नम्, व्यानक त्यमा इत्म शिष्ट्। श्रीकाम এवः निशाम खन्न वाशक डाइम्स अबर चिष्ठ (मधा व्यान्त्यां चिष्ठ 🏴 🥒 एनई खाद्या पृष्टित्रहे व्यञ्जल कठाव्य किंद्यां "ना, थाक्। चाक्का, कान त्थरक-" इन्हम् मरक शा ठ्रेकिश रम हिना राम। श्रव ঘরের অন্তরালে গেলে ছোট একটা নিমাস क्लिया विभिन्नवाव् आज्ञग्र छ। त्र विभिन्नन, "ছুটোই সমান গোঁগার। এটারও মাত্র্য इदात लक्षण (मध् हि (न।"

मण्याच भतित्व विभिन्नविद्याती (मिथिश्मम, श्वामीत मिह त्याभपृष्टि এवः निष्यत वस्त्रमा समूचा चिक्ति हेकता-हेक्टा कविया जानवास मादन कविया मातासन छ यांना सूका देश ভালা! বিশিত হইরা বধুর নিকে ফিলিয়া বেড়াইল; কিন্তু এখন আর যেন সে এমন করিয়া অপ্রাধের বোঝা বহিন্না বেড়াইজে পারিতেছিল না। এইবার স্থামীর নিকট वधु भी तरव माथा ना फिल, ना। धरा निमा इन्ड कार्यात माछि वहने कति। বিশিন বাবু ঈষৎ জুক হইয়া কহিলেন, প্রাণ ভাষার উন্বেগে আকুল হইয়া উঠিতে नानिन। रामा-वाफीन नीमाना छाफारेमा था जिल्हा जिल्हा दम वाश्वि इहेबा जामिन ; অন্তরালে থাকিয়া আত্তায়ীর গতিবিধি मका कविएक कविएक छिन्न काहान विश्व दि ভরিয়া উঠিতে লাগিল এই অক্ত যে, এই এক টু जयन विशिनवाव वृतिएक भातिया हुई। ९ भूटकीई अक्रभ ऋषा रयमन घोषेषारह, अवाब खुष रहेश एक कर्छ हैं। किरमन, "विरान । जाराज काम मन्न गरे (मर्था (जान मा। विमन ज्यक् ज्यक् हार्याचा असार्ट्स सामुज भारक ध्यर जाशांक वाहित दहें क तिथिताहै वात्यत में अधिकेश व्यामिया भएए। जातभन्न छूरे करन **एड़ाएडि मात्रामात्र—८म म्य कान्य कार्थरे** काबिएक मिथारक १ करे कथा विषय्न के वित्रा यात्र। किस काब कात्र किन्न किनियात टिंग्टिया केनम टिंग्य निविद्य निविध मा। ट्यानम मावसन शक्तिया मायटन्ट्र ध्यम कि माद्रा वाड़ीठारे উर्विमा धूरिया य ट्रिकिशानाय म रामग्राहिन, मिरेशानाय युक्तियां क्यामिन, भटाभाक्षत (क्या नाहै। यौशात्र कि ? काशात्क छ कि छा भा करिए छ छ खरमा इस ना,—याम ठिक Cमरे ममहिट्डि भिष्टे वा एक व्यानिक्षा भिष्या किशा कथा "भवत्रतात! व्यामात यदा पृत्कक कि छार छ नट भाग !

अस्ताव পय कि अक्ता महकारह छेलरह िछत्रकात्र नाजामात मिटक यारट यार्ट्ड े जिना (माथक, निनायत घटतत माधा कारका खिटिएक। (किश्यार जोशांत रियक्ष यूर्य कर्मन ब्यारमार व्यंगमा दितिम এदर क्रश्राम् खेरी ध्वक् कविश डिजि। जिन नारक घारस्त्र সমাপবতী হইয়াই সে মলের শব্দ করিয়া पत्य मत्था पुक्षिया श्रीकृत, किन्न खशाशि পুসকেব পুষায় অথগু মনোধোগ-নিবন্ধন বিনয়-কুনারের দৃষ্টি ভাহার পানে ফিরিশ না। (नाथ कांत्र ठांतगार्धा मरलद एम थन् यन द्रव ध्यदाव कर्न्टशांहेत्र ना इडेग्राई शांकरव !

উর্নিলা নিজের প্রতি মনোযোগ আকর্ষণের टकान ऋरगांत्र थें जिया ना पाहेका (थाना मत्रकाछाटक छानिहा यनाए कहिता वक्क कतिन। खात्रभन्न खार्। टिंड विशक्त भक्तरक काउँग मिथिया । किखें ड रूपा ८ श्रेग । व्यमस्यु देश्या-शता करेवा छूटिया व्यामिया

काला धतिया विश्व बदल एक हो धाका मिन ; প্তিতে পজ্তে সাম্লাইয়া বিনয় তথন ঘুরিয়া ব'স্থা ভীক্ষ কঠে বলিয়া উঠিল, (छार्ज मिराहि !"

छ प्रामा कानिशाहिन क्या ठाहिटल, किस शृद्धित ममख मःकल - एक यथन मार्षि ক্তিয়া ফেলিয়ছে, ভখন বাৰ্ট্কুও বিশ্বত क्रमा ८७भान यह मीख इस्सा উठिया कवाव पिन, "हम-(जामावर ना कि जक्नाम घत्र। या वरणरक, व्यायात्रत करण काश व्याद्ध । खधु टावे नम् ; टामान मन निन्दिर আমার ভাগ আছে।"

विनय निष्मं नारमव मणान मण्यूनं कृणिया ভীষণ দৃষ্টিতে জীর পানে চাাহ্রা বলিশ, "(बर्साड बन्छि, अध्य त्थरक, जान ठाड ट्या अर्थान द्वरत्राख! आमि 'म्लाह्" दक कामात घरत्र ह्कर७ मिहेटन।"

ज कथा। छान्त्रमात्र जरुकात्र-छानीख मृत्यत्र ছবি মুহুত্তে রাহ্যাস-কবলিত শশাক্ষের মতই

> (ক্রেম্পঃ) श्रिकश्क्रभा ८२वी।

ভানপুরা

ष्याभारमञ मन्द्राज्य क्षम जानभूता गम्राहि मर्क्टलाङाद्य भिन-माद्रम्य महिल जानभूताम स्ट्रम् मनिष्ठे छिन्द्यात्रि। इहात्र वद्यम शहनन इहेटम नन्नर्क चाट्छ। मकोछ-५की ममाक छेदकर्प लाख कतिएख चार्माएवस (मरमस साहीन मकीख-मारक ख

দেশে সঙ্গীতের সহিত পারে। শব-বিজ্ঞানের ও যুরোপীর শব-

পুরাণাদিতে কথিত আছে যে স্টিকতা বন্ধা गश्राप्तदवत निकि छाष्य मङ्गी क निका क अर्था পরে ভরত, নারদ, রম্ভা, ত্রু ও ভুরুক এচ সাহায্যে পান শিক্ষা করেন বা र्था । भेषा क निका । भेषा (भेष ।

"ভর • • নার্দ • বন্ধা। কত্ । গুমুর মেব।। भक्ष भिष्मा॰ उट्डार्था। भाषा ३॰

> वागामनांच भः॥ নারধ-সংশি তা।

खालम रुष्टि कर्यन वालम यञ्जित नाम स्वयारक 'अयुवा'। व्याचात्र व्यक्त मध्क - এर यस्त्र भूवा जान— वर्णाद म्यूर्वक्राभ यद्वत (वर्णा रम विविद्यां करोत लाम रुष्यादक, 'बाज्येथा'। का खन छह्णाएँ मारभ्य । धन्तु मभा ७ मघरक स প্রেদিদ্ধ পুস্তক বচনা কবিয়াছেন, ভালতে Total tofustron, "It, use in ca cilated, as the name indicate, to fill up all pauses and vacuaties in the song, and likewise to keep the songster from straying from the tone which he originally adopted '

কৰাৰ ভাৰাথ এই বে, পায়ক যে প্ৰ यएक कात्रया जान धात्रप्राष्ट्रन, --- धार् किक त्राचित्रं बन्न अवः जात्नत्र मत्भा व्यन्न चत्त्रत्र সাহাযা পাওয়াই তানপুরার প্রধান উদ্দেশ্র।

व्याक्षकांन क्षत्रानियम यस्त्रम व्हन अध्यान करियान कर्य वर्षक शासक आर्थ्या यात्र। शाल शालवा वा व्यव माधना कांद्रामानम्म या अञ्च कारत्रत राज, यथा, तमनात्र, जामाल, या (यहांना ७ मार्याक्य भागार्या श्रेय मरुख बिनार्शेष्ट्रे मत्न क्षा किन्छ धर्म मकल गर्जन मारुटिया गांज निका (महमा अध्य निकाणीत

भटक विद्नार उभर्यांगी रहेटन उ कि हूमिन भर्द्र ह (भवा यात्र, त्य यांश्राता जरू मकल याज्य थारकन, छाहाना जाधीनভाष गाहिए श्राप्रहे ज्यम्म, शां हरण छ कष्टे द्वांभ करत्रम। काराज कांत्रन शह (य, - कांगादमज ननाज अव गर्यत्र खनरक अञ्चल्याचन कर्या । यञ्च এकव्राव क्षां ५४ पिटन नगांत भाव वाक्त क्रमा भट्ड कारायक बाक राज राज निका दे बेकर व भवन राजा व्यव कार्य है अराज आ । जन्म नारक नामर्यात्र सार्वात करा का नाम ना आल्फ क - ८५०। ८क वन अन्तारमंत्र (मार्य । দিন্দ্ত্র প্রার সাহত স্বর সাধনা বা शान घडाांग कांत्रल निष्क्य निष्यं श्रीत अर्बन यद्यनम् तु'सर्ट भारित्वन ७ व्याभना क्रिट ७० कादाय मण्डणामर ५० ६० व्यामर्य ।

> मक्षां मधरक िन ८ मात्र ८ लाक तमर्था यास - वशा, कां क्या - व्या - व्या - व्या माहाया खडा जाशामित दकान वाणाह नाही। (महारक्षा काल नार्मिक क व म्हनन, — जा तम ार का जानर कछक आज वाषमा जानक रूडक या गांचनक रूडक। ठाशामत त्याम त्याम (म ६ म थाम ना ।

यं (शाम क्रम जनक्रिया । काराता भाषतारहन बदनक शान,--रात्रान-निम्रायय भाषात्पा ८४म जान भाग भाषिर्ज्छ भारतन, रम शोष्या मकरण भक्त्रा करत, किन्छ यष्टिक काष्ट्रिश साटक कानभूता प्रान्, अर्मन এक्वाद्य भगात ख-क्रम ध्रकान। राजरभाग्निय न वा व्यक्त यद्भ अरब्र विहेश्वार्टर গালের মিষ্ট গুলাম রাখে। যদি একটু कष्ठे कात्रमा कि क्रूमिन जानभूताय माहार्या भाग या प्रत-माधना पाकाम कर्त्रम, ठाडा क्ट्रेंट्ग

তাঁহাদের গানেবও উন্নতি হয়, আর সঙ্গাতেরও 😸 অংশ—ও তাহার উপরে স্থাণা কাঠের শ্রাদ্ধ না হইয়া সঙ্গীতের প্রতি লোকের শ্রদ্ধা দণ্ড। চারিটি থাকে; মধ্যের বাড়ে।

. এ বিষয়ে বালাইও ক্লিছ্ন নাই। কারণ পিতলের। উপরে সরু সোয়ারী ও নাচে তানপুরা যন্ত্রটি শেখা সহজ, এবং দামেও শন্তা। চওড়া সোয়ারী বা bridge. নীচের গানের আসরে 'তানপুরা' দেখিলে সোয়ারীতে তারের নীচে হতা দিয়া জোয়ারী আনেকেই ভয় পান যে এইবার বৃঝি গানের বা রেশ উৎপাদন করা হইয়া থাকে। কৃত্তি ক্লক্র হইবে। সেটা যন্ত্রের দোব নহে,— প্রথমে কানের সাহায়ো স্কর বাঁধিয়া, পরে সেটা আমাদের দেশের ওস্তাদরা সলীতের সোয়ারীর নীচে প্রত্যেক তারের ভিতর যে নামে বাজ্থীল গলা লইয়া রাগ-রাগিণীব সহিত প্রতির বা মেন্কা থাকে, তালা সরাইয়া স্বরেব থায়াম করেন বলিয়াই অমন হয়। কোন অয় প্রভেদ ঠিক করিয়া দেওয়া হয়। মেন্কা একটি রাগিণী মধুর বসাজ্রিত চইলেও বাায়ামও অয় অয় সরাইলে তারের টান tension বিকট কস্বতের চোটে, ভয়ানক বাররসাত্মক বাড়িয়া বা কমিয়া স্করে মিল করিয়া দেয়। হতয়া পড়ে।

আধুনিক সঙ্গীতের মজগিসে আরও একটা लाय करेमारक এर रय, जानगुता शाकिरणछ भरनक असारमञ्ज शास्त्र महिन हात्रामिश्रम वास्ति । हेराट व्यवक शान শুনিতে বেশ মিষ্ট হয় কিছ শায়কেব গণার खक्र खान्ट भावश कांत्र ना। जक्र १४-मक्ष वाभिनीव कामण ऋत्र ठाउरभानित्रस्य भाउत्रा याग्र ना—शत्रामिष्राम श्राह्म वानिष्ठ इक्टेल কিরূপ শোনায়, বিশিষ্ট অভিজ্ঞাপ সেটুকু ८वण वृत्तिए७ भारतम। यरन कक्न. कानाफात शास्त्र दियायम वा श्रुविद्यात दिवधाव दिकामरणत महिष्ठ होत्रसानिष्ठस्यत ये मकल द्वत वाकारना र्टिश (नस्त्री खनार्टेपर, এवः পाश्रक्त भगा कहेट अथन जे अन्न चाहित कहेटन, ७ थन काका कांग्रदमानियरमञ्ज खरत्रत्र भिरकके सुँकिरव। **जारा करेटन ब्राजिनीय विद्यायय महे ও जामन** मकोट्डब खनान ६६८४।

ভানপুরা মন্ত্রি নিমে লাউর থোলের

চারিটি FYS ! षाटक ; मट्या स भाका हे**न्स**ारखंत्र खांत्र ७ भारमंत्र छहेति শোষাবী বা bridge. নীচের **599**1 मात्रादौटक कारबंद नीटि छका विश्वा स्कामात्री वा ८ अभ उँ९ शासन कता रुहेना शास्त्र । গুলি বা মেন্কা থাকে, তাহা সরাইয়া স্বরেব अल व्याप्तम ठिक कतिया (मध्या रय। (मन्का অল সরাইলে ভারের টান tension वाष्ट्रिया वा किमिया ऋदित्र मिल कित्रिया (सम्रा ভার পর জোরারীর স্থভা বা দিক ঠিক যেথানে ভার সোয়ারীর উপর ঠেকিয়া पारक, रमहेशारन এक शांद्र ५ हेकि गया, ২ বা ৪ ফের হুতা, ক্রমশঃ টানিতে হয় ও সঙ্গে সঙ্গে সেই তারটিতে অক্ত হাতের এক थाअन मिश्रा निष्टिः निष्ठः निष এक मदम्बे भक्ष कांत्र छ इट्टिव ख खुर्श मनार्डे इ**हे**रन,—-बडकन ना शिक्ट शिष्ट या ध्योक (यम द्रम-युक भटक श्रीवन ক্ষা প্রত্যেক তারেরই কেবল একমাত্র ञ्चान चारक दयभारन ञ्चा चामित्र दन्म রেশযুক্ত থব ধ্বানত হয়। কোয়ারী আরও नामित्रा । जिल्ला ८ वर्ष वर्षेत्रा श्रम्यात्र श्र्रेत्व शिक्षिः **भक्ष क्या** ठाति जात्वर (भाषात्री थिंगटिक कात्रक कतिरम, कांत्र भन्न जानन-निष् करेगा राजया या এक हाँहै बागरन मात्राहिया ও अन्न हाँद्वे उठाहेश र्यामका जानभूबात जूषो टकाटनम छेलत कतिया ভারতাল দক্ষণ দিকে गरेया ভাতা

मामक काईटमान (य नवा काठे, डाठाव मशारमण मक्ष हत्यत तुषा धकपितक, ७ सना'सका श्र किशी कात्र लक्षिएक मिया जनन नार्व ধরিবে, যেন ভারগুল কবতলে না লাগে। कई खकारच भवित्रा मक्तन कारनद निकड थाड़ा करिया बाबिया, मिकन मधामा होता अथम ভার ও দাক্ষণ ও জানা হারা ২য়, এর ও ৪র্থ (৪) পা, সা, সা, সা। ভার পর-পর ধ্বানভ করিবে।

ছহাই হহল ভানপুরা বোঁধবার রাঁতে। यरधात्र छात्र छ्डेिष सफ्ट्स, अथम ए दिनि भूमाबाब भक्षाम ७ ठकुर्थ हि भूमाबान रुए। छ । एवं मकल हा। शीएक नि, म्। अब भर बाधाई व्यक्तिक निष्या यात रमक्त भनाव खकन, त्महत्रभ प्रदेश यडक दौधा छोउन। সেজক্র একটি গলার ওজন হিসাবে স্থাবের खर-मनावा वा हिर्फालः कक छ मूनावादः **अकार्य स** सङ्ख्य युर्-मानाका सावा । छवाञ

खारा ६३८न जानमुत्राद खत এरक्रम छुरु भिकास उठ्य हि मुनारांत भक्षाम । थ्यान ७ कर्राय, यथा,-

(b) 91, 71, 71, 71—

আরও অক্ত রকমে ভার বাধ কচয়া থাকে। যে রাগিণীতে পঞ্চম বার্জ্জত, গ্রহা नाहिनात्र भगम भक्तमत जावित्क मधारम वादा উচ্চিত,--- त्यमन जानदकाव, श्रु'तन्ना, हि दिन्ना गांडना म्ख्य। मार्तिया, क्यंख, नमख, नक्षम, दिर्माल, (मा'क्मी, ल'लंड जाहिरात भर्य,--- एड मरल डाशियर अध्य ये व खें व वाल्या अवस कांबर्षि भक्ष-मद भ वन्। कं, मनारम वा मा स्ट्रंब एन्ट्रविष्ठ ५ छ। । द्रावाबा व कांबाबा किट्न ८ * वांधा रुष्या थारक छादा रुष्ट्रण हिलोब अकाव वांशात्र नी ७ वस्न-

(२) मा, मा, मा, मा। हेरा कित कित-। कत जानिया आहियात

স্বিধাৰ জন্ত-জাৱও চারি প্রকার বা ধ্বার্ नियम व्याक्त

(७)भा, नि, मा, मा

हर् ८००१९, रिकाक कारमास, जुन्न । नीः সাবস এচ সকল রাগিণী গাহেবার সকে । শ্ব সঁহায়ত। ববে ।

গে সকল রাণিণীর পান্ধার শ্বর শলী, ्मह द्रापिना मकरनद्र पिरम्य छिपरयाती।

(८) भ, नि, मा मा।

शायर मार्ल, जन्ह नाचांव द्वत वान व ममयानो, (मह मकल द्राशियात्र भएक 🕩 भर महर्याजी यथा, हरन, स शहास मम्भा व क्रांभिना खोन।

(७) मा, भा, भा, भा। हर्शार श्रांच कार्या स्ट्रांच

त्य क्रांशिशाट अस्त्र अस्त्र नामी नाहः आिक्रवार मध्य क्रक्तम वैश्वित्न िम्स क्षित्र क्षा ७८व बङ्क्षेत्र अश्रह्मान कवि क कर्मा क्रांच्य श्रांच्य श्रांच्य भ्रांच्य भ्रांच्य क्र, खाहा ना क्रमें म शक्य री। धार्क छात्र

थानप्रवाद नाटि ट्यमन ५३का ट्रम्थिदी व' bridge प्यारक, উপরের দকে সেই क ' ना जिया भक भाषाची स्वाद कादण धर .ग. श्रांत्र ५ ५ मा इड्ट भा दड. १ के छ छे १५४ म नागारमा द्वां भौरहत्र भिरक क्रम्भः खुन्हां भए। ७ তারের কম্পনের সাহত নীচের দিকে क्रमणः नामिया । महिया चामात्र मछायल

। कार, ভারেব রেশ খারাপ করিয়া নিভে 1 51 1

ा । न्लामीत छात्रशांग श्रुव fine touch 7 1 1

त त्थला इ**हेग्रा धारक,** जान (सथा * 1

১ ফাত বিজ্ঞানের নিয়ম ভাতুদাকে, সা, ৩ বের "भन मन्थापि क्रामिक स्थ, खादा लब के दें, डेट, के दें, है, डेट, ै मकल खद्यारम किया छन कत्रिटनम -का यात्र। जा भूटत्रय भारतः व कम्मीन-ा। > श्रीव्राक्त, ८व श्राव्यंत्र भारताय कम्प्रांस গা হচবে ই। আবার রে স্থবের কম্প্র थाएक दु॰ मिया एक कविटन शा स्ट्रिय प्लान-मः था। याधित इहिता छोडा कहें कि था या ३८७८५—

ां स्ट्रिय कम्मान-मःभा ५ वर्गा न स्ट्रिन कम्मान मरशा है, जनर

11 * * भं " १ व्हेट्य (ভারা)

শায়ারা লাগাইবার পেধান ই দলা, শার অর্থাং মোরামুটি ও সহজ হিসাবে সা " ।। न -८ भग्रात्रीत् । नार्थाः वात्क, (म्यात्न स्युत् कम्लन् मर्थाः २८ इ. तः, दत्र भा मा, गा - रव वर्गित मिंह ह रूपार्म व वारना। भाषा निर्मार १, ७०, ७२, ७७, ८०, ८४, ८४ 1 253

তারের যান্তর সম্বান্ধ নিয়ম এই যে---ভানপুরা বীভিমত স্থারে বাঁপা হলে ঘণ্টি সমন্ত ভাবের দৈর্ঘ্য ১ ধরিলে, উপরের ल एटब क विश्रो यात्र। इकाब वादन कि, क्यार-क्रांजिस नेनमधीक (य क्यारम इक्टेर्स, জীত বিজ্ঞান ও অর্মিল (harmony) সেই অংশের ভারে হাত দিলে বা ভাগ করিলে পেও কি নিয়ম অহুসারে ভানপুরায় প্রপর স্বশুলি বাছির ছটাব। যথা,— मा, (रा, গা, মা, পা, धा, बि, मी,

> 台 香, 岳, 安, 备, 40, ≥1

এই সকল স্থা ধ্বনিত কটবে। দেখা यां १८ - एक ८य मन्नुन कारत मा भवनिक इहेरण हाशत है अश्म अर्थाए हिक मध्या खादात मी ध्वनि इहेट्व ; क्षु वा जानब्राधक इहेट्छ है कार्य मा श्वनिक इहात,— है वा कान्यप्रक वर्ष है कारण भा श्वनित करेंदि ; है वा जाभन्नांकक इस्टें के जाराम भा याहित इस्टें । "অপর দিক" হচতে বলিবার অর্গ এই বে,— ভারটি কুই দিকে বাঁধা আছে, যে, বিশুটি এर निक इटेर्ड अन्भूर्व डारबर है ज्यान छाड़ा

(महेत्रेश हु अब व्यथन व्यश्न है

海山湖 "

26m n n 26

इड विजयात डिक्किन खारात कर बर्ध পর পর শুর কয়টি ধ্বনিত হয়, যথন সেই ८मरे व्यश्त जाउँ (हाँग व्या

> (थाका जादत्र स्त्रिक क्य----मा कारवर है कारण है हरन अविन क हम--- दर

四十二 四十二 n & n n n n 2 2 m m (A) a, a, 7/1 l

সম্পূর্ণ তারটি বাজাইয়া ছাড়িয়া মেওয়া হয়, . (ক) সা, প' — ছুর পঞ্চম ख्यान मक्तिकारिनत निष्य-**व्यक्त**मारत अथरम (थ) मा, मा— सूत्र मधाम পুরা ভারটি ধ্বনিত হইলে, সা স্থর বাহির (৩) कामन्পূর্ণ মিল—Imperfect হয়, ভার অবাবহিত পরেই তাহার টু অংশ concoid ধ্বনিত হয়, এবং তার পরের দ্ব অংশ, তাবপর কে) সা, গা— ত্বর গান্ধার के मार्म के छाति जयर श्रादकाक वार्म कहेटल (थ) मा,---(धा कामन) সেই অংশাপ্তকামক শ্বর বহিপতি হয়।

অভ এব ভালপুবার সা ওরের ভারটি (ঘ) সা, জ্ঞা (গা কোমল) বা harmonyর স্থায় করিয়া থাকে. এবং Lमें बंग जानभूता वाबिट बात्रक करिएन শরটি যেন স্থারে ভারয়া ধায়,—

> म् भ भ भा भा भा नि भी > 3888888 मां उत्रीं भी विनि भी है है उर्व उर्व उर्व उर्व उर्व

সব কয়টি প্রহ এক সা হইতে উৎপন্ন হইতেছে। মাবার পা হইতেও সেইরাপ, প্ৰেক ক্ৰ ধরিলে, ভাষার উপরকার ক্র भक्ष भृत्कित मा स्राज्य मण्डे के बार्भार्ड वाधित्र क्टरव।

পা হাবের হুর, ও সা ও সাভারের ত্ব, যেগুলির চার্মান-শাস্ত্র অন্তুসারে মিল मछन, भिरु स्ट्रबंधिन भन्ने भन्ने भन्ने भन्ने स्टब्स সাহায্য করে। **স্থ**র-মিল শাস্ত্র অনুসারে मिन छिन छोकार

- (১) উৎকৃষ্ট মিল, best harmony, -म् मा, मा, मा, मा, मा, अवाद बढ़रक ७ ७१हात काष्ट्रीय ।
- ভাব যথন ভোঁৱা না হন, কেবলমাঞ (২) সম্পূৰ্ণ মিল—perfect concord—

 - - (গ) সা, ধা—

যথন ধ্বনিত কয়, তৎক্ষণাৎ পর পব এচরূপ তানপুরার চারটি ভারের মধ্যে উপরি-উক্ত भवनि छि९भन्न कहेगा, जाशृस्य अन्न-मः राशन स्टानन क्लाफ़ा छहेछि এकमरण भाहेर गहे harmony र रहि रूप ।

अथन वक्तवा इहेटल भारत (य, यथन ভানপুরা গা, ানু, সা, সা—বাধা হয় অথবা পা नि, मा, मा-वांधा इत्र, उथन नि मा, চুইটি ভার ধ্বনিত হইলে শ্বর-মিল হইতেই পারে না, তাহার উত্তর এই যে, নি, সা, ছটি ভার ত একসঙ্গে ধ্বনিত হয় ন।। নি का का का किया । अरम स्था यास्टर, स्ट्रिय सेशा छा रहि स्थानक इस्कान अरम जा সুরের তার হাতে পড়ে। তওক্ষণ নি সুরের ও অরামল শাস্ত্র চিসাবে তানপুরা গানের ভার, উপরি-উক্ত নিয়ম-অনুসারে, তাহার বিশেষ সংযোগী, স্বাধীনভাবে গলার রেওয়াজ নিজের স্ববগ্রাম স্ষ্টি আরম্ভ করিয়া দিয়াছে उर्वः मा भूरत्रव ভारत्रव एका स्वक्षारमञ ষে কয়ট হুরের সহিত উপরি-উঞ্জ হারমনি হুহার জোয়ারীর মধ্যে সরগ্রামের সাম হুরই भारतात्र नियम प्राप्तारत स्थापा मिन्न इकेटव, সেত কয়টি প্রাবলম্ব ও মিষ্টত্ব লাভ করিয়া লোকে ইহার নিম্মাণ বাবসা করিলে ইহার श्वमानत्र शृष्टि कतिएल थाएक।

মোটের উপর মেখা গেল, সজাতবিজ্ঞান । প্রাপা ইহুবে।

করার পক্ষে উপযোগী ও ইছার সভিত অভ্যাস कात्राल प्राप्तत्र उपकर्ष-माथन रुषेया पाटक। পাওরা যায়। অধিক সংখ্যায় ও শিক্তিত मुका थुवरे मन्त्रा रुस्या मकरणद भएक महस्र-

শ্ৰীআওতোৰ ধোৰ।

. একটা পুরাণ গীত *

মহার— একতালা ও কাওয়ালা स्थात थावा व्हिट्ड ७०, चात्रकत त्रक्नी, এ भगरत खान-नाषदत्र (काशात्र खनर्गन,

स्त ग्राक चन छनि। ময়ুর-ময়ুরী হরবিত হোর চাতক-চাতকিনা ॥ काष (कडकी ठम्मक दृष्ठि (मँडेव्हि ट्यास्मिक्टिक धारनरक खारनरक त्यांह कनयात्र शाननारच गृरह ना त्मरच ॥ विद्याद थएखादक्यां कि विवास कि किनसाव क्र जमरम् शाननाथरत्र कोषात्र खनम् ॥

রচ্যিতা-অজ্ঞাত।

গুর ও সরলিপি—এজোতিরিক্রনাথ ঠাকুর।

স্বর-লিপি मा मा भा भा ना । धा मा मा भा स्थ श भा ता ० व कि एक छ ধা -া -া সা ধা পা মা

[&]quot;माधिमिटक उम" भटजब आवम मःथाांत्र भूकनीय विकासनाथ ठाकूत्र अहे गीछित वस वामरमा किया मनाटनांडनां कविशाद्यन ।

रका था ० ० ० य छ १ । मा भा भा भा विकास विकास

I क्या क्या ता य मा ना मा ता ना भा ना ना III च न, भ त ८क ० घ न, छ नि ० ०

II मा भा भा ना ना ना मा भा ना ना ना I म सूत्र का ० ० ० ०

ार्भार्भाभा ना ना मां ना नश्ना ता ना ना ा इति भि उ ००००० ति ०००००

I ला ला ला ना -मा नया शा भा ना न न न I

रिया । ता ता ता । जा गा गा गा गा गा । I

किया या नानानाना मा भा भा भा व्यभा मखाना II

I मार्भा भी भी भी ना -र्जा भी जी -1 -1 -1 -1 -1 -1 I

I शा ला ला शा ला ला आ ना भा ला ना I

I या था था। भा भा भा मा मा ना बद्धा न न I. श्रा थ, ना ८७, श्रु ८२ ना, ८४ ० ८४ ० ० काखराली I ता -मा मा मा मा- भा भा भा भा नथा -मा -। भा -। -। भा -। -। मा বি ০ ছাত খ ০ ছো ৬ জো ০ ০ ০ ছি ০ ০ ০

वा य ७ हम (क, भिन, मिन) কাভযালা শেষ

न हा हा न मा मा ना मा Isali भ (य F थ। 9 न 0)

विश 1 -1 -1 -1 मा भा भा भा प्रविधा- मुख्या -1 म I ণি ০ (41 थ। য় 21

] ख्या द्रा वा मा <u>।</u> বা मा मा न न गा। ঘ

(ठा त

कखांत्र सन इहाउ पन है। । त कथाना नाएं विकान।—ना रग्र करवर वा माठ काउ अकथाना भावमा घ हे । एक ना। वहरत कात (क, मुं कात किं। धकराना माइत-कार छ। bाकद्राभद्रह काछ । मत्नरुष्ठा अिं एक देश विकास नात्न एक **माक्षाह्या** উপর। বেপ্তা কর্ত্তার দেও্বছরের নাতিটার রশিয়াছে না ? वार्य--- वक्कर (ठोक वश्रम । क्याक्टिम त्रः, ভিপ্ছপে পাঙ্লা চেহারা এক নাথা ঝাঁকড়া চুল আর ভাব ভবার বড় বড় ওটো জা জ ল বাচি গিমেছাল কোথার সমস্ত সিম—" ट्राट्य ठनगटन ठावनि ।

Cकानव भागा भागा वार्र कर वार्र कर वार्र का वार्र कर वार्य का वार्य का वार्य का वार्य का वार्य का वार्य का वार्य काकाव (काक के का (ठाव के — क्कास को बटल "श्राव) (क्टल लाव (पार्य याद्व महस ना भारत्या भारता भड़िशारक व्यात कि। कटरा नेडिंग कातामझ ना-" हि म् करिया भूगर्त थवत्र मिर्ल किनावा निन्छ। इस, स्किशेत्र गार्ल এक है। ५५ लाइन। किंद क्या जामाश के रूपिंग किंदा क्या किंदा चार्जाको या करता चात्र ६म सार्वेटवर्षे वा नार्वे ।

বাব্র বাড়ী চুব চইয়াছে— মহা হু "সুল। কোথায় গ তাহাব মাহিনা প ভিয়া আছে, কাপড়

"हैं। हैं। ७१६७—८मथ (मथ - "

"आद्य। — यह (व ८क्ट्ठा।"

"बार कव वाहि। (अहिं—"

(क्रीफाछ। (य (काभोव निवारक काकात क्रिका किर्मा का एक काका कर्मा का का किन्ना

कर्तात छाईरा। कनिका छात्र भ ठाकती बहेता याँहरन। করিতে আসিয়াছিল। কিন্তু চাকরী করিত না — তামাক খাইত আর টেরী মেরামত কবিত। সে যাই হোক এই সব চোব ছায়চড় ভাহার তুহ ৮ক্ষের বিষ। তুই হাতে ইন্তা কৰা টেরীটা ঠিক করিতে কবিতে আসিয়া সে विशामी भिका अम्बात्य अक्टा ६६ क्ष्रोत शारम यमाइमा मिम-"भाषाः-" ।

व्यान भरक भरक है छिए इर ७ जिन हो छ পিতাহয়া বিয়া টেরীটা ছহ হাতে ঠিক করিতে লাগিল। সম্ভাষণটা হুহুয়াছিল আন্ত আক্সিক কেন্তা ভাষাতে ভগানক চম্বিধা **डिठिन- यम विशाद्य अक्टी सनक** डांशब महोय वाङ्या शिया माजिएक व्यादन व दिन। আর হতভাগাটা বোধ হয় মুখটা একটু ফাঁক ग त्रिगां हिल निहर्ण मार्गाख अक छै। हर । है। इन निहर्णन ।

Б 1916.—Бठांश्रष्टे— श्रभ शाम. ४१९-१⁴९०-धनाम फिल-

प्यत्मक ८०८। कहेन किन्द त्महे (व .म দবজাব কোন ঘেঁসিয়া জালে-পড়া ছবিপের या ७ अन्य इंडेण ना। (DI तो है **यार**ण व किनात' कांत्र व्यानिया वाफ़ीत लाक छ पूर्वत कथा (कांग्र — "बाई छेईहरनम्।" পাড়া-শুদ্ধ সকলে হাপাইয়া পড়িল তবু ठारांत्र मुथ । भर्मा ६कछ। भन्म ७ (कर वाहित किर्दर्भिका ना । आकर्षा।

भाषाक जक्षा एक्षेष् भिषा करेंद्व ना ? नामित्नन। এতক্ষণ ভাল মান্ত্ৰাতে কৈছু হয় নাচ, ধন্তোর কাহিনী গুনিরা মহাপাতকাট

वाफ़ीटक किन नी किन्छ, शाम-नन्नारक बहेवात डेखम-मधाम खेषस नाफ़रनह किन

উত্তম-মধ্যম ঔষধ চলিতে লাগিল। চলিতে **हिणाटि द्रांशी १९ द्यांकात्र मन मत्रकात्र (का**ंग रहेट डिठाटन, डेठान करेट मामाटन, माधान रहा ७ देवठेकथानात्र व्यामिका **उठिय कि** ६ यथानू सम् ज्थान तम्।

"गाः वाषाटक ভाग ভাবে পারা যাবে ना - " मी । उक्छे दिनन- "इन टनम्।"

"नाउ वाणिएक शांगरम-"

"ना—ना -श्रीमरम मित्र किहरे रूरव ना। क्षां छा । एवं वाछित नत्यन छिख्द E P PITALS

"आहा- हा- ट्यामना कि मन कमाहे नांकि गा—" (भजान- था थ कां अमारहर विद्वाबान कर कथा बानमा क्लिम् हाट्ट

ंकह रेशाट ७९ (क्ष्रां कर्षा' किया मा (कम शतवारम अनक नत्रक। (महे नद्राकर कुडीभारक हडाहमा यमपूर्खदा व्यनस्कान धावता या जायन याजा । भटन - कार्य व थयत भारता उपश्चि मकरनहे भिर्माता उरिंग। भाषांत्र वथात्करम ६ रमक कमाउँ भागित वाना यर ्ठांथ छ्ठा नरेश मांभारशास्त्र, राहांत्र वाकान कानशा मला स्विट्ट व्यानिशाहिन। মুথফোঁড়ে ছেড়োটা চাপা গলাম বালগ

> क्षां। य॰ बार्खि इंडेक मा (क्रम व्यक्ति-गांधा कात्न जाहा लिकिन ठिक।

-- नागम विक्रवाय छाना किन मार्येय रहारहे के अधार वाय क्रिकाहात तैय रकार्य रकार्य होने भिर्

रामसा अ कथाने सम्माहे द्विएक भाविषा- निक्रम भक्षीत्र। ছিল। তাড়াভাড়ি ভূলটা ওধরাইয়া লইবার "আঃ, ভোমানের আলায়—" अग भागिक स्थाक का कि आजन वित्यवान "वार्म— का या व जवान (बारक । आया व সহিত তাহায় কুটবল-ত্রস্ত পামের • একটা উপরে কস্তাতি করতে হবে না—"

विकठ धक्छ। ही दकात्र कतिया (क्ष्ट्रा) महिला भिष्का । পড়িয়া পেল। পড়িश এমন ভাব দেখাইছে চুরর আর কিনারা ছইল না। माजिन ध्यम सम वक्त रुद्या यात्र व्यात कि ! यख्रभाटलब काउँटलब मध्य भिन्न (नवीब व्यानिकार्यत्र मुख्यानि छात्र नाम, ट्रांच इंटी मिश्रा रान आखन इंदिश दाञ्जि इक्टेंटिक्ट् ं देंगेंगे क्केंगे ठाना, नाकी कृषिया कृषिया काषिया काषिया निश्याम পড়িতেছে। কেষ্টাকে হাত ধরিয়া তুলিয়া এক तक्य दकारण कतिश्राहे जिनि वाफीत ভিতর লইয়া সেলেন।

मान्ना वाङ्गा (मन्द्रा उरमहा दगम अमन्द्र किशा, अहे नव वाक्षानीत ट्यट्यट्सक <u>जग्रे</u>—डाहारमञ्ज्ञ मात्राञ्चक मात्रात्र ट्लारक না করিতে পারিল উন্নতি, না হইল পাপীর माखा। পाषाय लाटक रूडाम रहेश हिन्दा े (शबा। किन्नु जाहे बिक्सा क ध्वक है। (हा बदक काटक পारेबा ছाড़ा यात्र ना। चाद्र टमदब्दमद्भ अमनखाद दहात्रदक ख्राच्या दन ख्रां दकान मर्डि উচিত নয়।

ज्यम जम्मरतत्र উপরে উঠিবার সিঁড়িতে (बाबा बिमया बाब डाइग्रंब शास्त्रक कार्ष्ट् बाब-धक्यां नीटि टक्ट्री बाबबा-विश्वा

<u> शिक्षां भारेटल भारेटल यथा भटबर है। भारेटल्टल यात्र माटब माटब भिरुष्ति।</u>

नाथि त्म दंक्ष्टीत्र भौक्षत्रात्र वमादेत्रा मिन। त्रिजीत এই ভাজনার যে यात्र हूभ-हाभ

ाठे। हर ना महारे—वृत्यवात पूर्वारे मिथा कामारे नतीत वारकत मूर्य छाषाछन्न গেল, দেখানে কর্তার পুত্রপু উপস্থিত — গ্রাম। তাহারই প্রান্তে ভাল-ভেডুলে ঘেরা কুঁড়েথানিয় উঠানে বলিয়া চাৰার মেমে ধান ঝাড়িভেছিল। ছেলে ভাষায় কলিকাভার চাকরি করিতেছে। ভাহারই मः माद्र कक्षोटक वैश्वित्रा प्राथिवात **कक्** বিধবা গতর থাটাইয়া উপায় করিত। त्मानात्र ठीम त्एटम,— खात्र ८ठीम यदमस यसम हहेटन कि इस,—अकि मारमहे तम कहे छे कि ভিন টাকা ক্ষিয়া পাঠায়। সে টাকার क्रिकेटि (म थक्र करक नार्ड, मबरे परमञ (य-(कानिटिक (म (भाष, (मरे (कार्य मिक्टनम घडीटि श्रिया श्रीक्या प्राथिशटि । ट्रिटन विवाह पिश्रा डाप्पानां त्यो यथन तम पत्त चानित्य, जनन त्महे छाकाम चामन ठाँकी क्रभाव टेलेडा, विहा, वाडिंगि, बाड, जनम काविक গড़ाইशा शा छदिया किएव। छथन कि आब दन अमन्हे कविशा भरतव बाष्ट्रीय धान आफ्रिश (वड़ाइर्स ! उसन नाडिनिरक कारम किसी मा छ्या व छ भटन था एका इस मिन-तांक भा बिनम् शाकिरव । 🐇

८कान् स्पूर्वत ज्ञान-स्थान प्रधीन जान-

করিয়া ধান ঝাড়িতে বিভার ছিল। কটলেক গিল্লীমা ভারে পাওয়া याथात क्या कथन् (य शन्हिस्य मिह बार्थत स्था छत्र। कत्रास्य त्राथ्यक, छ। हेंप्रांठी द्वराख তাল গাছটার পিছনে সরিয়া গিয়াছে, উঠে কোখাকে যে গেছে—" खाका (म खानिएड) भारत नाहे। (थश्राव करेन यथन माधारमय ८७एम ताथान चानिमा গড় করিয়া বিজ্ঞাসা করিল—"ভাল আছ ত वर्षे शिम ?"

রাথাল কলিকাভায় চাকরি ক্রিভ।

যানা পূ

यांहे अकवात्र शिमिभात्र छा।त्रवि। हू रच न्यामि शार्य श्राट्स १ ८० कति—'' यहि. आत्र क्टोत्र थवत्रहोड—"

"(कहोत्र कि थवत (त्र, ভाग भारत त्राख्य वकांकण वर्षे—" **७ (म ?** "

को कहरक गांतरव।"

"धा।—काटक सावटन। आसात

यरहे। डा एनाइ। नाकि वर् लाक वरहे—" यादक कथारक।"

"वन् वावा नव पूर्व वाथान—वाडा बागाद बारह ७ ?"

"बार्श मन्नद्वक कार्रल (शा—का कार्रशा यावृत्र (वो नाकि वात्र-वाफ़ीटक এमে ভাকে

कां खत्रात्र मा खामारेका मंत्रीय विधया ध्यममेर भंतां भंती द्वैटि भंगक वटते। तां मनक मा

"दर्भाशाम त्त्ररक-- त्वामा दक्षे धक्याव (थांख नद्रवि ना ?"

"थुँ क्व वक मि कारिन। गर्छ। मुनूक छ। यंका करत्रीह वर्षे जस्य ना जामि जार्रिक खाषाटक। छ। त्राममस्त्र मः तक इथ "ভাল আছি ও রাধাল—কথ্ন এলি করছিল বটে—আহা, ছঁড়াটা পেলক জর গারে-"

"এই আলাম কংখণ—তা বলি কি "এঁয়া, এর উপর আবার অর! জং

"है। ८९। ब्लंब वरणक व्यंत्र, क्रारक्षवर्धि

भारत्रत्र दक्षी,--मा ना दम्बिटन दक् काशा क "आष्टिक ७ वटि, ७८व वावुरमत्र वाडो । एमिटव। एमिश्वा आत्र काहात्र ७ साहेर्स ना। नाकि शंकामा रहे छिन्द । তা शंकामा कि छू । छ छान वक कविया विभवा कनिका छ। य শায় বটে ভবে ট্যাকা চুরি গিয়েছিল বটে। যাইবার জন্ম প্রান্তভ চইল। ভাহা মেথিয়া জা জান কি পিনি কলকাতার গোক তেনারা রাথাল বলিল, "ক্যানে, ক্যানে, এখন অভ कमार्के वर्ष । व्याका, व्हिल्लिंगरक व्य स्मरण, जाका कार्या । क्रमिन शत व्यामिक याव (मिषाटक ; जामान मार्ल्ड गाटव वर्षे । कषाटक बाद क्रिम এकाजी (म मूझक ?"

(क्ष्ट्रोटक--- চूजि क्रब्रिश (त्र १" नाज जिए ए एन क्था किन्न क्राहाल द्रश्चि "তা লয় গো, তা লয়। চুরি করবেক না, তথন সেইএকটু কুপ্ত হইয়াই বলিল, क्रार्ष ? जात्र काष्ट्रक ज भा छत्रा यात्र नि "ज्यक ठन। जात्व्ह कथारक मि। जूकिए

षाकाम-(छमी वाफ़ीत (वफ़ा - कछिहिन्ना ভোরের স্থ্য তথনও পঞ্চার জলে একটু উক্ याब्रिट७७ भारत नारे। - भाषानीरत्रत्र ठायात टिटम निष्य भिष्य हिनक वटी, छाटे गाँक स्माद्य मिद्र भ्रम भूग जातकत्र छिए हातु-

फुर थाहरक थाहरक हिनाकिन। भागराकारत ভাষার যাওয়া চাই, কেপ্তাকে ভাহার পাওয়া মুদিল। ভাহার সকল অল কাটিয়া ছজিয়া हार, এইমাত দে **कार्ट्स। এইটুকু** कानियार र्धां विकार हिल्ला कार्य के विकास विकास ।

(७ 14 — ८७ 14 — ८७ 14, हः-हः-हः-द्व-এ -- এ—মাগী—

হাওয়ার গাড়ী খোড়ার গাড়ী গরুর গাড়ী **धात्रिकिक क्टेटल व्याणिया शिक्सिट्छ।** ठाला দিল বুঝি! সে ভাড়াভাড়ি বাঁদিক্কার বাস্তাটার চুকিমা পড়িল।

ख्या क्षात्राद्य इहे कुन क्राणिया नका वहिया ां नशांटक--पाटि-पाटि मान्यस्था (मना।

प्रथा कर मां, बका कर, जामांब वाष्ट्रांटक टमरे बाउँडिव कथा--বজা কর---

भिया एथू এই कथारे दिनाउकिंग। आत्र भिक्र वहत्त्रत्न हिल्लिटिक किर्मा ৮রণ ছুইটা ভার সেই সঙ্গে রেলের গাড়ীর मउद हु िशाहिण- (भारक त हार्शन हिंहे कारी शका शामाशामि कारकश ना कत्रिया—विदास नाहे, भाखि नाहे, लका नाहे। कार्यात्र विश्राष्ट्र, त्य बात्न।

र्या ज्यम (यम जाइल (उर्क क्रामग्रा **উঠিয়াছে, দেশের লোক রামসদরের বাসায়** একটা ছিন্ন মলিন বিছানায় কেটা পডিয়াছিল — व्यटक्रक त्यांटक धारकवारक धारककर। मा शिमा (क्ष्टीरक छ्हे हांहफ मिनमा यूटक म मर्था চাপিয়া ধরিল।

"मा—" विनिद्या ८कडो धकवाँद्र ८**ठा**थ टास्थि—टिंट्यंत्र दकारण वक् वक् क्रेट दकांछ। **Mal** 1

"बफ़ त्यामा—" त्यहा जावाब त्वाब শত-বিষ্ণত হইয়া গিয়াছে। চোথ ছইটা कराष्ट्रणत गड गांग। वाहारत—! (क्ट्रोन সর্বালে মা আপনার ক্ষেত্-ছন্তের সোনার পরশ বুলাইয়া দিল !

কেন্তা আবার চোথ মেলিয়া চাহিল--ডাকিল, "মা—বড় ভেষ্টা।"

"এই" (य वावा, खन-" मा खन मिन; क्रम थोडेब्रा ८क्ट्री ठक्क मूमिन।

মায়ের কোলে মাথাটা রাখিয়া কেষ্টা নিবুম চইয়া বুমাইয়া পড়িল। আর ভাহারই हि मा शका, जामात्र वाहात प्रथा यम शास्त्र थीरत शेरत कां वृनाहेर्ड ब्नाहेर्ड াই মা—যেন প্রাণে-প্রাণে কিরাইয়া পাই। মা তাহার ভাবিভেছিল, বারো বছর আগেকার

व्यावर्णक कामण-भन्ना जांशाव काष्ट्रियां भारतत अनेन कांत्रिया कें।तिया नकन केखत आकान जानिया स्वर्ध नामित्राहिन, उथन यत्रानामुथ जामीत भारम विमया। (ऋरणम বুকে শিথিল হাভখানি রাথিয়া আর-একখান हाटक काहात हाकी। श्रांत्रमा ठाया यथन वर्णिन, — ७८त (यमनरे थां कम्, ছেলেটাকে माञ्च করিস রে। তথন সে—

> "ढे-क्-क्-" bमकिम्रा कफ्-मफ़ रहेमा কেষ্টা চীৎকার করিয়া উঠিশ।

"-- कि-- कि रश्तरह वावा ?" "চুরি কবি নি—আমি চুরি করি

"ना ना - एक बग्राम क्रिकिक कर मह - प्राचि जामात्र भागात्र द्यांनात्र द्वरण्टक क्रमन्हें कतित्रां व श्वीरंड त्म होड़िया विवाहिय त्यु त्म त्म

भा ? ना त्म खाईनी ? त्कम त्म টाकात जाईख, এकथाना मम টाकाव नाउँहे द्य ! नाइकटनम कथा छनिम्रा-

"खरनाः— खरना वावा त्नाः— त्निह् त्ना-व्यापि मा—व्यापि मा—"

হঠাৎ চাবুক মারিলে বেমন করিয়া মাক্সব চমকিয়া উঠে, তেমনই চমকিয়া **८क्ट्री भारत्रत्र वृदक मूच्छा कंक्स्रा किला**। अमरह (मरु डाहात मर्क कार्र, धन् वेत् कतिया वर्ष वर्ष ६८ही खन्खरण ८६१४। काॅनिए७एइ। एइएनत्र माथात्र ठा७ नुनारेए । नाउँथाना राट नरेत्रा कास यक्ष कतित्रा युगाहरक मा जयन अक्सरन छाकिर छिन,— ঠাকুৰ, হে ঠাকুৰ—

বাড়ীর কাঠের আসবাবগুলা মেরামতের মিল্লী লাগিয়াছল। বাবুর বৌশা श्रक्षत्त्रम টোবলটা পালিস করিতে দিবার क्रक शानि (पत्राक्षका) अटक 型 图 कब्रिटकां इंग्लिश क्षिक्कांत्र (म्त्राक्षे। हानिया याध्य कविट्डिंग थम् कविया कि এक्छा কাগজ মাটীতে পডিয়া গেল। বুবি-বা কোন চিঠিপুতা। দেখাকটাকে মাটাতে নামাইয়া ब्राषिक्षा कागळचाना क्रिकेटिक्ट त्यथा त्यल, निवयनवाथ त्यहांवा! (मठी अकठी (नांछे।

लाख मामगारेट भारिन मा १ ८कन ८म ज्यन मकान (बनात विका दरोख बानमान काटक जानिया निर्धानां स जिल्लाक करणत অকরগুলাকে পর্যান্ত উজ্জ্বল করিয়া ভূলিয়া-ছিল। আর তার সেই উজ্জেলতা ছালাইয়া *(नार्षेत्र मक्न वर्ध-देवितिता एका क्रि*न्ना चात्र ९ म्लोडे क्रिया উঠियाছिल, এक थानि मूथ। ঝাকড়া একমাথা চুল আর ভার ভলায়

> (योगा ज्यक्रांबरक मुथ किताहरनन। किन्न চোৰ চুইটা ভাঁহার জানিবার পুর্বেই সেহ नाउथानात **উপর**হ शिया **পড়িল। তথনো** তার চোথের সাম্বে ভাষিতেতে, সেই একগানা मुर्थ-कानानग्रा-পড़ा, क-विकड,--बाब कार्ग-भड़ा कविर्णय म ५३ वर्ष वर्ष क्रिही চাথের মেশ্র্যাভী চাছনি। বৌমার চোথে এक (फाँछ। काग आगिश काभिन, त्महे (काँछ। यक कहा कि हिकाई या ट्यार्टिस खेपन পড়িল। বৌমা নোটের পানে চাহিয়া একটা नियान (कणिएनम। हात्रएय- छःशिनीत सन!

> > वीनरत्रम मखा

সিমলার কথা

বেলা পাটটার সময় Summer Hill cauter Viceroy बारकन, खबान बानिना व्यामारमञ्ज होन (नीकिन। जान गन त्यमा मारक भीतिष्ठीत ममन ब्यामहा मियलान (में क्षिप्टलाम। ষ্টেশন হইতে একথানি রিক্সা ভাড়া

कतिया ভাষাতে মালপত ভূলিয়া নিজে ठाशिकाम। त्रिकनात्र मागटनत्र सिटक छोत्रकन कूलि, शिष्ट्रन पिटक क्रहेकन। कूलिए क्रिक्ना ঠেলিয়া পাহাড়েম উপরকার রাভা দিয়া টালিয়া লইয়া চলিল। আমার পিছু পিছ चार्त्रा कछ त्रिक्नारक ठालिया मार्ट्य-त्यरभत्रा ভিন্ন ভেন্ন হোটেলে योई वात्र জগ্র আলতেছে। आमि Ambrosia अर्थार रिम्, त्हार लि यथन ভাছাদেব र छ। इय - हम, আমরা দল व्यानिया (श्रीष्टिमान। दिक्नात अपूर्ण मिनान,. मार्फ इस टीका।

এথানকার সব বাড়ী কাঠের ও ইটের; শীতপ্রধান দেশ বলিয়া কাঠেয় বাডী। कानागार्खां ममञ्ज काँटहत्र,—- त्यमन विमार्जन वाफ़ीएक पाटक रमहे त्रकम श्रांक कामानात ाक्क**त्र क्रिक शक्ता (मन्त्रा का**रका चरत्र (मस्मर्श्वाम कार्टिक, उन्हां कार्ट्य है निया ঢাকা। ঘবে অগ্নিকুণ্ডেৰ বাৰণাও আছে। कर रिम्मू कार्षित्न (हेनिएएँ। कार्ट्स, श्राट्स ष्ट्र इरमक्ति क् जार्ला ७ व्याष्ट्र। ये के हेन्द्रा, গ্রম জল পাওয়া যায়; হোটে#টা সংহ্বী সে জগু খোড়ার গাড়ী ভাড়াও মিলে सब्दर्भक, कैंग्डा-ठामट्डंब मार्कार्या काला चार्ट्ड क्स ; हिन्दू दश्हिन दक्तर नाम्बर ।

থাকাতে পথিতেরা কোথায় কি আতে ভাষা मक्टलह बुबिटिक भारतम अव॰ हो हिटि । के हिं। ठ मिममात्र कान् शाद्य या महारहन, जाश्र জানিতে পারেন। কোন্ রান্ডায় কোন্সময় देवप्रां कि कारणा खाला इब, डाहा (लेश আছে। সন্ধার পর Carleton Hutelsর मिक्छ इर्ट माँ कार्य महरत्र वाकी शिक्त भारन मृष्टिनित्कल कतिरम मत्न इस (यन भाराएक शास (म क्यों मि २३(७(६ ! क्रे धन्न व्याप्त व्याप्त वाष्ट्री भाषाटक्त्र शहा बिक्सारस, व्याखाक वाड़ी स्टाउ चारणा व्यामिट्डिक्- ७ थन व स्मन्न (माडाहे (य ₹**3**

वृष्टि এখানে প্রায়ই হয়। পাছাড়ের कारम भारम त्यरचंद्रां नामा क त्रशं चारक। (वैद्य अक करा क्रम का का नि क्रमांन क्रमांन विद्वारे, स्थिত मिथिट स्वाया मन এक रुरेश यात्र, चात्र वर्षा नाटम। এ बुष्टि द्वनीकर्णक ৰাজ্য হয় না। একে ত খুবই শীত, তার উপন্ন আরো ঠাণ্ডা পড়ে। আবার থানিক পরে स्र्राम्य इत्।

'এक मिन এখানে भूव मिला दृष्टि इहेन, नियाखिन चाउँ चन्छात्र मध्या शानमा शान मा, मिन श्व ठाका हिल।

এগানে যোডার গাড়া সব রাস্তা দিয়া याम ना, कारण दाखा मन केंद्र-नोह, धनर मा। ७८व राशका वड़ मारिक किथि क्रिया शादकन, काश्राह्म (चाफाञ ध्यानकात व्यक्तिकारम वाफ़ोत्रके नाम ६६१त छूथि। भाग। ताखास ८एसि ८कवम व्यादि। এখানে রাস্তায় প্লান্ টাঙ্গানো বিক্ষা ছুটিভেছে, আর বোড়া ও ক্ষানুষ हिनियोट्ड । द्यान त्रिक्माएंड डेश्वांक महिना b'नश्राक्ति, नामो डांश्रेश भारम भारम भारम भारति —कथन cufa खात जिक्मा जात्म हिल्बाटह. ভার পাছু পাছু স্বামীর রিক্সাও চলিয়াছে, কারণ পাশ্ডণা সভ্যতার—"beauty before hright।" कथन (क्थि कान हेश्रवक मकिना निष्मत्र मिखरक रकारण गरेशा तिक्ना ठालिशा वायु तमदन कतिर कर्णिन, भना कहरक भा क्यवंश बार्श विश्वा छाका। अक्षांव भयत एक्छि निभनात পথে (क बनहे त्रिक्मा ছোটে, कानिहास मार्ट्य, दकामछात्र या त्यम--- विक्ना कृति छान (क्षांकात्र मन्त्र कन कन नियान क्षिणिटक्र) चात्र चारकाहीया छारुग्रमस नियान-मिसिछ বাস সেবন করিতেছেন। ইহাতে খান্ডোর

যে কি উন্নতি হয়, ভালা বুঝি না। ডু'একটা
বাঙালা মহিলাকেও বিক্সা চাপিয়া ঘাইতে
কেণিয়াছি কেই কেই হাতে একথান
ক্ষণ লইয়াছেন। প্রদিণে অবা। বাঙালা
মেয়েদের পদরকো ইাটিয়া বেভাইতেও দেখিয়াছে
—শীতে জড়সড, বৃষ্টি পজ্তিতেছে, water-proof
over-coat-এ গাঁ ঢাকিয়াছেন—বেশ
দেখাইতেছিল।

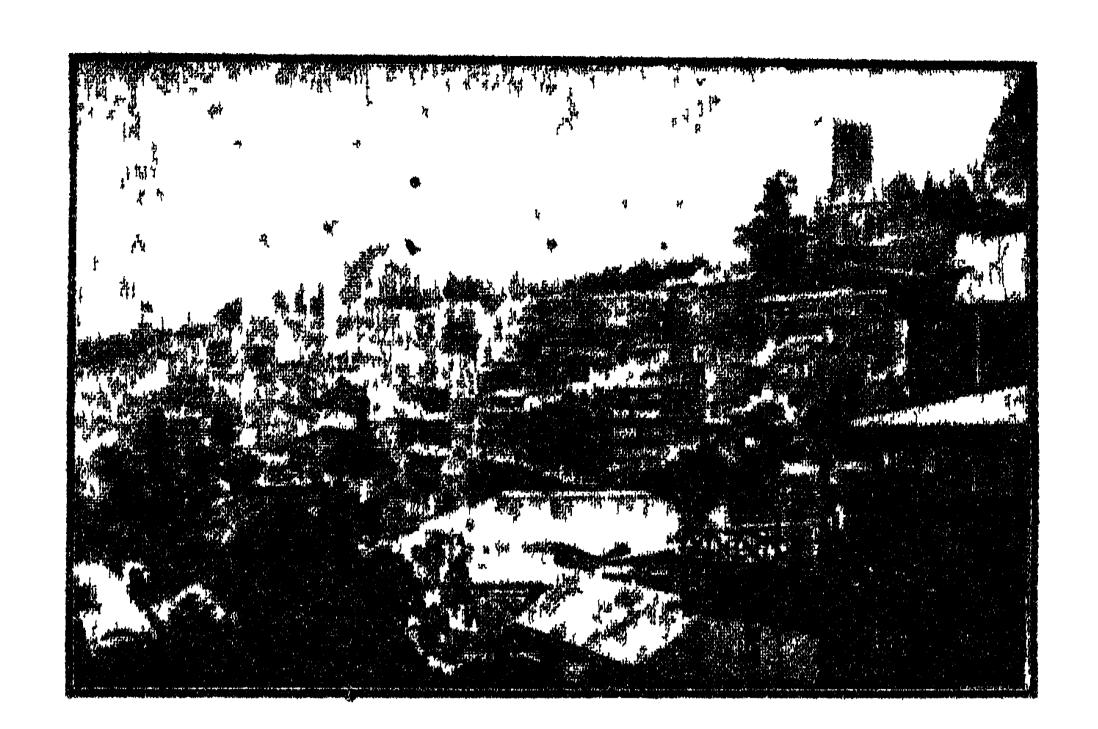
সাহেব মেষেব ঘোড়ায় চড়া বচ্টিতেও
বন্ধ হয় না। কোন মেয় জিনের ত্ইদিকে
ছই পা ঝুলাইয়া ঘোড়া ছুটাইয়া চলিয়ালেন।
এথানে দেখি ঠাণ্ডাব দিনেও ইংবাজ
মহিলারা গলা ত প্রায় জন্ধ-বৃক পোলা স্লাইশ
পরিয়া বাহির হন। কাহার কাহার গলায়
থরগোসের বা বাবের চামড়ার ক্রম্ভর
ঝোলে, পায়ে গ্রীম্মকালের মোজা। ডুনিতে
পাই ষে ইহারা মন্তপান করিয়া ঠাণ্ডার হাত
এড়ান্। নদ থাংলে শ্বীর নাকি গরম হয়,
সেজন্ম ইহারা এত ঠাণ্ডাভেও নিরপ পোষাক
পদ্মিরা শীত সন্ধ করিতে পাবেন।

পালি মহিলাদেরও পদত্রজে বেড়াইতে দেখিয়াছি, তাঁহারা ভেলভেটের বডাব দেওয়া ভড়ার-কোট ঝায় দিয়া বাহির হন। এখানে বিভার পাঞ্জাবী মহিলা আছেন। তাহারা দিনেও রাজার বেড়ান, তাও আবার ঘোমটায় মুখ ঢাকিয়া। তাঁহাদের পায়ে জ্তা,মোজা,দশ-বারো গাছা কবিয়া মল। অভ্যন্ত নীত অহতব করেন ঘালয়া তিন-চারিটি পেটাকোট পরেন, পিঠের দিকে ওড়না ঝুলানো থাকে। য়াত্র নটা->৽টার পর বেড়াইতে বাহির হইলে দেখি, যত পাঞ্জাবী মহিলা দল বাধিয়া বাহিয় হইলাছেন, জ্তা

পায়ে, গায়ে রতিণ ওড্না—খোমটা টানিয়া;
কেহ বা ইজের পরেন, তার উপব পেটাকোটন।
কেহ ঘুবিয়া বেডাইভেছেন, কেহ বা ছেলে
কোলে লুইয়া "Mall"এ যত দোলান
সালান আছে সেই সব দেখিয়া বেডাইভেছেন।
একদিন দোঝ, একটি মহিলা খোমটা টানিয়া
খোডায় চাড়য়া আসিভেছেন, সলে পদব্রজে
ভাহার আমী। নিজেদের গন্তব্য স্থলে আসিয়া
পৌছিলে আমী ঘোমটা দেওয়া ল্রাকে কোলে
করিয়া খোড়া হইতে নামাইয়া লইলেন।
পজাবা মহিলারা খেমন হাইপ্র, দেখিতেও
ভেমনি স্থাী।

विमानारम्ब वार्या भारति (मर्मरम्ब नाटक मख नष अवहे, दू ७८कावा भ्रह्मा त्यादम । अक्टा (सर्ववार्ड केटलन भरत. काम (भाषारकत इरक्षत्रहे (नभाव कांत्र शहर, कांत्र भाज महामा क्ष्र मां। श्रीस मकन कृष्णित्मरष्टलय भारत्रहे क्रिया। अक्रा के बिर्मारम्प्रात्मे क्रम-चक कारन > । । रही कतिशा भाकछो। आधि जक जकि त्मरम् कार्यय माकडी जिल्हा क्षिम् । ভাহাবা পাহাড়ে পুরুষের কাজ করে। কেহ বা ममल मिनरे भाषत डामिट्ट हि। काश्रासा भिर्फ बूधि वैश्वा प्याष्ट्र, खाका शांबदबब हेकबाक्षा युक्टि द्वायाई क्रिया व्यक्किश्वा यहिटलट्हा (करु वा ब्यामा-शिवि करत्र। ७-तकम चायाता (तम जाना देश्ताकीएक कथा वरन। अक धकिंग व्याचात (वक्त मारम ०० छाका, इंश छाड़ा खाशांकारक कालकुछ मिटक हज, था छत्रां मिटिक रूप ना। क्रांखात्र कार्राटमस ७ जयान-कात्र गव त्यरमस्य शारम् वर्षे धारकवारम नान छक्टेरक इहेशा अर्छ।

अथानकात्र शुक्रव कृषिता प्रक्रित माहारवा



সিমলা বাজার ও গির্জা

भिटें कि कि भाषद्वत हों भाषदा कि ना कि ना कि ना जाहावा উঠি: जह जान मर्या नर्या काहारना वाङीब (बाद्यार्थ हान मागह्या थानिव है। কার্যা জিবাহয়া লইতেছে। একদিন দেখি একটা বড় আলমায়রা একজন কুলি পিঠে ব্যিয়া লইয়া চলিয়াছে। দেখানকার রাস্তা এই বাছ লা দেশের মত সোজা নহে, কার্ভেই क्रियार ट्यांठे मरेया यार्टेट रहा। এक्षिन मिथ कडकछाँन कूनि भागाए वहेटड यहरकद "ठाकि" शिक्टित स्रोफ्टि गरेमा सार्टेस्ट्र काशास्त्र गा मित्रा वदक-जन वित्रा भिष्टि । এক मिन दिन व्यामादन व दशदण्यात मामदन এकটी ভূগিতে করিয়া এক সুসলমান মেধেক क्यक्टन कांध वनमा-वन्नि कविया महिया **विदारक— अगर त्मिल्ड दर्ग मका मार**श! क्लिन क्लिन hill station a পারামুলেটার

পিঠে মোট বয়। একদিন দোখ ড'টী কুলির পাজী চলেনা, সে জগু ছোট রক্ষের খাটে শিশুর বিছালা করা আছে, ভাছাতে শিশুকে (नाश्चान क्ष्र, ७ ५० मिटक श्रहेकाल वाल कें।एव লঙয়া শিশুর খাট ভুলিয়া শিশুকে হাওয়া था ५ ग्राम् । यथम मूर्य द्यान नारम, हालांग मायथारन वाषिका (भव। (कान कान शाहाड़ी त्यस्य भाराटक छितिवात त्रान्धा मिया गारेवात मग्र । नटकात्र विश्व किरान का किरान का निर्मा कार्गत्र मर्पा सुगारेश जरेश यात्र, निक्क दिन ष्पाद्राध्य युवाहर् छ युवाहर् व यात्र ।

> এক-এক জায়গায় ২০০ দি জি ভালিয়া রাস্তায় চলা-ফেরা করিতে হয় একদিন वागारक व २०० मि डि जामग्रा এक भागरक वाशीय नोष्ट्र इटेंटि चात्र- এक वाशीय डेन्ट्र पेठिएक इडेग्राहिन। दकान तमम निं फिएक **উठिएउए, जाब-এक এकदात्र (कामदब्र हाड** बिर ठटक, जमनि दे। পाईष। পড়িতে एव।

> > खार्कान चारकात्र भरक छान दान।



यक मित्र ७ वानत

(ছाउँ थाउँ वाम करत्रन।

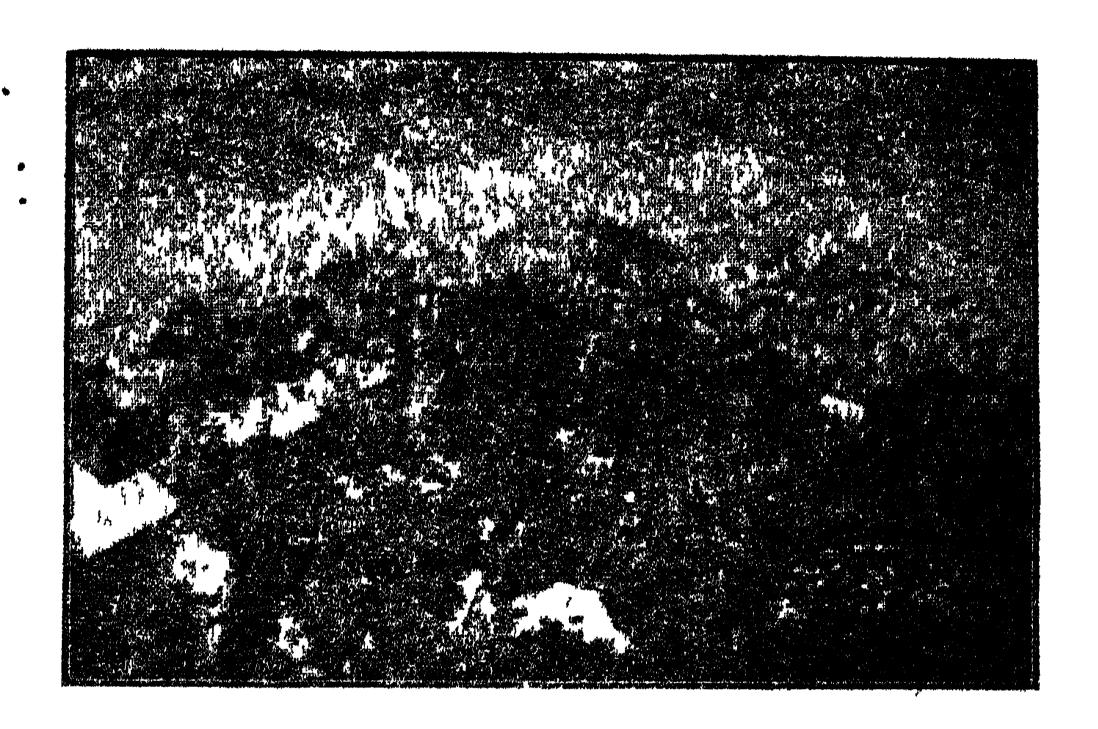
मिथियाम, अप्निक्छ। आग्रमा अहमा अ বোর্ডিং হাউস্ হইয়াছে। অনেক মেয়ে-বোর্ডার अथारन कारह।

"Lady's ride"— অথাৎ এক মাইল भित्रो (विष्ठिवाद बाखा। त्मरे ब्राखाय मत्था তরুণ-তরুণীরা ভিড় করিয়া বসিরা গল 4621

यक कानाथ त्रविद्यारक । देश्योक एक्टिनरमस्प्रताय মুখের জন্ম বত রক্ষের বন্দোবস্ত সিমলাতে च्याटि, छात्रशैवरम्त्र खन्न छात्रात्र किहुहै नाई।

"Jakko height-" "মলে"র উপর

"Burnes court"— এখানে পাঞ্জাবের অনেক উচ্চে যক্ষ পর্বত বা জ্যাকে। হিল্ম। এशान यक मनित्र चाहि। छ्वि कहेटल "Jesus and Mary's Convent" द्वार भारा यात्र त्य मनित्र थूवहें छाउँ। **८मशानकात्र अकलन ८गाँक वाँगण ८ग** मिन्दित मध्या महावीदतत्र मृष्टि चाट्छ। ষথন পৌছিলাম তথন ভিনটী সাধুকে धानगर (पश्निमा । वाहित्त छुँ। भाषत्त्रत्र পাছকা, একটা বছ ও একটা ছোট বাঁকাইয়া मर्था रबक चार्छ, এই प्रव रवस्क आहर जाना रुर्धाछ। चरनक वानज अगरन चार्छ, ভাহারা বেশ নিউয়ে আমাদের কাছে আসিল। (ছবি দেখুন) দেওয়ালে লোকের নাম থোদাই "Orphanage" (मधिमाम। এখানে আছে,—তবে বেশী নতে। আমিও নিজের नाम कार्छत रम उत्रार्ग निश्मा क्राणिमा কলেজের Herbaruimর জন্ম কিছু সাছপাশা मः खर् कांत्रमा वारेगाम। এখানে भानीम सग व्यानक मृत श्रेटिक व्यानिएक श्रा व्यानक पूर्व ७ এड উপরে উঠা কষ্টকর বলিয়া বেশী শোক त्य निष्ठी षाद्ध, তাहात लाम मिना युविया এ यन्तित स्थित् जाम ना विकृता कतिया



यक भिनान ।य शाहाद इ टमहानक वाज प्रश

্বশা পড়ে। '

मिनमाम "मरण" त्र त्रांखा धितसा (यङाहरू বাহির কটলে পাশ্চাত্য মেয়েরা কত বক্ষের পাশ দিয়া গিয়া Bonile zuny পুলিশ ষ্টেশ্ন পোষাক পরেন, কত রকমেব সৌখান জাপানী ছাড়িয়া বিখ্যাত Prospect Hill। ইছাও ছাতা ব্যবহাৰ করিতেছেন, ক্ত বৰ্ষের পিমলাব মতির মালা পারয়া ানজেদের भिक्षां के बाद्या विकाहर ७८७न, भिर्म गर দুখ্য চোথে পডে। যুরোপীয় মহিলার ব্রাক্ষ भन्न भाष्ट्रो পরিষা বেড়ালোর দুখাটা খুবছ লোক বলিল, যে-ব্যক্তি যা-কামনা করিয়া (मधा यात्र। ज्यात हे॰ताल देभश यक घाटध, जाहाता (वफ़्रिक वाहित हरेल, डाहादान हाल धित्रा का कि ना ककी युवजीदन वानिद्र দেশি। তাগাদগকে "Sweet-heart" क्रिया व्राथिवाव ज्ञा के जमक देनज्ञिनशत्क गर्था मर्था हेश्ताकरम् । स्माकारम नर्भा त्यरप्राम्त्र ५ तिल व्यवस्थ । बाह्या 'करा' 'करा' कि निशा देशहात विष्ठ "Lover's walk" नात्म ककी बाडा

व्यामा यात्र, ७ त्न तिक्मा क्रांम क्रिंग के थ्वंह इत्र, छ १८८। ता। ता। ति वाख्याहर ७ द्य । क्टे (कड़ा) क्य, शक्रां विक्नाय अफ़ांच এ मन क्यांचा मत्न क्य, निमना दबन **(क्रिं** রকমেব বিশাও।

> नक्नारिक Summer Residence क्रभ উচু नद्द। এখানে कामना (सरीज यान्तव (निथनाय। यन्तिद्वत यद्या (नवीयुष्टि। अ । खभ माधु विनन, अ मन्ति व कानी व मन्ति प्रवास णार्ग टेज्यादी करेबारक। त्राचाब अक्षन मन्दित चारम, ভाষার দেই कामनाके भून् का, ९ मिकल र्श्व नाम "कामना-(नवी"। ভিন্টা পাহাডী মেয়েকে মন্দিরের পাশে বিশ্রাম কবিতে দোপলাম, তাহারা সিগারেট भू किट अहिंग। खिनिएक भारे, यहे गर भाराष्ट्री



म्या । विकार विकार विकार किल्

Coursed পৌছানো यात्र।

खक मिनित (पिनाम। हेर ১৮৮७ সালে ু স্থাপিত।

मियमां य वाजानी द्वा जानितन द्वर्थ श्रहरू शक्तियात्र द्वान भाष्त्र ना। এই পতি নাই বলিলেই হয়। যে সব বাঙ্গালীরা দিবার মত অভিরিক্ত ধর থাকে না। এথানে বাড়ী ভাড়াও সব সময় পাওয়া যায় না— পাওয়া গেলেও ভাড়া খুব বেনী। যুরোপীয়ান ट्टाटॅंग चाट्ट, उटव उथात्र निनं >०, छाका मंत्र मन्न ; ভাও আবার হোটেলে ভারতীরদের बाका। এकि क्यांन कान्द्रेट बामान

मिलाम, (महे ब्रांखा धतिया बर्बावत Race क्याहित्क ,/० काना। गाएवत भारत ১।• वा .>॥० छोका। छ्थ টोकाम /२॥• ८मन ! এখানে হিমালয়ের নব বিধান সমাজের একটি চাকর রাখিতে হইজে ভাহাকে मारम >६ महिना ७ जाहात्र डेशत जाहारक थाउरा मिट्ड इस्र। এथान काँहा काम विक्रम इस, रक्षि अभाग है। किसा इस्न-"आम काका, ठाउँनि আছে।" निमना ছিম্মু হোটেম (Ambrosia) ভিন্ন আর বাভারে সব রকম জিনিবই বিক্রের হয়। ডিম চালান হইয়া আসে। এক একটি আছেন, তাঁহাদেরও অপর কাহাকে স্থান মুগির ডিমের দাম কথন 🖊 আনা, আনার कथन रा % जाना।

সিমলা একটা বৃহৎ কারবারের জারগা हरेगा উठिमारह। यक जिस जिस जािक ব্যবসায়ের জন্ম আসিয়াছে, ব্যবসায়ে টাকা कतिराज्य ; अधु राष्ट्राणी तारे क्यांगी-शिविराज थाकिएड रमत्र ना। ध्वथारन ममछ खिनियह नियुक्त। रकतानीत कारक रमनी माहिना हर् ना, दकान तकरम करहे अकिगात्म् स्थरम ० भागा थरा हरेग। युष्टे खूडा शामिश चाकिश विन खजरान एत। अक्कन शासारी

"দেখুন, বেশীর ভাগ ভাষাকে बटनन, আমার এथान चानि कनम ঠেनছে, यादैना कन्नड निथित विखानिक कानाइट भानि। **। हा मा। क्यां में में क्यां में**

সমলায় কয়েকটী कांत्रवांत्र आं भरा পাঞ্জাবী ভাষারা এখানে ব্যবসা বাঙ্গালীরা বেশ ভালরূপে চালাইতে পারি। कंत्रह, आंत्र जाननात्र (मामत्र वामानीया योग क्रिक कात्रवात्र कतिएक ठान, आयारक नव শ্ৰীসভাশরণ সিংহ।

ठाटमज जाटनाश

क्ष अप्राप्त-कार्णा कनक-हार्णा ज्ञान कुरण. दबनिय-कारला मिन भिर्म के भन् हुरल ; खन्मा जैंदक टिश्य-इथानि कन् कारणा, ट्याप्यत कारम विक लो य ला छात्र व्याला। ছুপিয়ে নে ভোর পাৎলা সাড়ী নাল রং এ." ভুলিস্নে পায় আগতা দিতে ভুলজ্ঞান, (मानात शंदक माख द्व भक् खण-हृष्, क्ष्यस्व (मा ७८मा ऋभित्र कृमतूर्वि।

এই বেলা চল বেলাবেলি যাই ছাতে, **উঠবে यে চান সকাল সকাল আজ রাতে**; िभ भिटल (य जून करत्रिन, मृत्र वांका! (एडि करत्र छिन दकरछे दन-कैं। ह-तनाका, जनाह मिर्य भान् त्थरम तन जकार्थान ; मान दर आत्र गाम और छे छात्र नाहे मिनि। माथा वद्य भागित नव्य अकवाद्य छोट्टिका-दङाना क्न-भन्नादभन्न भाउँखादन ।

হীরের বালা মোতির মালা ঝকুমকে---त्म वत्म कि कैं। पवि मिश त्म है ल्या त्म १ इर्पत्र य ७ 'डेपटन- छेरा दबाकना. त्भानात करण खाँकरव शारत्र व्यात्रना । भन्नोत्रां मन रमशरन रङास्त्र रहांच रहस्य--উপচে-পড়া রূপথানি ভোর দিক ছেয়ে; मणग्र-व्यानिण कत्रात भाषा हत्र-वाए, অব্দরীলো ওলো আমার অব্দরী।

फेंट्रेट्ट त्मा होल जकान नकान,—हन् **हाट**फ, কইতে আছে অনেক কথা আৰু বাতে; निविष् कारमा क्लान वानि धुन्दा ना, (नहाद यि जून क'रव महे जून कत्रि, গোন্তাকিটা মাপ করিম্ লো পার ধরি; ভোর মুখেতে চাঁদের স্থা পান ক'রে केटक्किंग कम ठाएमन चारमान पार यह गरन । **अ**कित्रनंथन **हर्ष्ट्रा**शांशांश।

দরোয়ারি উপত্যাস

खानात्म (य खात्रांके वावू मिकल्फ्रम, ४३ ७ वा व ममात्क भीटक मिटि भावता। ভিনি এখন হিমালয়ের কোন শুহাব মধো দেওয়া প্রাস্ত সম্ভবপব নয়, তথন সেত ছটি ट्रांथ पिट्र रफ् रफ् कलात ट्रकाँहै। श्रांत रहा (नाम जन।

होर कि कातान एवं म भागात जान करत हर (शक, ल कर्ष यान स्टेन मबाई तुबार्क, किस्र, मुथ कुट ८३ 🖰 🖰 ५००। ५ व পর্যান্ত করতে পার্লে না।

অৰুণ বল্লে, শুধু কি এই ? ডাক্লারের শুক্রমা পান্ত করতে রাজি নয়। একেই क छटार अंदिम मोश्चरयत ८५८म कादनामांत्रहे **(यभि,** डींश अभन्न यमि এ: উৎপাত হয় ३ बुष्डि (व-स्थादबर्ड भावा यादव।

अक्नाहे भट्ट बार्टिन १ मूर्य अक्रमें हैं। जन (मरावर कि (कड़े (नहें ?

कासन वम्राज, व्यवसा ७ जाई वरते,--व्यामास्क छ এकत्रकम स्मात टल्एइरे वाफ़ी दो हात्रिय शिल माख़्रीत छाउ यरू वामि চুক্তে হয়েছিল, তবে, আজ রাওটার মত अक्षा वत्मावस कदत्र अदर्गित, छास्नात्रवात् त्यद्वता शीक्ष्टित त्यवा कदत्रन ना, अख-वक् जात्र हिन्दू होनी मानोहारक शाहित्व (मर्दन क्त्रमा किरम्ट्रन ।

याक् दोहा श्रम। याम करत्रन अकिं। चैक्रिक्स मुर्थ माख्यीत छहे उद्यास निःश्वाम द्वारण बन्दल, याख्या क काउँक,— बाक्सरथंत्र व था श्वरण कमनात इतकू छन् छन् एलाद शाठिए। এकछा दिन बार्छ, बामजा कर्द कथा। कदः, विष्यं कर्द, म यथम कार्ट विदियं भएता भकाण मार्शाम

ক্ষিত্রীশ এতক্ষণ পর্যান্ত চুপ কোরেই खनकार नियुक्त, अवः डाँटक अक्टा मधान किन, मुख कृत्म वन्ता, कमनाटक निरम यात । टठाए छैटक निष्म शिर्म कि अविद्ध स्ट्र कट्रम १

> याः,—ञ्चित्रिय करव ना १ महीम यथन নেই, জগন, শালতাব সমস্ত দাধিত ত এখন ७ तर । जारे पर १ मार्थ १ एवं १ ७ मार्थ ७ अभरमन (मरमना फ्र-रिभन्न खरम बुडोन कर्षा (धेमार नगास शांक नगा (क मिर्व करत, বল ভ গ

কাছে শুনে এলুম চুর্নামের ভয়ে পাঙার কেট কি তাল লোকটি অভান্ত বিচক্ষণ ব্যক্তিভ नम, आशाशाए। इन्टन-िटल के नियात क्टब কাজ করার ভার শভাব নয়, কিন্তু ভিত্তরের धक्टा (गायन (यमना क्रिक्सन (शरक अह দিকেব দৃষ্টিকে ভার অভান্ত প্রথম কোরে তুলে-कमना खांहरन रहां भर्ष अटक अक्षेत्रक चरत्र किन, रम क्रवकान हुन कारत रथरक क्ल्रिंग, किखाना कर्तन, हा अज्ञन, या कि टान करांचा किन मिला नय, हरवन। आयात्र मन ক্য় তার অন্তবের থবর পাড়ার নেম্বেরা कारनन ना। यात्रण कामात्र निटकत याष्ट्रीक क भन्नी वारम, त्मथारम चारभन वाकी (बरक चाक्छ दिविनि, धादः धारे दिवास शोषात्र कशक्त औरमन्न दमक्रा हरणना करतन।

व्यक्तिक क्रिक्त निष्यंत्र शीर्यंश्व

विश्वा मि निष्कु मूर्थ ज्यांय मिल, तम यल উठला,—कि कि कि कि निष् (यम ७ किलोम, त्मवां मा रुग्न कांत्रा कवरल जामारक कि लामना এरेशां नर दिए ना शर्फ পারেন, কিন্তু তাই বলে এত-বড় একটা চাও ? আমার শাশুড়ার ব্যামো, তিনি টাটুফ্রেড রোগের দেবাও তাঁরা নিয়মিত कारत्र वार्यन, এड-४५ वाया ७ डांस्त्र हालारमा यात्र मा, छाडे।

किछीन वम्राम, अहै। य हिन्धिया छाउ । वर्षे, किछ एएर स्पर्म-নিশ্চয় বলা যায় না। অন্ততঃ, একটা দিনের ভারকে অভ-বড় একটা নামের ঘটা দিয়ে না' ভেবে কি দেখতে চাও, ভানি ? কেৰল ভাকাই ভাগ হরেন।

कर्यन 6िश्विक मृथि श्रेष्ठ कब्र्ल, कार्रल कि कदा यात्र वण १

এককণ প্রাপ্ত অকণ বড়দের কথায় क्षां क्यांन, हुल क्यांद्य के खन्डिल, खवांव यरल डेंकेटमां, मिमिन भाक्षां जकाम त्यरक ख्रद (बर्षेम, जरे याभि खरन जरमित, किन्न जन्मे। त्य दक्वल आकरं भरश्रष्ठ जान ७ जानिता হয় ত বা ক'দিন থেকে---

কিতাশ কণাটা তার শেষ করতেও मिर्ल मा, कार्य । भिर्ल मा, वन्ति, खां भाषा একটা বড কথা আছে হরেন। তাঁর সামান্ত ब्दत रुष ठ छ्'ठां कि किटन है भारत यादा, किन् मायाचारन जहना कमलारक निरम (शरन भन्नोजात्म क 5-वफ् अक्टो भागांकिक विश्लादक क्षि कटल भारत, एकरन स्मथ मिकि १ मलारभन मा कारतेत रचारत क्रमक वरमरहन रय किन कमनाव कनक विश्वाम करत्रम मा, किख---

कि छो। अदेशारन हे (श्रम (श्रम। अंतर्भव শত কিতাশের নিজের বক্তব্যটাও শেষ হতে পেলে ना। कमना এড पूत्र भर्षास्त्र नौ श्रद क्षन्छिन, इठाए छात्र काद्या त्यम कटकवादम महत्यभारत रकरि भएग। कक्ष-विक्रक कर्र

কাছে নেই, আমি না গেলে কে খাবে. বল ত 📍

কিতাশ হতবৃদ্ধি হয়ে বলুতে গেল,

कमना ८७म्नि कॅान्ट्ड कॅान्ट्ड वम्टन, ८७८व ८७८वर्ड ७ बाब बागात दह प्रभा करब्रहा करइरनत मूरथन मिरक ८५। । जुरम वल्ल, आमि साथ कतिन,—आभात खानत कट्छ यपि ट्यांमता चार् यन्ति-किकित ना ट्यांट्र माका कामारक वाफी निरम्न त्यरक क, काक ক্ষত আমার ভালই হতো, ভোমাদেরও আমার ভাষ্টে এমন ভেবে সারা হতে रुटाना। व्यामि व्यात ट्यामारम्ब माहासा bieta, क्या अक्रमण्य माम नित्र काम **८७**टिन्न हेटन घाटना। जामान डाटना धा আছে তা হোক, তোমরা আর আমার ভালর ८७ हो द्वाद्यांना।

किलीम अवः हटतन छक्तरनहे **५म्टक** श्रम । कमनाटक धमन (काटन कथा वन्टल दक्छ कथटना (भारतिमा जान-मन म्यरक जान निरमञ वाकिशंड ८५ ८कान मडामंड चार्छ, আপনার ত্রভাগাকে থিকার দেওয়া ছাড়া, এवः ভার সংশোধনের সমস্ত ভাব অপরের উপর নির্ভর করা ভিন্ন সেও যে আবার মনে मत्न कि हू िखा करत, এक था जाता छ्वानरे (यन এकश्चकात जूटन शिरम्हिन।

क्टब्रटनव मृत्थ महमा ट्यान উखन योगाण मा, ध्वर किडीम विषय ६६ हकू विष्यक्ति क्लाद्र क्रिय बहुन। किन्न क्र क्ष क्षा वृत्त क्रिया क्रमण ? आमि यहि क्लान मिलाकाद्र व व्यात्र তাদের বাকি রইলোনা, যে তাদের উভয়ের সম্মিলিত ছ্শ্চিস্তাকেও বহুদুরে পারভিস্নে। षाज्ञिम क्लारंत्र चात्र ध्वक्लरनंत्र উष्टिश क्लार्थात्र विशिष्ट्र भारत्

क्यमा ভाषां ভाषि दहारथेत कम भूष भूरथ (उभूनि नौत्र याथा म्हण् रम्हण, ना। কেলে কল্লে, ভোমরা মনে কোরোনা कि जीनमा, ट्यामारमञ्ज मन्ना आमि कान-দিন ভূলতে পারবো, কিন্তু আজ তোমাদের रांड ब्लाफ़ करत्र कानां कि छारे, -- वन् र वन्द ७३ ७१व ६८६१थ ८वटम अब अब करत আবার জল গড়িয়ে পড়ল, কিন্তু এবার সে অল সে মোছবাব চেষ্টাও করলেনা, হাত-হটি জোড় করে বলুতে লাগুল—আমার জত্তো चात्र जगरानहं जात्नन, किंख चार এकछ। मिन 8 मा। बाक (थरक बामात छर्फारतात ममख खांत्रहे चामि निष्यत माथात्र कुटल निनुम। ক্ষিতীশন, একদিন বেমন আমাকে ভূমি পণ त्थरक जारम दाहित्य हित्म, जाक टिम्मि व्यामादक दक्रम अहे व्यामीकाम कृति कत्र, जब (बरक अक्टी रवन रकाबा ३ कुन शहे, — जांत ना তোমাদের তঃথ দিতে फिरत व्यामि।

ক্ষিতীশ চোথ ক্ষিরিয়ে বোধ হয় ভার ट्रांट्यंत्र कर्णांचे ट्यांशन कत्रत्म, किंह क्रत्रन यम्हण, व्यामना छक्टन दमहे व्यानीकी हरे टिलंदिक करित्र कमना, चामि वस्ति ध विश्व धकान एडाइ क्टिंग वाद्यहे,—किंश कान সকালে আমিও কেন ভোর সঙ্গে যাইনে ?

कमना बाफ् (नटफ़ कानाटन, ना। ब्रायन खेरखनांत्र मरण वरण छेरणा, ना मामा रुकुम जा'रदम ७ जुरे ना वन्द

তার শেষ কথাটায় এত ছঃথেও কমলাব युथशान मेंकाप्त बाहा हर्ष शिलां, तम पार्था-

ए। इ । अहे मञ्जाठे। एरतरनत व्यरगाहत बर्गेन ना। किन्छ शत्रण्यादेव नाम निष्य এहे ए। এको। मञ्चाकत जाभवाष, এक भार विस्थात श्रीकांत्र करत्र ना. এह क्यांग्रेश मनत्र्य कानावात कत्न करतन जो बक्र के नत्न रम्पाल, जूर कि खांचिम् कमना, व्यामि मिथा ছুনামকে ভুলু করি গুৰাবার ভাক্তায় শাসন গ্রাফ কবি ? আমি যাবো তোর সঙ্গে, দেখি, ভোমরা যে কত ছঃথ পেলে, সে আমি জানি, প্রামের কে আমার সুখের সাম্নে ভোকে বিছু বলতে পারে। তার জবাব আমি मिट्ड भारत्या, किन्छ ६६८माध्य चन्न भारत्य ना।

> কমলা সজল চোথ ছটি তার মুথেব পানে তুলে বল্লে, অৰুণ পাৰবে না সভা, কিন্তু ভোমারও পেরে কাজ নেই ফরেনদা। আমার বোঝা আমাকে বইতে দাও, আব আমার সমস্থাকে ভোমরা জটিল কোরে তুলোনা।

करत्रन वन्दम, श्राटमत लाक अरमारक একবার ভেবে দেখ্ কমলা। সেধালে এकाकी टांत्र बाष्ट्रह कि दय मा च्हेटल भारत, त्म रका जामि रक्टरव भागेरम !

कशना (यन ऋष्ठ रूरत भक्छिन। (म चात्र कथा कांनिकांनि ना टकाट्य खश्रू छेनट्यस क्टिक मूथ जूटन अवछ। नीर्यचाम स्कटन बीटन बीद्र वन्त,—जिनिहे जादनन। এই वटन दन राज्या यायात्र ट्रिक्टन खेटलटन काटक

(यन अनीय करत्रहे, क्रक्रभाष উঠে अग्र शत मग्छ धर्मा भएए (अर्क,—कांत्र कांचा छ कि हर्ल श्रम।

या अहेग। थानिक भारत काक्न वन्ति, भारत्या अदक्तात्त्र वार्थ, अदक्ताद्र निवर्धक ! आमि किन्न এक हो। स्वित्स करत्र अरमि हरतनमा। आभादेवावुत मारक वरण क्रमिक, मिनि हासिस यावात भरत व्यक्ष (शरक रमरव छेर्ड भर्याख वर्त्रावस कामांत कारहर बारहन। ठिक कार्यन किनोनमा १ व्यवश्र दिलाभारति । समित्र करती । वर्षे ।

रदान बल्टन, मूत्र भाग्ना। पुर (७८५-माञ्च,--- कल्कालाम कमला ८०१व कारह चारक, এ कथा कि क्किंड कथरना विश्वान करत १ कि वन ८० कि छोन १

कि जीन होंद हम्दर छटे बन्दन, छ। नरमहे मिष्डिक मृत्य छेट्ठे माष्ट्रिय अकर्च्यान ्टरम नगरम, चामात छाति युम পाछ्य स्रतन, व्यामि छन्नूम। वल ठिक यम छन्छ छल्टक ভाব निष्मिय षदत्र छ।न (श्रम ।

निष्य वाड़ीए० তारमन स्थान स्थान না কোরে কিতীশ ভতে গেল, এটা ভার अভाবের এম্নি বিরুদ্ধ যে হরেন ও অরুণের বিশ্বয়ের সামা রইণ না কিন্তু যথার্থ ই আজ कि डोट्नर अमिटक मृष्टि भिराद माधारे छिनना। वर्षक्ष (सदक्षे भा कास्त्रमनक श्रम भएए हिन, এত बारगाहना ७ ०कवि उत्कंत बर्दिक त्याप-वत्र कार्य कार्यक यात्रीत। त्मथारन (कवन এकी क्यारे गात्रवाच शक्तिवान किन, --मम् शकाम करम (शब्ह, ममस शकाम करम বেছে! ভার মনের নভ্ত গুহার ঘত-কিছ भाभ मक्षिष्ठ हरव উঠেছিল, कमनाव कार्ष

व्यात मुक्तारमा (महे। छाइ (भ बाख व्याध-.करमक मूह्छ कात्रक मूथ निरम्ड कान ভरम ভोত र्शनीत मड दूरि পाणारे हांग्री कर्षा वात्र क्लिमाना, भवाहे रेयन स्थितान इर्थ - आंख छोत्र भक्त यञ्ज, भक्त भिवा, भक्त

२२

কিতীৰ দা।

(40 B

व्याभि कमना, এक वात्रि (भार (थान।

ाक ोम ममगुर्छ (मात्र शुर्ग वाहरत क्टम (मश्रम, स्मूर्य मां फ्रिय कमणा। वाजित (यांव ७४८मा कार्टोन, ७४म छ कार्मा वाकारम इ'ठात्रछ वड़ वड़ छोत्रा खन् जन् अध्व भाषा । वात्रान्यात्र अकत्कारण (य मक्रमिं। मिएँ मिएँ करत्र क्रमांहम, ভারই व्यन्भिष्ठे काटगाट कि जैन हरकत निविध ममञ्ज गांभावहा (माप नित्म।

क्मनाव नाटव कानाटनाका अकछ। इन्ट्र तर्छत्र आभात्र क्षांत्रा, जनः जात्रके मे। ए द्रि चक्न । ठात्र (छात्रा-काठे। (काट्टेस खणत (कामरत वांधा अकिं। आधमत्रमा जानत । বাঁহাতে তার পৈতের সময়কার লাল রডের हा धार्षि अवः छान वगरम हाशा अकरि इहा है भू देशि।

কেবল এভটুকুই কিন্তীশ দেখুভে (পলে। किस कमना यथन शफ् हरम खनाम करत जात भारतत भूरणा माथाव निष्य किर्फ मै। फिट्स वम्राल, किलोन मा' व्याप हम्नूम, उथन चार्णात का भार्यकं रहाक्, वा रहार्थन लारबहे रहाक, जात मूरशत किहूह जात क्रिकोटनंत्र ८ हार्ट्स भएन ना। छात्र मदन र्ण, व्यक्षार এक मूह्र्स्ड (यन मधुर्थ, পार्म,) कारत । हिन्स कात्र परतत्र मर्सा अरम स्कर्ण खनरत, नाट्ड नमखडीहे अटकवादत मनीकृष स्ट्य (श्ट्र

कि शेन मा ।

—गांका १ भाक्।—

--- जामि काथाकात क, ख्यू कड करेरे ना এতদিন ধরে তোমাকে দিলাম—এই বলে कमला त्राभिदितत (कारण ट्वाथ मूह्र्स ।

প্রভ্রান্তবে শিতীশ শুধু কেবল জবাব मिटम, कष्टे ? कहे, माः—

— কিন্তু ভোমার প্রাণ বাঁচানো যেন 'নফল ना इस यावात ममन भागाटक এই हेकू भागीकाम क्विन क्रिका কমলা খন খন চোথ মুছ তে লাগ্ল।

मिलमा राम्य ?

मा' छ नीति তাতেই বলে चाছেन! তিনি একথান থাম বার কোরে অরুণের হাতে षामदन। षाभनि यादन ना १ निय किछामा करान, এ कि किछो मा १

ভাগ নেই—

कभना पुत्र तथरक चात এक वात निः भरक चार्छ कि छो भू मा। समस्रोत्र त्कारत बाल्ड जाल्ड नीत्र हत्न (शंभा। व्यक्तन कार्छ , जाम वन्ता, कामिल हम्भूय किलीम मा'-- এই वटन टम मिषित्र মত প্রশাস করতে যাতিল, কিন্তু কিতীপ

বল্লে, অরুণ, ভোমরা সভ্যি সভাই চল্লে ভাই 💡 🔞

— भागात्मत मभन्न स्टब्रट्स व्यामि, यानि , व्यक्तव व्यवाच स्टब्स जात्र शादन ८५८म ब्रहेन, श्रम्भेडी (यन (म वृष्टिहे भावत्न ना ।

> किलीभ श्रमण वन्दल, दक सारम, आत रम्ड जामारमन्न रमशहे रूरव मा,—जामिल আজ তুপুরের গাড়ীতে পশ্চিমে চল্লুম जारें।

व्यक्त । कथांब ७ खवाव निष्ठ भावरम ना, किन्छ वानक इरमा अपूर्क दुबा एक পারলে যে ক্ষিতীশদা'র কণ্ঠবর কারার জলে र्यम এक्वार्त माथामाथि रुष रश्र हा

প্রভারের প্রভীক্ষা না করেই বল্লে, তুমি ছেলেমানুষ, তোমার ওপর যে কিভাশ কোন উত্তরই খুঁজে পেলেনা। কত-বড়ভার পড়ল, এ হয়ত তুমি জানোওনা, किंद्ध थानिक भटत रहाद वरण डेर्ड्र हा, किंद्ध जावाहनत कार्ष्ट आमि काय-मरन व्यानीकान ? निन्छम। निन्छम। छ।' প্রার্থনা করি, ভোমাদের আক্রের ধারোটা कप्रिं कि। है। करून, भाषेत्रहे। यदन जिन जिन जिन शक्त शकाद्र निविद्य काद्र (मन

अक्न माथा निष्क कवाव मित्न, हैं।, हरवन এই वल म जाव नानित्मव जना शिरक रेष्टिमन भर्यास कामारमंत्र भोटि मिर्न खँस मिर्ट भाग। करून बाउछ। मनिर्म

আমি ? না ভাই, আমাব শরীরটা ভেমন সামান্ত গোটা-কয়েক টাকা আছে শঙ্কণ। কিন্ত ভাড়ার টাকা ভ আমার কাছে

> ভা' থাক। তবু ছোট ভাইদের যাবার সময় কিছু হাতে দিতে হয়।

क्षेट्रे (वारम ८म व्यक्त्पत्र (कांनित्र शृंद्रित) टिटन निध्य ভাতে বাধ্তে বাধ্তে বল্লে, मरमा मह्माद्र कांत्र शंक्रहिं। बंदर हिंक हिंक ट्यामात्र क दक्के वर्फ खाई त्नहें कासन,

डाई बार्ना ना, नहेरण डिनिड अम्नि स्वार्यहे पिरक टिस्स र्डम्नि छक इरम्से वैपिएस द्वंदंध मिटलन, मामात्र द्यारम् जिमहोत्र वरम निट्ड किन्द्र मण्डा दकारता ना, डाहे। ट्डामात्र मिंग कथरना यमि बान्टल स्माद्धामा करत्रन, डाँदिक अरे कथाहारे व्याला। बहे ट्यारण ८म रमि यथा खारन भून शांव खेरल । निष्य काळ (धारब कारक वाकरब अरन वन्दन, जात जयत्र दमरे जातन, जूमि यां छारे, जाएक वास इटक्न-- এই বোলে দে একরকম তাকে टकात टकाटन विषात्र टकाटन निटम ।

अक्न मिं फिर्म नीति नाम्ट नाम्ट । अख्यामा क्याम, ज्यामान क्छमिन भिष्टिम थाकृत्वन किलीन मा १

त्म कथा काञ कि कारत त्यान्य **कार्ड १ कि** छाना कारव त्राचि। मिनिष्ठ-शास्त्रक भट्ड जाङ्ग्ल शिद्ध स्थन भाष्ट्रीट उटि द्वाम्त्या, जयन जाटक अकाकी (१९८४ कमना दकान श्राहर कत्वा ना, किन् हरतम किखामा क्यरम, किशाम এरमाना बाक्रव ।

जान क्यांबों। किजी नित्वहे मिट्य। टम छभरत्रत्र यात्रान्यात्र दत्रमिएक छत्र पिटम माष्ट्रि हिन, वन्रन, महोद्रेष्टी सामाद्र जान (नरे रदान, चात्र ठाखा गार्गादाना।

रद्रिन এक हे छेबिश हरस दल्दन, छान त्नहे १ का'रूरण हिटम च्यात्र में। क्रिया ना किलीम, मदत्र या छ, व्यामि अत्मन द्योरक भिदन करम ट्लाबाटक कान्त्रा ।

त्यावेत ८७८७ मिरण। स्ट्राटनत छे भटनम **जात्र कारन दशम कि मा दक कारम, किन्द्र** गाफ़ी यथन वस्क्रण जान टाटबन वाहरन कापृष्ठ इत्स त्मन, जनन तम तम्

सर्ग।

डिमरन भीरह, डिक्डि किरन इक्सनरक गाज़ीटक कूटन निरंत्र क्रांत्रन कमनात्र कारक शिरत अक्ट्रिशानि लब्बात मरक वन्दन, जामात्र উপश्चि ठिकाना याग्ठ जामि निटलरे जानित्म, **ख्रु आभादक य**नत रमनात यांच आवश्चक रश्ड (कश्रांत ज्यक —

व्यक्त भरक है त्यरक जा जा जा जिल्ला कांशक कांत्र त्थन्तिण यात्र त्कारत यम्त्ज, थात्या भारमा क्रवन मां, डिकानाछा, ट्यायात्र লিখে নিই। তা ছাড়া গুন্লুম কিভীশদা'ও व्याक क्षणूद्रका ट्विटलं भीम्ब्राम करण बारकान, कि। हारे मन्न शामाना त्य जीव ठिकानाना

मबाह खटन कथना यत्न यत्न बार्च्या **ट्यांटना, किन्द्र किंद्र ध्यकान कंत्रल ना।** किन करत्रम डिविध करत्र वरण डिक्रेटना, विनम् कि जरून। उ'राम उ जामारक ध्रश्न क्षिट्य शिद्य छाटक बामाटल स्य।

कमना मूथ जुरन किखामा कत्रत, दकन रूटब्रन मा १

कारून यम्टन, ८कन कि, याः---

र्द्रिन वन्द्रम, रमथारन कछ कि घट्टि পারে কে বল্ডে পারে ? আবশুক হলে আমি ত বাবই, এমন কি কিতীশকে পর্যান্ত धटन भिट्य दथएक छाक्रया ना! कुछ र्नक ष्यामाटक खीक मदन कहिन !

कमना चाफ (नरफ नन्दन, ना, का क्त्रित्। किन्द्र ट्यामारमञ्जू कात्र अवादन व्यामात्र कटक श्रातात सत्कात कटन ना ।

हरवान खत्रानक आंभ्यती रूटव बगुरम,

व्यामारमम भोफ़ामीरमम रगाकरक हिनिम् नि कत्रि किनिहे रयन व्यामारमम विहासम छात्र क्यमा १

कमना क शासन किंक कवान मिर्न मां, रम्दम, आमि किहूटि एक्ट भारेटम हर्यन मा", এতদিন कि कारा आयात्र সমস্ত পুषि- कडक्छ। পথ চলে পেলে সে কেবলমাত্র এডদিন নিজের কাজের ভার ভোমাদের भरतत ७ भन्न निर्कत दकारत थाक्र ७ ८ भरति क्यूम। जून या करबिंह जाब मीमा दनहें, किंद জোমাদের সাক্ষী দিতে ভেকে পাঠাবো এডমড় ভুল বোধ কর আমিও আর কোরব ना। এই বোলে সে ছোট ভাইয়ের হাত ८७८क काशरकत हुक्रताथानि निष्त्र कानामा शंगित्य बाहित्य त्करण मिरण।

क्रांत्रन मान मान व्यक्ता ख क्रुक धार मिक्किक रूर्म वस्टम, किन्छ कममा, निर्फागीरक छ क्द्राक्ष क्रम ना १

भ आमागट इत्र ; किन्न आमात्र विठादत्रत श्रवश्च दम्हे कथा। एम ভোগেনি **य** ভার আমি বাঁর হাতে ভূলে দিয়েচি হরেন অঙ্গণের এই কথাটা সহজে কেউ বিশ্বাস मां, जीटक माक्की त्यानारक रमना, किनि कहर्य ना। किन्न এकका मरनम मर्था जार्भानहे मर जारनन।

এই বোলে সে উদগত অশ্রু গোপন করতে ভাড়াডাড়ি মুথ ফিরিয়ে মিলে

करबना ? नार्ट रहाक, किन्ठ जाक ७ कि जूरे जारे रान रम स्थान, जामि काम-मरन खोर्पना अर्व कर्त्रम ।

कमगां क कथात्र एकाम एउन मिर्न 'ना, रमवात्र' ছिल्हे वा स्मि! किन्छ शाफी श्रुषि भौति । भरति हैन, जांत्र टक्यन टकार्यहें या । এकि विशेष कानामा मिर्य पूर्व वाफ़िय मिर्य (भरम हरवन ज्थन (मार्का जारमत्र मिरकरे চেৰে দাড়িয়ে আছে।

भट्षंत्र भट्धा काक्रन काटनक कथारे यटक যেতে লাগুল। ভার নিজেব প্রতি ভারি একটা ভরসা ছিল। সেহ যে ত্র্পাম্প ভাকে বলেছিলেন, ভিনি গুজবটা বিশাস करत्रन नि, धवर रम ७ डाँटक कानित्त्र धरमर्क कगकां छात्र कारहरे चारहर, এতেই তার সাহস ছিল তুর্ঘটনাকে সে ष्यदनकृथानिहे महक कदत्र मिरमरह। कहे कि माकी निरम् निष्कत्र निर्फाषिट। श्रमान ভাবের সাম্বনাই সে থেকে 'থেকে निनिक बिरम (यटक माग्रमा, किन्र किन रयमन क्यमा এक हेशानि भ्रान रहरम बन्दल, निः भरक हिन, ट्रम्नि नीवरवर यरम बहुन। ভার বিশেষ কোন চাঞ্চল্যও ছিল না। बह्न या भन्ता नम दश यम त्यादक অবিখাসই করে ভ মোৰ দেবার কাকে কি . शार्ष-मारक्य मयुक्ष निर्मान ब्लार्फ निर्मान, ज्यारिक । किन्न यथार्थ व्य-फिन्डा जान मरनन फुन्डिज़ांत वांनी वांकित्व गाफ़ी ट्रांट किल, मत्या बीट्स घीट्स कांचात मर्ड Coch वम्हिन **এই সমষ্ট্রকুর মধ্যে হরেন যেন একটা ধান্ধা সে ভার শাশুড়ার কথা। ভিনি মধোছিলেন** माम्राम निरम। त्म मर्टिम मरम क्र'भा এशिया वर्षे कांत्र वश्त्र कमक किनि विश्वाम करत्रम এমেও কমলার মুথ আর দেখতে পেলে না না, কিছু এই বিয়াস কি ভার লেব পর্যান্ত क्षि छारक छेरान कारत रहे छिरत बन्दान, कहें बाक्रव १ क्यांच कि कान अखनात्र বারোরারি উপভাগ

(कान विश्व षष्ट्रिय ना १ त्म आन्ट्रका, षष्ट्रिय। गद्योदारम **माञ्च र एवरे तम** এ ७ वर्फ **र** प्रवाह, **जामित्र (म (5तम,— किन्छ क्ष मक्स ७ केन्द्र मत्म** क्षांखिरे रुप्त (श्रष्ट, किन्न चात्र भ जात्र निस्कत्र এবং স্বামীর মধ্যে ভৃতীয় মধ্যস্থ মান্বে না। এ সম্বন্ধ যদি ভেঙেও যায় ত যাক্. কিন্তু জগদী-খর ভিন্ন হজনের মাঝখানে অন্ত বিচারক সে . কথনে স্বীকার করবে না।

(रम्फ्नो (हेमरन यथानमरत्रहे (द्वेन এरम পৌছল, কিন্তু বোড়ার-গাড়ী কোগাড় করা महक (कारमाना। चारनक ८५ होत्र चारनक ार्टिय व्यक्तन यथन এक है। मरखर करत्र निरंत्र का, क्थन द्वा इत्यद्ध, ज्वर श्रद्धी गर्थय शाका १० क्लाम উद्योर्ग रूप क्यायान यथन क्रामीम-পাবর সভীশ বাগ্চীর বাটীর অমুথে উপস্থিত भ्य ७थन (वर्गा वाद्यांने।

দুর্গামণি গোটা-ভিনেক ময়লা, ওয়াড্ছীন ्राणा-यात्र-कत्रा वाणिम कड़ दकारव र्द्धम् निरम नरम এক বাটি भन्न छथ পান क शक्रिकान, এবং व्यपूर्व स्थित बर्म लाजाब এकि विथवा स्मर् कुरमाम देशरमञ्ज्ञ थान वाह् क्रिम। क्रजीमनित्र जत उथन अकट्टे हिन यटि, किन हो हे करम दार जन (कान मक्क नहा जिनि क्यक्न दक दहर थ युगि रुद्ध वन्द्वन, दक व्यक्त अदम्हा, वावा १ जरमा, त्वारमा,--- त्मात्र-त्माष्ट्रात्र ७ त्व मा १

मिमि अरमरम्ब-मिनि ? ८क, वर्डमा ?

भत्रकर्षरे कमना चरत्र हृद्क नानात्र काहन नित्र कृषिकरण शक् हरत खानाम कत्र्रक मूर्गा-मिन निमन्त्रक हरत के लिन। हर्यत्र विधि। मूप त्थरक मामित्र काकाकाफि यत्न केंद्रवान,

थाक् भाक्, क्रिया, जात्र भारतत्र भूरणा निर्व रटन ना। माताबा न्दर एव क्लिके हेरू मुद ভূলেটি, এটুকু আর ছু যে দিয়ো লা

मान क्ष**कांख पृष्ट किल, का**रनक जूनी, कारनक ° या प्रयासि देश बाठ किला एन न्लान वाहिएस কুলো সমেত ছহাত সাম্নে এগিয়ে গেল। कमना निर्याक एक श्रम माहित्य बहेन, किन्द व्यक्त रान करकरारत व्यक्तिराध्य साम व्यक्त উঠে यदन दक्त्वाल,—।मध्यायामी। दक्त कदव कान कृषि वन्त, ७-मर अवर कृषि रिशाम कर्मानां। ८कन वन्द्रग—

> (मान कथा: करव कार्यात्र विष्यम कब्रिस १ ज्यांव ज्यस्त्र भगरक यनि किছू यरगरे थाकि छ त्म कि कावात धर्काता, বাছা !

> काक्रन कैंग्नि-कोन हरम सम्हात्म, जो'हरन क आगि कथ्यदनां मिनिटक आन्जून ना! छर्गामि इर्धन वाणि मान्य जक्रे निनाभन म्हाटन ८व्रटम बन्नटणन, जा' ८वम क वाहा, व्यमन भात्र-मूची ट्राटिका ट्यम १ भारखन मणारे जासन, जान विदेशकून्द्रक थवन है,---७७क्षभ, घटम नवरे जाटि, भेटेटनम-मा (वस Cकारत मिक्,--- (मारतत उञ्चन छोत्र त्वाक्रानात **८कारत्र डाम-धान क्रुटी क्रिट्स डिमारक छ** श्रुटो मिक्, निर्वाश श्रुटी थाक्।

> कासन हकुर्शन करण केटा रोग्रम, कि ! আমরা ভোমার বাড়ী ভিচ্ছে নিতে এসেচি ৷ এত বড় কথা বল ভূমি। আহ্হা, টের भारत। এই বোলে সে कमलान हाजवाना ८६८भ धरत वण्टण, हम विभि, आसत्रा साह,--जयरमा जामारमत्र माडी माड़ित्र जारह— चात्र अक मिनिष्ठे ७ अत्र मूच स्वर्ष हार्ट्स १

ভিটে। কিন্তু এমন অপরাধ আঞ্জু করিনি बाएक क बाफीएक कामाएक स्मार्वक उन्नदन दबंदर दश्टल एवं!

कमना शीरत्र शिरत्र निष्मत्र हाउथानि मुक्क भाक्षणी वन्तन, जा' कि कानि, वाहा। करब निरम वन्द्रम, हम, बाह्य छाই। छात्र कममात्र ममिन ट्वारिश्य मृष्टि रहाद निश्येत्र পরে মাথার অঞ্লটা সরিয়ে দিয়ে শালুড়ীর মত দীপ্ত হুরে উঠ্ল,—বোধ হয় কি বেন मूर्यत्र भारत ८६८व भारत महस्र कर्छ रम्हन, भारतहरू हाहरण, किस भारत व्यवस्त्र व्यक्ति मा, जामि চল্লুম, किन्द, जामिल এ राष्ट्रीय পেলে না। অयन राष्ट्र-मुष्टिए होल शर्य बर्डे তোমারি মত এও আমার খণ্ডরের জোর কথে তা'কে টেনে নিয়ে বাইরে চলে গেল।

> निमंत्र एक हरही भाषाम् ।

मऋल न

বিলাভযাত্রীর পত্র

प्रक्रिन क रस Cap Martin, Alpes Maritimes.

अथानक क्र त्य कर मनीकी विक्रमानत्वक नक्का वर् त्रकम करत्र विश्वा कत्ररवन डीएनर जान्यरकत्र महत्र जामात्र (स्था स्टब्स्टा अटबड़ मटक खांगांग स्टल मन मूर्कि लांक करता (कनना, मांकूरवंत्र मुक्तित्र क्लां रहत **छोटबर ८कळ---- म्हेबाटन चोर्बटलोटकर ममल निराम উ**ल्डि यात्र—त्मरूषात्म मासूष नित्कत रूषप्रः (वत्र, नित्कत (कांत्रमध्कारभन्न कांकील इस्त विष्त्रन करत्र— रम्पारम बर्खिमारमञ्ज्ञ वस्त्र कारक श्रांद्र श्रांद्रमा, रमश्रांत्म আশার আলোকে সমুদ্ধল সীমাহীন ভবিষাতের মধ্যে षाणात्र विकात । भाष्ट्रपत्र मध्या यात्र। मिहे ভाविकाल-विश्वी छोतारे अञ्चलादकत अधिवाती, दक्तना मृजुत **टक्क करक वर्षमान। अथादनरे लटन लटन कम, अह-**थारनर यक बायांक यक रेमब्राक्त-- এक मधीर्य यहंबारमञ मरवारे मगक किहारक जावक करत्र माञ्च शिक्षित हम। भाष्य र एक "व्ययुक्क शूबाः", मासूय २०६६ विश्वाधायवात्री।

टमङ-पिवाधांम करक जाभीमकाटल, अधकाटल महा आमा-रमत्र यथार्थ नक्षम कारणत रक्षम । यथम कामत्रा टकारमा वार्था त्याय कति छथन त्महे वार्था कामाद्मत मनत्क त्महे याथांत्र कारणत वांक्टक त्यां वांथा 'त्यम,--- त्मके वांथा वर्तमादनम चैं हित्र मदन जानादन दकात करत दर्देश बार्थ, **मिट इस्के बाजिया या উপস্থিতের ভাবনা बिस्स आमारिस्त** चिट्न त्रार्थ, छविगार्एन मिटक यात्र कामान काममा स्थामा (नरे। (मरे २६६६ अकिथन, कांटनंत्र क्लार्ज यात्र यत মাত্র আছে কিন্তু আছিলা নেই। আধুনিক ভারত-বর্ষের লোক অভি কুজ বর্তহানের প্রাচীরের মধ্যে আবদ্ধ। ভার দীনতা এত বেশি যে বর্তমানের সব मार्थीख (म भूबाभूबि भ्योहोटक भावतः मा। मण्यूर्व निर्वात मामर्थी जात्र किन हमूट ना, कर्णत क्रजानात टम भनीत चारत थनी फिरन-यरम चारक। किन्न यात्र वर्खमारनत मचल चल रम जानमात्र छवियावरक दौशा मिर्स उर्द सन भार---जामना यक्के भरतन कारक हाक भाजिक जर्क निर्माद कविदादरक विकिश्त विकिश कार्यात्वत वर्धवान नकीर्ग, कार्यात्वत मण्डूटब कावी कांग वांबाज्ञक, अर्थक्टकरे जानांत्रत भन वस् करत कांवरक

^{*} जानांची अर्थात टन्यक---विष्क (स्टामकक्रांत तात ।

শারাচ না, নিজেদের মধ্যে কণ্ডা করচে। তুমি ভোষার কালজের ছাজদের কল্য সহকে বা লিখেচ ভাব কারণ হচেচ মন বখন মুক্তির আনন্দ খেকে বঞ্চিত এই র্ডুন সে পাপের উত্তেজনা খেকে তৃত্তিলাভ করতে গোকরে। আমি বিশাবিদ্যালয়ের অধ্যাপকদের কাছ শোক শুনেচি যে আমাদের উচ্চশ্রেণীর ছাত্রের্য তাদের সনীর্থ ছাত্রীদের অপমানিভ করবার জল্মে রাসের বোডে গোচ কুর্নাভ কথা লিখে রাখে। এর থেকে শান্ত বোঝা যায়, যে-সকল পরিবাব থেকে এই-সব ছাত্র আনে শাবা আত্মার দীনতা ছাত্রা শীভিত। মন যেখানে কর্বল ছোট ভাবনা ভারতে বাধ্য, ছোট কর্ম্ম করতে শিন্যুক্ত, সেইখানে এই আত্মার দীনতা ঘটে। সন্ধীর্ণ গর যদি বন্ধ হয়, তাহলে বাভাস দ্বিত হয়ে ওঠে। কালোভ্যাণ নিরব্ধিঃ' আমাদের পক্ষে সভা নং 'বিপুলা চ পৃণ্টা' সেও আমাদের পক্ষে গিগা।

शासून यथन जांत्र कीर्वित खाला वृश्दकारणत (कव না পার ভবন সে নিজের মাহাল্মাকে প্রকাশ করতেই ।।। यन। दम जार्थन ज्ञांचरक दोनडारकई बाक करत। रिना प्रकार का भागा कर का मान कर का भाग किल প্রাশ পাচেচ সেখানে আত্মার উপরে মান্ত্রের শুর্জা E व यात्र-- भन्न भारतत कूष्मावारम जैनाभित्रकाष रमह मजारोनका मासूरवर जाजावमाननाटक छलपाटिक कराव धारक। कामारमञ्जाला हाणात जामरक यांत्र यांत्र कामारक रूटर एव बामता "अभूक्छ भूजाः'—आमत्रा पिराधाम-वामी। कि करत सानार रूप र जारभन्न बाना। bत्रसम कारणत लाडि यांच लाखा जाट्ड (महे ड जान (भात्र मार्क वर्षणांभकाषाटक खानि कराज भारत—এवः সেই bরন্তন কালাই আত্মার অমৃত্যাম। পশ্চিম দেশ विक वर्ष क्रिकेट्ट व्यर्थमः अरब्द वात्रा मन, व्याव्यविमर्करमञ् अछ वहरनाक अधारन कारनम खरक वखरक षाता । ভাৰীর জন্মে উপস্থিতকে ত্যাগ করচে যে তার সংখ্যা त्नहे। (महेनकम कात्नक लोकरक लिथ हि। युक्तं (मथिह ততই মানবাস্থার প্রতি শ্রন্ধা ক্যান্টে। সপতে যত কিছু **উद्य**ि चटिट मायूरस्त्र दमके खट्यामारम् सात्रा—िका गुल्लिस सोत्रा टिम्ब टेमबंड। टकाटना त्रिकम विम् कार्याटसप्र भार क्यांटल भारत ना---वासाय वसन प्र: अम्ब

কথনট বাইতা থেকে খুচবে না—ভারতবর্গ এট আত্মার বন্ধনের ঘারাই জর্জন—মন্টেভ সাহেব তাকে বাঁচাবে কি করে ?

উত্তিত, জাগ্রান, প্রাপা বরান্ নিবোধত। সুগস্তা ধারা নিশিত। তুরতারা তুর্গণ পথস্তৎ কবয়ো বদস্তি ।»

२४ जारतहे, ३३२०

Villa Dunare

Cap Martin

Alpes Maritimes

28th Agust, 1920

We are in a most beautiful part of But of what avail is the heauty of nature when you have lost your trunks which contained your dresses and underwears? I could have been with perfect sympathy with the trees surrounding me, if, like them. I were not dependent upon tailors for maintaining my self-respect However, the most important event for me in this world at present is not what is happening in Poland or Ireland or Mesopotumia, but that all the trunks belonging to our party have disappeared from the goods van in their transit from Paris to this place And therefore though 'he sea is singing its hymns to the rising and the setting sun and to the starlit silence of the night, and though the forest round me is standing tiptoe on the rock like an ancient druid, raising its aims to the sky, chanting its incantation of primeval life, we have to liasten back to Paris to be restored to the respectability ministered by tailors and washermen. This is what

जावर्ग

Our clothes are acting like screens dividing us from the rest of the world; and for this we have to pay—pay the bills. Do you not think that it is outrageously undignified for my humanity that standing face to face with the nagnificient spirit of this naked nature I can think and speak of nothing but my wretched clothes which in three years time will be tatteled into rags while these pine-trees will remain standing ever fresh and clean majestically unaffected by the soiling touch of hours?

I suppose I told you in my last letter that I met Sylvan Levy in Paus a great scholar as you know, but his he irt is larger ever than his intellect and his bearing, His Philosophy has not been able to wither his soul. His mind has the transluce it simplicity of greatness and his heart is overflowing with trustful generosity which will never acknowledge disillusionment. His students come to love the subject he teaches them because they love him. I realise clearly when I meet these great teachers that only through the medium of personality truth can be communicated to men This fundamental principle of education we must realise in Santiniketan. We must know that only he can teach who can love. The greatest teachers of men have been lovers of men. The real teaching is a gift, it is a sacrifice, it is not a manufactured article of routine work, and

because it is a living thing it is the ful filment of knowledge for the 'teacher himself. Let us not insult our mission by allowing us to become mere school masters, the dead feeding bottles of lessons for children who need human touch lovingly associated with their mental food

. I have just received your letter and for some time I feel myself held tight in the bosom of our Ashrama. I can not tell you how I feel about prolonged separation from it which is before me, but at the same time I know that unless my relationship with the wide world of humanity grows in truth and love my relationship with the Ashrama will not be perfect. Through my life my Ashrama will send its 100ts into the heart of this great world to find its sap of immortality. We who belong to Shantiniketan can not afford to be narrow in our outlook and petty in our life's mission and scope. We have seen in Tiretta Bazar thirty or more birds packed in one single cage, where they neither can sing nor soar in the sky, but make noise and peck at each other. Such a cage we build ourselves for our souls with out petty thoughts and selfish ambitions and then spend our life quarreling with each other clamouring and scrambling for small, advantages. But let us bring freedom of soul into Shantiniketan.

> विश्वविद्यमां श्रीकृत। माखि विद्यक्त, जाविन ३७२१।

ৰাজালী কি আৰ্য্য গু

कथां है। जारनक निम रहेंग छनिए छ। भूबाउन पल (त्याक्रम्मत यरलएक व्याचा" এই क्याँडी हे यात्रश अण इत्रजना इहेशा योगमा जाएकन जाते त्य (कर्षे ' क्षारास्त्र क्षमाया विलट्ड यान छोशांपिशस्य शांनिशांका করিভেছেন। আর নৃতনের দল সমান কেপিয়াছেন का मारमञ्ज का नायाक का किया व खशानक रुपछक्रात महकात बहालम जात्म कित्नत भन कथाछ। আবার তুলিয়াছেন।

এ अञ्च कानमा आभाव अथग मान रव क कथा লইয়া এত সাভাষাতি বাড়াবাড়ি কেন? আধ্যই १६ अनार्ग्य २२, व्यामद्रा (य नाजामी त्मर बाजानार नवन था कर, उपन क कथा नक्शी कठ (Boicalo यन। अनाधाई बहालक साविलनी, कि हैं अपि है। म 'क केंक्सि कि शिद्धोक्किशिश्य मछ दशीवन इस ना. यांविक कांगानी वा आठोन ठीरनंत्र मरक अक भारत विषय मार्थ ना । जात्र जार्थ क्रेटल हे अभन कि कुलीन कलग्रा यात्र ना व्यारु न कारण कार्या आंत्र मसुरा कार्थित (यानी-विकार) खना यात्र मा। मण्डात्र त्य भोत्रव 'इक, अहे नव अनाया जाडिएब (भावत जीव ८०८व टकानज जाराम हीन बना बाद ना , रदेगान काटणख कानांधा छाणान रगोत्रदेव दकानड ध्याकथिल जागालाति श्रहेल होन नरह। शक्रास्ट्र ार्थायः नीम वर्षत्र व्याहीन खर्मान वा कानिस्मिवियान আতি যে খুব একটা উন্নত আতি ছেল তাও বলা याम मा। ज्या क कथा । सामाद्य वर्तमान वा অভাতের গৌরবের কিছু কাভিবৃদ্ধি হয় না ' আমগ্রা क्षिति ना वक्ष मिठा निर्मेश क्ष्ट्रित काम्या वाजानी হিসাবে কভটা কীর্ত্তি প্রতিষ্ঠা কবিতে পারিয়াছি তাই भिया। आमारमञ्ज आधीम भौत्र कि छिन रम्ख थातीन वाजानो बालिय कोशिकनांग प्रिया। व्यन्तांकी পুৰ্বেব ভাহাদের কোনও প্ৰবিপুরুষ মধ্য-এসিয়া হইছে आंगिशाहिन, ना आरमंबका इटेटक आंगिशाहिन, ना এই म्हा माहित्व किमामिका, जागरक योकांनी हिमार वाकाणीत त्योत्रत्वत क्षि वृद्धि श्रेट्र या।

क्षे कथाहै। मान ज्ञाचिका क्ष्मण ब्राह्मण्यत

पृष्टिक निवरभक्ष छार्च क क्षांत है जिहान कारणाहन क्तिरमङ जामना मरका छेलनीक वर्ष एक लादिय।

८२मछ वांतू विकादिन कामजा कान्— आधा ! मरकारीय ও জাবিড় রক্ত আমাদের শরীরে প্রবল। এ कथा ज्योकात कांत्रवाद উপায় नाई। সঙ্গে সঙ্গে व्यार्गाब्रास्कर त्य मिल्लन कार्ष्ट् छाउ क्योंकान कतिनान छिलाच जाटक कि ? जामग्रा এक्ट्री मिख क्यांक बहा थांटि मडा। तमक्या आमानिशटक व्यन-आमा बलिएड रश वल। किन्छ जिल्हामां कति आधामाछि कांग्र चारक ? औरमत चारशांत्र य क्छों दननी शांत्रमारन शेषिय (Aegian) काजित्र मध्य (खर्कान किन, भिर्म) व्याजकाम भूव ८६नी भात्रगाटन सन्ना भिष्ठा निवार । তা' ছাড়া রোম, কথানী স্নাভিনেবিয়া প্রভৃতি যত व्याधिमकारणत्र व्याधा-नियाम हिल, रम मन स्कानक शादनहें बाहि वार्गाक्षां किन ना। व्यक्ति दक्षांवाद व्यानामानि नाहै। नृश्वितिह माट्य 'बार्ग' क्यांग खोपाबाप ज्यान "Aiyan heresy" यान्या भविंह ।

यु छ द्वीर च्या भन्ने व्याचा ना के व्याच्या भन्ने व्याचा भन्ने व्याच्या व्याचा भन्ने व्याच्या व्याच्या भन्ने व्याच्या व् এ जगरु काथां आया कां जिनाहे, म कथातां स েত্যনি সভা। এই আখালাভির প্রাচীন ইতিহাস व्यादनां का ब्रिट्स दिशा यात्र त्व कड व्याधीन कारम এই আধাকাতির রভের ভিতর ভেগাল আরম্ভ क्रेब्राटक् । द्वरणव अभव निक्रमान अवरक माना भूनिक माना मक । काका छाए। त्यम त्य त्यांचात्र प्राठक ष्ट्यांकिन कारा का निकिष्ठ क्रिका'मक बूर्ण मद ८६६६ शाहीन ६'डि व्यापाक्राणिक कथा जामना भाष्ट, अकि मिछानी जाटका जान अकि वागवल्पत्र कामाके वर्षा । तम बाब होत्र कार्यात्र वहदत्रत्र कथा। एथन क्लिक्ट भारे मिहानीत त्रांका भगत्र । मगत्रथ १) छोशात्र एतिमीत विवाह शिवाहित्लम इकिन्छ-सारखन्न मरम । कामाहित नाका कामानान---अमिमा हैकिएकैन नामा जुजीन चारमन दहरिनदक

কথা দান করিবার অক্ত কড়া তলব পাঠাইরাছিলেন।*
রাজায় রাজায় বখন এমনি হইত তখন ছোটখাট
লোকের মধ্যে "ছুফুলাগণি" স্থীসংগ্রহ হইত না,
কে বালবে ? পক্ষান্তরে শুস্ত ও অনার্যের ভিতর
হইতে যে স্ত্রীসংগ্রহ হইত এবং ভাহাদের পুরেরা ।
পুত্রকপে পরিগণিত হইত ইহার ঝুড়ি ঝুড়ি, প্রমাণ
ধর্মশাস্ত্রে আছে। বিবাহ সম্বন্ধে জাতিভেদের
কড়াক ভ অপেকাকৃত অর্বাচীন কালে হইয়াছিল।
সকল দেশেই আর্যাজাতি এমনি করিয়া আর্যাজের
আতির সঙ্গে মিশিয়া গিয়াছিল।

योजि निःमः नाम अ कवा अवदना वना योग ना, कत् भरन इम व्याधाकां । यक मभरम कुछश्रा व्यथितियाम ७ विकेषि माञारकात निर्मित्क छ्ज्रिया त्य त्य चारन व्यायानात्वत्र क्षानिकान পড়িয়াছিল। हिन त्मर दमरे छात्न भूटल मानाकां उत्र वन हिन, ব্যাবিদ্নের সভাতা, জাবিড় সভাতা ও সম্বতঃ मरमानीय महाका मस्रोप हिना। व्यापा-कांकि छाबर ज्याशमन कतिबाद शूर्व्य इंडिक शर्व इंडिक এই मगुहर জাতির সাহত অনেকটা মিলিত হইয়া পিয়াছিল, धक्षा महा ३१८म थातीन व्याया-मान्न यीश्राता ततना कांब्रगाष्ट्रक कांकात्रां प्र योषि व्याया हिटलन अ कशा महिम कार्या वना यात्र ना। व्यवकानित्रामव िक्टिय एय अव जार्रात-जायुक्कान भावे. अत्र टवर्ष छ যে সমুদ্য আতার অনুষ্ঠানের শাসত পাল, তার ভিতর व्यानको (व এই मव व्याप) वाहि इहरू पृशेश मग्र छाङ्। एक विकादन १

व्यांग कार्डिय विश्वास-विश्वास इन्टेड এ मण्डल मृहेरिड (मड्या याइटिंड शाट्य, व्याप्याक्षेड व्यार्गाहीन कार्म खाक्र, विश्व, व्याप्या, व्याख्यालंडा अवः व्यास्थ, गास्वर्य, श्रीसम छ देणमाह धर व्यष्टिय विश्वाद्य श्रीप्रहस लाख्या याम। श्रीसम्बद्ध व्यामि (मश्वाहरू हिंदी क्रियाहि (य खाक्र विश्वाहरू व्यामिय व्याप्त विश्वाहरू क्रियाहि (य खाक्र विश्वाहरू व्यामिय व्याप्त विश्वाहरू क्रियाहि (य

व्यायम भाषाका त्राक्रम ७ रिन्नां विविध्यनाम स्वाट-

নণের বিবাহ-বিধান হইতে, ধার করা। আর্ম্ব-বিবাহে করা।
মৃত্য দিরা ক্রম করা হয়। আর্ম্ব জাতির (Ausyrian)
মংধ্য কেশল এই উপারেই বিধাহ হইত, ভাষা আমর।
ভানিতে পারি। রাক্ষ্য বিধান অন্তাপি ভারতের
বহু ছানে অনভা জাভিদিগের মধ্যে প্রচলিত। ইহা
ভারতের আদিম অধিবাসীদিগের নিকট ধার করা এ
কথা মনে করা অসলত হইবে না। এ সম্বন্ধে আমাদের স্বর্ধন রাধা কগুরা বে ডাবিড দেশের প্রাচীন
সাহিত্যে রাক্ষ্য নামক মহুষ্যজাতির কথা উল্লেখ আছে,
পাণিনীও এই জাতির উল্লেখ করিয়াছেন। পান্ধব্ব
বিবাহও একপ গান্ধার্যানী পদ্ধব্য জাতি হইতে গৃহীত
হওয়া আক্রম্বা নহে।

• উ: हा विक क्षेत्रक ज्यामि जात्रक (प्रशाहित्क (एड) क्री माफि, त्व, এट मर्नेष्ठ विकालीय कीन विवादश्रीकाटक व्याधा मःचात्र वात्रा भाषिक कवित्रत ८ हो ग्रहे देवत, व्याप **छ** প্রাক্ষাপত্য বিশ্বহের সৃষ্টি হইগ্রাছল। আহ্বরাদ क्कि व बाजा क्ष्मियां क्षियां क्ष्मियं क्षियं क्ष्मियं প্রভুত্ব প্রতিন্তিত হয়, কিন্তু আয়া বিবাহের প্রধান याभिकंत याभी श्रोत अपूर्ण मध्या। (महे अपूर्ध-मध्य স্থাটত করে শান্তার সংক্ষার। স্থারিং নিকুষ্ট নিবাছ-खानारक मःश्वात त्नाविक कतिया वित्नविकारम व्याप्त काया ষ্ঠান করিয়া লইয়া যে বিবাহ-পদ্ধতির সৃষ্টি হয় ভাষারহ नाम रेपय जारा ७ आवाभगा। भगवती कारम. वैरुट्डिल यथन कुनावेन मा उथन काक्ष्मान विवादहरकल मरकात्रवृक्त कविया जलमा **एकेल । विभएकेत घट** जाय-त्रांण विवाद मः स्वात ना रुवेटन काका विवास विनास अना रवना। এर উপায়ে অনাধ্য अञ्चल्ता मरकुरु कांत्रवा व्याया महाहात मटक मगोकुड कावदा अरूव क्या इहेड।

ক্ষতনাং আধানাতি যে "জন আৰ্যা" জাভির সজে খুব খনিও ভাবে।গাড়া হৃহতেই মিশিনা সিয়াছিল এবং "অন আর্যা" জাতির নিকট আচার-জনুঠান অনেক ধার কার্যাছল নে বিষয়ে সংক্ষেত্ন নাই।

কিন্তু এ কথা স্বীকার করিলেগ বাজালীর বা ভারত-

^{*} Hall, History of the Middle East p. 257 61

[।] व्यक्ति १०६०--- व्यक्ति कामरक विवास विवास ।

বাসীর অনার্যান্ত প্রমাণ হইল না। শরীর-হিসাবে মানুষ
একটা উচ্চ অলের পশু, কিন্ত অন্তরের হিসাবে সে
একটা সম্পূর্ণ অভন্ত জাতি। এই অন্তরটাই হুইল
মানুবের বেশীর ভাগ। পশু হিসাবে মানুবেশ বিভাগ
এবং তার মনের হিসাবে বিভাগ সর্ব সমন্ন মেলে না।
১০রেজ জাতির মধ্যে অনেকের কুলজী দেখিলে শেযে
াশরা ঠোকতে হইবে একটা করাসীর নামে। আর্থাণ
দার্শানক কান্টের প্রবিপ্রম্ব একজন অটলগুবাসী। তাই
বালায়া কান্টকে ক্ষচ এবং মার্টিনোকে করাসী বলিয়া
বানা বারলে যে ভূল হইবে গৈ বিবরে কি সন্দেহ আছে ও
চালুবের মন দেখিয়া ভার Cultureএশ হিসাবে যে

্তথ্বিদ্ আঁগজাতি বলিয়া বস্তমান সম্বা দাতির কোনও বিদাপ বীকার করেন না; কিন্ত আঁগা ভাষা আগা Cultureএর স্বতন্ত্র অন্তিম্ব অস্থানার করেন । আমরা আগা কি অনার্থা, আমাদের পশুত হিসাবে কথার কোনও সার্থক্ত। নাই। কিন্ত আমাদের ulture এব দিক হইতে এ প্রধান একটা সার্থক উত্তর । ওয়া যায়। বাঙ্গালীর মন, তাহাদের Culture আ্র্ধা ব না এই কথাটাই অঞ্নীলনের। যাগা। নাক চোধের ।পা দিলা বাঙ্গালীর আর্থাতা ও অনার্থাত প্রতিষ্ঠা

বাজালীর শরীর মজোল হউক বা জাবিও ছউব বা কাল হউক, ভার মন জ্ঞান ও আচার আর্যা কিনা, াইটাই জিল্লাপ্ত।

এ প্রশার সমাধান করিতে গিয়া একটা কথা সরব াথা দরকাব। কোমও জাতির Culture সম্বন্ধে মতামত প্রকাশ করিতে ভইলে দেখিতে হইবে প্রধানতঃ সমাজের শীর্ষভানীয় প্রেণীগুলির আচার, বিজ্ঞান, ভাষা ও ধর্ম। নিরন্তরের মন দিয়া সমস্ত সমাজের Culture বিচার করা বার না। নিরন্তরের যে জাতীর জীবনের উপর কোনও প্রভাব নাই এ কথা বলি না, কিন্তু সে প্রভাব গৌণ। প্রধানতঃ নিরন্তরই উচ্চভরের নিকট ভাহাদের Culture প্রাপ্ত হয়।

এ সম্বাদ্ধে আর একটা কথা আছে যে কোনও জাতির আর্যান্ধ প্রতিষ্ঠা করিতে গেলে জাসাবের একথা

ध्यभाव कविटक स्टेटव ना त्व कारकत यम कारकत चार्का जन्तेन, তাष्म्र कामा नमस्य जिन हात स्थात बहुद्वम পূর্বেকার আর্যাভাতির সজে আগালোড়া মিলিয়া যায়: कामनत्न बारकर इहेरवह । का काका व्यक्ति-मकाका कारांत्र व्यनांचा आरवहेन रहेरल एव व्यक्तक विश्व আপনার ভিতর টানিয়া কইবে ডাহাও নিশ্চর। এই ধার করা মাল যদি আধা সভাতা ও আর্বা জীবনের कामर्लित महिल ममीकुठ रहेता बाटक, कन कथा এই रेजिराटमब मुल आर्पत्र धार्वादिहै। यपि कार्यात्र शान रुव তবে আধার ব্জায় খাকে। ডিমটি ফুনিয়া বেমন পাবীটি रय, मगात्मत जमिवकान कथनरे तम तक्य रय ना । मगास वाक्टिक इडेटन পরিপত सीय भनोदन साम वृद्धि ও পুষ্টির উপাদান সংগ্রহ করে তাজার সমস্ত বাফিক আবেষ্টন হইতে। ফুডরাং আগ্য জাতির চিন্তা ভাব ও আদর্শের প্রোভ পদে পদে চতুর্দ্দিক হইতে আর্ব্যেক্তর कां जित्र कांव िक्षा ७ कांक्र्म महेबा पृष्टे हरेबाए। किन्न ছोनन द्योग थारेया भरीत-भूष्टि करत विनया स्वमन ছাগল খাস হইয়া যায় না, আমরা পাঁঠ। খাইয়া শরীর পোষণ ক্রিয়া পাঁটা হইয়া বাচ না, তেম্বাল আবা সভাতা 9 culture धनाया जाहांत्र अपूर्वान लहेता निस्त्रत पृष्टि क्रिय़ोह्ह विनिद्या तम कानाया करेवा याय ना। जामन अश अर य आएनत भातात मूल अवार्धी आयी ना क्रमार्गा।

এই কথা শারণ রাণিয়া বাঙ্গালীর চিন্তকাৎ অনু
সন্ধান করিলে আমর। কি দেখিতে পাই সেই কথাটা
বিচার্যা। চিন্তজগতের নানা প্রকাশের দিক হইতে
একথা বিচার করা ঘাইতে পারে। একটা দিক
আমানের ভাষা। ভাষাভত্তবিৎ হপণ্ডিত শ্রীমুক্ত হুনীতিকুমার চট্টোপাধ্যার মহাশয় বলিয়াছেন বৈ আমানের
ভাষাটা তামিল তেলেগুর নামিল। সংস্তৃতের নামিল,
নয়। আমি ভাষাভত্তবিৎ নহি, কিন্তু কথাটা আসংশরে
মানিয়া লইতে পারিলামু না। কিন্তু এ বিশ্বরের
আলোচনা করিয়া অন্ধিকার-চর্চা করিব না। কারণ
কুনীতি বাবুও একথা অন্ধীকার করেন না, যে যাজলা
ও প্রাকৃত প্রধানত, সংস্কৃতের বিকৃতি, সংস্কৃত ভাষা
ভিরম্বাতির মুবে ষাইলা ক্ষেত্র বিকৃতি, সংস্কৃত ভাষা
ভিরম্বাতির মুবে ষাইলা ক্ষেত্র বিকৃতি, সংস্কৃত ভাষা

(डमनि बिद्धाँ । এই টুকুই খামাধ পাতপাত প্রাস্থা। পক্ষে মথেষ্ট। । একথা যদি সদ্য হয় তবে বাজলা ভাষা আর্ব্যবংশীয়।

जागात्मत्र हिंख-संगटजन नात अकरे। धकां नात्म আমাদের সামাজিক জীবনে পাই। আমাদেব জাতীয় দীবনের সব চেয়ে স্থায়ী এবং দুঢ় বন্ধন আমাদের সামা खिक चार्रित **चार्र्शन**, विधि निरम्ध, धन्न छ वावदान। এই দিকটা আমাদের স্মৃতিশান্ত। বাঙ্গালী হিন্দুর উচ্চ-त्मानीय मरभा मोौबरनन कारका क बच ख र कि नामिना स्व স্মৃতির বিধান ভারা নিয়মিক একথা শেক শাস কাব कविर । शांत्रिय ना। (म च्रुजित्र के किरोग कांग्ला ना कांद्रशा द्वरपद कांचल द राज वधुननमन वा मोकुक पर्शक अक्टा ना अक्टा कीव्य धातात मकान गार । नात व्यानमञ्जि ७ दकना कार्यात्र थान । कारा अस्मिन एय আচার অসুষ্ঠান প্রার্কিত ববিয়াছে। ন সামাদের আজি কাৰ নিজ্যস্থালা অব, অষ্টাদল সংস্থার গভান সকলত ध्मरे आठोश्रां कि कहा न मण्युर्व ष्यां छन्न न। क्रिंगिट कोहोनक अक्रिपि भोडा प्रसिव छीन्टन िक्षा, न व छोन्।न (धाँके वेद मक्ल नामाल नामता में का 17 ले । ्य रुजेशालय न वर्गाम 회사 되시 나 이 이 아 आलाह । किनालि भागता ५५ भी कांत्र का गर नाहा कर र शान शान इसे लागिन्य ज्यानिन्यत महिल भ विभिन्न क्षणाह, व्या 19 वा वाकित इहा म কোনও নিয়ম বা অনুসাদ কথার ভিতর আসিয়া कृकिश्राटः, किन्धः वाश्ति ष्ट्रिश श्रहा मानिशारण खार। সম্পূৰ্ণভাবে সমীকৃত হুইয়া,আগ্ৰাসভাতার ভদ্ধাবে ভাবি ম ত হয়। তবে সমাজে ভান পাইয়াছে। প্তরাং এদিক क्रेटिं (मिरिट्निंख (मिरिट्न भार्य या आमत्र) साबिए इने वा मात्वालीय रूट, आमात्मत Cultuic, आमात्मत সভাতা, আধাসভাতা। বুদ্ধদেবকে থখন শ্লোদন পুত্র ৰলিয়া সম্বোধন ব্যিতেল তথন তিনি উভর কার্যাছিলেন তে, আমি শোমার পুলে নাঁহ আমি পুরবর্ণাদিগের आभारतत आधाशिक सीवन मधरक বংশধর। र्जाविष् ७ भटकांगरक व्याभारपत अभिन छेखत्रई पिट्ड श्ह्रीय।

বাকাশীর চিত্তপাতের, চাইকি সমস্ত ভারতবাদীনই

• *

beanced असम य इक्खींचा अकान जाराः योशीय मुझ আমধা প্রাচান আধাসাহিতে। খুলিয়া পাই না। ভাই বলিয়া এগুলিও যে ভারতীয় আর্যাসমাজ বলিতে যে প্রাচীন মিশ্র সমাজ বৃষ্ণি, তাহার ভিতর ছিল না একথা (छ।न क्रिया वर्णा क्रमण्डयः। व्यापारमञ्ज्ञानीन मान् श्राद्धत्र मध्या (य भभमामश्रिक मकल गामां जिक उथा पुरु लाटा ध्रम क्या मत्न कता खामक इहेरव । त्म अभाग्छ म्यारकात्र ज्ञाच अभग मन क्या हिल, याग (काम मात्र थुँ। करा। भागवांत्र छिशाय नाव। पृष्टी कश्वम व्यात्राद्यन त्यद्यली भाग यश बाहिए भारतः १ ८ আ্বার শন্তান ও সংখ্যারভাষ্ট শাস্ত ইহার বেনা। - १८५'व (काम ५ नथा (वर्ष भूत्राप माहे। कि ७ मरिष् ६ हेश सावस्थानकाम स्ट्रिंड अनिम स्रोग्टि कोरिक धन्द्र आ जिस्थाक। जामखन नहा जाभस्य केंकिन धन्यक्टरन । नट्य निवाहित्व, अट्य योद्य (अर्था बहल डारा हाछ। व्यक्तांश नथा श्रीत्मोकमित्पन निवध नि २४ ३ ४ त । हेश कि त्यरमधो भारभन भिरत केंकिन नगर नमार व नेकिटन द्वानागापन अर्थभान ंकि के न्यान काल शिक्स न्यान नी लोक कर कर खोन करम्म नन । डा ६१६। ६।म्या (६न माग्नस् क्ट्रीक रशिष्टक ६१० रश खाठील शासिक करण । य सामा ए इंकिंक त्यरक्षोभारत्य करनवर्धाल खब णाठा म किन अह । पा का स्थापनी मार्किस स्थापनी म काट्यान धात्रा व्यक्षक नव केशन माधा वाहिएसस एव জিনিষ তাহাণ যে প্রাচীন ধাবাব সহিত সমাকুত একণা व मा माईए ५ शास्त्र।

তারপার বাদাদের দেশে অবস্থাপতিকে কতকভালি
বিশিপ্ ধর্ম্মত ও ধর্ম সম্প্রাণায় গড়িয়া উঠিয়াছিল।
সেই সব পর্যান্ত বা সম্পেদায়ের যে আয়াধন্মের প্রধান
বারার সহিত কোনও সংযোগ ছিল না, একথা কেছ
বলিতে পারি না। তাহার কতকভালির মূল হয় তেও
আমাদের লৌকিক সংস্থারের, চাইকি প্রচলিত মলোলীর
সংস্থারের উপর প্রতিষ্ঠিত। কিন্তু সেগুলি ধ্বন আর্থা
ধন্মের সহিত সমবিত ও সমীকৃত হইরা গৃহীত হইরাছিল
ভবন তাহার বলে বালালীর সভাতা আর্থাতর জাপি
হইতে প্রাথ একথা অন্ধ্যান করা সম্ভত হইবে না।

आर्थावरणोग्ना भेखिक्त्रारित व्यामज्ञा रकाम् मरण छार्। आर्था कि ना, व कथाक উखन्न रक्वन Culture अन्न নির্ণা করা বটিল। তবে আমরা বাঁটি আখ্যা নই তাহা দিক কহতেত দেওয়া চলে সে হিসাবে আমরা লশ্ব। কেবল তাহাহ নর থাটি আয়া বাল্যা কোনও আর্থ-শীয়। ाठि अन्दर्भ मात्रे धरः आगाएष्यं भूटन मानवज्ञानिन •

হতরাং আমাদের চিত্ত-জগৎ হিদাবে আমরা কোনও তোনা বিভাগ করা চলে না। কারেই আমরা

ने। नरत्र हता दमस्थ्य नार्वान व्यक्ति, ३७२१।

मत्रमु (क्रांत

निकामत्न कैं। पाष्ठ दक (१)। १--गटकार (कान व मा ७ ८गा।--करना भावा कान काना व १ । । ভকার না ক' আঁথির পাতা, एकन প्राटन ध्रमन वार्था Cकान थारिश (य कि ब्रिश को नरक "

वाणित नौखत्र कृत्क किया কে ভাতিল আঘাত দিয়া গ **क्रिया** क्षिम क्षेत्र श्रुष्ट क्षित्र। বেদন-ভন্না অঞ্নায়, কা'র বিরহে কাত্তর অখি, नयन-खरमय (क कुहे खदा खदी।

पुरकत्र नौरा भाषत्र (ठेरक, তবু আশার স্বপন দেখে, भाधन र्द्धाण छेथा ७ हरण रमस्म , वित्रदर्शि छेनक् नएफ, কাগায় ব্যথা শ্বতির অলক্ষেরে।

गत्नत्र कथा याटक त्यांना, বুকের উপল যাচছে গোনা— भरचत्र कातां चौरियत भत्रभटन , ध्यम मद्रल कभनाविद्र । क जामान नय्न-नीर्य १— भाष, व्यवधीय भवन नाकि मदन।

भक्ष माहि, नोठक माड़ा,--একটি শুধু C51C4র ধারা मिन योभिनी ध्यानि करत्र' यरत्र , একটি শুধু গানের লীলা— একটি ব্যপা অস্তঃশীলা आदिश ७८३ छह्दम थानि भट्छ।

মোনতারি নিঝুম স্থরে একটি কথা বেড়ায় খুরে',— ডপত্যকায় তাকায় মিছে আশা। मिन-ছপুরের বিশিক-আনো बाक्तकारत्र मुश्च कित्रांटनां, श्रम्दत्र मद्त्र-ष्यवृत्व छाणयामा ।

हुन्द्रेनियां चुष्ठि 'भरब त्राथ्टक वृथा (5 हो करत, कुछ नर्धर कुछ (अर-कर्ग) छन्टक अरम कित्र नाती, **6नारक ऐर्फ्ड कारबंब साबि**, মিলায় পায়ে মায়ার আলিপনা!

हरफ़त्र करन जनाव आनि, त्रवित्र चाटना, हाटमत कानि, मकन करम एधूरे खाँचि-भाडा; स्थित कथा-कान्ना-खना. সাম্বনা ভা'র—অঞ্-ছডা, পরাণি যা'র ব্যথার রেশে গাঁথা।

वक हेक्छ' कन्यनानि, একট্থানি ধড় ফড়ানি, मिनाय-मिनाय अकट्टे मुट्टाशूटि, প্রেথ-পেয়ালার লেষ-ভলানি, তোরেই আমি মিষ্টি মানি, তোরই তরে অ'মোর ছুটোছুটি!

গড়িয়ে গেছে কোথায় জানি এই পরাপের আধেক থানি ওই নয়নেব আগ্-কেটোডে ভোর! **लिছ - क रि**टिंग जिहित्य अरफ कार्यात्र त्यन कॅान्ट्ड अदत कार्यक हिया--- (मा मन्यू-(कान ! अध्याधितिसनाथ वरमाभाषाम्।

চয়ন

রুষ-লেখক সোলোগাব

তিনি অনেক লেখক। করিয়াছেন—ভাহার यत्था সুটিয়া উঠিয়াছে, ছঃখের বিষয় অমুবাদকর। লেখা পড়িয়া খুলি হন। भिष्ठिक विद्यु अथाना मुहिलाक करत्रन नारे।

मामाभाव कवि, । छानीम ७ यक्षमर्भक ।

শোলোগাব কুসিমার একজন স্থবিখ্যাত পারে না। দার্শনিকরাও তাঁহার লেখা পছন্দ গ্রন্থ বচনা করেন না, কারণ তাঁহার শক্তিতে বঙ্কের লীলা ইংরেজীতে অফুরান। সুতরাং এই তুই অতি-নিম্ন এবং ভাষান্তরিত হইমাছে মাত্র করেকথানি। কিন্তু অতি-উচ্চ শ্রেণীর মধ্যে থাকেন বে-মদোর लालाशायत जामन विस्मयक (य-मव तहनात भाठकता, क्विन डीहाँबाई मालाशायक

कान्यात थाएव विमा (य-मय (मथक পথের দৃশ্র-প্রবাহ দর্শন করেন এবং ভাহার वर्गमाण कतिशह छाफिश (पन, (मारमाशाव काँहां मानम-कार এक रूम ७ शकीत (य, काँहारमंत्र मरमत नन। এहेपारनहे राज्यक्र व्यामारमञ्ज प्रवीक्षनारवत्र मङन डीकात्रश्च ब्रह्मा मरण डीकात्र श्रास्त्र । जिमि थाणि श्रूण-भिक्री कन-भाषात्रण यथार्व बहादवाच कतिर्द्ध (थणांत्र मकन लाटकत रमणा स्मिथ्याई धूनि इस

ना—एमहेमरक बार्या प्रचिट्ड हान—किरम এরা চলা-ফেরা করিতেছে, কোন্ অদুশু হস্ত धारभन्न (क्लाइटिंडिइ १ जिनि श्रेश्न करत्रन धर्यर र्थेष्ट्रमान करतन—किन्द मोर्नेनिध्कत जाराक নয়, কারণ তাঁহায় কাছে সে ভাষা একান্ত नीवम। जाननाव मानम-ভाষকে कृषेक्षि ভালবার জন্ত তিনি রূপক, কথা ও কাহিনীর षाअप्र अरूप करत्रन। देशनिक कीवन-शाजात्र মাঝখানে তাঁহার কাহিনীগুলি বিচিত কল্লনার কুহ্রমের মতন বিফলিত হইয়া ওঠে। কিন্তু 'শ্লি বস্ত্রনার আনন্দ-লহরীতে গা-ভাসান मियात क्छा मरनाग्रंदरत मत्रका त्थारमन ना, ভাবকে ও চিস্তাকে চিত্রিত করিবার জন্তুই বশাকাশের উধাও করনাকে সংযত করিয়া ानिया ज्यानिया, िकनि ८६। । ८६। । जन-१५८व ्रथात्र (मथात्र जाशाहेबा (कारमन ।

এইজস্ত । দোলোগাব জনসাধারণের মন রাখিতে পারেন না। ভিনি নিজে এ-কথা कारनन अभारनन। किन्छ दक्छे छाँदक छाएगा-বাসে কিনা, সে-সৰকোন-কিছুর তোয়াকা ভিনি श्रांद्यन ना। ভাঁছাকে ভাঁছার কোথার মানে বুঝাইয়া দিতে বলিলে তিনি জবাব জেন:--

"यटन ভাবের আবেগ হ'লেই মাতুষ निच्छ दरमः, किन्न स्म ममरब्रेस सम षाननात्र खादरक वाक कत्र्य ना भारत, खरव भेरत यथन यम त्थरक ভार्यिय व्यारवंश हरण यात्र, তথন সে কি ক'রে সেই অম্পষ্টতার আসল वााभा भिट्ठ भाष्ट्रव ?"

সমস্ত কবি-প্রকৃতিরই এই একট ধারা। कार्रे कवित्र कार्ट यात्रा कांत्र ब्रह्मात कार्ब रुव्हि मासूरवत्र काखिरकत मका। मासूब हरण कानिएक बाब, कान्ना कवित्र छेन्दन बवार्थ শ্রদা-ভক্তি প্রকাশ করেনা।

সোলোগাবের মতন প্রতিভাষান লেখকরা मरमत जैसकानिक रहेश भारकन। छाराता याद्यादक ब्याकात्र मित्रा श्राकाम करहत. ভাহাदक आमत्रा मकलाह अञ्चल कति, किन প্রকাশ করিতে পারি না।

সোলোগাব ভাঁহার সাহিত্য-জীবন স্কুর করেন কবিরূপে। ভাঁহার কবিভার দেখা ষায়, তিনি সর্বজ্ঞই মাহুধের চিরন্তন জিজ্ঞাসার উত্তর খু किया বেড়াই তেছেন, কিন্তু বে উত্তরে मरनत्र जकन जस्मह कारिया बाय, छोटा छिनि विश्व है फिब्रा टकाशांख भारत्यहरून ना।

"কেন এবং কিলের জক্ত এই মানব-कीवन १

"मम्ख की वनहों है (थमा खरः भ (थमात्र (कान मका (नरे।"

"गमल कीवनहार मिहा कांककमटक खरा ध्यर नकारीन सम्माख। (वँटि शकाय कान भारत পাওয়া योत्र ना।"

"Oppressive Dreams" নানে কাব্য-পুত্তকে তিনি জীবনের এই ব্যর্থতাকেই নানা-ভাবে প্রকাশ করিয়াছেন।

"একজন চলন্ত মানুঘ তিনবার পুপু (क्नार्म। माञ्च काथाय हरण श्रम, किन बुंधू भए इहेग।

व्यथम पूर्व रल्टन, "आयता अवाटन चाहि, किन्छ (म मान्यिष्ट जान (नरे।"

विजीय थूथू बन्दन, "दन करन त्रिष्ट ।"

क्छीय थूथू वन्दान, "म शान व्यामात्मक विधारन (कन्यात्र क्टक्ट क्टम्हिन। जामत्राहे त्त्ररह, कि**ड का**मना बाहि।"

कीयन-मार्ट्स रखाम स्ट्रिंग ध्नारमा-

"এক যে ছিল বুডো, ভার এক ছিল অল্লে—এক্ষার—এক্ষার—এক্ষার। बुष्डो ।

বয়স পাঁচশো আব বুডার বুড়োব हाबरमा ।

छाका भरना व्याप कार्य रूप मिछ— शत्र চালাধার জন্তে।

वुर्फा भाकरशांक कब् ठिक नव-पूर्नाव भड़न, जांद्र पुष्ठी खांद्र भाषांत पूर्ण करांश মাথাও।

व्द्रा पृष्ठ मिशादबंधे प्यांत काशर्ड মাথ্ত আঠর।

वृष्टी दुस्क वाकक्षम आत्र (गर्ध विश्व विषय । (इश्राज्य

हर्ण (जन यरमव बाष्ट्री।

গাবের মধ্যে অর্থপূর্ণ হাক্সরসের অভাব নাই। বুড়ী একদিন অপেরার গান শুনতে "বুডো-বুড়া"র কাহিনীই ভাষার প্রমাণ। শুনতে, গলাব সপ্তাশব বের ক'রে খুব টেচিয়ে ्रेगाठानिटक क्रम रगरे एम थिएमेटोर्ट वर्ष किन्दिन পড় न। जात्र मन्ता

क्षे बार धार्म क न वर्ग के प्रकार এম স্থাবে সাহিত্য-জীবন স্থান করিয়,

দোলোগাব শেষে জীবনের তর্লভাব দিব ভাড়িয়া ভাহার গভারতার দিকে দৃষ্টিপাত করিলেন। তাহার "The Little Iremou" লাশক দার্ঘ উপভাবে তেল সমাজের न्यार्गिक-ट्यानीय केट्ट क्योकक्रम्टक्स वक्शीन नामाध्य ज्यानियार्छन, किस भारनाभारतम शाक्षाक '५एकत क्रमात का जाम शाख्या यात्र, Steta "The Lily and the Cabbage" वुरा अक्षिन मिश्रीरवर्ष थुव कर्स भम् नामकं छन्छव काहिनोटल। इहांत्र भर्धा जिन ভ'বে মাব্লে এক টাল-জাব-এক টাল-- সমাজের চিরাচবিত বাঁধা-ধরা রীভিনীতির আর এক টান! পেষ-টানে সে শিতে ফুঁকে ভাজামিম উপর প্রচাত বড়গাঘাত করিয়াছেন।

*ज्यारश्चिक्*यांत राष्ट्र

াড়া কি জ্যান্ত হয় ক
বিশাতের একথানি প্রামাণিক হৈছুলানিক না— মৃত্যুর সময়ে ভাহার। সম্পূর্ণ বিশ্বতির ভাহাব সার-মত্ম ভুলিয়া দিলাম।

ক্ৰিয়া তাহাদের অনেকে বলে যে, দেহের ভকীতিকি ক্রিয়া আসিতেছেন। অস্থায়ী মরণের সময়ে তাহারা "স্বর্গ" দেপিয়া

কাগজে এ-সম্বন্ধে বাহা বলা হইয়াছে, আমরা অধ্বকারে বাস করিয়াছিল। বাঁহারা চিকিৎসা भाज, मत्नाविकान ও विकान महेत्रा मार्गि। गांत्वा मांत्वा (मांना यांव्र, मवा मांक्ष (फत करवन, मदरनंत्र भरंद्र व्याच्या (कांश्रीय यांव्र, काां अ रहेश ऐतिहार । शनकीवन लाख এ विषय भहेश छाराया अरमकान धरिया

देवछानिक (पत्र (हारथेत्र माम्टन मध्यो ७ व्यानिमार्छ। दक्ष-वां किङ्ग्हे विनिष्ठ भारत अकि व्यान्तर्था बहेना बहिनार्छ। **मिरम**भ

धालकार्यण (अरकत वसम नाभावत वर्गत। छाकात वालसार्थम, "एलाएक यांत्र व्यमन मन वर्मद वश्म इंट्राजिक जो**कांत्र (म**र्ट्स थुमि ভাবিতে পারেন। याँत শেখাওরাখে"র ক্ষনতা প্রকাশ পাহরাছিল। বিশাস করুন যে, মিসেস্ ব্লেকেব আত্মা । यार्क्यात्म छाहात्र मृद्रा दय । काँकात पर्दा शिम्न आवात कित्रिय आाममारक्ष। ाक्टांवन काशदक मुक मानास करवन। किस छोकदमा-निष्ठात्नत्र मन् दहे य, ठाविष्ठ त्राभुन्ति ना निर्मादम्य त्यान सम्पर् किया ना जिल्लाहर केलिया (पर अध्यक्ती) र्दर। श्रायाय नामाय नामाय (पार बरनत अक्षन धारत धारत किन्निया आहम। भवादम जोकान ८५१८थय भाग का का भट : मानिन ानभद्र भर नर्मा कितिन. नाजभन्न ८६१४ लिया ८ ल, जांदर्श कैंकान कांद्र क्लांनर क * 5 47 1

१०।म न'मापन, 'आर्थ । পত अगट । एका प्राप्त । रशिष्टिन्द्राः, नानाः, (म कि ध्यादकार के.च १ रा भ व्याभाव जार्ये वांत श्रार्थिति मकारने भ कथा दरम এमि।" आवात्र भार्थिक धार्म माल यरात मत्रम शिन अलाय जः थ लयाम करिए व वा गिर्ट न

रेबरमम् द्वव रधनक इव उत्रम श्रम् भटक त्राकाणन। डायभय भागात्र किल्न नगणाक्रक ेशिक मुक माराष्ठ कतिरमन। घणीक ०क পরে আবার তিনি জাখিত হণ্যা উঠিপেন **এবং डाँहार बाखाटक भूनताम कर्शकार्ग । मर**ः चित्रिया जामिए निप्राट्य वान्या यागीत उत्मादम योक एक नागितन । शत २०१ धार्थन তারিখে তাঁহার তৃতীয়বার মৃত্যু হর ধবং व्यवादत्र कांत्र किनि कीवनमाङ करवन नाहै।

এक चंद्रमात्र कथा खानग्रा धकलन नामकामा

• रहांत्र अरु मुड़ांत्र मुड्न भाकु करना आहम नागरेंग्द्र मुक्न [†]मरमम् (ब्रुटकेत्र कामनेशात्री ्। ध्म (मटक आष्ट्रीय नांक, खर्भाध्य भणाक्षर भारत। विश्विस, आणामाणाकन, त्यांक्ष्मीकृ (Cataleps) । या मुक्क रिवाश। मुर्फ्रारवाद्वाय माधामित्य मातः कर्राउट् मांशांत्रेल छ्का । **या**श्रेट्ड (म्टिन्य म्यल्य काल वक्त इत्या यागा अनाफ मुक्कारक आमरा 72 ncopess आक्रम वील धर॰ कः अदश वस्तानकाम्रो कर्टा १ १८३ ।"

> মোনপীড়া ব পকাষাতে মান্নথের সাদক कांच-भारक (म-फारव दाचि। यन. (महचार्यह

गानक का कार्याश्रीय के कार्याय के व्राप्ति भी "नाविगा" (कालाया. आविति कागादक कावश कता रुरेग्राहा व्यानक मानुमा क स्थानन भावा "२ - गा" व 'रुना, ष छ 'त उक श्रीव आवादमत शत बावात और १८ के वाजायश (काला क्ष्या एक । ियांक वारण्यं कांत्रा कानक एक गुण्यं क्यांत्र পাঠাক।। कृषिम भाग छात्रांभन माहात्या का वाद काकाटक किदारश कान' कम्याटक । विकार मार्कारणा अखानन "क गा" कविया व्यादात्र विद्राटन व काबाई उन्हारमते कोमाइट ७ পারাৎ শেয়াছে।

बक्कर व चर्चाव ७३ थ्रच छ छ, "को बन कांक करो रूप भी कांक करोव कांक श्री % Cक छ । मटि भारत मार । यभि ५ दिशास (कान त्याक यांग्या थार्कन, कीवनछ। বিত্রাৎ প্রবাহ ছাঙা আর কিছুই নয়,— ব্ अथारन मुक्ति क्रेटिकटक अर्थ (य, अंबा আপনাদের অনুমানকে সত্য বলিয়া প্রমাণিত क्त्रिटल भारतन नाहै।

কিন্তু বিশ্ববিখ্যাত বৈজ্ঞানিক ডাক্তার क्यारिका (मारमव क्रेड श्रास्त्र मण्लूर्व छिन्द मिर् ना পारिकाल, সমস্তার আনেকটা সম্ধান क्रियार्ष्ट्रम । नाना भन्नाकाव भन्न मः श्री ७ जिन यक्ता बारिडेंब कान माराया ना नरशाई, मानो चार्छत গর্ভ হচতে কৃত্রিম উপামে मिटक স্বাস্থ্যস্থল वाष्ट्रा वार्डन खना পারিধাছেন।

এর উপায়ও খুব সরক। প্রথম মাদী बार्द्धव डिम वा oviim बहेन्ना जाव मास्रशास्त्र (छाड़े १क है है। भा करा इस (खान भरनर **्थो**। पिरलाई हरेल), छात्रश्र काइन्ट्र कान निष्युक ब्रामिक खायात्र कशा रहा। ভाরপব কোন বিশেষ রাদায়নিক ক্যন্তিকে व्रामात्रनिक भगार्थिव मर्ता छाभन कवा छ्य। यथानमस्य (मथान এकि वार्डां क्र जारावन 1 274

थार्कित्व क्रिकार्य वित्रकावर नृष्ट कीय- क्षीयनवाड क्रियाक्रिका. शृष्टि होगट भारित्व।

ममाभान करा इहेशाएछ। এখন "महान" कि, क्लान कथाई विश्व आर्यन नाहे। (मथा याक्। भिरमम् (क्वरकत "मन्दर्ग"व

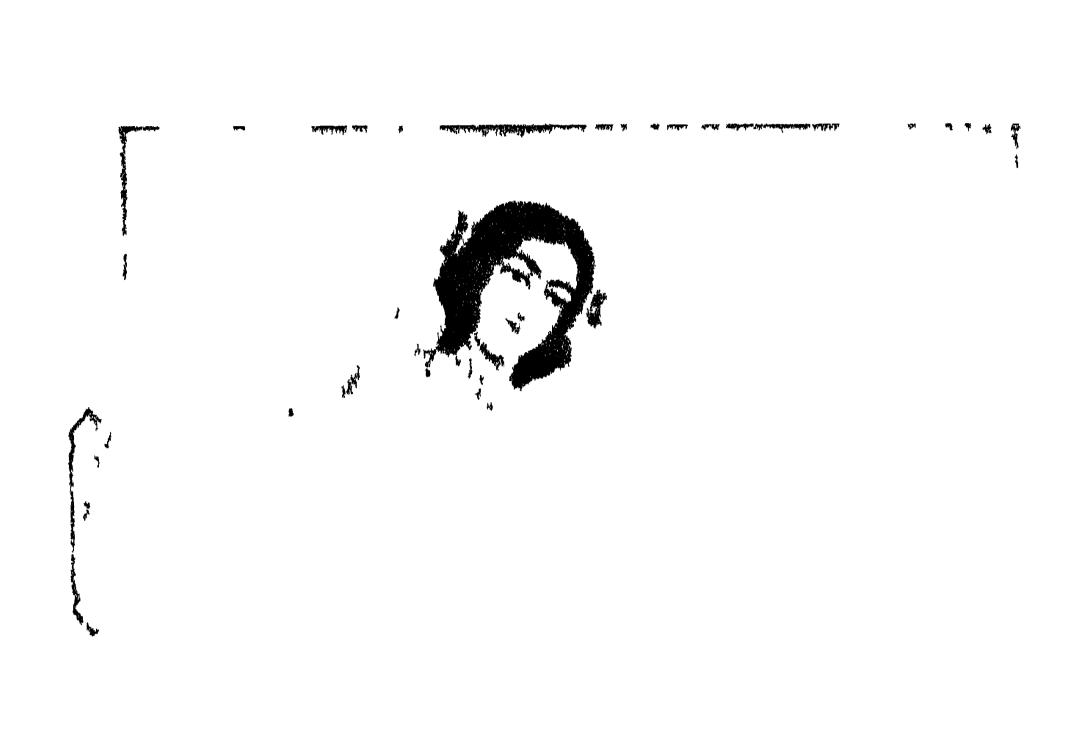
मकनरे मात्र- धकि परेनात्र कथा वान टिहा এक गुवा ভाङाब তেরো গ্রেশ আফ্রের সার थाङ्या मृजुामूरथ भर्एन। चाकिरमत नारतत এক ত্রোণ্ট যথন মারাত্মক বলিয়া মানুা 'र्य, তथन (उट्टा खान चाफिरमन्न मान चार्टेरन (य मूग कारकवादि मन्तरहत्र वाठीक, म कथा मकशरकर चौकात कतिए स्टेर्व। वित्यम, करवककन श्रीमद्द । किएमक ७ भवाका कार्या विविद्याण्टिकन, त्मर पुनरकत (मर् कोर्यान दियान मक्त वर्षमान नाहे।

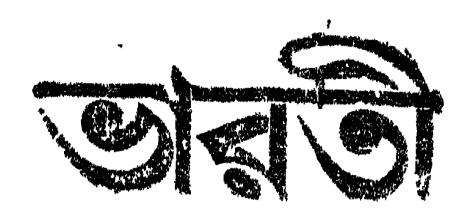
यांका इंडेक, (महे व्यवसार्ट्ड छाउनाइत्रा সকলে মিলিয়া বিষ-প্রাভিষেধক সমস্য উপায় এব॰ कुद्धिम चाम-প্रचारमञ् **चा**त्रां, युवकिटिक व्यावाव ठाका क'वश कुणिवाव कछ डेडिया शिक्षा माशिषा शिम्या शास वारवाचनी ধরিয়া অত্যাভভাবে পরিশ্রম করিবাব পর युवरकव (मर्ट धावांत्र कोव्यांत्र व्यक्त कृषियां পবিবর্তনের ভিতরে আনিয়া, শেষে সেই উঠিল। আরো কিচুকাল পরিশ্রমের পর একরকম সুষ্টিকারক ভবল সেই "মৃত" যুবক আবার इंड्न ।

বক্ষেলার ইনষ্টিটিটের ভাক্তার সামুরেল জে, মেল্টজার এই ঘটনাটির সভাতা সম্বন্ধে मकनारक है निःमत्नि इस्ट वानम्रास्ति। এই যে, ঐ পিতৃহীন ক্লাত্ৰম উপায়ে জাত ক্লাত্ত্ৰম খাস-প্ৰখাসের আধুনিক নিয়ম উদ্ভাবন ব্যাদ্রের কিন্ত-প্রন্থির ভিতরেও অত্তের অভাব কবিয়াছেন তিনিই। তাঁহারও মতে ঐ যুবক इस ना। २५७ शः मका कौरवद अञ्चिष ना एाङात मन्भूनं कर्पने मुख इहेगा भरत आवित

किन जगान मकरमहे राम मान बार्यम कीवत्नर मम्या এই नात्वर कडकी। (य, के छात्कात वीिमा छेत्रिया, भवत्वाद व विश्रमाममाम साम्

क्रिकाला—२२, श्राक्त्रा ब्रीहे, क्रिक ध्याम अकामाद्वीप प्रामाण कर्नुक सूचिक ध अकामिल।





88শ বর্গ]

टशीय, ३७२१.

ि क्य मः था

गत्र-वाटटनत कथा

'भवन वैष्टिन्।' क्या । किन्न एभन्न फ्रांगा व्यनम्। जनमा त्व काभवा "विश्ववाक्त किंग (Wintle श्रु त tech क सक्ष के प्राप्त कामा किंग क l'olitics) व. वड कथा अइग्रार जिन्नख, दोका (कारण अन्युर्थ क्रायक न्यायक मृतिष्ठ श्राप्त अमस (अरक गृणियीय नानारमरमस - दिन्पुष्टे कहेबा উठिए ६८६.— त्म निरंक छात्र. आमानित एपरमंत्र, हमझा एव**ळा, श्रि**श ना। देवक यांद्रांत्र अक्षांया जांक कालका क्ट्रान्टक, लाक व धक है दिया यांत्र कट्ठा कत्रिएएक, तम दर्शनी यमि वाद्यायात्री ए गाइ यूज्ञान्द हाञ्च ७ करून इरमद कांद्रन हन्या (वान-प्रत्यक्रमा श्वारकः द्वार्गत नीक भएउ।

Stall tics वा मरथा मर्डार व रिम एकार अना भारक. ५८व रशहे विल - ठम (य में हा वाक्रमा ज्ञा किरमह '७६। वह भवन मिश्रा कृषिया योग्राहरू । वरमावत भन्न वर्गवेष्ट्राञ्चल (मर्भन म् श्रा-मरशा वाष्ट्रा गहिटलाइ, वाक्री हार्य कर्णका मर्था।

व्यामारभन्न का छोत्र-की वरन न श्रमान मम् था। इस्ट मूक् मर्थाद व्याविका (मथा श्रावेट करका। भारत - करन आगरिम हो । इस मार्गास थाया निराम का व निकटारेय यथा. — इंटरना कारणक विक पांच मांख्या कारणम, কাহারও বেলী মলোঘোগ দেখিতে পাহতেছি প্রভাত রোগের প্রাহর্তার স্বাহারিক কারণেই किन्द विद्ञाता अर्थ कथांदे। कनावैसा बाजा (माथरक वास कर्या भएक, कर्य ठावा वृत्यम ना त्य, अमन्त्र कार्किल (कन এक ए मकामार छानु भ-माधुर माछ छ। मेपरकड धुंबर (नमार्डफ। द्रांश-शां अस्यर्थन (य क्षण र अ।वंश क्षि मरभा लारक, जाकार काश्रेष दार गत खाल्यक भाग तब्रिक निधा ब्रांभर ७८५। यह लानमां क मनन कौन करेश भए ७ एथनरे स्नांटन मसा नाना द्यार भा शाहकार हम। क्रुवार माम्यान কাতির জীবনীশক্তি বে অতাস্ত ক্লাস হইয়া পড়িতেছে তালাত নেশ বুঝা ঘাইতেছে। কথাটা এমন শোচনীয়ন্ত্রপে স্পষ্ট, যে প্রয়ং মন্টেও সাহেবও পাতে-প্রকারে হহা স্থাকার করিয়া লহয়ছেন।

এই छो वनीमांक द्वारमय काश्म काश्ममान কারতে গেলেই মনে পডে, দেশব।পী ঘোণতর (नाग्राथानिय जक्डन कुरक माध्यमा । कानाभारत मित्रवांत्र मध्य निवासीक्ष्म, "लक्ष्मके। ভাতের অভাবে আজ আমি মরিলাম।" क्थाछ। खधु (मह मिर्ल कुष्टक म नाइ,-**डिठा (यन मध्य) (मरभंत अठ:ऋग (७म क**न्या) **উঠিशाছে।** युक्का शिकिन क्षरभव 1. P. 7. व्याचात्र का ७३ मर्च- द्वमना, ८वन महात्र मत्था मृद्धि ध्रिया (मश्रा नियाटक। क्रवेदनना ८भिष्ठ 'र्ज्या थाहेट जार्त क्रम , जाक दर विश्वा (माम कराजन जाक १ देन,नक धक्युंश काश्रव इयह (कार्टे, खार कार्टे ना। पद्राप ७६ छात् छ।, कार्ष একগণ্ড আছে, বাহাবও নাই। অণ্চ, मक्त ९ क्रिक ९ ७ जानम न(३. ज्ञान) रहेट मका। शयास थारिया थारिया जानास्त्र वृत्कत त्रस्क कम बहेशा यात्र। कात्र (ईए) কামিজ ও ছেঁড়া ৮টা পরিয়া, মুথে একপঞ পান গুলিয়া, যে সব ক্লীণকায় বাবুর দল ष्यनाभाः त वा कर्काशस्त्र कालागरक हुटीहरि करत्र-- छोशामन कथा भरन कत्रिए । शरमहे শামাদের রক্ত ভুষারের মত হিম কহয়। যায়। যে ছবেলা পেট ভরিয়া থাগতে পায় না; कानाशास्त्र याहात (भरकत निवा-উপनित्रा विकल, तम (कमन क्षिया द्याग-बाक्स मह কবল হইতে আত্মরকা করিবে ?

ইতিহাসে পড়ি—দাসত নাকি পৃথিবী থেকে উঠিয়া গিয়াছে, কিন্তু ভাততবর্ষের অবস্থা দেখিয়া সে বিষয়ে তোরতর সন্দেহ

(चाद-नाठ क दिया याहाहे वन, यक्हे मार्ग नक्ता छ भाषिश अन्य क्व, जामन कर्शा এर (य, कौर्य-भण्डार्य व्यायद्री कि:यह कितियां याः ८ १ छि। । य शाहीन का ७ এ वर्गन भीरमां এত আখাত गर्य कानमान (कान-लाकारत दांकिशांक्य, आख वृति चाकारक धवा-शृष्ठे करान नुष्य रहा रहा। वृत्य भा ५३१-का िएन स ८२ ज्ञा का वास्र कहे शोहिन. काभाषित छ लोहां हरा। करमक वरमंत्र शूर्म सथन खालक कामदा जन करा निकाकिनाम. ভখন কেই কেই জকু ক্ত ক্রিয়া বলিয়া-किटलन ^कि, व्याभाष्ट्रत मटल भास्त्रीरमञ्ज कुना १ कामना क न महा,—हात्र हिं। व्याप -, ए • रामि।" किन्छ त्याच रुर्ट • त्र् त्य ভগবান ভাল আমাদের এই বুং। গ্রব ও क्रम र कार पूर्व करिए ७ ए छ । इस्प्राट्स्न । ধ্বংসপ্রবণ আতির ১ ধ্যে যে-সব লক্ষণ श्रिकाम भाग्न, व्याभारतत मर्था ८भ मवर्खानह करम करम विष्मर्थात थकाम भारत्यहा (कामड़ा कडकर्खांन व्यवस्त भात्रावाहिक রূপে এই কথা "নারাম্বণ" ও "ভারতী"তে कारणाइना क्रियाहि।) श्रवन সংস্পাদে অগিয়া এ প্যান্ত প্রায় কোন ত্রাল कां ७३ बादाबका कविटल भारत मार । इस গ্রেবল জাভির সজে ামশিয়া ভাহার মে:,; আত্মসম্পূর্ণ করিয়াছে, নয় এ রে मूख रहेशारह। पृष्टाच एक रेप्नित उपतिष्ठि दारसू का एक की स्मथा योजें । सह उशिष्ठ ;—कीवनयुष्क आधातकाव कममर्थ शांदक, आधारमारभव कथा यज्ञ । वनी महन इन्स आमता करमङ इतिस याहर औड़ । तह इहर अरक, — जीव उठ वश्मत्रकात कहा धामाद्यत प्रक्रिंग, मन कामाद्यत नित्यल, चाकूण कडेम्रा केटिं। यक्षाद्राजीत मध्य काम আসাধের ঐশর্য্য সম্পদ আজ স্থপ্ন কথাব ব। বংশোৎপাদন প্রবৃত্তির এইজন্য অত্যন্ত शोध, -- भिन्न-वानिका व्यक्तीरक्त वर्गार्भा। भिडीक स्टाय चारत काडी ७ कोटबत ककाल यक्षभ ভाবে वाशिया (सम्र, व्याभागात व्यवस् थाय (महेक्रा कहेबा काइनाहरू हिल्ल त নেভারা হাত-মুখ নাড়িয়া টাউনছলে যখন ाषा गया वष्ट्रा तन, वा भराव मण्याभ त्यमन मण्डामःथाव आधिका, अञ्चित्रक भगन **आभारतत मन इ**ःश्य छत्रिया यांत्र

জাতির নধো ধবংসের थवःम व्यवः भाकारण क्य-मः गांत्र हाम कहर । थारक ; धावण क उप्तरिक, सृत्रा-मः था। भी खहे वा किया यात्र व्रम्तीया क्रम्म वक्षा इहेम्रा जात्म,— ও छना मण्या भोष्ठाहे करमव मिरक वृक्तिमा व्यर्शां উৎপাদিক। শক্তি ভাহাদের লুঞ্ পড়ে। শেষে জন্মংখ্যার হ্রাস (মাওরীদের হুহুরা যায়। মাওরীদের মধ্যেও এইরূপ মুক্ত হুহুতে থাকে। আমাদের দেশে এখন भ्वेशांकिन। व्यत्नक शांठीन ध्वःत्र श्वन शृत्वत्र व्यवहा,— (यमन क्या मण्यात्र व्याधिक) कार-छाडित मधा ७ अज्ञान दम्या निमाहिल। खिनिटन चान्हरी इडेरवन (य, चारनक ध्वरम-প্রবণ জাতির মধ্যে জাবার হহার প্রায় छेन्छ। आत्र- अक्छ। मञ्चल (मथा यात्र, — (मछ। হইতেছে জন্ম সংখ্যার অভ্যাধিকা;—সঙ্গে मत्म मुञ्जाभाषात काधिका। कथाहे। कीय-ডদের একটা গভার সত্যের উপর প্রভিষ্টিত। कीरवन्न मरशा चाषात्रकात रव टावन हेन्हां, श्वाहा मकरणब्रहे काना चारह। उहाबहे चात আছু সুর্ত্তি বংশরকা বা জাতিরকার ইছো। প্রতিকার কর, জাতির অর সংস্থান কর, कथात्र "Self-preservation" ७ भिन्न-वाणिस्वात वृद्धि कन्न हेजामि। कथाखना (Self) reproduction — উভন্নই একই डिक्ट। किंद এক হিসাবে বলিতে "Struggie for Wistence (Management a) Ex-Lard Tre. With TE WILL"

ভরাবহ সন্ধিক্ষণ আজ আমাদেরও সমূথে এর চই পার্য। মৃত্যু যভই নিকটবর্তী হইতে व्याधिका (भथा याम् । स्व॰म প্রবণ জাভিরও ঠিক এই বস্থারোগীর অবস্থা হয়। আসমযুত্যুর বিভীষিকা অন্তভ্য করিয়া সে আত্মরকাবা জাতিরকান জন্ম অভ্যন্ত ব্যাকুল হইয়া পড়ে। ाहे भर-भ-थार्थ कां जित मर्था अक्तिरक কিন্ত এক্স অবস্থা বহুকাল থাকে না। বৃদ্ধি হুহতে ক্ষয়ের দিককার শক্তিই বেশা —ভেম্ন মৃত্যু-সংখ্যাব আধিকা। কিন্তু र । ध्यार यु शा-मरशा क्यामरशाटक छाफारबा উঠিয়াছে। नेष्ठहे मा बढ़ी दिन स न ना मादन स इटेट्य विलिया थूवरे जानका कांत्रवात कांत्रव चाट्ड ।

কিন্তু এই ধ্বংস হইতে রক্ষার উপায় কি 📍 व्यत्नदक्ष वानर्यन विकीविकात । किहारि ত (मथारेका नित्म, किन्न जामान कथा कि किन् नाहे ? উखरत्र महस्कहे मत्न चारम, त्रांश व्यक्त-मःश्वान क्रांत्र दक १ (व क्रांत्र द महे क्रांट्ड भन्ने छ हेट छ इस्। मीने किर्म पूर्ट, छोड़ाई डेट छ छ, ज्ञानन कथा।

পরলোকগভ আচার্য্য রামেন্দ্র কর জীব-তত্ত্বের সমুদ্র মন্থন করিয়া যে সারসভ্যের व्यमुङ कृतिशाहित्तन छाश এই—"जीवरनत भूगरे रुट्डिक वाहिया थाकिवाद रुखा।" व्याम वाहिन्हें, व्यामारक वैहिटक इटरव— हैशहै इट्टाइ की बत्नव किंछ। उट्टाइ हैकार्नाक, हेशर मर्डा की बटक शाइन कावया আছে। ব্যষ্টিগত ভাবে ঘাহা সভা,—সমষ্টি-পত ভাবেও তাহাই সতা। জাতির জীবনীশক্তির मूरम এই বাঁচিবার প্রথম ইন্ডা। य सां क कांत्ररवन।

শিল্প-বাণিজ্যের উন্নতি, রোগ-প্রতিকার, মরিতে চায় না—মৃত্যুকে পদে পদে ভাহার श्वरमधायन জাতীয় আত্মা বে দীন হটয়া পড়িয়াছে! জাতির মধ্যে এই ইচ্ছাশক্তি জ্ঞাস হইয়া शास्त्र मूटनरे यान कोवनीनकि ना बाकिन, शर्फ। कोवनयुष्क आक्रमेख रहेश कराकीर्व ভবে ডাল-পলবের শোভা কেমন করিয়া স্থবির জাতি বাঁচিবার ইচ্ছাকে হারাইয়া মত। **আমাদের আজ সেই দশা। य**দি বাচিতে হয়, তবে এই ইচ্ছাশক্তিকে উদ্দ করিয়া তুলিতে হইনে; লুপ্তা কুলকুওলিনী শক্তিকে জাগ্রত করিতে হইবে। আমাদের गक्त कामना वै।।७वर-- এर विन्ना विश्वन विरुष्य आर्थिय जीवारकरता जामारम्य निजास्त्रे যোগ দিবাৰ প্রয়োজন। তপ্রা দারা का ोत्र काजारक मक्तन-भर्ष धरेक्राभ সূচাহয়া ভূলিতে হইবে। তথন স্বাস্থ্য-गम्भान, निद्य-राणिका क्वान-विकारनत मन्त्री আপ্নিচ আদিয়া ভাহার উপরে চরণস্থাপন

শ্রীপ্রস্থার সরকার।

পতিতা

त्रक्रमी टार्ड गात्र— नव काल कवि नाव, - भा मिटम्रिक भरबन्न छेभन्न, श्रदः कार्यंत्र कार्ष्ट, ध्यादन वादन थारन वारम, ध काहात्र वार्क कर्रवत । गांबां मिन त्याच त्याच व्यायन यतिरह (यत्न, बाबन कतिरह बाना-दशाना ।

আর্দ্র শীত বর্ষা-বাযু कॅाशाद्य जूंग्रह स्रायुः বিজ্ঞলাতে ঝলিতেছে লোনা। भरथन नाहित्का माणी-জনহীন স্তব্ধ রাতি विभारत दुनिष्ट छ्टा-कान ! गात्रां निवरमत्र हारल व्यवसङ्ग हिंदा काँटन, भाव त्येटल क्टबंटल गालाम ।

আধ ঘুনে—আধ জাগি'
চলেছি ঘবের লাগি,
কোন মতে ভাঙি অবসাদ,
সহসা কানের কাডে
একেবারে প্রাণে বাজে
এ কালার চাপা আর্ত্তনাদ।
কে আজ এমন রাতে,
এই বর্ষা-বৃষ্টি-পাতে

এই বর্ষা-বৃষ্টি-পাতে
খুলে দেছে মনের ভুয়ার।
এই বর্ষারি মত
হোপাও কি মেঘ নত,

ওথানেও জেগেছে ভোরার ? । ধনকি তাকায়ে দেখি— ও হ'র। হেথায় এ কি.

भाषा दक या भोष्मा विवया

কেলিতে প্রদাপালোক অপলক ডুটি চোধ

র্মণেরো কি নেমেছে বাদল ?

কোলে বিভালের ছানা; বেরি তথু দেহধানা

गावलात ज्ञिष्ट गहरी,

भारत्यत्र शादात्र किर्द्य

बगाउँ योजन निष्य

পথের উপরে আছে পড়ি।

অকশ্বাৎ একেবারে—

कूँ किया भरधत शास्त्र

(ययन छोनिय (पर्थान,

त्म कि कान्ना वृक-खाडा,

दब्समान त्राक त्राहा

সে কি আর্ত্ত কাতর আহ্বান!

खारिस मानस खास्ति— मात्रा मिर्यम् द क्षाः छ क्रियाटक এ ७ खमा जुम,

ভালো ক'বে আঁথি মৃছে • আবার পেথিয় খুঁজে

পণে পড়ে अश वन-क्षा!

শ্রাবণের ধারা গুলি

মুক্তাসম আছে হুলি

चिर्त्र चिर्त्र कारणा (कलभान,

७ षटना आषाव भरत

वामन भाष्ट्रह बादा,

ही-इा-क'रत्र च निर्दे वालान।

কিছুক্ষণ সৰ ভূ'ল

मृष्टिशेन यां थ कृषि

দাভাগে রহিন্দ্—ভার পর,

मुक्छिजारन छ। छ। ध। इ

একেবারে নিম্ন কাড়ি

কানা হ'তে বুকের ভিতর।

বাহিরে সেবের দোলা, সমুখে গুয়ার খোলা,

क्षाह ला १ कार्याम दाकि,

— दश्था जम, त्नार्था ८५ तम्,

युवि ट्याभारमंत्र त्यरम्,

मदाद विद्नव नाहि

चरत चरत चार वांधा,

षांधादतत षार्छ कांना

नित्क नित्क डेडिएडएड फिरक,

ভালিয়া শুৱতা সৰ

त्यात्र-कर्श कनत्रव

काचा जिट्ड कानांगात्र हिट्ड ।

ভাবিতেছি শুক্ত গেহ, (পाएका वाषी, नाहे (कह; कि त्य कति दश्राहे हि मत्न, সহসা ছয়ার ঘেঁসে क (धन मैं। ज्ञांन जटन আন্তন ভরিয়া আখি-কোণে किश-भावित्न छाडे, এমন তো দেখি নাই, ध य वाश्र वड़ वाड़ावाड़ि, সেই আজ কোন্ ভোরে, विकामिं। शिष्ट मरव, মেটেনি এখনো জের তারি। শোনো তবে কাওথানা— ঐতো বেড়াল-ছানা, यायुर करत्राष्ट्र वे राहे, সারাদিন ভারি লাগি कैं। निया किटिए का नि, वरम नारे ভাতেরো নিকটে। किए किए आख यद युमारम পড়েছে সবে, छानाछादत्र চूति क'दत्र ष्यामि, कानमा जनारम भरव क्लाइय कारना मरख--এত সব ভাহারি তাকামি ! প্ৰাণ ৰলে কিছু নাকি मुभीरमत्र चार्छ वाकी! मह (वटह भिष्ठाई ज्ञान. বিড়ালের চানা ও ত--মালুব মেরেছ কভ

তারি কিছু রেথেছ হিসাব ?

भर्गात्र (मरुडि चूर्य, वारतक ममुर्थ सूर्य धौदत धारम मांफ्रांच्य वाहित्त, कारना कथा नाहि नान থোলা দাবে এমু চলি, रिश्रम बहिमा जाबि-नीटन । व्यक्ति ज्यक्त उर शर् कार्फ मीर्थ शथ, यानरन विकन भित्रिक्छ, गार्य भारक एथरक एथरक ग-दा वासू उट्ठे (क रक, নভতল চিরিছে ওড়িৎ। এक हे भर्ष वादत्र वादव चुनिया पटमन हाटन ष्यन दमर्थ में। फ़ासू यथन, ভখনো বুকের ভাজে তেমান করিয়া বাজে ভারি আর্ত্ত করণ রোদন। क्राप्य भगना वरम मिन यात रशरक करते, দেহের বেসাভি করে যারা, এই কি তাদেরি নারী ৷— সহসা নিখাস ছাডি ক্ষণেক বহিন্ত মুগ্ধ পারা। তার পর শ্যা-থানি कथन् निष्मिष्ट छ।नि, वालिटम द्वैदर्शाह व्यानिकदम, कथन् ८५१८ अ कार्ष निका त्नरम चामिश्राटह এতটুকু নাহি তার মনে।

সমস্ত শ্ৰাবণ-রাভি করিয়াছে মাভামাতি মেৰ আর মাতাল বাতাস, (कवन एक्षांत्र भारती कारन अरम वाश्रियादश ार्लाच कठिन कछेशाम !*

क्या प्रमय (चार्य खन खनरमञ्ज (मारज गारव गारव दहरनट्ड जर्मान, একেবারে বুক-ভাঙা (यमनाव त्रांख्य द्रांखा পতিতাব আৰ্ত্ত কণ্ঠধানি। की दश्यम् नाम ताम ।

मरङ्गाग- ७ ख

যদি আমাদের কেহ সমগ্র বিশ্ব সমস্থার তুমি বদ্ধ-কোন কুদ্র জিনিধের উপর ভোমার মীমাংসা করিয়া, এক কথায় মান্তবের কউব্য দৃষ্টি রাখিও না,—ভূমাই ভোমার আদর্শ ग्नासिन कतियां मिर्क वाम, खाँका करान, ष्मामया वीलव, "मानव। তোগার কর্ত্তব্য ছুটিবে ভত্ত হু'ম নিজের নিজের চারিশিকে অভি সহজ। এহাবশ দোমাবহ জন্ম স্থা এই বিষের যাহা কিছু--রূপ, রস, ক, স্পর্শ, কোষবদ্ধ শুটিপোকার মত জড় হয়া কে লবে। শক্ত-সকলট তোমার প্রথের জন্তা,— অনস্তের দিকে তোমাব দৃষ্টি প্রসারিত কর তোমার আনদের জন্ত--ভোমার আত্মবোধ মানব! ভোমার স্থধের রাজ্যে—ভোমার স্মানন, কি ভৃপ্তি! এই নূতন যুগের याद्या-किं चार्ट--- हक्क, कर्न, नामिका, खिद्या, चक, मन, वृक्षि, अञ्द्रात नव निशा विश्वदक **जिशाला क त— ७८५३ (महे शराम-स्नादित** উপলব্ধি করিতে পাবিষে—কিছুমাত বিধা कति । ना-मामा । मामा । जा । जा । कि हुरे कारत दान पि अना। कार्मा अकाउत এই বিশ্ব ভোমার বন্ধনেব জন্ম ও সংকাণ হহয়া থাকিবে।" ক্রিয় জন্ম। যতক্ষণ তুমি সংকার্ণ, এ বিশ্ব আনন্দময়ের লীলা-নিকেভন---

काक। कृषि यहर दक्षा कि निरंदे पिटक ष्मगःथा वसारनत गृष्टि कतिया. ष्याननारक —তোমাৰ প্ৰাণের কুধাকে ভাগাইয়া সমগ্ৰ জাগাহরা দিবার জন্ত অবস্থিত। যাও বিখের দিকে চুটাহয়া দাও—দেখিবে কি न्डन माधनाग्न किছू है जाश कतिए हहेर्द না—সবই গ্রহণ কবিতে হইবে—বিশের या कि हू, कार्नाप्त वाम मिरण हिणाद मा,---জানিও, এই বিধের বেটুকু ও খ্যতটুকু ভোমার সভোগের তালিক। চহতে বান পডিবে, ভূমি সেহ পরিমাণেই অসম্পূর্ণ থাকিরা किनिष्ठ माथक, कर्खवा दिश्यात मञ्जूषि— यश्चित्, आयात आया देश प्रिमालिश मङ्गिष्ठ

प्राण्डे जूमि कृत एउक्ने जानत्मारे रेशांत क्या, जानत्मारे रेशांत

ध्यर ष्यामरमाहे हेहात शतिन्छ। "আননাদোৰ থিৰমানি ভূতানি জায়ন্তে, व्यानत्मन काठानि जीरिष्ठ, व्यानमः প्राप्त छ। मः विमस्ति।" पृःथ, वियाम, कन्ह, द्रांग, (माक, मृश्र)—देशमिरशत (कानिएरे विषय প্রকৃতি নহে—এ সমস্তই মহুষ্যের নিজের স্পষ্ট—আত্মকত व्यमद्रार्धद व्यद्धां शी পরিণাম। न्दृष्टि करिय़ा विश्व-निग्नन्दारक शामि (महा

মান্ত্র চার ভোগ, কিন্তু ভোগের আসল श्रक्षां के दूर कारन नां, काशां कर करन मध्या कृमात्र, कृष्टित मध्या वृह्द उत्र ७ मार्ख्य मस्या धनरखन्न मकान कहिएक शिद्रा, वार्थ-মনোরথ হয় এবং হা-ছতাশ করিতে থাকে। "(या देव जूमा ७९ ऋभम् नाट्स ऋथम अखि।" প্রতরাং ভাষার ভোগ ভাষার মৃতির কারণ मा इड्रेश व्यक्षिकाःम, ऋ भ्य छ। हा इत्र वक्षम বৈরাগোর নামে দীনতা ও হীনতার আশ্রয় গ্রহণপূর্বাক, অন্তনিহিত ব্রহ্মকে আরও সমুচিত করিয়া ফেলে। ফলতঃ ভোগই माञ्चरवत्र कीयम्बद्ध हदम जामर्न।

शिया व शियाद्यन- दिन-देव-मः - स्थिन यमि त्रमञ्जूष इंट्रान-- उथन, डाँशांत्र माधक क्ट्रेंट्ड शिल, कामानिशक इनिक हरेख हरेटर धारः तमहर्का ७ तमभाधनाम व्यामानिकात कृष्टित मध्य निष्क्रिक व्यानक वाश्वि ना সভোগ-শক্তিকে জাগ্রত ও উদ্ধ করিয়া ভোমায় সভোগের গণ্ডী বাড়াইয়া ে বিশ্বের এই অনস্ত রস-প্রবাহের মধ্যে বিশের সহিত আপনাকে একাজ বিশ্বের क्यांक निरम्पद । विश्वमानिकाल क्यांन विश्वमानिकाल क्यांन विश्वमानिकाल विश्वमानिकाल विश्वमानिकाल विश्वमानिकाल व

छानियां मिटल क्रेट्य। ज्रुटब, ट्लाटनंत्र जानन প্রকৃতিটুকু ভুলিলে চলিবে না। আমরা ब्यत्नक मम्द्रम्, (ভাগের দেই আদল প্রকৃতি-हेक् ज्लिया यारे निमारे कहे भारे। माजान कतिरङ रहेरव चलिया, जामना जरनक नमन्न, कानक अध्यत काणीत मध्नक माक्कावर সংসার-ভাওে নিপতিত হইয়া বিষয়রসে বিজড়িত হইয়া পড়ি এবং भित्र (मृद्य षामामित्रात्र उथान ७ উकात-मिक हात्राहेश প্রকার হুগতি ভোগ করিয়া कारभव थाकि।

কিন্ধ, চাহিয়া দেখ ঐ মুক্তপক্ষ, প্রাফ্র खभवि किमन धन्-धन् कविया शूक्त हहे**र**ङ श्रुष्णाञ्चरत्र शमनभूर्वक ठातिभिष्क जानत्मत्र हिस्सान जुलिया मधुमक्षय कतिर उट्हा व्यमवद्रक कार्या कदिएएए—अभिक अभिक ছু जियो (वड़ाईट उट्ट — প্রাণে स्नामना, ও আস্তিরই হেতু হইয়া থাকে। তথন উৎসাহ ও দেহে অদ্যা কর্ম-শক্তি লইয়া কেহ কেহ ত্যাগকেই জীবনের আদর্শরপে কমের সাধনা করিতেছে আর বিশ্ব-রাজ্যে बन्न कित्रमा जात्मत नात्म ध्वःत्मन- यज मधु चाट्ह-पृथियोत्र हत्क याहा चिक नीतम, कठात्र ७ ७६— डाशात मधा हहेटड मधुमक्षय कदिए छ ;— जार्थ (मर्थ, (म কত মুক্ত-কত স্বাধীন, স্ফুদ্রের মধ্যে मःकीर्जित्र मध्या ভारात जानम नारे—्म শ্রুতি ভগবানের প্রকৃতি নির্দেশ করিতে একের মধ্যে আবদ্ধ নহে—চুটিয়াছে বন্ধুর निटक — जमीरमञ्ज निटक — अन्दर्भ निटक।

> " याञ्य, ज्ञिल ছোটো दक्त मिटक, व्यनदक्ष मिटक। मारखन मर्था ज्थि ठाहिन मा,

সম্ভোগ-তত্ত্ব ও বৈরাগ্য

পূর্বে দেখাইতে চেষ্টা করিয়াছি যে ভোগই মহুষ্য-জাবনের চরম লক্ষ্য। "জ্বীবনটাকে উপভোগ কর", ইহাই প্রস্তুতির নির্দেশ এবং গুজ্জন্ত যাহা-কিছু ইন্দ্রিয় ও মধোবৃত্তির প্রয়েজন, ভগবান তার কোনটি থেকেই মানুষকে বাঞ্চত করেন নাই। কিন্তু এই সকল मर-नेतृष्टि ও रिक्तिशानित भन्न-भारत्व मरशा ं छत्व कथा बार्छ। सामारामत रखान-গনতা রক্ষা এবং তাহাদিগের স্থসজ্গাভূত ্বকাশের উপরেই মামুষের উপভোগ করিবার শক্তি নির্ভর করিতেছে। এইথানে সম্ভোগ-ভত্তের সহিত বৈবাগ্যের সম্বন্ধ। देनबाना वा जान कोवरनन संक्ष्य नरभ ভোগই উদ্দেশ্য, ত্যাগ তাহার উপলক্ষ্য বা উপায় মাত্র। ভাগে বিনা ভোগ অসম্ভব। ত্যাগের ভিতর দিয়াই -োগকে ধরিভে मन्द्र । नद्रद जाग्रहान (जांग फेक्क्सनस्व নামান্তব মাত্র। উচ্চ্ছালভায় মহুষ্যের স্থব করেন না। দেখ দেখি, তিনি কেমন উচার ८काभात्र ? याशांटक उपट्डांग कांत्र ७ ३ ट्र ভাষাকে আমাদের সকল ইন্ডিয় ও সমস্ত म-ावृष्ठि मिश्राहे शहन कविष्ठ इहर्द ; य পরিমাণে ঐ সকল ইন্তিয়ে ও মনোর্ভির প্রস্পারের মধ্যে সামঞ্জের বিচ্যুতি ঘটিবে, **८म** इ भविषालि वामानित्मन खान बिनियो। कामन्त्र्व शांकिया याहेत्व, कांत्र त्य शांवमात्व ष्यायता प्यामानिरगत ममछ मरनावृद्धि ଓ हे लिय শুসুচিত করিয়া, বিষয়ান্তর কইতে আহরণ কুর্ক ভোগা বিষয়ের উপর নিাক্ষপ্ত ও त्य कतिएक भाविव—त्महे भावमात्वहे আমরা উচ্বিষ্যের প্রকৃত জ্ঞানলাভ করিয়া

रहेव। फनवान এই विश्वटक এবং विष्युत्र मर्था योग-किছू चाहि, ज्ञान, त्रम, त्रम, न्नाम, नय-वायांक्रांभ, शानक्रांभ, वर्शामी छ गर्यगाकोक्राल ७७:१ खाउँ छ। दि विषय महिल মিলিয়া তৎসমূহ সম্ভোগ করিবার অক্সচ এই বিশ্বলীবার অবভারণা কার্যাছেন। ভূমি ष्यामि गिम विषय छिपडाश कांत्र हाहे, ভাগতেই কি পোৰ ২য় গ

দানবের ভোগ, আমরা যাহা ৬োগ করি. ভাষা ध्वःम कांत्रग्रा कांत्र व्यवः (भारत कांकाकांत्र করি। ঐ যে স্থরমা গোলাপ সুলটি প্রেফুটিত হটয়া আপনার সৌন্ধর্যো ও माधुर्या जीवनि विट्याय क्षेत्रा ठातिक्क स्थारम आस्मिक क्रिडिंग्स, উशस्क ছিভিয়া, দলিয়া, মাথত কার্যাই না আমাদিগের প্রশ পু কিন্তু ভগবান ভাছা করেন ना। जिन भोनर्या ऋष्टि कदन, ध्वःम महिल काशनाटक मि-४० या प्रियो, निष्कर क्रिकार्य श्रेष्ट्राय क्रिया क्रियार्थन क्रिय निद्भन्न मकन भोभगा के भूष्णत रहा छानिया षिधा ज्यापनात्र मखाणिक त्मरु भोन्द्रशास আবরণে আবৃত ওবিলুপ্ত করিয়া ফোলয়াছেন! বাহিরে দেখি ফুল, কিন্তু ভিতরের প্রর রাখি ना, जाद शांचनाद ९ ता मार । अरे ८८ मण्यूर्ग बाज-विद्याপ—इशहे जगवाद्य मध्यार्ग-नीिं। युष् भश्य कथा नट्य-मट्यांश क्षिट्ड ८क शादा ? (य ८७।व्या वस्त्र मर्धा আপনার সমগ্র সন্তাটিকে ডুবাইয়া দিয়া নিজের (मर् भन ७ जाजात नकन (मोन्सर्या जाहात मस्या लाई जीनायरबेक्ट्रीमात्रम जामाद्वान मुमर्थ विद्रत्यस छानिया पिटल भारत, त्महेह मरखाम-

ভত্তের প্রাক্ত অধিকারী, সেই নরশ্রেষ্ঠই ফলটির মিষ্টস্থাদ গ্রহণ করিতে পারিতাম, ভোগের প্রকৃত সাধক।

याशादक देवबाना विन, जाहा এक श्राकात সাধনা মাত্র, ডাহা মাত্রুবকে প্রকৃত সভোগের পথে महेबा याद्य। , व्यासदा वाहिद्यत दुर्ভाग-টাকেই থুব বড় করিয়া দেখি— ভূল ইল্লিয়ের कार्राष्ट्रीटक के मन-८५८श (अर्थ विश्वा जानि — किन्द्र वाश्वत हे कित्रव छात्र जामात्तर मत्नत्र ७ त्य डेलिय चाट्य-चाचाव७ (य क्तन, वम, ज्लार्भ, शक्त, ज्ञास भारत्। क्रांत्रवात्र ज्ञास्ति छ সাধন্যন্ত আছে, তাহা ভুলিয়া ষাই। যাহাকে माधात्री ভाষার ত্যাগ বালয়া থাকি—दৈববাগা विद्या करवेर हत्य प्रिम नाहा এह मान्मिक ও আধাত্মিক সম্ভোগের সোপান মাত্র।

मत्न कत्र, आमि এकि इमिष्टे आञ्चकन পাইয়াছি, আমি নিজে তাহা ভক্ষণ করিলাম — क्रूम त्रमानिस्यत किकिए পরিভৃত্তি इहेन वर्ष, किन्न काश क्रिका इंश এक श्रकाव ভোগ বটে, কিন্তু এরকম ভোগকে প্রাকৃত **८छात्र वला यात्र ना । ইহাতে ५०८३ अर्थ-**পৃষ্টि इरेन-किछ, मन आञ्चात প্ৰিপৃষ্টি इरेन ना। किन्द्र यहि जे क्याँड निष्य ज्ञन ना कविया जित्क वाक्तित्र मूर्थ कृणिया मिर्ट · পাবিতাম এবং ভাহার সভায় আপনার সমগ্ गलांटिक यिनावेत्रा निवा यत्नत्र यत्था, ब्यापात व्हेत्रा थन्न कहेन्रा याहे। मृत्था—'जाषात्र त्य हेस्सित्र ठाग्नाता के

वन दिश्य ভবেকি ভাহা আমাদিগকে বাহিরের রসনার তৃথি অপেকা স্পষ্টতর ও মহত্তর তৃথি व्यानिया सिक ना १ ' ८ म एवर विनाम व्याद्य-আত্মার বিনাশ নাই। স্কুতবাং দৈহিক म्राखान वार्याचा वार्याच्यक मरखान् ट अर्छ।

(मरहत्र मरकांश क्रिशिक — (मरहत्र विनादमह ভাহা বিনম্ভ হইয়া যায়; কিন্তু আত্মার সভোগ চিরন্তন—বিশ্বস্থাও বিনাশ প্রাপ্ত ইইলেও ভাহার বিনাশ নাই। যাহা ভোগ করিতে চাও ভাষার প্রতি কোনবাপ মম গবোধ त्राथ ७ ना- ८कनमा ममख्रायाय সকল (मो-मर्या नष्टे क्रिया, मटखारगत माजा कमान्या দেয়। অতএব ভাহার সহিত শুধু দৈহিক यिनन ना व्याभिया यत्नायत्था डाहाद थान কব এবং আত্মার দারা ভাষার সহিত একী-ভুত হইয়া তাহাকে সমগ্রা বিশ্বের সহিত विनाइया माल, नक नक (मट्ड नक नक खोटन, লক লক আহায় ভাহার সোন্ধা ঝারয়া পড়ক্—বিশ্বেব সমগ্র নর-নারীর কণ্ঠে তাহার अग्रीि विधाधिक इंडेक, मिथ्द कि আনন, কি তৃপ্তি! ভগবান আমাদিগের मकणटक छ। हात्र मण्डांश-लीला नुवाहेश पिन —আমরা যেন প্রকৃত সভোগের অধিকারী

শ্রীবতীন্ত্রনাথ রার।

ভফাৎ

्र जिल्ली-अपरगत जिल्ल किन श्रम्बर्धाः ज्याना द्वारक वित्र हो हो हे । वित्र जाता द्वारक वित्र वित्र वित्र वित्र

मखन-थानाम ठाक्त्री कम्टला, यस्त भन्नीय निन-मक्ट्यरम वाएा, काए-काना, भनि । स्ना लाकि। जाशन-जन, महाय-वज्र जात बाहूनीहा व्हात्री बाह्टला क्रिनहा , अर्थ य- शिर्ड বুকের রক্তবুকু জল হয়ে বেরিয়ে আদ্তো বর্ণা-মানের ভাগর ফোটার।

মনিব-সরকার থেকে তন্থা যা আস্তো তাতে মাস-কাবারে পেঠে থেকে ছ'মুঠোই ছুট্তো না—এর উপর' আঁবার' অল ঢাকা । কুন্তা কেনা আছে— সাদা *কাপড়েব ঝোলা চাপকান, নঠলে দপ্তরীয় চাকরাটুকুও টেকে না। চার-চার্টে কচিবাচ্ছা—এভটুকু-টুকুন্— অন্ত প্রহার ভূরে পড়ে আছে, আর্ সকাস তপর, বিকাল-সন্ধ্যা বাবো ঘড়ি চাইতে

লক্ষী তার বউটা। মূথে কথা নেহ,— काखन Colta व्यक्त कनके (नर-- व्यस्त হাসি অবিশ্রি শ্রকিয়ে গেছে—কিন্ত দীর্ঘ নিখাসে কারো বিরুদ্ধে তপ্ত অভিযোগও সে कथरना कानाम नि। गाँठिव পाम भाउ বাঁধা তাব কাপড়খানা,—দেহ কলালসার, তরুণ মুথের কাঁচা বং পিংসে হয়ে গেছে— ভাসা চোথ, নেমে পড়া পাতা ছথানার নীচে वरम अरम्टहा कारणज त्मरम्भी, भूरधन শিশু—काँ विवास खक्रमा खँ । असम ৰূলে গুলে ভাকে খাওয়াভো—ভাও কি পেট ভরে দিতে পেভোগ— হারবে কপাল। मूर्थंत्र शास्त्र छाकित्य मात्रत्र काणि-काणि, मम्बा कार्या जांहमथाना (हेरन (हेरन অস্পষ্ট, অফোটা তার ভাষায়—এক চুমুক খাবারেব মিনতি-ভরা ভিক্ষা যথন সে বানাতো—মামের কাছে তথন তা অমূতের পূর্ব পাত্র উপুড় করে দিত না—পাজর খানা ভার হাজার টুক্রোর ভেজে খেতে তাত্ত্বি বে তাকে বুকের স্থার কহর চেলে बिट्ड देवेट निद्याल किट्रा विद्याल विद्याल विद्याल किट्रा निद्याल किट्रा निट्रा निद्याल किट्रा निद्याल किट्रा निद्याल किट्रा निट्याल किट्रा

বাঁচাতে পারে। কিন্তু গুদিন পরে একবেলা তার আধপেটা সে থা এয়া—কল্লের রক্ত-কোঁটাই কি আর বক্ষের উৎসে এসে জম্ভে পেতো।—মর্মের মাঝথানে জমাট-বাঁধা সে গুমোট বাথাটা ছা তি-ফাটা নিঃশাসের সক্ষেত্র সক্ষেত্র টাটিয়ে উঠে হতভাগীর দম্ বন্ধ করে আন্তো—কিন্তু কঠিন প্রাণটা তরু বের্কতো নাতো।

মাথা ওঁজে তারা থাক্তো একথানা একচালাব নীচে—দেবতার তাও সহল না। দথিল
থেকে হাওয়া সেবাব ফাগুনেও আগুন হয়ে এসে
শিল-হানা রৃষ্টির পিচকিরি মেরে হোলি থেলে
গেল বেচারীর চালাপানার বুকের উপর।
মাতাল তার পায়ের ছন্দে এর বা কিছু ছিল,
আবরণ-আজ্ঞাদন, উজে গেল। রৌদ্রকে আর
ধরে রাথা যায় না—হিম-হানা জর কি আর
শাসন মেনে বাইরে বাড়িয়ে ঝিমোয় ? সে
এসে ছেলে-পুলে ওজ্ব, এই দম্পতীটীকে
কাপিয়ে তুল্লো শিউবে উয়্লো তাদের
ছাডেরে গেল তাদের গায়েব উপর।

এমন সময়—অজনা—দ্বাত্তে কোথার
দিগস্ত-রেখার নালা মেবজাই গার জড়িরে
দিজেরই সে তুলিন নিখাসে আছের একা—
অলার-অলে হিম শিউরে শিউবে কেঁপে
উঠ ছিল—মৃত্যুব পরোয়ানা তাকে উক্
উত্তেজিত করে তুল্লে। এই দেশে সে
বিকট হয়ে দেখা দিলে—হাডেব নূপুর পারে
দিরে—কেতে কেতে সেই আজন্ম-স্তামল,
হাওরার হারা-ভাঙা লীলারিত রূপের উপর
মরণ নিখাসের বুটা-তোলা গাঢ় পাঙ্রুর
পুরু পর্দাখানা টেনে সে বিছিম্নে দিলে—

দেখানকার সে ভরপুর ভাতারের যত মতি- না। দপ্তরী যে, আব্দু থেকে বাড়ীপাহারার পালা চুর চুর- করে মাটীতে মিশিয়ে দিয়ে কাজও তার।" রাক্ষণী নেশায় উন্মন্ত সে নিষ্ঠুর আপন "দপ্তর'র জান্ বাঁচে কিলে? কে चानत्य त्नरह छेंड ला-त्न कि छेकाम छाखव वाँहास १- छात्र स्नी, এक हेक्रस खक्रमा मुखा । चरत्र चरत्र क्रक्किंग निरम अग-विश्व- · क्रिके क्यागार्व ?" व्यामिनी क्षा,ककान-मात्र (पश-तक-तक-तिन्न) জিহ্বা—ভারপর সকল-ভোলানো মৃত্য় !

ट्याक्टा आत्र शादत ना। ठात्रमिन **७४ क्व ८५८**३ काहित्यह्न—ञ्चनम् भारमञ উপর আজ আর তার দাঁড়িয়ে ওঠিবার বল Cमरे। कुभाष्र नीर्ग ८५० निष्य मान्द्रत काछ-चरबब्र कर्षा कदमाम क'नड (४८६ এ८म८६--किख जाक (मरु हन्द उदे नाराक।

(कैंकिरकि—ना थह-काछोरना वाणित या । तहें—कामाफ, वतक !° ভপ্ত আন্তন! শীতে সে শিউরে উঠ্ছে— "নোকরের লেড়কা ভো মর্বেই, थावात्र हारुष्ट् ना चाक—हार्टेख (य, ८म কাঁফ কেথে সুক্তির অবাধ প্রসারের ভিতর বাধন-হারা ছাড়া পাবার জন্ত অসীমের ঐ पन नौनिमान भिष्क এकरणा उधा करम द्धिक हरनदर्श

यमिट्यत्र वङ्-छाटमा यात्रा ठान्--छावा हाकत नन्, हाकूटन । जाँक्तन वाका (५८क পেয়াদা এল ডাক্তে—আঞ্চ পাহারার कार्ज पर्धदीरक मात्रा त्राज काग्र्ट करव।

(दाश-कोन चरत्र (म किकामा कदरन-"কেন-পাহারাদার ?"

(भग्नामा উত্তর मिटन—"(शट ना (भट्र त्म मटत्र त्राष्ट्र—कात्र त्माम्त्रा भारात्रामात्रछ त्राथा रूप्त मा। माना-द्राप्ति, ठाल-फाल्य वक साम—"ठाकूरब" जान ठानाटक भारतन

"ठाकृरतत्र छौ (मथ्वांत्र व्यवनत्र (नहे---ছকুম—ভোমায় ভামিল কর্তেই হবে।"

"আর এই মেয়ে—তার শেষ নিখাসটা না পড়া অবধি তাকে ছাড়ি কি করে? শীতে কাপ্ছে—চেকে দেবার ছেড়া একখানা जाहण ९ (नई-वान, मा ५करन जाम छ्याना वृत्यत्र मत्या खन क्रिथानि क्रिक्स धरत वरम আছি-বুকের গরমে যদি হিম কমে! ব্রে কোলের মেয়েটা জ্বংব পড়ে কিন্তু ভাই বা কই ৪ বুকে গ্রম কই ৪--- রক্ত

চাকুরে বলেছেন— তাই বলে সে নিজে মরে य ओ कप्रतत काशन-कीन करातिक घारतत रकन १ मन-वास्क काकित ना करन-कन्थां काठा यादव-- भाष्या अत्रामादक পাহারায় षान्द्वन।"

> "তাঁর মেয়ের সাদি দিতে মাহিনা-ভর ছুটা নিলেন—তখন কি তার তন্থা কাটা त्त्राष्ट्र हमा १°

> "नা—ভারী নক্রী তাঁদের—ভলব-ভদ छूछै। मध्रीय फिन् छूछै कि 🐔 आब जनवरे य। (म भारत (कम? चांछे क्रार्भश अक माहिनाम--वरू९, (छत्र।"

"হুঁ—"বল্তেই একটা মস্ত নিখাস সুধাত্তের শূর্ণ পাঁজর কথানার উপর এক সঙ্গে হাজার শাণিত ছোরার শক্ত জাং 💢 ट्टिन वाहरत द्वित्व करम अफ्ट्मा, क्रामी वृत्कत्र भारम अक्षा का्ला क्रांद्रत छाभ

মেরে। বেচারী সেইখানেই বলে পড়লো, কৈন্ত কাঁপছিল—থাক্তে পার্লে না—খুলোর ভিকা অণ্ট হয়ে, পরিফুট হয়ে সহল হয়ে উপর সে লুটিয়ে পড়লো। পেরাদা বয়ে— উঠ্লো। চাকুরে বিপদ গণ্লেন—পাহারা-"ভহো- হায় হার।" ওদিকে মনিবু কুবসীতে वरम हर्षे हैं इक्टिशन-कारभन्न (व-वासावछ- धराना धालाना (वहा भागवात्र।

রাক্ষস—পেট চিম্সে লেগে াপঠেব সজে এক হয়ে উঠ্লো—বুকের ভিতরটা বেজে ২য়ে গেছে। নডি নচি হাতপা—ডাগর উঠালা। তুর্তিন থবব জিজ্ঞাসা করেন— মাথাটী তথনো তাবা তুল্ভে পারে—। ছুটে "কি হয়েছে—কিসের এ গোলমাল ?" চলেছে ভাষা, কাত্ৰ স্বৰে, সক্ন গলায় ড'ক্তে ড ক্তে—"ওরে। ভোরা কে আছিন— ক্ষুণাগভ, অর্থান, অর্থান,—গুগ-ফারা হয় ভালের অর দিতে চবে—ভলব বাডাতে २७७।११, इत यात्र—या बार्फ, वाठी माति, २८व—नत्र ७। अत्र छाखात नूहेरव । अक्रम ভাহ निয়ে ছুটে आয়—মরণ তো *ত* সেইছে— योग इस **ওইখানেই পড়ে মর্**বে না কি खैथारन रत्र मात्ररत, ७८५वर रहारव— मनिद्यत ७। ७। द्वारा विभाग ताथ ए६ यादा, महाताम यद्यन-- "पार्श ! द्वारी ता ! চাকুরেরা—তাদেরহ বুকের উপর। থেতে যাদ দাও, ভাণ্ডার খুলে দাও—রাজকোষ মুক্ত (मन्न, তगर यमि वाड़ान्न—ভाला। नहल—" कन्न-जन्था अरमन वाडिएन माछ।"

শশুরীর প্রাণের ভিতর গিয়ে সেই সব কথা শুলো আঘাত করলো— চুকাল নেছের ভিতর जाम त्यांश मित्न, जह जाञ्चहांत्रो 'डेमामत्मत्र क्रत्ल-डिभात्र ?" কলরবে। মেয়েটা ভূঁয়ে পড়ে তথনো ধুঁক্-हिन, — मा ভাকে বুকে চেকে কোলে कड़िया काम निक्किलिक शिक्षित डेशन करत उपन का नाउ।" नायंत्र शिर्ष के शाम्दन में पिराया ना ।

প্রতিধ্বনি ভূগে হডভাগীদেব "দাভ-দাভ" नांत्र (कडे कर्शारमा ना-क्रान्त्र त्रार्थ (क र

রাভার কালে এ ধ্বনি বজ্র-নির্ঘোষের মত शिष्म वाकरणा— ७ कि ब्राष्ट्र-विश्वव—विष्कारी-একদল লোক যাছিল—কুধার তার। দের, বিজয়দামামা ?—প্রাণ তাঁর চঞ্চল

> मः वाषवाको वन्द्रम-"कृथाम **উ**न्नाम लाकखरमा এमেছে রাজকোষ পুট্তে---আৰু ৷"

থবর শুনে উচ্ছ্রেল জন-তরঙ্গ শাস্ত হল--आचाम (পরে তারা ফেসে উঠ্লো।

ित्य धको विद्यार वृत्यि हन्दक উঠि हावूद्य এम वन्द्यन—"मर्शनाख, कद्यन ভাতে বল সঞ্চার করে দিয়ে গেল। সেও কি p অজন্মার দিনে ভাণ্ডাব থালি

> মহারাজ বল্েন—"উপায় ভগবান! व्यवस्थिय ना इत्र मृङ्ग-छाछात्र देवाफ

निरम পড়ে महेग, মুথ বু**ब्य**— "बहावाख,—আমারও বোড়ার দানা-बिह्ना जामोटक टकदावाद कट्य मान्नोत्र পानि टकाटि ना, शक्त-मीপ जानवात टिल निवास जीव मार्थी, भारबंब भिन्छि निरंत्र ८म (कन्वांत्र किए ट्रिटे—स्मरबंद विरंत्र मिरब गर्वश्रष्ठ २८वि — यागात्र नामात्र गप्रक

चाकारमञ्जू भावमंत्र कैं। शिद्ध मिग्रस्य विद्यहमा १

অবস্থা কর্তে হবে। ভাগ বেঁটে নাও—াবলি কেবল বুকের ভিতরে রজের প্রোত চলেছে, कत्र। चात्रत्र श्रष्ठार्य (यम প्रकात्र कोवन-मार्भ — छेकाम छ । না হয়। ভাণ্ডার উজাড় হলেও আমার চৈত্র-সন্ধার শিশ্ব হাওয়া পিতা-পুত্রের खिखीत्वत्र मणि चाह्न, मिनीत जामत चाज्यणं मूर्थय छेलय पिरम चात्राम वृणित्म वरम शाम-আছে— প্রাসাদ-চূড়ার স্বর্ণ আছে—ভার্ণবে— এইবার্ত্ত হতভাগা চেঁচিরে উঠে আছাড় তারপবে দেবতা আছেন—ঘন-ক্ষম্ম নেঘের ধেরে মাটীতে প'ড়লো, বুকের উপর ধারে অমৃতের রুষ্টি নামবেই নিশ্চয়।" ভেলেটি।

कानित्र (नाक अप्नाप्क विनात्र कर्त्र भिर्मन -- (यर ७८ छ।" व्यामा नित्र व्यानिक जारा व्यक्तातार कम चरत "जात"—वरम ८ उर्दे वम्म। कित्व जन।—मर्द्धा जिल्ला (मर्प), मार्प्रत अगां आफ्टे वृक्थानात शात्म, कार्यत **८मरब** जीव मक काठ मूछ सक्षी পড़ चाहि— ছেলে-মেরে ভিনটীই চলে গেছে, সব কুধা-তৃষ্ণা এড়িয়ে-স্ব-পাওয়া, স্ব-চাওয়া মেটানো --- जिंदा -- जिंदा --CACAL I

এবাক ছই চোপ ভূলে লোকটা একদুষ্টে তাকিয়ে রইল, এই মরণেও অবিচ্ছিন্ন শান্তের মমতা-গ্রন্থিটীর পানে--याद्यत व्याष्ट्र-भाष्य मस्टि-हात्रा, প्रान-हात्रा তার বুকের ধন-ক'টার রক্ত-লেশহীন পাপুর मूथ क'थानात्र मिटक। "यही चाटह, ভाक् वैक्तिरवा। ना (थरम वाहाम (१८६ — किन्ह এবার তো রাজা শশু কেন্বার স্বর্ণ দিতে শন্তজুর।" . ८६८ अट्डिन — युटक करत किएस (त्ररथ वाँछे- "क्—"वरण (वहांत्री एक्टिनीत मूर्धन शत्रम **डोक्का इ**ट्स अटक वाँडाटवा।" सिटक डाकाटन।

"हैं।,—मकर्लंत्र मद्यक्तहे विद्यह्मा एक छात्र होच, वार्खमान-होन तम कर्छ,

চাকুরে এলেন। ভন্থা বাডার স্থানাচার ' সংবাদ-বাহী এসে থবর দিলে—"ভন্থা

थवत्र निय्य এमिছिन (४, ८म वन्ति—"ठै। ক্লব বেডেছে। গৈনারও বেডেছে, আমারও (४८५८६, - र्षुत्रव्र (४८५८७।"

"" "(वरष्टि १— धान् । कि । ना मा ७, छाका भिरत्र ७४ किटन এन्छ १ मा ९, मा ७, CBEN मां अ এর মুখে—আহা, বাছার গণাটি **क्रिंग कार्य हर्म श्रीहर**।

"টাকা ত আনি নি—ছধও আনি নি।— হারে হতভাগা। বাড়া তলব মিল্বে আস্চে-মাস থেকে—এক টাকা।"

"আৰ হুজুরের ?"

"একশ টাকা ৷ তিনমাদ আগের তারিথ (थरक किरमव करव, काँरमज ।"

" क विनि क इत्न ?"

ভাবতে ভাবতে লোকটা ছেলেটীকে সংবাদ-বাহী বল্লে—"রাজা আর চাকুলের यूरकत छेनत किएम निष्म द्वित्व धन- - हाकूरत्रम भौत होकदत- এই छकार विवयगठ क्रान्सी।

কবিতার কথা

स्मरी कवित्र मानम-कशा। माक्-साक मिल यमन ज्ञामां ना ना करत, करित्र मरन ক্বিতাও ঠিক তেম্মনি প্রেমার লাভ করে। কণিতা স্বচ্ছ নিয় ও স্থগভীর কস্তরেব প্রতি विश्व— भावत जीवान एक उभक्त मुद्दार्खन काश्मरनद्र भदिहत्र माछ। य मिक शकिरम মাত্রম কবি হয়, সেহ শক্তি কলনা নামে পরিচিত। সেই কল্পনা কর জন্মর-জন্মর চিত্রেব সংগ্রহ ও সমাবেশ করিয়া, কভ নব নৰ মৃত্তি হৃষ্টি কবিয়া কবিভাকে সাজাহয়া দেয়, যাহা অতি মলিন ও নিন্দনীয়, ভাহাকে ও उच्चन এवः ञ्चन व कविया २००; यात्रा ञ्चन व, <u>जाहारक काउर ज्ञुन्तत्र । भारत्याच्छ्य करित्र।</u> এক কথায়,—"গরলে অমৃত করে কলনার केलान।" कहाना ऋतूय का शेर : त पृष्ट বর্তমানের সমক্ষে আনিয়া জাবস্তবৎ তাহা প্রত্যক্ষ করাইতে পাবে এবং বর্ত্তনানের মধ্যে ভবিষ্যতেব সন্ধান কবিষা দিতে পারে। कब्रनात्र हत्क (मण ७ कालात ग्रंथा हुर्ग इहेग्रा ষার। তাই কবি বলিরাছেন,— "কি স্বরগে, কি মবতে, অতল পাতালে।

नाहि ऋल, यथा (पवि, नाहि उप शिंख।"

धर्मा, नौ छि ७ मगारक व गूरण व्याप्याप्मर्ग वा (ध्येम এবং খ্রেমের মূলে व सना। এই मार्गारया चामना चरग्रन द्रथ-५:ध मुनात्र व्यापान, उरमय-वामनत्क जामनात्र कतिया गहेट कि निव्यक्ति कारम विशा भावित्व शात्रि।

কবিভার জন্ম কবির কল্পার। ত কবিতা- অভ্যের জন্ম নিজেকে উৎসর্গ করিতে পারি। **এই আত্মোৎসর্গ প্রেমের প্র**ধান উপাদান কিমা প্রেমের অপর নাম। প্রেম আমাদের अञ्चलका भार्योदक आविकात करत्र ; करात ७ फ़ि ५- भत्राम मञ्ज-मृष्टिर जामारमञ 'आमि' भिष्य नामिया आत्म, अवश विष्यंत मकन वश्वदिष्टं अन्तव ७ भविक व'लग्ना पेभनिक करत्र। কল্পনা-শক্তি না থাকিলে অন্তকে আপনার विभिन्ना भाषा बात्र ना अवः दकान वश्वदक स्वन्तद्वत ও পবিত্র বলিয়া অন্নভব করা যায় না, অর্থাৎ कडाना ना पाकिरण, ८ श्रम कचिर् भारत्र ना। कझनात काखाद द द्याग नहें करा। त्य कार्य गडरे कहाना-श्रवन, (म श्रम ७७३ (श्रीमक, উদার ও মহৎ। প্রেমের জন্ম বেমন কল্পনা-ভরা জ্বয়ে, গ্রাহার লীগা-ক্ষেত্রও তেমনি জ্বয়ে। इंग একের छानम व्यक्तिय स्नित्र महिन गांपमां फिट्ड भारत--- এक क्रभरम् काव অক্ত ক্ৰয়ে সংক্ৰমিত কৰিতে পারে৷ যথন कुइं । मानव-समग्र म्य छादव विखाविख, মুদুড় প্রেম-মুত্রে প্রতিত, তথনঃ মানব-ममारकत छेष्ठन, धनः ममाख-कोन्दनत्र मृत्न অভি শুভ মুহুঠ, অভত্র সমাঞ্-গঠনের মূলে মিলন; এবং মিলন সহমন্দিতা আজোৎস্থী বা প্রেমেষ উপর নির্ভর করে। শুধু সমাজ टकन, शर्या ७ मोजित मृत्म ७ क्या । सर्मा ७ নীতি আত্ম-ভ্যাগের উপর প্রতিষ্ঠিত। কিছ পূर्विहे वना कहेबार्ड य स्थायत मून উপानान কল্পনা। কাবর হুদের কল্পা-প্রবণ স্তের্থং वहेंगेल शांवरड राजि व्यक्ति स्थानिक क्षांवर वा वाय क्षांवर वा वाय क्षांवर वा वाय क्षांवर वा वाय क्षांवर वा वाय

আপনাকে পর," অক্সের কাছে আপনাকে ধরা কল্পনার সমগ্র দৃষ্টিতে— (मम्, এবং ধরা निश्रा (শধে चञ्चरक चाপनात्र করিয়া পর। কবি স্থা-ভরা সাদ্ধা-সমারণে আন্দোলিত বিহঙ্গের হ্যায় নিভূতে একাকী कझनांत्र चार्यराण शांन कर्त्रन, चांत्र नव त्मरे मर्जोट ७ व अकात त्य क्षात्र वात्व, त्म क्षात्र, शांत्र क्य मकान कारक यात्र ना कारक, जानत्स चानित्व अविकाल्यिक व्यम छेट्ठे, कावत क्षम विश्व क्षम ; कवि नक लाब माभा विश्व-मानवरक भर्मन करत्र, कवि कन्ननाग शूर्णशान, তাই সে এ৩ প্রোমক ও ভ্যাগী। যে প্রকৃত কবি, সে ভ্যাগী ও তপখা এবং প্রেম-যজ্ঞে আত্ম বালদান কবিতে সক্ষম, স্তরাং প্রস্তৃত क्विङ जामम् धरमात्र मोक्का छक्त, जामर्ग नी छित वाखावर ९ व्यामर्न-भगात्मत्र व्यक्तिको ।।

कझनाय था अबन्धा युक्ति। युक्ति याश (मरथ, তांश धर्खावथख कदिया (मरथ। वाञ् मुश्राप्रक वा वस्तिहस्यत्र माधा स्थारन काटनका, विद्राध वा वाचधान, मिन्यारनहे हरात मुष्टि । किन्न व्यटेनरकात भर्या (य जेका, विद्याद्यत मत्या त्य भिणम, वावयात्मत्र मत्या (य देनकीं), खाश कन्ननात्र पृष्टि अफ़ाइटक भारत्र ना ; त्रांक वखरक चाहित कर टि स्थाप, তার বহিত[গেট আবদ্ধ থাকে। কল্লনা তার অন্তরে প্রবেশ করে, তার অন্তন্তল বা নর্ম ম্পার্শ করে এবং ভার সহিত একাত্ম বা ভয়য় रहेश यात्र, बाठ এव कन्नना बाठ मूची, बात वृष्टि बारम्थी ; बुंक क्षार कृत्वान कांत्रक পাবে কারণ ভাব দৃষ্টি থও ও সহার্ণ,

কবি তাই অতি সহজেই "পরকে আপন করে, বলিয়া তাব আসল মূল্যের পরিচর পায়।

-----কুদ্ৰ যাহা কুদ্ৰ ভাহা নয়; मञा रयथा किছू आहि , विश्व दम्या वम्--

व्यक्तकांत्र नात्रवं अपूर्विक अपूर्वि कहें। ऐति, क्य विनास भारति भारति वा क्यानांत्र मार्गाया আমরা নানাভাবে স্থধের উপভোক্তা इट्ट भाति वर्षे, किन्छ वृद्धित्र माशाया आयश नानाविस मक्षरणत अधिकाती श्रेशिक, ত্রখণাত্রী, আর বুদ্ধি শুভদাত্রা—বুদ্ধি আর कहानांच बन्ध (अंत्र ७ (अंत्र वन्ध, किन्द्र हरात देखरत बना याहर भारत (४, श्रक् खूब ता जानम ७ श्रुक्त कन्मार्गं मर्था क्लाता विद्राध वा भार्षका नाहै। ऋथ विविध ; । धक bित्रश्राधी । अव्यक्तीन अर्थाए ममष्टित ८ जाता, बार्य बद्धां । ও वाक्तिवरणत्वत ভোগা। এই উভয়াবধ হব হি এক।যাঁ। ইইভে ञ्राभी द्वापित एइत। जाहाः প্ররুত চিতকার্য্য, रिष कार्यात्र धात्रा व्याभारभत्र िखत्रा अम्बर मकोव ७ विकक्ष इत्र, कलना धमात गांड कर्त्र, छम्दत्र ८ श्रायत छिएम युग्नमा यात्र, इतः मरनव স্ত্রতা ও সঙ্গাৰ্ণতা দুর হয়; ভাষাই প্রকৃত হিওকাঘা এবং ভাহাই স্থায়ী পবিত্র স্থাপন कनक, किन्न (य-कार्यात्र वात्रा वास्त्रिवरमध्यत्र পাভাগাত কিয়া কুজ স্বার্থ।সন্ধি সম্ভবপর हम जवर कल्लमा निर्जीत छ मधीर्व हरेमा यांग्र, ভাহা নিয়শোর হিডকার্যা, ইহার অভা নাক স্বার্থপরতা। প্রকৃত হিতকার্য্যে যে স্থ তাহা পরার্থপরতার ত্র্থ, মনের ক্রিক্টি ও विक कहाना जात्र व्यव्यक्तिय भोहित्जू भारत, की ततनत्र स्थ, वामास्यत्र व्यवप्रकर्णन्त 'व्यामण

সামুষের, সঙ্গতিলাভের ত্থ,কবির কল্পনা-রচিড "সমাজগত, দেশগত, কালগত, · পরের কারণে মরণেও সুখ^{*}

"পরের কারণে স্বার্থে দিয়া রলি " এ জীবন-মন সকলি দাও----আপনার কথা ভুলিয়া যাও।"

कझनाटक जाध्यय कदिया वर्षन जामता আপনাকে ছাড়াইয়া উঠিতে পারি, তখনই আমাদের অভ্যের প্রতি সহামভূতি দেখানো সম্ভবপর হর, কিন্তু বুদ্ধির ছারা আম্রা আপনাদিগকে বাঁচাইয়া চলি। পুরহিতৈষণার আমায় পাবে না আমার ছথে ও স্থাবে, मृत्य कड़ाना, आचाञ्च अव्हातं मृत्य वृद्धि। এ आमात व्यवना भूत्या ना सामात वृत्क, জগতে যে যত আপনাকে অন্তের সহিত স্বার্থের সংগ্রামে জয়ী করিতে পারে, সে তত वृक्तिमान्। अ मश्मादि यमि एध्र वार्थमिती বৃদ্ধিনান লোক থাকিত, তাহা হইলে মান্ধ-मभारकत्र टेनिकिक ७ जाशाश्चिक जावशा বে কিরাপ হইত তাহা সহজেই অনুমান করা যাইতে পারে; আমাদের সমাজ স্বার্থ-সংগ্রামের রঙ্গভূমিতে পরিণত হইত, আমাদের খরে বরে চাবাক ও এপিকিউরাসের আধিপত্য (मथा बाइफ, किन्छ यमि छाएँछ, व्यक्तीर्क, त्वाकामिक, हमात्र, त्मक्षीयत्र, मिन्छेन, ওয়ার্ডস্ ওয়ার্থ প্রভৃতি করনা প্রবর্ণ কবিগ্র অমগ্রহণ না করিতেন, ভাহা হইলে পাশ্চাভ্য অগভের নৈতিক অবস্থা ভীষণ হইতে চীবণতর হইয়া উঠিত। শুধু কবিওক विदिक्ति ७ ट्रामाद्वत अভादि आट्ठा ७ পार्श विद्याध ७ देववमा विक्र मृर्डिट जाअव नुक्रीक त्रिक। महाक्विश्व পরিষারগত

নিহিত আছে, ভাহারি অমুভূতিতে বিভার रुरेशा छिठिन, धर्म, (श्रम, 'विश्व-कृष्णादकत वानीम भूगटकत्र' व्याप्यामन, प्रःथ-मोर्ग समस्त्रत আশা-ভরসা, অমুতাপক্লিষ্ট জ্বাদের বেদন-তার মত স্থধ কোথাও কি আছে ? নিবেদন প্রভৃতি কবির জীবন-সর্বশ্ব হইয়া দীড়ায়,,এখানে কলনা তাঁর একমাত্র সহায়। প্রকৃত কবি ও আত্ম-দেবী, কবিতা ও আত্ম-नर्वश्वका भन्नभन-विद्याधी। कविनार्हिता एक,---"वाहित्र हहेएक स्मर्यों ना धमन करत्र,

> चामात्र (मर्था ना वाहित्त ! व्यामाग्र (मिश्टि शास्त्र मा व्यामात्र मूर्थ, कविद्य श्रीकह त्यथाम त्मथाम नाहिद्य,

"व्यामि (गरे এरे मानदित लाकानदित याषिया উঠেছি সূথে ছথে गाय छत्र,

टिकामारमञ्ज टिकाटिश क्यांशिकता सरज सरव व्यामि जाहारमञ्ज (अंदर्भ मिहे गी जन्नद्र, माजुक अनम्र (य कथारि नाशि करव স্থুরের ভি র লুকাইয়া কহি তাহা**রে।**" কবি যেমন প্রাকৃত ক্থের সন্ধান দেন, তেমনি প্রকৃত ছঃথেরও সন্ধার্ম দেন। প্রকৃত पृ:थ (य कि जाश कवित्र कहानाहे छेननिक कदिएक भारत। कवि षाक्रिम्हर्ष्यहे वृक्षिएकं পারে যে ত্রুখের সহিত স্থাধের এক খনিষ্ঠ व्यमदिश्यां मध्य प्रशिष्ट, ष्रःथ यज्हे কঠোর, ততই পরন-মঙ্গলের সহিত সমন্ধ, শোক, ভয়, উৎস্কা, নৈয়াশ্র প্রভৃতি কেবল

भवम-मञ्चलक मिमर्गन भाव, डार्ट कवित्र ड्यन्ट म नव कांशवर कांशिक रह, नव (भाक-कारा); प्रत्यंत्र मत्था (य स्थ षाष्ट्र छार्य विভावित इत्र, जथन त्म ख्रू मासूय सत्र, ভারই গান গায়, সেই জন্মই লোক-কাবা দেবভার লীলাভূমি। তথনই সে ভীতির সহিত আমাদের এত প্রিয় ও প্রাণ-ম্পানী, ছংখে যে প্রীতির, ছংখের সহিত স্থাথের, অনিতাের স্থা, স্থাথে সে স্থানাই, এ এক অতি মধুর স্থ; অহা স্থ ভাহার কুলনায় অভি উৎকট, ञ्च्यत्र मक्तारम ञ्च्यत्र श्रामा कामरम विवास-. ভবনে বাওয়া অপেকা ছঃথের প্রশান্ত কুদ্র क्षिति या अयाहे जान, एःथ ऋष्त्रहे उज्जन - চিত্র মাত্র, শোক-কাব্য শহুথ-কাব্য ভিন্ন আর किड्र नरह, जाहे कवि मीरनत कीवन-े काश्नी, कुछ-श्वरत्रत्र जारवाच्ह्राम, देननिकन জীবনের ত্ঃথ-শোক প্রভৃতি উপাদান-সমূহ স্তরে ন্তরে সাজাইয়া স্থাবের এক স্থনর আলেখ্য অন্ধিত করিতে পারেন, ভাই কবি বলিয়াছেন,—

"অর্গে তব রহক অমৃত, মর্ছে থাক স্থথে ছঃথে অনন্ত মিশ্রিত <u>ट्यमधाता</u>— कट्यकट्य वित्रश्राम कति' ভূতলের শ্বর্গ থগুগুলি।"

(শव कर्णा,—वाहाटक कामण कविष वना याहेर्ड भारत, डाहा ५क्टन मरनद्र क्रिक ভাব বা থেয়াল নহে; ভাহা শিশুর ক্রীড়নক-রচনার জার অতি সহজ ও তুক্ত নহে। তাহা ধীর ও গভার হৃদয়ের নীরব ভাষা— ভাবুকের ভাব—ভরজের স্পানন,—ভপস্বীর পুত মন্ত্র স্থাং কবি ভাবুক ও ভপন্থী। 'डाहांत्र कहाना मदनत्र (अग्रांक नरहः, शत्रह অনম্ভ সভা ও সৌন্দর্যোর অহুভূতি মাত্র, मास्य यथनरे जारात्र करूति धरे कन्छ मजा ७ भोनाया या महान् जामार्गन ज्ञान ज्ञान कार्य करत, यथनरे रमरे शत्रम रेमवर्डित आविद्याय छिनगिक कतिएक भारत, उपनरे रम महाकवि,

সহিত নিত্যের, চঞ্চলের সহিত চির-স্থিন-भारसक मयस गुबिट भारम। उपनरे जाहाद हरक यारा युना তारां । जित्र ७ ज्ञूनत यान्या द्वाध रुष अवर अवर अवर अवर अवर আধার হইয়া দাড়ায়। কবি হয়ত প্রথম व्यवस्थात्र निरम्बत्र ऐकाम-गागमा, विक्रग-वामना ष्यञ्श-ष्याणा वा श्रामान-विवादमञ्ज काहिनी গান করে; কিন্তু যতই তার কলনা প্রশার माछ करत, श्रमन छमात्र इत्र এवः गउই म मछा ७ मोन्सर्यात्र मधुयोन इत्र, ७७६ (म बाक्काहिनी हाजिया बाख्यत स्थ-इः १४व कथा गाहिट्ड थाटक, जात्रभव धीटब धीटब বিশ-জগৎ তার কাব্যে স্থান পায়, -শেবে याश हित्र-मछा ७ निछा समात्र, छाश्रहरे मभीर्भ कवि आण्र-विमर्कन करत्र। कवित्र জীবনে প্রথম স্তর—আত্ম-সর্বশ্বতা; বিতীয়— পরার্থতা এবং শেষ আত্ম-বিসজ্জন। এই শেষ অবস্থায় পৌছিয়া কবি বিশ্ব-কবির সমূথে माङ्ग्रिया गाङ्ग्राट्स,—

"जूषि कि महान्, विजू, जानि कि मिन कूछ आमि शक्ति मिन विम्, क्रिय त्य अधाममूख, তবু তুমি ভাকিলে ফ্রামে এস,

जारे अ**ज ज**रपारिशात नास ।"

"वामि नम्रत्न यमन वैश्विमा, बरम, धार्यादत मनिर्मा केलि णांचि त्रिष नारे किह्न, युवि नारे लिए मा ७ ८६ ८४ था ८ त्या ८ म अभीयनकृष्ण मुक्तान विश्वास

পুরারবা

षिनदण्य त्रांकि कन, भीत्रमें भन्तित्री (करिं शिन वहक्क जूवन-ज्वरन; भोती त्राध्णित ভाष्ट्र क्रोभा-शोभाव कथन् উঠেছে জলি', मस्ता (कारकार्यो व्रिंग कनकरनी कानन-कृष्ठल। অভিমুক্ত, কর্ণিকার, পুরাগ, পাটল বিথারিল দেবভার নিভত শয়ন शूरण्याक्तृारम, क्ष्यवनवीधिकांत्र उरम्। . क्राय छर्फ, बारवा छर्फ, मीठिक विमान आत्राहि' काकाभराष्ट्र शादिमान भनी उत्पापनी यामिनीत निर्माथ वामदत। তথনো ভ্রমিছে একা অরণ্যগহনে, नमी छोटत, পर्वत् उत्र मक्छ-निथदत, অিয়াহারা পুরুরবা; হুত-উত্তরীয়, ছিলবাস, নথশির, উন্মাদের মত। অতিদুর গিরীশেব নীহার-বলয়ে विक्ट्रिक ठल्डाम था थिए सम्म--সে কাহার অটুহাসি দিগন্ত-প্রসাবী বিজ্ঞাপিছে বিরহীর বুধা অবেষণ। व्यत्रगांशित यनमाथा-व्यवसांग নিত্য-অন্ধকারে জনমিছে দৃষ্টি-ল্রম,— তিমিরপটলে ধেন তরল সরসী! ছলিছে ভাহারি তলে দীপাবলিসম कायुक कारणाकविष-- मर्ग थरणाधिका। ष्मशृक्त (न मन्नीिका कानन-पाशासास । ्रिक्रणिकाम, क्यूमिक क्षरात्र, विक्रीत वननवास निवादक मुहिबा প্রেয়ার, ক্ষান্থ হয়তিত করি'।

সচকিত কুরুলীর কন্তরীন্ত্রাস তালারি নিশাস বেন,জ্যোৎসা হেথা-হোথা লেগে আছে ভরুশাথে, ব্রভতীবিতানে— ভল্ল-চীনাংশুক-শোভা। ঝিলীব ঝলার কালার মঞ্জীরগুঞ্জ ৫ কার দার্ঘ্যাস নীডস্পুর বিচঙ্গের পক্ষ-বিধুননে! শুঞ্জবিছে মুথে তার ভাব-গদগদ অসমক বাণী, ক্লিসিন্ধনন্থশেষ স্থার বৃদ্ধ যেন অধরের কাঁকে! চলিতে চরণ গাজে কতু শিলাতটে, কঠিন কণ্টকে কভু, হুট বল্লীকাঁসে— স্থান-উন্মীলনেত্র চলে প্ররবা স্থায়ে উর্কাশ্র অলীক সন্ধানে।

সহসা কাননতলে অসন্তব বিভা!
হিরদীপ্ত সোলামিনী, প্রথর-ভাত্মর,
দীর্ঘারত, অতর্কিতে থাস' স্বর্গ হ'তে
ভবিল পাদপত্বলী,—সহস্রশাধার
অনন্ত সে রন্ধ্যমর জালারন দিয়া
চালিল কৌমুলী-ধারা মেখমুক্ত শশী,
আরোহিয়া গগনের গল্পজাশিথরে;
নিদ্রাভুরা ধরণীর ত'নেত্র উপরি
স্টিরা উঠিল বেন স্বর্ণ-শতদল
উচ্চবৃত্তে, তাহারি সে নাভিপদ্মনালে
মুহুর্তে লে বর্ষপু হ'ল রূপান্তর
অটল-নিটোল শুদ্র মর্শ্রন-পুত্তলে।
কুটিল লে কেশদাম অংশবিল্ভিত
মুহুর্তে শোভিল যেন কির্ল-কির্টাট

निष्ठाव नम्रन दबन हान्नाहेन निना, বক্ষ সুবিশাল ধরিল তুহিন-কান্তি,---চাহি' উদ্বিদ্ধে দাভাইল পুরুরবা, **टकारजाधारा भिटन यजि' नव शेकाधन !**" অপলক নেত্র তার অলোক স্বধ্যা গপুৰে সাগর-সম করিল নিঃশেষ, ভীত্র বাসনারণনে মশ্বমূল বেন বীণার ভন্নীর মত হারা'ল কম্পন। श्रियात्र भीत्रिक (यन मिटक मिट्क मिटक উথলিল লাবণ্যের মত। সে মিলন ष्महर्गह, दकाषां नाहे वित्रश्-कन्नना । नाहि युका, नाहि खता, - मकाकाल (यन मञ्जा निन्छल । আলোক-जीधाद धन्छ युट्ट राम सामर्वित्र भिभामात्र मार्थ। অবগাহি' অফুরম্ভ জ্যোতির প্রপাতে (मर क्'ल हाम्रा-र न, মৃত্যুक्तभी (श्रम थरिन नर्कान-एक मृद्धि भागनात्र, কোনোখানে নাই তার বিষের কালিমা!

পরক্ষণে তেমনি চকিতে মুদে' গেল ক্যোতিঃশতদল; স্বপ্ন-ভলে প্ররবা অলস-অবশ-দেহ বাসল ভূতলে; আবরিল আঁথি তার আধার-মঞ্চলে বনস্থনী, লেপি' দিল পুনঃ মেহভরে সর্বা অলে মানছোয়া চল্লিকা চন্দন। আলোক-বন্ধার সেই গভীর প্লাবনে স্থির ছিল জলজ কুমুম, উদ্ধিয়ুথে, বুস্ত দৃঢ় করি'; যথে বন্ধা গেল সরি', নমিয়া পাঁডল শিয়—লুটাহবে বুঝি আপনারি পাদমূলে পঞ্চল শ্যনে। অনচ্ছ আলোকে তাই নয়নের কোণে

कारक्ष योगभात काक्ष कार्यरा । কি-এক সঙ্গীত, যেন বিয়োগ-রাগিণী, আত্মার শে আর্ত্তরব—সারাচিত্ত ভরি ধ্বলিয়া উঠিল তার সকল শিরার; মর্শ্যকোষে কেহপত্মমধু'র ভাড়না এकসাথে कृष्ठोहेल भक्षिय-मण, রূপের কির্পরশির পান করিবারে ! অমনি সে বাণবিদ্ধ কেশরীয় মত, छित्रंशास्त्र, चाटमानियां दक्षत्रकनाथ, ছুটে গেল यमाश्वदंत्र, উত্তান আননে, त्रक्तमिक भाष। जात द्राप्तन-षायाव সমস্ত কাস্তার বাহি' প্রছিল শেষে পর্বভিকন্তর, অভিদূর দুরান্তরে হ'ল প্রতিধ্বনি, শিহরিল তারান্ডোম व्यमञ्ज (म (यामिनर्प), (व्या) निनीषिना ৃষিবিয়া বাঁধিল ভার বিশীর্ণ কবরী।

পাপুর বদনে বিধু হেরিল তাহারে।
সে যে তারি বংশধর প্রতিষ্ঠানপতি
এল পুরারবা। সেই পুরা-ইতিহাস,
বৌবনের মধুমর মোহের কাহিনী
শ্বরিল বিষাদে সোম, সে কলছ-লেখা
এখনো বাজিছে বুকে—তবু কি মধুর।
তখনো সিঞ্চিত্র প্রঠে অমৃত নবীন,
তক্ষণী সে পৌর্ণমাসী ব্যতি,—ব্রহ্মচারী
পারিল না ফিরাবারে নিষিক্ষ চুম্বন।
গুরুপদ্বী তারা ধ্রিল সন্তান তার
আপন কঠরে—সেই পুত্র বুধ হ'তে
জনমিল পুরারবা, ইলার তনর
ক্রু নর, কতু নারী—ইলাকেশাহিনী
স্থাবিচিত্রতর। তাই কে অপুর্বজন্মা
নীর প্রারবা—

ধরাতলে প্রথম সে পূর্ণ মানবভা। अक्षा (नक्षित जाम देवजन वर्ग, প্রগল্ভে প্রসাদ ভার ষাচিল উর্নশী, उम्रापना अव्यक्ता (म अग्रजा-न्यारमाक ! चर्मात्र मार्गा इति' चानिन ध्वाम চন্দ্রবংশ-অবভংস বীর পুরুরবা। नन्तरन त्य कुल यात्रि कृष्टिण ना आत्र— कृष्टिण (म পুঞ পুঞ धक्रवींत्र वटन, छर्जनीत वाशाक्रण नम्न-चाटनाटक, कृष्टिन व्यवज्ञी वास्थ मानत्वत्र ८ थाय । (महे (श्रम, भिर वर्ष किर्त (श्रष्ट श्रांस जाशन जागरम, जानि स्थारक शुक्रद्रवा उत्पान जिमरह घृति' कांखारत शरूरन। यत्य द्राजि चाशुः स्मय, जिमित्र-कलादक कृष्टिह् धूमत्रक्तात्रा यहेवीमायात्र, क्रास्टिवत भी उल्लामं निभा स-मभीदत् **क ध्वन वृशाय थीख काकि छ्टकाम**ल कत्राकृति, खंत्रज्थं ननार्छे निवृत्क, (अमिनक्ष निदर्शक्षमुद्या। व्याविषद (कार्या निर्व' राम, अभक-रगाम्नि हाणिण कणमी-कण खत्रण जिम्दित ; ७४ ७ ६ विकास वास्त वारान তথনো काशिष्ट क्यां प्या निनीय-नास्त । এভক্ষণে পার-হয়ে শীর্ণা গুক্তিমতী উভরিল পুরারবা অভোজের তারে। একটি পুরাগতক সরগ স্থাম, काति (मरक एनर जानि', वास वाधि' वुरक, जुवा'त्व हद्रवयूत्र मुक्काक्ववत्न, मांडा'न मचिए-हाना टीहोन डेमान करमामभ्योगाधिम आउष्ठान-भाउ। मञ्जूदन महमीकरम मरहाक नगरन

क्षिट् निन-दिना क्लाब दिना धूर्भधूअम्द्रभाव्हाम वाष्ट्रा-क्वनिका र्गाथन (नथथा ति['] आवितिष्क निक् প্রাচীমুখে; যেন কারা অন্তরীক্ষ-পথে षश्चांशदतत्र मात्य कदत्रै जानात्शांना, (यन कात्र!—ज्ञानार्थनी, एउत्राधि वर्गन, नामिश्राष्ट्र भग्नवरन व्यख्याक-मदरम, भूकी-(माभान-निश्दत्र क्रांशि मीभिटिक छैक छात्रकात्र, मामादेश मयकत्न त्रजनजूषनता जिल्लाकान-कृष्टिम । কাঞ্চন-কঞ্ক 'পরে মুকুতার সিঁথী जानविशा जलका अजीत धानारत, চালিয়াছে পার্শে তার সতঃ-চয়নিত नव मिक्रवाद्र। भौशिष्टव विदनाम काकी माधवी-मूक्टम वृति ? (कनत्र-कनार्भ গড়িবে শুঠন १ कि यन आश्वाम-ऋरब मुमिना मानिजा हि, त्यानिन वथन-ত্বাক্ষম দীর্ঘায়ত আঁথিয় ভোরণে 👙 স্বিছে অমৃত-ভাতি দিবা চেতনার। তথন অনুর দিক্-চক্রবাল-রেথা হ'মে গেছে রূপান্তর জ্যোতির বলয়ে, ध्य-शिवस्थिन गार नौनिश्वरन त्नथा— (क्लोमवज्ञ भटिं त्यन विजयनावनी । भटन भटन नव म्यां उषाति' उषाति' (क कतिरह ट्रिकारमधा ? मुख श्रुक्रत्रथा বিশ্বতি-বিশ্বিত,—তুলিয়াছে এত জুরা কামরূপা অঞ্চরার অপার মোহিনী, ष्याम ह्या।!

गहरा गरमी-नूटक इशिन मनिन, जिस क्रहनिस सँ।एक লীলায়িত বাহডলি,—কি মধুর হাসি
মুহুর্ত্তেকে মিলাইল পাটল অধরে।
তথনি চিনিল তারে, বর্ষ সহজেও
যার সাথে ছিল নিতা নবপরিচয়।
তাই সে প্রসারি' বাছ, উয়মিত মুখে,
উচ্চারিল নব থাক্ সত্য-সমুজ্জল—
প্রেমের প্রাণ্ডমন্ত্র তাহারি উদ্দেশে।

'কোথায় চলেছ অয়ি জীবনরাপিনি, कांका त्यांत्र, मूळ कविं ध तिर-तिष्ठेक १ **८**हर ७३ श्रृकाभात्र উদय-ছ्रगाद्य এখনি দাডা'বে আসি' হৈমবতী উমা मण्डः-প्रावश्ती-८वरम । दकान् ष्मणगार्थ কি ছলে ভাজিলে মোবে,কহ তা' উকশি! নিত্যজ্যোৎসা নিত্যপুষ্প নন্দনের লাগি' वित्रही खमत्र उव १ ७१३ छमानीन মন্ত্যস্থে—সদ্যঃপাতি ধরার কুস্কুমে 📍 তা' ত' নহে। রচিয়াছি হৃদয় প্রসারি' ভোমার মন্দির খেরি' নন্দন-অধিক क्राप्त्रम छेपरन, जानस-हिटनांगा। चश्राक्षन भरा'रहि निख-रेमीयर्व, মোর মুখে চেয়ে ভব অকুন্তিত আঁথি শিথিল নিমেষপাত, পক্ষ-অগ্রভাগে ছলিল অঞ্জ বিন্দু, শিশির বেমতি भिन्नीय-८कमद्र ; स्तिविष् काणिकत्न উপজিল হাদিতলে মধুর বেদনা, मौग-ज्ञ विगिंग छेत्रम-कथला— मक्न इहेन उच (योचन-व्यक्त ! रहिनल नलारमञ्ज्य सम्बनी এই ছদিপাত ভরি' বে-ছখা ঢালিয়া পিয়াইমু এডকাল—ভারি মোহাবেশে चिम्बिक हत्सामरम त्रिक मानिया

निनाध-यामिनी कल कालिएमत 'शदा, হেরিবারে ভ্যোৎসা মোর স্থত্থ সুথে-व्यथन काशीन क'क ह्यम-नागरम। ছিলে নাকি সুখাঁ ? ভোমার অমান রূপ— দেবতাকাজ্জিত, ধন্ত, অনিক্চিনীয় !---রাজ্যস্থ ভূচ্ছ করি' চেয়েছিম আমি ধরণীর পতি,ভুমি তাই পণ দিয়ে জিনিয়া এইলে মোর কৌমার অভূল— অ-স্বর্গীয়, দেবতা-ত্রন্ন ভ। স্বর্গ হ'তে क्रेश कारम नामिं, श्वाय क्रेमिन মানবের প্রেম ; এ দোঁহার বড় কে ষে বুঝিবারে নারি। তবু কহ সতা কবি', আর কেছ ওই দুল রক্তাধর পানে निरमय-नर्ववकाता ८५८वर्ष असन १ ও-কটাকে স্থাপাত্র হাত হ'তে খসি' পড়েছে কভু কি কারো ত্রিদশ-মগুলে ? चिष्ठं। िष्ठं। এত चर्ता किता'त्या ना मूथ ! অরি মানস-নিষ্ঠুরে! কর অস্তরাল कामात नम्न र'ट उधात कक्ना **७३ ना ट्रिश्च ८मडे मद्र पर्माइनी**— व्यनिर्दान कामनात व्यन्धि हेसन, উৰ্বানীয় বিবসনা শোভা ! কি বলিলে 🕈 देशयांचीमा कृषि ? कित्रिटक्ड स्वादम्दल ছ्थयर्गे, स्वात स्थ5या गागि ? टिंगार्का नग्रत्न ज्या । शोक् शंक् उर्व, व्यामात्र मकल वाथा निर्मष्ट रुतिया ष्यक्षेत्र्यि। किन्छ ७३ मर्छा-मत्नाहत्र षाष्ट्रभम (मखकूरा काशीय मुका'दि व्यमन-मकाभ ? (बरमा ना, त्यरमा ना रिव्यरम्। মাগি' গও স্বৰ্গ হ'তে চির-নিৰ্বাসন, ন ८६८श मा अयुष्ठ, এरमा मनि इ क्रिके ्यामन प्रमान र'रत निरंपुत्रन-भयारन

(थरका ना अक्रभ क्रारभ, अनिजा-महरन অন্তহীন মৃত্যুক্তোতে এস গো নামিয়া। नव-मय जमा-বिवर्जन जै। थियूग हिनि' न'दव खाँचियुरगं, हिन्न भिनामान ; वात्र वात्र कात्रा'रत्र कात्रा'रत्र, फिरत्र' भा'व ' विश्वन-समात्र ; व्याचात्र विराह्ण-कृतिन कृष्टित हुस्न त्यहे मर्जास चार्वरत ওপ্তে, তারি গদ্ধ মকরন্দ-লোভে नुका'रत भागिरव मर्स्डा नकल (स्वर्धा । নিভোরে কে বাসে ভালো ? চিমন্থির ধ্রুব कानक शक्नी किया कानक मियत १ নহি তা'র অনুরাগী; আমি চাই আনো ছाश्रांत्र भन्ठाटक, ठारे इन्स, ठारे गिछ,

রূপ চাই কুর-সিন্ধু-ভরজ-শিয়রে---थित्रिट्ड ना थन्ना यात्र भगदक नृष्टीत्र !

नौ श्रीका भूज्ञवरा,— ८का थाय छ संभी ! মেৰে গেছে হাসিথানি প্ৰভাতের মুৰে फक्न-दकामन ; छाई (यन मदन नम्र 'कावात दकाषात्र करव रुद्दव मिणन। त्मरे कथा निषि भिन्ना भाषात **क्यक्ट**न, "মিলাইল মধুবৰ্ণ বিবাহ-ছকুল (यथक्टरा , मृश्यमना मुक्त পूक्र त्रवा द्वश्रिण शन्मनीम दयोनी शित्रमामा वामाक्रण-त्रक्रवार्थ षाम् वाद्यमान्। **बि**त्यां कि ज्ञान मञ्जूमनात्र ।

"অবতার

আত্মা একাকী ডাক্তার বাল্থাকার-শেরবোনো। এথনো পা টলিভেছিল। ভার চারিদিকে এখন এই জড়পিও দেহটাকে ভাক্তার আবার পদার্থ সকলের মধ্যে একটা যেন চাঞ্চল্য সচেতন করিতে উদ্ভত হইলেন। নিশ্চেষ্ট ও আড়ুইভাবে অক্টেভ-দেহধারী ওলাক পালক্ষের এককোণে আবদ্ধ চিলেন, কতকগুলা নৃত্য চলিতেছিল। ডাক্তার শেরবোনো সেই শুরীরে পরস্পরের আত্মার বিনিময় হইয়াছে ছই হাতে পাথীর ডানা-ঝাড়ার মত হাত-্বলিয়া একণে এইক্লপ নামকরণ করিতে ঝাড়া দিতেছেন। চলমার চক্র-রেথার স্থার ইছ্লে) নয়কত্ব প্রেজ-ছায়ার ভায় ভাঁহার ভাষল বলি-রেথা-বিশিষ্ট নেত্র-মওলের মধ্য-शलीब भीता रहेरल, जावना मुन्नेदबारभन्न मुन्ही- व्यक्त मीनवर्ग छहे जाना पुनिरल्ड — जावनादमन त्याह रहेरण गुण्यत्र यक केत्रिया निष्णिहेरणस्य महत्याह्य-व्यक्तियाय मन्भून देएएक-त्याह्यस्य

কিন্তু এথনো ইচ্ছা-শক্তির দারা তাঁর গতিবিধি অক্টেভের শবীরে এখন ওলাফ-লাবিনন্ধির নিয়ন্তিত হইতেছিল না; এখনো 'মাথা-বাস করিতেছে। সঙ্গে আছেন থোরা'টা সম্পূর্ণরূপে কাটিয়া যায় নাই; **উপশক্তি क्**त्रिट्डिंह्टलन, वत्रावत्र स्पत्राटलत्र ধারে ধারে বিষ্ণু-অবভাবদিগের বেন তাওব-बाफ़ा क्यांत्र भन्न ज्ञांक-करकेल (भद्रम्भुरम् अ अनिकानि ममामीत रवन यात्रन कतियारहैन,

ছिলেন, धे-मन पृथ बानाब डाँहात तृष्टि- कोन्छ छणाक माना नाहिया हेमाताब उद्धन বুভির উপর কাজ করিতে লাগিল; ক্রমে আন্তে আন্তে বাস্তব পদার্থ সকল তাঁহার किंशनिक व्हेन। तुक-ठाना छः यक्ष ब्हेटल षक्षाणी क्ठां काणिया उठित्न त्यक्रण इस, আস্বাৰ-পত্তের উপর ছড়ানো কাপ্ড-भिनेषक्रक । शर्वत उनुहान्ना এवः मीनारमारक क्षिम् जानिक भिष्ठा देवात बार्शिक जालनादक माभान साभ द्यैंगिया में क्रिका दकोट किन्-দৈতোৰ জগন্ত চোৰ বলিয়া ভাঁনার ভ্রম इहेट डिकिन।

क्रममः এই ছায়াবাজির দুশ্র অন্তর্হিত ছইল। আবার সমন্তই স্বাভাবিক আকার ধারণ করিল। ভাক্তার শেরবোনো এখন আর ভারত ধর্বের ভাপদ সন্মাদী নহেন, खगाकटक मट्यायन कत्रिया विगटनन ह— "কোণ্ট মহালয়, আমি আপনার সমুখে যে- বিমিত হুঃ মা উত্তব কবিলেন:--महोका अणि भिरंदे वक्त इत्योह भिरंद "आभाव वाष्ट्रा—कावाव काबाय ?" পরীক্ষাগুলি থেথে আপনি কি পরিভূষ্ট हर्महरून १ -- এই का ७-नम क्यांत मर्या त्य क्षे विकाल जान हिन ना क कथा वला यात्र ना। कावशत कावाद विगटक माशिरमनः - कत्रमा कति वामात माना-देश्वेदक উপস্থिত হয়েছিলেন ব'লে আপনি भितिकांभ कद्रायम मां; आंद्र त्यांध रह अथन আপনার দুঢ় বিশাস জন্মেছে যে, দম্বর-त्याकार्यक विकास यारक शाल-शहा ७ वाकि-करत्रत्र (थला यरम' छिष्टित्र (मत्र, भिष्टे माजाहन-প্रक्रियात कथा ममछहे भाग-भन्न प यांकिकदत्रत्र हाटउत्र हानांकि नत्र।" खाळादत्रत

পূর্বে ওলাফ এই যে-সব অপূর্ব দৃশ্র দেখিয়া- কথার সায় দিবার ভাবে, অক্টেভ-দেহধারী করিলেন, এবং ডাক্তার শেরবোনোয সঙ্গে " मदक धत क्रेटिक वाहित क्रेश পिक्लिन; एकात अत्मक नतकात काटक वामिन्न थ्व माथा (इंटे कांत्र) (कान्टेटक नमस्रात्र कतिएक नाशिद्यम ि

> क्षकाम भाष्ट्री व्यक्षमय इहेग्रा এक्क्वादम णारिन्द्राव পতि, चार्छेड (मञ्धानी दिनोन्डे 'डलाफ. महिभ-द्याहम्गाटनव डिफ्-द्रिभावाक বা গাড়ীৰ গঠনের প্রতি বড়-একটা লক্ষ্য না করিয়াই গাড়ীতে উঠিয়া পাড়লেন।

কোচ্ম্যান জিজ্ঞানা কারল—"কোথায় याहरवन १ व्य जवूक- (পायाक-भवा এখন তিনি চিকিৎসক ভাজার মাত্র; তিনি কোচম্যান সচরাচর যে স্বরে তাঁকে এই সামামাটা ভদ্ৰতাব হাসি মুখে আনিয়া কথা জিজাসা কবিত, সেই সর ভানতে না পাইয়া" ভার গোলমাল ঠেকিল,—ভিনি

এখন এই ক্রংাম গাড়িতে উঠিয়া দেখিলেন शाफ़ीछा त्यात नीम त्ररखत्र कूल-काछ। भनमि काशएक मिक्क ; माहिन-स्थाका वामारम বিভূষিত। এহ-সব প্রভেদ সম্বেও তিনি উহা निष्यंत्र गांछी य'णमा मानिमा लहेरलन। रमक्रभ चट्य, महत्राहत पृष्टे भगार्थ ज्यस जाकारत (मथा मिटन ८ ८ एक भार्ष यानग्रह महन रह हेश व क क क छ। ८महे क म । हेश व उंशित মনে হইল, ভিনি আসলে যাহা, ভাষা অপেক্ষা বেন খাটো; তা ছাড়া তাঁর মনে কইল, তিনি **जाकार्यय गाजी काहि भार्या शिवाहिए मैं**न जवर (महे भविष्ठ्र जिनि य भविष्ठ्र किया-

हिर्गन, डांशं ड डांग चत्रन इत्र ना-ध्यम मिथिटनम, अक्छा भाषना काभट्डन जानवाला পরিয়া আছেন; এ পরিচ্ছদ তাঁর কাপড়ের व्यानमाप्ति इकेटल क कथ्नेहै वाहित इस नाहै। তিনি অনমুভূতপূর্ব একটা সঙ্গোচ অমুভব कतिएक गागिरणम, ज्याकः कारण कांत्र विश्वा-खारांह जमन पाछ हिन, जर्म (यन नमस्टरे কুরাসাক্ষ হইয়া গিয়াছে। সেই সান্ধা देवहेटकत जाशूर्य जासूछ मृश्राक्षमान छेशत छिनि এই व्यवश्राणे व्यादबाश क्रिया क्रे विषयात्र िखात्र यन मिटनन नां , शाफीत दर्गात माथा त्राथिया अक्षे अत्नारमत्ना विखानारंह मा-निका मा-काशरून करेक्र वक्षे उत्सवसार मरश व्याननारक ছाড़ियां मिरनन।

যোড়া এক কারগার আসিয়া থামিয়া পড়ার এবং কোচম্যান উচ্চৈশ্বরে "ফাটক" ফিরিয়া আসিলেন; শালি নামাইয়া দিয়া, না, কেননা ভজুর চুই-এক ঘণ্টার উপর পাডীর জান্লা হইতে মাথা বাহির করিলেন, হ'ল বাড়ী এলেছেন—আর রাণী বিশ্রামের uat त्रांखात्र गारम्ब चार्लात्र (प्रचिट्ड कर्ड्ड निरक्षत्र महरण **हर्ट्ड (**गरह्न ।" भा**हे** जिन, अ अक्टों व्यथिति जिल्ला है। अपनिवास वार्थ-বাড়ীটাও তাঁর বাড়ী নয়। ডিনি যদিয়া করা রাজ-প্রাসামে প্রবেশ নিষেধ করিবার **डिटिंगन** :—

"बाभाटक टकांशांत्र नित्र क्रींग ? क्रिके **ভবে** नाविनिषद स्टाउन ?"

বুষতে পারি নি" কোচমান এই কথা গুন खन्त्रादेश विषया, कथिल कारमञ्ज कालिमूर्य त्तर लगाक अक दिला निया विगतन :---व्यक्ष्मानाटक कार्यात छानाईसा मिन।

षात्मक हों। कविष्यम, किन्न काशत केन्द्रत द्वारंग मीम क्षेत्रा केन्द्रिय—मि बिटक नाहिरनम ना , "बाबारक मा नहेश का जिला है....

व्यावाच शांकी टकन हिनदा दशन, व्यावि छ व्यावाद वंश व्यापयां क्षिए एक्ष विश्वादिगाय।" "আর একজনের গাড়ীতে আমি কেন উঠिणाम p" जिनि बाजुमान कतिरशन, क्य क একটু অরভাব হওয়ায়, তাঁর জ্ঞান অস্পষ্ট হইয়া পডিয়াছিল; হয় ত সেই "মনেয়" জাজার, कात्र, विचान-धावनका भात्र वाष्ट्रवात जन्म, তাঁর নিজিভ অবস্থার "হাশিশ্" কিংবা উহারই মুভ কোন প্রকার বিভ্রম-উৎপাদক मानक. अवा था ९म्राहेमा भित्राहित्यन । धक्रांकि विशास क्रिलिट धरे-मन विक्रम निन्छम छिनमा याहेरव।

गाविन्भित्र (साउँ। গাড়ী काशिक्षा (भौছिन।

ফাটক **म**द्रायाम् क श्रुविद्ध वगान मरतायान काठक श्रीमार्क व्यक्तिक व्हेशा विनन, "बाब दात्व भाक अन्तर्भना रूट्य

क्षक, जावदारायंत्र काकिनीटक क्षकां काञ्च-मृर्डिमकण (यक्रण चात्र चात्रणाहेन्ना बाटक, সেইরপ প্রকাপ ভীমকার বে দরোয়ান --- क्यून, मान कररवन, जामि ভारत थ्य बांकसमक छार्य वर्ष-डेगुक कांग्रेरकन मन्त्रूरण बाड़ा करेग्राहिन, छाराटक चारक्रेड-

" সারে বেটা, ভুই মান্ডাল না পাগল 🕍 बाजा-नर्थ सुनाश्चित्रक दकोके, अरम मरम ७ कि कथा क्रिया क्रियारमंत्र बाज मुब পাগল।"

व्याचात्र व्याच्यायर्गामा या भाकछ " (या हो हमा हो। व्याव्यू हमत्र यह या

দরোমান উত্তর করিল:

आयात्र मरक हानां कि मा, - छ्हे- এक ताक्ष्म विनि :---चार्न्नन दननी याळात्र तथरत्रह न'ल ध-मन "त्वय, बकर् ठांका इछ। छछलारकत्र চালাকি আমার কাছে চলবে না।"

ঠেলা बिरमन (य, मिरे ঠেশার সে পাড়ী

कनिष्ठ कत्र का वार्य वांधा कत्रिम्दन करत्र यांचा" रग्हि।"

क्राहोत्र भन्न चरणक क्रेटक (यमभण दकोन्छे अर्थाधन क तिन्ना विमरणन :---विकाशिक, टिरिटेन केनन क्यान कार्यन हो जिल्ला कार्यनिक क्यानिन क्यानिन

"यनाह, ज्ञानिह यालान किश्वा यूंश कूकिल। प्रताप्तान कोल्डिस प्रहे হাত ভাহার এক হাতের ভিতর লইয়া व्यक्तिक-एक-एकाटकत्र मूथ जान क्रिया सभागूरशत्र यक्षना नियात शाक-माजाभी यटकत क्रिका। क्रिकि विभागम "इक्छाना, यमि मट्डा क्रांकात्र देव्दका नांक्रभाना थाटो। याद्राप्राचीत्र मः डीट्यय शकाख এक धतिया शिविया किवात कित्रप्राहिन। হাত বাহিব করিয়া সেই প্রকাপ্তকায় এই অতিকায় পুরুষটা আসলে লোক ভাল — উश्व काम विषय्कि छ्ल म। "हुल करा देनाल आभात अहे है। देव 'आश्वकरक खबू धकर्ने निका नियांत अख তলায় লোর মাণাটা ওড়োওড়ো ক'রে, ছুই-চারিট মর্মান্তিক টিপুনি দিয়াছিল। রান্তার উপর ছুতে ফেল্ব। বাছাধন, ভাঃপর আগত্তককে সংখাধন করিয়া

মত কাপড় c51পড়—তোমার এইরকম को कथा बार्केड-(मर्-१मोक बात बत्रहार वावहात करा, त्रांक क्रकन डक्समारकत कविएक मा भाविया नाइएक अभन এक वाछीएक अटम এইরকম গোলমাল করা কি अवृद्धित काक १ द्वल म्बर्गिक का काक दनमात्र বারাণ্ডার তলাস গিয়া পড়িল। যে-সব ঝোঁকে করেছ— কে নাঞানি তোমাকে মদ क्छा ख्यम २ लहरू यांग्र नाहे, खाहात्रा थाहरत माखान करत (हरफ्रह) এहेन्नग्रहे किना भारतीय किया दिशा किया काणिया । (कायाव क्षेत्र कायि यात्रीठ करव सा, "কডভাগা, পাভি, নচ্ছার। সোকে ভোমাকে গুরু আন্তে আত্তে রাস্তার উপর कामिकवाव निर्णाम। काक इसे ब्राव्हिद्धांफ दर्श्य निरम्न कामव, म्थारम ३ यनि शाममान তুই এই বাড়ীতে থাকিস্ আমার ইচ্চা কর,—কৌদ্ ফেরবার সময় পাহারাওয়ালা नमः पूत्र क अभाग रंगरक---रेनरण कर्ल रखामारक कुरण निरम्न यारवः अन् अकर्ने কুকুরের মত তোকে এখনি হত্যা করব। তোমাকে বেহালা শোনাই—বেহালার একজন নীচ ভূত্যের রজে আমার হাতকে একটা গৎ শুনলে ভোমার মাথা ঠাওা

व्यक्तिल-(मर-अमाक ममद्वक कृत्राविश्वदक

এ অভিকাম নরোয়ানের নিকে ছুটিয়া — নিল'জ বেহায়া, তেই একটা নীচ আসিলেন—ভাঁহার চোথ ছইটা জোধে অলীক কথা বলে তোলের সনিবকে— कंत्राह—चात्र (जात्रा चिट्टक (मर्थ) किहू क्रावादनत दसी, खाकरनत त्यव-दण्िम (न !^{*}

मर्था थ्य-अक्टो टेक्टेह -পড়िया लाग। ছত্রের চালোয়ার তলে একটি যুবক দণ্ডায়নান। এक्टी ष्यप्टिशस्त्र, खेरास्त्र क्रावेद किला বিভূষিত বুকণ্ডলা ফুলিয়া ফুলিয়া উঠিতে मामिन: "दिश्य छाडे, अहे लाकिन प्रांगनादक को का विन्धि वाल भारत कत्रहा हा। हा। हि। हि। त्यभा या दहाक।"

बारकेख-(बर-एगारकत नगाउँ कर्श नीखन ঘর্ম-বিদূতে আর্ক্ত হইল। ছোরার ফলার মত তীক্ষ্ণ একটা কথা খেন 'টার মন্তিকের ভিতর শিয়া চলিয়া গেল। "সমার।" দরোয়ানটা সভাই কি আমার বুকের উপর हों । द्राष्ट्र वरमहिल १ उथनकात्र दम की बन्छ। कि आमांत्र बाछव की बन १ ष्यामात्र वृक्षिण कि ठूषक-षाकर्यभाव शिवात्र (कोन्टेंदक श्रामन करत्र नार्रे, मिर्रे मणान **टक्ड এक** हो चीषण सङ्सङ्ख क'रत स्थानाटक कत्रिण। এই त्रकम नाकान करतरह १ এই-সব ভূতা, त्रानी প্রাক্ষোভির পতি, খুব সাহসী यात्रा व्यामात्र कारह अत् अत् क'रत काँशङ, আমার পদানত হয়ে থাক্ত, তারা কিনা कामादक हिन्दछ्हे भावत्म ना। कामाव हहेग। (यमन कानफ वम्टन मिरप्रदेख, नाफी वम्टन দিরেছে সেইরকম কি আমার শরীরও यम्रा मिरम्राह ? अ क्छावर्शन मरशा य मव-চেয়ে ছবিনীত সে বলিল:—

"तथ, जूमि त्य दकोन्छे नाविनश्चिनश्च, **बहेबात किंक कामटक भात्रदम । कृषि दम अक उभक्षात्रा कामित्रा ओ- मरवाम डॉक्टाटक** त्रकम जनमारमम कथा बम्हिएन छाई छटन शूर्वाई जानाईमा दबम। सूर्वारमम छेखन चयर दकोकी को दाच मिं कि बिटम दम्पम चारका दगारका मरमा, चरशक निरमा चाग्रहम।"

शास्त्र निद्य पृष्टिभाठ कतिया स्मिष्टान, এই নাম উচ্চারণ করিবামাত্র ভূতাবর্গের মাটিতে-পোতা তাবুর মত একটা বুহুৎ শোভন ছিপ ছিপে গঠন, মুখমওল ডিমাক্তি, कारणा कारणा रहाभ, खकममुभ नामा, मक গোষ,—এ ভ তিনিই, তিনি ভিন্ন আগন **८कर नगा जाशवा नामृत्या विसम**् उर्शामन का त्रियात उरकारण अञ्चल निर् বোধ হয় তাঁর প্রেডচ্ছায়ামূত্তি গড়িয়াছেন।

मरबाबान, करबनीरक मृह मुष्टिर धविया त्राधिशाष्ट्रिन, ८मर्टे मूष्टि निधिन कतिन। দৃষ্টি অবনত, হস্ত পাখে লম্বিত, নিম্পান নিশ্চল ভ্ভাবর্গ, বাদশার আগমনে গোলাম-मिरंगत छात्र भारणत गार्व छक्छिटार मात्रि দিরা দাঁড়াইল। যে সন্মান ভাছারা আসল একেবারে ঘুলিয়ে গিয়েছিল ? অথবা তাহারা তাঁহার উপছায়াকে প্রদর্শন

> हर्देश अकी अ विकास मुद्धि भागमत्न, তাঁহার মনে কেমন একটা ভীতির সঞ্চার

উহিনের বংশগত একটা প্রাচীন काहिनी छोरांत्र घटन পड़ियां लिन, ভাহাতে এই ভন্ন আনো বৰ্ষিত হইল। शिक्तितात्र गाविन्षि-वश्टलब टकान वाक्तित्र ৰথন মৃত্যু হয়, ঠিক্ তাঁহার মত দেখিতে - जिल्हा अदि दिशाहे। युक्त श्रुका

व्यागिटण्टह। क्ष्डद्वार करकमरमञ्ज এह নিভীক আপনাম ছায়াসূর্তি দর্শন করিয়া, একটা অন্ধ-সংকারসূলক ত্রতিক্রম্য আত্ত ष्पादमंख व्हेटणनः, कामान व्हेटल श्रीणा **इहेट यथन उपर अपन अपर**य বাহির यिनि নির্ভয়ে কামানের মুখে হাত চুকাইরা দিয়াছিলেন, সেই তিমি এখন কিনা নিজেরই সমুখ ২ইতে ভয়ে পিছু क्षिटमन ।

कोन्छे नाविन्छि- अनाक-एमम्थावी चारकेस, অকীয় পুরাতন শ্বীবের অভিমুখে অগ্রসর হইলেন। ঐশরীরে মধ্যে, কৌন্টের আত্মা "এখন আপনার একটু ভালো বোধ क्थन युवायुवि कत्रिटङ्किन, कथन व्याप्य २००६ १ दिने छेखन कतिरान :--ছिण। गाविन्कि-(मर अरक्रेफ, अरक्रेफ-(मर गाविन्किरक উদ্বত ও প্রাণহীন ভব্রতার স্বরে यिषाटणनः---

"महानय, এই कुरुएक मटन विवास क'र्ज कानर्क काभनात मान हानि कत्रदन न। यभ चार्गान (योन्डे गाविन्छित्र मर्छ मार्का९ कंत्ररङ हान, जारूल जानद्वन, जिनि प्रमुद्र इत्वात शृद्धि जागढकरमत्र गटम माकार करतन ना। आत कोट्टिम् मरकामग्रात मरम घारमत माकाद-कारतत्र अधिकात्र आटक्, त्कोरफेन्-मर्दशंमश बुरुष्णि जिवादम कैं।एम म कार्यना करमन ।"

এই कथाश्रीण धीटन धीटन छिक्तान कनिन्ना ध्वर व्याष्ट्रक नात्मत्र श्वकृष (मथावेदांत क्रम) প্রত্যেক শব্দের উপর সজোধে ঝোঁক দিয়া <u> अहे ज्योंक ८कोन्ड</u> क्षेत्र-शम्दकटम खाद्याम कतिरमन, जात्र डीत्र भन्दार्ड वात्र छ सन् महिल्ला अन्तर्भाग्ना

প্রচনা বলিয়া িরদিন গুঠীত হইয়া অক্টেভ-দেহ ওলাফ-লাবিন্তি স্ভিত ইওয়ার ভাঁহাকে ভুলিয়া লইশা তাঁহার গাড়ীতে वाक श्रुक्य, व्याणनात्र वाहिएत (लीहाहेबा,(मध्या हहेगा यथन डीहात हैहज्छ ্হইল, তখন তিনি ফেখিলেন, এমন একটা **मगाग्र जिनि खरेश बार्टन, रयशास्त्र जिनि** পুৰ্বে কৰ্থন শয়ন করেন নাই, এমন একটা বরে রহিয়াছেন, বে বরে তিনি কথন প্রবেশ কবিয়াছন ৰজিয়া তাঁহার স্মরণ হয় না। ভাঁহার ানকটে একজন অপরিচিত চাকর मांफ्राइम्रा िका। तम, डांशांत्र मांपाठा उठाहेबा, नाटकत काटक केथरत्रत्र मिमि धित्रण। ठाकत **कारकेल-(मह (कोन्डेटक कालनाइ मनिय महन** क विश्वा जिल्हामा क तिल :

- প্রজালত হইতেছিল, কথন বা ভয়ে কাঁপিতে- "হা; ও একটা ক্ষানক ত্র্বলভা
 - শামি কি এখন বেতে পারি ?—না व्याननात्र कार्य व्याननारक (मध्यात-त्यान्यात्र क्रश कामारक जवारन वाक्रड हर्द ?"
 - -- ना, जागारक जकना थाक्टक त्मक; किन हाल गांचात जात्म, - वफ जात्रनात काटल (य-भव लाहां स समाम-वां जि जाटह (भश्रमां क्विटिन किटन (यथ।"
 - किंख এত-বেশী আলোতে আপনার यूरमद बार्षां कर्य व रण ज्यानमात्र मरन करक ना कि р
 - -- "কিছুমাত্ৰ না; তা ছাড়া এখনো• व्याचात्र युग शात्र नि।"
 - आभि ७८७ यात मा, यमि आणमात्र किছ मनकात स्व, यन्त्री बाजारमञ्जू आणि छूट

पूर्वी (मधिया गटन गटन छोक स्टेस्फिन।

চাকর বাতিগুল, জালাইরা গ্রন্থান করিলে कोणे आंत्रनात्र काटह . हृष्टिशं क्रामित्नन जिंदर चार्लाक-उद्धांत्रक अहे शुक्र ७ विश्वक थानित ভिতর निशा দেখিলেন: একটি **अस्य म्य, मृद्य ए विरक्ष, माथाय अ**हूद कार्ला हुल, मीमवर्ग टाटिश्न छात्रा दिन्दमंत्र मङ মোলায়েম শ্রামল শাশ্র--ভখন বিশ্বিত হইয়া र्वामा उठित्नन,—"वाक। व मूख्टी छ আমার নয়।" তিনি প্রথমে বিশ্বাস করিতে চন্তা করিলেন, হয়তো কোন,ছই ভামাসা-বাজ লোক ভাষ্ট ও বিপ্লক ধচিত আয়-ার তিষাক কিনারার পিছনে ভাঁর একটা মুখস্ রাথিয়া দিয়াছে। তিনি পিছনে হাত দিয়া তাঁহার অবস্থা অক্ত প্রকারেও শোচনীয় मिथरणन, हाटड किहूरे टिकिन न। रमशान (क्ट्टे हिन ना।

-- जाहांत्र हां के कारभका मक, महा, ७ मिता- कथनहे कांत्र मावी कविष्ठ भातिर्वन ना। ममिष्ठ; ज्यनामिका ज्यक्रीशर्फ अक्षी वर्ष मक्रागर्के डीहारक अवक्षक,—निमान त्मानात्र जारित, जारित मानत छेनत कूल- भएक,--भागम विषये शिवताहरव। अकित চিহ্ন ব্যোদিত। কৌণ্ট এই আণ্টির অধিকারী মিধ্যা আকারে আবৃত তিনি—এপন তার कथनरे छिलान ना। छाराद्र भरकष्टे ची ७ डाशांक हिनिट्ड भावित्व ना-डांटक হাতভাইরা একটা ছোট পত্র-শেটিকা কে সনাক্ত করিবেণ কি করিয়া ভিনি পাইলেন,—ভাহার ভিতর কতকগুলি সাক্ষাৎ ভাঁহার ভালাম্ব্য প্রমাণ করিবেন ? অবঞ্চ कांत्रवास जान-পত (caid) हिन—जान- व्यानक विनिष्ठ तकरमत्र वर्धना आहरू, व्यानारक भरकात्र উপन्न এই नामि । जिथा हिन ;— "बार्डिक"।

डीशंत्र विकीय-मृद्धित्र व्याविकान, व्यायनात्र कवित्रा डीशंत्र हक्षरम्भी जामीत व्यायादक ভিতরে मिজের মৃত্তির বদলে ভিন্ন লোকের ভিনি খুব সম্ভব চিনিতে পারিবেন কিন্ত मृश्वित हाथ पर्यम् - अन्य विक्रक मिल्लिक क्ष्मा छोहात्र विवास कि स्ट्रिय ? नमख

চাকর, কৌন্টের পাপুর্ব, ও বিশ্লিষ্ট বিভাম চইলেও চইতে পারে। কিন্তু এই-সব ष्यस्त्र शरिष्ट्रम, এই बाश्वि याका जिन काल म रहेटल श्रीमश्रा क्लियाहरून- धरे मन मात्रारमा छाजाम खमार्यत छाज्याम करा, **अहे-मव मारकात्र विकृष्ट कि कृ वशा क्रमख्य।** তাঁহার অজ্ঞাভসারে তাঁহার সম্পূর্ণ রূপান্তর শাধ্ত হইয়াছে; নিশ্চয়ই কোন বাহ্নর, সম্ভবত কোন দানব তাঁহার আকৃতি, তাঁহার আভিজাত, তাঁহার নাম, তাঁহার সমস্ত ব্যক্তিত তাঁহার নিকট হুইতে হরণ করিয়াছে, কেবল ভাহার আত্মাকে ভাহার নিকট वाशिया मित्रारक् व्यथित त्मरे व्याकारक वाशित्र আপনাবে অভিব্যক্ত করিবার কোন উপায় व्राथियां (मग्न नार्।

হুইয়া পাড়রাছে। এক্ষণে তিনি যে শরীরের मर्या कम्मो इक्या चार्छन, भाषीत यात्र व्याणनात्र शक गिंशना गिंशना मिंशिया मिंशिया, क्रिया क्रिया किन गाविन्त्रि क्रोप्केन शब्दी क्रम्यम् भू हिनाहि कथा चाट्ट या चाट्यन ष्मात्रकाठ रहेटगढ, त्कोन्टिम बाद्याकीत माविन्षि-आमारम ভূতা एवं काहिराज, मत्म পড়িতে পারে এবং मেই मय कथा मत्न

সাথিতে পারিবেন গু **ক্**র हाडे इहेश त्रियाटह, व्यथना टकान आह्मी प्यत्रन कराय!" टिगंदात्र व्यक्तिद्व व्यक्तिया । श्रीविम्बि **मिथ्राहित्यन** जोरा ८ शक-मृद्धि रहेट थार्य, (कान वात्नोकिक मर्गन इक्टेंग्ड भारतः; व्यागात गाजिन्यं थूनियां नहेश कहिश मरश স্থাপন করিয়াছে।

ष्मणीक त्कोके नाविन्दि, त्कान मानव ৰাহাকে আমার আকারে পরিণত করি-য়াছে, সেই মক্তপিপাস্থ হিংগু পশু, যে এখন আমার বাড়াতে বাস করিতেছে, ভুলভারা मगरम जामान असन-करक शत्यक कित्रशास्त्र,

লোকের মতের বিরুদ্ধে কি তাঁহার বিশ্বাস রঞ্জিত তুন্দব মুধধানি আনত করিয়া সভাই রচিয়াছেন এবং এই নিপ্যুক্তে, প্রবঞ্চক্তে, তাঁহার "আমি" সম্পূর্ণরূপে তাঁর বেদ্ধল নার্কীকে আমি বলিয়া বিখাস করিভেছেন। रहेश शिश्राष्ट्र। कांत्र अहे क्लाकोकत्रण एशू अवन यनि प्रतिश्र व्यामात यान यान यान कि वाश्वित वाकात्र अ मुश्मीय शतिवर्धन गाळा छेठ्ठकर्छ कोर्ल्डेभएक विशः "(अभारत छ অথবা বাস্তবিকট তিনি অন্ত কাঁচারো প্রতারণ করচে, ও তোমার স্বাধেমধর मंद्रीदि वाम किरिष्टाइम। जा वीम इब्न, अभाक नया। जूमि मा क्लिन निर्माय जाद তবে তারে নিজের শরীরটা কোথার গেল হ এমন একটা জবন্ধ করতে উম্বত হয়েছ কোনও চুলার মধ্যে পড়িয়া কি যা আমার হতাল আতা চিরকাল—অনভকাল

কৌণ্টের মন্তিক অগ্নিয়য় আবেগ ভরজে প্রাসামে তাঁহারা অমুরূপ যে দিতীয় মূর্তি আলোডিত হইতে লাগিল। কথন বা काञ्चि द्वारशत नथा मुभ निम्ना वाहित करेंग, कथन वा मृष्टि-कखामन अक्षणन विद्रक किश्या कान भंदीती की यह कारल हहें हैं गाशिकान, घटरब मध्या हिस्स পखर मध्या পারে, সেই আফির আক্ততি ভাক্তার ২য়ত অন্থির তাবে পায়চারি করিতে লাগিলেন। তাধ্বে অম্পষ্ট অহংজ্ঞান, যেন দাঙ্গণ নিপুণভার সহিত ঐ লোকটাকে আছেন হইবার মতে। হইল। তিনি ছুটিয়া षाक्रिट्य व्यमाधनक एक रशर्मन, करणत " বিষাক্ত সর্পের ভাষে এই চিস্তাটা উার বাসনে জল ভরিয়া, ভাষার মধ্যে মাথা ডুবাই-क्षारक मध्यन कविटल काशिल।---किस क्रिके क्लिन। यथन गांथा क्रिकेटलन, रूपन त्मर कन्करम कुषात्र भारम खरम मिक माथा হহতে বাপা-ধুম উথিত হহতেছিল। তাহার রক্ত আবার ঠাওা হল্যা আসিল। ভিনি মনে মনে ভাগিলেন, যাহগিরি ও এখন ধালার আজাবহ হইয়াছে, কয়ত লে এই ভাইনীমন্ত্রের দিন ত চলিয়া গিয়াছে। मुज़ाई किन्त बाबाक नदीत श्रेष्ठ निमुक मिरे कक प्रशास खायम प्राचित्र छात्र गथनरे कांत्रक शासा जक्कन शालाएक कोन्छे, আমি প্রারেশ করিতাম আমার ছার্য একটা যে প্যারিলে বাস করে, রথচাইভের কাছে व्यक्तिकार्य व्याप्तरश करिया छिठिए। इयक बार्य मक मक छाका बात कारह, य अथन को कि आहमा कि तमहे इंड छा भारत श्राविक वर्ष यह यह यह महिल कि का महिल कि महिल को महिल करकत छेणत्र व्याणनात्र वशीव त्रक्तिम हार्थ अक्तन मोदीन जभी वारक लिए यहन পরিচয় পাওয়া যায়। এখন এই সমস্ভের গোল। ব্যাখ্যা একমাত্র সেই করিছে পারে।

করেছে, প্রথম শ্রেণীর রাজ-সন্মানে যে ভিনি প্রান্ত ক্লান্ত হটয়া ভাড়াভাড়ি াবজ্বিত তাকে কি কোন বাজিকর এই অক্টেডের শ্যায় গিয়া শুইয়া পড়িলেন। व्रक्म करत्र (ठार्थ धूरणा निर्द्ध भारत ? एड्यामाळ शर्छाय निर्मात्र निमश इहरणन। এ নিশ্চমট সেই বালথাক্ষর শোরবোনোর ঘুম ভাঙ্গিয়াছে মনে করিয়া তাহার চাক্র কাজ—আমাকে কইয়া সে একটু মজা 'এক সম'য় আ'স্থা, তাঁহার চিঠিপত্র ও कविशादक, किन्द हेशाट शंत्र तुक्रिकिट अव्यक्ति कांग्रजाति होनामव डेनव वार्षिश (ক্রেমশঃ)

ঐজ্যোতি বিজ্ञনাথ ঠাকুর।

রদ ও নিরদ

निशरन निश्दरूत चाटफ लो दत्रदश मोसूर मां क्रिक्ट चार्च करता अने भारत अक के जिल्लामिक दलत माथा ५८म कामार्छ। जात्र ६-विखास हे जिहारम ७ वह था। मिश्क-শিজমের ইতিহাসণ তাই, আবার ভারত-नित्त्रत हो कहान त्मथनांत्र मनद्य कि के कि निश्म हत्न कांत्रक अ-भर्यास । मासूरयत्र निक निष्य निश्र-विकासी का ने भाषात काकर कामिट्ड क्लो क्रम ब्रह्म दश्म, ब्लान शिक्स विक किर्य ভাষের আপনার ইভিহাস যা ভাষায় লেখা-কাজেই পণ্ডিভেরা তার অর্থ व्याणन ना, উर्न्टी निकार क'रत हरहान! अकलन अरमन, जिलि श्रमाण करत रगरमन,

वहकान क'न माञ्च जाभनात हो जिहाम कारक मिश्ह प्रःथ करत्र वरलाह्य-जामि লেখা স্থক করে দিয়েছে। প্রথম ইতিহাস বাদ মান্তবের ভাষায় ইতিহাসটা লিখতেম---আরম্ভ হয়েছে—লেথার অক্ষরেও নর, ছাপার তাহলে সিংহ রইতো উপরে, মামুষ রইতো অক্সেও নয়, দিব বাটালির চোপ নিয়ে, নীচে। এই গো গেল বাগড়ার হতিহাস; নয়তো তুলির আঁচড দিয়ে মাত্রৰ প্রথম — সে ইতিহাসের মুল্য হতিহাস-হিসাবে नव, भक्षमात मधि-विजाद (जी) कारजत कटन शादत। छाठ तमथा यादक जामारमन हिला छूठे পाथी मात्रांत्र निवस अथरना भिरहात हे हिनाम स्थामना लिथरन हरन এक-तकम, अयो निगर्या कृत्य ष्यका । अयो बक्ती পারে যিশুখুষ্টের জন্মের পরে আমাদের भिद्यहोटक द्वेरण अस्य चारमक्यांश्वारतत्र भारतम जनाम (कन्टन, आंत्र आंमत्र) दिहरण कुन्दा आमारमञ्ज निहारीएक शृष्टेश्य व्यवः খৃত্তেরও পুন্ধ ভক্ত-পূর্ব্ধ ভূতপুর্বের দিকে त्माका—क्रिकार्य यशका हम्टक शाक्रण करव कि १ वशकावर है किहान वाक्रव, जामारमब (नाथा ए'न ५ रहाई, जा बर्क्य जाकरत अ७- (नर्भन artian देकिस्न वक्छव करनार्य ना। এই সেমিন—ফরাসা মুগ্রুক থেকে

गव वृक्षमृत्रिक औक निरम्न हांभ त्ररम्ह, वनीत्र जात्रिक्त गरम । মভএব ওটা পশ্চিম এসে পুৰকে বথাসস্ করে গেছে। কিন্তু আমি বল্তে চাই---रमथ रमांच এक है। मांकारना ममलम विकृश्वि अनर हेकी रखन अक स्मिन्डान रहहाता, इरहाई ' (मथरव এक ছাঁচে ঢ়ালা,—हिंबारक्षेत्र मरक ভারতের একটা কুটুামতেও ঘটেছিল এক मनरम, कारखंडे श्रमान इरहरू—जात्र (यहा मिर्ल हेकीश्वरक श्रीरमद्र भूक्ष ज्या । — अमन কি করাসী ভাতেরও স্ষ্টি হ্বার স্থেরও श्राप्तत चार्त्र, तमकेष्ठे (श्राक्टे मवाहे निश्राम मुर्खि গড়তে। **এ**র উত্তর স্বাই দেবে—ধে व्यान्नका विद्यानीटक मानाम त्मछ। त्यनीटक मानार्य ८कम ? अथि ८ जामत्रा जारना **दक्रक डाजान स्माम अस्मारे डाजानिकात** অধিকাৰী, তেম্নি ফ্রেঞ্ম্যান কি ইংরেজ यान अत्रा artist, कि दम्जिष्ट अत्रा archæologist 's Historian যারা ভারত-শিল্পী मस्यक्ष ठाठी क'रव डे डिकाम नियर उ ठरनारक —ভाता art जिनियोग जथा art धन कि कि चाविषात कत्रण हलाइना, जन-ভातिरथत প্রমাণ আর বাহ্মণ সেথেই ভারা চলেছে चामारमञ्ज artan उथा निषर्छ। Indian Artর বড় বড় history, archæology कुठेक ठांन थरत ! कारबार शार धत किरमव या इटक जागारमञ्ज का archaelogical वा भूवह logical,—artistic একেবাৰেই নয় |

-Art এর সম্পর্ক রসের সঙ্গে রসিকের সঙ্গে, कारकरे जात रेकिराम र'ल वामन रेविराम, ब्रिंग्टिक्ट रमिंग निष्य, देशारा देशिकारमञ्ज मर्जि किम्दिना औरम्ब मर्जि नय, अमन कि তোমাদের আপনার ইতিহাসের রাজা-

পাজিতেও হয়তো লেখা আছে অমুক রাজা चम्क मान भूबीत मनित প্रक्रिश क्यालन, मिनानिभिट्ड 'भाडमा शिन डारे, किन्ह निवासगटकत तरमत जाखादत करन टक्सन করে পূরী-মন্দিরের ছাঁচ প্রস্তুত হয়েছিল --- বাংলা পাজির বছপুর্বে, ঐভিহাসিকের नाधा दन्हे (य ८५८५,—८मछ। त्रिम्स ८६१८५ थया योश। क्ल-कटलब मध्या ऋश तम शक भवते क्ल-कम (क्षा (क्षांत्र कारनक **कार**श करम ब्लाटिं, क्लानें। ममग्र भिरत्न हिं क'रत रयाएँ, कान्छ। अभन्न अर्थका क'रत्र सन्ती करन, बात्र टकानछ। वा क्ष्ट्रेटक्ट भाष्रना (यभिन गमम-ष्याद्या द्रभारभव क्या श्रीत्यव ভारেশ म भाकरणा भिष्म, ना वमरञ्ज हा ७ त्रात्र ८म ७ छि या भटन, ८म मिन, ना क्यानात्र मर्था रम रयमिन बडेम रकाहारम वा स्विम चामशाइष्ठा हे कन नित्य वीक इड्ड (व्दब्रामा, टमिन १ कारणद मानकारि नित्र तरमद हेिल्हांन गानां हलद्वता । त्रान्त नगला जान ভার অসমতা রসের উৎকর্ষ রসের অপকর্ষ कहें निरम्हें ककरमरमंत्र कक कारमंत्र arta टिकारकम कर्रा त्यरक भारत, का ছाफा कात्रिय-मन् मिनिएम यो इम्र का कार्टिम कृष्टि वा खडि कथा। आर्द्धेत এ-পर्याश्व या देखिहान इरवरह ভা ঐ কুষ্টি ছাডা আর কিছু নম! কোন विराग्य रमरागद्य विरागय निराम व वर्षम राज्याद বেলার কুষ্টির সন-ভারিখগুলো ভার দাভের हिरमरनव कांच कत्र्राज भारत, किंच जारच-क'रत क क्षमान रूप ना त्य जांकरकत नरनह क्यां ७६ (थरक ब्रमाण (शर्याक जात्र ब्रम, किश्या यहारम ७७ यक, बाइ जब मण-भाषा

न्यारमञ टिट्स भूरतार्था चरमहे रमि छारमा छ वरमरमञ्ज चारभ-भिष्क हिमारव artus हाछ-वफ़ काम-मन्म हिरमव इम्र मा, इ'रड পারে না। রদের ভারতম্য নিম্পেই কথা,— जावर कांत्रि हे जिहांन हम art वत्र ह जिहांन ! য্গের ইভিহাস জাতির ইভিহাস কৌন-একটা বিশেষ সভ্যতার ইতিহাস অনেকটা ক'রে সময় निया व्यानक छात्मा काल-कर्म वना कथ्या काश्व-कात्रभाना निरम् किएम ५८०, कारकरे व्यत्नक द्वक्रता द्वेक्रता क्विनियरक এकछ क'रत्र निरम करव (महारक मन्भूर्ग छारव (मथा ও দেখানো ছাড়া উপায় নেই। তেম্নি রদের সৃষ্টি ঠিক যে ভাবে প্রকাশ হয় ভাতে শুধু তার প্রকাশের তারিখ তার ইতিহাস দেরস এল, কেমন ক'রে নানা পরিবর্তনের मत्या मिट्रा तम .चात्छ चात्छ चालनात नाधुगा প্রাকাশ করলে এটা না ধরতে পার্লে কথনই আমাদের দেব-দেবীব মৃত্তি দশ হাভ, হাজার art এর ইতিহাস লেখা সম্ভব হয় না, ছাত ছড়িয়ে বা শস কেটে চলেছে দেখছি। জিনিষ্টিকেও সম্পূর্ণ জানা চলে না। এটা এতে ক'বে বেন যে একটাকে বলি angel একেবারে ঠিক যে, জাতি-বিশেষের ইভিহাস त्य ब्राष्ट्राप्ति थर्व छर्रे शर्फ हर्ल्य स्म ब्राष्ट्राप्ति ধরে জগতেব শিলের হতিহাস চলেন। দেখচি মানুষ তথন সভ্যতার ধার দিয়েও बाटक ना, खरात्र गर्था वाम करब्र — काँ। माश्म थाटहर अथि art की कि किए भ খুব আধুনিক যুরোপীয় শিল্পীর মতো ভ্রমিং করছে। ইউরোপেব গুহাবাসীরা যে তথন-কার মহিষ বরাচ হরিণের পালের নকা निर्थिष्ट, ज्यमकात्र कत्रामी विज्ञकरत्रत मरक ভার খুব ভফাৎ এই যে সেটা অনেক ভালো। व्याचात्र दकाथात्र द्वांश क्रमाटक व्यानिमक्रम

arcon मूर्डि हेर्कोरश्चन (मवला आत शृहेक्तात চের পরেরকার ভারতের একবৃগের বিষ্ণু-मृद्धि छ्हे अक्हांस शङ्ग, अक्छम् अक्नाय! कारक है वन्छ क्य art अत्र विष- त्यां ज अकी। সভন্ত বিচিত্র গতি বয়েছে, এই বিরাট গভির उथान-१७ त्न के जिन्नाम कटा artus ইতিহাস। একই জলের ডেউ থেমন নানা कांभगांत्र माणा कुल्ट कुल्ट ठाल— (वटनंत्र ভারতমে কোথাও বড কোথাও ছোট, বিচিত্র ভগতে বিচিত্ৰ; তেম্মি artও আপনাকে প্রকাশ করছে—স্থানে স্থানে ক্ষণে জণে এক ও বিচিত্রভাবে গোডায় রয়েছে রসের ঝর্ণা वा हैश्रिकीएं यात्क विन artistic feeling: কোপাও সেটা ফুটেছে খুব শীক্ষ একরকম, वक्षा केखेरवाभ वाग्द्राटक खाना मिरब्रहरू যে রদের ভাডনার, সেচ রদেরই ভাড়নার সার একটাকে বলি monster ভাতো আমি বুঝিনে। কোন authority নিয়ে গায়ের ट्यादित तांकम बद्धा वमाणा छन' आंत्र आंत्रत्र टमछ। त्यत्य मिलून कर्वार्थ निर्मिष्ठात्त्र, त्मछ। আর যাতেই সম্ভব হোক artএর ইভিহাস अख्वाक द्वनांक दमान हनद्व मा। दम्शादन दक्कण art, कि art नग्र।

রাফীনের কাছে গ্রীক শিল ছাড়া সবই Barbarian art, Birdwood नारहरवन्न भएक युष-मृद्धि Salt Pudding ছाঙা किहुह নয়, Anderson বলেন, এ সবই monster, आह्र Vincent Smith विनि लिमिन Indian Artua history লিখে গেছেন তিনি বলেন, এদের দেশে Fine art সম্বন্ধে কোন বই লেখা क शर्या छ इसनि। कारक है Fine art व'रन नमार्थ जरमरम रनहे ७ हिन ना, - होरनज care art a यह क्यांना चार्छ **खारम** ज art's আছে, গ্রীদের পুঁথিগুলো তুর্ভাগ্য क्रांच लाक लिख्ड जर दर्गमान सामाल अ কপি ছাড়া আসল জীক মূর্ত্তি খুবই কম পাওয়া यात्र, किन्न उत् जात्मत अ art आहर, क्वम न्हे जाता जात थ्व जाधुनिक कुछ সাহেরের মত হ'ল, ভোদের যা কিছু ভালো मबरे व्यात्र औरमत्र (मञ्जा। এ ছাড়া ছোট-थाटि। जटनक authority जाटह गावा अटनटमंत्र Fine arter मध्रशीय मट्या विदय वध অভিময়া ভার कर्षाक हारक । একা সেকালের ধন্তর্কাণ এমন কি ভাঙা সুর্যোর ष्रत्थत ठाका चुतिरम (य किছू कदरक भारत এ ক্ষেত্রে া বোধ হয় না। অঞ্চে অপ্রে कां छ। कां छ थानिक हमर्ट किन्द छ। त्रश्रद्र एथन याक्षुक वाधरव ज्थन जामारमञ्ज भन्नाक्ष चौकात्र कतरङहे करव यमि ना (जयन त्याका शाहै। आबि ८७। योग मजारम काम दनहे, म्म नमम्हे। artist এর চোথ দিয়ে দেখে Art History यनि क्ट व्यामका नित्थ त्यरक भाति टमहे ८५ छ। कत्रांचे कर्खवा। अठाटक ट्रामत्रा वन्द छोक्छ। किन्द यामि ग्रिंग स्विद्धाना। Archæologyর শরশ্যায় ait কে লা শুইয়ে काटक निटकत्र मन्नरमन निःशानरन नित्र यनि **(एथ, एका दिन्यदेव एकत दिनागरवां न कार्यान** मिटि याद्य, अवर artist अत्र भिवाउक निरम ट्यामना तम्बद्ध भारत यमिहे वा माष्ट्राक हा ल ट्टा छर्-अव authority क डिज़्द्य दावान

बन्नांब इएक art এর প্রথম কর্ত্তাল, Archæologyর ধুমধাম নয়। Art এর ইতিহাস পর্মের ইতিহাস আর artর গতিবিধির ইতিহাস্টা স্বিস্থত মূব বড় জিনিবের বেমন তেমনি। **(महोत हे जिहाम क्यांत्र मगत्र महाम मिराइ** लिथटङ कटव, ठाकूम ख्रमान मिरम दकाम विरमय artan मरक जन artan जात्रज्या अवर जात्र মোটামুটি আন্দান্ধ শ্রেণী ও জাতি-বিভাগ করা हरन, किन art अन्न परतन कथां, रयशान शौक हिन्दू मुमलमान मौनदी हिटन बालानी आधुनिक ও পরাতন একাকার হয়ে artএর বিরাট ধারাটি উঠে পড়ে চৰেছে, কোথাও অন্তঃশীলা বইছে আপনার শ্বরূপ প্রচেম রেখে, কোথাও মিলছে ত্রিবেশী-সম্মান, কোথাও একটানা ভ্রোতে काथा । अधित काषी । काषी । काषी । काषी । এবং চলেও যাবে অবাধ আনন্দম্মী ছন্দরপা, ार्र हे किहान मन्नमी तहे ब्हाटनय विषय । छान्सून প্রমাণেব চেম্বেও সতাকাব এই দরদ দিয়ে লেখা प्य ait (व हे हिनाम (महे ह एक नाना मिना-निभिट्छ या भार, यापि थुँएए या भारे, मारम्दर **टाथा हे जिहाम १८७ या शाह— गवात ८५८म** artএর সঠিক ইতিহাস, কেননাদরদেব প্রকাশ ट्रांटणा ना art। मत्रम किनियि (मथा ७ याम ना, (माना । यात्र ना, किन्दु एत्रए प्यत्नकश्रानि मिथाटक भारत प्लानाटक भारत। मखेत्री है। नरम नाहेन क्रम मिर्छ शतिकात अस्वादत भाका, ८ हर्गछ ८ मध्य द्रमाका बुर्फ् । दर्ष माका, किन्द artist (मथरन एटें। नारेन हाफ़ा जात्र कि नत्र। Artist दीनरण लाहेन मन्न मिरम, भिष्ठ। इस असन किनिय त्य भन्नमी छाका महत्क कारका त्वावयांत्र त्वा त्वह । अहैवारन मखन-चौंछ। ঐতিহাসিকের ইতিহাসের সঙ্গে

artistय लाया artय ठेजिशास्त्रत जमार। क'रत्र मिथर७ চলে, factत्र बाहरत्र या छात ইতিহাস, কাজেই তাতে ভুল থেকে যায়, व्यात मत्रमी निष्य চला मत्रांमत्र हीत्न छ छ . क'रत, তাতে fact হয়ে यात्र ওলোট-পালোট। Fact योग नित्र इंडिशंन (यमन अन्जा, ८**०म्**नि नत्रन योन मिरा ७४ fact निरा aitत्र कथा निका जान ८५८म क्या जान जा क्ष्र ना। त्रमारमय मय वेखिवाम रमथा करमा **क्या ब्र**मंत्र कथा हो है वान शक्रा कहे। राला, ना जात्र हे जिहांग ७ श्राह्म व्यानक है। वाम राजन किन्छ त्रमञ्ख्यो मन्भूगै कूर छ छेठरला (मिट्टी **डाल्टा**, क निरम्न सामना तार्धाना छ archæologist ছই দলেচ চলেছে বিস্ক क्षिक्रद्ध मन्नमी ! इंडिहारमत्र ख्या चाक वनमार्व कान वमनाद्य क्रिस महानेत्र कलास मृष्टिक artর সত্য ক্থাটাই পড়বে অভ্রাম্ভাবে এটা ठिक। এ পर्वास या tact जानिकांत्र रूप्तरह ভারি উপরে নির্ভর ক'রে archæologist 'ড়ারি প্রভা ভারতের এমন কি জাভা চীন ঞাপান বেধানে যত বুদ্ধ-মূর্ত্তি আছে ভার खिशदत, किन्छ भन्नभोत्र वा artistत भिक भिद्य शाकांत्र-मिट्टात्र के मात्राटमयी * किया **८वाधिमक्**षित्र • मिटक टहरत्र स्वय स्वयदि इत **स्मरमञ्ज भर** ज्ञास्य मुख नम এव विभेत्री छ। Fact वागोजा अरक है वरणन शासाज णिश्र वा

Greco-Bactrian ait আর কল (य-मत्रमी मि fact त्र डिभएत मम्भूर्ग निर्खत छ। त्राव्य मिल्ल, किस मत्रमी (मरथ शाकारत्रत वीक या जा त्थरक छात्रज रकन, रकान निहारे बनार्ड भारत ना, दक्तना, त्रिहा खीक भिरम् कडको चार्यक्रमा, औक चार्डियात्मत्र स्थारङ धिमिटक धरम भएएছिन, क्लामात्र हरण श्लारम जाष्ट्रीत मूर्थ अर्थात्मक भए बक्टमा, अर षावंकन। कृष्टिय नावर भिन्नो वृक्तार्वित मृडिंड গर्ড नि, माग्रारम्बारव अ माकाम नि, এक छ थाँ छ दक्ष मूर्डि आत्र माश्रामि वीत्र टिहारा * (मश्रामके (महा द्वाया बाद्व। औरमन वक्रण (भवकांत्र * भाष्ट्रेशानि (यमन (वावादम् गासात्र मिद्धात मृत्ग त्रदय्र शिक मिझ, ८७मनि আমাদের 'প্রকার' মৃতি প্রমাণ করছে—নানা ত্রীক-দেবভার বাজে ভারত-শিল্পের জন্ম নয়, किश्रु एक है नहा। ८७ जूरण ह वीरक जात्र जारमन वीटन रज्यानि उमाद जात गरम ममान जमाद গান্ধার-শিলে আর ভারত-শিলে, এই হ'ল नत्रभीत थामा। मत्रभीत टाटिथ खीक দেবতা আর 'স্থার' মৃত্তি এক শ্রেণীর জিনিব, দেখলেন গান্ধার শিক্স অতি চমৎকাব আর উচ্মের মধোই গাড়ব আর ভাবের এমন-কি কারিগরিরও পার্থকা বড়-একটা নেই এ-টা lact, কিন্ত Archæologistৰা কিছুতেই मानर्य नां, त्मिथ्रम मिर्ग्य (मथ्र मार्य ना—क्निना जोता (य पत्रमी नम् । यत्रः fact-यानीयां এই कथांहे वंशद दय औरक्य नवर्षव আর সিংহলের এই অতি-আশ্রহা ভক্ত মৃত্তির मर्ज यथन व्यत्नकों मिन राषा बार्ट्स उथन

[#] Fig. 67. 68. P. 116. Vincent smith.

^{*} Fig. 62. P. 112 Vincent smith.

^{*} P. xxxvi. Vincent smith.

^{*} Fig. 77. P. 124 Vincent smith.



ञ्चन प्र

প্রশার সৃত্তির জনক নিশ্চরই গ্রীক-দেবতাটি,
কিন্তু দরদীর উত্তর হচ্ছে তা নয় দেবতে
এক হলেও এক রসে গড়া একটি, অন্ত রসে
গড়া অন্তটি, মা ছাটরই জনক, এরা ছই
ভাই, কিন্তু রস দিচ্ছে ছজনে পৃথক পৃথক
কেন হিন্দু-মুসলমান, মারুষ হিসেবে ছই ভাই
কিন্তু রসের প্রকৃতি ছয়ের সম্পূর্ণ আলাদা।
পিতা পুত্র হ'লে এরপটি হতো না, কম-বেশী
একই রস ছজনে দিত। এই রসের ভারতমা
বরে artর ইতিহাস লেখার কথা কিন্তু নীরস

Fact বিয়েই রসের ইতিহাস গড়তে চলেছে
প্রার স্বাই, কেন যে, ভার কারণ যারা

রস স্টি করতে চার তালের ইতিহাস
স্টি করবার চেষ্টাই আসেনা সময়ও
হয় না! আমার্দের দেশে শিল্পীর মন
থেকৈ অষ্টাপশভূজা দানব দলনী সূর্ত্তি
যথন বায়্তরে একটাস্বতর তুলে বেরিয়ে
এল,সেটা দেখে দরদীর মন আলোড়িত
হল, সে নির্বাক হয়ে রস উপভোগ
করণে, আর যে দরদী নয় সে চেঁচিয়ে
উঠলো monster বলে, এবং কেতাবে
লিখলে এরা রাক্ষনী-প্রতিমা ছাড়া
আর কিছুই গড়ে নি গড়তে পারে
They are a peculiar people না।
and necessarily produce
peculiar art—বাস্ এই পর্যান্ত!

কিন্তু দরদীর দিক দিয়ে এ-কথা যদি বলা যায়, Sir, you are not at all artistic so you do not understand what *Rasa* is and

therefore you are unaffected by Rasa—এ হ'লেই ৰগড়া। যারি পৈতে আছে সে যেমন এদেশে আপনাকে ভাবে ব্রন্ধবিদ্ধার উত্তরাধিকারী তেমনি দালা চাম্ড়া মাত্রই আপনাকে ঠাওরার artist, রক্ষিন নিজেকে তাই ঠাউরে গ্রীস ছাড়া সবার শিল্পকে বর্ষর বলে নিন্দা করেছিলেন এবং সেই গর্কো Whisler artকেও সমালোচনা করতে গিমেছিলেন, বিশ্ব-শিল্পের দেবতা তাঁকে আলালতে নিয়ে এক সিলিং জরিমানা ক'রে ছেড়ে দিলেন। Birdwood সাহেবেরও ঐ মশা। জীবনের বেশি ভাগ এদেশে কাটিরে দেশের কারু শিল্পের উপরে ভালো বই লিখে শেষ ব্যুক্তে তিনি বৃদ্ধের-মূর্ত্তিকে গালাগালি দিলেন

Salt pudding ब'रण ज्यान डांवर (मर्लंब करबाहन नवनी मिरण डारक वस कबरण, शारत नव, बारन। Vircent Smith (वयनि । नवरमन, डांब Art Historyts, "The enormous mass of Indian literature whether in Sanskrit or in all, other language does not contain, I believe a single treatise on the resthetics of plastic or pictorial art, and thus present a marked contrast to the literature of China." (यिन माटक बर्तन, होस्नद्व यट्टा जरम्ब एक्ट्रमाणा (नव, एम्ड मिनके वारमात्राचन व्यक्ट्रम होर मारलंब क्या करम श्राह्म डिस्टा।

क्षारकम धार्मानानि जानमावनारयाखनम সাদৃভাষ্ ধৰিব ভেজম ইতি চিত্ৰম্ ষ্ডজকম্। धर्मे जात्रज यफ्जमाना होरलत रहरत भूता **ग**न ५ वटि विक्रित वटि, भाषा Fact-वानीरमव ८५१एथ পড़रव ८कन, ८५१एथ পড़रमा जारमङ ভাদের, याश्रा पश्रमी—art त्र क्लोटमान । गान्ध्रय धकानन ना धकानि महाद्व, त्य नहागी त्मल " मत्रद, (र नम्र भारत, कारकहे art व history जनभाश (त्राथ यान (कड 5तन यात्र व्यार्ट का का का का का का का विक कृश्य थाकरव यनि ष्यामारनत रनरम (य চমৎকার প্রকাশ্ত একটা art ticatise य्रदाको ভाষার क्रम्यत ब्छ्शूर्व ভाরভব্যীয় দরদা লিখে গেছেন সেটার কথা কিছু ट्यांभारमञ्ज कानिय ना बारे। जामात्र वड कराक्क रिन Vincent Smitht क अहे भू चित्र কথাটা একবার শুনিয়ে দিই কিন্তু তা এখন ष्यात्र रहे नो, कारकेट टिंगाराज ममन धाकरक

खिनिएम ज्ञाभिक, विश्वाम च द्रा ना ८४, छात्रख-वर्षत्र अञ-वष् art श्राकर Aenhetics मश्रक्त (व छ छार्दिन वा ल्लार्थिन। लिएचर्छ, এমন क'र्य निर्पष्ट, এমন সম্পূর্ণ ও নিখু ভ क'रद जिल्लाहा, य आभात भाग क्य एवं art मचाक जात्र छेभव भाग्न कि नमा हत्म कि मा। आभि अनाक काथ याक त्य ait आज esthetics সম্প্রে এত বড় সাহিত্য এ দেশে वाकर रेप्ट मयरक का र छ छ। वास्त्र मार्ट्यम्ब लाथा भएए, अब अक कांत्रन परं-থালা সংস্কৃততে লেখা, আর এক কারণ विय-विश्वाकरमञ्जू होजा त्रो मरङ्गू क सामरण व तहा म ख्डान डीरमन्न अरकवारवर्ह (लहे, कारकह অলকার শাস্ত্রটা কার্ব্যেরই অন্তর্গত কলে তাঁরা थर्वरहरू, कामकारत्व कृद्धाला त्य हर्द्ध करव arts गाथा क'रन हरणास्ट (महा পণ্ডিতকে তো এ পর্যান্ত বলতে গুনলেম না! ट्हालदनाम या এक दे दनवनामा भए इहि আর এ পর্যাস্ত ষেটুকু শিল্প চর্চা করেছি, ভাতে ক'রে আমি স্পষ্ট দেখছি অলক্ষার শাস্তা मृग७: नव भिल्लाबर वार्या। कावा, मणील, िछ, नाँछ। नवांब है यून कथा अथारन यदा श्राहि। त्नकारन Photograph हिन ना त्य অলম্বার শাস্ত্রকার নানা মুদ্রি নানা চিত্র দিয়ে श्वाक्षां विभाग करित (वावादवम, कविकात भूषिखरणा हार्डित कार्छ भाउता महक চিল সেইজন্তে তারই নমুনা তুলে আপনার Laws of Æsthetics বুঝিয়ে গেছেন, এখন मभग এসেছে ঐ সব एक भूखि-भिन्न চिक्रभिन्न **अमृनि म्यात्र नमूना किएस ट्यायारना। अछै।** (पर्था यात्र (य, এक हे व्यवसात-भाषा माना मूनि नाना जिटहात्र वार्थात्र नाजिदहरून

সময়ে সময়ে। ভয়ত অলকার-শাল ভুড়ে দিলেন নাট্যকলায়, সাহিত্যিক জুড়লে সেটা मार्कि छा-सर्भर्ण, कवि निरंत्र (महोदक शृङ्ग्बन कावाञ्यकाम, टक्न এथन याःगात्र এकिটा निश्च काम ना करव जनकारत्र जाकारना ? " Art æsthetics সম্বন্ধে একটা বাধীন िछात्र ट्यां व वानक कांग भरत औरमरम हरमरह रमिश এक कारमद ait critic व्याथा कारण कारण जिल्ला क'रत हरहान, जिक्कार्य विठात हमरू ७गरू (कान खूज **८मथां हा** डाइ इटल्इ, (कानों ना थां छ ड इट्ट विक्षित कट्ट — अमृति क'द्र काटन काटन নানা সভ্যতা নানা সময় নানা মনেব ছাপ नित्र व्यमकात भारत किन शर्फ केरेट्र एमि। नीर्घवान धदत्र वांचारभद्र यए ८म८ न æsthetics সম্বন্ধে বিচার-বিতর্ক চলেছে अमनिष्ठ जात्र कारना क्ला क्राइट किना নিয়ে নাডা-চাড়া যে চলেছে ভাবও আভাস কতক কতক প্রাচীন ছবিতে দেপেছি। धारे भितित्वत्र कथा-कजकखरमा भूद्रारमा छ्वि खन्दि-भाग्रहे (प्रथहि, वन्ध-प्रजूत अक्टो ছবির উপরে একটা হিন্দিতে লেখা সোক চোৰে পড়লো, আমি জোকটা পড়ে চলেম, व्यवसारवा शिक हिर्मन माम्रन, र्ठा व'रम उँठालन, এ य काबा श्रकारमञ्ज अकिं। काना क्विका ! कदव कांत्र माथात्र कांवा श्रकाणी ছবি দিয়ে প্রকাশ করবার ইচ্ছে হয়েছিল, কে बारम, जीति क्षेत्रानिहेक् बद्य शिष्ट गीज, क्षि । (बार्क यहा बाब (ब नवत्रम या कावा-व्यक्तारमंत्र भरश शांख्या गांदक त्यहा त्क्यां

কবিদের একার সম্পত্তি নয়, শিলীর ও সেটা नित्र कानकात्र-मोख (नथांत्र नजीत त्राबर्छः। जनकात-भाग्रदक नेश्तिकिमविद्या जर्जमा করেন Treatise on Rhetoric ব'লে, मिछा একেবারে ভুল; मनीত, कावा, माहिका, নাটা, এবং চিত্র ও অন্ত শিল্প স্বার সাধারণ সম্পতি হাচ্চ অলকার-শাস্ত্র— এর তর্জমা হওয়া উচিত Om Laws of Æsthetics কিমা কোন-এক সত্ৰ লিখলে দেই স্ত্ৰের নানা Indian Æsthetics. মাত ৰল ওটা কেবলি কিন্ত Treati-e on Rhetoric নয়। সমস্ত , অশহার-শাজের হত্র গুলো ছবি মৃত্তির দৃষ্টান্ত मिरम त्याबारक भागरम सधु त्य मरनात्रम क्रम का नम्, किनियहारक त्याया व व्यामारमञ् मध्क रूदा। मम्ख भाजिहार नाबादना हम्द ाक ना छाँव मृर्खित्र मिक मिरम, भिटी ভाৰবার ावयम, ভবে এটা नणा याम त्य, टिष्टां । এक वाम क'र्ब (मथरण रुप्त (मछ। वारक काक यरण উড়িয়ে না দিয়ে। অলকার-শাস্ত্র যে শিলা সন্দেহ। শিল্পার দিক দিয়েও অলঙ্কার-শান্ত্র এবং শিল্পকে যারা জানতে চার তাদের পক্ষে কভটা কাৰ্জের হ'তে পারে তা বলি।

> • जामारनज नाराजन याजना, कार्या, करक नाना हत्य-देशि कविजात्र त्थशंक्षत्यां,—किन्न व्याग-क्षांत्रिक वलाइन 'वाकाः त्रमाच्यकः कावाः।" वाका मान्य अथान्य मृत्यंत्र कथा नम्न हेश्टम्बिट्ड वारक वरण Utterance जाहे, किन्न त्यम न नव िकनिष्ये art नव उपान Utterance माजरे कांदा नम्, (मधा त्रमाञ्चक रू'रण उदद रूरणा कावा। कथा मिरम, अजीरजंत्र शिकिविधि ७ ऋरवज ওঠা-পড়া দিয়ে যেমন মনের চিস্তা ও ভাব uitered एटक् कविलाम नाउँटक ७ शास COमनि arts जिन्य बिर्ध artists ७ मरनांत्रक-या-छ। uttered श्राष्ट्र—िक या-हे uttered

ভাতো कांवा किया art क'टा भारत ना, बीपा-দত্তীয় আঙ্গ দিয়ে বা দিনেম, কাঠ বলে Those which have only one creator, हेक् हेक् किया जाब रहा हिः हिः दून हो। कार्क আর ভারের utterance হলো মাত্র,বদাত্মক ও ह'काना कावा 9 हनना। Artist वीवा उटन । नत्न, जांद्र मत्नव त्रम नित्य वीमात जादत, ভার কাঠের অণু-পরমাণুতে, তার পোলটার गर्धा ज्या वार्वारम कन्मन जुरस, ममीज-वानी द्रान-द्रानिनीत मृद्धि uttered करणा। ज्थन र्णा (मछ। att। धम्नि अनकात्र-मारख art বিষয়ে কত গভার চিন্তা যে লুকোনো বয়েছে जाव ठिकाना (नह । महाकावा, वनाट जामग्रा এ-পর্যান্ত বুঝে আস্ছি রামায়ণ মহাভারত नग्रटा भृष्ीकाक वध। विक व्याद व्यक्षात व्याक वत्रज्भातत शालात (कार् শিল্পী যে মহাকাব্য লিখেছে সেটার থবর আজ আশার কাছে, শুন্ছো। সাত্য কিনা, খাহা-कारवाय जन्मर्वय मरक म्यांनरम रमथ---'टकान দেবতার কিমা সহ্জাত ক্ষত্রিয়ের অথবা এক-বংশসভূত নুপতি-পরশ্পরার বৃত্তান্ত লট্যা যে রচনা ভাত্রি নাম মহাকাব্য। মহাকাব্য नानामार्ग विख्क, किस चार्रे मार्भन नान रहेला महाकादा हम ना।" खशु कहा खहाम कडलाम বরভূধরের আর অজন্তার ছবি ভাগ* করা रु दम दमहेट । जान्य वाकि बहेटना । थक्कावा — महाकारवात्र (कान एकान क्यांकाख ७ এক এক বিষয় লইয়া লিখিত হয় খণ্ডকাব্য! এর দুষ্টান্তও শিল্পে ভূরি ভূরি রয়েছে। ভারপর আছে অলম্বায়ে বৃত্তি বা style সমকে বিচার ভারপর শক্ষণের অধ্যায়ে চিত্রের কাব্যের স্বরূপ বিভাগ, আকার-চিত্র বন্ধচিত্র,গতিচিত্র স্থানচিত্র। जल्ला कि कारवारे भारते, निरम भारते मां।

व्याकात-विवा कारक वना इस्टब्स्, ना--the Lord, are called আকার-চিতা। এখানে যে আক্ততি স্ষ্টিকন্তার বচনা ভারি প্রতিকৃতি মাত্রটিকে বলা হ'ল আকার-চিত্র, এক র থায় Photographic representtion, notartistic expression হল আকার-চিত্র। এমনি কি পরিষার ক'রেই আমাদেব আল-স্থারিক বুশ্বিয়েছেন শিক্ষেব থুব ভিভরের ও থুব वाहिर्देदत थ्रेय मध्य वा थ्रेय भक्त कथा खरमा ভাবলৈ অবাক হই।

ব্যাচত্ত্রের বেলায় বলা কচ্ছে, which are created by the Lord and by man and have thus two creators, constitutes 4% 60 ! গাছকে ডালপালার षाक्वांक बिरम रुष्टि करामन विशा शाक क्टि श्रुण किया छोकि किया लोका গছলে শিল্পী, ছই স্ষ্টিকভার ভাব হয়ে গেল, विशाला व्यादमन जिल्ला भारत्रन ना (नोटका गफ्टल, मिल्ला नुयाल मिला भारतना गांह शकारक, काटकर इकटन मिक-वक्तन कट्य क'न वक्किक, हेर्निकी ভाষাটা एष्टि हवात्र शृद्ध दय-मय ভাবনা আমাদের পণ্ডিভেরা ভেবে বিচার বিতক ক'রে চুকেছেন ইউরোণ ভারি কতক कथा नड़न कारिय वगहा, कडक कथा ज्ञथाना . यगर्ज्ञ व्याद्रष्ट कर्त्रान त्मिथ्, किन्ह এই গৰে সৰ্বই আছে বলে যদি আম্মা धूरमार्ड विंग, ভবে চোপ आगारित वाकारे शाकरव कांत्र (कांन मिन (मश्दर्गा कांनारमय धन পরহস্তগতম্ হয়েছে, তথন আপ্সোস সার र्देव । कामहादबन धुन्ना नित्न धानादन कामादमन मर्या ८क्ड ८क्ड ८७।मन्ना मफारम करनारम,

किन्छ व'टम ज्ञाथिक नवरे तथा यमि जामारमज काटल भटल এই माञ्चे। ८लाकटक कै। ठावार छ राभावात किनिय क्टब १८५। किनियहोटक यनि শত্যি কাজে লাগতে হয় তবে হির চঞ্চে বসে इरमत्र किनियक्षणि मश्ज्यक जवः मन-८५ स श्राम काली विश्व दिन विष्य शक्ति मन वासा, खसू (मना अंगिटक व कर्य नम्न, विष्णिंग विभक्ष कर का এথানে জাত্যভিষান চলবে ন।। কেননা অলকাব আর ইতিহাস আমাদের ষেমল বিশ্দ क'र्न बारिया क'रव ८१एहन Havell ८यमन टिएटिथ आमारमञ्ज कला विकारक रमरथरहन---जांव मगकक त्लांक ज्रास्त् भावम् याम ए रिया। এই मन रमण ७ बिरमर मन ज्ञांमक मिर्ल यमि कांत्रिका थ'रत व्यवकात्र-भाख गाथा कर्त्रन, निहात निक निस्त्र उटवरे हरव এकछ। জিনিষেব মতো জিনিষ।

যে দেশ থেকে রসিকের সভা উঠে বার,
রসের চটা বেথানে বন্ধ হয়ে যে দেশে কেবল
পলিটিকা আর হর্তাল্ শৃত্ত-হাতে হত্রিতকাটির মতো অবশিষ্ট থাকে, সে দেশের
ভাণ্ডার শৃত্তই বলতে হয়—সেথানে বাগার
ঝলারের চেরে ছাভিক্ষের চীৎকার প্রবল্ হয়,
কেননা সেথানে থেকে শিল্প তার সজে
দেশের ত্রীও বিদার হয়। এইজক্ত অলকারশাল্পের গোড়াতেই বলা হয়েছে।

কাব্যং যশসে অর্থস্কতে ব্যবহারবিদে শিবেতর করতে—

সন্তঃপরনির্ভায় কাস্তাসন্মীত চয়োপদেশ ভূলে।

Art is for same, wealth, knowledge of rights, usages, removal of evils, it is the Smile of a lover brightening our home exhorting us to do good, and it is ever-lasting joy.

ত্রি, প্রতিধানি তথনকার ইউরোপ দিচ্ছে-—a thing of beauty is a joy for ever.

রাসকেব কর্মা নয়, বিদেশী বসিকদেরও চাই

এই কথারই পরিষ্কাব প্রতিধ্বনি পাছিছ
এখানে জান্তাভিমান চলবে না। কেননা ফ্রান্সের বিখ্যাত মৃষ্টি-শিল্পা রৌদার কথায়,
জান্মাণ পণ্ডিত জাকোবা, অল্ডেনগার্গ এঁর It is the human soul's smile on the
অলঙ্কাব আর ইতিহাস আমাদের বেমন বিশ্ব house and its belongings...it
ক'রে ব্যাখ্যা ক'রে গেছেন Ifavell যেমন impregnates everything of use to
টোখে আমাদের কলা বিস্থাকে দেখেছেন— man with the chaim of thought
তার সমকক লোক এদেশে পাওয়া যায় and entiment.

বিখে এলো মান্ত্ৰ—এব অর্থ এই যে মান্ত্ৰ विश्वकाभाव ५५मात गर्धा त्नरम जन त्ररम्त का जिम्म (निश्र ७ -- एम्स्र के देव मिन्नो ছবি দেখেও বটে দেখায়ও বটে; সে কথা মান্তব ভূলে পেল, চলো অক্ত পথে---উল্টোমুখে ঘরের औ বাইরের औ কোনোদিকে **छात्र ८६१थ बङ्ग्ला ना—बङ्ग्ला भाग्निम्**त्र शिक्टिस त्याणे थाम-कार्य मिटक, नम्न श्यामागटकत हुएए। प्र मिटक, नम्र व्यांकिटभन्न वक् मार्ट्य भक्षात भिर्म । य र्'म क्रीर अटलक कटन रिंग मार्श-कोरन एएटक ; आत्र बी यनि हत्न यात्र, तम यान किर्देश भनेहा यांना रुषा यात्र भक्त कर्कण (म मासूरवज्ञ रुध कि १ नटमन छिएम वस रूट्स याम, नम-मागदा गिरम कोवरनत रमनवात शिष् পড়ে আর মকভূমি ধূ-ধূ করতে থাকে—সাম্নে शिक्टन कारमशारम। (य त्मरम श्राकुरक षाकृष्ठ विकित अभ कृष्टे शहरह, तम तमरम fine art ছिल ना, र्'टिंश भारत ना, की

त्यमन fact नव, त्लम्नि जेठां ७ त्य लक्ष्य चल्हि—चात्र ना, ७८ठा, ममद् स्वित्य जला। art व छारना ८नरे, चार्टित चानन चार्टित कत्क विश्वामाक त्नरे पत्र, यंद्रा ! क्र किशामत्र fact नित्र नफ़ारे क'त्र रूप कि, आमन मड़ारे रूटक এই আঠ-সত্য অভি-ভীষণ fact होत निक—art किन। या किन (म (डा ছिन, किन्छ दमिछ। दय এथना च्याटल अवः ভবিষ্যতে থাকবে তার প্রমাণ আমরা কোথাও পাচ্ছি কি না দোখ। স্থাপত্য-निद्य (नहें, मञ्जी छ द्रारह श्राप्त ना पाकात्रहे मर्था, অভীত ह जात्र ८०मी, नर्हमान धूव कर्म। চিত্রবিস্থা একটু গা-ঝাড়া দক্তে কিন্তু এপনো वस्त्रष्ट विश्वविकागस्त्रत्र वाहर्य, कावा-मांक्छा व्यत्नकित मकाश ९ मवल प्रथिष्ट साथान ९ ८वांच कटक्ट कड़े करता। । कब कड़ क'रल यांच আমরা খাদ থাক ভবে artর পাবপুর্শতা निथटनम नाउँक किन्न किन्न (माउँ। जाराज कर्तन ना अभितिकाया। क्रांच निश्रम कर्म, निष्य (अन मिछाना भी। कान विषय (धरक, शाम शाहेरलन धानरमन छात्र श्रेय (थरक दक्छ जात्र त्रांग भर्यास कवरन ना, দেই একই গান ভনতে ভনতে এ পর্যান্ত, বজ্বাঘাতে ভাতলো মান্দবের চুড়ো ভার कांग्रगाव डिंग्रणा त्थानाव कान । parta ज দানতা তো ঘুচবে না, সমগ্ত জাবনেব গতি व्याभारतम् यति arta मृत्य ना शिद्य यात्र दक्तान व्याक्त-वानागटकत गूर्थक व्यनवत्र । मार्ट्य-खरना (यरक वरमरक चात्र खन्क भारमह ट्यहाना जूब ध्राबर्फ, जाब जाबबा त्थरक यदम्ब अनार्ह चाफ्टल मन्द्रात चाफ् हिर हिर

fact जामारमंत्र मर्था এथन art (अर्हे, এर्हे स्व नित्रानम कोवन, এ श्वरक अर्हे ছাড়া পেলে याँ कि कि व्यमस्य अक्स व्यादमारमञ्ज त्नभाग्र नात्रा ज्ञां छ थिएम्डाटब्रज किश्वतीरक अञ्चर्ता ८ छर्च काहिएस रमस, आव नगरयत जाशमान वहरत्र अकरो मिन निरस्त्रा काश. (मर्थ श्रान्तात्र चार्ड कात्रमानियाम वाकित्व চীৎকার क'রে কান ঝালা-পালা क'রে দেয়, ভবে ভার দায়ী কাকে করা যাবে ? যারা व्यादमार्क (मरडर्ष्ट ७। त्रां नव्र, यात्रा नाह शान भवहे (मर्णद लाल क'रत मिर्म स्मान करम **डेउ**ट ड ट्लट्≽ डाट्बर के बाब (15)। **आंभाट्बर** থিমেটার বাইনাচ ব্যরোমাধী এম্নি দব नान किनिय, त्य छालात्र मधा जात्नकथानि art थोको प्रकार छिन, ८मछाना ध्यम विक्रक काइन वाउड़ा करा পড़েছে, क्लिन ना खांत्र मरशा ait (नहें, कांट्यरें एक लिखिन क তো পাওয়া আমাদের সম্ভব নয়। কবি সেখানে পাঠাতে সহজেই আমরাভয় পাই। কিন্তু art বজ্জিত অভএব সম্পূৰ্ণ নিকৃত সমস্ত (योजनकामवााणी এकটा ७१इइनोजम निका-প্রণালীর ভিতর দিয়ে আমাদের ছেলেওলোকে আমধা মামুষ করতে চলেছি একবার ভাবিনে भन्नकारम कि हर्त, एधु वह नम्र वह भिकान শুল-পোডার শিলমোহরের ছাপ নিমে व्याभवात कटल ८७८न ना ठाउँटम ७ ८कात क'रत टाटक भागी ह'र७ भावाहे, अमन-कि छेदमार मिट्ड कस्म कविटन; ध्रथन धरे আর্টপুত্ত শিক্ষার শিক্ষিত চেপেরা বুড়ো হবার कार्यक योग विरश्होस्त शिरत वाकि सोयनहा काहिएस निर्फ ८६ हो। करत्र, अर्थ यादन क्रिक द्रम अ-मर्यक दकान वावकाई अ भर्याख करा हर्भान-- ভाष्ट्रत जनबंक जामना त्राय पिटे

Cकमन क'रत्र १ . Cकवन प्रशिक्तित मांत्र कांत्र भारमञ्ज भिक् अति मर्गा वांभरत भजारम (इटनटक, रम कनम निष्**रम ममछ मिन, तार्**छन्न অর্কেক কাটাতে লাগলো বিভিন্ন মুয়া আর णारमञ्ज णिरकञ मरधा— এতে। इटक वाधा ! এম্নি বিপরীত শিক্ষার মধ্যে গিয়ে আমরা हन्दा—जात्र art हन्द मा, हुपछि व दत वरम शाक्टव काभारमत घटतव मन्त्रो करग्र, क कटल भारत ना! घरत्र मरश करतामीन safety lampa ভরে সাধ্যেও আমাদের चार्ठे शृद्ध मद्रदन—खाटकरे मश्माद्यत किनिय-खरगाम कामारमञ्ज काकन धतिरम। कामारभन শাস্তে artকে কলা হয় অনক্ত-পরতন্ত্রা, স্থতরাং चामारभन्न चार्छ चान्न कान्न क'टल शास्त्र ना, कि ख ख दन त्य "क्लादेनक मश्री" त्यथारम ait अप्र चानन लाटक त्र मत्या (नहे निम्हिप्र कान्टव व्यक्तिशास भारत—'देनश्रुवा' विहा मारन भारव 'অর্থক দা বিস্থা কিন্তু ভেবোনা যে এ ছটো arta ठिक मात्न। बाटकत ठालांकि वृद्धित मोफ ध-मर्य मिट्स व्यर्कतीविष्ठाटक वाटन व्यान्टि शारता, किंख जाह व'त्य arica शार्व क्षे भरमक क्या कुन! Ait य महज रख नम, जा art कि, जा का नाज तहा कत्रां है त्वासा साम, व्याम एका ना भरकुक ना हेरदिकी ना कराजी जिल्धारन arts मारन প्रदिक्षि। What is Art ৰ'লে ৰইটা পড়লুম ভাভে Cकरण निरक्त मांथाई धर्रात्ना--- arta माथा-मुख किছ পেলুম না, কাজেই ভোমাদের বলছি History of Art, What is Art was no बड़ वड़ वह शए ६ ७क-विडक छत्न artcक जक्ट्रेंख दर्वाया यात्र ना, दराया यात्र जक्दिवात्र

मजनीत अकि कथा समामा प्रश्यंत विवत्र, मत्रमी अकल (मर्ल्स्ट वित्रकाल्स्ट कुल्स्ड छ।ड ध পर्यास alt जयस পরিষার ব্যায়ে একটি मात लोक छाडा ना तरण ना विरम्दन কোপাও আর কিছু পেরেছি। আজ হ'ল विश्म मछाको, आंत्र आयात्र । आकि है कम चाम्म শতাকা কি ভারও পুর্কের ঠিক বলা যায় না। अहे (श्राटक ari मधरक या नना क्रयरफ এই শত শত বংগবে মানুষের চিন্তা যে তার চেয়ে বোশ এগিয়েচে তা বল্ভে পারিলে। भाकि र'ण ait त्र वन्तना क'रत (णथा ; कावा-প্রকাশের প্রথম স্ত্রপাত হ'ল এই স্লোক দিয়ে

> নিয়াভকুত নিয়মরহি গ্রাম্ स्नाटेषकमग्रीम् जनग्रभग्रज्ञाम् নবরসক্ষচীরাং নিমিকি আদধতি ভারতা কবের্জরাত।

मिथारन चां पिएक ना। Arts मारन এह 'स्नाकि पूरतापूर्व नाथा कत्र ह'ल art मचरक अकी। वर्ग निवास हम ; कारकहे এর একটু চুমুক हे-श्विकोट स्मानाई—

> Ait is ungoverned by pature's law, it is another creation having its own laws. It is pleasurable in its 'entirety spirit of joyousness নিয়তিকুতনিয়মর্কিতা হলাগৈকমন্ত্রী । Possessing great individuality and the independent expression of artistic sentiment. অবস্থারতভা; A tasteful creation of the manifold poetic sentiment (AM) or the embodiment of taste, beauty, and and क्रहीक्छ। नयक्रमक्रहोत्रार निर्मिष्ठ व्यापर्याख्य।

लाहे द्रशादका कार्त्रम कारबाह्न। द्रबादक कांगान

শিলের একটা আইন স্থাই হয়েছে বাকে বলা হয় Esonagoto বা artistic unitality নিয়তিকতনিয়মরাহিত্য। জাপানের শিল্পী এর ব্যাখ্যা দিক্ষেন this is Espragoto, the privileged departure, the talse made to seem truc!

ইউরোপও এই কথাই বল্ছে চিত্রের বেলায়, nothing in a picture is real, art has been pursuing the chimera, attempting to reconcile two opposites, the most slavish fidelity to nature and the most absolute independence, so absolute that the work of art may claim to be a creation অন্ত্রাম কিয়তিক ত নির্ময়হিতা নিমিতি।

माधुनिक क्वारम, जमन-कि क्वारण्य भव-कित वर्ष खांच्य (यांचा, जिन्न बर्णन-......14 laws are more powerful than those of the compass, art is again taste. अ-भव कथा नज़न नव, शूरवारनांख रूरव ना कारना चिन। पत्रमी य, म्ह ख्याख या वर्ण नमकात्र जिस्स्ट वारक खांचल पत्रमी रमने व'रण नमकात्र जिस्स्ट , चर्चल (एरव art जन्न खन्न के जन्ने स्थाक व'रण-

· নিয়তিকত নিয়মরহিতাম্
কোনৈকময়াম্ অনভাপর ভ্রাম্
নবরসক্ষীবাং নিমিতি আদশ্ভি
ভারতী কবেজয়তি।

बोमयनी अनाथ ठाकुत्र।

দিখ্য

অস্থিত চঞ্চল, একটুতে চোথে জল, মাধুরীয় শতদল

वृक-कुष्राता।

চুম্ব-উৎস্ক ঠোট লাল টক্-টক্, হুষ্ট মি-মাথা মুখ হাসি-ছড়ানো।

কান্ত ও কমনীয়, চির্মিন স্বরণীয়, লে অনিক্চনীয়,

्यश्चरो ।

আগুনের ফিন্কটি " চিট্কায় চোথছটি, ছোট দে বাছমুঠি

विश्व-क्षरी !

গিয় কী শীতলভা— বেষ্টিত তমু-গভা, লাবণা কোমলভা

यदा जारम ।

অদ্ভূত প'তে গায় মজ্বত ঝগড়ায়, বিহাৎ চনকায়

da-eca i

तिरंश दाखा शम् शम्, चद्र-स्मात यम् यम्, চুড়ি याटक थम् थम्, कांभरः ভিটে!

পলকেই রাগ ছোটে, সে মান্তব নয় মোটে, একগাল্ হাসি ফোটে এক মিনিটে।

এই ভাব এই আডি, চুমু নিয়ে কাড়াকাড়, ভাড়াভাড়ি বাড়াবাড়,

भव किनिरम् ।

রাতদিন অনিবল কৌরক-লীলাছল, অভিমানে রসাতল

প্ৰতি নিমিষে।

विशासम्भ त्क र्रूटक भिष्क कथा कश्च स्टब्स, कवावित मृत्य मृत्य शोधा देखग्नी। ष्यस्य (म निर्मुत्र, निर्दे (बाथ किष्ट्रत, पुरमत (म क्षत्र-

मा देवती।

ध त्रक्य मिखिएक माम्मार्या कान् मिरक १ मुटि निया मनिएक

ख्यू मिहे मन्-दिख्य भागवामि खरूद्य, स्थानित कि मस्टद्य

टिनाटमा (य ८म ।

टकान्टम এटम !

नमन-वन (बंदक

इति करत जानता का ?

शांतिजां ३ कृण এएक—

त्रांथरवा दकाशां ?

अ हां इत्रांग्र वांकरव कि ?

जारणा-जरण नांकरव कि ?

वृतक रत्ररथ रक्तरत राष्ट्रिक वांथा।

किराजां कराय करता हां शांधां न

বারোয়ারি উপত্যাস

20

বৈবাগ্য-জিনিষ্টা কল্পনায় যতথান স্থলর
ব'লে মনে হয়, আসলে তার সৌন্দর্য্য যে ঠিক
ভতথানি ভোগ করা যার না, দিনকতক
বুলাবনে থেকে সভীল ভা বিলক্ষণ-রপেই
টের পেয়ে গেল।

সমুদ্রের থড়ের দোলায় নৌকা বেমন পির থাকতে পারে না, বিক্স মনের ভিতবেও কেম্নি শাস্ত ভাবের ঠাই হওয়া কসম্ভব। সভীশত তাই র্লাবনে এসে বেশী-দিন নিশ্চিত হয়ে থাকুছে পার্লে না— সংসার আরু অভীতের স্থৃতি ভাকে বেল চারি- भिक त्थरक सामान यां थरन त्येरथ छ।न् भिर्छ नाग्ना

वांका वर्षे मत्मक १८६६, कांत्रण (य महारक 'गांत्र-भन्न-बार्ड निक्तिस भर्ग। भमछ देखिश हिएस निर्मित्न महा व'एन वृक्ष्रक পাৰ্চি, এত সহজে কি-ক'বে ভাকে মিথ্যে य'रम উড़िय (मर।

खकरणदिव छकुम भारति रम रम भागिरण মতন হিমালয়ে ছুটে গিখে সভাগভাই কেপে याय नि, बहे एडरव महीन खशन मत्न भरन অনেকটা আবাম বোধ কর্লো।

সভীশ ভাৰতে লাগ্ল, এবাবে সে কৈ कत्ति १ (म कि व्यावात म्ह्यादा विद्व यार्त १ विस काकानम-वावादात देववारभात (शक्ठांव, मुक्तित्र हीका ॥ श्रनी, आत्र (नाहा-কমল-ত্রিশুলের আক্ষালন খাবল হ্যা-মাট্রাই मरक्रोरभन कथा जान ना तथरक जरकवार्य क्रीं आरह, निकट्मन रम्भ अरमा चूरन-बूरन निश्रमध्य मुट्ह रंगन।

मद्य चाटक छात पिटत-कित्र ७ विद्य-कताच প্রস্থাবটাও। স্থতরাং দে ঠাহও যথেষ্ট नित्रांशन नग्र।

कारुष रिमन्न कथा। न्याभातना त्य-ভाद ভার কাবে উঠেছিল, সতীপ ভা বিখাস कर्ज्ञिन वर्षे - कर्ज्ञ मा-७ वर्षे । जारे कामम क्यों है। काम्यात काश मन खाव याया-क्यां काशास्य केम्यूम् क'दत कें हिन। किक क्रमणा-मूळ काजी-नी जनम ८व क्विन जनकारत जूनिया ज-करमात्र मक कारक एहएए

শফল জ্ঃস্তপ্রেব মতন, তা নর,— সেইসঞ্ প্রাম্য খোটে, চাপা হাসি-বাঙ্গ-টিট্কিরিভে मखीं मर्म मर्न खाव्रण, खक्राव वर्णन छ। य व छथानि विविध फेरठर, रमहुक धक-छत्र माम्रामम-मिथा। आयाव विष्य खक्ष- वात्र मात्र कहानां क'रवरे म-ौरभत मनीत

> मठोन ভाব্বে, এ कि मुश्चिक ठिका গেল। সন্ন্যাদী হ'তে বা ঘনে ফির্তে বা নিষ্ণার মত এখানে ব'লে থাক্তে—আমি এ তিনটের কোনটাই পাব্চি না! তথে আমি কুবুব কি প

ভেবে-ভেবে সভীশ আর ভাবতে পার্বে না---মাথাটা তাব ঘুলিয়ে এল। শেষটা দে আপন মনে ব'লে উঠ্ল—"দ্র হোক্-গে कार, — हूटनांत्र याक् **अ-मव काव गा-**किखा। প্ৰের কথা পরে ভাবা যাবে-অথন, আপাড্ড यथन श्वित्र करविति (य महाग्रम निद्य आज পাগ্লামি কবা হবে না, তখন যে क'টা দিন Cम एथ-नि ।"

ভাবপবে মলে হোলো, বেলতলার কথা। সভাশ ঠিক কর্বে, কাল সকালের সেখানে তাব মা আছেন বটে, কিন্তু সেই পাড়ীভেই সে আগ্রায় ভাজমহল দেখুতে याद्य ।

কবি সাঞ্চাহানের অমর মর্গ্র-কাব্য নানান च्यांच्हां, कानोनीटम त्नाटन टक्सन इस १ टनाटक मानान ভाবে দেখেছে। किन्न जान-किन खर्थान खात मदन दर्शाला, अभ्यात मरून प्राट्थ मधीरणत मदन दर्शाला, এ यम ভানই প্রিয়তমার মৃত্তি!

> প্রিয়তমা। কে সে १ · · · কমলা १---না, সে এ-কমলা নয়—ধে-কমলা তার স্বেছ-(श्रम, यक जातत ज्ला, त्नांक-ममारक जातक श्वान्भाम क'रत, जात्र वर्डमान ७ कविदादरक

b'en (গছে, ভার কথা সে আর ভারতে কিছ পালে না—ভাব্তে চায়ধ না। श्राप्त व्यापन विकास का निर्माण क नित्र मठारमम वह विभिन्न-ब्रह्मनो भग्नेव চোৰেৰ মাধুনী, ঠোটের হাসি, ওত্তব গাঁলা, হাতের স্পর্শ – সবাব ডগরে যার বৃক্তরা অগাধ ভালোবাসার স্থৃতি দুলের মতন ভাব জীবন-বৃস্তকে পুলিত ক'বে বধেছে—গভাশ এত সহজে এথনো ভাকে ভূল্ে পাবে নি— এই পরিপূর্ণ ছাদয় নিয়ে তাই তো তার देवब्रारगाव णूळकान मरधा बोर्गिरम भएवात्र ८५ष्टो हो। ध्यक्तवादत्र मिथा। रूप्प शिद्यिष्टिल। मश्रामत মনে হোটি।, যেন কাল্কেব কমলা ভার णाक्रित्र रुम्मा— ७ इक्रान এक लाक नमा यानि ध-त्रकम भरन-एक्याकि ८ ८० तमासूरी ध्यर धन्न (कान-धक्ना नक्न कान्न (नहें, পাল ন মে বখন-তখন উকিয়ু কি মার্ভ। দেখি, এতে তবু মনটা কিছু শাস্ত হয় কিনা! যুক্তি-তর্ক এখানে থাটত না—তাব মন জোর ক'বের ব'লে উঠ জ---বেনকমলা এ-কমলা अक लाक नव, प्रकाल वर्ग-महक उकार। সে ছিল আমার,—একান্তই আমার, আর ₫ \${\$£...

—এইথানে ভাব্নার স্ত্র ছিড়ে বেত। ष्पाक्र क्या कर कमलारक छात्र मन निर्द्धत মান্তেও বাজি হোতো না—এইথানে মন্ত-বড় अक्टी जनकात्र—अकाना अक्तकात्र क्रिन, टन कांक्रकांत (यन मुकारमा जलकरण क्रमाहै।

कक्षिन, ईपिन, किनिन-चाद्रा क'है। मिन काटक काटक टकटडे टरांग, महीन कि

कांक्रमरुवारक ८६८फ हैं टन ८२८७ भात्राम ना । कि धक वजाना सारहिय छोटन स्त्रांख रन काजमकामन किरक कूछ जान्छ, मगादनन छन्-षरशत रमें विक् मी जन म्मार्भित मरशा का भनात चरशत यस्न जनान्ए करें कार्र शत वर्षि एक्ट्र वर्षि वर्षि विद्या किर्य हुन क'रत्र म भ'रा थाक्र, थात जान माम्दन फिर्म यमुनाम कारणा क्रम कर्रायमनाम एक मिक राम कुन কুল ক'বে বয়ে বেড,—কুলে কুলে মাথা कुटि, यांत-भाषीय नग्न-रिकारण कार्यक इटम ।

> भाषाभारतत त्थारमत युवि लाकमभ्य व्यास जात्र व वृदय व काळा चटन ८ व्यापन मोर्गाणि व्यानाय (यन छिटक निटल,— ज भवात (यन कौरक, ज भाषार्वय (मीन नावा रगन कान ্েশতে শোন যায়, এব এই নিক্ষণ ভাৰতা रयन वृदक्व जाशांबरक आरमा क'रव राम !

সভাশ স্থির কর্লে, কি হবে ছয়ছাড়ার मलम दार्भ दार्भ घुटन म'र्य, — इंटिय क'टे। मिन ख्यू अर्मन-अक्षे जावरे जात मर्नित्र जाम- अर्थान यस वस्त्रे कार्टित स्थित संक्,

পুৰিমাৰ চালের আল্পনা সেদিন ভাজের मन्त्रज-मिनात अस्म युमिर्य शर्फक्ति । ठाउरिणव উপরে গায়ের জামাটা খুলে বালিসে পরিণত क'रब, मलोलाख खद्य खद्य त्मर्थाह्य-क्षां मा जात्र डांक रचन चाक बिटन-बिटन थोरत थोरत अकाकात ६८त्र शास्त्र—अकट्ट व'राम मावि कब्रिक भाष्ठ मा, भरत्र व'राम भरत्र (यम एक ८ व्यक्ति), एक छाव्य छ। जात्र **८माटिके ८०मा यादव मा।**

> क्टांद कार्टिं कांत्र दीनी द्वरक उठ्ठेश — निनीधिनीत नीत्रवात्र स्टबत नहती कृत्य। जिक कारमहे द्याचा दशक, ज वात-कात वाक नव, एखारबन रानी।

वैभी वाख्ट मान्न-किछ कि छेलान श्रीत ऋत ! ध दयन मुर्थित कूर्य वाक्रि मा-नुटकर मीर्षश्वारम बाङ्हि। वाँभी त्यन करव कांटक शांत्रियहरू, आकारण-शांशारम यभूनात कत्नाक रिम, है। एम्स कारणास, शत्कत कासास टम टयन काटक किटमहाश हा उट्टा एएटक-एएटक (कैंरिन अकत्रिक टम कांश्रा छद्म मार्काश्रानिय গাত্মাও যেন কত-যুগেও নিশ্চিক্ত স্থাধি-শয়ন (शरक एकरभ, अर्थान एंटिंग वरम वाक क्रां (हर्स दमश्द्र, এडकालिंग श्रेय शाम दण्य কপের প্রতলি মস্তাজ আবাব ভাবে ফাঁক निरंश क्रेरियर प्राटक किया ।

বঁ শীব কালা থেমে গেল। তার হতাশ ञ्चरव मनीत्यव ८५१तथव भाष्यक विद्या । এम-िवा। धक्षे । नश्म (क्ल कांट्स आरस म উঠে বস্ল — ভার আঙার বেশেশ বাশীর এই ওস্থাদটিবে একবাব দেখনাব জন্মে।

कि बिर्म अकि टिलाक पूर्ण क'रब बटम चारका। भोक। समारमय शक्रिय १

সভीশ স'त्र ভার কাছে পিয়ে বরে বল্লে, প্রপ্রা, বেল্ডলীতে।" "मध्य कर्य जाच এकवाव वाकारवन कि ""

লোকটি সভীলের দিকে মুখ ফানয়ে তাকে (पथ्रा जारभन्न जक्षे (हर्भ, रकान कथा লা ক'লে বাঁশীতে আবার ফ্রাদলে।

यानिनी व्यक्त दिश्न। ध वामी दान काना ताना ताना एका १ वह यान महीम यानिनी देव कार्य किछू बारन ना।

दर्भेटन टकंटन दानी कावात बान्न। केंद्र नित्न।

कात्रभन्न मकीण बोदन बीदन वम्दण, व'दणकात्र दक्छ वादकन नाकि ?''

"আপনায় বাঁশীর ভেতরে আরো কভ কারা পোরা আছে গু"

लाकि (क्रम्बि मूछ मूछ (क्रम् दम्बा) " आंभेगार यस यांच यांच कारण आयांत दांजी হাসভেও পারে! শুনবেন গ সে ফেব वानी हिटक मूर्यंत्र कार्छ दुन्ता ।

म नौण वाथा पिटम वनात्म, "नां, छोटम्ब কোলে হাসি তো ভম্বেনা। এ ভার ষে विवर्षित प्राप्थित अव्य मिर्ग श्रीका ।"

লোকটি বল্লে, "ভাইতে। আমারও বাশার मुर्थ शिम जारम नि। এই छः एथन छनियान भटक काताब ५४ हाए। जाव-किहू ट्ला भाषत थात्र ना ।"

কথাবান্তা শুনে, শোকচিকে ত|র मर्थारभन्न व ७ छारमा गानगा । ८म वन्रम, "याम किছू मरन मा कर्यन, खरव जाभनात পরিচয়টি জান্তে পারি কি ?"

त्मथ्रण, कारकड, ग्रम्मान मिरक मुख ---"(क्काणां कारक रहाधूनी। विभिन्ना । विभिन्ना । विभिन्ना । विभिन्ना ।

. — "मछा । ठक्क वा गठो । नियाम हिवाम

कि छोटमन शं ७ (शटक वैभिष्टि शटम, ममस्क পড়ে গেল। অত্যন্ত বিশ্বরে সে সভীশের मुरचत्र निरक काराक् इरम क्रांक्ट्य त्रहेश।

टमवारवक नेम्मीटक मियामांच कार्ड क्य — "का-ठा-ठा, रमथून, नीमोठी Cकरक ত্লে নিয়ে কিতীশের অসাড হাতে কের

मठीम कात्र (मह लाकिए, क्षराने कानगरन किन्डीम उडकरन कानगरक मांग्राम , नी ब्राट्स कारमकून भागाभाभि यदम ब्रहेग। जित्य यम्हण, "(यमक्रमीटक मजीमहक्क योगंही

করি, সেই দক্ষেত্রৈ আমার নামে নাম করে দেদিকে তার একটুও থেয়াল রইণ না। একজন আছেন।"

মইল না। তবু একেবারে নিশ্চিন্ত হবার এক যজমানেব বাড়ীতে, কি-একটা শান্তীয় জন্মে সে বল্লে, "কালীগাঁরে কি আপনাব অফুটানে লিপ্ত থাক্তে হয়েছিল। ষঞ্মান-শশুরবাড়ী ?"

ভুক কুঁচ্কৈ সন্দিশ্ব স্বরে সতাশ বললে, "हैं।। विश्व ध-कथा व्यार्थान कानत्यन कि क'दर १"

ক্ষিতীশ অতান্ত খুসি হ'লে বলে উঠ্ল, "সভীশবাৰ, আপনার কথাৰ ক্ষৰাৰ পত্নে দেব। আপতিত ভগবানের দয়ায় এমন व्यान्तर्या काट्य यथन व्यापनात्र तिथा त्यारमिष्ट्, ख्यन कार व्याभनांदक ८६८६ विकि ना। থুব কাছেই আমাব বাস।। আপনাকে এখনি সেথানে যেতে হবে।"

কিতাশেব দিকে হতভাষের মতন ধানিক-क्रण ,हर्य (शरक गर्डीम वन्रल, "जामारक

- -- "আপনাব "Cকন'র অবাব আমাম দেওয়া থানকমেক নচুন কাপড়। योगांत्र (शर्मेरे लार्यन।"
 - "आशिम (क १"
 - "मिन्द्रिमा सनि।"
 - "আপনার কথার অর্থ ?"
- "जन्म-श्रकाश । जयन डिर्ग्न-क्रिन, भात (मिर्व कब्दिन ना।"
- —এই ব'লে কিতীশ অবাক সতীশকে ড'হাড ধ'রে একরকম জোর ক'রেই টেনে-ছিচ্ছে ভূলে নিয়ে গেল। ভার অভ मार्यम मामी दानीछ। ८च छारकान चारणा-मांथा **काळाटन काटना ज्यारी ८**तथान 7177

--- ना। ज्ञाद व्यामि द्यथारन ठाकती छोरनत्र मक्त भएक ब्रह्म, व्यानरमञ्ज व्यारवरश

किछोट्यत मत्न कात दकान भरमध् दार्ण-इपिन र्जनाथ देमकदक किन्-जीरवत বাড়ার কাজ-কম্ম দেয়ে, আজ তুপুরে ভিনি कारात्र निष्मय ज्ञारम किर्य क्रान्स । कैंकि श्रिक्टन शिक्टन व्यामिकिन प्रति। (माक। खामिन गोषाय चड चड इटिंग चडा जनः েকটা বস্তাব ঘাঁক দিয়ে একটি মতুন 'চব্চকে পিতপের ছড়া উকি মার্চে। (मश्रामके युर्व मिर्क प्रति क्य मा (य, यक्तमादनत नांका ८०८क এवादन ठाकूरवन्न या नाख करवरह, स्व यदमायाख नग्र।

जर्श करनाथ गांधात छेशरत जिल्ल गाम्हाथानि পাট ক'রে রেথে, একটি সাদা কাপতে মোড়া ছাতাৰ হায়ায় ছারায় হাড়াভাড়ি বাড়ীর (मटक इत्य कार्यमाय वामात्र १ (कन मलाहे १" निटक ाकर्न्ह्र लन। क्षेत्र वी-हाटक यक्रमार्ग्य

> खाई क'मिर्निट क्रनार्थन (ह्राचा रक्रम वृष्ट्रिय भट्ड्टि,—एम्डिड ध्यात्रा, दकानकृत्वा হয়ে গ্রেছে। ভাব চোৰছটি বসা-বসা, ভার जनारा असीत कानिक रबला। जात मूप टाय टावे द्याया यात्र, युरवध किएत जिल অহ্বহ বি অসহ চিশ্ব দাগ সহা কর্চেন!

য়জমানা কর্তে তার মনে আৰু একটুও हेका (मह-काकक्ष अथन या करवन छा कडको नियामित मनिर्कत जासूरब्राध मार्य टिट्क वर्षे, भाष कळकछ। जामनात वाचिक लानिएक जाक्रममक बाच नात्र कार्य व न्दि ।

कार्वकांचा বোদ ঝাঁ-ঝাঁ **ठात्रिक्टिक** कब्र्ट--- भारत्रत जगान भरणंत्र धृरमाधारमा भर्ष भूरक ट्यन चाखरनव कथा रूप छेर्द्धरह। रत्रनाथ द्यानित्कर ना-जाकित्य इन् रन् क'रत धिनारम हम्हिलन--हिन छानिक (थटक भक्त छेठे म- 'किन्छ माद।' • हरनाथ व्यालन, मनी मूथ्रात परत्य माख्याम जान-मावात्र देमिक जामत्रो त्रीकिमङ खरम फेटिंट । তিনি পাশ কাটিয়ে চলে যাবার জভে क्रांकिटिक जानशास्य ८क्निएम आञ्चरमाभरनम ८६ष्टे। कत्रामा । कमणात अखशानव भरत এই শৰী মুখুযোকে ভিনি ভালো ক'বেই চিনে নিয়ে ছিলেন। তাই তার প্রচহন ব্যঙ্গভরা गुर्थ विनय्रधकार्णव मङा-जाएखद (मथ्रणङ, क्तनार्थित तुरक्त छि॰ दि काछा चार्य रमन ম্বনের ছিটে লাগ ত।

কিন্ত কাণ প্ৰী'ৰ একটিমাক্ত যে ভোগ, ভা সাপের মতন ভীক্ষ। দে চিলেব মতন বস্বেন না! সাভাই যদি স্থবৰ দি हिंहि-क्या नमा कृत्म माडा मित्न-"क्त्रनाथ- आयात्क कि था खग्नात्वन वस्त तमिथ ?" मां, विन ७ इयमाथ-मां। छाधीनएम्ब , भनीय ब्रक्म-मक्स एएएथ इयमारथे वस्त मिटक এकिविनेत्र मिक्-नखदा ८७ एवं योग, ध्यमन क'रव भारत र्इटन र्शन एका छन्द ना ।"

হরনাথ বেগতিক বুনো দাঁডিয়ে পড্লেন ছাতার আড়াল থেকে আত্মপ্রকাশ ক'রে षाशक्ति यद वन्तिन, "ना छाई, द्रीक त्रव याँ एक व्यत्नकथानि भथ (इँटि एक्ष्टीम श्रानि। छो-छो कत्र्रह--- अथन कि जांच टकानिंग्रिक চাইবার যো আছে ? ভাড়াভাড়ি বাডী যেতে भात्रलहे वाहि।"

काना मन्त्र यरकत्र मडम कक-ना कक-ना

"त्म कि मामा, टेंड्डा त्थरप्रदे ? जास्म-আন্থন, আমার বাড়ীতে আন্থন।"

হরনাথ বল্লেন, "আব ভায়া, বাড়ীঃ कार्छ अरम रका भरकृति, अरक वारव ना-। किय क'रत ठा छ। हरत छन-छन चा-हत था उन्ना गांदन।' এই ব'লে তি[†]ন আবার এগিয়ে পড়বাং ८७ कत्राना

भनी जीकुभाकु क'रव वन्द्रल, "नामा, यादव ना। खबु ना थान, এकটा स्थर अस्ट **७**टन-यान।'.

रुत्रनाण नियाम छाटन क्य्नण चटव बन्दलन "স্থবরেষ কথা আর ভুগো না ভারা ध-कोरान स कात कू, ७ छ्ट्डे ध्यम व्यासार কাছে এক কথা।°

भनी 'ई।'(येव कासकार्य कारमकछरम इन्टा माटिय विनिक् स्याय धक्यांन द्रा वम्टन, "इयनाथ-मा', जाकी जान ट्रिफ मिटा

मां-क'रत्र धकछ। मर्न्स्टब्र विद्यु हम्र्टक शिन শশা তো অকারণে কিছু করবার পাত্র নয়— অকশ্বাৎ তাব এতটা আশ্বীয়তার কাবণ কি

 উন্ধিন্তানে তিনি বল্নেন, "শনী, ভুমি কি বল্চ । তোমবা কি ক্মণার Cकान थवत (शरब्ह ? <) किन या कामना क्रवृद्धिन्य, जाहे कि इस्त्राह ? मिलाहे कि कम्मी भरत्रि ? वम, वम-धन्न ८५८त्र সুথবর এখন আমার কাছে আর কিছুই নেই ["

भनी नकन मन्नरम मूथशाना यथामखद काँडू-क'द्रत क्रिक्स करम राष्ट्र-ममण्ड इत्त रम्टम, माठ्र क'द्रत रम्टम, "अकि कथा इत्रमांथ-मा" १ वांश इत्त्र (मरत्रत्र मृङ्की-कांमना कत्र्वन ना, कि !''

र्जमार्थन मत्मर त्वर छेठ्ण। जिनि उरक्षान छेल्शीव स्त्य वल्लन, ''ननी, जूनि या बन्द हो हो, नीग्धित बदल रक्षण।"

भनी जात शामित आत्रक मिष्टि क'ता बन्दन, ''अक्न य कम्मीदक नित्र कन्का जा स्थित कित्र अर्फिट ।"

হরনাথের বুকেব ভিতরে ধ্রুণিগুটা বেন দমান্ ক'রে ফেটে যাবার মতন হ'ল, ছ-হাতে বুকথানা জোরে চেপে ধ'রে বজাহতেব মতন স্বস্থিত হয়ে জিনি দাছিরে রইলেন— তাঁর চোথের পাদ্নে মধ্যাহ্ন-স্থোব সমুজ্জল শিখাও ধেন এক-মুহতে অন্ধকাবে আছের হয়ে গোলা

আধ-মরা ইগ্রের ভাবভঙ্গি নিড়াল যেমন নিষ্ঠ্ব চোথে তাকিয়ে দেখে, হকনাথের দিকে শনা ঠিক ভেম্নি ভাবেই বাববার চেয়ে চেয়ে দেখুতে লাগ্ল।

বিশ্বরেব প্রথম ধাকাটা কেটে গেল পর,
বিষম রাগে আব অপমানে হবনাথের সমস্ত
মুখথানা বাঙা টক্টকে হরে, বগের উপরকাব
শিবগুলো ঠেলে ঠেলে ফুলে উঠ্ল।
ঠক্ঠক ক'রে কাঁপ্তে কাঁপ্তে আগুন-ভরা
চোথে শনীব দিকে ভাকিয়ে তিনি প্রাণপণে
চেঁচিয়ে বল্লেন, "ওয়ে মহাপাপী, এই কি
তোর স্থবর ? তোর মাথায় বজ্বাঘাত
থেকে, বজ্বাঘাত হোক।" বল্তে বল্তে
একরকম ছুটেই তিনি সেধান থেকে চলে
পোলেন। থানিকদ্র গিয়ে ভন্লেন, শনীর
আজ্ঞা থেকে অনেকগুলো গলা একগঙ্গে
হোন্হা ক'রে হেলে উঠ্ল।

বাস্তবিক, এতক্ষণ শশীর দলের লোকগুলি
চরম আগ্রহের সঙ্গে ধেন অত্যন্ত উত্তেজক
একথানা নাটকের বিচিত্র অভিনয় দর্শন
কর্ছিল। হরনাথ চলে গেলে পর খুব
একচোট হেসে নিয়ে বোসকা বল্লেন,
"টাকার গরমে মৈত্রেব পা ধেন এতদিন
মাটির ওপরে পড়ত না! কিন্তু মাথার ওপরে
ধে দর্শহারী মধুসদন হাস্চেন, সে খোঁজ ভো
শশ্মা রাখ তেন না! আচ্ছা শশ্ম, মৈত্র এখন
কি কর্বে বল দেখি? কম্লা ছুড়াকে
বাড়াতে রাখ্বে, না ঝেঁটিয়ে বিদের ক'রে
দেবে ?"

হরনাথের সেই অগ্নিশ্যা মূর্ত্তি দেখে আব অভিশাপ শুনে, শ্নাব পাপী মনটা দপ্তর-মতন চম্কে ভাবাচাাকা থেরে গিয়েছিল। কোনরকমে এখন সে ভাবটা সাম্লে নিয়ে সে বল্লে, ''বোধ ছর ভাড়িয়েই দেবে। কিন্তু বলাও যায় না, মৈত্র ধেমন চট্ট ক'বে রেগে ওঠে, ভেম্নি শাগুগির ভার রাগ জল হয়েও যায়। আব হাজাব হোক্ বাপের মন, মেরের মূব দেখে ভূলে যেভেও কভক্ষণ ? —যা হোক আপাতত ভোমরা এখানে বোদো ভো, এর-মধ্যে আনি জমিদার-বাবুকে খবরটা দিয়ে আদি।"

একজন জিজাদা কব্লে, "গিয়ে কি বল্বে ?"

-- "वनव य इत्रनाथ देवल किरत এएमरह। कम्मीत जामात्र धवत खिमात्र-यांत्र कार्य जार्गर्थ উঠেছে। কেবল মৈল এখানে ছিল না ব'লেই এ জুদিন তিনি রাগ সাম্লে চুপ ক'রে আছেন।"

नक्नकात मृत्यह जाति-अक्षा चात्राम्। इ

मरखारमम गक्न कूटि डेर्ड म ! भारत मिन-८क-हिन इज्ञनार्थत्र मश्माद्वत्र बीवृक्ति त्मरथ त्य- इत्यटा লোকগুলি মনের ভিতরে বরাবর নিফল হিংসা वात्र वाद्याम भूष वाम्हितान, वास ठारमत অন্তদাহ নিবারণের মাহেন্তকেণ এসে উপস্থিত !

20

হরনাথ যথন প্রচণ্ড একটা উন্ধার শিথার মতন বাড়ীর ভিতরে এসে হড়মুড় ক'রে চুক্লেন, মৈত্ৰ-গিয়ি তথন অরুণ আর কমলার সাম্নে ভাভের থালাখানি পাঁচরকম অর্বাঞ্জনে माकित्र ज्ल धर्षित्न।

इत्राध्टक छाष्ट्रमहे (मथ् ८७ (भटन-कमना। तम जशनि भिष्णि व्यक्त छैटि भएष्, "वावा ला" व'ल (कॅरन इटि अम, इ-काट হরনাথের পা-ত্থানা একসঙ্গে প্রাণপণে জড়িয়ে सन्दन ।

মৈত্রগিলীও ছঃথের আনন্দে কেঁদে ফেলে বল্লেন, "ওগো ভোমার কম্লীকে ঠাকুর व्यावात्र कितिरत्र क्रिट्सट्टन द्या !"

ছ্রনাথ একবার কমলা, আর একবার शृश्चित्र फिटक ८५८म ८५५ ८०न। उत्त সে দৃষ্টি পাগলের মতন উদভান্ত। ভারপর चक्रां कि कि एक एक कि नि शक्कन क'रत **एक्ट्लन—"जक्न !"**

তার দেই কড়া ডাকে ভয় পেরে কারণ

मांगरमम । इत्रनाथं रेमरकत्र ताम् । शारम परत इत्रनाथं मखीन परत रक्षमांक यन्तन, षदम विथा । त्रांत्मत माथात्र जिनि कत्नक "स्"।" गमरम धामम-ग्र काक करता दक्टलटान, कमलाज प्रेटांटथ दयन विद्यारक्ष रम्का

বে-জক্তে পরে তাঁকে অনুতাপ কর্তে

হ্রনাথ কর্কশ স্বরে বল্লেন, "অরুণ, कम्मीरक जुड़े रकाशांत्र भिन ?

जरून मृद्धयदत वल्टल, "किजीनवादुद বাদায়"।"

हत्रमाथ ट्रांथ भाकित्त वन्तम, "किंडीम! কে কিতাশ গু"

বাপের সঙ্গে কথা কইতে অরুণের ভর্মায় আৰু কুলোলো না। অত্যন্ত দীনভাবে कक्न ८ हाट्य दम यादम्ब निटक ভाकाटना ।

মৈত্র-গিলী স্বামীর দিকে এগিয়ে এসে वन्दान, "उत्था, भ जात्मक कथा। कम्ली আর অরুণের মুখে সমস্তই আমি শুনেচি। ८भारना -"

इत्रनाथ धम्टक वन्दनन, "तित्री, जुनि थारमा! अत्तन्न (य-कथा कुमि विश्वान करत्र), গাঁমের আর-পাঁচজনেও তোমার মতন অত সহজে তা বিশ্বাস কর্বে না !"

—"বিশাস কর্বে না! কেন ?"

—"কেন, ভাও আবার খুলে বল্তে হবে ? কারণ, ভোমার মেরেকে ভারা কুলটা बटल।"

এভক্ষণ কমশা ভুগুজিত দেনী-প্রতিমার মতন হ্রনাথের পায়ের তলায় ८६। ट्यंत्र कटन धतिकीत धूनांटक मिक्क क'दत থুব আছে সাড়া দিলে, "বাবা।" তুল্ছিল। এখন সে আহত বিষধরের মতন रेमजिशिशो श्रामीत जान परिथ मरन मरन जानियरिक डिर्फ मैं। इस निवास निवास कार्या। ध्यमाम श्राप (मय-मियीटक पात्रण कत्छ कृषिश कि भागारक छाहे य'रन विश्वान कत ?"

वन्दक छेठ्न । সগর্কে মাথা তুলে তীব্র পরে নে বল্লে, "তুমিও ? তুমি,—আমাব বাবা,— কুমিও বিখাস কব ?"

रत्रमाथ कमलात त्रहे অভাবিত, তেজবিনী भूखिं त्मरथ विश्विष्ठ रूटणन वर्छ, किन्छ दम বিশাস তাঁকে একটুও টলাতে পাব্লে না। সেদিনের সেই নিদারুণ কথা আঞ্চণ্ড তার বুকের পরতে পরতে গাঁথা আছে—যেদিন কল্কাতার रूटवटनव त्यटम शिष्य क्रुप्तिवाटमव मुग्थ जिन बान्टि (পবেছিলেন যে, হবেনের সঙ্গে কমলা जिक्नां दिवाबार दिया विद्युष्ट है दिन विद्युष्ट । তারপর,—এই কিতীশ। কোথাকার ।ক সে । তাব বাসায় কমলা কেন ছিল ১ এর চেয়ে বড় প্রমাণ আর কি হ'তে পাবে ? তিনি টেচিয়ে व'ल डिठ लान, ''हैं।, आभि विश्वान कवि, श निष्क जिल्हा टबान अमिति, जा विश्वाम ना-কবাই আশ্বা! এতদিন পরে কেন তুই মন্তে পাবলি না, কেন ভূই—"

বেদনায় অবর্দ্ধ স্বরে কমলা ব'লে উঠ্ল-"আর শুন্তে পারিনি গো—বাবা, থামো, थारमा,--- सर्थष्टे स्टाउट !... ... छत्रवान, ट्रामाव ট'লে পড়ে ধাচ্ছিল—বৈত্ত-গিন্নী তাড়াতাড়ি कारक भ'रत्र रकल्राम ।

হরনাথ কমলার দে অবস্থা দেখেও (मथ्टनन न। अशिंतिक मुथ कितिरम, कार्यितम यदा जिनि वम्दान, "काभाव यदा कगिकनीत ठीं हे ८नहे। এখানে আत्र এক-मख नां! ह'रन या—ह'रन या— এथनि ह'रन बी--शर्ट्राच-""

देशक-तित्री कांत्राखना जनाम स'रम फेर्टिनस, "ওপো, তুমি কি পাষাণ গো! অমন কথা স্থেও এনো না !"

হরনাপ তেম্নি অটল ভাবেই ভিক্ত স্বরে वन्तन, ''शिन्नी, या लाय यात्रान विख्त कांत्र ८ एरम नात्रां ५ ८ एर एर ५ ५ ० करे (मार्थ (मार्थी ७३ পाशिष्टांटक टकान् मूर्थ আমি ঘরে ডুলে নেব ?"

—"ই্যা গা, যোগেন মিত্তির ছেড়েচেন व'रण जनाक ७ ७। इरत्रन क ठिएण त्राथ एव **८म वाछिट्छटण काव कमना ६व ८म्८म ।** এ বিপদে তুমি না দেখলে তাকে যে আব **दक्छे (मथ रव ना !**"

ধ্বনাথ অভান্ত শুক্নো একটা হাসি হেসে वन्द्रान, "এবজন দেখ্বে—ভাষ নাম यम। আমার রজের একবিদ্ও যাদ বম্লার দেকে থাকে, ভবে ৬ যেন এখনি গিয়ে তাবহ আশ্রয় আবার এথানে ফিরে এলি, কেন তুই নেয়!" বল্ভে বল্তে চরনাথের টোথ থেকে নোঁটো ফোটো ভপ্ত আঞা গড়িয়ে প'ড়ে, ভাঁব ছইহাতে ছইকাণ টেকে, চক্ষু মুদে, গভীব ওপ্তপ্রান্তেব সেহ একান্ত অস্বাভাবিক হাসিকে ि बिद्य नित्न ।

कमना हिंगे मारमन जानियन ट्यंक আপনাকে জোর ক'রে ছাড়িয়ে নিলে। জগতে নারী এত অসহায়। উ:।" কমলা বাপের মুখের দিকে শাস্ত চোৰ তুলে স্থিয় ভাবে বল্লে, "বেশ বাবা, ভাই হনে। তোমরা সকলে মিলে যা-খেকে আমাকে বিনা-मार्य विकिञ्ज कत्रका, मिथ यदमय कार्ट्स शिद्ध সতিাই সে আশ্রয় পাই কিনা!" ভার পর ফিরে পূর্ণ-দৃষ্টিভে মায়ের মুখেব দিকে তাকিষে, গাঢ় খারে ধীরে बीসে বল্লে, ''মা, তোমার জামাইরেম বৌজ যদি পাও, एरव डांटक जामात्र के ल्य-निर्वतन जानिक

ভক্তি কোনদিন সাবিত্রীর চেয়ে একটুও কম ছিল না!" বল্তে বল্তে তাব গলার चा छत्राक धत्रा-धता २८म 'फुँठ ल, टिनारथव পাতা আধার কারার জলে ভেরে এল---किन्छ श्रीनभरन श्रारम् नमन उक्त भागन ক'রে, মায়ের সমস্ত বাধা এড়িয়ে সে জভপদে সদব-দরজার দিকে এগিয়ে গেল—ভার পবেই, আবার কি-যেন দেখে চম্কে উঠে থম্কে দাড়িয়ে পড় ।

मरक मरक मकनरक व्यान्ध्या क'रत इर्थन এসে বাড়ীর ভিতরে ঢুকে, ক্মলাব সাম্নে भाष्ट्रिय वल्टल, "त्वान, धमन त्य इत्व, व्याम তা আগেই জান্তুম। তাই তোমাটে াবদায় দিয়ে কলকাভায় আমি নিশ্চিম থাক্তে পারি নি। তোমাব থোঁকে আমি বেলতলী शिरमञ्जूम, रमधान रथरक जव खरन এरककारव এখানে ছুটে এসেচি।"

इत्रनाथ अथटम निष्कत्र ८ हाथटक रियाम "आमात याया छाक्टहन।" कब्रिंड भाव्या ना। कर्यन य खब्रमा क'र्य

कज्ञनां डीं ड हिल। जुशून त्वार्य (कर्ड-श्रुट्ड, পণ কেঁটে, কুধা-ভূক্তায় তাঁর ভগ্ন দেহ একে Col जानल क्ट्रा फिला, जोत जिल्हा जेक-जन विषय উद्यक्त । ७ नामा ভাবাবেগেব খাত-शिक्यां हा अथन १३ (भय-धाकान क्रिक्रांस ভেছে, প'ড়ে, ইাপাতে হাঁপাতে হিনি यन्दान, "ना, आत भाष ना। सध्यान, o क्यशि-भेराका त्यरक व्यागातक त्यराह माख थाना । धर ग'रम र्शिन क'रन माहिन 'डेशरव न'रम शरड, छइ**डाँ** हेव भारायारन निटका गुर ८७८क (कल्टल ।

> ঠিক সেইসময় বাডার বাহ্নর থেকে शखोत ामाम एक छाक्ता, ''देमक-ममार्ह বাড়াতে আছেন কি 🖓

হ্বনাথ পাথবের নিশ্চল মৃত্রি মতন य'रम वहरणग---माफा-नम किहूरे फिरमन ना। रूरवन कमनान भिटक ८५८न नन्दन, धीरम्पाक्यात नाम ।

Cभ्रमात शोताङ

नमीयात्र व्याक वड़ चिंग ककान, मानात्र भीतारक वृत्ति है स्वरह हे जाती। टक्ट वरण, छारणा भिरत स्वधुना-नीत्र, भक्ष भारता निमक्तन (कि करत्र व्हित्र। ठाहिया जोबाज-भारन कूफि कृषि कत **ठखांन कहिन धीरत,**— शन-शन-चत-< ठोकून, कड लाहा कतिरन-काकन,

कांक्षन इहेशा खब धा कि ध नां स्न ? b खाटनदत दकान भिटन कृषि कशनार्थ, - आकि जात्र आणिश्रद्भ हाताहरव का छ ? कुलाटक कांत्रदा कड लाडको-डेकांब, পাভকী-প্রশে আজি পতন তোমাব! (जोत्राष्ट्र कानिक रुपि क्रिक् मत्रम, षामि ७ कनक करे, कतिनि भन्न ! क्षिक् मूच इक न मिल्या।

চয়ন

ছাগার কাযালাভ

বিশাত ইংরেজ লেখক কপ্তান ডইল ৈজানিক এই ব্যাপায়টিকে সম্পূর্ণ একটি তিনি এবং আখো জন-কডক বিশ্বনিন।।৩



भाषांत्र कांबालांच—ectoplasmus नाहार्या।

সাহেব আজ কয়েক বৎসর ধবিয়া ধাবাবশাহক বিজ্ঞানে প্লারশত করিবাব জন্ম চেষ্টিত আছেন। ভাবে প্রেত-তত্ত্বের আলোচনা কবিশ্লাছন। পেএত্ত্ব সম্বন্ধে তাঁহ,বা অত্যপ্ত সত্তিবে प्यारमाठना कतिरहाल्न, এव॰ वक्षत्राम भित्रा भिरदेश दिन व विश्व कहेंगा द्या मन कुमश्याय छ विषा अभाग करफ़ा केन्द्रा कितिएकहरू, दम ममप्रक छोडाया । था। भाषा नक्त करिया blaceren 1

> ार्गाम्य २८३, भुग्रह व्यनक निर्मा नश—३ रागाक व भारत भेतरभारक द आंख इ वादि । ८५८ वर्षे अस्तित्वत भागान वादा-शकान कांत्रक भारत- षांत्रा गुर्हिर नम्,

८ थाट जरम इ इसा-रम्ह क्यान काराम পরিণ্ড হয়, সেশহন্ধে এক নৃতন রহজ व्यकाम भावेशात्व। ज उक्तका क्या जर-ष्मार्गञ्च ष्मण्यद्वेजार्य ष्मार्था (कडे (कडे विषय् हित्यन वरते, किन्छ देवछानिक या त्म-ममञ्ज कारिनीटक शांकायुत्रि दक्षिया উড़ाइया निषाकि ।न।

ध्यम का और छत्र । वर्षमारमञ्जू विकिस প্রমাণগুলি একতা করিয়া ডাক্তার শ্রেম্ব-नर्डे डि॰, फाः शिटन, व्ययमगत्र क्र्म्, फार्कात्र ক্ৰেণ্ড ও কগ্ৰান ভইন প্ৰভৃতি বিশ্বাসবোগ্য व्यांत्रक शिख्यता न्महेंचाद्यहें (मथाहेशाहन, खे क्यावनी खीन वान्डविक्ट मिथा। नम् । क्यांच কোথাও অভিরঞ্জিত হইলেও সভ্যের সজে ভাহাদের সম্পর্ক অভ্যন্ত ধনিষ্ঠ।

<u>त्थिक छ । वांश्री वांश्री कियां वांश्री कियां वांश्री मिल वांश्री मिल वांश्री कि एक क्रू क्रम व</u> कंद्रिन ना, अमन व्यासक नामकामा देवछानिक कथा (य मिथा), १ कथा कीकावा मुश कृषिम् ব্যাপারটার সভাতা (ক্রায়ার কায়ালাভ) স্থার্থ কর্মারাচত চাবনে অন্তার্ণ কেন্ নানাভাবে পরীক্ষিত হইয়াছে---ক্ষরাসারা চারিদিকে কড়া পাহারা বঁসাইয়াপ ভাহার जिल्दा बान-क्षाइतित वानमाळ । पिथिट ान नाहै।

लाम वष्ठ व्यद्य नामा क्रिक्स (अक्विक् प्रवास क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स नामार्थाल कर्यम। त्य ममख चिंठिक उथा अकान करियारहन, क्लिंगिर अपूत्र काठार ७,— विद्यास हामरिम्स (म मव घটनांत यान्त्र निक्का मनास

लाटकंत्र माम्रन, मिखियारमंत्र माहार्याख करे विवादकं भाविरक्रिन ना। वावन जुक्रमंत्र मिथादि करक व्यविकाव कावटक शास्त्र माहे। मकरहार जीकार नरनन किल कार सहाहे. के डिक्, विथा। भि के बर्गात मना। बिटमम कराड करिक इक विकित्र देश

निकान-कार छ व्यक्तित कृक्रमत छ।क- माहारश १ (कनत कूनन, ति किः मारम जाकक्षाल वर शृष्योर्ड वर्डभान क्रिया

> दवीतं कि॰ दक्षण त्य इक्नाश्टमत मुन्ति सो ब्रह्मा क्या विक् ० इरुमा हिन, काठ। नमः भन्नसः भन्नसः मिख-अक्षान (भन FICH বেথলা क्रिशाह्न, क्रिशाह्न ८१ व १८ गव व्यापक शहा वालग्राहिल - ७१० - व भन् दमन महन स्ता कुलाश र वामिख প্রবাশ করে ।। ই। বিদার नहर्वत्र मन्द्र ८भ योग्या ाभग्नाष्ट्रित, "यकात भाषि **८व** व्याचात्र वास्य पादक, गावनीटक এচ মহা সত্য প্রকাশ করিবার *जरुरे*, माञ्चि माम्त यानि, দেহ ধরিয়া আত্মপ্রকাশ করিয়াছ।

ज्यान, त्थारकरमन होत्रा-त्मर কি-কার্যা কায়ায় পরিবত হয় প क्छान एहेन नाना कारमब नाना टामाण भन्नीकां कन्निना त्मथाहेना-



क्रकृम् ७ (किएरात्र ८० जिला

ছেদ যে, মিডিয়াম যথন অভিত্ত অবস্থার থাকেন, তথন তাঁহার নাক, চোধ, কাণ, মুথ ও দেহের অকের ভিতর হইতে একরকম অত্ত চট্চটে, স্থিতিস্থাপক পদার্থ বাহিব হইয়া আসিতে থাকে। হস্ত দিয়া স্পর্ণ করিলে বা আচমকা তীত্র আলোক পড়িলে সেই বিচিত্র পদার্থ টা চকিন্তে আবার মিডিন্মামের দেহেব ভিতরে ঢুকিয়া যায়! যদি ভাহা সভোরে টিপিয়া ধবা হয়, তথে মিডিয়াম অতাস্ত যন্ত্রণায় আর্তনাদ কবিতে থাকে। এই পদার্থই ক্রেমে ক্রমে একটা নির্দিষ্ট আকার লাভ করিতে থাকে এবং এই ভাবেই প্রেতেব ভারা-দেহ বায়ায় পরিণত হয়।

धार भगार्थि (य कि, देशकानिकता



প্রেভাস্থান মুখে সংগ্রম ectoplasm

পরীকা করিয়াও তাহা ঠিক্ষত র্ঝিতে
পারেন নাই। ইহা মিডিয়ামের দেহ ও
কাপড় ফুঁডিয়া বাহির হয় বটে, কিছ মাবার
মিলাইয়া গেলে পর দেহে বা কাপড়ে ইহার
কিছুমাত্র অভিত্ব থাকে না! ইহার নাম
দেওয়া ছইয়াছে ectopiasm।

ডাঃ শ্রেক্ক নটজিং মিডিয়ামের দেহ হইতে নির্গত ঐ অডুত পদার্থের একটুক্রা কাটিয়া লইয়াছিলেন। তাহাকে তিনি প্তাইয়া ছাই করিয়া কেলিয়াছিলেন। প্ডাইবার সময়ে অনেকটা শিং পোডা গন্ধের মতন একটা গন্ধ পাওয়া গিয়াছিল। রাসায়নিক প্রীক্ষায় প্রাণপন্ন হয়, ভাহার ভিতরে অন্তায় উপাদানের সহিত chloride of soda

(সাধারণ লুন) এবং phosphate
of calicum এব আস্থান ভাছে।

জামানী, ফ্রাফা ও ইংলগু প্রভৃতি
স্থানে শত শত লোকের চোথের
এবং ক্যামেবাব স্থম্থে ধারংবার
এই আকর্ষ্য ব্যাপারের অফুটান
হুইয়াছে। জড়বাদী বৈজ্ঞানিকরা
স্বচক্ষে এই অন্তুহ পদার্থ দেখিয়া
এবং ছুইয়াছে ইহাকে সভা বলিয়া
বিশ্বাস করিতে পারিতেছেন না।
কারণ পৃথিবীতে শব্বাবছেন করিয়াও
যথন মান্ত্রের দেহে এমন-কোন
উপাদান পাওয়া যায় না,—তখন
ইহাকে সভা বলিয়া কিরুপে তাহারা
মানিয়া লইবেন ? আসল কথা,
বিশ্বাস-অবিশ্বাসের মাঝখানে তাহারা
মহা ক্পিরে পড়িয়া গিয়াছেন।

প্রেভভব্বিদরা ভাহা দিভে কিছুমাত্র ত্রুটি রাজি নয়:!" करतम बाहे। किन्न व्यविद्यांत्रीता जुद्देशाटक प्रिंग-पित्न ८ श्रष्ठज्य नानांतिरक ८ यक्तार्थ জোর করিয়া মানিজে চাহিতেচেন না সম্পূর্ণ চইলা উঠিতেছে, তাহাতে আশা হয় **मिश्रा डाँश्रा म्म**ष्टें रिनाटिएन,— (य, अपूत-छिरशाटि देशलाक र भन्न**लाटक**न "ভোমাদের বিজ্ঞানই অসম্পূর্ণ—কশবণ ধাহা মধ্যে এক অপূর্ব সেতুবন্ধনও সম্ভব হইতে **ठाकूष मठा, डाहाटक ८म मिथा। निलिट्डिस, शादत। मज्ञत्वत मठा-जित्र माग्रद्यत मन्दक** তাহাকে मछादक दम ध्रमानिङ कतिरङ পाहिर्छछ मा, कङ्गान दमित आहि।

এক্তিক ষতন্ত্ৰক্ষ প্ৰমাণ দেওয়া সম্ভব. অথচ আপনান অক্ষমতা স্বীকান করিছেও

(म अन्तीकांत्र कविट्डाइं। आंत्र कान्त्र कतिट्ड भारित्व ना—कानि ८ धामारमञ्ज अफ-विख्यानके मिथा।, कावनं ना, পृथिवोट एम खर्डामन आंगिरक आव

নতন 'গন্তীরবেদন'

সাংখাতিক অম্বাচকিৎসার আবশ্রক হল্যা- আবিদার করিয়াছেন। এই যুবকটির দেকে हिन। তাহার পেটের ভিডবে টিউবার্কিউ- সেই জিনিষ্টি-- অর্থাৎ "ইম্বর" প্রাদান করা मिम इत्राट्ड, डाङ्ग् डाहात (भटिन थानिक है। ज्या अटक बाद वाम निट ह हो। इश्र-ছিলেন। এই অন্ত-চিকিৎসায় সময় লাগিয়া-हिन এक पन्छ। मन्यानित । किन्छ व्यक्षाचार जन मगरत द्यांत्रीटक कछान करा इस नाई,---তাহার জ্ঞান বরাবর স্থান টন্টনে ছিল,— किन मां दक्रवन कारांच वाथात्वात्वत्र मक्ति।। ভাষাৰ নাড়াও খারাপ ফটরা পড়ে নাই ; क्र**लावा**ट जिल्ला मन्द्र दम "नाम् "रनत मटन निवा शुमियत्म 'डोष्टी-जामामा क्रियाहिल,-- श्रमन-কি কিছু-কিছু আছার করিছেও ভাহার কোন वाथा रम्र नारे!

शान्ता छारम्हान कि करमक्त्रा मह्श्रां क्रक उद्देश व ।

गःश्रिकि विभाष्टि এकि युवरक के जिस्स स्कम "श्रिकोवरवाम" वा anau-thetic হইয়াছিল। কিন্তু এই "ইপর" সাধারণ "ইখর" নয়। হতার হারা কিছুক্পের জন্ত মার্ষের অফুরব-শক্তি চলিয়া যায়, অথচ সে अञ्चान रुरेया भएए ना। मासूर्यम मिस्टिक्स धक्षार्भके न्हां काल करत, जान जारभन ञ्चार्व किन्द्र मभानज्ञात्भरे वकात्र थाटक।

কানান্তার ভাক্তাব ক্ষেম্প্ কটন এই নুভন "इथन् जानिकान कनिनाट्य। এন্তদিন ডাকারর। ছোটখাট অন্ত-চিকিৎসার সময়ে (राजीत राजना पूर कशिएक भागिएकन नै।। ान का कावबाटक Cकाउ-वक् ममन्त्र **का**श्व-िकिंदमार्के क्ष मुक्त "हणदक्षण मार्गाष्या यद्य**ाण्य** क्रिय, खरहन कामखन मेखन इंक्न किएम **१ — अरञ्जत नारम दर्जा गीरक का**न करत्र कें। दका है शां

দাতের ব্যামো

চিকিৎসার সম্বন্ধে কভকগুলি নুভন কথা বটে, চিন্ত এই আরামের প্রথ বেশীদিন विषयाद्यम । जिनि वटनन, (य-नकन युव्यक व ध्वर (य-मक्न ग्वडोत्र यत्रम (दान ६३८७ वकुष वदमदत्रक मरभा, छाङ्गालक सार्वित মাডির প্রান্ত-রেখা যদি লালরঙে বঞ্জিত হহয়া **७८**ठे, **७८**व **डाइरा (मरहव चारहात्र मिरक** চোধ ना वाशिष्ण भरनरता यएमरत्रत्र छिछ्र নিশ্চয়ই pyorrhœa রোগের ছারা আক্রান্ত क्रेट्य। योद्रामित चारस्त्र मर्पा दकान लालमान नोहे, खोहांद्रा कथरना এই বোগে ভোগে ना।

एाकात अरबहेटनाटक स्र मर्ड, मुथ-८धां उगांच পক্ষে পাতিলেবু বা কমণালেবুর রস সব-চেয়ে अभिकावी। ध्यवूत्र तम यावशायत भव এक र्भिनाम करनेत्र घोत्रा भूष धुरुर्ग मृर्थक ভिত्रको। छ्रश्किष्ठ मन्छ नीर्द्रांग रुप्र, এ धाद्रश्री छात्रि ছইভাগ লেবুর রসই যথেষ্ট।

দাতের ডাক্তার্থা

व्यांगवार्धे ७८,४४८ तक, मञ्च- माफ्ति बाद्य वावात्र खाटना कविट व्यादान ট্যাকে না। কারণ যাহারা দেহেব স্বাস্থ্যের मिरक मन **(मध ना, मेरि** जेत कासूथ काराज ভাহাদিগকে ভাক্রমণ করিয়া থাকে।

> मकारमञ् ७ जार धत्र पाहारत्रत्र भन्न पर्छ-রোগাদের উচিত, গোটাছয়েক কম্লা ও একটি পাতে লেবুর রস পান করা। কিছু কিছু লেবুর থোসা, শাসের সঙ্গে থেতি করিয়াল থাওয়া দরকার। কারণ চহার ভিতর vitamine নামে প্রম-উপকারী উপাদান বন্ধনান থাকে।

अध्यक्त प्रस्ति । कि एमक मार्क का (मन, মাপ্তবের গ্রাছ-সম্মীয় বিক্তাতর জন্মত দাতেব नानावकम चाञ्च हम। मन ममर्थि द চমৎকার পরিষ্কাব হর্মা যায়। পীচভাগ জলে ভুল। এমন অনেক মামুষকে দেখা যায়, याश्रां कीवत्न कथता मांड गाटक माहे, जतु পচা দাঁত ও কিন্তু ভাহাদের দাত নীরোগ ও নিখুঁত।

মনের বস্তি কোথায় গ

হইতেছে—আজ ধাহা সভা, কাল ভাহা কোনরূপ মান্দিক কার্যানিকাহ হয় না। হুইলে দেহ-ভত্তের প্রধান একটা স্থির निकास क अप्यादि वार्ति शहेश याहेत्। देवज्यानिक हा नाना शत्रीकांत्र शत्र (नवहां ठिक कतिशाद्दन (य, मासूर्यत्र मरमत्र वांमा ভारात

বিজ্ঞানের কথা দিনে দিনে পরিবর্ত্তিত মতিকের মধ্যে নয় এবং মস্তিকের ভিতরেও মিখ্যা। সংপ্রতি পাশ্চাতা বৈজ্ঞানিকরা ডাক্তার রবার্টসন বেল অনেকদিন আগেই এমন-এক নৃতন কথা বলিভেছেন, যাহা সভ্য বলিয়াছিলেন যে, নর-দেহেব solar plex-১১এর মধ্যেই মনের বস্তি। তথন কিন্ত कथां । मक त्मरे भामिया छेड़ा देशा नित्राहित्यम । ध्यम भाषाण विकरमकता विवादिक्स, গত যুদ্ধে ভাঁহারা রণক্ষেত্রে অন্তর্চিকিৎসায়

আর-একজন विशाज देवेळानिक. (Ptol. तुन्द्वेत जाग्रा दिन। उत्य तम शानी Troude) বলিভেছেন, কুকুর ও বা-রের উপরে পরীক্ষা করিয়া দেখা গিয়াছে, তাহাদের भिष्ठिक मञ्जूर्वकर्ण कार्षिया डिए। इसा बिट्ना

সময়ে কোন কোন লোকের মন্তিফের সমস্ত ভাছাদের মানসিক অবস্থার কিছুমাত্র ইতর-ब्रांभंड वान निया मिथाएन (य, जागएक विस्मय भ्य ना! आधुनिक व्यत्नक हिकि ९-भाग्नरवत्र मानमिक भारक একটু ৭ नष्टे रुप्त ना। भरकत्र भएक, मान्नरवत्र भरनत्र क्रमास्कत्र निभाग्नहे যে কোথায়, দেটা এখনো ঠিকমভ ধরিভে পারা যায় নাই।

বেতার টেলিআফে ফোটো:তোলা

প্রবন্ধেব ভোগা সভাসভাই সম্ভব হহয়ছে।

वा टिनिटकारनत्र मार्गर्या टकान व्यादनाक-िज न्मारमाकिक शक्ति। उटि ।

শিরোনামা দেখিয়া চমকিত জ বিষয় লইয়া বৎসর-করেক পূর্ব क्ट्रंटरन ना, वाचन এবাবে বেভার টেলি- इट्रेट्डिंग চেষ্টা চলিডেছিল এবং কোন কোন लाएक ७ टिनिक्स्टिन माश्राद्धा एक एक एक एक एक एक वाश्रीक भारत मकन ६ इन्हें। ছিল বটে, কিন্তু এবার এহ ব্যাপারটি একেবারে ध्य-मध्याः এই वा।भारत्रत कान्निकशिंग नियुँ क क्रियां छित्रियां छ नियां व निर्णं क हिला। পদ্ধতি উদ্বাধিত কল্পাছে--্য'দও এক-বিষয়ে সংপ্রতি ডেনমার্ক চইতে বিগাতের "ডেলি সমস্ত পদ্ধাততেই মিল দেখা যায়। ডেলিগ্রাফ একাপ্রেস" নামক সংবাদ-পত্রের কার্যালয়ে, প্রধান মন্ত্রী লয়েড কজের একখানি ছবি অথগুভাবে নয়—কিন্তু খণ্ড খণ্ড ভারেহ বৈতার টেলিগ্রাফের সাহায্যে প্রেরিড श्वानाखरत ठामान कता हरू। **जात्रशत्र भिर्क हर्देशांदिक। दि**निश्वाम शक्रिकेट य शत्र हत्र, থতাংশগুলি একত্র করিলেই একথানি সম্পূর্ণ এই উপায়ে ছবি পাঠাইতেও তার চেয়ে বেশী-কিছু খরচ পড়ে না।

মানুষ-থেকো গছি

गारहर कथा देखिशुरकार माना निश्चाहिम-যাহারা পোকা-মাকড়-মাছি প্রভৃতিকে কাদ পাতিয়া ধার্যা আহার করে। কিন্তু এই নুডন-আবিষ্কৃত গাছটির নজন আরো উচু এবং मिह्नास्त्र क्षांनीत कामका वामिकाता हैशांटक निध्य निध्याय बाहेता क्ष्यान । विकारण

व्यक्तिकात निक्ष्य माणांत्राक्षक घोटल वृक्ष-दिवला योगना भूजा करता अहं वृक्ष-একজন বিখ্যাত জার্মান বৈজ্ঞানিক একটি দেবতা নরমাংসের অভ্যন্ত ভক্ত। অসভারা অভ্ৰত গাছ দেখিয়া আগিয়াছেন। "ভেনাস তাহাদের বৃক্ষদেবতার নিকটে মাত্রকে ফ্লাইট্রাপ" প্রভৃত্তি কয়েকটি ছোট ছোট বলিয়ণে নিবেদন করে। কিন্তু সাধারণ পাবাণ-(प्रकात मछन अहे वृक्ताप्रका निका चाद मां का इस मारूय-वान मर्जन करत्रन ना । होन সামাক্ত প্রসাদ পর্যান্ত না-রাখিয়া সমস্ভটাই



নাত্র-থেকো গাছ

जिनि नत-८क्छ भाग मा--भाग युवजी जारारम्ब मर्कारक वढ़ वढ़ कांछ। भाड़ा इहेबा नात्रीरक !

धारे जमानक शास्त्र नाम (ए उम्रा रहेमारह, "कित्नारेषा फाष्टिना।" अहे शास्त्र अफ़ गाथात्रण मनक्षे के एत अर काशामिनाक मिथ्टि जानको। तक्काटित जानात्रम् शांट्य मञ्म। शांट्य माथात्र (तक् आहे-नत्र कृष्ठे अवर ভारात छैशत-निक्छ। क्षकाख अक-'शाना थानात मकन चाकात शातन करियाटह। भाष्ट्रत खिक्रत छिन्त श्रहेर्छ कारियाना कतिया भाषा युगिट थाटक,— त्मखरना नयात्र मम-मारमा कृष्ठे जयर हश्वदात्र रमाणात्र मिरक जक बिटक २८६४ मडन डीक रहेगा कारम

A CONTRACTOR OF THE PROPERTY O

षांद्य। এই পाতाख्या यास्रधाटन भरमद्रा रेकित कम शुक्र नहा। रेशामत छेभात जाड़ा-व्याष्ट्रि ভাবে অনেকগুলো नांचा चारक माथात्र डेभटत थामात्र डमाट्डरे खिह्दाक नामा मञ्ज दक्षाव—ञ्हाराचा सर्वगाहे शत्रवंद क्रिया कालिया कालिया छठि। शास्त्र ধালায় এক-রকম পুরু ও মিঠা রস পাওয়া यात्र, তाहात्र अक देशानिएडहे क्रक त्नमा हत्र त्य, माञ्च ज्ञान रहेका भएए। सरम्ब त्मार्फ त्य शारह ७८३, अहे गांह जागनांत्र त्कमत विश्व जारादक कफ़ारमा बाह्य । जायना क जिल्लामा कृष्टे, भागाबादनः इरे कृष्टे, जात्रभग्न कशात्र भाजाय गाजाय गाजाय गाजाय गाजाय गाजाय विका जाराज शानाय करत्र ।

विध्यमानमाम नाव

অভিনেতার সংগ্রহ

जा छान्।। বিখ্যাত। স্প্রতি তিনি l'edisons আভনম করে তাকেন। Magazine-ध अकि थ्रवस निर्श्वाहन — अ (थरक कि क्रू हश्रम करत निर्णाम

करवरहन, गार७ छात्र व्याचनम् वासाविक रूरिन অনেকথানি সাহায্য করেছে। ভার সংগ্রহ ভবিষ্যতে আরও অনেক নাটনে ভাঁকে সাংখ্যা করবে। তাঁর সংগ্রহসমধ্যে তিনি वार्यक व्यथा वर्षाक्रम । इकवात्र Zanzibai a ভার পোষাক দেখেহ তাঁব মনে হল বে । এই तकम পোষাক ওথেলোকে পরিয়ে তাকে তিনি বাবহার করেন। স্বাভাবিক করে ভুল্বেন। তথনহ তাদের গাইড় গিয়ে আরবটিকে ডেকে নিয়ে এল; তার কতক ভিনি ব্যবহার করেছেন, কতক व्यात काटक कछी-टर्गाटिक मण्यक कविद्या। क्याविश्व व्यवश्व कत्रवाव कर्य . १क्ट्रिक करों। (मक्षां क्ष्यं दश्ल युक्त व्यावयित शायाक Mrs. Lang किरन निष्ठ ठाइँटनन। त्म

· Matheson Lang একজন বিখ্যাত তার একটি পোষাক বিজ্ঞী করে গেল, সেহ ইতার অভিনয় চাতুর্বা শিখ- পোষাক পরে Mr I ang রবেলোর ভূমিকা

Zanziha# अर्ह श्रिक अपनि स्वाह वाफ़ीय कटिं। निरम्भिटिशन, (भहे किस (शदक जिनि षाञ्चिका, भाषाज्यम्, भिष्ठम, ठीन, भाषा Merchant of Veniec-এ माह्मदक्ष करहें निया है जानि व्यत्नक सम्म जनन कर-रहन वाडी व मुश्च-वन्ना करा स्ट्यहिन । ठाव मर शरहन এবং সেই-সব দেশ-ভ্রমণের ফলে এমন জনেক "भগে ভিন্তি জিনিষ ভার কাছে অমূলা। कछोशोश ९ जामन ज्याकातानि मरहार এकि. संद, इकरराश खूटा जात अक्याना (ए।या। अविधि मन्द्रका (पाटक काना। द्वांत्र खी मिं जिक वि वामधान (वरक्रेन वर्गा मार क (र्जाष्ट्रामा । ध हात्र हिन मारेनक आंत्र ररिशाला (मारक वावहात करतन। कुरका-(ब्रांक्) काश्वयत टबटक टक्या। (क्रांवायाम किन अक वृक्ष व्यात्रव रमश्टक (पश्टक भान, व्यक्तिक्षकांत्र, अथाना Zanzibır এव अक (मार्कान (परक दयना , परपरना (मरक जपाना

> তাঁব এই রকম অসংখ্য সংগ্রহ আছে। न्याहरू।

> > **औरमामनाथ मारा**।

नकलन

বিলাভ-যাত্রীর পত্র

এত दुन्न त्थरक को चान मधन रहान। कामाराज विति जागरक अनः जामान देखन भौषितक त्व मीर्च अवन

5

बार्व त्मरे ममबर्थ बीरब थीरब शकिमन शकितांब , टिंगा राज शक्तरा कत्रर्थ। जीवन युष्ट्रात बर्क मचरण स्क्रीर मृष्ट्रामः बाम प्राप्त सामग्री मया है हम्दक छैर्द्धि । सामग्री यो स्वित स्वाप्त वो विकास मध्या सक्तांत्र त्याक কাছে থেকে জোমাদের যে সাজুনা করতে পার্ভুম যায় কেননা আম্রা ওদের এক করে মিলিয়ে দেখতে भाषितम्, ज्यामका जात्र करत्र त्मिष् । ष्ट्रस्य मत्या व्यामना व्याच्या व्याना, टक्नमा क्यमकात्रमङ पद्यम मह्याह

व्यामात्मत्र विरामेष श्रीतांखन: किन्छ मिने व्यारमा व्यामात्र षात्रां जागात्वत्र जात्नां किल कारियत्र जात्र जनात्नां किल বিপুল বিশ্ব আমাদের কাছে এই সভা নতা বলে প্রতিভাত इस। आयदा चाटक वाल जीवन मिछ माई बाटला किछ তেতি খরের মত, দেইটুকুর মধ্যে আমাদের চেতন। विष्येष्टाद्य मश्ह्छ, दमङ्गिकृत मस्या आमारमत लीका স্থল। ভার বাইরে যে অসীম সভা আছে তাকে সামরা खीयनक्ष्या विक्रक वटन पूज करिया किन्न स्थारिक चरत्रत मध्य बाङ्गरत्रत्र रयमन नित्रविश्व रयान. যেমৰ এই ঘর ও বাহির এবই সত্যে বিমৃত, তেমনি, जीवन ७ मुकुात मायशारन एकारना मङ्काल वावधान (नहें **एक्टाइ मध्या घन्य त्नरि—्या**मरा व्यामात्त्र दरायमाक्तित्र ক্ষণিক বিশেষত্ব ৰশত অংশমাত্রৰে একান্ত করে জানচি वाक गमा अंत्र माधा एक प्राप्त भारत त्यभाग कारमा वामरम काम रमथान तथरक सारमा मदन (यटक शास्त्र किन्छ काभारमञ्ज विश्व मदत्र यादव ना.काभारमन चाखात्रका मनान अन्य करवर धांकरच। व्यवक मनारक सीयम ७ भूष्रा कथनर विक्तित कनत नात्र नात्र को राज्य আমরা যে সভাকে পেয়ে আননিকত আছি মৃত্যুভেও व्यामना त्मरे में एकरें भाषा नात्व किया छित्र भिष् क्टिंग , co, तम भारत करत तम दुनि अंत्र मादक श्रावित्यतः — এই मछाद्रेक् निषठ छ। व स्वित इस स्व कारवार्ट ७ তার মা, আছে অককারেও তার মা আছে। জাবন मुणु मयरक अध्या त्मर मिलम म अ-- आमना तुथा **एएय कैंकि कोरानरे भागता महा**दक शारे, गुजारक

मछाटक शताहै। किन्न विषय श्राद्यत मुर्किटक दम्ब, সে মৃত্তি আদন্দ মৃত্তি। চারিদিকে তক্ষলতা পশুশালী वार्ष भारक गणिक करें जानम विखान करा : बिर्प शार्षत्र व्रष्टे शानम त्रा कि कथन है है कि बाक्राड * পারত যদি মৃত্যুতে কোনো সভা না থাক্ত 🕈 আনর৷ ডোট গুদীপে কডটুকু তেল দিয়ে কডটুকু भन्न को का नाहे। किन्छ । मिन्छ । मिन्छ । मिन्छ । मिन्छ । किन्छ । मिन्छ । मिन्छ । मिन्छ । मिन्छ । मिन्छ । मिन्छ (नर्व किन ? (कनना এकथा निन्द्र काना जाए द्य, त्म निर्णाल पूर्वा कथरमा निर्णात ना। विरयत मर्था मर्था-প্রাণ্ট হচ্চে অনিব্রাণ সভা,সেই জক্মেই কুম্প্রাণ নিবলেও ভাবনা নেই। যাওঁ যা হা তাকে প্রাণের দৃষ্টিতে (मथिक, (मई हैं।-८कई वियान कत, नां दक नग्न। क्षाक्रशायक विषान कत्र कुत्रामांटक ना। व्यामाटकत्र চারিদকে জগৎ ছুটেড পাণ এই অভয় বাণী ঘোষণা कब्राह, शृकु। (कामाशाहर मह रागीक निक्रक कब्राह । यथ वार्यगाद जाम स्थारक रयन मुक शांत्र मा रक्कार भारत विश्व किहूटकर मुक्ट भारत ना। स्ट्रा टिमानि आर्भन हिल्म फिर्य एक बार्फ किन्न अभिटक कथन्त्रे लाक्ष्यः करत्र निमुश्च कत्राक भानत्वना । व्यज्यव মনকে শাল্প কুরে পাণকেট তোমরা স্থাকর মৃত্যুকে ना। योटक छोटा द्वरमित, शास्क मठा वरण स्थापन দে মৃত্যুতেও সভাই আছে এই বিখাস দৃঢ় রেখে শোক (थरक प्रनाक भूक करा।

भाषिनिक्त, कार्षिक २०२१।

कविवद्ग (मृद्यन्म्नाथ

কবি দেবেজনাথ সেনের মৃত্যু হইরাছে।
প্রায় ষাট বৎসর বা ওতোধিক কাল বয়লে
ভিনি ইংলীলা সংবরণ করিলেন। জীবদশার
ভাহার কাবা-সাধনা ও অন্তান্ত কীর্তি সাধারবো প্রচার না হইলেও পণ্ডিত এবং রসিক
সমাজে তাঁহার জনাধারণ কবি-প্রতিভা

मकल करें व्यक्ति क्रिया क्रिया है। यांश्मा माहिए छा जिन कि भिया शिया हिन, व्यक्ति क्रिया है। है। विकास क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया



कविवत (मरवसनाथ

कारनव उज्ज्ञन क्यां जिककरण जिनि वित्रमिन जनाग्र क्रमिशाञ्चलक जानन यक्त कशिद्यन।

রবীজিম যুগে যুগনায়ক মবীজনাথ ব্যতাত मामग्रिककारम वाश्मा कविकात विभिष्ट कोर्डि जार्जान क विशादहन, मिरे प्रकार कृषात्र ७ (प्रतिस नाथ जान डेन्डर शहरनारक—the greatest and the last of the Victorians कारण - त्यार्थकनात्यव मुद्दा मध्यात्म अकृषि वित्यव

একমাত্র রবীজ্ঞানাথ এথনো নিত্য-নৃতন রশ্মি-প্রভাগ বাংলা সাহিত্যের ভামসী নিশাকে ভাষার স্বাধিকার হটতে দূরে রাখিয়াছেন, नम्बानकोत्र महाद्वीरगान मस्या अहे पाछि-विक भोजागा-धात्र दश्यांट्स, जयता जिनि वार्ट्स विभा क्रम सक्ष सक्रिक रहेगा बार्ट्स, मि वित्र मान उच्छन चाटक, वस्ट्रज चिक्र-हाक ज्ञान रग्नार !

ত্ঃথের কথা এই যে তাঁহার প্রতিভার পরি-**छत्र व्याक्तिकालिकाल मा**ङ्गि ठा-मभाटल ८कम् काँकां व नारमञ्ज्ञ भगावित्र इवैद्यारक। व्यत्नरकर তাঁহার উৎকৃষ্ট রচনাবলার সহিত পরিচিত नरहन। পুराठन 'ভারতা' ও 'সাচিকা' পত্রি কায় ভিনি যে নৃতন রসধারা প্রবর্ত্তিত কুরিয়া-छिएनन, डाँध्रेय शिंडिखा । महे माध्रान्तिन भारत्य कथा व्यत्नदक्षे कार्न्स ना-काकात्र भौगिक कश्रमा, व्यान्ध्या कर्मत्थाण, <u>१</u> চমৎকাব ছ-দঃভ্রোত ও বিপকুশল সার পরি। র भार्टिक इष्ट्राण १० ४० वा २० वर्भरवत्र भूटिक कार बाजा भार काराज करा व्यक्ताजन वहना-खिनिट , रिश्न (य कड वड कमाविम् ছिन्न ভার প্রমাণ তেমন পাওয়া যাত্ত না। কাজেক व्यामि लक्षा कतियाकि, वर्धमानवश्लीय कर्ति बाह्य गारि हारभागी यनकडे टीकांत्र कावा चारभावनात्र छेदमाः शकाभ करवन । ভाषात भारति । स्वाप्त प्राप्त कार्या किए क्या 'वाभाक खळ ७ वानक मिन शृत्य लागित छ হইয়ছিল-পুরাতন সংস্কাণ বছকাল নিঃশেষিত रुहेशाटक, किश्रामन श्रुटका धारामन कावा-श्राप्त कार्या कार्या क्या नाह । जाहे তাঁহার সমাক পরিচয় অপেক্ষাক্বত সংকীণ (कर्दा का वक्षा

प्रतिस्ति। एकालां वर्गाद्यदा
मक्ष्मात्र नारम পরিচিত। एकालां प्राच्छा।
मरुक्मात्र नगरम छोरम हेहारमत्र व्याम निवाम।
स्थात्र छहे भूक्ष्म यावद हेहाता छ छ वरस्मत्र व्यश्च
एहे- क्ष्म भाभा भाष्ट्रम भवामा। क्षम स्थामकार्यार हेहाता मक्ष्ममात्र छेभाषित्र भित्रवर्छ
मुग कूण-मरुखा (मन (छश्च) छेभाषि छार्या
करदम। তাঁহার পিতা अनुवीनादावन (मन

बायमात्र-छ्रेनारका वद्य छात्राविभवारम् मरधा ९ সভাব-গভ উদারতা ও দানশীলতা, আন্তিত-পালন প্রভৃতি নানা সন্ ওপের আধার ছিলেন। াক্ষ হিনান ও, ভাঁচার ভাই-ভাগনীবা डींशास्त्र अमाधात्रण खन्यजी सम्मीत ক্ষেচ-শাসন ও শিক্ষা প্রভাবেশ বাল্যে ও (योग्टन एक-किছू मम् छर्नद्र व्यक्तिकादी करेंग्रा फिल्म । डाहारम्ब कोचरन धडे महोत्रमी नाबाद প্রভাব যে কভঝানি ছিল—ছাদয় ও মন, উভয়ের বিস্তার লাভে ভাঁচার ক্তিভ যে क डणानि, डाङाव । ववद्रभ खनित्म खाञ्ड्या क्ट्रेंटिक कथा . स्ट्रांथ छः दथ, ानर्जा अन्य ० अर्थ-कुक्क छात्र मरधा । गर खनना कथरना महान जामर्भ इंडेट डीझानिश्रंटक विद्वार कहर क दलम जार । म नवार देशांद्र न , यहां आ नं ड निঃ यार्थे भर्ग । अ भर्ग का भन का देशा अल्भ थाना । मल्खन बह सननो दिन वी व जिल्हा । অতিক্ত চেষ্টাম এক সংসাবে কিরুপ স্মারিজ हरेशारक काम भारतिकतिराज्य मर्या अवितित नारु। मर्वानम वार्थना ३ क्यून के केंद्र चिन मञ्चानामगरक वैक्ति एक एक्ट्री करिएकन ; शब्दा भारत विकास निर्माद क्रिक भाविक ना। भदभाहित्छात्र आल्गाहनात्र छाङ्ग এত অমুরাগ ছিল যে শেষ-বয়সে তিনি এই नियम कार्याक्रिकन, त्य श्राष्ट्र कान छ निर्मिष्ट मगर्य वधुत्रा भागाकत्म द्रकान अम्बद्ध भाक করিয়া তাহাকে এ:ং অপর সকলকে শুনা-ইবেন। সংগারটিকে তিনি ক্লেচ-প্রীতির नौनानिएक उन कित्रमा आधिमाहिएनन।

এই শিক্ষা ও বোধ করি, তাঁহার পিতার মুক্তপ্রাণের অধিকারী হওয়ার দেবেরানাথের কবি-শক্তি ফুরিত হইয়াছিল।

তিনি অভি অন্ন বয়সে কৰিতা লিখিতে व्यात्रस्य करत्रन। উष्टिन स्वावतानि व्यक्तविम नितिनियरित्रत मन छैरमात्रिक हरेक । क्राम मिर ভাৰ ও ভাষা গভীৰতন কইয়া—ঘোৰন-প্ৰান্তম लगरमञ्ज चलाव-त्मोन्सर्या ७ च्याण्डर्या देनभूर्या ভূষিত হইয়া বঙ্গভারতীয় চরণহয় ও দীর্ঘ-नुष्ठिक व्यक्त-প्रांख श्रीरापत्र त्रदक मार्ग-माम कतिशा निशारह। जिनि अधन रयोवरन मानन-मक्तित्र क्षथम क्षकान-मूर्थ পन्छिम इंहेर्ड याश्माम बाजशानीटा विश्वा-मिका कतिए वारमन; मरकक मथुरानाथ ७७ नर्गात्त्रत কন্তা, ও প্রসিদ্ধ সাহিত্যিক শীযুক্ত নগেজ नाथ श्रश्च महाभएत्रत्र एकाष्ठी छिंगनीएक विवाह करत्रन ও প্রোসডে জি কলে क केटल वि, এ পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হন। পরে অধিক বয়সে जनारायाम रहेटल रेश्त्राको माहिटला जम, ज উপাধি গ্রহণ করেন।

প্ৰথম কলিকাতা-বাসকালে তিনি যে সঙ্গ ও সাহচ্য্য লাভ করিয়াছিলেন ভাহার তুলনাম বৰ্তমান দাহিত্য-সমাজ প্ৰাণহীন। তথন বাংলা সাহিত্যে বৰীজ্ঞাযুগের **क्टा** মাত্র হইভেছে। অমৃত-পিপাস্থ ভরুণ **(मक्टारमंत्र अपूर्व मरमागरम वानीत अमान-**भारत एय नवीन ख्या कानाव कानाव खब्दा উঠিবার উপক্রম করিয়াছে, সেই রদর্গি **'कोश्टा**त्र कन क्षमन भारतकनार्थत क्राह्यत्र-वीशांत्र अधिश्वनिक रुदेशां क्रिया । तम ज्यानत्म পরিপুট হইয়া, সে সৌহাদ্য ও সমপ্রাণতায় আত্মশক্তিতে আস্থারান চইয়া তিনি জন্ম माज्याम रून नारे। यम माहिएछात्र रेजिशाम करे गुनमित्र एशोत्रव कविषाद वरनीटन्नना कीर्यन कांब्रायन। कल जाना, कल उरमार।

কতদিকে কত নব নব প্রতিভার উন্নের, তার পরে কত কোটা, কত বারা। দেবেজ্র নাথের প্রতিভা এইরপে সেই নব-জাগ্রত স্টিশক্তির কেব্রস্থলে আপনাকে স্থাপন করিয়া সাধনা ও সিদ্ধির পথে অগ্রসর হইয়াছিল।

ভারপর পদ্মী-বিয়োগ—দারান্তর-গ্রহণ— ওকালতী বাবসাথে সকলতা। তাবপর একমাত্র পুত্রের বিয়োগ-ছঃথে শোকোনাদ— ওকালতা-পবিত্যাগ—কত উত্থান-পতন। কিন্তু প্রথম হইতে শেষ পর্যন্ত প্রাণেষ মধ্যে সেই বে আজন্ম-লব্ধ কবি-প্রেরণা, তাতা হইতে কথনো তিনি বিচ্যুত হন নাত।

প্রায় কুড়িবৎসর পূর্বের যথন কলিকাতায় कितिरमन, ज्थन (भर्नस्नार्थत्र व्याक्ति। পরিবর্ত্তন হইয়াছে। তাঁহার কবিতা জ जीयन এक ছিল, छोशंत्र वास्त्र कोरानन्न মাহা কিছু সভাকার মত্মকথা,যাহা তাঁর বিখাস ছিল, ধর্ম ছিল, তাহাই আবেগ ও কল্পনার जक व्याध्यक भारतिक भारतिक हमाः-त्यादि खिथानमा छिठिछ। जागनाटक विमारेमा আত্ম-পর ভূলিয়া, এমন কি সাংসারিক कर्दिरा खानरक छ विश्व ७ इहेग्रा, निर्खास णिखन्न खान्न गत्रम मदन खोरनिहारक हिन्दारमभ-<u> भूग नाविचिविद्योन व्याद्यरात्र शर्थ कृष्टीरेश</u> यथम छाठछ छाडिषां भारेटमन, छथम र्ठा९ डाङ्गत मानम-नाम अकछ। पूर्वी काणिम-बात गणि नार, बात क्षमात्र नारे, विकास নাট; তাঁহার লৌনাধ্য-প্রীতি ও প্রোম-कझनांत्र धकछ। वायन পफ्नि—८ श्रम-त्नोस्तर्यात मरक विश्वमक्तन-कन्नना, खानवक मृखिटक व्यक्तिक रहेग। क्वया-मामान व्याभगारक

ना दीबिश, वडिं। मक्क निष्कद्रहे मानम- এकमाडा व्यवन्यन डीहांद्र 'পাঠশালা' यथन সম্ভূত অথচ পৃথক্-কলিত এই জীক্লফ বিত্তাহের সমুথে ভক্তির শাসনে আপনার अक कामप्रदक मुठीचेग्रा धतिया किनि कर्य-সক্ষাদের সাধনা আরম্ভ করিলেন। এই সময়ে এই ঘুর্ণার প্রচণ্ড-বেগে তিনি ঘর-সংসার ছাডিয়া কৃষ্ণপ্রেম-প্রচারে প্রায় সমগ্র দক্ষিণ ভারত পর্য্যটন করিয়াছিলেন-প্রায় (को नीन रक्क ७ एक भूग-वामी कहेता क नमरत्र ভিনি कि छ्रिम উन्मानमात्र বলেই এক। গ্র-চিত্তে দকল বাধা, দকল বিল্ল অগ্রাহ্য করিয়া Srikrishna Mission, Srikrishna Review ও শ্রীকৃষ্ণ পাঠশালা প্রতিষ্ঠা করেন i কলিকাভার শ্রীকৃষ্ণ পাঠশালায় ইতিহাস व्यत्नदक्षे कार्नन, हेश्त्र कार्ल्य व्यक्ताम्य ৯৪ পরিশেষে আকত্মিক পতন, কোনোটাই चार्चाकनक नम्। शक्ष कझनात्र मरभ यमि जीक कर्यवृद्धि ना शांक, व्याष्ट्रमिक्टिए षाणाधिक जान्या, मत्न मत्न "कद्यारश्चुत जागृह इक्ष (माइन" कता (कारना कर्षा मकनरः कांभवन करत मा। कृषि एएएवल्समार्थ हिन् मिनरे कवि, এक्वारत আত্মবিশ্বত মোহাভি-ভুক্ত,—সুন্দর ও মলল-এর অন্ধ উপাসক, যাহা मत्न करत्रन छाहाहे मछा, এवर याहा हेन्द्रा করেন ভাহাই শুভ-এই রূপ বুদিবুভির गटकां छोरांत्र जीवनटक यावशांत्रिक पिटक निष्मण कत्रिशाष्ट्र। छिनि (भव जीवरन गरमात्री इहेताहिटणन। किस আবার मरमात्र ७ कडाना, ७ छ्टेरबर धन्य कथरना छारात्र कीवटन ८मटि नारे। हेमानीर िनि चकान-वार्ष्टका खेशनील इहेग्राहितन, मिक्टिकत ७ हमूत्र श्राष्ट्रा महे हहेशहिन।

আচ্মিত বজ্ঞপাতে চুৰ্ণ হইয়া গেল, তম্মন क्टबाखम् ७ क्टबादमार रहेशा खर्शक्षम् प्रारक्ष-শাপ তাঁহোর । অধুনা-প্রবাস-ভূমি দেরামুনে कित्रिया (शालन, अवश मिरेशानरे त्याथ एव मात्राकीं बटनत्र कल्लमा-षद्धत्र व्यवमादन मः मादत्रत्र सारमाद्यत मृद्धा (अब निःशांभ कत्रित्नन ।

म्बार्यक्रमार्थं कोचन वाहिरतन विक विन्रा प्तिथिवात नम्-एन प्तिथाम नम्पूर्व छिन्छ। रमशहरय। नर्कविथ निग्रयत्र वाहित्त (य, তাহাকে नहेश जमारक विस्मर्कः मःमारत्, সাংসারিক নীতির আলোচনা করিলে, मठारक পाएशा बाहरव ना, मिणाबह उद्धव रहेरव। वाख्यारमरण यभि त्यान कवि कवित्रा থাকেন, যাঁহার জীবন বা চরিত্র-বাথ্যান क्रिएक रहेरन मश्मांत्ररक, यांष्ठव ভान-मन्नरक একেবারে ভুলিতে হইবে, ভিনি দেবেজনাথ; खांश ना रहेल (मरवसनाथरक किइएक्ट मका कत्रिया कामा घाडेरन मा। कवित्र कथा "यबन मिरिद्य ७ भम्यूगन, मिरे मित्रिक रूदन"—'न त्रिक' ष्यर्थ की यदन-भवा जिक—हेशांव कांत्रण या व्यर्थ कवि तन नाहे; किन्द त्रार्थश-नाथ जाननात्र जीवत्न छारात्र जर्भ स्नाहेत्रद्रभ कतियां नियार्छन।

८मटवसनारथेत्र कांटवाध यांचा, छाँचात्र बीयरमध खाराहे धारण हिण, कारणभहीन व्याचा थाना प्रमादित शांदन नत्र, नदर्शक्तित्र बात्रा তাহার অমুভূতিতে যে উলাস, ভাহাতেই সর্ব ভূবন তাঁহার চব্দে রাগর্মিত হইয়াছিল। गर्क कथात्र श्रांभ ७ मन योगरक जामता त्व तका निर्देश क्रिन्-दमहे हुहे-जत भर्षा

প্রাপের অকৃষ্টিত বিলাসই তাঁহার কর্মনার। —তাঁহার সমকক আর কেহই নাই। কেবল শক্তি সকার করিয়াছে; 'মন' জিনিষ্টা তেমন " প্রাণের আবেগ বিশালভর ছিল, artএর মধ্যে कीवन ७ कश्देरिक है जाशनात्र आर्वत वरक ছোপাইয়া তিনি কুন্দাবন-স্বপ্নে ভোর হইতে চাহিয়া ছিলেন। কীটদ্-এর মত তাঁহার sensuousness & intellectual, objective नम; कश् ७ निका मरशा क्ष मानिएन नाः अहिं छेत्र তিনি মত व्यापनादक भूषक कांत्रग्रा वाधिशा, कांश्टक এक টু पूरत धतित्रां, िखा ७ थारनत्र সাহাযো রসাসাদন করা তার ধর্ম নয়, मश्रीय मार्ग्य नग्, मज्ञ विश्वत्यंत्र श्रीर्थमग्री डाँहारक এই न्डन ভোগপছা ও আনন্যাদের কবি করিয়াছিল। Sense ও Dutyর বে conflict তাহা তিনি বৃষিতেন না, আপনার ष्मानन-विश्वान छै। हाटक ष्मात नर्क-विषय शक কবিয়াছিল। সেই জন্ম তাঁহার কাবা, অভি ष्मशूर्व-मधुत्र रुट्रेटन ७, कीवरनत्र मात्रा वर्भरत्रत नको नव, टक्वन উৎসব-রাতে, জীবনসংগ্রানের ক্ষণিক অবসত্তে অনাবিল প্রীতিহান্তে আমা-मिश्राटक मुक्क करत्र। किन्छ मुक्क त्म क्य कित्रवह---সে 'ভাবে' sinfection কাহারও রোধ করিবার मिकि नार्-- (म अमनरे महक, मनन ७ स्कर। खाँचांत्र कारवात्र अन्निमन महीर्व इहरणख শৌশকতা ও প্রকৃত কবিশক্তিতে এ যুগে— भारक राषीक्षणां कारकशार योग मिश्रो

माज প্রাণের অভি ভীত্র শাসনে ভাষা, ছন্দ, ফুটিতে পায় নাই। ইহার বাঁদ বিপরীত ও হুর কেমন করিয়া আপনা-আপনি আকর্ষ্য इंडेज, करव बांश्मा कांद्रक जामत्रो धकि देनश्चनां कांक्र कमात्र निमर्मन इंब--uncons-খাটি Keats পাইতাম। সুন্দর-পিপাসার cious art এর কথা যে সত্য, তাহা দেবেল-সজে ছঃখ-বোধ ভাঁহার ছিল না। ভাঁহার নাথেক প্রতিভার মধ্যাক্তকালের রচনা পাঠ कतित्वा (वर्भ वृक्षा शाहेत्व। हेश्त्राको ७ मश्कुक जिनि षानम परवर्ग करत्रन नाई-- এই कार्या छैं। हात्र श्राह्म श्राह्म श्राह्म कार्या माहेरकन ७ ट्यम्टरम् इ প्रकार कार्य উপর কিছু কিছু পড়িशাছিল—বোধ হয় হিন্দি কবিতাও কিছু কিছু চর্চা কবিয়াছিলেন। ভাহার ছন্দে যে একটি অপর্য ঝন্ধার আছে, ভাঁহার আরুত্তিভেও সেই রূপ এক অভি মধুর প্রর-ভঙ্গী ফুটিয়া উঠিত: তাহার মধ্যে যেন তাঁহার প্রাণের স্থন্দর-সভোগের সমস্ত রস ঢালিয়া দিতেন। তাঁহার সহিত বাঁহারা সাক্ষাৎ করিতে বাইতেন, অমু-दा**ध क**त्रि**णरे जनर्गण जावृ**छि कत्रिया याह-তেন। এমন সামর অভ্যর্থনা, প্রান খুলিয়া वृत्क कतिया मध्या, जाम काषामञ् प्रि नाई।

> (परवस्तारथका औठ मरशास्त्र—िन मर्याकाष्ठ । मधाम मर्कापत्र वीयुक त्रारकस নাণ সেন ওকালতি করেন, তিনি হুই বিষয়ে जम, ज। कृशीय महामय ४ छ ट्रांसनाथ दमन श्रविक्रणा लाक किल्म-त्यमन माहिलास-রাগ, তেমনি স্বভাব-ধার্মিকতা, সান্ধিকতা, বিনয় ও প্রীতি তাঁহাকে আন্দর্শ গৃহী করিয়া-हिल। जिनि धम, ध, वि, ग, — मवस्य हिला। डीहात कवान मृजाटक मरमादत हामित कारमा व्यत्नकथानि निविद्या निवाद्यः। उद्धे मध्यापत बडीक्रमाथ रमन स्कामड डिमापिशकी नां

Y ; #

हरेलि लगा गिष्ठि, स्राव्यक, मर्कारमण जोक्यी-मन्नम - जिन बाक्यी कि-स्मर्क वर्णागांक क विश्वाहन - এक ममरब এकाहावास ब हम-भद्दी हेश्वाकी भक्क 'Citizen' এव मन्नामक हिल्मन। मर्कक निष्ठे छाः श्रीयूक स्राव्यक्याध-राम अम, अ, अम, अम, कि महामन्न स्वसूना अमहावाह क हिल्म।

শ্রাভগণের মধ্যে মেবেক্সনাথের প্রভাব বিশেষ করিয়া এই কনিষ্ঠ সহোদরের মধ্যেই লক্ষ্য করা যায়। তাঁহার 'হিন্দোলা'ও 'ছুবার' নামে জ্লখানি কাব্য ইভিমধ্যে প্রকাশিত হইয়াছে। তিনি বেমন পণ্ডিত, তেমনি বিনয়ী ও মৃক্তপ্রাধ।

टी माहिजनान मक्समात्र।

পৌरেय काद्वलाश

त्नीत्यत्र हाख्या त्वत्र, गा कत्त्र भित्र भित्र !
त्निम् जून थानि कत्त्र' त्नाम् कन ह्हार्फ छोत्र!
त्निथा यात्र कार्क छह नाद्वित्यन भरवात्र—
क्रिमोत्र नाक-कता हार्जनिहि त्नरव्यत्र!
नीनिमात्र मोन ह्हार्ट्श गाह इत्र मोन त्रह्र,
क्रिस्त तृत्न यात्र कार्कात्मव त्रह्र-हृङ्क;
त्नीत्वत्र हाल्या त्वत्र, भर्फ यात्र त्रक्तृत्र,—
वाथा ह्ला हृन ह्लाक्य क्ष्मुत्र १ कम्बुत्र १

मिल दिरं देख्दिय यम शर् हेल् हेल् हेल् —

व्यादिय भीष हेक् बार योग — हल हल् !

कांशित्व कि मूर्ति कांगि माना हक् हक् —

वाध द्यान व्याध-छात्र मियानात्र छथ-छथ!

ठेवा मात्र हज़ारत्रत, बत-कात्म छए यात्र,

दिश्य-हाथ हाथ, व्याद दश्य- दश्यक व्याक्त,

दशीर्यत्र हाथ्या दश्य, शर्फ यात्र दश्यक व्याक्त,

वीधा हत्ना हुन द्यात्र कक्त, त ? कक्त, त ?

থিলি থেয়ে হাসে যেন থিল্ থিল্ বককল—
তর্ননীর রতিম কর্নেব ওই তুল।
বোঝা ভাব— কাঁচলো কি পাক্লো ও কংবেল
লাজনীলা বধৃটির যেন রীত-আকেল।
ললতার মূল থোক—বক-ভরা,মো ও'র,
শেষ করে মৌমাছি মন-পাওরা মন্তর।
পৌলের হাওয়া দেয়, পড়ে' বার রক্ষুর,—
বাঁধা হলো চুল ভোর—কদ্র ? কদ্র ?

নট কনা চট কনা ভেঙে দেয় ছ'চোধের—
পিয়ে যায় প্রেয়ণীর রূপ-রূস ওঠের।
সাত গুছি কুচি ভোর, খুটি কুটি কর্ সায়,
বেঁধেছিল্ মন মোর বিউনির ফাঁস্টায়!
উডে' যায় পাথী ভই একসার—ছইসার,
থাক্-ভাঙা বক যায়,—সাম নেই গুণবার।
পৌষের হাওয়া দেয়, পড়ে' যার রুজ্র,—
বাধা হলো চুল ভোর—কজ্র দ কজ্র দ

নান্তিকের গণ্প

बाहे माहे, जाटक विन कांत्र।' जगवारमय 'भगाम काजि-পश्चिक्तपत हिक वरम हिलाम, হাতের তৈরী জীব হয়ে, ভার থেয়ে দেয়ে, 'There are more things in heaven তাঁকেই আবার আমরা কিলা অত্থাকাব করে and carth than are हे जिहारम ध-महत्त ब्रक्स निमकहात्रामि ७ कथां - गर्खा ध्यम जातक किছू जारह या मख नग्न । जामाराज जानरकत्र काना जार्छ किनिम च्याटक, त्यक्षिण कार्य दम्या यात्र ना, मकरक मरनव शारा नार्य ना, ज्यू मजा! अह ষেমন বাজাস,এটাকে দেখুবার বো নেই—কিন্ত ম্পাৰ্শ কৰেই বুঝাতে হ'বে যে এ বড় বেজায় জিনিস। মিলের তর্কে এটার ঠাই হইতে भारत, किन धमन किनिम एउन चारह, य-প্রাল পাঁচটা ইন্ডিমের কোনটার ঘারাহ অমুত্র क्या का जरूक नम, जरू धारनम बाजा **८म मंकि गांक कत्रांक ह्या है: दिक्रोट**क कहलानि Transcendental—हे जित्र व षाडी उरमा अह (यमन छ श्वान्टक (१९ इ रता, এर बार्जीसियात पत्रकाय-नामागाठा (ठाथ किरम दिन्धा यात्र ना। कार कथात्र वदन 'विचारम भिनास कुछ छ के वस्ता!' धरे বিশাস—Faith তর্কের বিষয়ীভূত নয়, তাই मिला प्रभावात्म काका हिन मा। जिन क्रायान् मानटकत् ना। किस धरे भाषिटकार्ये 'नका-मस्क्रम पूर्व, शाकारक वक् वक्षाया

क्रको कथा आमता रवन कानि, 'यात निरक Cbए महाकिन (नक्निमेत धूर क्रिके dreamt त्यांना को क्रिकी देनी होन्। जगरजत of in your philosophy. अर्थ ख পাজিতো ধরা দেয় না। এই সব বুঝতে তর্ক-শাস্ত্রের অনুত পণ্ডিত মিলের কথা হলে, মনের বিশাসকে আমল দিতে হয় এবং (John Stuart Mill); তিনি ভর্কের ফশিল ভাই নিয়ে থ্যানশক্তি বাড়াতে হয়, ভগৈ না---বার করে শেষ্টার এই হলেন যে ভর্ক ছাড়া দেখার জিনিস দেখা যায়। মিল ভক্তের कान किनिम वर्ष এकটা বিশ্বাদের ধার বৃত ছুটিয়ে শেষ জীবনে মৃত্যু শ্ব্যায় যধন कारक आगरक मिरजन ना-कि इक करक छ। न स्मर्थन एवं आहे । को वन स्वर्ध गांकी লাই, তথন তাঁর বন্ধদের দিকে চেয়ে বলেন, ভেগবান নামক কোন ভিনিষ ভোমরা বিখাল কর ?'

मक टाइ वरण डिठेरनम, 'धूव — मिन, जीवन थाक्टल क्रिक वरण याल, जनगान আছেন, ক্ষমা পাবে।' তথন তক রাজ শেষ নিংশাস টানতে টানতে বল্লেন, 'If there be any God, let Him forgive mie.' जगरान यरण दकान जीव थाकरण, আমার কমা করুন। মৃত্যুর গলা টিপানি খেমে ভার মুখে এই নাম বাহিব হল। किहांभन चारण विलास्य अक्टा महात्र काख रात्र त्राण, त्म. रात्र अव नाचित्यत्र मछा,---An assembly of atheists. The ग्रव मरन मरन किएक ग्रह्माशंक दिव करत এक बिराडि मखात्र चारत्राक्षन करत्र रक्षम्रामन, লেখা হইল, 'God is no where' কৰাং
ভগবান্ কোথাও নাই—এ একটা মন্ত ভূল!
ভারপর ভোট লওয়া আরম্ভ হল, সকলেই
ভোট দিলেন ঈশ্বব নাই—যিনি সভাপতি ভোন
দরাজ গলায় সে বিল পাল করলেন। আর '
অমনি ঘোষণা হল ঈশ্বর থাকলেও পৈলান
পোলেন। ঠিক এমন সময় এক নান্তিকৈর
ছোট একটা ছেলে সেই poster এর (লেখার
দিকে) দিকে চেয়ে আপনসনে জোর গলায়
পড়ে গেল, 'God is now here' শোনবামাত্র
সকল নান্তিকের পিলা চম্কাইয়া উঠিল, ভারা
লব চেয়ে আশ্চর্যা দেখলে nowhere কথাটা
কেমন ভাবে যেন কার যান্ত্-মন্ত্রে 'now
here' হয়ে উঠেছে! ক্ষুয়ে শিশুর কণ্ঠে
ভগবান্ জানিয়ে দিলেন 'ওরে ভোরা

वम्हिम् व्याम त्नरे-- এই त्मथ् कथान काँ कि वाभि वाहि!' उपन वात्र बात (काथा । त्यांत्रत्थां व थरफ त्थां म्यांका वानदाव भूक रमरे नाश्विरकन्न पन इज्रहक रुष (क (क्शिन भटन भड़न। र्थोज शहिन ना। Trench शास्त्र এक চিত্ৰ বাহিন হইয়াছে, এটি অবশ্ৰ ব্যঙ্গ চিত্ৰ। একটা বিশাতী গোরাকে এক মিশনারী · वनदान, 'औद्धेरक कि कूनियाह ?' दनना गिक्न-'Christ! what is his num-গ্ৰীষ্ট কই হিনিনা—সে ber !—वरहें অবগ্রন্থ আমার মত সৈতা হবে, তার नश्त कछ ?' नाजिक का किकरण हाति शिक আপন পাথায় ঢাকছে, এ ভারই একটা ইঞ্চিতমাত্র।

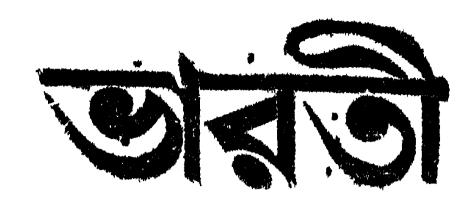
क्षेक्रिक्ट हें विक्रिक्ट विक्रिक्ट ।

मयादना ह्या

A Short History and Ethnonology of the Cultivating Pods,
by Mahendranath Karan. Published by
Rai Charan Sardar B. L. Diamond
Harbour. Dt. 24 Parganas. Kuntahne
Press. Calcutta. Price Superior edition
Re 1/-; Popular edition annas ten only.
और अप्रधानिष्ठ পোष जाण्यि উৎপত্তি, উচ্চামের
जीवन-पाजांत्र ध्याणी ও উচ্চামের সামাজিক जाण्येतवावश्य अपृष्ठित विवय विश्वताद्य जालां हिङ इर्टेशारह।
भाषा ও ইতিহান-এতাদি হৃত্তে প্রত্নার নিপুণ ও
নিঃসংশক্তাবে প্রমাণ করিয়াছেন, পোষ জাত্তি
পৌত কর্মান্তিই নামাজ্য,—ব্যক্ত বা অভ্যান জাতি

হইতে ভাহার উৎপত্তি নহে। মহাভারত, শ্রীমন্তাগবত্ত, হার্মংশ, মন্ত্-সংহিতা, মৎক্রপ্রাণ, কুলচক্র প্রভৃতি এছে পোদ বা পৌজুক জাতির উল্লেখ আছে। অনার্থ্য পোদ জাতির সহিত cultivating পোদ জাতির কোন সম্পর্ক নাই; বাঙলা দেশের ধীবর জাতি এই অনার্থ্য পোদ জাতির অন্তর্জুক্ত। পোদ জাতির সম্বাভিত্য পোদ জাতির সম্বাভিত্য পোদ জাতির সামাজিক আচার-ব্যবহারের সহিত প্রাচীন ক্ষত্রির জাতির বিশুর কার্যান্তর সোসাদৃশু আছে। প্রস্থপানি পাঠ ক্রিয়া লেখকের সত্যান্ত্রসন্ধিৎসা এবং তথ্য-সংগ্রহে বিপুল উল্পন্ন ও অধ্যবসার দেখিরা আমরা পুলক্তির হান অধিকার ক্রিবে। বাঙলার জাতীর ইতিহাসে এ গ্রন্থ বিশিষ্ট ছান অধিকার ক্রিবে। বাঙলার প্রভার জাতার প্রভারের প্রচার বাঞ্নীর। প্রম্বের ভারাক্ত বেশ সহক ও চিক্তপ্রাহী হইরাছে।

শ্রিসভাত্রত পর্যা।



88শ বর্ষ]

यांच, ১७२१

১০ম সংখ্যা

অবতার

ठात्रिमिटक অমুসন্ধিৎস্থ कतिएक माशिएमन, एमिएमन, भश्रन-कक्षि आत्रामश्रम इटेटमक माविन्दि-श्रामारमञ्ज (यभ बात्रात्मत्र र्केस थूव मामामिशा; किछा- स्रम्कात्मा बाग्वात्यत काह नित्रां यात्र मा। চন্দের অত্করণে তৈয়ারি একটা গালিচায় चरत्रत्र रगरक चाक्हामिङ ; युविमान भन्नमात्र जान्ना-नवका छाका, काश्रद्धव मछ स्विध्छ ममान-८५१क मनुक कार्शस्य घटतत्र (मग्राम मिकिछ। कार्मा मार्दिम गठिछ अकरे। चि-তাহার উপরে একটা রূপার প্তলিকা—ভাহার সহিত ভূইটা রূপার প্রাচীন পেয়ালা—এই गमछ जिनित्म माना मार्क्न-गठिङ हिम्मी-স্থান বিভূষিত ছিল। একটা পুরাতন ভিনিশিয়ান আর্শি যাহা কৌণ্ট গভরাত্তে चाविकात कतिशाहित्यम, এक वृक्षात्र हिज--मस्यक बार्केटलय सम्मी—हेशहे कहे बर्यस একমাত্র আলম্বার; মর্টি বিষয় ও কঠোর-দর্শন; चानवाद्यव मद्या अक्टा भागक, हिमनीत

निकार शिंतिक अक्षा बाजाम-दक्षांत्रा, কোণ্ট চকু উন্মালিত করিয়া ভাঁহার পুস্তক ও কাগল-পত্তে আন্ধানিত একটা पृष्टि निरक्षभ (प्रयोज-खग्नांना (हेरिन। এই मकन जाम्यांन

চাকর মৃত্তবে কিজাসা করিল:-

"মহাশয়, উঠেছেন কি ?" এই কথা निया, ভাষার মনিবেব প্রাতঃকালের পরিজ্ঞ, - এक छ। त्रिम कामिल, धक छ। कुरारनरनत्र भाग्ने ज्ञान, এक है। ज्ञान थाना - ट्यो न्हें दक দিল। পরের কাপড় পরিতে তার নিতা व्यतिक्वा इंडेटमङ,—वर्गजा के कालज डीटक পরিতে হইল; কেননা, না পরিলে উলল इहेश थाकिएक इस । भगा इहेटक नामियांत्र সময় একটা কালো ভালকের চাম্ভার পা-ल्पार्यद्व खेलन्न भा त्राबिएनन ।

তাহার সাজসজ্জা শীত্রই হইয়া পেল। कोके व्यक्तिक नरह— **करे विवरत कि**ष्ट्रभाव मरमार मा कश्चिश हाकत्र कोर्डित बहु পরিধানে সাহাধ্য করিল। তাহার পর জিজ্ঞাসা করিল,—"কোন্ সময় মহাশ্য প্রাতর্ভোজন করতে ইছা করেন ?" কৌণ্ট উন্তর করিলেন।—

"নিত্য-নির্মাত সময়ে"। তাঁহার ব্যক্তিত্ব ক্ষিরিয়া পাইবার চেষ্টার পাছে কোন বাধা ঘটে, এই মনে করিয়া তাঁহার এই দৈহিক পরিবর্তনটা আপাতত মানিয়া লইবেন বলিয়া সঙ্কর করিলেন।

চাকর প্রস্থান করিলে, অক্টেড-থেছ-ওলাফ, সংবাদ-পত্রাদির সহিত যে চুইথানা চিঠি তাঁর জ্বন্ত আনা হইয়াছিল, সেই ছুইথানা চিঠি পুলিলেন; আশা করিয়াছিলেন, তাহার মধ্যে, তাঁহার ক্রপান্তর সহক্ষে কোন থোঁজ-থবর পাইবেন। প্রথম চিঠিতে কউকগুলি প্রণয়-তর্থনা আছে—লেথিকা আক্ষেপ করিয়াছেন, কেম বিনা কারণে তাঁর বন্ধুত প্রত্যাখ্যান করা হইল। ছিতীর পত্রে, অক্টেভের উকিল অক্টেডকে পীড়াপীড়ি করিয়া লিথিয়াছেন, ভাড়ার হিসাবে তিনি যে টাকা পাইবেন, তাহার চতুর্থাংশ যেন কোন লভাজনক কাজে খাটান হয়। কোন্ট মনে মনে ভাবিলেম:—

कारि नाकि, उदय छ मधि यात भनोदत भामि याम क्विहि—एम्डे अप्लिख नादम এक-भन गांक वाखिकिहे भाष्टः, म छ। इतम এक्षे काझिनक कीय नग्न। छात्र पत्र-वाड़ी भाष्टि, छात्र वस्त्रास्त्र भाष्टि, छात्र उकीम भाष्टि, छात्र वस्त्रास्त्र भाष्टि, छात्र उकीम भाष्टि, छोका थाँगवात्र मूनथन भाष्टि— अक्सन भाष्टि, गिका थाँगवात्र मूनथन भाष्टि— अक्सन भाष्टि, गिका थाँगवात्र मांका छेडिछ मबहे भाष्टि, किस भाषात्र छ दिन मदन हर्ष्टि—भागिहे दिनेक अनाक गाविन्दि।"

किंद बार्निटक धकराम करे।क्रमाक

1

कितियामाळ कित मृत विश्वीम रहेन, किराज धारे मट्डिस मटक काराज किराज भिन रहेटर मा— दक्ष्में हेराटि मात्र मिट्य मा। कि केन्क्रम मियां-लाटक, कि धार्माह मीभारणाटक, के धार्मिटक ভো এक हे पूर्व क्षांक्रिकिय हेर्डिक्ट

বাড়ার কৈথার কি আছে কোন্ট দেখিরা বেড়াইওেঁ লাগিলেন। ভারপর টেবিলের দেরাজ থুলিলেন। একটা দেরাজের মধ্যে দেখিতে পাইলেন,—ভূসক্পতির কতকগুলা দলিল, দশ হাজার টাকার কোম্পানীর কাগজ; আর এক দেরাজের মধ্যে ক্ষীর চামুড়ার পত্র-পেটকা—একটা সাঙ্কেতিক ভালা দিরা ভাছা বন্ধ রহিয়াছে।

চাৰুর ঘরে প্রবেশ করিয়া জানাইয়া দিল আলফ্রেড সাহেব আসিয়াছেন। চাকরের উত্তর আনিবার "অপেক্ষা না করিয়াই অক্টেভের পুরাতন বন্ধু, ঘনিষ্ঠতার ভাবে ঘরের ভিতর হুড়মুড় করিয়া প্রবেশ করিল। আগস্তক সুবাপুরুষ, মুখে একটা সরল দিল্-খোলা ভাল। যুবক কোন্টকে বলিল:—

"এই যে অক্টেড, আজকাল কি করচ
বলদিকি গ তোমার হ'ল কি গ তুমি বেঁচে
আছ না মরেছ গ কোথাও তোমাকে ত
আর দেখা বার না; তোমাকে লিখুলেও
ত উত্তব পাওয়া বার না। দেখ আমার
অভিমান করাই উচিত। তবে কিনা, বর্দ্ধে
আমি মান-অভিমানের বড়-একটা ধার
ধারিনে, ভাই তোমাকে দেখতে এলার।
বল কি হে। এক কালেজের সহপাঠী
তুমি, তোমাকে কিনা এই অন্ধকেরে বরে
বিষয় হয়ে মরতে দেখ। তুমি পীড়িত—
তোমার কিছুই ভাল লাগে না—এ সমন্তই

তোমার ভাই করনা। ভোমার মন ভাল বন্ধু ভাবিয়াছে। এখন কেবল একটা করবার ক্রে, ভোমাকে একটু আমোদ দেবার প্রমাণ বাকী। এই চুড়াস্ত প্রমাণ। বার बर्ख ट्यांगटक ट्यांत्र क'ट्रा এकि। ट्यांट्यत डेम्यांटिंड इहेग। এकि महिना-माथात्र-নেমস্তমে নিয়ে যাব। দেখানে আঞ খুব 'বাঁধা ফিডায় জরির সতা নিশ্রিত এখং আমোদ-প্রমোদ হবে। আমাদের বন্ধু "রাখো"ও দেয়ালে যে-ছবিখানি ঝুলিভেছে সেই ছবির आंमट्य ।"

यदा व्यक्तिस्त्र वस् व्यक्तिस-१४४ (कोर्ग्डेंब - दिनेन्डेंदिक विवास :---নিকট এইরূপ বাক্য-বিস্তাস করিয়া ইংরেজের धन्नर्भ ट्योर्फ्नेन हो अधिन्ना मरकार्य এक यम्हिल, काल कूरे थूव सिन्नीर्फ वाफी याँकानि विन। द्वीक डाँश्व कीयन-गांटी। क्रमिन, बात खन्नानक छर्वन व्यवस्था। এখন যে ভূমিকাটি তাঁর অভিনয় করিতে বাছা, তোর শরীরের একটু যদ্ধ করিদ। হুইবে, তাহার মর্গ্য-ভাবটা ঠিক ধরিয়া লইয়া কেন তুই এত বিষয় হয়ে থাকিন্, আমার উखत्र कत्रियन:-

"ना छारे, অञ्च मित्नय ८५८मध जामात यञ्जना दृष्कि रूप्तरहा त्रथारम यावात्र मञ कामात्र मत्नत्र कावका नग्रा कामि शिर्ध তোষাদেরও বিষয় করে তুলব,—তোমাদেব ष्यारमारमञ्ज वर्गाषाच रूटव।"

च्यान्त्युष्ठ मञ्जात नित्य च्यानत्र श्रदेश विन,---"वाछविक তোমাকে भूव कारिकारन (मथारक, मृत्थ खन्नानक अक्षा क्रांखित छाव প্রকাশ পারেই। আছো, ভা হ'লে একটু ভাগ र ७ - जात्र अक मगरम (मथा बारव। जामि उर्व भागारे। यक दमत्री **राम भारत**। अखन्य হয়ত তিন ডজন কাঁচা"অয়ষ্টার"ও এক খোডল (भौरख्युन् छ्या भाव ६८व (शरह। "बार्या" टिंगाटिक मा दमबटिंड दशर्म युवरे छः चिंड हर्द ।"

এই আগদ্ধকের আগমনে কৌন্টের বিষয়তা व्याप्तक वृद्धि भाष्ट्रम ,—हाक्ष्मका कारकर मध्या वद शाक्रक स्व, व्याचन भन्नीरम व्याचा

সজে আশ্রেষ্টা সাদৃত্যা—ঘরের ভিতর প্রবেশ্ আর্ক ছঃথ প্রাকাশ ও অর্ক পরিহাসের করিলৈন এবং পালকে তলিবিষ্ট হট্যা

> "(कमम काहिम्दत्र काल्केल। ठाकत কাছে ত কিছুই খুলে বলিস্নে, তোকে (मथरण कांगाव दुक रकरहे यात्र।"

> षर्छेज-मर् ७वाक् উত্তর করিলেন: "जन्न (मरे मा, ७ किहूरे अक्रजन नमः; बाज बामि बारमकी जान बाहि।"

> **এই कथात्र व्यक्तिल-जननी जायल इटेटलन।** তিনি জানিতেন তাঁর পুত্র একাফী থাকিতে खाल वारम। (वनीकन एकर डाहांत्र निकडे থাকিয়া ভার নির্জনতা ভল করিলে ভারার ভাগ লাগে না। তাই তিনি তাড়াতাভি উঠিয়া প্রস্থান করিলেন।

युक्ता श्रञ्चान कतिरम, (कोन्डे विषया छिठिरमस, "আমি তবে নিশ্চরই অক্টেভ; অক্টেভের या आभारक विन्दक शावरणन । छात्र शुर्वात শরীরে এক অপরিচিত আত্মা বাস করচে---এটা ত তিনি মলে করতোন না। সম্ভবত **डिव्रशिटनव मटका जामाटक এই जावबर्गव** शिक्षाहितारह। ज्यानरिक कृष्टिक जावक-जानाव क वि जरूक कावातावात्र।

छथीनि कोन्छ जनाम नाविन्हित्र चल्लिएक, छात्र क्लिह्रिक, छात्र जीरक, छात्र जेपद्याक क्रमाक्षणि (मध्यो, जांत्र मामास এक गृहत्स्त्र অবস্থার পরিণত হওয়া—এ বড়ই কঠিন। (य ठामफाछ। এथन ज्यामात्र शादम जर्भ एटम व्याटक, तम ठामफाछ। कि एफ अकछि अकछि करत्र, প্রথম-অধিকারীকে আমি প্রতার্পণ कत्रव। यनि व्यामि व्यामारन किएत याहे ? करवनी ? ना-क्यानि এ कात्र निर्हत পतिहाम ! ना!—ভार्म जनर्षक এको एकर्नकात्रि रूटन, नरत्राचान व्यामारक नत्रकार शंका त्मरत्र क्टिन (बटन। आमि ७ এथन क्रम लाटकन **बद्ध शद्य व्यक्ति । जामात्र त्यदर এथन जात ८म यण नाहे। ८मधा याक्, अञ्चलकान क**ता याक, এই चार्छेड कि-त्रकम करत की बनवादा নিৰ্মাহ করত, আমার একটু জানা দরকার।" এইরূপ ভাবিয়া ভিনি সেই পোর্টফোলিওটা পুলিতে চেষ্টা করিলেন। ছুঁইবামাত হঠাৎ পাস্ত করিবার চেষ্টা করিলেন। চাকর ধবর ক্মিংটা খুলিয়া গেল; কৌন্ট উহার চামড়ার শক্তে হইতে প্রথমে কতকণ্ডলা কাগল छानिश वास्त्र कतिलम, उस धन-नियम ७ ত্ম লেখার কালো হইয়া গিয়াছে-তাহার भन्न अक्षा Celcका हम्य-काशरकत्र **छ**भन्न उठ मिश्र राटका ना एरेटलक, दकोन्टिंग आक्षांक-गाविन्दात अक्षा (भन्मिरण कांका ছবি আঁকা রহিয়াছে—ছবিটা অবিকল তাঁর মত — दमिदमहे दिना यात्र।

धारे चाविकारम दकीके धारक यात्र इंड-वृद्धि इष्टेबा शिक्षिश्यम । विश्वदिवत शदबष्ट अक्षेत्र विश्विष्ठ गाशिष्टम ३---ভীৰণ মৰ্বার আবেগে তাঁহার সর্বাশরীর "সে কখনই আমাকে ভালঘাস্বে না— कालिया छिन । कोन्टिरमय छवि क्यम क्यमहे मा, कथनहे मा। ক্ষিয়া এই অপরিচিত মুবকের ওও পত্র-दगिष्णांच नारमा भूगिण । दगोषा स्ट्रेटक

व्यामिन १ एक हिंदा कतिन १ एक हेहारक निग १ श्रीत्कां जि— यां तक किन तक्रीत मक পুका कात्रम, डिमि किमा डांब वर्ष क्हेरड নামিয়া আসিয়া এই জব্দ্য গুপ্ত-প্রেমে লিপ্ত कटवन % य प्रभगीरक এত किन जिन निक्नक ভাবিয়া আসিয়াছেন সেই রমণীর প্রাণ্মীর শরীরের মধ্যে তাব স্বামী কি না এখন পতি হইয়া শেষে কি আবাৰ তাঁকে প্ৰৰয়ী रुहेट ए हेरेटव । এ कि खीवन मना-विनर्याप्र । এ কি ছাত্তজনক ওলট-পালট! প্রণয়ী একাধারে !

এই সকল কথা তাঁর মাথার ভিতর গুন্ গুনু করিডে লাগিল; তাঁহার মনে হইল, যেন তার বৃদ্ধি লোপ পাইবার উপক্রম हरेबारक, जिनि युव জোর করিয়া আপনাকে দিল, আহার প্রস্তুত; তিনি সে কথায় কর্ণপাত ना कत्रिया, अत्र अत्र कैं। शिष्ठ कैं। शिष्ठ कें গুপ্ত পত্র-পেটিকাটা তর তর করিয়া দেখিতে वाशिरमञ ।

প্রজ্ঞা এক প্রকার 'মনভব্বটিত দৈনিক-লিপি বলিলেও হয়—বিভিন্ন কালের ८णथा। कथन वा रमया इहेबाटह—कथन या लिया वक्ष कन्ना इक्सारह । देशम कलकक्षणि <u> चुक्त्रा निष्म (क्श्रा वाहेटल्ट्— (कोक</u> উদ্বোপূর্ণ কৌভূহলের সহিত এইগুলা যেন

कांत दिशंदबन मुद्दि अमन दर्भामण, निष के दिनायम प्रक्रिक्ष महत्ता दगहें किहेन क्यांति

88म वर्ष, मणम मश्या

व्यात्र माहे—- (य कथां कि कवि मारक जात्र ख अकल मिनिज रुख (महे मांगा कि मिन्न खेलन বিষাদপুরের ভোরণ-ঘারের উপার লিখে 'ক্রেস' আকারে গড়ে উঠছিল; কোন 'অনুক্র ८त्ररथरहरू, -[™]गव काणा छात्र कर्त्र।" काणि श्राचा कामात्र क्षरदेत मृक्रा छेशलरक स्वम কি করেছি যে ভগবান জীবন্ত অ্বস্থাতেই व्याबाटक मन्नक (ভाগ कन्नाटमन ? काम, शत्रक, **हित्रमिन এই এक्ट्रे ভাবে ह**न्दर। **अंत्रकामश्रद्धां मरशा भत्रण्येत भश्र कांत्रकारि** क्टल भारत, नकटळ नकटळ त्यांश करत्र भूठेलि পাকিমে থেতে পারে, তবু আমার অবস্থার কোন পরিবর্ত্তন হবে না।

टमरे प्रमी आभाव अध मृत्य विमान करव দিয়েছে; এক চলিতে আমাব কল্পনার ডানা **ट्या प्रदेश वर्ज मिया व्यम्बद मर्** একত হরেও আমাকে একটা স্থযোগ করে मिटा ना ; ভাগাপাশায় কত লোকের কত ভাল ভাল দান পড়ছে—হায়় আমার পরলোকে গিয়ে তাঁর ভালধানা পাব—সে আৰুষ্টে একটিও পড়ল না !"

শ্বামি হওভাগ্য, আমি বেশ জানি স্বর্নের षावरमर्भ व्यामि भूरकृत मङ वरम व्याष्ट्रि, व्यामि नोत्रत्य जल्मभाक् कद्रि -- उर्रात्र महस्र शातात्र **मक व्य**वित्रक ८ हाथ मिट्रा का<u>र्</u>म सन्द्रह । व्यामान टम मारुम दनरे य अथान त्यदक উঠে गिरम কোন গভীর অরপ্যে প্রবেশ করি।"

"क्षन कथन ताट्य यथन निक्रा रूप्रभा चामि প্राक्षां छ एक थान कति; यम निजा चारम, -- आस्कां ७८० रे यदा मिर , चारा ফ্লুনেন্স্ নগবে সেই বাগান-বাড়ীতে ভাকে कि ज्नात्र राथा छिन। त्मरे खटा पतिछा, (महे मन कारणा किछा-- अकाशास्त्र हिछ-बिरमाह्म ७ मन्न-एनक। ७ळाडा . जीत क्षेत्र, स्पाटकथ वर्गी कामाज क्षेत्र !

ন্ধামি পাঠ করেছি—যার চেয়ে কঠোর কথা কথন কথন কিভাগুলা বাভালে নড়ে সিয়ে धुव न्यांट्छ चार्टि चाभाव चट्डाहि मह भार्ट क अंश्वरकान ।"

> · "कि कपुरहेत रकता, व्यामि हेस्हानूरन यांव मदन कदबिक्रगाम, यनि विकास काक्रम छोत्र मुद्ध दिशा इन्छ ना। जामि सुद्द्र दन ८षटक ८शमाम,—-जाटक ८मधमाम,—जाम (मह (मथाई चामांत्र कान इन।"

"আমার মরণ হলেই ভাল। रिक्श জীবিত থাক্তে থাক্তেই ভার নিঃখাসের मटक जामात्र निःभाग यकि এक विवाद स्माटक পারি--ওঃ ৷ দৈ কি অনিক্চনীয় আননা ! না, না, ভাচলে আমি যে নরকন্থ হব। সম্ভাবনাও ভাকলে আর থাকৃবে না। कार्त (मथारम कामारमत्र भृथक रूप थाक्रक হবে। তিনি থাক্বেন স্বর্গে—আমি থাক্ব नत्रकः। এकथा गरम रूल, এरकवारव क्यकि-ভূত হয়ে পড়তে হয় !"

"दग प्रमनी कामाटक कानवारम मा, त्मह त्रमगीरकरे सामाग्र कांगवांगरक करव, ध दक्रमम কথা ? কভ কভ রূপসী এর আগে ভালের মধুর মুখের মধুরতম হাসি "চেলে আমার कार रजन कत्रवात ८० है। करबर्ट, कि जब्ब आयात्र कामग्र हात्राहे नि। जात्र अथन १ षार्ग (म कि छोगायान, त्य छोत्र शुर्क-खत्यात শুকৃতি কলে এই নিক্পমা প্ৰনার প্ৰেম লাভ करत रख स्टब्स्ट ।"

जात दनने नाठ क्या जानावक्या

मिश्री कोर्न्डेन मत्न त्य मत्मद्दन छैएनक मुख्यमक, भिष्ट्न विदेकत त्येष-कामनात्र हरेगाहिन, धरे भागनीय मियाक्षनात क्षण्य भागत्य , उभितिष्ठे , हित्नन। राजित मस्या पूरे इक পড़ियामाक रम मत्निर पूत्र रहेगा। भा-हो साथिया गुलीई हिसाय स्थन निमग्न। ছিনি বুঝিতে পারিলেন, প্রোমাসক ন্যুকে কোণ্টের পদশক শুনিয়া ডাক্তার মাথা তার ছবি ভাকিয়া নিরাশ প্রেমের অক্লান্ত উঠাইলেন। থৈবা সহকারে, আসলের অভাবে এই "আঃ। অক্টেভ, তুমিণ আমি ভোমার नक्नरकरे जात्र त्थामाञ्चनि चर्नन कतिरज्ञ । अथारनरे याच्छिनाम ; किन्द सामी जानना अहे कुछ एक त्वानगढिएक "मार्डिजा"एक करकहे छाकात्रस्क स्वथरक अन-अहा खर्क श्रीभागा कतिया, नककार रहेया, नियाभ कारत वाकण रम्टि हर्ट ।"

बाइन कित्रा शास्त्राञ्ज त्थाम चाकर्यन स्मथि भाजन रूप याद।" ভारांत्र भन्न यास्त्र कतिवात क्रम महजारमत मरक ठूकि कनिया शर्क १

किस खनविश्म भाजामीटि अहेन्नम जीहाटक मिथिटि माशियान।

উন্তত হইয়াছিলেন মনে করিয়া তিনি একটু থানেই বাহুমন্তে আমার শরীর অপহরণ श्रित्णन। छै। त ठाकच त्य भावात बाशिमा करत्रित्रिंगन।" नियाहिन, ठाखा रहेंग्रा भारत छ। हारे बारांत धरे कथा खनिया छ। छ। व छेटेक: बर्ग कतिरमन। काहात्रारक अतिष्ठम अतिथान हाः। हाः। कतिया हानिया उठिएमनः করিয়া গাড়ী আনিতে বলিলেন। পাড়ীতে হানিতে হানিতে বালিলের উপর दिशि प्राक्तात वामवाकात-त्मत्रद्यारमात दिन्दिश भिष्टमम ध्वर हामादिश वामाहेटक भूटक छिननीक क्हेटमन। गृहक खादबन भाविरक्टकन ना धहेकादव व्हेहाटक भार्यसम कतिया त्मरे जन करकत यथा निसं हिन्दि यतिया तरिद्वा तरिद्वा

खारकाणित रभन्भिरम **कोका ছবিধানি खध्म অভিবাদন করি**য়াছিল। ডাজার তীয়

"किस विम এই অক্টেভ, আমার শরীর —"অক্টেভ, অক্টেভ, অক্টেভ—ক্রমাগতই আপ্ররণ করিবার জন্ম, এবং আমার শরীর অক্টেড। আমার এমন রাগ ধরচে—আমি উপর বাত রাধিয়া ডাক্তারের সমূথে আসিয়া माजाइरमन। এवः जीयनजारन এक मृष्टिरक

व्यक्षमान व्यमख्य मत्न कतिया এই व्यक्षमानिहरू "यावधावात-त्यत्रत्यात्ना, व्यायनि ७ त्यम (कोन्डे मीजरे मन रहेर्ड पूत्र कतिया पिरमन। स्थारनन आमि खर्डेड नहे, आमि रकोन्डे এমন অসম্ভব কথা তিনি বিশাস করিতে ওলাফ-লাবিন্সি। আপনিই শত রাজে এই-

माशिरमम स्पर्धान गठ बार्ख क्लेफ धगाम "छाकाब स्थामा अहे मानस्मन गाविनिषय नारमरे शरक्ष कविद्याहित्सन, किन्द देखांगता अकर्ने किन्द जात्ना, रेनत्स ज़िलाम क्रेट्ड यत्रम वाहित रहेना पार्यम शर्त रूप क प्रमुखांश क्रेट्ड रूट्य। हथा मकरणहे जारक बार्डिएक नारम बामि मजा मण्डि, शक्तिशाम कविरह मि।"

— डास्टल ७ चाटका थांत्राश, चाटका थातार्थ! अत यात्री ध्यमान करक, जामि जावनान्छ क्रमिक, जामि मनन जात्रनात्र मून ্য জোমার চেতনশক্তি-হীনতা ও অকারণ শেখি, তথন আমার মুখেব স্বাভাবিক অবরব-বিষয় ভার ठिक नम्र। जात्र किছू मा, ज्यमे क्विन किरमाछ। यम्लार्ड हरन, अहमाछ।"

कोन्डे, टमब्रटवारनांत्र मिरक क्यञ्जनत হইয়া বলিয়া উঠিলেন—"তোমার গলা টিপে কেন যে তোমাকে এখনো মারি নি, আশ্চর্যা!

क्लोरकेत अहे जत्र-क्षान्यम जल्मात ঈষৎ হাস্ত করিধেন; ভারপর, একটা ছোট ইস্পাতের ছড়ির প্রাপ্তভাগ কোন্টের "জুমি আপনাকে কি-রকম দেও বল वक्षे खग्रानक याँ कानि माणिम, मत्न कहेटम যেন তাঁর হাতটা ভালিয়া গেছে। ভাকার মাথায় ঠাণ্ডা জল ঢালিবার মত একটা —"আমি দেখতে পাই, আমার চুল ঠাণ্ডা রকমের স্থির দৃষ্টি কৌণ্টের উপর निटका करिएकोन,—एम मृष्टिए भागनता माफिएक प्यता।" বশীভূত হয়, সে দৃষ্টিতে সিংহ একেবারেই — "ছাড়-পত্রে বে রকম কোন লোকেব धराबाही रुरेक्षा भएए। এই क्रभ पृष्टिनिएक भ করিয়া ডাক্তায় তাকে বলিলেন :--

"दाथ, द्यांनी क्रवांश ब्रह्म द्वेंटक क्षांक्रांटन, তাকে সিধা করবার উপায়ও আমাদের হাতে व्याद्ध। वाफी कित्र या छ, वाफी शिक्ष व्यान कत्र,-- व्यक्ति-उटलक्षनाव भाषा गत्रम स्टब्स्स,--ঠাতা হবে।"

(कोके देवशाञ्चिक आघाटक विख्वन रहेश खाखादतत गृह हरेटल वाहित रहेटलन। नक करत हैं।।"

এই বিষয়ে পরামর্শ করিবার অন্ত, বুদি-বৃত্তির একটু বদল দেথছি।" ভাজার B....এর বাড়ী গিয়া উপনীত হই- —"বাই হোক ডাজার, আমি পাগল নই, (नम। सायर के व्यामिक कांक्नाइटक विगरममः -- (यम किल्मा। वक्रेड मा।"

শ্ৰামি এক অনুত বিজ্ঞানবিকারে চিকিৎদা করছিলাম, সেটা গুলো ভাতে দেখতে পাই না। আমি যে भव भनार्थ (वष्टिक बाक्काम मि भव भनार्थ वस्टम लाटक। अथन जामात चरत्रत दमदान-श्वरणाञ्ज व्यामि हिन्द् भाति ना, व्याम् वाय-खरणां ७ हिन्दछ शांत्रि ना!, चामांत्र मदन रुत्र आमि (यन ८म आमि नहे—आमि (यन অন্ত লোক 🏲

ভাক্তার জিজ্ঞাসা কবিলেন:—

দেখি ? ভ্রমটা চোধ থেকেও উৎপন্ন হতে পারে, মস্তিষ্ক থেকেও উৎপন্ন হতে भारत्र।"

- कारमा, ८६१थ नीम, मुथ क्याकारम,—कात्र
- मूर्यत वर्गना थारक, रहामात वर्गनाठी छात्र ८६८३ मिछिक (मश् ।

ভোমার বুদ্ধি-বিভাষত হয় নি, দৃষ্টি-বিভ্ৰমণ্ড হয় নি। তুমি আসলে যা,—ঠিক্ তাই আছ।"

"किस ना,---छ। नत्र! जागात जागरण किं। हुन, ट्रांथ काटला, जर द्रोज-मध् बाज ष्यायात्र (शीक रुवाती (मट्यंत्र (माटकत्र म ५ -

তাঁর সংশয় ও ভাষনা আরো বাড়িল। ভাজার উত্তর করিলেনঃ—"এইথানেই

छालात्र উछत्र 'क्तिलन :-"निम्ह्यहै। यारमञ्ज दिक-विदयन्ता चारक जायांके दक्यन ज्यात्म चारम। जकरे देनाहक প্রান্তি, একটু অভিয়িক্ত পড়াওনা, কিংবা व्यक्तिक व्यादमान-श्रदमान (अद । অস্থাতা ঘটেছে। ভূমি ভুল করচ আসলে,— कृति या ट्वाटन टान्ड ठाइ वाखन कांत्र या मत्म छार्य - मिड्रिड काम्रनिक। कर्म त्ररखन्न द्वाम ज्ञानिभारक नामना दावक ; कि कृषि जामत्म भाषमा, कहाना कत्र कृषि कर्ना।"

"—(म शाहे टाक्, आमि दा मानिन्कित को के उनाक, तम विषय कि क्रमाज मन्मर (नरे —िक छ काम-corक महाङ जागांदक সাবিলের অক্টেভ বল্চে।"

ডাতার উত্তর কবিলেন :--

"——আমি ত ঠিক তাই বলেছিলাম। ভূমি আদলে সাবিলের অক্টেড, কিন্তুমনে কর্চ তুমি লাবিলন্ধির কৌণ্ট। আমার দেখাইয়াছ্য। কৌণ্ট বলিগা উঠিলেনঃ— न्यान करात्र, व्यामि कोन्टिक प्लिपि ;— की इ त क कर्गा। व्यायमात्र (य कृषि व्यक्त (मथा करत शांत्रत्व।" मूथ (मग्राज भाव, डांद्र कावन छ (वन द्यांचा

यास्त । ट्यामान अरे जानम मूर्यन मरम, তোমার মনোগত কালনিক মুখের নিল হচেচ ना वरणहे ज्ञि विश्विष्ठ इरब्रह् ।— এই कथा। विद्याना, कदत्र' दूनथ नां, मयाहे ट्यामादक অক্টেভ বন্চে; থ্তরাং ভোষার নিজের विश्वारमञ्ज कथात्र कृत्वा मा। पिन श्रानद्रा कामात्र अञ्चल्या शांक :-- शांन विखाम, वर् वक्त शास्त्र ज्याम भाग्नाति क्रवल्ट जामार क्ष मरमत्र निकात्र । करहे याद्य ।"

কোণ্ট মন্তক অবনত করিয়া, অসীকাং क्तिरमम, आवाद जिमि आमिरमम।

रिया: অগত্যা কথার ভাক্তারের कत्रित्नम ।

কোল্ট ভার আবাস-গৃহে ফিরিয়া গিয়া कठां प्राथित्वन, टोविट्य डेमज, कोट्छम् लिविन्छात निमञ्जन-পতा तर्हग्राष्ट्र— जे भज-খানাঃ পুর্বে অক্টেড ডাক্তার শেববোনোকে

"এই যাত্र-कवठी। मरम निर्वाहे, जाँत मरम (AF NAS) शिक्ता डिविस्नाथ शेक्त्र।

অতীত

ভবলা বোল্টীন, সেতাব হারা তার, ভালিয়া পড়ে আছে क्य्रनि সারা আর। वातक वुडा बाहा, मक्डि बदनाम, वाहित्त्र वरम जारक स्पूर्ण डेमाधान। पृरत्र जानारम् जानारम हात्रान्छ, मानरम यूर्ण जात्र स्माहिनी मात्राण्छ । ভাগিয়া গেছে যাহা গিয়াছে অতি पूत्र, निकटि जात्न जां जि (म यो टिनो खुत्र। ज्रात (म यांत्र धवां ज्रात (म यांत्र कान, चाशन डेशाधादन थोट्य (म प्रम डाम। वाशिनी উঠिनाक, वृत्कर्छ भाष गय, প্রাপের বেলাভূমে ভাষের চেউ বয়। **(कर्या साम्य (मर्थ, (कर्या 5रम याय,** टिक्ट (म क्षेत्र 'मित्र 'कांका' 'का' वरण यात्र।

क्षेत्रप्रदर्भ गात्रका

कानिविधा मिलालिश

गर्रेट थिमान मिश्ह नामक करेनक हाळ गर्रा-किणात कानिविचा जारम खाख এक शानि निगाणित উল্লেখ করেন। "সরস্বতা" স্থান্ধ-পরিচেত্র—জানিবিঘা नामक हिन्ती मानिक भटाइ >>> भारता । षर्छोत्र भारम जीयुक रित्रवामध्य पिरवक्त नागक टमथक निमामिशिव প্রতিলিপি সহ এক প্রাবন্ধে উহার পরিচয় প্রদান করেন। শিশালিপির এই প্রতিলিপি দেখিয়া ও বিবরণ পাঠ করিমা যাধাতে উহা পাটনা যাত্বরে আনতি হয় ভজ্জন্ত যাত্রবের অধ্যক্ষের নিকট আমি আবেদন করি। তিনি গরার কাণেক্-हेदबर निक्टे এ জग्र भव मिर्ग मिनानिभित्र आरम्ब क्रिकेन्छ। পরে আমি যাত্রবরের কিউরেটর বা অধ্যক্ষের পদে नियुक्त रहेरण आमारमन्न भूर्याक छाज শ্রীমান্ মহেম্প্রসাদ ও তাঁহার পিতৃদেব উক্ত মোহন্ত মহাশয়ের প্রির শিষা শ্রীযুক্ত বাবু मुक्रिधात्री मिश्र छेहा श्रमात्नत्र खन्न त्मार्ख महानग्रक अञ्दर्शाश कदत्रन। मुक्टेशात्री वावूत बहुद्राय त्यार्ख यरायत्र छेश बिट्ड প্রস্তুত হন। কিন্তু কিউরেটর স্থান उभिष्ठ ना रहेरण छेरा मिर्दन ना नगाय, वाभि कानिविधात्र यारेत्रा छैश श्राप्त व्यानमन क्रिया त्रयाम कारतक्षेत्रत हत्य छहा भाष्मान त्यात्राच्या क्रम त्राचिमा कामि। इत्थान विसम श्रद्धम जगरमण किर्म क्रम करिएक

शून्व देखिहान->>>A मालब (बनसात ध्वत्रकाल कालकृत्वत्र नाजीत्वत्र नदंबन मारम, भाषेना करमरका "श्राक्रकाञ्च कमावधानकाम छेहा विश्वक हहेना यात्र। करव मकान मिण्डित" এक विष्मि व्यथितमध्य श्रीमान् प्रत्यत्र विषय এই त्य, उद्दा विथा विकल रुरेरम् अ मिलिलार्कत कान अञ्चिषा रूप नाहे।

> গয়া জিলাম অবস্থিত এবং উহা বোধ-গমার ছय-मारेण পূর্বে অবস্থিত। এই গ্রাম জানি-বিষার মোহস্তগণ বারা প্রতিষ্ঠিত এবং পরিপুষ্ট। প্রায় শত বর্ষ পূর্বেষ বংশী ভারতী नामक मृग्ञान-वामी এक वाकि बर्धाशात्र व्यानियां नारत्रचंत्र ये अखिष्ठी करत्रन। বুধরাম ভারতী নামে তাঁহার এক শিষ্য ছিলেন—এই বুধরাম ভারতীই জানিবিখা

यदाधिकाती, क्यानिविधात त्याङ्ख यहामध वृधद्राय छीर्थ-পर्याष्टेनकाटम व्याधनप्राध উহা দিতে অশ্বীকার করেন। किছু দিন আগমন করেন। তথা হইতে তিনি বোধগন্থার পাঁচমাইল পুর্বে অবস্থিত গান্ধা नामक श्राटम शमन करतन। शाका ख्यन গভার অকলাবত ছিল। বুধরাম ওপশ্চারণ-मानरम এই अकरण कार्छ-निर्मिंड अक्छी উচ্চগৃহ निर्माण कतिया शृह्द छैक-छटण वान করিতেন--তাঁহার শিষাবৃন্দ গৃহ-তশে थाक्टिन। शहाना किः क्षी करे त्य, বুধরাম ভারতীর তপশ্চারণ-কালে জান্ত্যিয়া नारम এक जिन (मुगणमान छूछ) डाहात कर वृक्षाय व्यवश्व रहेश निष्कर क्रमान

লাগিলেন এবং জিনের আবির্জাব হইলে
মন্ত্রবলে ড'হাকে পরাজিত করিলেন। ফলে
জিন প্রতিক্রাবদ্ধ হইরা তত্তস্থ জগল পরিফার
করিয়া ব্ধরামের জন্ত মঠ নির্দাণ করিল;
ব্ধরামও জাত্মিয়ার নামাত্রসারে গ্রামের নাম
রাথিলেন জানিবিখা।

বৃষয়াম ভারতী বোধগরার তৎকালীন মোহস্ত রামনীল মোহাস্তের মন্ত্রগ্রহ ছিলেন। টকারীর তৎকালীন মহারাজ মিত্রজিৎ সিংহও ভক্তিপ্রশোদিত হইয়া বৃষরামকে করেকথানি আম প্রশান করেন। মিত্রজিৎ সিংহ প্রায় ৮০ বৎসর পূর্বে টিকারী-অধিপতি ছিলেন— জানিবিখা প্রাম এ হিসাবে আধুনিক।

শিলালিপি-আবিজাৱ—শাগোটা শিলাশিপিথানির এক প্রান্ত মৃত্তিকার বাহিছে चारनकामिन इहेर्फ्ट (मथा याहेज; किन्ह, আন্ত্রাসবাসিগণের কুসংস্কার-তেতু উহা আর থনন করা হয় নাই। প্রায় চারি বংসর পূৰ্বে মোহস্ত মহাশন অন্নং উহা খুঁড়িয়া वाहित करदन। मर्कश्रवस्य भृत्काश्रिक "সরস্থতী" পত্রিকায় উহার বিবরণ প্রকাশিত रुष ; उर्भाद भी गुरु का नी श्रामा स्वत्र-**(मात्राम ७ ४ र्त्रनमन भार७ मिनामिनि** সম্বন্ধে বিহার ও উড়িয়ার প্রস্তৃত্বায়-সন্ধান সমিতির ১৯১৮ সালের পত্তিকার अहे विषद्ध विष्कु **जा**रगांहना करत्रन । किन्नु, ছ: **(अब विषय डीहाडा मिमामिमि श्रांश मद्द** विराम काम कवाई उक्तिथ करत्रन मारे। जीयुक ननी शाभाग मक् मगात्र जन-ज, मगानत्र "देखियान ग्राणिकात्रात्री"एक ১৯১৯ मालित अधिममारम मिनानिभिन्न भूममारमाठमा करमन। कृ: त्थन विवय, यक्षविकात समझीत्र टाम- क्रमहमामन मयस्त এই निर्माणिनियानि क्रांत्रिक इंदेण ७, तक्रणात्रात्र क्रिंत्र कारणाह्ना करत्रन नार । कामता क्रांत्रमात्री,— क्रमहार्क क्रिक्क क्रिक्क निर्माद्रमणालय पृष्टि काकर्मभार्थ (म मयस्त यदिक क्रिक्ट निर्मिटक श्रामी इंद्रमाहि। उत्य क्ष्रोपम क्रमारताही त्य क्रमिक्स करत्रन नारे, क्रम्रप्रम क्रमक्ष-क्रमाप्ताद्रम त्य क्रम्रप्रम क्रमक्ष-क्रमाप्ताद्रम त्य क्रम्रप्तम नारे।

শিলাজিশির মুল্য-'সরস্বতীর'
লেখক মহাশয় বলিয়াছেন বে, ঐতিহালিক
হিসাবে ইহার,কোন মূল্য নাই। কিন্তু তাঁহার
এই মন্তব্য পরবর্তী লেখকগণ স্বীকার করেন
নাই। মিনহাজ লিখিত সপ্তর্গ অস্বারোহী কর্তৃক
বঙ্গবিজয়ের কাহিনীর সহিত এই শিলালিপির
যথেষ্ট সম্পর্ক রহিয়াছে। এই শিলালিপির
হঠতে প্রমাণ হয় যে, বিহারের অনেকাংশেও
সেন-রাজগণের আধিপত্য ছিল এবং বক্তিয়ারপুত্র মৃহস্মদের তথা-কথিত বন্ধ-বিজয়ের পরেও
সেনবংশীয় বৃদ্ধসেন-পুত্র জয়সেন গয়ার পার্থবর্তী
ভূভাগে রাজত্ব করিতেন।

শ্বিদাহিন শি—্বে প্রন্তর্থানিতে শিলালিপি উৎকার্থ রহিয়াছে, উহা ৩ফিট ১ই ইঞি
উচচ, ১ই ইঞি প্রস্থ এবং কইঞি পুরু। নিলালিপি
১৪ ইঞি পীর্য এবং ইহার প্রস্থ ৭ই। নিশির
উদ্ধে বোধিবৃন্দের তলদেশে বজ্ঞাসনাসীন
ভূমিস্পর্শ সূত্রা বৃদ্ধ-মৃত্রি। লিপির তলদেশে,
ঐ বংশীর কেহ শিলালিপির শাসনম্থ আদেশ
অসাক্ত করিলে গর্মতের উরসেও শৃক্রীর
গর্মে ক্যাত্রহণ করিবে, এইরপ অভিশাপের
কথা চিত্রিত রহিয়াছে। সান্ধীস্বর্মণ বৃদ্ধমৃত্রির
উত্তর পার্যে প্রয়াও চক্ত ক্ষিত্র বৃদ্ধমৃত্রির
উত্তর পার্যে প্রার্থ চক্ত ক্ষিত্র বৃদ্ধমৃত্রির
উত্তর পার্যে প্রার্থ চক্ত ক্ষিত্র বৃদ্ধমৃত্রির

" . यक्षांत्रम ७ ७ ६ त्रश्मध मर्छत राम्न-निर्वाद्य अध्य भरकि। विभिष्ठेक-कुष्टिमः भागनी-अ**छ मश्रमाठीय जलर्गाठ (को**हिथान श्राम मिश्रम- क्रुका बाल्डा निर्का-(मनीत ভिक् मक्तनपामीत्क तुक्तामन भुक, अष्ठेम भरिका कः मक्षप्रिते इनकत्र-পিথিপতি রাজা জয়সেন কর্ত্ত প্রস্তুত চইল কলিতো বৃদ্ধসেনাত্মজে---भिनानिभिन्न देशहे छेकि।

প্রথম পর্যক্ত। ওং স্বাস্তি॥ জীমনাগ্র- প্রামং জয়সেন স ভূপতিঃ। ८वासिभूवः भूवांनः भन्नम्भः

ছিতর পংক্তি। রীশং নিয়তং জিনানাং। চ ষাঃ সভাবায়চঃ। বংশে হ্যধ্বস্থিতানাং স্থিতি —

ভূতীয় পংক্তি। হ্নস্তি ৰতা সংবোধয়ে শিষ্টোহণবা ছন্ত্ৰজ--**विश्वित्राख्यः** ह

চতুর্থ পংক্রি। শ্রীমন্বজ্ঞাসনাম স্থলজন চাত্র করোভি ভস্ত তা--সহিতঃ কোট্ছ।

পক্ষম পংক্তি। লা প্রাম এষ আচন্দ্রাকং মাতা॥ লক্ষণ---

প্রদত্তদ্ধিবসত—

यष्ठे भरकि। य मजन सामि छित्याः। ५० कार्षिक श्रीम। * হত্তে শ্রীনিংঘলক

नवम परिका (म)। मरका मानमिमर

मभम भर्कि। (भी) भी भक्ति वाटममा

একাদশ পংক্তি। মদীয়ে যদি কোপিড়পঃ

धामण शश्कि। ८३१ विनष्टेः। वास्त्रिक्रभः

बारमाम्भ भरक्ति। ७: धतः स्रकतिका ह

চতুর্দশ পংক্তি। সেনস্তাভীতরাক্য সং

मिनानिभित्र कार्थ— ७१ प्रस्ति। काञि

व्यथम भर्गक। महादर्गाधिभूतः — इतनमन भारक महादर्गाधिक्षमः भार्र अञ्च कतिग्राटकन। भूतः भार्रह अन्छ। श्रीश्रुक ननीर्गार्गान मञ्जूमनात्र ७ निर्देशक मश्रामग्रदेश पूर्वः अङ्ग करियार्छन। अनः कतिरा অর্থের বিভিন্নতা হয়। পরম্পং--পরম্প হইবে।

ষিতীয় পংক্তি। বিবেকর নহাশ্য হাণ্যস্থিতাশাস্—ম্বলে তুপ্তিহিতাশাং করিয়াছেল। তুপ্তি পাঠ আদৌ अञ्जीत नत्ह। पिटवकत महानेत्र निधित्रात्हन त्य, जिनि এই नत्यत्र भाटीषांत्र कतित्व भारतन नार्है।

भक्त भरकि-'ला' (क विरंशकत्र महानम् भा विलय्न अरुग कतित्रां एक ।

আইম পংক্তি—ভো ছলে উক্ত লেখক তাদ করিয়াছেন।

मनम् शर्कि-मरछो मूल निलालिशिट मरखा थाकिरलक देश मखा म्खरा फेल्कि दिन । मिरनकत महानम मखा भार्त कतिबारहरू ।

मुलाम शरिक--- बिटराक्त बहालन जार्राश्र कन्निराटलन।

अकामण शरिक-शास्त महागत्र खनः जिथिवाटहम--हेर्श मुखाकत-खमान विनती मान हत्र।

ত্রহোত্তশ পংক্তি —শিলালিপিতে অক্রিকা রহিয়াছে।

क्रकूर्यन भरकि-शास्त्र अहानम प्रांका कवित्रास्थ। निर्माणिभिएक प्रांका मस्त्रियास। निर्माणिभिएक एकि मिर्मिट्स, प्रापि स्वेटन ।

^{*} निर्मानिभि-भार्त गठ-एक ।

मजानीय, खाडीन, शुक्रनीय, त्य महात्वाबिश्रत्य, क्र कि कि वाम, विना मक्रिक वर्षिन **उत्तर्श शिक्टवन, एउनिन मचानीम वक्काम्टन,** ত্রিপিটকাভিজ্ঞ সিংহল দেশীয় ভিক্স মঞ্চলখামীর বাসের জন্ত, বুদ্ধসেন পুত্র, রাজা কর্ত্তক श्राहल इंडेन। मामनवाजा मढावामी ७ পিখিপতি, আচাৰ্য্য রাজা জয়সেন এই গ্রাম क्षान कविश विमित्मन त्य, "আমার বংশের मिष्टे, छ्टे क्याया छ्म्हतिक क्यान दाका देशात ব্যতিক্রম করিলে ভাহার পিতা অখতর ও लाखा मुकद्री क्हेर्य।"

मञ्जूष रमनारमञ्ज ৮० वरमरवज्ञ कार्डिक मारमञ्जलका भक्षमा निवरम (हेरा शक्ष इट्टेंग).।

িভিনতনেরই মধ্যে কিছু কিছু ব্যক্তিকেম tioned in an ancient geographical कत्रिशां हि।

८४ मकल घाटि। ब्रांग आहरून, डॉकारणज পূর্বাপুরুষগণ তীর্থযাত্রিগণের নিরুপদ্রযাতার निकत कृषि दक्षांत्र कतिर्द्धमा "पाद्धी भिना निपानिकाना, कार्यस्थ

আগলাইবার" কথা এক मरपाधिकाभी विज्ञान मर्या (याधिवृष्णमूरण यात्र। त्याहास यहामर यांग करवन, छांशांतिगरक कछियांपन कवि। छत्तिक देवडी छीर्पश्चारम करिन मार्फी मथपाठीय व्यक्ति यगवन ७ व्यक्त महिल हिम धवर छावा एवं छहे । षाजिहिल रहेग्राट्ड।

> अप्राट्यन नामक आदमिक्तिनानी (अथक লিখিয়াছেন যে, স্থভাতার পার্সার গ্রহণের ममरम, दुक नित्रक्षरम व्यवशाहन करत्रम। धई স্থান 'সপ্ততীর্থ' নামে প্রাসিদ্ধি লাভ করিয়াছে। ("Buddhism in Translation") এই সপ্ত-ভীর্থের সহিত সপ্তথটের কোন সম্পর্ক থাকিতে পারে,কি ?

পীথী-পতি-শীথী যে কোন্ জনপদ क्रिण (म मद्यक यटबंड मज-(छम मुद्रे रहा) **छाकात्र (क्षेत्रकारना माजाब (श्रामरखिन्द** शिक्रश्रदक शीशी यशिषाद्या অন্তর্গত वीयुष्ट त्राथाणमान वत्नामाथाय महानय न्विट्नाद्विभि-भाटले चल-८ल्म हेशद्य वर्षमान विष्ठ विशाहिन। --- णामत्रा शुर्व्वारे উলোধ করিয়াছি যে, ইভি- বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয় লিখিয়াছেন, "A भूर्कि जिनकरन करे निशि উद्यान किवारहन। place named Pithaghatta is men-मुद्दे इस । आमन्ना भागतीकांत्र তाहा উল্লেখ work called Desavali... The addition of the word ghatta probably শিলালিপি-উল্লিখিত means that this place was situated ক্ৰেক্টা শ্ৰন on the Ganges." (The Palas of मश्रम्बे कामिविषात्र (मार्क मराभग्रक Rengal: Page 87) कार्याष (मणायकी আমি এই সম্বন্ধে জিজ্ঞাসা করায় তিনি নামক একথানি প্রাচীন ভৌগোলিক প্রয়ে वित्राहित्वन (व. देवछनाथ श्रेष्ट्रिंड ज्ञातन शिथवाद्वी नामक এक्टी ज्ञात्नत्र উष्टिथ चाट्ट । चाष्ठी भव-मश्रवारम প্রভীয়মান হয় বে, এই ञ्चान अञ्चाकृत्म व्यवस्थित हिन। ध अस्टक क्षक बाबी बाकिएकम ज्ञानः एकक छोडाना बामात्र यर्किकिर नखना बाएह। विकास-

'কছমুগী নামক স্থানে অব্ভিত বলিয়া অনুমিত हिंदेशिएक। टमहे छान्छी "भाषत्रवाछा" विषया প্ৰিচিত। এই "পাথরখাটার" সহিত দেশাবলী-উল্লিখিভ "শিখবাট্টা"র কেন্ত্র সুম্পর্ক, জাছে কি ना ? शांधराषां है। शक्षा है। देश व्यवस्थित । शिष्य हो विकालिश शांकि । शांकि । विवास ष्मश्यः म कि भाषत्रषाहै। इंग्रेटक भारत ना १ বিক্রমশিলা বিশ্ববিভালয়ের সহিত পালরাঞ্জ-গণের যথেষ্ট সংস্রব ছিল। ৺হবনন্দন পাডে মহাশয় পিথিকে মগধ বলিয়া গ্রহণ করিয়াছেন। व्यामारमञ्ज कार्कार मरन रुम ।

वृद्धारम्य श्रंक द्रांका क्यारम्य--वृद्धारम्य भूर्य द्रांका नक श्रांक इत्र नारे विषय श्रीयंक खश्रामाश्राम यान कविशाहित्यन (स वृक्तानन त्रांखच करवन नाहे। किन औगुळ ननीरभाभाग मञ्जूममात्र महानंग श्रामान कविहार्ष्ट्न (य, नुष-সেনও সেনবংশীয় নরপতি ছিলেন।

फिलमश्हात-बामना शृटकेह येनिमाहि एए, কিন্ত বল ই ভিহাস-সম্ভ্ৰীয় এই শিলালিপ-थानि कालाविश्वक अवर है। किन्न वर्मक পুর্বে ইংরাঞী-অভিজ্ঞ পাঠকগণের গোচবীভূত হইলেও, গভীর ছঃথের বিষয় যে ৰঙ্গভাষায় **এ- मश्रक्त (कान कार्टनाइना इस्ताई। कार्यारमञ्** ভরদা আছে যে শিলালিপি-পাঠে ক্লভী রাথাল দাস বাবু ইগার বিস্তৃত ও সঠিক পাঠোদ্ধার করিয়া আমাদের কৌভূতল নির্ত্তি করিবেন। किर्याशिक्रनाथ नमाणात्र ।

ञ्चि दोषित्र भा हूँ हैशा विनन, — ना छात्र विक्र एक क्या कृषि श्रून एक छात्र ना त्वीमि, णामि ७ कथा खन्वना। णामात्र — ७। इत्म कृषिके त्य कात्र मात्री इत्य । मनदरक (मदत्र ह, जात जामि हुल करत शाक्त ! कर करकर दोान. जामि वरनहिनाम—जामात **७-**नव हाहेरत जात कांक (नहे। हुंध पिरम मान नूर्य (म मात्नित्र कामफ़ निक्कारक हे त्थर छ रूटव, এ আমি আগেই জান্তাম—। (वोषि काराम कथाम वांशा बिमा विनादमन-हि ठाकूब्राभा, ७ कथा बदना ना। ट्यां वडे खन्दा कि मदन कत्र्दा (म दिक खोन,---कृषि टार्टन अथरना छाटक हिन्दछ भारदानि। श्वक मृत् कर्छ विनन, टिम स्टम्स्ट दोपि।

বৌদি ভাৰত্ব হাত গ্ৰানি চাশিয়া धित्रश विगिर्णन,—ना ठाकुत्ररभा, ७ कथा ভূমি কিছুতেই বল্ভে পাবে না। এমন প্রতিমাকে—কথা শেষ হইবার शूटक्ट कां भारे एक कां भारे एक मनरक्षांत्र व्यागित्रा वृशिम, —वावा, अहे त्मर्थ, दक्षांके भी व्यक्तिक व्यागाटक क्रिकारत त्मरम् त्मरम्

स्वर एकार विक्र स्रम् (परक। मणी इस्ति । अप मार्य निक्त त्थरक बरत मान छ किरमह कि ना, छाहे छ है नि कत्रवि--- एक रहारेक बालिय के

व्यासात हैं शांग त्यं देखा कि मिर्प्रदेश ।

कि भाकी। ध्यरमा समूर्थ माफिर र रहे जि! याबित ? नेष्ण--विका छुत्र अभन मद्भादा मनदक्माद्वत्र नाम हिनिया धित्रण त्व वामदक्त्र कक्न क्रमाटन चन्न त्यन काछिया रशन !

व्योषि छञ्जारक काला कालिहाई श्री श्रीश বলিলেন,—তুমি ক্লেপেছ ঠাকুরপো!

স্ত্ৰত ভাৱ কণ্ঠে বলিল,—ছধ দিয়ে কাল সাপ পুৰেছি, তাই তার প্ৰতিফল পাছি !

(हां छे दो निकटें आप्निश्चाहिन; —ৰাম্ভ সাপকে শুধু পুৰতে হয় না'ত— आरक शृंदका निरंक्ष क्य दि !

ভারত আরো রাগিয়া একেবারে নিজের পার বিষা শাইয়া পড়িল। একটা প্রচণ্ড নিশাস কেলিয়া,—ইাা, ঠিকই ভ, ঠিকই ভ करत्रिः। भाग (चँटिं। करत्र मिर्प्रस्ह चरण **ष्यामात्र माम्**टन ७ केंन्ट्रिं । अन ' दकन। বেশ করেছি, তার গাল আরও থেঁতো करत्र भिरत्रिष्ट् ! दन कारन मां, जात्र मां दियम ভার বিমাতা, ভার বাপও ভার ভেমনি महिन

ছোট বৌ আসিয়া আত সহজ সাভাবিক चारत विभाग,---धार्यम कार्यात छटन ट्राइन १ कन थारात्र था ७'रम, ७५।

ভুত্ত গঞ্জীবভাবে উঠিয়া ব্লিল ছে **८वी कम थावारबब टबकाविथाना ८५ विटा** त्राधियां यशिन,--वारे जाथि। नीट्य प्रांभात **टमना कांक काटल।** ८६१६ ट्यी ठनिया दनन।

ख्डा विमा डिगि,—गार्व रेव कि, रहा है (को। ज्यान कि ननत्कत्र मा चार्ट्स द्या ৰলে বলে থাওৱাৰে! ভতকণ ভোমার করিয়া এমন একটা কিল মারিল যে সন

চল্বে! ভারপর টেচাইয়া বলিয়া উঠিল,---ट्रिकि लाटकब स्मरब ! जामात मनर शाक्टक ভূমি কর্বে ভাদের উপর প্রভূত্ !

ट्हां देश काशिया मिनिस भा अफ़ारेया थतिया विनन, — ओ कथा।, मिति, जात अकवात वन, একবারট----ভোমার পায়ে পড়ি। বলিয়া रामियां एन वफ़्टवोटमन शारम छिना भिक्ता वफ (वो जांत्र भागा। हिभिन्ना धित्रमा बिगटनन, ——यानि ट्डांत रुख चाउ गांग टकन, कानिम्, (बाम्हाहा क्रेयर हानिया मूछ शांनिया तम विनन, हिहाह रवी १ भागा कार व्यान हक्कांफ मिरम একটা সাপ পুষে ভোর ভাগের সমস্ত তুনটা আর্মরা নিজেই আত্মনাৎ করচি।

धमन नमग्र प्रत्थ चानिया विना,—(हारे মা, আমি সনৎকে এবার তোমার ছেলে बाल किছू राज्याम ना किछ। (म आमार नाठिए। नित्र राष्ट्री कुकूत्रहात्क मात्र्रक जिल (कम दमि। एक्स पिरम। एक्सि (वो जूक चरा यित्रा डिजिन, — एक वटलट्ड (त्र छ्टब, अन्द षाभाव ८६८ण १ सामि ७ এই সেদিন ভোগের योषी क्षणांच, ट्रांटमग्र ट्रांटिश्त जाम्ट्रन्हे मनदेखन आभिन मा मदन दशन। कुछ छ। दक यक भारित्, भारित्—कथांछ। यनियाहे दहांछ दशे ट्रांथम, मन्द ट्रांटबर्स मक निक्ष्मट्स नगारेटक्ट — (मिया द्वाउ द्वा अक प्रकार माकारमार जात र्थक प्र'थानि धरिया मिश्कनांटम मणिन.— छ्टे ट्रिटन, याचि—यानि, छ्रथन मटन विरम् ट्टिला करक चांत द्यमा क्यूट १ वक कर चरम ७ ८ जोत्र रामा एम ना। এই मिन क्ष करत मान्युम । जीनीत जास त्मा काषा। अहे विषयाहे जनएकम निर्देश भा मश्मादबन्न काम-कामीन क्रिया वाश्रिक काकुक कहा ----वा दवा विवाहा विवाहा शक्ति । दहा

(यो भक्कन कतिया यिनन—मा थाक्रम कि ट्वांब এड योशांत्र इस दब हूं टी! नाटक ভোর ভাক্বার হয়েছে কি! ভাকে বরং আমিই ডাক্ব—কি তার, এত শত্তো করে-हिन्न (व हरण शिर्म व्यामान এই मार्थात উপর এক মহা কর্তব্যের বৈঝা চাপায় সে! এত কি ভার বাদ সেংগছিলুম যে— कुहे यावि वरम, या—च्यामि छ।' निरम थून-ञ्हि करम मन्द्र गारे कम। वर्ष वी व्यागाहेबा व्यामिया हम हम ट्रांट्य ट्रांडे (बीरम्य हिन्कशानि धविया विणया छिटिलन,— ছোট বৌ, ভোর ছাতে সন্ৎ পড়বে, সন্তের या—मजी मायिकी वृत्ति छ। छ। न्ट लाति हिन — डाहे त्म निन्दिक चर्ड नीख सामान मः मान त्थरक महत्र (बट्ड (शहरहर्)

र्होर अमन नमम छड्ड म्थारन यानिमा ठीक कर्छ दोना - गर्य, त्वांत्र त्हांचे मी क क्रिक कथार बर्टाट्स । त्यम, এक मिनल कि बान्डिम् त्न जूरे नक्तात्र, त्य त्जात्र द्वाष्ट्रमा मन एक निष्यंत्र मा सम्। काई जान कार्छ पूरे ट्रिट्मत जानमाद्यम मानिम कर्ट टाहिन्? श—गाम তোকে এक है। आमात्र गाउँ भिन এখন ।

प्रत्य बाबुन अक्षा **का**ण गांठि भारेदव श्वनिया हात्रियुर्ध हिल्ला श्रिका। अञ्चल ज्यन ख्य कर्छ दिनान, जिल्ले छ छोडे। भाभ गथन करत्रहि—जाद शामान्छक कतर हरव देव कि ! विधालात का रूटन बामात मिटक स्माटिक मृष्टि दनहे बनव त्याः कान काम करत जात खुक्रा गांड करत्र यथन माखि भारे, ज्यन युवि, लेक्स ब्याटक्स । ब्याज सम्म काम करत गणि তাत्र कृषण दलानमा कति, छाष्ट्रण मदन द्रमानित छामात्र छेलत द्रमान कलताथ कर्य

স্পেছ হবে, হয়ত বিধাতার শামি তালা প্র — जाहे समात्र शिरक बरत्र राज्यां जावान छ।' आक्रिशकरत्रम मा। वड़ (वो व्यामिश्र) विमित्न,—जारे, त्मरे कत्यरे ७ ह्यां दो आगारमत वर्ष आमरसत्र वर्षे । ट्रिकि द्वी ठान्न मन्दक अकि होत्त्रत हेक्त्रा कत्र । इत्पत्र मर्ल (बमा करा निया ७ এই ए'निन रम, म मन्दरक (मरत पूर्णा-सानी करत मिरण। व्याचात्र छाई। ट्राध्यत्र माम्टन मनएक मन्द्र मिटक এक हम अश्वत्त (मश्वान हा दिवो अफ्रा-हरु हम। अहा कि म्म करत्र मनरजत !

ञ्चा विनन, स्टब्स्ट वोनि ! कुमि ह्हाउँ ट्योटक लिएम এटमह, जुमिने जाटक निरम शाक। जाम (म, आम—मन९ ७थन (मह मिटकर व्यागिटङ्खिन—ञ्चल मन्द्रक दकारमञ्जू कार्छ हानिया विमन-टक्न, रफ्टवी, जूबि ७ टन नमय द्रभाषक हिता। जात्र जाज जात वात वर्ष जान्मका हम।— दक्स, खेणे यदन यदन शुरु त्त्रत्व किन्छात्र मनकामना निक्र हरू मा,--छाहे तम न्मिष्ट करत्र बाक मनदरक खनित्य मिटन दम दम मनटल्य बालन-मा नम्। जार छान, उड़दो-मनदरक नित्र कामि छात्र नाशन मात्र मोटक हटण गारे।

ट्यां दे हीदकात्र कतिया विवास--(कन, ভাকে आमि नक्कि, Cमर्क्साइ, **आ**हे তাকে नित्य চলে या छत्र। रूप। विकि, कुमि व्ययन कार्छत्र भूजूरमञ् मञ नाष्ट्रित ब्रहेटम (य) दकन — आभाग कि छाटक वक्वान-भाग्वाम टकान व्यक्तित लहे। इत्यन्न शास्त्र छ व्यक्ति अक-मिनं हां जूनिन। जूमिर यम, निष, यमि

OWN CARE

थाकि, क्यां करा कात करत यि क्यांनित दर्गन कथा वरण शाकि, मार्कना करा।

(कांभाग्र? जन९८क (कामात्र धार्यात्र मित्र कन वरम। मन९ ट्यामात्र हाफा जात्र कारक अवारम मा त्य त्वान् !

ছোট (वो कैम्रिटिन नज़म इहेम्रा शिना। चारक चारक विनन,—निम, कृषि क्रांटक अरन মাঞ্ একধারটি এনে দাও, আমি তাকে ভা সম্বরতে পর্বে না ৷ বিমাতা হয়ে এত आप कि इ वन्व ना। मिछा वनि। वर्ष (यो भूक श्रामिर्णन । (हाउँ (वो रुठाए भन्नकर्वर (ठॅठाहेमा विलग, --- ना, (यन। (य हरण গিয়েছে, তাকে জন্মের মত বেতে দাও! ट्राप्थन माम्बन दम वरम बारव, ज्यान ज्याम नज्यन मक मां ए देश कार दिन या दिन का मि कि खात्र शत्र ।-- काटक कि इ वगुटल (गटव मां । (बर त्य त्म त्कमन 'कू' करह छाकरकहे खेंद्र येथि जामि ननदरक स्वरत रक्ति,—जाहे मक्य-- एकाउँ देशे ध्वक है हुल कतिया चाकिया चारात्र रांनग,—अनद चारात्र ८७८म,— माधा कात छाटक छिनिएम निष्य याम् । प्रिम, তুমি তাকে বলে এলো—শীগ্গির আস্তেত चाञ्च, नहेरण त्मरत्र जात्र शंफ रखरण त्मर !

वर् दो बाँहन बिहा हक्षा मूहितन, ' छिनद वानित्न मून अं जिहा निज्ञ। मत्न मत्न यांगरणन,--- मनर, जांक जूरे ८५८म (मध - कुरे (कमन मा (भटबहिन्। जायभाय ছোট বৌরের হাত ছ'থানি ধরিয়া তিনি বলি-(भन,— एहाउँ (वं), खरे छिन मिन ना त्यर्छ त्यर्छ । असन अथीत्र रूप्त भर्फ्स्!

एकां दे निश्चित्व प्रतिन ,— बदय त्राह्य। मक्त निरम्रह, जानरे र्रम्ह न्यामि क

डार-रे क्टाइक्निम। जिन किन। जिन যুগের মত বাক সে—আমি ত তাই চাকি। वड़ (वी विणित्न,— (छां वेड, ও बार्ट वड़ (वो अधीत इहेग्रा डिडिट्नन, मिवेट्नन, — (कार्ष द्वीरमम दमर मूथ, (मरे शिभ,---ষা' এই কয় বংসর হইতেই তিনি मिश्या कांत्रिर उट्टन—तम् भूथ, तम शांत्र (यन (कमन इर्हेमा आगिएडएड) यकुर्ती विगरमन,—दकन, कि रुप्तरह हाउँ दो, मन ९ क निष्म (यर् भान्त्य— जात्र क्रि मक्रम (कन। किरमक कार्य)।

'বাষ বেমন ভার শিকারের উপর गांकारेया পড़ে, ছোট বৌও তেমনি বড় বৌদের भारमञ्ज উপর পড়িয়া বলিল, — किम, এ कुथा **ट्यामका यमि अक्रिन मरन मरन यनिएक दब्रद्रमाह** क नागारक पुनाकरत अकविनंत जा कान्द्रक मार्श्वत (कन! ७३, अक्करन युरविति! व्यवात्र बार्यक (मिंब रम-- अमन करत्र था एक काहि क, बाहि विमाता वह महे। कि काहि, कारक मनिष्य निष्य दलमा !

> वफ रवो अव्यक्ति क्हेरनन। रहाउँ रवो विन, —हैं।, व्यामि या' छन्टक टिव्हिनूम— ভাই— এডাপনে ভাহ জুমি গুনিয়ে পিলে !— यानिया मटवटन भारमञ्ज चटन निया थाटविय

> স্ত্ৰত ভয়কতে বলিল,—চোট বৌ, व्ययम व्यन्भिनी हरक्षा मा। এই दिवस, সনৎ—ভাকে ভূমি মেরেছিলে—ভাকে তুমি বকেছিলে—তবু সে ভোমারই কাছে हुटि এरमध्ह। एकां, जारक कृषि अकवात्रि क्लारम माछ। मनद विनम, -नाछ, एहाउँ भा,

जागाटक नाक शांचा जागाटक गांगीत वाजी निष्त्र शिष्त्रिण, भाषात्म सामारक विरक्ष (बट्ड मिड ना ! माड द्हां मां, आमात्र ल्लाबन्ह्रम वात्र कदत्र माङ्। ছোট वोद्यत्र थावादत्र काथ बिरुद्धः वावा, कृषि व्यवस ज्यन विकात! ही कात्र क विमा উঠिল,—आমি विमाला वहें, नहे। जानहे करत्रदक् जाटक नित्र जित्रदक् (कथि, কে তার আপন-মার কাছে আগে যায়:

ञ्चल मौर्यनिःयाम (किनिया विनन,—(इ)हे. त्यो, त्मथ, मन कित्म त्यार माफित्म अत्यर । मनद विमम, —मा ७८%।, वाका (शटक शावात माउ! माणात्र मिश्रत याका छिन, छाना थुनिया मनद विनन,—वावा (मथ, क्रिंग मा आभाव खट्य दक्यन मृक्तिरः दस्पट्छ! यागिया কিন্তু রাখে না। প্রত্ত একটু মুক্রিয়া याकात मत्या त्विम, शदत शदत थावात क्या गावान, खांख जारक मन्द्रित भाषाक-भविष्ट्रम, थारक भारक भारक वाव-वड़रवोटक छवडत डेगन वि**ष्यं** मृष्टि ছবির ষ্ট। সে এ মালা কোন দিন রাখিতে বলিয়া ডাক্তার চলিয়া গেল। थुलिया (मर्थ नार्ड हीएकाब कविया विश्रा उठिल,—(एडि दो, अक्रिनेस कोन करेटि किर्मारा यथन विश्र इति— কথা শোন নি—কল্ফাতার মানীর কেউ রোধ করতে পারে লি। তুমি কাঁদিতে লাগিল। হত্ত সেধানে আদিয়া भिशास्त (यक्षास्त्र (यर्ड, अथन न्ति। विल्ल,—वड्रा), माथा नी**ट्र करत (कें**र्ल (केंर्ल किनिकाको इहेटल बानोल मिट लियनहुम् ७ कि आश्रमा कर्राह, यह त्यो १ किश त्महे वामाभ, विक्रुष्टे— तमहे छवित वहे— अछित्र। अप्राप्त कर्छ वछ की बिणालन,—"कि व्यामिश्रा मनरकत्र कञ्च मनरकत रहाउँमात वद्याकी राज्य वन्द्रक,—र्श्व, बना-बन्धाक्रस्त रान रहाडे ছোট योग्निय हाटल जुनिया निया नियाहिन, मात्र मण्डे मा भारे ।

मिखित किएक काकाईमा हैम् हैम् किन् ञ्खाउद ट्राथ विद्या कर्ने পড়িতে माशिम। जन९ विण्ण,— (छाउँ मा, वाया आमात्र ेक्दत ८ हाथ मिल ना । एका है या आयात ब्राक च्राह्म मर्था कागारक कड कि बाहरम मुथ मुहित्य माथाय क् नित्य छत्व बाहर् বেতে দিত। কাউকে বল্ডে বারণ কর্ত। थाबादबंबे निटक ठाकेटन जाटक ट्रांथ दम्दर, वल्ड। नार्वा, (कम मात्र जास्थ इरम्राह बरण जुमि हाथ िक । में ज़िल, मा आद्रश **डाल टहाकृ, माटक चामि वटल टहरा**

শেষ রাত্রে পাগলের মত চীৎকার করিয়া পুত্রত বলিল,—ডাক্তার বাবু,কেন তবে এতদিন भएफ्डिल, यनि এकि आवह ना किरिय মিতে পার।—আমার সব দেব **ভাজার**

इतिरवान" यानिया याणी कित्रिन, मनर जयन बाफ़ीटल व्यक्ति अविवादक टलामात्र याल्या क्रुटिया चानिया वक्रविद्यत्र टकाटन माथा वाबिया बारकश्च वावु श्रांक मशास्त्र याम वाका वाका कारक। त्याथ रुप, ७ शान-भरन रुप्तिस्क

केत्रवीखनाथ यत्साभाषात्र।

লেখার ইতিহাস

रहेन, हेरा এक मरा ममञ्जाताल र्रान्शम-महानदक वाजिवास कविया वाधियां छन, आभारमद नियर में एवंदेय श्रीवित आमिय আৰও সে সমস্তা পূবণ হয় নাই। না হইবার काजन विखन निष्या निष्या । भाषतीन मानम् ७-শরণ এই জারতীয় সভাতা কুখন প্রথম অত্যুন্নত হুইয়া উঠিতেছিল, তাহার থবর এ यूर्ण (भी छटव कि कात्रश्रा १ कवि का विलाम क्रिमालयरक विश्वारकन, भाषता इव मानत् थः ' **बहे मान-मरखर रुष्टि,** वहना, क्रम-नक्षन छ श्रीक्या मिवर्कि। क्रामां ज अक्यांक विष-विष्ठांत (नाःक উद्यांतिक, এक आंत्रिय कृष्टित्रक्ष मासूरवत **ठ८क अनव छिंछ इ**हेशा स्त्रा बिट्ड व्यामिट्न, केका काशंत्र इंका इक्टल भारत कि ? किमाजि-अटकर कड्या कथन काकन-अड्यात चर्न '५ खरोदा चात्र ७ ३३ म, कथन नट्यां अल-म्मामी मित्र अভाবেষ্টে পরিশ্ভ হইল, এই স্ব क्या वर समय किन है। शहाको है र्डे वात व्यापका बार्य ना। व्याप्तात हत्वा क्षेत्र, সমস্ত ভারভাম সভাতাকে একটা পূর্ণ অবংব मिहे—डेका क्य जावराज्य माधनारक एक्टी যুগযুগান্তের স্থারী মৃত্তিতে গড়িয়া ভাল। ভালা क्टरण (माथरण भारत रयमन चाँकारभन्न रमध-त्रांका गणिया विष-वर्षण छणिया भएए. त्महेत्रभ আমাদের ভারতীয় সভাতা গলিয়া গালয়া रियाजित हिमधात्रात्र कीत हरेशा, काल-शुक्रम हिमागरत्रत्र कठाक्टित मर्सा कामकानना-क्राल ठाँहे পाईश्राष्ट्— এ कनकानमान ধারা बार्ची-मूर्थ बाज बार्चा। वर्षत्र वुक छानाइमा

व्यामात्मित्र त्मरम् त्मभात्र व्यक्तात्र कत्य इतिया क्रिज़ास्ह्।' পृथिवीत यत्रम माथाय क्रिया हिमान्द्रभन्न किरोध भाक ध्रियाट्स। আজ মৌন নিকাক। शुक्रम সভাতা মন্থলতে মথি করিয়া হিমালয়, ष्याणनाव भार्य मन मन्यां क त्रियार इन, जाव সমাধি-মগ্ন मगारिन्ध् क्ष्यार्क्स। পর ভোলানাথ সংসার ভুলয়াচেন, তাই আমরা ভূতে ব অন্ধ-গুণায় অলি-গাল খুরিয়া বুণাচ পথ

> বাস্থবিক ভারতায় সভাতার ওমাকাচিনী পৃথিকার প্রথম বয়সের সঙ্গে বিজডিত, সেই সভ্যাশার শুরু পর্বতের শুরের মূভ এই বিংশ শতাকীর বৃক পর্যান্ত নামিয়া আসিয়াছে। (य मुख्यात्रकारम मिरम नाहे, डाहा ना वानराज ५०म ; यष्टकु मिलिशाइ, ०७६कु ० रिवास्त्र । किन्न मालिकाराम इट्ट क्रिक्न कुरनद मकान भिन्मारक, नाकोखनि दकाषाम শ্ৰুষাছে ভাগ্ৰ কিনারা হয় নাই; যেগুলি পাওয়া গিয়াছে, ভাহ'রও শ্রেণী দক্তা জানা यात्र नार। ८कान् कृत्वत भन ८कान् कृत ष्यामित्व, त्वगौत मर्भ हम्भक वामत्व. ना **ठम्मादक म महम जमताकिल। वर्ष** देविहरकात বাহার ফুটাচবে, এত পুটিনাটি পারপাটিরূপে कानियांत्र ऋत्यांश त्कांभाग्न कात्वत्र महा-खंदक रहेट उ एवं कुनमन भाउमा त्रिमार्छ, ভাহাই যথেষ্ট, এই সভ্যতার ফুলসাজ লহমা धो ७ हा निक नियादिक विधि-वावका व्यादनक निन

চলিয়াছে। ভারতীয় সাধনার যদিও পুথি শিলমাতে, কলম মিলে নাই, কালিব ত बाजाम अ भावरा यात्र मा, कांगरकद उपा छ धारकवादबरे बछा छ। ्डीव विद्वार ६ किला म. व्यत्नक खन्न व्याधित व्यत्भाष्ठदन त्रिक्षा भिन्नारक, অনেক সুল স্তা ছি ডিয়া দৃষ্টি এড়াচয়াছে। किन्न के किलामक स्मृत्य अवीर कत स्वर्धा कारक वर्षे भव भागट पिर्ड धकान्य नार्धाक. व । वन के विद्यानित्क व क्या के ब्राह्म खाहानत्क नवीरनद घरव व्यानिम (मध्यो। इिट्माम Leide Picer का बादिय का उपर प्राप्तिय कार्यान मट्य भाषाच्या भट्य, आ म त्या नत्क वर्ष्यारमञ्ज व्यक्त वशान्त्र । ज्ञात्रय । नद्यव कार्छ। कडर ७ शका कालिया (मन-, मनाखर्य नशरत्र काखारत तम अन्तर्-१-१व्य' क वित्र = रत नगरेमा नरेमा निप्तात्वन, का उराम निप्त birea चलार्ड्य को वन-भावादक Cक्सिन ভাবে মানব-জন্মে শ্রীরথার মত চের-(ट्याक्स्त्रन), कित-कर**न्ना**नना कतिएक। द्वाप-काामरकत्र ध चन्न वर्ष मध्य, विकास ! <u>दिराम्य मण्डलात त्थां अ भा छत्रा दश्य, देवीन क</u> मुश-त्रहनात माड़ा পড়িয়া গেল, বেদের সমাজ बाह्य बाह्य कृष्टिक मानिन। छात्रकाम मछ। भार छित-व्यक्ष्टल कर्षाण छक्र भथ (मथा हेटलन, कशमी क देश्वाटका प्रतामक जर बाटनाठनात थ्र भाष्या গোলা আৰু প্ৰাস্ত সে সভাতার এক অক यह द्वे अप डेम्बार्डिङ क्डआर्ड वीनमा भरन इश्रमा, वाकि अश्रक्षणि यवनिकात निर्देशण বেষ্টনে অবস্থা কহিয়াছে। কিন্তু সভ্যতার विकाम ब्राज्य व्याज्य-चत्र क्षेट्ड व्यात्रश्च **इहेब्राट्ट**, त्रठमात्र फिल्डि (मधात्र भक्कि। मनी ७ (नथनी अबहे (नथानफण्डिय युनन नाविष

আর রচনা-পত কটরাছে রথ। সার্থ পরিচালিত রথ বেদের যুগে কেমন করিয়া
চলিয়াছিল, ভারপর কেমন করিয়া সেই
কেপার রথ নাক্ষণ ও দর্শনের যুগ বহিয়া
বৌদ্ধ ভাবতে আসিয়া উপনাত হয়, ভাহার
হাত্থাস।ক উ।ব ধার চেমের চিন্তাকর্যক নয় ?
বৌদ্ধ যুগ হইতে লেখনী সারাথ হয়য়া বগকে
কান্ পথে চালাফর্য ছিল, ভাবতের অঙ্গনে
অঙ্গনে কোণায় সে রথ আময়াছে।, মৌর্যা,
মন্দ্র, গুপু সায়াজের উপর সে রগ কোন্
ছলে মৃণ্য ছুছোছল, শহা জানিবার
উৎস্লক্ষা কি আমালের হয় না ? সেও লেখার
বিশ্বাস আলোর কারবান কর্থা লহব।
বেথাব সঙ্গে জানবিকালের পূর্ব শ্বান হয়া
কি অস্বাব্যর কারবাব উপার আছে ?

(लयात कडिकाम-**आ**लाठनात्र क्रीकशीम-Cक्रा महाडार एव-भवन्भत्रा ध्रिया विठाय-रक करियाय अध्यात भान नारे-कात्रभ वस खन कमुक्ष भ्रमार्छ, ভারতের হতিকাস वोक्ष यूग ३०८७० भू हेट । आत्र क्रिशिष्ट । ভাগার পার্পের হা ভহাস নাহ, কবল beacon light এব মত সভাতার মুকুটমাণ পুতকরাজ भाषमा । कारकहे त्नोक्षमूरभव भूत्व को उकाम मधाका काम कथा वना कतिन धावर यक्ट्रेक् भावा यात्र (महेक्ड व्यक्षान-माधा। (यामत अठना-काण षुः भूः २०००-३६००; ध्यक्ष भगद्र दयम प्रकित क्या किन प्रकाश প্রণালী সম্বন্ধে এক মধা সমস্তা মুরোপীয় পাগুতবৰ্ণকৈ পাৰ্যা বাস্যাছে। তাহায় কারণ এই যে বেদের রচনা Revelation কহত, वान्योक्त त्राभावन त्राना-हिट्य वर दव देवामक अविदा जामनय इहेश मात्राक कनम ও कानि अहे खरी मार्गाया (यम-छस्रो त्रहना कत्रिमाहित्सन, खांश कांश्री यानित्व याधा नरहन। व्यक्ति स्नुडि, याहा व्यक्ति याहा শুনা গিয়াছে তাহাই স্থৃতিতে ব্যাথতে ১৮বে। ছিল, সেন্সময়ের ইতিহাস আলোক-দীপ্ত हेहार त्वमारखत भूग ७ भरखत वावश्य शायणा। এইরূপ ব্যবস্থা দৃষ্ট ১য় না যে আধানব শশকার মুল মন্ত্র 'লেখা পড়ার' মঙ অর্থাৎ জেশা ও পাঠ উভয়-সংযোগে বিছা অঞ্জন ববিতে হইবে, তথনও বিভাগীর জগু হাতে গড়ি দিয়া कन्यात्र माश्राया भोष्ट्र इहेर्य । भरत् अक्रर নিকট শিষ্য শুধু আর্গত করিতে শিথিত। য়ুরোপীয় ধারণায় ইছাই বেদের যুগেব 'লেখা भड़ा', व्यर्थार भड़ा त्यभा नद्या (यम ब्रह्मा-অবধি স্থাত-গত থাকিয়া এক যুগ ২০০৩ স্থাব युर्भ চिनिया याहेक, भि ममय ब्लियात यथ फिन ना, ख्रु ख्रां इत वाक्टन द्वरमंत्र ख्रान-ममूक मानव-भिष्कत क्षात्रक माद्र काशिएक थाकिछ। বৌষ ইভি হাদের নায়ক Rhys Davids এই **लिथात अ**जामग्र-काल (योक्तयूर्ग अजावजःह व्यानिम्ना स्किनिएक हार्टन । काँकात्र Buddhist Indiace tota দেখাইতে চেন্তা কার্মাছেন, ভারতবর্ষের যালা কিছু গৌরনের, যালা কিছু खानश्मनीय मकनहे खात्र (योक उषान-काहिनोत সঙ্গে বিজাত্ত। এই লেখার মূল বৌদ্ধ-যুগের সঙ্গে বদ্ধ করিয়াছেন। কিন্ত এভটা pan-Buddhism সভাতাৰ অপর শুর-শুলিকে বে তিমিরে সে তিমিবেই রাথিয়া **(मत्र डांके ब्यांकिकांनिकांत्र मिटन द्वांध क्य्र** pan-Brahmanism-এর প্রয়োজন। কারণ বৌদ্ধ ঐতিহাসিকদের কুপায় বৌদ্ধ हेजिहान माथा कृषित्रा गें। ड्राइग्राटक Pan-Buddhism-अन्न करण আমবা षा शुक्

সামগ্রী পাইয়াছি, এ মহারত্বেব তুলনা হয় ना। (रोक भाषात चारलात उप व विन इहेर छ (य अर्थाष्ट (य (य (भटनंत्र डेनन क्रुंटिय़ा biनय़ा-क्ष्या आक आगारमन नयर नन मिन करेश रहा। ঐতিহাসিকের বৌদ্ধ দ্বা তাই भग्न বালতেছিলাম, এবার pan-Brahmanism नव खारवासन, ७८वर सामन रातानिय थुँ किया भारत। राजामानज व्यक्तिक कौरानड ख॰ कांद्रश भाष्ट्रभ ७८व बङीय माधना मार्डित मर्थायमा, এयर त्मरे मक्श्रात मो'श्रर • भातक डेल्डि**राम**त (य (य (कार् भारताक-भा ७ कहर्र, (मह (मह अह क्ला कि-क्षामि हरे शांगवात तूरक अकी महा चारनात वञा बठाहरा ७ निद्य ।

(नामन घुटन किज्ञभ दमभा भका । हिम ভাई। जञ्चान करा महक मांग न।। जाकि कामिकार मिटन हैका এक ज्ञाभ क्रिक इन्सार्छ ষে বৈশিক যুগে Brahmi-script পচলিত हिन, खांकी कक्दात मध्या ७ नमूना वर् विर्वाभीन। श्राटकमात्र Bubler व'वायारहन, এই ব্রাহ্মীলিপিই পরিতীয় সভাতার মূল-বাইন, এহ প্রাক্ষী বগই সার্বাথ-পারচালিত ছইয়া বেদের যুগ হলতে ববাবব বৌদ্ধগুগ পর্বান্ত हिनिशा व्यामियादिन, ७९कारन दम वच कडक সময় গতিকীন হইয়া আবার পূর্ণ বেগে ভার-তের নগরে প্রাশ্তরে ছুটিয়া চলিতে পারিয়া-हिन। थुः भुः ४०० व्यास क्रे बाकी निभि রীতির এক মহা পরিবর্তন আসিল, ভাষার कथा विजवाद शृर्ख (मथा मचरक क्र' धक कथा বলা প্রয়োজন। Buhler এর মতে Brahmi script-এ 500 B. C. अश्रीख २२वी व्यक्त

किन, त्म काकरवात्र अमूना এवर निधन श्राणी किन्छ तम करक नाम भारा (शाहित। विश्व-াকক্ষপ ভাহার বিশ্ব বর্ণনা পাওয়া যায় ना। उद अकें देक खित दय नाका तिना वाम ामक क्टाफ जिल्ला (,list to, right) ठान , जर माम महाल श्रमान त्मध भाषां अधिकाषिक इस्र। এशर्ने कल कमा उर्फ ष २००० B.C इन्ट • ७०० Bt প्राञ्च आह Brahmi script कान थात्माङ्गान वानक्ष छ क्रव त्मथात्र धातावाहिक दिक्शम क्रिय, निवाक करात। किन्नु के त्य धुरा दिक्रियारक न्यांत क्षिय मान्य श्री मिल ना तर या ना प्र दम कात्रव याचा Revelation, नाचात्र Rememframe कार्य न ना कार्य कारक कि न বাহন যদি স্থানত হটল, ৩০ে আব লেখ-পদ্তির কৈ প্রায়েকন ও বাস্থাবক কাক্ষরের মান্ত নাই, এমন কুকি-লাগা রাজ্যে का कानिया जायात किकाठिक 'विषय ना कानिया (यरभव मर शब् किंटिनीम करन কাহার ডপর, বদের গুরুণছার উদাত্ত অমুদাত প্রবিত চলা কণ্ঠ বিহান হহয়৷ কাহার উপর বাজিয়াছিল গ কণ্ঠগানর কি গান कारहे १ अका कथा मदन शिक्र ग्रह्म भइस छ। याद अश्व भइस मध्य भक्त वहरा। ভাষা-সমুদ্র উত্তাল নূত্য ক'ববার অবকাশ পার, সহস্র শব্দ যোজনা-ছারা ভাষার পিণাক यांन मक्कांन कांत्रया पाटक, किन्त व्यक्त विशेन त्म जाया बहेरण एसूत्र हिला क्यांचा भारेत, ममुद्रम् स्वान (काषा इक्ट्रेंट आमिर्व १ भित्रकत्र लाएक कि हिन्दा कविद्य भारत मा १ পারে। কিন্তু সে কত crude forma,

वाशियो लग्द्रस शर मध्य कुलिया क्रक्रस-चा- जि. खाँ व का छ । या नवा स व्यवकाम भाग कि १ काश्राम्भ (स्थित नित्रक्त अश्रीक रिय मिक ममूरकत कांत्र रंत र रहा थाटक जासात त्य द्याना तमना ठाणाहर खादक, शकाब भूज मन । ये काराये का सन्। कार्यक काश्याक है रिष्यांत्र केस मा । जाकारा क्ष्मित मार्टिकेस শণিত মোশ্বরা শণু জুলা স্থাক বা আকায় (व भरियाण मक मःनव्रंट करव, ठारा शशामिय भूग (भागाभ काल वर्ख क्राप्थ विश्वा पार । (ultured circle धत्र ज्यांत्र आयमानि कावश नाजकत वार्ववात काकत्वत का भाव द्याध करत्र ना। १ १ मकत बना उक्क मगारक प्रकार सक्मगारी भाउस यात्र। ८व ८म८म निदक्करदेद जालह, जाक्करसद ८मन िखा ट्यां व नाहे, चारक क्विन वख भविष्य-खान. गर्भ केल (rude) यह व**ख**-कान माकिक लक्ष्यावश्राम मास हाहा (वस-त्रां भागनीय अष्टम जान्त्रगा नम् चात्र क्रकंडा कथा मत्म ब्यांशरकरू (य, क्राया-गहा, काक्षर-शहा आमदा टेमम्दर छात्राद অক্ষর পরিচয় না পাইয়া হৈছা করিবাব অধিকার কি পাচ -াই ? অবজ্ঞাই পাইয়া-ছিলাম। কিন্তু বাহা চিন্তা করিয়াছিলাম, তাহা বস্ত্র-পারচর ছাড়া আর বড় বেশী কিছু বলিয়া ৩ মনে হয় না ৷ বল্প-তন্ত্র ছাড়া-रुवा महा-ভाৰভাত্তর কথা মনে করিছে পারিভাম না, ইহা সভা, কিন্তু এপন অক্ষর পরিচয় হইয়া অবধি অজ্ঞাতসারে नित्रकार तर मृत्य कि कथा नाहे ? पार्टि। कथन हहर्रि यागता मिटे वस्रितिसा भर्गासक

নিয়ক্ষর চিন্তা ঘাহা বস্তুতে উপগত হয়. ভাবের রাজ্যের সীমানা মাড়াইতে একান্ত লাবাঞ্জ সেই অক্ষর-বিহান চিস্তা চিন্ন গীবন नित्रकरत्रत छेभद्र जत कविद्या थारक, महा-क्ट्रेट क विनाद कारिकाव शास्क कि ना मरमर कि दान कि के न्या के नख-ভাষের পুলি নয়, ২০া মহাভাবতপ্রের मक्क इसमा अक्ष (नक कि (नश वार्श) क्षा काल कांत्रर भारत १ एवं ८ तरमत्र युत्र कि मागर,त (इंडे अब मंड कंठार वान **डाकिया जामिया** शक्ष-ात्मव ७१८व छिन्य হইয়াছিল, না, এহ যুগ গড়িয়া উঠিতে বহু मिर्नित्र माथना ও তপ্সার প্রয়োজন হটরা-ছিল ? প্রান্দার Buhler প্রমুখ সুধাবর্গ अक्रिय भारता करिएक यान नाहे, कारत काशता खामान नहेशा कत्व कथा कहिएनन, প্রমাণ ভাঁহাদের শুক্তা Buhler ব্রাক্ষা শিশিক national writing of India यित्रार्ह्म। তিনি येणिश्राह्म, এই script २२ **वि व्यक्**त वादेश 500 B. C. পर्यास विवास ष्णाभित्राटहः, किन्द এই সময়ে खान्तो निशित्र অকর সর্বাশ্তম ৪৬টাতে পরিণত হয়। বাদ-वाको अक्षत्रक्रि (काशा क्ट्रेंट आमिन ইছার তথা Prof. Buhler স্ক্রিপ্রম বাহির ক্রিয়া ভারতীয় লিপির চ্ভিহাসে এক ष्मिय क्याप्ति मस्ट्याखनः कट्यन।

Northern Semitic 41 Phoenician type-অ বিরচিত Mesa inscription स्ट्रेटल जरे जलान्या मिनित्र ज्यापिक

অক্ষর সংযোগে করিতেভি, একা আমরা ইতিকাস-স্ত্র পাওয়া গিয়তে। এই inscrip-विमारक भारित ना। ठिक् बामारास देनानन- tion Assyrian weight এর উপর লিখিত হয়। ভহাব স্তনার ভারিণ 890 B. C. I Prof. Buhler craisces a ca cas স্থাৰ অভাতেও ভারতব্যীয় ব্যাক সম্প্রদায় বোৰলন ও গ্ৰাসিৰ্গ্ৰাত বাৰিকা অভিনাকে ভাৰতপ্ৰের তিল আস্থানও ভাহাৰ নিজ ্থান্যাত কণিত, এবং সেন বাৰিলা ৰাবাৰ कानकाटन काकाता । यहमालाके यसात नाच किंदिक। धार शारा विन भर्भ काका ता त्य লিপ-প্রথা Assyrian weights দিখ্যা आगिशां किया, काशांश नमना अवर बनान २ ही कार्यत कार्या, जा मन्ना पाकित्य। छात्र भीन वानक-अख्यमार ४०० R. (८७ এइ मिमि প্রেপার সাক্ষণ ভাবভ-বধে প্রচাব কবিধা भाकित्व, जन्द उँहा ५३८७४ जात्रक है। केशस्त्रद निभिन्न काराम प्राथन भरायानि । कम्यारक् Prof. Bubler Chaires 'अब्राह्म एव Brahmi -cripts ব সক্ষেত্র ৪২টা অক্রের गर्था २६ जिम्ब Mesa inscription as क्रकरव्रम् भडे. ध्वर हडा कर्डाकर ख्रमान क्रम (र এই क्षेत्री Assyria क्टर व यात्र कांद्रश লওয়া কহয়াছে ৷ ভারতব্ধ এইরূপে ২৪টী बाक्य बाबामार क्रिया लग्ना थुः शृः ৮०० অবে বলিককুল-ছারা লিপি-প্রথা আনীত क्ट्रेलिख, हेका खात्र 500 B. C. পर्यास Brahmi Script এব অংশ মিশিয়া বাইতে शादि नाहे; किन्ह आहे मिल चित्राटक, প্রায় 500 B. C. তে। Buhler আরও গিয়াছেন বে-ছুইটা script দেখাইতে ভারতবর্ষে এ পর্যান্তও চলিয়া আসিয়াছে, हेहात्र याचा এकनी Brahmi जानतनी Kharosthi, व्यथमजीव कथा क्यांपर चाटणा-

ाठ्छ इकेन, केशंत्र शक्तिथि **हिन छ**छर ভারতের সর্বাত্র, অবশ্র পথ চলনট মূল কেন্দ্র। ঘতায়টি গান্ধার রাজ্যে বসতি স্থাপন করিয়া-शिका। Buhler विवास कश्च कर्मन नाई त्व खाबरमाञ्च निर्मि करमर्ग रमनाभाउना গাব বছ পূৰ্বা ১৯তেহ চালভ ছিল, ৩বে न्श्रंत क्यारन वक त्यमी कीवना-म⁴ छ त সঞ্চার তিনি দোধতে পান নাচ, কৈছ भारताक निर्भित्र मचरक म्लाष्ट वानद्रार्टक, इना वमानुम Assyria इट्ट भाव क्या। न क्रकी पट ipt धन विन्न-भक्त के । विल्म-Brahmi नांश ग्रम ३०० छाटन, जांद Kh 1105 hr छान कहर । स्वा अवम्ही भविक्य मण्डा अक्षा । व भग्नि आवर्ग अक्ष का I uhler व वसा/कन (न वाक विभि एथ जाकारवर क्षान किन, किर बना । जान भाग्रत्वेत्र र्मिवलाक केन्य्राह्म । लिक्नाव मर्ड हैश national scipi, वात्रव वर्ष डाम्मा क. ८ - इ नायर इय लाया भर्गिक काम्य फ मर्भरून रून्ध्राधिल। Island this कि लग्न (हर्ग नावर भे किया भावया यात्र ना । भवत छक्षांत्र, मादात्री, ठन्म, प्रिया, वाक्रवा, धााव এশ সব ভাষার (জাপ্তভার এক ব্রার व्यर्ग निवा करिया किया Pub leras भाष जानक वड़ वड के कांगक आमिश कृषिशार्कन, मेकान्ना Buhler धर्म ३ ७ निर्म हानाविता कविट काटडन नार,--Isaac Taylor 1'97 5 61784. 1818 18 imingen भूतानांव भावत तम् नव southern Semites pre- via val i Buhleras Northern Semites তাঁচার মনঃপুত হইল अरम्रा अभिमाषिक कर्नाटम (२४२४) मा।

Mr. Kennedy এ-সম্বন্ধে বিস্তৃত আলোচনা ক্রিয়াছেল ভাষাব মূল মর্মা এহ যে, সোগাষ্ট্রের এক ধণিক সম্প্রদায় আত প্রাচানকালে বেবি-नात्त्र महि अवाध वानिका जाना छ, টাত্রা মৃত্তে পশ্চম-ভারতের সমুদ্র-डेभकुल अधास वानिका-भग स्मिति किन, এই প্ৰেট ভাবতেৰ সভিত কেল্ডিয়া थ मर्मय (समामा हनात कांत्र वात ठांन छ। अह यायगारम्य भारमाना वयानि मश्र्यारम स्वायमन बाद्याय व्यक्तव विश भवानानात म्या भना कर्या 'न्यांकि।। यन्न ध मान व्यांन्या कारट व भारत (भारतन, ज्यान निर्म প্रशांत करना रहन। मञ्जव वह मन वालक सार्विक को नीय करेटव, कावल टाराया त्य त्व किंग्लिट्मत्र कर्वत्रात्र कर्वत्र क्र नाम अन्युक्त वा भाग गरं, किन्न स्थामन व्यक्तिता (गांक करिएक स्वारमध मकान विनिध् । का ना का नावाद Rhys Davids वस्नाइर • नाश इ॰ ब्राएक । काम जोब कि। अत्र द्योग का रियम में किन अम्मूर में भन कान, भुत्र भूत्व मर्भ्द्र शाव विनित्त (म्याक्ट्ड हारकन रव कावकर में य संगंत एक्टर रूप नाक, भाव वस इ. हे . भो अक दहर्य हेमा काश्य अप्यवात याः जुः। Buhler कर्ड Rhys Diids श्राष्ट्र मक्टब्स् वारान रिया का व वर्मन भारत ज्ञाम अम्ब कार्य ट्राप्तारार अक्षय ५ जि.। त्रता श्रेश-, ছিল, এবং সেই লোপ প্রথার সাহত তাল या। यथा नाहिन हाया श्रीष्ट्रंश केरिया कारामध्य यथायुट्य युद्राशीय आधु नक छ।या नयुट्ट र खनानान करतः Semitic वक्त-आं क्रिट्ड এত। इरेम, ভারতবর্ষ कि समान गिरि

श्रष्टिक विद्या विनिग ? Rhys Davids किन्द Southern Semites 41 Northern Semites, देशास्त्र काहारकछ छात्रभोत्र লিপির শহিত গ্রাথিত কারতে চাহেন না, তাঁহার মতে ভার গাঁর লািপর স্ত্রপাত হইরাছে त्विन्नरभन्न व्यापम व्यविष्याः Akkadian नां र करा जाशात मरक धर Akkadian कहर उद्देशिन शिशि-अथाय आछाम भार्त्राहिन। कार्यहे । स्था बाहरकट्ड (व का ७-बफ प्यतिणम का ित्रक छेश शका मन्न कि नहि। তিনি বলেন যে ভারতীয় বলিক কুল এহ गिणित जामनानि क्रिशं द्राक्षी script og উদ্ভব ঘটাইতে যথেষ্ট সাহায্য করিয়া খাকিবে। Rhys Davids of Brahms scription subline writing নামে অভিচিত করিয়াছেন। অপর কভিপর যুরোপীয় পণ্ডিতের ক্লায় ঐতি হাসিক Rhy- Davids 9 ছুহ শাচ বাহিতে हाटएन नार-हान धकमूच क्रिया हनाय देख रहेट ए पटनात्र अनावन म'क हाता ভিন্ন মুখেও ৰে না হোলয়া পড়িণচেন. ध्यम भरह। किन्तुरमय क्या छिल ना क्यांत्र ক্রিয়া প্রমাণ ক্রিতে নামিয়াছেন, 'নেতি নোত' বৰ তুলিয়া উহাকে খণ্ডিত কবিলেন, কিন্তু হিন্দু সাকিত্যের গঠন ও ক্লপ চিন্তা कत्रिया जिन्दिष-नारभेत मिरके छ एव जिन्हा छमार् ना त्यांक मिशाएकन, काका ९ नएक नमूना 'আয়াপ এই কয় ছতাই ৰথেট :—'It is of course, not impossible a priori. that the priests in India had developed an alphabet of their own out of picture writing, and that it was on to such an alphabet that the

borrowed letters are grafted. अर्यवाव अ अरु मह्या मह्या म्हा कर्म कालि थत्रठ क्षियाद्यात् । अक्यान अन्ति । त्य ঢ नियारकन अवन नय-For their study as well as for the different methods of preserving them, whether by writing or by memory, for either is possible. " OF your con (माना कारनक महावयीरक नाहाहरक हाएफ नारे। कार्य शहल 'ना-ना' व यह पा — God 15 110-where विलिटि atheist वर्ष (यमन প্রভাক God is now—here লি গ্যাহিক, সেচরাপ হা হা ধ্বানরও অংশুর আভাস কাগিয়া উঠিবাছে বৈ কে ! এচ পতিকুল শিবিরে General Cunningham অনুক্র मक मक्सा धाकचरत करट विमग्नार्छन। किन অভ মাণা ঘামাল্যা 'না'র ভতিহাস রচনায় निভाक नात्राक। তিনি विभएक ठाकन, ভারত • ব বেদ বেদাছের সজে সজেই পিপি-রচনার সভাব স্থার বা যুগল সার্গা-বাহিত হুইয়া চলিতে আবন্ধ কবিয়াছে। Davids এই মত যুক্তি-ভক্-বিছান জ্ঞান কারতে ঢাকেন। তাঁকার মতে ভারতীর ভাষার कारक र्यमन वर्ष भारकत्र ममस्य रामधा यात्र रक्तमान ভার শম লিপির চেহারাম অপর লিপ-প্রথার भागामुक्त पृष्ठ रहा। कराइ क न्नाह आजी क रहा (य बार्ट्स इंटर्ड क्रांनाभन कारम्य शांत करा। মখন ইহা সভ্য তখন দ্রাবিত্ বাণক কুল কলতে काषाय मःगठेन ना करेत्रा यात्र काथात ? कांशात মতে ব্রাহ্মণেরা আত্মস্বার্থ नहस ব্যস্ত, ভাহাদের ভাষার ব্যবস্থা উপব লেখার দীড় করান অসম্ভব। এইরপে বহির্জগৎ

২ইতে ভারতের লিপি সাহিত্য গড়িয়া উঠিতে পার্বিয়াছে ইহাই প্রেমাণ হয় এবং ইহারত জন্ত প क्टब वाविकादिक माहार्या छात्र के हिन्दार्भन शृष्टी नित्रा वार्थकाम हहेर वैराभन वानीर करमकी ন্ব গঠিত করিতে প্রতিভা-প্রকাশে ভিলমাত্র कृषि करब्रन नाष्ट्र।

किन धक्रों क्या छेठिए भारत कि १ এই যে Mesa inscription হইতে ভারতীয় । जिला खिला से देश पन इहन, जोशे के अकरन है नानिया नहसार्छन, जातर ७ व वर्षिक याहसा এক কুড়ি অক্ষর কাণা কড়ির মত থাল डोत्रश महेशा जामिन, जादलद जावजवार्यव 'यर्गानमानाम के बाद-करा विस्तुत श्रथम क्रम-निकास हिनान, रहा क मकटनाई दाईरवर नेत्र A अ मानिया नहें ८७ एक ; कि स मानाव श्रमां ?. ्यर् २ Mesa inscription वस वायमाधा -xcavation कर्टक वाकित क्रमार्ट, (याक्र হুহা লেখার অভি প্রাচান নিমর্শন এবং (यरक कु जातक वस्य किद्यामान वा जरभन्न वही कारनाम क्यान निश्चित मोनदा भाषमा गाम नाह. भिर्म (केक कि विनिष्ट कर्राय (स के inscription इहेटक लिशि-क्षिश जानीक कहेगा - বিভের সাহিত্য-রচনার নিয়োঞ্চিত হর্তরাছে। जाम्भी कथा। जात्रल वान्ध्या धर (व ভারতের এক বলিক সম্প্রদায় সে অক্ষর এইয়া আসিল, জাবার ভাহাবা জবিড়-দেশীয়। ভাহারা ঐ লেখার মন্ম এত বৃঝিল যে অক্ষৰ-শুলি সাড়ে পনের আনা নেশ মুখস্থ করিয়া, বা न्दर्शाणीय स्थामात्न हाक भाकार्या এ स्टब्स अटि बार्ट इड़ाइस भिना स्थाप कथा राष्ट्रे। यथागुरमात्र होजहारम लिक्साफ्लाम, চান দেশ ছইতে Silk industry এক

किनव डेशारत बुरडार्श हिल्हा शाम—इ'बन 'भथ-(जामा भिषक अमिकि-जार्य' (म प्रित्म िखानीटनत्रा आधुनिक यूरगत्र विভाइटि यात्र, এवः silk-worm आनिएड পোকা রাখিয়া ভাষারা গ্রীসে চলিয়া আপে. তথন Heraclius এর রাজ্য। Eastern Capitala (Macs Catacs द्रिमार्भे के विकास को क्या देश मार्थी-युरगंत नानिर्जा युरशे एक न् जन किनिरमंत भड़न कतिए भारिम। व्यागास्त्र व्यारमाठा ावस्थाती ५ व्याप्त (महेन्छ। ध्वशादन **८ म**ह जक पुर्छ। किय गणम श्रद्धा जिंक त्मस्थात्म (ग काकारत्रत हास ७ (त्रमारमत हास रमारहेक) একরাপ নয়, হতিহালের ভৌবে এ ছুইটা किनिम स्याप्ति मार्थाहरक भारत ना। शिष्टरमन ইতিহাস-নামকেরা বিস্ত ভারভার লিপির को उठाटम (मरु द्रम्यम हाय व्यानिया स्क्लिया-(छ्न। এখन कथा क्ट्रेटिंग्डि, Mesa inscription ७ जांत्र (त्रणंग (भाकांत्र आंशांत नत्र, (म विगिक्ता मार्डाएकाम मि भिन्म আখার ভারতেব অঙ্গনে বাতি জালিতে थाकित्व १ खाविश एक्टि के इंटिंट के श्र त्य-ভাৰতীয় ব্রাহ্মণ বেদান্ত উপনিষ্ধ রচনা क्रिया ও 'मार्ट्स' हिसा नहेशा नध रहेशा द्रोहण, ভाशदा बक्त बाविकाद्यम धक विन् उपान्न श्रीक्या भावन ना, जात क्लांकात छ। ए विकक्ष भना मनवराद्ध मदम मदम त्म किनिम याध्य किन्निम । याहाया वावभाषी अहाता मिनित्र मधामा व्विम द्यो, আর যাহারা মনস্তত্বিদ্ ও শতাব্দীর পর भ डाका ध्रिम (यर्भन ष्य कृत खान-मस्प भद्दन करिया ज्यागित्वन, डाहाबा निश्किन्न

क्हेटक कानिकान ना, वा शांत्रिकान मा। বেৰিলনে প্ৰাবিভ ৰপিকেরা Mesa inscription (मिथ्याभाव युविधा (क्लिंग, हेकांक लिया. ভারপর জানিল, ইকাতে অক্ষব আছে এবং उर्क्रनार এक्षेत्र (भाक्षेत्र मक (मर्म क्यांनश शक्ति हरेग। जाग, क कक्ष का नामिश কিরপে পুটাল বাাধ্যাণ ভাচা অবশ্রহ नय। लाहात्रा निक्तत्र निधित्रा काशाम कतित्रा व्याकरव, तम तमरम ७ ज्यात वर्नभूतिहत्र छिल ना (य अक्रमामित (माकान क्रेटिं) अक कार्शि गरेश आभित्, वा डे खिश्रान भाविणां भः राउम ছিল ना बाहार काट्ड (गई Mesa inscription এর প্রতিলেপি পাঠাত্যা পিয়া, ডঠার ध्यकाम ७ ভারত-ব্যাপী প্রচায়ে লাগিতে পারিত। তথেই দেখা গেল যে তাহারা मिथान काक भाकाहरक मिथिश नि कि थी।करव। ভाহाদের ভ আর কাজ ছিল না (य व्यक्त श्रेणाश्यक्त क विद्र कार्निया बाक्ट्य। ভাৰার Modern school of Archaco logy र student दिन ना एवं Buhler এখ মত, Kennedy র মত, Rhys Davids এর মত Paleographyর বিজ্ঞা প্রধা सायमा कतिएक सारु । ভाष्मभन वालक मस्योगात्र खाकारणत्र हाएक धारे काकारतत काका-भागा मध्यमान कविएक (शंग कथन १ काश्राम माञ्चन-ভात्रद्वत्र द्याक, देवत्र ভात्रद्वत्र **উखत्रारम (वसाधायिछ। हे छिराट्म आक्रकान (मया यात्र मिय-ভाরতে आदा छे**णनिर्देश वस ममत्र-मीरभक कर्या क्रिन, या अहेक भ इस खरन साबफ काछित्र महिक देविक क्रियूत त्मथा-माक्याटक कक विश्वष परिवाहिन । कविश्वादि । करें Akkadian वस्त्यत्र माम

ব্ৰাহ্মণ সাহিতিকের হাত পাকিয়া উঠিয়াছিল, **काराजा किमा जिमा-धाराज राइक यहि** नहर्त कर्क कारा वाड्रे हहेरक! यानामा ভাবেব'ড় ভাষ্টি উপনয়ন দিয়া মহা-সাহিত্য-मोश (इनाम काकार्य युरक बानारेमा कृतिन एकात्रा शूनतीम आशूत्रवद्य याच्या विविद्यत गुर्स निमित्र कल-८कोमन काम्बर्क वास হ্ইবে—ভাহায়া মাকু-গর্ভে জ্রণ ক্রমা অভিম্মার মত সপ্তর্ণীর পুঢ় রহস্ত অবগত क्टरवा क्ष क्याना के किवारमञ्जू व्यावस्थ्यो। भाग्ठाना मिकारुकावीरमंत्र भटन कि हरा उन्न कंग्र मा, (म मर कार का मा का का भारत কারতে পারে, বোবলন বলিককুল ভারতে आ। ममा दायात जामने, जाहारमत युक्ति उक अञ्चारत Brahma ecript इंटर नहेंस ৰাহতে পাৰে ? Mesa mscription এর ब्द्र के का का व वदमंत्र भूटका ८ वन व व कि कह किस (वांवल्या कान् क्रम्णा भूक्षक भावश शिवाटक याश्रदक कावशिव माहिए अब मह काबाब **७ जारवर मशामनन मुष्टे रुप्त ? ७८व (कन** ভারত হৃহতেই ধেবিলন অক্ষর ধার করিছে जानित्व ना । The table is thus upsci. ना, जो ६३ वात्र अम, जाहा हड्डा সোমটিক काञ्ज, ভারতের হাতে লেখা-পড়া र्मिषश्ची (करम, ध्वर तमर कांक रूर्टक वर्गमालात का ज्यान खोग ७ त्यारम यात्र । उटवर उ मुक्ति । युद्यात्र भोतिक जाव অ্র আর ভৈরো রাগিণীতে ভারিতে পারে मा ! Rhys Davids विकारक्षन, Akkadian হৃহতে ভারতবর্ষ অকর লাভ चात्रवाक उनिका, चञ्चकमानी प्रदर्भात्र एवं उत्ताव कतात्र नुकन कतिया এकहे। कथा

ग्राम काशिन। ज काहिमी भाकरमब हे हिहास उखन्द्रभात साथा ज्यानीक कन। ज्याखरनत উদ্ভাবন ভূগু ঋষির কার্যা, ভাঁচাথ পুত্র ভঞাচাৰ্য্য ভাৰ্মৰ নামে খ্যাতি লাভ করেন; এই শুক্রাচার্ব্য দৈত্যকুলের গুরু-পদে বৃত हिलान । "रिन ভाकुल जार किछूक नरक, Oxus alley sto Euphrate valley sis ধে জনবণ্ডি আর্থা সভাশর বাহিরে ছিল, काहाई (भोतानिक देण हाथाम। एक द्वापन मजा श-विखादत हेशास्त्र मध्या व्यक्ति । इन, এবং প্রবল চেষ্টায় বৈদিক রাভি-নাতির আনুবর্ত্তন করিতে সম্পু হন। প্রসিদ্ধ পুরাতত্ত্বit is a thing of sup eme importance that the chief deity of this race was Sukas, a corruption of the name 'Sukray, निष्ठेमान त्यां व पष्टा व्यवस्थन करत, जर्व श्रुत्र किताहरक जात কতকাল লাগে ? Rhys Davids এর Akkadian race एकाना म्हेट ए অগ্নির সঙ্কেত লাভ করিল, ঐ অগ্নি প্রজ্ঞানের সজে সজে ভারতীয় স্ভাতার বহু অগ্নিশিখা (य (मह दिविनन ७ किमिय़ांत कार्टन ध्वक् ध्वक् कतियां व्यक्तियां डिवियां हिन, खाशास्त्र कि मत्सर আছে? হতিহাসের পৃষ্ঠার Hewitt उक्तानिर्गारक Sukrao कर् Akkadian

শিশের কুল গুরু-পদে বুত ভইতে দেখিয়া-**(इन, किन्द्र मानव नारहे वा आधुनिक** Semitic नामवाशी Asserian वा (वांवणरन, ভারত থাষাকে শুরু নির্বাচন কাবতে চইয়াছে धक्रे बाल्या हे जिहारमन िखनागात त्यरम কি প ভারপর যে ভাষার ও লিপির বাহন वर्गमाना साविष् वांवक जातरत्व कारहे Assyria कर्ड आनिया निकारण, त्मर लाबाय ळाब-लगाका बाल्टानव अभारत्व मान मण्य यूरवारभव किश्व क्षिय स्मताय अस्म स्म ଓ मोभ खामिया मिश्राहित, खानाक्षत नदाकि।-, मःरवार्श ভाবত यে একদিন সমগ্র যুরোপের ७८ेच क्रीखदर्य नभः कस्याष्ट्रिय जारास रित्त Hewitt Steid Ruling Races of अवह कग्रक्रम वाश्वित कार्यम, वा वाश्वित pre historic times ysta fatarices 51764? Ragizin stria V di India The-e western Asiatics formed the তে এই কয়টি ৰজমুলা ভত্ৰ আমাণের চক্ষে Akkadian race of remot past and winding-Phrigu com s from a root Bhriji—To buin...it survives in Greek Phlego, Litin fligrate sulgue with all their derivatives thief of which is the Latin ful ar lightning bolt not to speak of their numerous posierity in our madern tingues —p 360 विदेशों देशिय पुष्टिक (स्थाहिका-Con, (य शक्किंगिया त्मर Akkadian। पत्र গুরু হইয়াও পিতার নাম ভ্যাগ করেন নাহ, ভাই ভাহার পিভার নামান্তপায়ে क्रिक्यः आस्टिमंत्र नामकत्रम इह,—they called themselves Briges, Bhrigu or Phreygoi in Phrygia...Also we

find the northern 'r' altered into 'I' in the Akkadian Bil-gi, we find a similar change in the name Phlegyas, the Greek form of Phreguas and we see the German pfugg and our plough are names taken from that of the Phrygian fire-father God, by a race, which besides changing the r into an '1' changed 'ph' into a 'ph' "-Vol 1. p 30.

श्रकाट्यम निममहत्क स्था भूक हरेल भिष्टिय योदेवा शटक, भिष्टिय इंडेट्ड शूटर्व चारम ना, 'कल नमी शहेना উछ्निया 'গেলে পড়ে यात्रना तक-निर्व श्रुवारक" পারণা'; এই ভোডময়ী নৃত্য-চপলা পাহাড় Khorasan রাজ্য হইতে Kharoshthi रहेट मामिश (मर्भ-विरम्भ ভामाইश চলে, लिभिन्न উদ্ভাবনা সম্ভব। यथम शासाद এ किन टमडे शिकृत्वा क श्यिक्त (वार्थिक चत्र) করিতে আর কিরে কি ৷ এই ভারতীয় मधाजात्र मीखि, व्यन-व्यन मशुभमानी स्मादर এই সভাভার গতি নৃত্য-বিহবলা নদীয় মত ভারত মহাসাগর হটতে উভিত হটয়া, পাশ্চম च्यामिश्रात्र रमभ-विरम्भ छामाहेश्रा, यम्भन्नाम् পাতি দিয়া রুরোপের তৃষ্ণাত্র মুথে ছাপাইরা পড়িয়াছিল, किस मि श्रुत हहें । जात कांत्र जत मिटक 'कित्रा चाळा' क नित्राहिन कि ? 'ध कित्रा उरथत्र' यावन्ना हे जिल्लारमत পাভিতে খুঁজিয়া পাওয়া ভার। কইতে পারে ৰে Kharosthi script গানামে প্রচলিভ िष्ण, देश भिष्ठ Semitic type जन ग Rhys Davids an Akkadian type an, किस मिथिए एहेर्द मिहे script जात्रज्यर्थ क उर्देक कामको योकार्रेटक भाषिताहिल।

Buhler विवाहार्छन छेहा रम खारमभ-विरम्पर निवक छिम धावः छेशंत्र श्रीतादात्र किष्टुमाधा ष्मारमाजन यां श्रारमाजन ছिण नां, कांचन आषी script ' national হইয়া আভীয়ভার আকার-সম্পাদনে ভারতীয় ভাষার স্টি কাণতে বদে। ব্ৰাহ্মী নাম কি ব্ৰহ্ম-বোধক नदश हिम्पूत्र मदा-काशास्त्रवादण मदा माध-नात्र मुट्न शर्यात्र वीक्रमञ्ज मिश्यक कामिरन, ভারতীয় সভাভার বিকাশ ধরিবার প্রকৃত हकू क्लिएंड ब्लिएंड ब्हेरव। Kharosthi नाम दर्भान त्वर्भ त्यांन खांकर्भ भाषम् याम् हेका (य 'পর-प्रिमी' खोका माम-পাঠেই मर्प्स মর্ণ্ডে বোধ জন্মে। Khorasan নাম পার্ক্ত নেশেব এক প্রান্তের উপর গুস্ত ছিল, এই শিপ্ৰ প্ৰচলন ঐতিহাসিকেরা দেখিয়াছেন, खथन डेबा मिहे (य 'भन्न-(मभी' मामधी,काकाटक ভুল নাট ৷ এ লিপি আরবা প্রভৃতির মত **फान इहेट बार्य मिथिड इहेग्री शोर्क।** Buhler बिनाइण्डाइन 4th century B. C. ভইতে এই Kharosthi script গান্ধানে প্রচলিত হইয়া 200 A.D. পর্যান্ত অভিত রাখিতে পারিয়াছিল। ইতিহাস वकात्र পাঠে काना यात्र शृष्टेश्वर्ध शक्ष्य मेकाकोटक পারভ্রের অধানে এই স্থানসমূহ কিছুদিনের कश्च क्योनजा-भारम कांग्रेशिहन, हिक् সেই সময়ে Kharosthi এ প্রাণেশে क्षातिक इडिमाकिन, अवः भाषमाधिकात्र-विश्व इंटरमं a script गाहै-याहे कविशां किह्ना कि किसा त्राम । जाजनान Eastern Turkisthan excavation-এর কলে খে

লিপির আদর্শ বাহির হইরাছে, ভাহার ঠিক্ ভজ্ঞপ। কিন্তু Brahmi লিপি विवत्रण भरत हिलाद, किन्छ अञ्चारन Khotan ছইতে তের মাইল দূরে Gosinga Vihar-ध एक निशि-ब्रह्मांत्र क्रब्र छ्ल আবিষ্ণত হইরাছে, ভাহার কথা একটু বলা व्यक्षाकन। এই लाथा पूर्व भटा मगी-অক্কিড, কলমের আঁচড়ে কালির ছাপে আধুনিক প্রথায় রচিত। এ লিশি Paris क्रगुं চলিয়া গিরাছে। ইহা Kharosthi script-पृष्टीख-चन्ने हेराव वहना क्ष এর व्यथम मजाको शृष्टीत्म এই तम धार्या इहेमार्छ। यमि । এই Kharosthi script नहेश Sylvian Levi & Pischel an acty वर्ष उर्कयुक रहेशास्त्र, जवू हेराज मिर्निश সম্ভবপর হয় নাই। Bubler কিন্তু বিশয়া গিয়াছেন যে ইহা সেই inscription. এর বানে লিখিত হয়, এবং Kharosthie

हेशाम्ब एन्डी; (महेकन्रहे national script विषया जिल्लि इन्याहि। Buhler প্রায় বলিতে চাহিয়াছেন যে ভারতের ষড়েশ্ব-র্বোর মধ্যে এই লেখার আবিদার অন্তভ্ম, ইহাতে মতটা দেশের স্বাভন্তা ফুটিয়া উঠিয়াছে, यं छो (मर्गत्र कार्फ क त्मथात्र मार्क वानारमा ছইয়াছে, ভতটা কেন, ভাছার রভি প্রমাণ, वाहित्वत् हाथ जानियां मानियां ह किना मत्सर; তবু প্রাক্ত ত্বের যাত্র-বরে চুকিলে প্রাচীন যুগের Mesa inscription প্রভৃতির দুর্শন মাত্রেই मनहारक धमन याञ् कदिशा ट्लारन, य देशद খারা দূর-দুরাত্তের অবগুটিত ইতিহাসকে कानवश्वर्थन कविवाद हैका क्याहिया थाटक। **এই श्राष्ट्र-श्रत्वत्र श्राष्ट्र ८य इंडिझान-म्बन्धारक** বসিয়াছে, ভাহারই একটা প্রমাণ-भाहें या প্রক্রপ Semitic type, कात्र । উহাত ভান হইতে ' সাহিত্যের আনালতে হলক করিয়া সাক্ষ্য निट्ड व्यानिशाद्य ।

बीज्रानसम्बद्धाः।

विश्वतालय ख्या मार्थ कि जान कृषि जाहेछ छेतान-मरन, त्रयूक्टनत (इ. प्राजनको । (इ. महर् । प्रन-स्थानपा) । इ: थ- मित्न ७ नगाउँ ट्यामात्र अक्टि त्य हैका वी-नक्त्व, (ह द्रमद्री ! व्यनिक्छि ! व्यक्त एकामात्र हक्क-मानात्र क्यांकि ! मद्यानिनीत (वर्ण कानी! कि कथा हात्र जन इ नित्रजरन, কোন অতীভেন সদীতে মন ভর্জিয়া চল্ছ প্রথগতি!

खास (छामाद शृष्टे र'ण निधिकत्री त्रष्त्र विश्व (मर्मा, ज्या-मगम भाषा-दक्षण-दून-भाष्मीक-स्वन-मर्भकाती ; ধাত্রী তুমি সমাটেদের; সবিৎ-স্রোতে সাগর-দেউএর কেনা উথ্লাতে বল ধরে যারা, তেমন ছেলে পুষ্লে বাবদারট পীযুষ দানে। কবির গানে অমর যারা, যারা স্বার চেনা, মামুষ হ'ল ভোমার স্নেচে ভারা স্বাহ কৈত্র-ধন্ধ্রারী।

মান্ধাভারত থাত্রী ভূমি! .গলারে যে আন্লে স্থর্ন হ'তে সে পক্ষুরে বল দিয়েছ মুক্তি-দিতে যাট হাজারে, মার! ইন্দ্রাকুবত ভূট প্রাস্থতি, ফিব্ত যে জন নিংগ হস্তবতে; যে যোজাদের পরাক্রমে নাম এ পুরীর জযোধা। নগরী, — অ-বোধা যা' সবং যোধের—ভারা সবাই অঘি শুভিত্রতে। ভোর মমতায় স্থান ঃ'বেছে, পান ক'রেছে স্লেতেব স্থা ভোরি।

তোমার ক্ষেত্রে রাখী হাতে রাক্ষণেরের বল ক'বেছে নরে,
সগর-থাত সাগর-জলে বাঁধ লে সেওু ভোমার সন্তানেরা।
ভক্ষা দিয়ে দিখিদকে, ঝাণ্ডা নিয়ে দেশে দেশা থরে
গ'ড় লেক্ডেই উপভারত, উপনিবেশ বাঁধ লে ক্ডই ডেবা;
ভাদের কার্ত্তি গ্র-প্রী সে, মগের দেশে আজো বিবাজ করে,
আর ছিতীয় অধোধ্যাপর মেকং-ভারে স্থাতর ডোরে বেরা।

বিভীষণের জীষণ মুখে জজি-রেথা ফুটিয়েছে যে রাজা,
যার অভিযান হুদর জরী, গেড়েছে যে জয়ের ধ্বকা মনে,—
যাত্মীক আর কালিদাসের কাব্যে যাহাব কীর্তি চির ভাজ',—
পার যে পূজা ফ্রান্ডনাসের তৃত্যুমাসের ছুল-স্কলনে,—
হরের ধহুক ভাত্তে যে জন,— দুর্শীজনে দিলে উচিত সাজা,
তোমার বুকের সেই শতদল খুমার আজি ভোমার আলিজনে।

ষাত্রী এনে দেশ-বিদেশের ভোর ভীরে ভার চরণ-চিক্ত থোঁজে,
চোথের জলে ঝাপ্সা ছ'চোথ,—থোঁজে সীভার রাভা পারের রেথা,
নিমেব-মাঝে নিমেব-হারা, ভিনটা যুগের শ্বন্ন ছাথে ওযে,—
লৈকতে ভোব সোণার রেপু,—জলে নব-দুর্বাদলের লেখা!—
পাণ্ডা হেঁকে চমক ভাভার, একাল সেকাল সমঝাতে মন যোঝে,
কোথার সীতা ? কোথার বা রাম ? লোকের ভিডে একা নেহাৎ একা!

त्रांचन-कहीत कनम-ठाँदेश माफिट्स काकि श्वका वावहणाही, दय वायद्वाप सर्वी-शहर फूट्य श्वटह शका मटमत्र झुटम ; "মুঞ্জ পাহাড়" ভিন্ন খাহার ভূমগুলে অক্ত কীর্ত্তি নাহি, त्मर ग'रफ्र्स ७कन माना, । खरकर भाषत चिक्तिय (मराक-मरम : वाक् वरक्षत्र मरमद्र मा जान कोषांत्र ८० रह द्वारा-मावद वाारु १ (मोलवीजा इस ८७) क्यारनन, — अप्रत्नार कन्न अप्रम दकान् आ १एए। त्रक-कामाग्र ७क-ठाउँम्। .. मन्न कीर्वि खाठीन कीर्वि भारण ।-कान् "ववान क्रमार मारक ±"...(भ क्रा वाख क्रम वाथ ना मत्न १ विक्रष्टक के कि श मौन वावदमाश न्यविकाद भारम , ामक्षेत्र का का का नो, काम्र, यात्र ए लिएम व्यन्ति । छी १८न । जिम्न को जिस्स त्य ज्ञान काल कालाम लाज को क्या कार ज क्र:अभरनं बरलां काता, जिन क्रीकरन । क्रांत्र विश्वदर्ग । गुरशत भरत युभ हे'टल यांत्र नाशर-तालाग्र उल्हि त्यायाणात्र, 831-मा । व क्ष के के काम मा आमा कार्क का विश्व करने, श्राबाकार प्रकृत हरन भार भाव ड .हर्स श्राब कुन्न, त्नर्व ख. न १ म्मू (म अग, खारमन खार ७ म खार्गन । दस ना (मनाक, यन नाक' क्षांक, अहेंहे कारना ना नम क्षांत्रक्रित बारक रकवन भुनारभारकत् भुनाभ ७ आर्वक ब्रामात्रम् । जाक मदग्। ८ शत (क्रिंग) कु। जर ८वटन यारक किकिन रेंग, या छ अन्य महोठ मध्य, ८५८ छेत्र मार्य । यक्ति मिर्य मार्था, कुर्ल कुर्ल काम्रा ७८३. कित्र विभाग वार्काटक यात्र निर्द क्छ चरत्र मन्ता श्रामील, दकेरन मरत्र कका काम्रा माठा। व्यथीन ठात्र धकारत हात्र नय न वानात्र भात्राष्ट्र यना हिर्प, CM 1श्राय ७°८व शाष्ट्र छ्°८७१व, ८५ किश्र ७°८व छेऽ। यत्नव थाला । चुत्रह भौधाव किन्तु- इत र लाक्ष्ना आह महेट भ्रानिय यानी, व्याचा-लाएकत्र नाहे त्यन वन जाधित जायात तत्यत् किक क्रीत, त्रयुक्टलत कांक्टबरा कका-गाफ़ोत्र कत्र्ट गाट्याबानी, वावब-लाटक बानामोडा जाक एक छान द्वजूरन मश्रदी। विकिड आव एक रात्र धुनाम (हार्यत्र करन बाक् क मांजान-मानि,

कांक मःग् अव्य नमी, मतिए-क्रेशा क बाल-बारकचत्री ।

विमरणावमाथ मख।

মাতৃহানা

CETE देना (बदक आगात मा दन्हे। লোকে আমায় বল্ড "মা-থেকে।",--মামুষের ভাল করে জানতুম না। তার প্র-ছঃধ লাভ-এত বড় ছর্তাগ্যের উপর এতথানি নির্দান উপ-राम याद्य त्य त्करम करत्र' करत्, आमि छ छ। Cकट्य भारे ना । अहे भारमंत्र काकारन ध्यां कि বোধ কয় আমার মত ত আর কেউ তা কথনো অञ्चर कत्र ना, अवह आधिक हिलाम आमात्र ভাগ্যের জন্মে দারী। বাবা আমার মা-বাপ इरे अत्र ज्ञानरे भूषं करत्रियन। जागात ष्पाषत-पाकार्यत्र प्रस्त हिल्ला। त्वारक वित्रस्क हक,—'मा ७६।' भ्याय का ठ क्ला १ वावा हाम्दलन, वन्दलन, "काठा, कक्क ! देन शाक्दल क महेल-ना इस कामिश्र महत्वम ।" क्यू वर् षड़ रुक्टिल्म, जामात्र मत्नत्र जर्जन ७७३ বেড়ে উঠ্ছিল। কিছুতে যেন স্থা পেতেম 'সম্বন্ধে কেউ শাসায় ঠাট্টা ক'রে কোন অসায় मा। थणाव माणीवा यथम "मा"वरण छाक्छ, कथा वर्षा ष्यामि छ। महर् भागर्दम ना। আমার মন তথ্য ত্যিত হয়ে উঠ০,ঐ ভাক্টির মুখরার মত তথান ব্যগড়া বাধিয়ে দিতেম। करना। मा। मा। मा। कि मिष्टि जर নাষ্ট । আমার কেবল কালা পেত। রাগ र्**ड**; ८कन ष्यामात्र मा ८नरे। मा-खारकत কিছু অভাব পূর্ণ কর্বার জন্মে আমার জেঠিমা कि शृष्मि। द्वेष किट्रान ना। व्यामात्र अकृत्ना वृद्यत्र ভिতरूषे। ।यम छाई (श्राक-श्राक क्रीलिट्स क्रिका स्टलामा कामान मासून करन ছिन-एटक कामिया वरन डाक्टड खेक कराय भ वाथा निष्म, "**ছि** निमिम्नान, यादक जादक कि मा बण्टल जारक। विरम्न दहाक, जाना-मालको दहाक, তাকে मा বলে ভাকৃবে।" दमह मिनि दिश्दक विदयन कदक मदन-मदन व उद्दे भाष

क्यान। श्वटम किनियंगे त्य कि, छ। उपन त्माकमात्नत्र किमाव थिएटा रमशाब रम वर्मश नश्च। विदयव श्रधान या यामी—डाँत कथा তথন জানতেমও না, ভাবতেমও না—কেবল कानएक, विरम्न मर्क मन्छ-वष् এक है। यो कुक व्यायात्र भा अता कारक---(म या ।

क्करम यदम वाष्ट्र जानन। मरमाद्येय मरम ट्टाउ-थाउँ পরিচয়ন আরম্ভ হ'ল—তবু আমার भानत्मव मानमी व्याजमारक, व्यामात्र ७ विदाद শাশুড়ীকে আমি এতটুকু মলিন হতে াদলেম ना। शुव जिल्ला त्राक्ष-त्राक्ष जात्र मृत्य मारक আশার ছ্র্পাপুঞ্জার প্রতিমার মতই আমার वूरकङ्ग ভिতৰ আমি পুৰা কৰেম। শাশুড়ী (मारक वलक, "(मथ, (मथ। द्रान्त्र व्ययन (परकरे माखड़ीय डेनर कर मन्न-- ७८न, जर्ड ভাক্ত করিস নে রে—শেষে রাখ্তে भाव्याय (न ["

বারো উত্তীর্ণ হয়ে তেরম পা দিতেই कामात्र कर भाव स्थाका श्रक र न। कामि वावात वर्ष आमरतत्र एहां प्रस्त, जांक आमात्र सद्य जक्र विरम्य क'रतर गांधार-वाहार हन्-हिल। बाबाय मरनव मरु आज रुप्त ना । त्नर्य जाब शहरा-मक जकि शार्व मिर्ट राजा। कनकालात्र वाषी, द्वम मध्नित्रवा । धक्री छाका माहिलाम हाकति करतन। यदं जार्डक

কাপডের অভাব নাই, অবস্থা ভালো। -চাক্রিতে ভবিষাৎ উন্নতিমণ্ড **SILM** আছে। বিধবাব একমাত্র সম্ভান। এই-थानिटाम वावात मन अक्ट्रे थुं छ-थुं ७ कन्नि । व्यागतां ७ (य ना करबोल्ल अमन नत्,---আমাৰ এতদিনের এত সাধের তুর্গাপ্রতিমার विमक्तन रुख (भग। তাকোক মনের ভিতর-कांत्र ८व मटनामशो मा—कांत्र माटल व वलटन किह **अटम याग्र ला। उट्टर काटलक मिटलग्न यमा** बाका माफ्।-हाफांध्र ८४ ऐक्क्रण गृक्षि कारल ऐक्क्रण र्द्य উঠোছन काटक निट्यंत कार न निजा न्यना कर्छ मदन धकछ। नाषा ९ जानम । मनद क व्यद्यां भिर्मिम, नस्त्र मा १ विश्वा, काकारनत भाष ७ मार्छ। कि स्थान हर्त लाग, ७५ मा ४। वावा अकरिन कार्ष एष्टक जानव करत बुदक किंदिस धान वरहान, "तासू, धवात वां ११ ८६८६ मात काटक याक्षिम। में ८ पट्स वावादक कृत्य यां व (व क . ज क" कामि वावाव दकारण माणा ८वट्य नटल्य, "ना वाना, त्रायांत्र क्यांम किइटकर (ছেডে থাক্তে পাৰৰ শ— कहर को मा।" বাবার আমার মনের পাব তেওন অম্নি ধারাই किन परि, जनु जान मर्या जे त्य नाना भिष्टि कर्य बरहान, "भा भारिकम्" — अहं कथा । जामात्र कारन ध्यत मधुत स्ट्र (बट्ल डेठल ।य (क्शन मधुत कान भक्त वृत्ति बाबाद कान छ। के यत्ना (भारनामा कर्गा, मछाई धरव कवाब आमि मा भारता। या फारकंत्र माथ भागात ज-जत्म भून ষ্ধে ভাষ্থে।

विद्य हिंद्य (जन। विद्युत्र कथात्र वर्गनाव किन्न नाहे। कांधकाश्म वालामा गृहस्यद्य दमस्त्र विद्य (प्रमन्खाद्य ह्य, आमात्र .वलार ७ छ क्षानिष्क जोत्र कान वानिक्रम हम्रनि। मह আত্মীয়-কুটুম্বে সমাগ্ৰ, গ্ৰুনা কাপড় আলো वाजनां, फूटनत्र मानाः, छालादना कविछा---আশাষ্যনের সহিত একথানি অপরিচিত প্রনার मूल-जल्मिय मधुत्र भिनन, - मन्छ जहि। তাতে নুকনত বা বিশেষত কিছুই ছিল না। हैं।, कि इ उकाद छिल। स्मिहे सम्मद मृश्यद াদনি অধিকারী, া ুনি আজু নম্ম পড়ে আমায় निटल व ब्रिंग क्रिन कर ब्रिंग सारक "मा"वनवात পুर्न कांभवांत्र कामांस मिरत हिर्मन। जात छात ८मः नहेद मार्नित निनिमात्र व्याभ व्यानित ८७व বছর ব্যুগ্রের কুল্জভার প্রপাঞ্জাল ভাকভবে हांत भारत ८७८० भिरंग। याकृशनादक धिनि मा भिटलन, नाक जानम विक्र थाटक ি । তাল করে এসব মন ও বের ব্যাখ্যা তথন मार्ग मार्ग कं बार्ग भार्गिन, खार्च मार्ग्य नमार । (यम धर्मान जादवत्र ध्वव है। जादनाकृत जिट्डाइन । विस्त्र भरत चक्र-वाड़ी अल्म ; वावादक एकटक भारतमा एकटक धारे व्यामात्र व्यथम बाहरवव भःगादव भा दक्षा। छाह क्रम-कार्यमात्र ८६१८भ स्थ यस्थित। छन् अकिं। नुरुत साथांत्र मरनव छिउविं। (परक (बारक, दयन कानरक क्रांन-अर्ज के केंक्रिय, भारक प्रचटक भारा।

আমাদের গাড়া এন পোরে দাঁড়াতেই,
শাঁখ নেজে উন্নতা। একজন গলনা-পরা
মোটা-নো। আধাননসা স্থালোক আমার
নামিয়ে নিতে এলেন। বয়ন আমার তের কলে
কি হয়, দেখুলে লোকে যোলর কম বল্তনা।
বান নামিয়ে নিতে এলে ছালন, জিন খুড়শাক্ডা। ভাত ঘরে নামাতে হোল। আমি
ভাষত চোথে চেয়ে রইলেম, লোকে আমার

বেহারা বল্বে কিনা, সে উপদেশ মনেও ছিল ना। एटन ছिल्म भाष्ठ्री विथवा, তांडे छाटक िंदिन निष्ठ (मही इनना। श्वामीत मूर्थत मरक छोत्र मूरथत्र बारनकथानि मिन। ८६१६-थाउँ त्शोत्रवर्ष ष्यासा-वत्रभी। চেহারাথানি **(मश्रमहे खिल इब्न, मा वर्ण छाक्रिक मरन** कुशे जात्म ना। थुष-माछड़ी वरसन, "मिनि, বৌমার মুখে মধু সংনদশ দাও। সোনার জলে मा-मन्त्रीत्र मूथ (मर्था छोटे! (मानात है।स्त्र दोटक रयन भागांत्र कारथ एमथ्एक भात।" শাশুড়ী পঞ্জীর মূথে বললেন, "তোমরা দেখ, **८हा** ढितो,—सिर्धात भूर्थाम् भरा व्यामात कर्मा চারদিকের লোকজনদের বিশিত শক্তিত মুখের পানে চেয়ে না দেখেই ভিনি তथनकात (गान मन्नकाती काटक हटन शिलन। श्वामी बार्ण्ड बार्ल्ड गुथ मोहू करत शाफ़ी र्थिक त्नम कालन। जानि ছেলেমারুষ, তার टियानि कथात्र कार्य ना नुत्य थुनी रूप्त छूटथ-व्याम् केष अपन केष्णिया ध्यान करत चामात्र नव कोवरनत्र चलार्थनां ध्रत्र रशन।

বিষের পর যে কয়দিন সেথানে রইলেম
গোলমালেই দিন কেটে গেল। মা বলে
ভাক্বার মত এতটুকু অবসরও শাশুড়ী
আমার পেতে দিলেন না। দিন-রাতই তাঁর
কাল,আর কাল। থাওয়ানো দেখা-শোনা বরগুছোন পরিছয়তা-সাধন এই সবেতেই এমন
বাস্ত হয়ে থাক্তেন ভিনি, য়ে আমার কাছে
আস্বার কি বস্বার তাঁর সময় হতো না।
ভনতে পেলেম একদিন মাস্-শাশুড়ী শাশুড়ীকে
বলছেন, "পত্ম, ভোর বৌ-ভাগ্যি ভালোই হবে,
মেয়ে বড় অবোধ। মা কি কচ্চেন, মার থাওয়া
হয়েছে কিনা, পিসিদের কাছে খবর নেয়।

व्याहा, दहाछ-दिवलांत्र या यता। ७ दहारक या वर्ष्ट निर्देश भारत्य।" भारति हिंदी सामादिन वरम कृष्टित सम्रता साथिहरणन, व्यासि त्य पदत्रत्र এक कार्व वर्ष्ट्रिलस, छ। त्याथ इत्र खेत्री कान्टन ना।

শাশুড়ী বললেন, "তা যদি হতো দিদি, তা হলে মানুষের পেটে ভগবান সন্তান দিতেন না, গাছপালাতেই ফলাতেন। তুমিও বেমন পাগল।" বাকী কথা শোনা গেল না। যেটুকু গোল তার অর্থণ্ড যে ভাল করে বুঝলুম না, তা নয়। তবু তার বিরক্ত বিরস কঠার আমার বালিকা-চিক্তেও একটা আঘাতের দোলা দিয়ে গেল। মনে হলো, আমি উকে খুসী করতে পারিনি! কি উনি আমার কাছে চেয়েছিলেন ? কি কর্লে উকে আমি খুদী করতে পারি ? আমার বাদ ব্রিবরে দেন, বলে, দেন, প্রাণপণেই যে আমি তা করতে বাজী আছি!

বছর-থানেক পবে খণ্ডর-নাড়া খর কর্তে এলেন। বাবা সঙ্গে অনেক জিনিষপত্র দিয়ে-ছিলেন। শাশুড়া সবাইকে ডেকে দেখালেন। কুটুম্বের স্থ্যাতি কল্লেন—আমার সম্বন্ধে তাঁর একই ভাব। আমার তিনি মা বলে ডাক্তে দিলেন না। প্রথম প্রথম আমি তাঁর মানা না মেনে মা বলেই ডাক্তেম। তিনি যেন শুন্তে বা ব্যতে পারেননি, এম্নিভাবেই থাক্তেন, উত্তর দিতেন না। কিছ এভাবে বেশী দিন চলে না, একদিন স্পষ্ট করেই তা বুবিয়ে দিলেন। অভান্ত বিয়ক্ত হয়ে বলেন, "গুরুজনের কথা মানো না, বাণেও ভাল শিক্ষা দের্মনি। আমার বাছা, স্পষ্ট কথা,

बिला जामि बन्दछ भातिना, महैटछ छोत्रीनिका य छात्र-हृद्द छ छ। हास तान, भातिनां—। मूर्य यडहे मां-मां कब्र, मरम-मरन रम थवत छ क्छ निरमन नां। छित्म रिमात जूबिड बात्ना व्यक्ति कानि, मिंडा ७ जा नग । जामा-जर्म शांव निष्म या वरण यात्र कार्छ (मकरक टक्डे ट्यामात्र प्रमुद्द अला। ७ थन-, व्यामात्र, जिनि जामात्र माकृत्सदर काटक उ टिटन कांत्र त्नाटक ठीकूत्र-ठीक्त्रण वन्छ-- गिर्थात्र निर्म्भाष्टे ना दत्रः अभवाभिनी करत्र भारम छिलंब (यज्ञा हिन कि ना !-- এथन यङ काँ कि ভত ঢং। মা-মা আমার করো না।" ভক করি-বার মত জ্ঞান-বুদ্ধি আমার ছিল না। সাহস বা শক্তির অভাব আরও বেশী। অগত্যা চুপ कट्र आरमभ शामन कराई महल शर्। ভাছাড়াসত্য কথাই আমি বলব। এর পর मा-एाटकत लाए । व्यामात करम शिर्मिष्य । क्का खरू नीकन करनई स्मर्ट अमन नय, ष्यञादि अपि शास्त्र ।

भाखड़ी लाक यन हिल्म मा। भाड़ी-প্রতিবাসী তাঁর মুখ্যাতি কর্ত। এমন भरताभकाती गामूह इस ना। मानी-ठाकतैवाङ थूमी ছिल डीव मिष्ठे कथा आंत था अवारनांव द्वालांव था यांच कवा, द्वालांक व्याज प्राची-যয়ে। ছেলেদের প্রতি ভালবাদার তাঁর এসব তিনি নিজের হাতে কর্তেন। কাকেও व्यक्ष हिन ना। जांत्र श्रात्मत्र क्रम शत्रम (थटक जामा-खर्मम अधास जिमि जमात्रक कत्र्वम, ट्वार्थिह (मथून, चामि ए डीटक मिहे थ्रेसम क्विन ये कान्यांश कि এই असम कामात्र! মিথ্যা বল্ব না, তিনি আমার থাওয়া-পরার काम प्रःथ बागुर्जन मा। जाजिनी जरण "करब्रात्मभान" "हेश्रारब्रारक्षन" প্রভৃতি নাম-कारा भाएकत भाषी कित्न मिट्डन। भाष अष्टिक-एमा जरम् जर्मन फिरम (यङ ना। किछ माञ्च कि एध्रु था छन्ना-भन्ना रहे कामाना! পাথীকে খাঁচায় পুরে ক্রমাগত যদি ছোলা यदित्र चात्र छाम छोग कम (यटि (मध्या यात्र, खाटक जात्र महमन्न काळांच कि स्मटि ? जामान कलिरनंत्र कल बद्ध निर्द्धत्र हारल गणा मारधद्र मां, जाद हिद्दिष्टि भारे भारे थाक्रिया

र्कटल महिद्य द्वरथ किटनन! मां आमात्र आमत करत এकिनिश कार्ट छारकनि। "(वोमा" वरण ७ छाक्र छन न। आयात छे १ त ভালবাসায় এভটুকু বুৰুদণ্ড সে ছির জলে कथरना ভाग्रे एक रमिथिन। या जिनि भिर्जन ना छ। आयात्र काट्छ । हाईएडन ना ; यतः रमर्ध मिटल रगरण चित्रक्र हर्जन, जाग কর্তেন। বাড়ীর পাঁচজনের মত আমিও वाधि, कांक कति, हेक्हां ना इव करि-७ ना। ध भरद निरम्प अन्हे ; जासूरद्राप अन्हे। हिण কেবল এক জায়গায়। সে ভার ছেলের বিশয়ে। ভাতে ভাগ নিতে দিতেন না। মা আমায় যে त्य-शिम मनुष दनमात्रमी माड़ीत चांहरण গ্রাম্থিক ভার ছেলের সঙ্গে একসংক তার भारभग्न कारह छानाम करत मरन मरन वरम-हिट्यम, "जुमि आभात्र मां, आभात विविधितनत्र মা, আমার কুধিত তালিত চিত্তের বেদনা-इता अमृज-खता छ्रथत छेरम मा,—" म कथा ত बात्र कितिरत्र निट्ड भाति न। ठात्र शट्ड भा अत्रा अविहादत्रत्र आयोज त्थरत्र-त्थरत्र मन আমার এখন আর তেমন ক'রে সাড়া দেয় না, खतू कर्खदात्र कार्ए जिलि এथन व जागात

শ্বামা আমার ভাল বাদ্তেন আদরবন্ধ করতেন। তবু তিনিও ত মায়ের ছেলে,
বাইরের উচ্ছাগটা তাব এ কবারেই ছিল না।
কতথানি গভীর জলে তর্ম ওঠে, আর কোন্ধানে ওঠে না,এ-সব বৈজ্ঞানিক ভত্তের থবর ভ
রাখতেম না, তাই নিজেকে বড় একা বছ
আসহায় ব'লে মনে হতো। মাকে লিনি
ভাল বাদ্তেন ভগবানের প্র'ণ্ড্রেপে, াহ
মার মনে পাছে বাথা লাগে সকলোই ছিল ঠার
এই ভর। আমার সম্বন্ধেন নাই এত সজোচ
সাবধানতা। বুঝ্তুম সব, আবার এও বুঝ্তুম
না মা যে শুধু তার একলারই মা— আমার
যে তিনি সব হয়েও কেট নন

अर्गन करत्रहें जिन-छाय उछत्र दकरहें शिन । चामात (कान करना। भाउए। অসিত धवांत्र छाकात्र मार्य व्यवार्षक त्रात्ना "অসির মা" বলেহ আমার প্রিচ্য হলো। আমিও ইাফ ছেড়ে বাচলেম। এক-নড अश्मादत प्रकाश कामहात कामात महात *(हांका,* मनी दर्शन, जानम जामा मवह दर्शन - यात्रात्र এওটুকু ছেলে অসিত। তোমরা গুনে হাস্চ, खावि।, ध-मन कविष्यत वर्षा। स्थानल मां ठाई छाडे,— তবু মানুষ যে भागम। एध मश्मादा भःश्राप करवडे भा दाँरा थाकर**ड भार**बना, मात्य मात्य माखिवछ जान मरकाव हम। वाहरतन व्यक्ति गार्ड थाक् गरनन व्यक्ति मन निरंग्रह (महारक माथ याम-क्यून कात्रल ५५८६, कांवल स्मिट्टे ना।

এম্নি ক'রে বছরের পর বছর 'কেটে এখন আমার মনের নদীতে ভাটা পড়ে এসেচে। আমি যে মাড়হীন, এ অভাব আর আমার মনের কোণেও উকি মারে না। মনে হয়, জন্ম-

ख्यां ख्र ध'रत अम्मि क'रव चात्रां कृरणत मज প্রকৃতির কোলেই আমি পড়েছিলেম। সং-· मात्रित (कान-तिन नित्यहे कामात्र कांत्रवांच। िन (क्रांस् भेर क्रें भारत के अयोग मा कार्यत नाम (यरथिहित्सन-माथना आंत्र आंद्रा-ধনা। নাতি-নাতনীয়া ছিল তার গলার হার। ভারা এক মুহুও চোথের আড হোলে ভান अश्मात सक्षात (सर्व (छन्। जारमन ना अग्रान (डल-माथान पूर काँ। जार । क्लि निष्ण भारक क'रत बिरकन। शक्ति दहरू-८मटब्रापन (मर्य नुरुष क'रत रहमलीन भाउँछात क्ष वियानक वावश्य भिष्णान। देनाम देवि भार् ना ७-१८४व लाटक यीम लावक ना करव ! लावा था कि कर काव कार्य कार कार कार क्ष्य । शास्त्र वाराधित सात खन्मनाव को काम खरन खरन नाष्ट्रीय द्यादक र कान याक्षाकाना स्टा के का वाक कि व यरन कान মিট্তনা—সন্ধাৰ পৰ জপেৰ মালা হাত মাত্ৰ (शटक यो केर्न भारत-नाकनोटमय नित्र भन्न (मानार्क वम्राज्य। (म अक क्रम क्रमां क्रांका)। কোপার কোন্ সাত সমূল তেয়ো নদার পারের (बाढ़ांग्र-६ भा जाकश्र -- नमीच रिश्व माड মহলা বাড়ার ঘুমন্ত পুরীর রাজকন্তা, সাত ভাই **उन्लात आफ**्रिनी ट्यांन शाक्रमयांना, आंत्रख (य क७ भिर्मा वरमा निविद्य का किनी -- भा र्खानरम (बर्डन, तम मच खन्टि खन्टि धन्टि এত ব্য়দেও পাণের ঘরে অন্ধকার বিছালার भरथा रक्षां भुकीरक वृत्क रहरू थरत्र कामांव ব্যাকুল মন কে জানে কি অতুপ্ত বেদনার ভারে नृतिय পড়তে থাক্ত। মনে হোত হ্ধা-ममुख्त जीत्त्र मां फ्रिय जवा-ख'रत दक्यण कृष्णं मदसरे कांग्रिस मिर्णम !

त्थरम किरत **अरम गांटक बरम्म**, "राभित विरा খুব ছোট বেলায় দিতে হবে। ওদের মত जम्नि এकि है क् है टक (छ। हैं देश) आधीष अदन मिट्डा किसा" मा वरहान, "छुनी! ना वाछा, আমি বেঁচে থাকুতে তোমরা অসির বিয়ে শ্রী। মুখে একটা তীব্র উত্তর এদে ছিল. कार्छ जिस्तारक मश्या कार्त निलाम, जिल् वाशांत डेलंब जञ्जटक्टामत मञ— विमनाय গধ্যে আনন্দের আভাস্ভ বৃঝি একটুখানি তা দিতে চান্না! তবু এডটুকু অস্তরের টান আমার উপরও ওর আছে! এক এক मगग्रमान र्य-- जागांत कांक कृतिएस (१९६), এখন ছুটি পেলেই इस — উনি খু मि इन्। डिक् व्यादक भावि मा। अकिनिरमय कथा विन। शुद्धारना ठोकूत वाफी लाएक, — या ठोकूत-धरम, सामी (थर७ यरमरहन। आमि मामरनव मानारन वरम भाग मास्कि। समिख सूरन गांदन, छोट्डन জ্ঞে ঠাকুরকে ভাড়া দিচে : স্বামী থেভে থেতে মূন্ চাইলেন। ঠাকুর থোকার ভাত वाफ हिन, बागांत्र वहन "वहमा, वावूदका जाता ত্ব দেন্ত।" এ নৃতন লোক, এ-বাড়ীর আল-গণির সব সন্ধান ত জান্ত ন।। উকি मिट्र (क्य (क्यालाम, भूरनेत्र कार्य छिन श्रंड अिटम बरम क्रायाइन,—सिर्व व्यथन ८७८वं निन्छिन्न इ'टल शास्त्रम नां, शान क्लल উঠ এসে একটু सून এনে পাতে দিলেন। निथ्ट यख्थानि गमद (त्रण, काटल हम उ এডটা সময় যায়নি। জামগ্ন বে সেবিকার

একদিন পাড়ার এক বাড়ীতে নিমন্ত্রণ জাত। সেবা করাই যে চামাদের পরম ধর্ম वत्न हिवमिन भिष्य अस्मिह। खेत था अस श्टा मा, मिल्टोरे जारा मत्म हाल, পार्ट सून भिद्य मदन এलाग! आगी मूथ नौहु क'रत थाछिएलन। मुख जूल खामात मिरक একটুখানি হাসির আমেজ ফুটেচে কি না ফুটেচে হঠাৎ শাগুড়ীর বঠুমার কানে এলো, "এই যে খারার কাছে সবাই আছে। আমার যেমন পাপের মন, মন চাইলি তনে ভাড়াভাড়ি "दिन जूमि डेट्रे এलामा— अता ज मन तरस्ट, र्य १व निर्छ।" मा दल्लान, "आह जाम्ब ना याहा, এयात प्यत्क उत्राहे भाउत्राद्य। বুঝতে পারিনি, অন্তার করেচি।" শাশুড়ী দেখানে আর একটুও শাড়ালেন না, অপেকা-क्रज ब्लाट्स ब्लाटस था (क्रटल आवाद श्रृजात चरत्र किरत शिलन। जिनि जात्र कामगारा জপের স্ত্র কের খুঁজে পেয়েছিলেন কি না कानिना, किछ छोत्र ছেলের পাতের স্থন य নিজের স্বাদ হারিয়ে তিত হয়ে গেছল, সে আমি তাঁর মুখ দেখেই বৃক্তে পেরে ছিলেম। ভার পর থেকে শাশুড়া আর একদিনও তাঁকে হাতে তুলে কিছু খেতে দেননি ৷ প্ৰথম किङ्कानि थाराज मगग काट्ड जान्टिन ना, ८६८ लाज व्यक्तम् । विसम् काम्राकाि जाभाजाि जाभाजाि । त्मर या **এ**एम् दमर्डन, किन्ह निरंजंद्र होर्ड शोर्ड. किছ जुरम निष्ठिम ना। श्वामीत भिकामङ आि त ममद दमित्करे थाक्टम ना। ठाकूत्रक मन बिनिय हूँ एक स्मर्श स्था स्थान, ভবু হাজার অন্থবিধা সত্ত্বেও শাওড়ী তাঁর জেন वकाम (त्रध्यक्ताना जिनि क्रापत्र माना

धकमिन পাতে पहे मिट शिवा मव्देश मरे त्यत्वारक केटले त्करण मिरण। चामी गंग. क'रत वलरलम, "मरे आमि आव थाव मा। व्यामात्र काछ महे व्याद ८५८ जाना मार भहे দিলেন—"না থাস্.ত পাত্ব কেন।" এই मरे था अगां ए या भा भा ५ ६ द वा व कि जी मरन अ ष्यस्त्राम । ८ इटमत यति हे हटम मात्र त्य हटम ना তা সামীও ভানতেন। অধেকগুলি ভাভ ভিনি এই भই भिएउंडे स्थाय शास्त्रन । साथी पर ८६८७ ८४०शांत भाखकी ७ जात पर्वे म्लान कत्राह्म ना। जामांत्र गुप्य मात्र थाएशा करास्य ना **अ**वत्र (शर्भ केनि (अर्भरे वर्शन, "मरे (मखर्ग एक्टफ मिटन मां—कारमां, टन्य-পाटक महे ना हरण कामारा था ७ ग्राङ इस ना । या (ब याला-काञ्च मुच (माण्डे (बाका बाक्रिम। मिशितन नार्श छाँच खालक खार्लिश भएक গেছল। ছেলেছ খাবার কট ভিনি সইতে भात्रिक्तम मां, এখন কেবল জেদেব মাম্লা চলচিল। চেলের উপর ভালবাসার ত তার অভাব ছিল না! কেবল সে ভালবাসার উপর শনিগ্রাহ-ক্রাপণী এই আমার व्यापिकायके जांत्र त्यक-प्रारका विश्व याधिरा ছিল বহ ত নয়!

त्मिम त्मरव **कावमात्र भटका—मटका**रवना গা ধোবে। অনেক করে "মা আমার,-মা-মৰি আমার, লক্ষ্মী আমার" বলে ভুলিয়ে আম-मखद्र त्मां व्यविषय कृद्यं होषान त्भाषाम । ट्यट्य हटण दर्भटण यां शांगांन द्रश्टक यद्यान,

हाटक निरंश এদে বস্তেन; काटक निरंक "क्रथंत्र माथ कि शांदन (यहि।— माना (य किंदू পারতেন না, नम्म আমার মেজ ছেলে, পেলে না, ভার সিণ্টী পবা কেন । মা ভ स्थिनि, अगित्र मा, जाहे गांदव-जांदक मा जाकरक (णामात्र मञ्जा सर्व ना।" यत्न दश्म रिम, ভগুবান দেন্তি, সামুষেও দিলেনা—কাজেই र्थाटन शाम रमछे। कि , ज वृ कि ज खरश्च व मन्नवादन आमि जात थांच नां।" मा भारक मूट्य कवांच शिद्य वस्तृत एव श्राज्य जास त्यास क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्र —পাক্—বাজ কি আর তর্ক ক'রে।

> এইবার আমাব সকল অপরাণের চরঃ माखि हरत (शहर। मा चाल काना-वामिनी – এটা তাঁর ধার্মায় ভির কলে, তাঁর স্বেচ্ছার এ আমার অপরাধের দণ্ড। सन्दा नग्र। कि आमि करबिहित्सम - (महे कथाहे । स्वा

त्मिम, ध्यमिनकात्र चरेना व्यागाव कीवन के जिल्ला कि दन्त्रदेशीय करण श्राक्त, त्रिमन अक्टिशिटरमा ८२छ शिभ भरेल्छोत्र ८६८० তা ভালই জান্তেন, সে ভাঁল ক'দিনের অপুক আমালের নিমন্ত্রণ কব্তে এলো। —-লবজর "সাধ", এখনি খেতে হবে। সে ष्याभारमञ्ज निरत्न याद्य। ८ इंटिंग ७ नव নাচ্যত হুরু ক'রে দিলে। শিবপুরে त्योगिनिकाांग शार्छन स्पर्वाटक रूद्य। यात्री यद्दान, वैदयम ७, कांग त्यंदक रमशारन वात्रान **दलर्थ मक्तांत्र ममन्न मन**्कित्रलाहे करन।" मा उँवि नाजि-नाज्नीतम्त्र माजित्य ए जित्य ভৈরী ছলেন। আমাকেও যাবার কথা वरमहिरमम। किन्न हो दे प्रकोत्र वाङ थ्या क्षत्र हरप्रदे वर्ष चामि (यर हिल्म ना। মাও বলেন, "থাক্ —কৰ্মবাড়ীতে অনিয়ম হবে, कांक (महै। बंबर विशिन बांव्टक एउटक একবার ভাগ ক'রে দেখাও, সন্ধিও রমেটে, खान नव।" या **5**टन टगटनन। जायाव

मनिं। छात्र १८त्र ब्रहेण। (शंगाम मा थूकोत वांक दनहे, मा यनि कांनट आदिन--सञ्ज्ञा भारा है विषय मा उ र व व व গেলেন,—ক্সিড ওলো আমার অন্তর্ধাসী বলচিল, এ আর এমনং কি অলহাধঃ वास्यामी, कृषि छ कान ग्रामुत्र गुम्ब कथा —বে পাপের পলুই আমার মনের ভিত্ত তুই ৬ এখন বাচ ছেতের মা—ক্যেপর कत्मिहिंग, भि (व मान कराई (मेर्स कामाय मः भारत — छाकि चामि बान्द : ८ ८ ५ इतिम । ा अञ्चादक क्यांच मिला पिराध वाष्ट्रांच ल । क्यांचार च, ७५ त्यार ७ ८०८म याचान घड मरनाव थेकोर क्या गडारु वामान मान खायना कार्छन कुनावर खान करवाह(लग। कि क्योन-क्रांकिल छल्ज्य श्रीक्यान। नश्री वाषाणी मुद्दत बाखः भूत्रवित कुल-नाता बाराभ, **जिल्मान गृंद्धतः जायान गामान ज्यानक-छेल्मादे ह** त्था = कि कामान मरमंड कार्श वि १ त्वर्गांक्त वर्षे क । अवृत्य त्यालम ला— भारकवल त्याहल दीली त्यांगारन दकन । (कांगांन त्य क्य कराल। विदेश व्यक्तिय ना का का सर जट्य । भागत का जात वाद्य कि मा, या (मगुना डांधांडा (मथाटन मयाडे । काकाम) क्यूरन, किट्या भाख में अथन (व) वाल छात्क १ मा नव्दि भाग कर काल (नः वागाय जन देकाक्ष्यद कांग्य। आयो छा । था । यदम वरहान, "पाछ (क्रांत्रश्चिश्रार्भ "मधुत मुत्रणो" (क्ष २८७, — गांदव १ नकांगद्वनां शास्त्र मदन मकथाना विकार्जन कि कि निष्य ८ भन । एक मिर् कानाय (नहे—हन ना — यूद्र व्याना याक्।" भरन मरन लाख थुरहे रुष्ट्रिंग। ७५ द्वासम, "ध्कोत बञ्च, ভাছাভা মা यनि भारतन ?" স্বামী क्टम राष्ट्रम, "नारे वा वास मारक। विभिन्न वाव ত याल शिर्णन, शुकीय ध्रमन किहू नग्र। यत्नामा जाथ्रव এथन अरक, कडकरनजरे या माम्ना।" कथा ठिक ! कडक्ष वर वा ! क ड वर्णामात्रहे कार्ट्स (वनी नमन्न थारक। स्निराद कारम कुछ थाहरम रमरव'यम। उत् मन वमहिन

८मटब-८७ विष्युटीत अभट क सार्था। त्नाज कित्राभन्द कि ख्या तिह इत्य शाक्र करता दर्श के जान। त्वा के आद अश्यम भिक त्य कात (दभी भारत भारत करना कार्यन, भारित छ (क भागांत गांचान केंग्युत, कुंग (य ल - न क'र्य (करनाहरम, जाद ना ख मार्य भरोकात्र (सम्द्रा। नाक्रीम এ गुद्धा कुर्दाणनीरक आभीय क्छे । स्ट्रा ध्यम आश्वारमद (माञ्जवानीत मधुत स्ट्रा अवला खटलत वाना बाक्का- अस क्ष-मा॰ भव कृत्व मस्तव विमक्कत मिर्ध अनुर्ल ८ - रमध्य-- रम यानाद स्टब ना जुलाद का शामी वन्द्रन, "5मा!" ভার উপর সব ভাবনার ভাব সঁপে পিথে आंत्रह डेअगात्र। किन्द्र धाराय त्य क्षकृत्नत ভাক সে ধ্বর কি ভথন আন্তিম।

शिरम्हाद्य व्यक्तिन केलाभगदनद्र भोन्त्या माधुरा) উপভোগ पूर्त थान्, यर्तत्र क्यार जान-किटलाभ (वनी। युकाला (कमन प्याटक ? कि कब्रि १ कामरन कि मां, रक छ।रन १ मन छाइ (थादक (धादक हम्दक छेडे हिन। "मध्य मुजनात" नामिका (मरकोडन विचारि किर्निको मिम् भवन्त्र। जात्र काव-काद नीमा-**। अश्वाय मुश्चावनी लाटक भूध क**रम Cमर्थाधम।——वामात किछ दर्भी <u>ज</u>ान मागिष्म, के मदल क्रमात्मा जग उपायात्मव HER JANES! नावक এक माक्छकरक

 श्व मद-किकूत मध्या ७ जात कायन भन्नेका कामात्र मध्नद खेलत काक ३ हाल (मदत **८त्ररचरह।** विश्व अप्टे इख्याम यथन जात् তুর্গতির চৰম অবস্থা, এম্নি সময় মার কুঁডে বরে গেল আগুল ধরে,—একমাত্র (करमीं भाम करम पूर्व, भा क जाव छावन भनीका। कारक सानात कारक छाछ्दन! भाइ-७ कित्र व्या ८०११ — ज्ञाब भावक ८७ वाॅाभिरंश भएक व्यांभ वहानत तुक्रांक दम दकान-त्रवरम बाव व'रत बान्दा। आव छ।त ख्यून-कार्य वाटना वहद्वत एक व अ अन करन क्लिट्य (अला। किन्न ना, स्र (अला ना--धांज পরাক্ষা, শিনিই যে বিচারক ় ভাই ছেলে टकारण ॰ एक करणत छित्र ८४८क ८मरे श्रामकाष्ट्र नवसम्भर क्रूबन्द्रमाङ्ग मृहि छात्र एक्टक निर्ध केंद्रियन। जानरम एटाथ मिर्य क-छ क'रव जन क्वकिं। श्रामीरक वरहाम, "लाक, आंत्र तिश्व ना, वाडी हम।" वाशा न्यान - "क्रांश-मन्द्रः त नम्द्र भू हेना क Cक्या । युवा ८ अभाव ८ उटन व्यान ट्रिंग , ७वा ।"

कड़ा नाफ्राण्टे ठीकुत अस्म मरबा युर् निर्देश । श्रेष्ट्रांक्ष्मिक त्रि.स चुमक दम्दस्य श्राटस क्षं किरमा शं (य शूर्फ यारक ! ल्ट्स বাপ্বে, কত জর় ৷ তার উপর মশোদা যা थवर मिरम, श्राम क यात्रि वरम भफ्रम। यटनामा वलदल-साम्त्रा छटन यावात शानिक পরেহ মা কিবে এসে ছিলেন, খুকীর জর CNTअ ८५ एटलन, जांडे थाक्टड शाद्यन्ति। व्यामन्ना शिरमेटीरत । श्रीष्ट् श्राप्त व्हार्गरक चूम भाष्ट्रिय दर्श्य काथ चन्छ। भरतहे हत्म श्रीहरू । षाश्यारे जात्क निष्य शास्त्र । त्यम गामी ना

বল্বার গ সময় নয়—ভাল মেনেও নেই কি—তাইতে না কি কালী গেছেন! ঠাকুবও (म क्षाय माको (क्षा मा फरव আমাণের তেড়ে গেছেন। এত-বড অন্তায় ८कमन फ्रेंद्रह्र दी महर्दन । कामीरक मात्र 'अभिया हिटलन—निम्ह्य या **(म्रेश्राट**न्हे (शर्छन। थुकी अकट्टे माम्मारम जाभग्र मनाई छै। दक कि। त्रदम् व्यान्ट । मां कार्यन नां,—वाधादकन, माधनांत विषय ममस चाम्द्रनः चाम् वाम् वाम् ममम् ८ हाटल इ कर्न ८ जरम चन्द्रन- जिक्छ। जनताम क्रमा कर्टक भार्दिक का, भाश्र मा नगरनम, " এक हो। नम् व्यास, Cold अक्टमाहा व्यामा कामिकमा वर्ति, नब्देश, किन्न टिग्लिस मः मार्थेय ८७ छत्र कायात काय छ। नम् Ca -- जागि आहे भाषिक्षण ना। विश्वनाथ व्यामात्र खु ७,८३ मिन এक है।"

> ५ भा छोव ८७८मटक कमा कब्र ७ ८ १८ वर्ड ५ — তিল যে ওর তেলে ! কছ আমায়— ৪ ्यार्क आमात्र क्रम्ड लिन्स करवा माख्या चामान काक्य डीन मांचारना मरमात्र, मारभव मकान मन एक एक व्याक्त काना-नामनो । (क्रान्या तान करत, आभाव करकड शरमत ठांकुमा हरन निरम्रहला जाभी मृत्य म्लाहे ना वनुन किंद् भन्छ। छोष छात्र रहार थाटक--- (कन आमि এত कारमञ्जाब मन मिर्ड शांबरणम ना—डांब या ७ (यमन-८७म्भ भा नन्। भन मिला । किला ecगा, टाम्बा मवार आगाध व'ला विट अपन, আমি রাগ কর্ব কার উপর হু আমার মার मक्त (मर्था स्वाय अञ्जूषित अञ मुङ्किक्टिक-? ना, कित-भाकृषांना क'टल यिनि प्यामाश ज मःभारत्र भातिरशहिरणन, छात्र छभव १

> > बोर्शिनदा (मरी।

र्यात त्य किर्द्र क्षात्र, व्यात्रांत्र कालर्वरम, नमन-व्यक्तम मुहात्र व्याधिकरम, আশার মুখ পানে চার! পুরোনো ছটো কণা, "গোপর মন-বাথা, ৬'গাছি চুড়ি বাজে রহিয়া মানে মাঝে व्यामात्र कारन करत्र यात्र ! नत्रम छि कारल छात्र । यि (म (कर्ण दिर्द) अहमा ब्यारम कुटिं "(क्सून। बाक खान १ करत्र ए ए एक कारणा, हमकि (मग्न कुनसन। ना (मर्थ अहे कहां भाग; গ-থানি বাছডোরে বাধিয়া রাখে মোরে, এই যে আ'ম এই। ্রণমারি প্রিম সেই। আদরে ভরে ৬ ভবন। ,বঁধু গোনহে পরিহাস। यमि (म कारूपम मु'वानि १ ११ हम, छाप ना छाथ (५ दरा । यर प दम दम (थरम মুরতি মনোরম তার, याश्रूती উছ्टालया श्रीतन एक लिया, यिन भ्रा त्या वाष्ट्- एडा त्य वाष्ट्र वाष्ट्रिया काल भारत कोवटन जारम जकवाव । भाषिय-एक हि-१ ७१, त्यां भी-कामि-यात्रा, यि देन क त्या कृत्व व्यमित्र भिट्य-शं ५ मूथ । खाभद्र कारण खाँचि हिला कृष्टि भाषी, "ठाकिश खारथा पिकि, वालादा करमा छ कि ! শী ভলু সেহ-ভরা বৃক্ষ ।---र्याप (म असूराटन). व्यक्तीन कृत्व काटन, नुभरा (म आयात वाम (म अस्यात स्वि-कुर्श्विक, (क्रांक्रम-भूगिक ह, — क्रिम वाम कथा क्रूं एक मन वाभा भारह (म भिन्निकि जान। ज्यानांत्र किर्त्त सामनारम। माञ्चन व्यक्तिमादन मनन क्रमग्रादन वहम वारक्षा वारमा मू'भा'न कारणा कारणा विभागा भरण ब्रद्ध थाणि। यि दिन जीमा ७६ स्र स्था मा कामि सदस दिन विभिन्न वालि आस वालि ! <u>टिमनि शाम् कारम</u> टिमनि कारक दर्शन कारक दर्शन

— অমু 🤊 মিঠে নচে ভভ— আদির করে শত শত । ८७१मटक ८कारम जूरम क्य--ক্ষেত্রের তেহ পরিচয় 🖓 " ननीन कटव किटन शान। आंगान काटक किटन जाटन। र्याण दम क्यारम भूमताम् । जुणा अ मरमा कामा अम किर्न कामा

याजनावक (तमनायाः यांजन किना-पूरम किन मक्क्रम व्यारभारम खरत्र' धांतिमक । भाषी ना शास्त्र शास विषय व्यारमा भान পাড়ার তেমানটি ঠিক। দথিনে বাংলাদেতে আর না উঠি মেতে लिडिए हाई जार हाई। नि कन्नवस्य हत्स्रांभाधात्र ।

ক্ষিতীশের বাসা থেকে সতীশ বেরিয়ে **এশে यथन भर्षत्र मरक्षा मैं। काल, उथन दांड एडमेंडी आकारमा मिलिस र्शन — किन्छ ध्याय** অনেক হয়েছে। জন মানবহান নিশ্বক্ষতার ভিতরটা অনেকক্ষণ যেন গুম্বতে লাগল। মধ্যে তার জোট থাওয়া চিম্বা-স্বের পেই मधीविष्ठ करव जून्दल।

ভাতের গম্ভার উপর চাঁদের আলোন खक्त श्रामिति (यन अकम' वात्र करत्र ভारक क्षबर्द्यान नय। मानूब निट्यत होन्छात ছাপ पिरा ভাকে कारणा करत्र (परथ- व्यापा স'রে দাঁড়াতে চাম !

कमनात्र कथा मत्न करत छोत्र मत्नव একদিক ধেমন আনলে স্বস্থিতে কৃতি উঠতে ভয়-ভাবনা নিন্দা-গঞ্জনাকে ভুল্ক করে ছুটে माशन-जन्म किया (जम्बि कुर्शस मानिएक কুর আহত হয়ে পডল। হার মার অমুকা मत्न পড्न,—क्रिक कथाई भाज वर्ग —इक्षांत्र অশিক্তি নিরক্ষর হন, তবুও মা মা-ই [---তিনি ত আগা-গোড়াই বলে এগেচেন, বেনামি উড়ো চিঠি বিশ্বাস করা তার কত ৰড় আহাত্মকি হয়েছে !

বাসায় থেতে মন চাইলে না। সে बाल्ड-बाल्ड किट्र किडी (भंद्र मक्ट राभारम সাক্ষাৎ হয়েছিল সেইধানটীতে গিয়ে আবার यम्म ।

কি চমৎকার রাভ, কি স্থন্ম জামগা।---मूट्य यमुमाय कांट्या कय-मामा वावित छ्या (मोन (का) स्था—स्यन छात्रहे यक दबदम

वरम আছে। माधान छेलन मिर् धकरी लिंडा চীৎকার করে উড়ে গেল। ভার **শব্দে**র

সতীশ ভাবলে,—ভাইত, এই পেঁচাটার খোজনার অবসরটুকু যেন তাকে নিমেষে ত কিছুই ভাল লাগে না। এত আলো, এত শোভা থেকে কেন সে এমন ভাবে विश्वित। आध्या, तम निष्य विश्वव, ना व्याच कांक्र रेस्ट्राय श्रिक्ट १ कि कांनि,—— वन्द नाशन, श्रीयेवीय काम 6 मियहे इयुड, क्षेट खाटन मा,-- य या या या म मिट्छात्र भन-शक्षा कथा है वटक, दर्शाश्र हत ।

> আবার সে ফিবে-ফিবভি নিজের কথাই ভাবতে বসল।

> • राजुन साम कमना कारीय रूप भव পেছে ভাব মার সেবা করতে। আর দেণু कार्युक्ष, तुर्व।

भरीटनंत्र ट्रांटिश्त माम्यान कमनात छवि थानि পরিশুট গৌন্দর্যো ফুট উঠল। রোগি-নীর শ্যা-পার্শে প্রিগত-প্রাণ তার সতী माध्वी द्वी कमणा; ज्ञानाहाद्य ज्ञानिसात्र कीन <u> इस</u>—बहे के मभार, बहे के चर्ना ভাই মাহুষের মন কিছুভেই ভাকে ছেড়ে (यटक ठांत्र ना ; त्यटक भारत्रक ना ।

গভার প্রেম-প্রীতি-কৃতজ্ঞতার তার জনম উर्ছোग्फ रहा উঠে' চোথ ছটিও অঞ্-ভারা-জ্রান্ত হলো। তার মনে হলো—তার এথন একাস্ত কর্ত্তব্য হচ্চে অভিয়ে গিয়ে কমলাকে माराया करा। निरमस्य जाराय महन महन

कमलात कारह निष्क्रक रम निरम्न (शन। क्मणांत (क्षमण छ्यामि हां हित्यत (क्षाणत (क्षें-(षडे कत् हां जाता । (यहां वक्ष काहा-मध्या दिव नित्र त्यन वन्दा — कमना, का भारक কি আমি সন্দেহ করতে পারি!

এমন সময় পিছন থেকে পাহারায়ালা উচ্চ স্বরে ঠাক্লে — কোন হ্যার १

সভীশ ভাকে ভার অক্ম ছ্র্কণ ছিলিতে वृशिष्य निर्द (य (म এक कन-मूमां कि र ।

यहार ७ दर् १ मडाम टाट्य दमभट्टा, क्रिडीटमव दक्वांमटनव छिट्टा—टार्थक्टी मध्य पुत्र र्यामिष्टि भएक त्रायाट । (मिनेटिक काटक क्षा क्षायां क्षायां क्षायां कायां त्रायां व निटिहे—किमात्र अकर् वक गांम दश्य वाक्यमिएक हरण शिला लोब लागर वार्थ আর কিছুই নয়—জুনিয়াতে কত পাগলই ভাছে |

र्वामिटे। बाभा-भाजा ि ब्रीकन करत्र महील मत्न मत्न ज्यांच्या – बहै अकहे जिनिय, किंछ আমার ফুতে এটা কি কুৎসিত শক্ত না করবে ৷ বান্তনিক কি শুভশ্নবেট বাব্টির मास (मर्था हाम (भग! न्यामांत कमनारक উनि वैक्तिक्टिन—जागादक आमांच कि^{निय} भीटि प्रतात करता गएको श्याख हुए हिटलन। কপাল আমার!

ক্মলার জন্ত কঠাৎ তার মনটা কেমন व्यमाश्व रदम छेई वा। मत्न हर्का कांक (नर यात्र तमती कदत्र—िक क्रांनि, कि इट्ड कि क्य-बाब्यत्कत्र (अय-वाद्यतः शाफीएक त उना हरम बाहे। किन्द्र धारे वाँमीछ। कि करव कितिय (मर १ चाक्ता, थाक् ना मिन-कडक আমার কাছে। আমিও একদিন তাঁর জিনিষ ঠাকে ক্ষেরাভে বাব, সে বেশ হবে এখন।

भरम दर्वात्रदम भरक माठीम रुन्-रुन् करस

यामाय मिरक दूषेण। शब्द कुकूत्रश्रदमा कां ि भए ला— जाक यानिता छोडी-एक रे मि भागित्य (शंग। तम मान भारत (करम वन्दन, यन कादम नाश्रहना जी। इन्छ णादवी काटक चाम्दव धकिन :

वानाव भाव वक्त इत्य । शत्य हिल-ए। का-छांकि कंद्रटिंहे भूटम मिट्य होकद्री वन्द्रा, প্রহয়ী বয়ে,—বাবুজি, বান্শি ভি বাবুজি, ভারি রাভ ছয়। তার হাতে একটা

> म शेम रहा-त्रध्य, जां जि शांकि भां क्यां सारम्भा १ जागान जातम मटकशा क वकमिन **ट्रिया**।

८वां ककूम-नरम त्रष्टीत शाकीत উत्मरम वात करम त्नाम।

জিনিষ-পত্ৰ বড় কিছু ছিল না—ভবে (अशेष ट्यांडा-कश्रम अत्रा कार्य महो**ल कोनोमन्डे किमानास्त्रत गट्यत्त याम (य शाम-**यश २८७ পার্বে—এমন আশাও করেনি এবং ভতথানি মনের জোরও ভার কোন कारन हिल ना।

योगांत्र मार्गाटनकाय-वायुटक स्रोध ८७८क ভুলতে হলো না ; তিনি একটু সন্ক ধরাপার लाक। भारह एक कानमिन ठाउँ ना मिरत्र मद्र পড়ে, এ ভাবনা তার সর্বনাই লেগে থাক্ত। আর সতীশতে তার কেমন-কেমন বোধ হ'ত— বেন থামণেয়ালি—মতলবের ঠিক-ঠিকানা নেই। রাত্রে শুভে যাবাব আগে তিনি থবর নিভেন, কে এল-গেল। বাসন-চুরির ভয়ে সন্ধ্যা না হতেই বাসার দরজার থিল जाँ दि मिर्स निष्ठिस मर्जन।

भएम। তिमि वरम উठरमन,— कि भमार्थ, हार्छ १ এত রাত হল যে। তার পবেই সত্তীশের সতীশ একেবারে অপ্রান্তত হয়ে বজে— क्रांटिक वांनि म्हिल्य वर्ण क्रिंटिशन—काथ काम क्रेम् काक्रेटकां—এ(कवादम कुर्ण शिराहिश्य গিয়েছিলেন বৃঝি প

(शहनुभ।

मिटक ८५८स अरुरमा ।— मजीम घः अत्र मर्या छेऽरमा--- । इर्व ना भगार्- छाका-कड़ि हृत्क चां छि। (ख्रां क्रिक्ट छात्र मर्शक्ष मित्र १८५ (सर्) भार्यम, महाम-विष्याना-भद्ध ८७८५ माष्ट्रिक काम्मस्य ८क्टम म्य दौर्य रक्षम्यात्र উष्णात्र कदर् रम नहा---नराम कि १-- काभान छ' देवलात्र मान म।

र्जाभटक अयुवीय । काय जाम जाति गनाम व**टल**— वावृष्टि, नाह ८नाह भाषा— এक टठा हिम्हेम् माशा !

मलोभ व्यक्षमनव्यादन याज्ञ-व्याद्धा (स् यां शा— डेम्टका ठात्रदंश द्वादंश।

महारमकात वातुत हकू उत्तरमह विकारिक इस छेर्ट गानग। याभात्र कि ? (माक्छ। পালাচে না কি ? গতিক ড' ভাগ নয়. (मथ् कि !

अधुवीत घटतत गरश हरक वार्तकत विक-मछ भाषे दर्दाय माथाय कर्य गाडीटङ कुरण बिएक दशम ।

व्यामि भारतकात्र वाव, अरे गाफीट७३ मन्न थूहरता नाकिन वचुवीत्रक विद्य (क्रवन। कत्रि - आभि वाषी याव।

লোর খুল্ডেছ সভাশ কার স্বমুধে ভথন অভি ম্পট কবেই বল্লেন—আপনার

गणाह— এक छ। जात— এङ व्यवसि वरणक मलीम देशर ७-७६ ठाविटे। जानात्र मंद्रश এक है इंड ७३ क्यरण, जात्रात्र अकिटो शूरव मिट्ड मिट्ड वटझ—मा। धारे जक है— का शिल्म वम्हल,—वाष्ट्री व्यक सम्म अभन्न আমায় একজন বঁছার দলে দেখা করতে পেয়োচ কিনা, ভাই বাড়া যাচিচ—ভা আপান किছू भरन कररवन ना।

भारिकांत बांबू व्यवाक् हरम महोर्थिय भारिकांव वाव् व्यम् हरम बर्म

मणारमञ्च दक्षम था करब श्राम क्रम रामन, **(काउं**दलाक (भथित, गणाहे।

मार्टनकार रांद्र এक हा मुना-(मास किन — কিনি রাগলেই এক-একটা কথার এক-একটা অকর অনেকবার উচ্চারণ করে (कश्राक्ता किन वश्रम,—-(६१-८६१-८६१-८६१-ছো টো লোক তু-তু-তু-মি না মা-1-1-মি ? होका ना भिरत्र ह-ह-ह-ह-त्न बाह्र १

मभाग ? টাকা मिट जुल रुख शिरह—जारे वन्ति।

मार्गिकाय उथनि भाष स्टब व्यान ভাই বলুন।

- कछ मिरा **इरन** ?
- —পাঁচ টাকা সাড়ে বারো আনা।

সভাশ তার হাতে হটা টাকা দিয়ে বলে-

मारनकात्र वावु महा थुनी हर्द छैकिछि। मारिनकात्र याद्र वाद्र रह रहा ना—िर्जन श्राटक निर्णम। मस्म मस्म मठीरभद्र खनश्मा

व ब्राटन—दनाक हो (मर्थां हे थामा,—विना क्रिमार्थ छाका (नम् !

—र्शक्रक **माल। हम्-हेम्** शाधौद, मृधक्ता स्वन (मर्थ—क्टन शक्त नगरमत नोर्त (परक (बाष्ट्रां व विटिष्ठ) दकाठभान ठां वृक्त कान्द्र । मृद्ध 'জভটা পালেব মধ্যে পুরে একটা করুভ বক্ষ শক্ষ করলো—যাতে নাক কথডাতি अग्रेस विष्या अक्रांख केटलांक २ ६८म स्टब्स क्रिके - 5८७ (श्रेश । १२ मि १ प्रस्ति मिटक क्रिके ज्यान्यात (था धा ७ व्यानि । म म । व थान्या वर्ष कृष्टिक श्रम करव पिरम ।

29

क्रियान शलाव व्यावनिक (भर्म (यात्रान ाधवा आब वाहरा मां ८५३ व्यर्भक्त क्रा ह भावरका ना। छात्र विद्यादम व्यवाध बद्दा कार्याक्ष वटम--- भरतव वास्त्रातक (छाका ला- जर याग्रह। जमल कर्पायमान कटला (य य'म CHIय दश के क्यांचि जका (माया नह । भारभन कें। ए करणे भयान केक्-कर् करव काशर जागन।

मैं फ़िर्गार्कान, ७ वन ट्रेंटिक किंक भरन करणा स्थल करण (शर्मना जांत्र क्राक्त वर्षा केंग्र मर्ल अप्रद मुद्रिमान कामम। (कानकरही कारण वर्ष आत्म ८५ शरानम कारक वमनकार व ज्ञानमामिक नवः भाष कटम उ८३८६ - कम्पर्वा उपन शक्षा मित्रा कुरम धक् कदर, ,-कांग-पाका **८गाम-८का**षा अ कृट ग । । क्टा क्टबट ।

পাकि, हुटा, मुग्रात, इंडामा, नव्हार-पूरे निर्वान याटण खाकाम ६८मा वि अथारन कि कतिम ?

का कान्ड, बाद जंड टम मदन गान दिक করেছিল যে একদিন হার ভাষণ ধাকা **डाटक (शामाटक रू**द्य। ७१३ (म दकान কথার উত্তর না দিয়ে একটু আছভাবে मां इत्य द्वेष व्याप्त माष्ट्रिय पिटक जकपूर्व

(5८म बहेल। ८म एव क ७ थानि निष्टिक माम्मा८६६— हा स्लोहे त्यांचा याकिम शा माजीम महीन निरम हंभहेरम हर्ष बन्दल, लर्क्ट्रहें ब्रह्म शूर्ग (भवस का - इंभानां प्र हात काठ-छ। यांच वा स्मरमङ ज्यारम।

> পুত্রাক শৈক্ষাক দেখে মিত্রনা কিছুমার भाग्र केरकन ना---वन्नः वारभव माना छात कारमः वट्डाम, — এই अ'म'कबट र ८ शमार बानार महर्म माथा हकरल भिरत्रहा दर्गम ४— ५८क ा छल ७ दलको करना न',--मा छ।

क्रांन वार्षित । भरक भूष । य विरम

िक प्रमुखार कथान देखन त्यामा कमिमान बाबन (भारतेर अलाम छिन ना, कार या वा के विकास के ना हवात हेभार छात्र भारत्र । इन।

ध्यम मम् कम्मा छ।क्रम, — क्रिम्माम। যোগেন একবাব ভার মুখের উপর দৃষ্টি त्यार्शन मिल भिल भिल करत वरक्षन,— क्षःण काषाकांक द्रमण करत्र मूच मर्तिरह কুলভ্যাগিনার সঙ্গে কথা কংমাও উচিত ভার বাপের রাগ যে কি ভুমুল, হরেল নয়—এহটেচ তার দুঢ় এবং কির মত।

> विश्व क्षेत्रमा उखरतत शहीका करव नि, म भूव महस्रकार्य करमकार कथा सनर्भन বলে গেলঃ—

> जाननात्तव भक्ष कुन ६८७ -- जाननात्रा मबठी ना ८८८ व्यान-मारक जानमधी गरन

করে নিচেন। অপরাধ আমরা এক বিশুও করিনি-- তাই ভয়ও আমরা কারুকে করিনে। यि धर्यात व्यक्ति मर्काव व क्या कालनाता করতে পাবে না—ভাই বিচারের প্রর্থেনা करत व भव कथा वगित्ता न ि वर कथाई मन् करत १४, जामात्मत्र श्रीष्ठ जविष्ठात करत विरम्भ करत एक निर्माय क्रतनमानात छि । अविहास करत आश्रीन निरंख है ना ष्यभवाधी हरस भए ७ न । असन अकिमन ष्याभूरव **(यधिन এই मिर्थात क्यां (ज्या खेडिस** बादय—दमिन किस ज कगटल जाभनादमन 52थ बाथवात आंत्र स्थान धाव्दव ना।

भटक वाद्यव अव कारकारामं कमलाटक माक्रियन করে ভার টুটি টিপে ধরে হিড় ছিড় করে छिटन थिए कित स्मात्र मिर्स यांत्र करन मिर्स नह्मन-- रात्र नकामि, अहे क'मिरने व्र गर्धा बिरमिष्ठात्र कराउ । नर्थ (अरम् हम् । हरनाम ষা--- আমার বা চীতে তোর স্থান হবে না।

करत्र काटक किमि চাবি माशिय मिरमन।

हिन, करत्र तय जात्र भाषा कथन क्यम करत वात्र हरत्र श्राट्स, खां' दक्खे (मथ्ड व्यक्ति।

८गारशक्त ध्यमन छक् श्रष्टीवर्जादन अमिहितन, ८७मनि ভাবেই वाड़ी फिरव প্রেলেন। অলক্ষণের কভিজ তাটুকু যে জাবনের हुन ७७म वस इरह এक मिन वादादन—७।' তথন তিনি বুৰতেও পারলেন না!

किष्करवार अञ्च कमना मिरकारक अकार्य অস্চায় মনে করে অথিশ্রাম কেঁদে বুক र्थों अ दमन ७ दमयरयन, कि ज़नरे नास्य जांत्रदा प्रिंग। कि ख स्केरन मास्य मिन মিছি-মিছি করে। মান্ত্র মান্ত্রেব বিচার যায় লা। আকাশ্রক নির্মম আবাতে ছড়িয়ে-পড়া মনিকৈ মাবার সে গুটিয়ে ভুশতে লাগল।

> ভার সব-চেয়ে বড ভয়ের জিনিব হলো — মাহুষের সান্ধনা কি সহারভূতির কথা। ভাই त्म धारत भारत छिठ वाशारनत अक कार्ण त्य निविष् वार्भव कवन किन, ठांव मर्मा इन्क र्जाना . मश्रांत्म यात्रा गार्वित व्यामा बार्य खाः। (य किंडूर डेंग्र व्याम् (व ना ना) (म खारमा कर्त्र हान् ।

कर्रनाट्यंत कार्य महा करणा ना । किनि केंद्र (मथार्न ब्राम मि देम कांग कर्य वास निर्ट ठो॰ टन एय कि सम्भरत । श्रांत्रभन को ड छ थानि (वां करत अकां छ मरन (म छाक्रण —হে ভগবান, শুনেছি নিরাশ্রের আশ্রয ভূমি। এখন দেখিয়ে দাও, কান্ পথ আনাব भव। आमि त्य कि क्र क्रानिता

ठिक खार्च मगरम जोन्न र बनारथन कथा ভারপর থিড়কির দরকা সশকে বন্ধ ওলো মনে পড়ল। স্তিটা—যমই কি এখন ভার শেষ আশ্রয় ?

করনাথের কাশু দেখতে সবাই বাস্ত একটা ভীষণ আতক্ষে তার সমস্ত দেহে-मदन दयन काँछ। किरत एँ छ। जाजा करा। ना, छा किह्नुटक्ट करक भारत्र ना। खरनहि, ভাতে আত্মাৰ জনন্ত নরক ৷—েকেন আত্মহড্যা करवर कि स्ट्राट्ड आभात र कि कटब्रिड আমি ? কিন্তু এই বাঁশ-বনের মধ্যেও ড' कीयन याशन कन्ना मख्य नम् । किছ अक्छा উপায় করভেই হবে—একটা ও আশ্রয় 51E-51E |

কমলা গালে হাত দিয়ে আবাব ভাব্তে লাবল। হায়। আজ যদি সভীশ কাছে াকত। সে নিশ্চয়ই এমন করে অবিচার ক্ৰত না।

कर्न ना ? ठिक कि डाइ ? बाह्य. अयम करत् भःभात्र छात्रा करत मन्नामा ६८व । হম'লায়ে চলে গেলেন কেন তিনি १ শোকে १ ा ५:८४२ कमना जात्य जाएक गापाहि नएफ वटल-कि अक गास्त्रक दर्वाची। त्रवंडे o अञ्चर्मान — अञ्चर्मा (य मना कर्वके काय--- जो एक यमर ज भारत।

त्म अकठे। लोच नियान (मट पान, -वारा, स्वाव दय स्वर्ट भारित--त १कर्ष भारता काव -क अया वार्य (लाक प्रायर अष्ट्रवा — उथन जामि य लिए क ६-५६ यांप, त्मशामदक ५८न यांच।

माथारा है। हुँ छ्टांत मानागारन । अटन कमना क्रिक्स हैं करव याम वर्ग नाम (पर्देश तिवर्श मस्यो कर्म कामर् मात्र का बर क हो स ना -- मा क बाब करवा । माज्य बिट्रित कर्णा छात्र्ड अप्त्र धन । उद्ध करम ७८५ - उथन स्पार्यन कथा स्पापानक श्रम । कार्ड ।

हारे कमना स्टब्स्नित कथा हायर वन्ता (कठामनाहे ७' काटक जान करबाक्रन ; (शटक फिरन व्याम्नान প्रथ अन्नन ननान কিন্তু সে পুরুষ মান্ত্র,— কি ভাবনা তার। ঘণ্টাগুলো ক্রমেই বেশী শোনা ষেত্রে লাগল। मवार्थ किছू वारापन विषय शांत्र ना। कछ हा। द्रापटकत भक्त-का नारका मरा त्राधीन এই छाउँ । जार कि वांधानरे वांधा व्याहि व्यागया। शत (त्र!

कमणा यथन अम्भि करत शुक्रायत छ्य-ञ्चित्रशास्त्रका जारमञ्ज कीवरनन इःथ कर्छन कमना एका हमरक एकर जिल्ला केर्व मरम र जोन कत्रत - ७ थन र मथ्रान, श्रुरत्र ८५ वर्ष, — देक, जिन ७ व्यारमन नि। भाष्ट्रत उभन्न मनी अस्म माफ्रिक्ट्रिक्ट्—जात अमा—मामि कि यभन स्वयम् मा कि १

कांना टांची जात्र मिरक, जात जान टांन टार्थन छीक्न मुष्टि मिर्य शुकूर्वन এक पिक (भरक আর-একদিক পর্যাম সে কি ষেন খুঁজে (बफ़ाइक प्रांत्य क्रिक्स थाँक जामहरू, ज्यात्र कमणात्र अकट्टिश (मात्र श्रामा ना — এই मञ्चारमञ्ज (मामज (मग्र ५ ५८म८५ (य ক ৩ক্ষণে তার শবদা কলের উপর ভেসে ાં હેંગ્ર

व मना, जिस अवाम वक्त करत हुन्हीं करत वटम करेगा भना किन्नक शासक असक করে বলে,—এভ শাগুগির ভাসবে ন ,— काल मकार फुरल एका अटब (अटम ऐर्ट्स्ट्र ४८१, वाचा।

टार गूर्न अकिं। कुटांगन क्रांग कुटिं पेठ्टमा या त्मरथ यम छ छो। दक इत्र। कमना न्या निष्ठत क्रिक्ट (भाषक्र न काका शह पुरक (कल्टन ।

टारिश्टला। र्नामवटमत्र भट्धा वाचि (लाकात्रा मकान यागमनो विक्र यात्र शत्रह स्रक कात्र मिट्या।

कनणा - श्रक्त कृद्य - श्रूरणार्शित्र व्याः । व्याः । व्याः गटम वर्षेण। भना वाधी ५८न दशन। भार्क

(यम এक भाष्ठभधूत माग्रा बहना करत ক্মলার চোথের উপর ভন্তার একটা পাৎলা नका ८ है ।

क ज महे वाँभ-वन-जिम्न करबहे ज वरम मजीम है। वनार जिल हुटी निरम व्योहि!

ত্রনিবার আবেগ তার সমস্ত জ্লয়-মনকে निर्मन्न शीफ्टन मथिङ करत्र (यन छाउ मग करब (मग्र कात्र कि! जात्र छहे (हाथ (कटडे व्यक्त कारण वाता वर्ष (श्रम ।

20

मजीन य खिल डिर्छाइन मिने अकहे। পাধা প্যাদেঞ্জার। অর্থাৎ ভার গভির চেয়ে কালেক্টরটি হিন্দুস্থানী। স্থিতি বেশী, আর চলার মুথে সে কাউকে, बद्ध भारमत मड, जानामत जायहरूमा मिथिएस **চলে यात्र ना। এই महत-গতি গাড়ীখানার** মধ্যে তার বেগবান মনটা বাঁচার-পোরা পাথীর মতই সমস্ত দিন ছট্-ফট্ করতে मार्ग ।

তুপুরের কড়া রোদে গাড়ীখানা থাম্লে —আছে৷ তবে আসুন—বলে সতীশ ভার ভিতরে আর থাকা যায় না : প্লাট-क्तरमञ ভीषण द्यान— এম্নি করতে করতে ८मरम ८×१४-८वनाय ८मार्गलानतारे o **अट**म गाड़ीथाना একেবারেই দাঁড়িরে গেল। महीम **टमशाटन कमर्यात्र करत्र निरम्र झाउक्राय्य भाग्रहा**त्रि করে বেড়াভে লাগুল।

अधिककात्र क्षाठेक्ट्यं शाष्ट्रीयाना अप्न गांगण-- छ। एथरक कं उत्नांक भिन्भिन् करत्र মেরের। এই গরমেও লাল নীল সবুজ রডের 'जाभाव भारम मिरम डाएमस मास्ता रामा कत्रद्वन-किन गर्दा थान जात्म त्रनम्बर्भ হয়ে উঠেচে, যেন ওটাগত আৰু!

এक छन विधव। इटि अम मजीमदक एएक जिल्हाम कराणन—वावा, এই गाफीशाना कि वर्षमान वादव ?

धक्यांना त्मरक अक्राम शाफ़ीरक हरफ़ वमरम्न **भ्यार्गिय धक्लन कार्ला छेन्नि-भन्ना हिकि**ह कारमक्तात अरम रमहे शाफ़ी एथरक विष्ठातारक त्नरम रगर्छ नरहा। विभवा जरत्र काव्यत—वावा এक दकारन 'खिंड्युड़ि हरम वरम हरम याच--थाक्टल माश्र—नाम्टनई गाफी (इटफ त्नर्व।

(कें कांक्त्र कथा त्यात्य ना ; धिकिं

সতীশ গিয়ে বলে—মা, আপনি অন্ত গাড়ীতে যান—এটা তনো ভাডার গাড়ী।

विधवाषि त्यस्य १८७ वटलम,—वादा, ভোমার গাড়ীতে আমাকে বসিয়ে নেও। না कानि शथ-षाठे, रफ़ विभाग भटफ्रे शक्या द्वितिस्मिष्टि।

তাড়াভাড়ি চল্ভে লাগল—আর দেরী নেই; গাড়ী ছেডে দিলে বুঝি !

गाफीं। नए छे एउरे माम्रान्य এकथाना গাড়ীর দোর খুলে বিধবাটিকে ভূলে मिश्र সতীশ সেই গাড়ীতেই উঠে পড়ল।

এই विभवािक वयम आय ठिझाम। बरहा এक नगरत उज्जान हिन ; किन्न इः १४-कर्ष्ट ष्यांत्र (म (कह्मा (नरे। हुन এक दिन भारक नि किछ (छाउँ करत छाउँ। क्रांत नारक इ डिश्र मील डिव्हित मात्र।

ছুটোছুটির উত্তেজনার দরুণ উদ্বেগটা करम आलाहे जिलि यहान, जुनि दकाशाम बाद्य, वावा ?

महील वरहा,—चामिश्व वर्षमारनरे नामव, তারপর আমাকে জগদাশপুর যেতে হবে— **८म** ८वनी पूर नम्।

विश्वा बद्धान, -- जनमी नश्र १ जाहा। मत्न कद्राटा इश् इस । आभात मूत-मन्मर्कत् এक मानी पारकन म्हिप्ट प्रज्ञ — कि क्षिडि हाम (अन बारा—काबानी (वो गांगीत करछ। तो मांगी, खनिह, जांत वारणत वाफोत दमस्भव कमिनादबर ८७१ नव मटन ८ निवरत (शट्छ — बर्चे कथा छान् मानित्र (५०) এटकवादत दमाछा-कष्ण निद्य दकार्थात्र ध नि-डेप्फम---शंब, शंब, मानीत केलाण धरबरहां धमन (वर्ष)—श्रीन ना कि शान्ध्य काणाग्र शीं हम" है। कांत्र हार् दि क्य क, — गव कला कि निर्म ५८म ८१८७। श्रीष्ट भन श्रुक्षत । कि ভাগই य बाम् ७ (हैं। इं। दो दो इं। इंक ভাহ বाण वादा, ज्ञाभुटल कि भ द्रशत जीनवामात्र भाग ? जार्थ वर्ष (कर्व ६५८व कुर एक बदम रमिश रवी हूँ। ५म नाकि कामायाना क्रभ : त्राक् ना त्कन क्रभ---खारणा (क्रम अभन ८ छत्र-८ छत्र (मर्थ गर्फागिक याटकर - (क भीटिए। त्नाका कथा वावा, भीठमा ठाका माइटन १

পরচুল-পরা নিজের ছবি বেমন আনিতে দেখে কিছুতেই হাসি সামলানে। যায় না, সভাশের অবস্থা ঠিক ভেমনি হলো—তার নিজের এই আতরঞ্জিত কাহিনী শুনে। এই দ্র-সম্পকের আত্মীয়ার সব-চেয়ে বাথা বেশী ঐ পাঁচশ' টাকাব চাক্রিটিব জল্পে। সভাশ মনে মনে হেসে বল্লে,—গাঁধিজীব নন্-কোঅপারেশন্ বাংলায় চলা শক্ত। কি চাক্রিপ্রিয়তা আবাল বৃদ্ধ-বনিতার!

সতীশ বল্লে,—আপনি থাকেন কাশীতে, —এত থপর আপনাদের কাছে পৌছল কিকরে?

विश्वां अकट्टे दश्य यखन,—वावां,विरम्दन থেকে আপনাব জনের জন্তে কভ বে মন হাঁক-পাক করে— গ ভোমনা বোঝ না প্রশ্ব-মাত্ররা। ভা ছাডা—আরো একটু কারপ্ত ष्पाटहा ष्यामाय मानी है के त्यी-इ फिटक वतान्त्रहे छ्'ठएक (मथ् एक भाद्र क्र ना। कांद्र **ब्हिट वर्ष कात्र** अविधि (व दिनवात हेटक्ट ७ छै। त हिल-कामात लिम् ३८७१ नेन एकत এक दमरमम সঙ্গে কথাবাতা - অনেকটা এগিয়েছিল; কিছ शक् (म मद कथ।---(म श्रामक (नहें, (म कारमाशां ९ ० । ८म (मरम्हित ८५ कम्रज वाम् । भाष भाष हा बाद । - मुडी न बहे कशांकरमा ८वम मात्र निट्ड भार्ताङ्क, छात्र भारत रम भरत भरत ऋत कान्छ रय, कमना **ज्याम खालाद वाद्रीर काव मारक है कथाया** र ४८०।

বিধবা তাব বেশীক্ষণ জেগে থাকৃতে
পারলেন না—একটি কোণে কুকুর-কুগুলি

গমে গুমে প চলেন। রাতটা ক্রমেই ঠাগুল

হস্তমতে সমস্ত দিনেব হায়রানির পর ঘুমটা
ভালই হলো—ভার উপর আবার আগের
রাভটা একেবারেই অনিজ্ঞায় কেটেছে।

भकारम मधुभूदत এरम शाफ़ी माँफारकहे रम त्वाम भए डिमाइ-डेमार इ-काम हा स्वरम मरोत्रहारक धारक निरम धारमा। विश्वा रेग्छनार्थत भाषात कारक किछू निम्मामा चात्र लामाम भिंफा मश्ख्रह करन निरमन। गाफ़ीरक लामाम-छक्कनहा रेग्यवाधरमा नास्य मा— धारम्था भाषा व्यानकशांत्र करन्न छन्दिस मिरम।

গাড়ীটার বর্জমানে এসে ঠিক বেলা চারটের সমর পৌছবাব কথা; কিছ কি একটা কারণে আসান্সোলে খণ্টা-ছই দেরী



स्टब राग-छोरे अद्भवादत अगन्नारक अरम वर्गन वर्गन कर्ष सक्य अरे विठानान उगन शाफ़ी वर्षमारन (भीहन।

সতীশ সম্বাতিশীর কোন থোঁজ-ধ্বর ना निष्म महान এक हो कू निम्न मदम वाफ़ी त्र थना इस्त भएन।

পথ অভিক্রম কবে যভই বাড়ীর দিকে আসে, ততই যেন তার মনটা উদ্বেগে পূর্ণ হয়ে **डिठ** एक गांग्ण। यात्र व्यक्ष-ित्र (क्या) **णार्**छन ? **बाक्**रिंग, रम निन्छ स्र सार्वा त्रियां— फ्-**চার দিন নেটিয়ে ভাল হ্**য়ে উঠ**্ৰ** । ভার পর ভার কমলার কথা মনে হলো।

ट्योटक यमि या वाफ़ीटक कायगा मा मिटा मूत्र करत्र रमन! ना—जां कि इश्व श व्यामादव ना जानिए। जारेज, जामि छिनुम दर्भाषा ! हेम्, जाई छ कि जुनहे करति। (ह हित-হে মা ছর্মা-এমন যেন না হয়।

आमित्र मध्या यथन तम हक्का, उथन दि त्रांक रुप्तरहा कांक्रत मरक रमशा रुपाः मक मगर कार तक। मजीन छ्री-नाम कर করতে করতে এদে ভূপেন-ডাক্তারে: फिन्ट भन्माबित कार्ट माफिट्स दमश्र मा ডাক্তার নেই, কম্পাউগ্রার একটা ভাঙা বেথে यम এकथाना याःना कागल शूल भएट ।

मडीम ८५६८म वट्स,—७८६ निर्छाहे, ডাক্তার কোথার ?

— चारक छिनि এইমাত্র একটা কণে। द्वित्रिय शामन।...चार्थान करव अद्यान । भत्रकांत्र चार्ट्स नांकि ? किरत এल পांहिर। LTYT

ভূপেন ডাক্তার কলে ঘান্নি—তিনি बाफ़ी शिरबिहिलन—कि ह मिछा वना निरम्भ क्ति— त्रव नमरब्रेट किनि करण यान धेरे वानिक विद्याम कवाब भव जावांत्र त्र

किंग।

नजील यहा,--ना, मा चारहन टकमन, कारना कि हु ?

— আজে তাঁর ত কুইনাইন চলচে।

मठीम धक है मैं। ज़िस्त है उन्न करत विशिष्य शिन्।

বাভাব সামনে এসে ভার বুকেব মধ্যটা थएंम् थडाम् कर ७ गांश म ।

কুলিটা হাঁকাহাঁকি করতে স্বয়ং তুর্গামণি **এमে भारत धुरण मिर्ड मांग्रम कृष मिथ्र**न रियम कर्ड (हर्म शांक, (स्मान कर्ड्ड (हर्म ब्रहेर्यन - जावशत शाष्ट्रमाछे करब (कैरम छे हिन्।

महोष छै। क निवय करत वाष्ट्रीय मधा निट्य शिद्य कुणि विषाय करोन भव छात বিনিয়ে বিশিয়ে কালা শুনে উপশক্তি করলে— त्य कांगनाशिनी अमिहिल कांत्र ठिकार करत বাপের বাড়ী চলে গেছে: ভিনি ভাকে विधिमारक ठाव वरमवा करत्रिक्षन क्य

मठाम एकान कथा ना करत्र वांड़ी त्थरक थोटब भोटब नांब रूट्य कानिगांत अथ धटब **हना** नाग्न।

ममश्र मिन जान (नहें, व्यादांत्र (नहें---कांत्र भारमञ्ज्ञ क्लाम ममञ्ज भृषियोगं रयन वेन्ट मात्र् जिन् उत् ९ ८म ठम्ट — हम्ट — हम्ट ।

छक मार्केन मरशा निरम त्यरक त्यरक তাব আর পা চলে না। একটা উচু আলের উপব বদে পড়ে সে কালিগাঁর দীর্ঘ পথের ांमरक एएएस सहेग- এই পথ তাকে অভিক্রম क त्र ७ वे व्रव — त्यमन करत व्य !

हना कि खात्र उहना यात्र ना जनवान्। णा (य जांत्री भाषत्र रूपा উঠেচে !

একটা ছোট নিমগাছের ভলায় গে চলতে লাগল। वरम भड़ता। ठांत्रिमिटक ठाँरान्द्र बारगुर कूछ्-मृष्ट हंग्रेस छात्र मूथ थ्यरक वांत्र रूप्त भड़त---क्राठ-वात नाग्रन वृध् व्यक्तान अथ। मठीम रक वात ७ १ कमना। চোথ বুজে একটু বিশ্রাম করে আবাণ উঠতে শে স্বর শুনে সেই পথের গুলার উপর গিয়ে দেশে—কে ঐ পথের উপর দিয়ে এশ্ত চক্ষের পলকে কমলা মুচ্ছিত হয়ে পড়ে গেল। भर्म कुटि हरनार १ (सरस्याक्ष, मा १

শুক্নো পাতা থডমড় বডমড় করে উঠতেই অঞ্র সাগর উচ্চাসিত হয়ে উঠ্ল। ध्यदम्ि भरवंत्र धादत्र निम्हत्न सारक्त्र भिष्ट्त न्किया भएन।

मङीम हुभ करत्र माँ डिएय त्रहेग। थानिक পরে মেয়েটি আবার বেরিমে ভাড়াভাড়ি

क्षांव निम्भामा (मरुथानि निटकत कारणत ভাড়াভাড়ি উঠে দাড়াভেই কতকগুলো ' উপর টেনে নিতে নিতে দভাশের ছুচ চোথে

> (ক্রেমশঃ)* क्रीयुटब्रम्माच भटकाभाषाव ।

मूग्जी नमी

घूरत घुरत पुम्छी हरन, रूम्ब्री छोरन रहछ र्छारन! दिन्-हार्यानत हुम्कि हुरन, भूरेनन राख्यात्र काथ् रहारन। कूफ, क्-भाथीत छेन्द्र इत्य धूम खार्छ जात्र, मिन कार्छ, कार्षि-त्मादश्च-भाषिक-भाभा-युक्ष्विष्यत कन्मादि ! मत्नत्र कृत्न ७ विद्य भागा मन्द्र जादन मान्द्रिय यात्र, ভিভি-ফুলের কনক-জবা ভার নিক্ষে যাচিয়ে ধার। र्मिक (छि थात्र ठाहारत जानत्म इह ठाउ छात्र, भुएका-काण भाषाद कृष्णत किक्न ठाक कृत्वती। শিশির আদে নীল আকাশে বকাঞ ফুলের বক-ধবজা,---উড়িরে ঘোষে ফুল্-মুলুকের নিত্যাদনের নওরোজা ! ममाद्रांक मर्थ-एकरच, क्ला-क्रांच এककारे अ--(थणाचरत्रत्र थाम्-(गणारभत्र क्रम्म वाद्या-(त्राम्नाहेकः। चूद्र चूद्र चूम्डी ह्टा विम्विमित्र मञ्दर, मिटनत আলোর कुल्किश्रीण दुक कुट्ड তার সম্ভরে।

^{*} जागामी मरबाम क्वयक—कीमरबाद्यमांच गर्छ।

যুদ্পাডানি খুদ্তা নদী যুদিয়ে কি তুই পথ চলিস্,
যুদের ঘোরে গুরিস্ গুধুই অপন-পুরীর বোল্ বলিস্।
ছই কিনারার ফুলের ফসল, পর্বে শাডী ফুল-পেড়ে,
আনের ছারা নিমের ছারা এডিয়ে আবে যাস্ বেড়ে;
বসস্তে ভোর ভাইনে বাঁয়ে ফুলের ধুলোট, ফুলের বান,
মগজ ভরে মন কবে ভোর সাভ-আভরের ঐকভান!
ছুলুম হারু কর্লে নিদাঘ আঙরা ঝুরো ছুটিয়ে লু
শিরীষ চাঁপার অঞ্চলিতে ছিস্ তেকে তুই ভার চিলু।
কাজ রা ষখন গায় মেয়েরা, বাদল-মেঘে থির কাজল,
আচল কেয়াব পরাগ মেথে তুহ হ'য়ে যাস কেওড়া জল।
থোসবায়ে ভোর খুদীর হাওয়া সোঁতেব পিচন সঞ্চরে,
ফুলগুলো ধায় ফড়িং হ'য়ে উঙল্-ফুলের ক্পে ধ'য়ে!
খুরে খুরে খুম্ঙা চলিস্ ঝুম্কো ফুলের বন দিয়ে,
চেউ ঝিলিকে মালিক জেলে চাঁদের নয়ন নান্চয়ে।

সঙ্গীতে ভোর তৈত্রী শরীক বজ-বীণার বজিণী! कान-शंकित शंकिन-शार्मित कुछै (य विद्र-स्थिमी। क्षांगरक जुरं कत्रिम् कवि, व ब्रज्रात यन हमदकात्र, নুপুর পায়ে চালস্ মুছ ছলিয়ে কনক-চন্দ্রহার। স্কৃতানেদেৰ স্থাতানা ওুই, নবাব-বেগম, গ্লাজ-বাণী, অঞ্চরা তুই উর্বাশী ভুই চার যুগই তোর প্রেমবাণা ! ছুই হাতে তোর ডালিম-আনার, ভট্টা-জনার ছড়িরে যাস্, অড্य-চানার মাঝখানে তোর যোজন-জোড়া ফুলের চাষ। मम्बिट्स टकांत्र हिटबंब दममा, मन्सिट्स दणांत्र हन्सना, शिक् कार्टजी-मधना भिरण शांत्र दकामाति वन्तना । व्यानत्म नौगक्षे भाषी त्वष्टांत्र উट्ट (जात जीद्र), माभ्याखाटक हम्दक मिरम हिंहरम एठ जिल्हिन । ফল-ক্ষেতে আর ফুল-খামারে শভাচিলের আন্তানা মুখ-চোখে ঠিক ফুল-বিলাসী স্থলতানেরি ভাবধানা। খুরে খুরে আস্ছে ভারা, ভাস্ছে ফুলের মুথ চেয়ে, पुरत पूर्व पूर्वी हरण पूर्य-निसूर्यत शान रशरत ॥

शिमरहासमाथ सह।

मकलन

বিলাতের পত্র

अगुक्तांबर जामारमन होतावाम। विकेशांक्षी "मज जिल्म इश्वक मम्द्रांसन उन्हों मण निरंदन भाग कांक कोल लखरमंत्र छोखरमय (कम्प्रश्नेष्ठ करत्र में। प्रिरंग्रेष्ठ । भारतित्र भाषाचारन कार्र भाषा: क्षेत्र वाजुरक के निमामि मि कटलक, जात अन वाणुर दि म् कालम , अ काका कारता करनक विकास आहमन वह व्यक्तान कारद्र। मालन विश्वविद्यानस्त्र । वस्त्र काळ ५३ ना छ। श वामा क्रन बाकि। भौतिम रममन निमार्थिएन भार्याक्टमाय माहिम एकांग्राहिटान मान, व्यटमार मान का जन म्हार द्वापान होते एक मान का स्ट्रिय 不可 गाउँ इ शहें बार का शांकभी ए अक्षेत्र (यूम मा विहि মিউজিয়ম আমার ধর থোক দেব। গায়। বাট । মিশ विश्वराधिक विश्वराज्य व्यानिक विश्व विश्व विश्वराज्य व्याप्त कारनक क्रोन्नांत अशामा चत्र नरसरक महत्वार ज कामि कर्ता महस्र पृत माउँच क्लि। १०० । पाक मधन विष्यितिष्ठा का अधिरत् अस्न जिदिन । भगकाराभव आधान वादी क'रा नमायांच वर्षाख नाकि शर्ष . टा इरम स भाउनि भूरवाभूति केविलानित रहामान वमान रुद्रि योग कि ७ ८म ८वा ४ इम्र महत्र कर्षा

कांभारतत लाजांगारम आमत्र। काहि भाग श्रेत्रलाहिम खन (कृत्या। जामि धका जान नाभी। याको नव नीना (परनंत्र । देशद्रक व्यवण (वनी । एक सन गमनी - कर्ष है शिष्टीन,--- এककान औक, सम मा एक नमानी यान, खन किन गावियान, को कोए। आटक यात्रामी, उद्योगियान, सूरेम, क्या आहा मवाके छात्र।

পওনের থোডিং হাউস-এ ভিন্মাস কাটালুম। (मथनूम (च (वांडि॰ अफिन अर Cbtय अयारन (मधराद भागवात ऋरवात ध्वनी। अक खग्राहे, १म, मो, a, विकित्यमम् क्रांव काटक जाटक दमभारत दमरमञ्जा जातम । * करमटकत्र छाजी (यनीत छान एशांत छ्र'मिन करत्र नात क्य-धार्मात्वत रहोम्टिकंत्र छोट्यता खटनटकं योग्र। अत्री व्यामात्र अकिन नित्र यात्र, छात्र शत अल्ब मत्न त्थरक मांटम मांटम मारी कर क्रांत्व जांत्र माटक्त

भविष्ठाम् अस्तिम । भाष्ट्रिक

त्राष्ट्रिक का की यान भूनमा प्रकार कराइ का कार्या, उन टार- याम थून एमघर भार्ट मा ला कामा करा। मल्यान न्नीहून्म द्राम्न्य भारत्य नाच नाड ारिक्टेंचर मधुम्र भाष । जाम मा महरून जानमनहा • दश किन नयके अरूब अरूब कारम कारम कारम कारम ष्यायापत्र कारोक का १८० विश्वत मरुया हो मणीचे ८न८म (अभ कामना क विसे कार्का कार्य विशेष रिजाणाव दमभात लाल है। जान कि एटलेन्नीय हिला भी शिंदिक हिक्सिंड आई शक केली ने गर श्रेसी अका क्षिभारत सम्बद्ध किरल नां, वर्ग भा पत्रा (१६) खाइन अन्या ८४। यथन्त द्वादक शाका १० व । পরের দিন কভনে পৌছুল গামাদের কাঠাজ, মহা एँ दनाइ व दन मामानद । वैत्य म मान दनन वकानन कुनिद्र निरम छेपरेन छे नूम खांजा (अख स्मर्फ व्याप्ट प्याप प्लाम । अकिं धार्य अपन व्यामकांत्र केंग्र नहेंद्रा मिल्ल— ভৌধন ব্যাপাৰ। বেল খ্রাণক, ভবানক পোলমাল गायरव। महकायी (माक श्रद्ध लागारक भागरणाई (मार्थ (अल मरन र'ल এवाइ स्वाक करवा गांक राखांद भारुल जारम नाक्टनंत्र त्यारांन द्राक्षिय धत्रक्त चादन कांडिएक शिद्य छात्री वित्रक्ति धटन दशका। जात्मरकन्न बाष्णीय रङन मोका जात नक नित्र नम, भन भरा कुर्ति ए हिटल (श्रम । ६८० कांग्रेज़) यात्रा श एक विष्युप कारमञ्ज त्यकाकान व्याप्त व्याप्त कार्या व्याप्त । व्याप्त व्याप्त । व्याप्त व्याप्त । কতকণ্ডাল ভারতবাসী ছাত্র, আর কতক্তালি ইংবেজ। वाखर्गदा त्य क'कन किल्म, कि कश्र थात्र शहामने जीनिएक मांशसून। एडिवा नाभरम स्थन खराब रश ड भोत्रया कि नो मत्मार फिल : ८वन ७'म्ट नो, द्वीम आंत्र योग्छ नांकि वचा र'रत्राष्ट्र वा र'न व'रल लांना रयर ह नांभन। তার উপর দালা কেসাদের ভয়। ক'দিনে ব্যাপায়

मिष्ठित्व को क्षांना बाटक नाः प्र'वान्तित एकात्र धादत कार्कारक योजावादमञ्ज शत्र कांत्र शांक्टवां ना क्रिक कत्रम् । कार्राख्य এक है १८ तक (महित्क फिलामा क्रज्यूम--"কিছে, ব্যাপার বি রকমণ বলি চুনি ডাকাচ मात्रामाति इति ना ट्या १ (भाष्टे वन्द्रत, "मार्गमाति Co गांगांश कथा, (त्र मिन है। व जामा शार कथा भरत रे'ल में। यह य-- (६८ल मानुरे। (म.ए. टक अकट्टि कामज खार विश्वासन - "किय द्याम इस देशद्रक-कुणी मुख्याहे यद क'त्रस्मध नित्रीह विगमनीत नार्य हाल कुल्ट्य न'"— देश्टराक्ष कुलीत रेनिड्य जिस्मर्थ वसुत्र ভাদীম বিশাস। মেট্নি হ'ছে একটা আনকোবা (मानाविष्ठे : ८म १को छेदमाहिए ३'एव र'नाव, 'नुष शिष्ठं , ह्रिन्डांगिरिङ— এ তে। आक्षांत्र जनलाटक नामाञ्च क'ग्रह। जाभाग जात्र जाग्र मह ग्रीत लाकरक शहिद्य नाबर्ध, छात्र जागारमंत्र भाषात्र धाम পাথ। ক'ল বোজকান করা ক ১ - আমাদের হক-मुख ८०८क ८कटः निरम वाव्यानी कन्नरः। देशकारण व सान- मध्य भागतां, जामना किंद्र काचा का भागता भ'रत्र (नर्डे।" टा ८५। इ'टा; व्यामग्रा अथन कर्व कि १ म-वम्टन-"ए। ८०. गम्स (भारत कि भारते। कृत्व भूष्म व्यान स्वरूप न ज्ञास्त्र माख, कृतांत्र मिन यहिंग नरा—त्यां व छे अब भारकत औषि। कि छ छि – िक कंबरणन ভिनि जात्र थाकरवन ना— जिनि दर्वात्रस शफ़रवन, आन यांक वा शंक्। कांत्रण रमत्रा रू'रल दीत्र करणांक छर्छि रूख्या रूप्य ना, दिन एएएव याद्य । छात्र **এই छोरन भन खरन य—ब्ला**त आमि नहां छेरमांक कन्नर ठ जांगज्ञ। जि-for ever! कुरन कावकत्व करज्ञ, গ্ৰেভদেও থেকে যদি ট্ৰাম কি বাস্ মেলে ভো ভাতে क'रत, मग्न (याष्ट्रेत काष्ट्रा क'रत काश्वरम यात्रा ठिक रू'न। जिल्ला काम्मानोत लाक छिन बादारस—मन छ।ती भाग द्वांक शक्ष जात कारह मत्न मिनूम—आंत्र मखार्थात्वरकत्र यङ कांभप्रहाभक् बात्र प्रकारी জি'নস একটা মন্ত কিট-ব্যাগ ছিল ভাতে পুরে নিসুম। ভার পর আমাদের তিন মুখিবে ভাঙায় নামিয়ে দেবে, 'अभन त्नरह जाएक त्कान् नाश' तमथटक मानमूम। अक तोकाखनां खूटि राग ; सम शिहू गांड निनिष् ह'

পেন্স নিয়ে আমাদের গ্রেভ সেতের জেটিতে ভূলে দিলে। লোকায় ওঠবার সময় আমাদের এই 'নিরান্দেশ যাত্রা' (पर्याट एएए एवं दिलाइ मर यह महरानी मात्र करत वक् प — किंहिरय वक्टलन 'कारा, नखरम . (शा. क व्यामारम् एकार्टवव नानका करना।' र पछत्मरक फिट्रे ल्यम्भूभ, द्वांय व्यात वान छ ल्हाः । चायात किह-य।। शता किल वियम छ। ता, (यती (यदक वा: मन कोह खाविध (निष्ठी व'त्य निष्य या अग्री निक विशेष क'रा ; अभन ममार्थ धक जांबान (छोन ता वटम ब'ल्टम, ५१० हाराnoi, shall I cury it for your frostal क'तामुम, ताम अविध (लीटक क्रिटन क्रम न्यान । व'न्यान -one into कार्याए- वक मिनिए। जान कारक वारिशिद्ये किरस आविष्टिमंत्र निक्ष्यांन एक्टक् वेष्टिश्रम । এक-काम युक्त त्यादित । को एक किस्कामा के दे द्व (काटन निस्म, वाम क'रब (भरक करव एडिएबाफ नार्वाच, नावभग खार्रिकाटक द्वाम धारत दिनिका, छो १६ १ भरत औतिका, खानात्र राजार मानाय नामाय नामाय मानाय मानाय कायना किना म वात्मन भाष ४५ मुगा । या नियान मार्थ रफर्नारमञ्ज । कान । जन । किछ मकरन र भूरथरं अक्टो मञ्चल लाग---भराष्ट्रे लागकांत्र मरण कि मिलात जात्रहे अरलाम क्यरहा बारम हरू त्यन अवर् ण्यमा र'न। बाह्मांत्र कथा न'क्हि. मामान जक के "रवस व'रमोधल, (म शिश काम बाहा व'रत त्यानवात तिष्टे। त्यांकिं। अकी यन काल कम-तृत्रः युव त्यापी त्रकांता हेक्डेंत्क बाह्य, चारक मृत्य नाल नित्रा (पथा घाटक, भा त्था क त्यन तक तकति भाष्यांत मक--- शंदर्श त्रल कर्गाहेदश्य दर्शकारम है। दिस स्राथा मार्टमत्र गर्छ। थाँगक भेरत चार् वितिरत किछाम। क'तरल-'कि ভाষায় कथा क'छ ? আমি ইভিয়া গিয়োহপুম, কিন্ত এতো হিণ্ডস্ট্যানি নয়।' আমি य'लाजूग 'এ इ'एक वांख्यां, जूगि रिम्मूक्षानी खांता ?" Coll नहा व'नटल—'टिनेशा माटनाम— वर्षाद "ट्यांडा मानूम।" हार्रेमशोराएम नांकि एम और रहत हिन এक इक्षिनियारतत अधीरन कूणीत नर्काती कारक। त्यांकि त्वण ভार मासूब त्वाब र'ल- लखरन याचात्र नथ जामा-(भव मव युविदय भिटक जानेज। वामू (ছएए मिरज)

প্রথম বিলেভের মাটার উপর দিয়ে আমাদের এই ছবিভেও তোঠিক এমনিটিই দেখিছি। বাস ছুট্ছে अशांव। व- এक है खात्क भारतः विक्र শেষটা সভিত্ত আমরা বিলেভে পৌছেচি! বিলেভের রাম্ভা দিয়ে থাকিছে৷ বেন এই চিন্তা তাকে একট্র व्यक्षिक करत स्वतः। जिन्धान्क अर्थे धात्र धारत , है राजकति । होराम ज्वता। आमना जिन ,कारत। না, যাকে stolid common sense-ওয়ালা লোক वरण, ७ छ। इ: वाम हमह्ह-भरनद्या कृष्णि वा छित्रिम শিলিঙ ধরত করে লগুন অবধি, মোটর ট্যাক্সি ভাড়া कत्र इ'न मा-मिलिए भारनरकत गरधाई मन इ'रब যাবে—এই চিস্তায় সে একটু বেশ প্রীতি অমুভব ক'রড়ে भारत र'ल। द्राखात प्रधारत पत-यांछी, वांशान, शथ-চলভি লোক, গাড়ী, गোটর;—সনে হ'য়েছিল এ সব আমার কাছে কতই না জানি আশ্চেয়া লাগবে—কিন্তু ও इति ! এ यে দেখি সবাই আমার, চেনা ! বিলেভে व्यागनात जारण केश्टबिस श्राटक, नटकल श्राटक, हित रमरथ अर्थानकात्र त्याककन पत्र-वाड़ी द्रीकि-मोकित मत्य व्यामा-দের আগেই একটা পরিচয় হ'লে যায়—আমরা অনেক किनिम (यन (पथरात क्या) टिजी इ'राई आमि— মুতরাং নতুনত তেমন থাকে না। আমার মনে হয়, यथन अथम कलकी जांत्र यहित्व भूती कि कानी यहि, या হরিছারে আর মুস্রীতে হিমালয় দেখি তথন বেন नवीन-पर्णातन भूलक जात्र दनी इर्ह्मा भूतीत मगुटलब धांब, भन्मित्र, मांना कांटलत त्वादकत मगाश्रम. श्रामीय क्वांकरम्ब मन स्मरकरल वाखी ; काभीव भाषरबत मत चाँछ, मझ मझ गिल, एएना गाँद र एउदा नथ नांदक পশ্চিমে মেয়ে; হরিয়ারে গঙ্গার অপূর্ব্য শোভা—দুরে श्यिक्त वदक, वस्मन्-त्यालाद शाहास, शाह-शाला आंत्र गंभा मित्न त्य षापूर्व मोन्स्यात्र गृष्टि कात्रह — এ मद्द रचन এक है। अख्यों और विस् यात्रांत्र कार्यात्र माम्दन चूटल मिटमहिल—छ। एक मनलान क्रक व्यनिर्विहनी क्र রসে ভয়ে উঠ ত। কিন্তু লণ্ডনের শহরতলীর দব যেন অতি common-place—ধূলি-ধুদরিত, এমন কি কর্ম্যা मान इंटिंड जाश्या। भर्येडमी मिर्स गर्थन एक-मूम--- त्रात्मत देशन देशक देशक विकास के में में किया के में **इंडिक काकिकुठ इ'रम भ**ड़ा बन्नाट**ड बहुन ना। म**रन इ'न, এ তো कमकाात्र छात स्वक् िणात्र भव

कारने नाम निरम श्राउमा स्मा-भा करत्र योख्ड, टमहिंगिहे या अकर्रे मकून मान्स ।

फात्रहेटकाट याम वनटम द्वारम त्वरक रू'ल। मभी वामभी याञ्चिः; च-- এव कोजुकविकादिक क्या, कामपुनन चारिश काहारकान लाखन कींहे। आन यन সম্ভব আমাদের পোষাক (আমি পরে ছিলুম এক म् रिन त्याद त्थान् देवान, यात्र अक शक्ष दकारे, बि-त माना भागक, जात्र च-अत भना औं है। (कार्ड-এখানে দেখছি কেউই সাদা পোষাক পায়ে না)--- (मृत्य, ট্রামে এক গালা মেরে-পুরুষ উঠল, তারা আড্চোথে চাইতে লাগ্ড — মুটা ছোট মেয়ে তো হা ক'রে তাকিয়েই রইল। ইংরেজপুস্ব একটু অনাবশাক পাভাগিরি ক'রে নিজের প্রতিও আর সকলের দৃষ্টি আকর্মণ ক'রে कुडार्थ र'न; এकটা कामना थानि र'टि थामका ८हे हिट्स वटल एर्ड ल--- क्यान वास्ट्री, किना, 'यर्' देवर्द्धाः। कारकह शाष्ट्रीत मस्या आंत्र मवाहे तुत्रार्ट्य स्य এই ইংরেজটা মস্ত প্রাচ্যভাষাবিৎ—ত একজন একটু সহ্রমের সঞ্জে তার প্রতি তাকালে। তাতে দে উৎসাহিত হ'য়ে ত্ল-চার মিনিট অন্তর (বোধ হয় মনে মনে कथां अत्वा आछिए नित्य) এकछ। करत करत हिन्दूशनी আগাদের উপর ছাত্তে লাগল—ডেইকে: বচন (८५८४) आत 'मासन भारत त्वेष्ट् वर्त्रा भारत' (मधन শহর্ বহুৎ বড়। শহর্) 'বৌট ভাকানি, বৌট আছেনি, — এই प्रकम अमृना ७था आभारत विरक लोगन। আমার ভারী মজা, লাগ্ছিল; আমি একটু শক্ত हिम्पूर्नीटि डाटक लगा अकरे। कि कथा व'सूप: দেখলুন ব্যাতে পারজে না, একটু ঠোকর থাওয়া ভাবে তাকিয়ে হাস্তে লাগল মাত্র। তাকে খুদী করবার अश्र मागि तगरी ह এकि हिन्तूश्रानी मक अअन क'रन ক'রে বলতে লাগলুম; মেগুলো বুকতে পরে গে विभाष তृथिलाक कत्रद्य। यथन न्याम लाल, ज्यन খুব খাড় নেড়ে 'সালাম' 'দালাম' ক'রে গেল।

डाहिस्माड, डिजिअ, श्रीनिज (डिश्ह स्माड -- गाम कात है। त्म ह' एक वाम स्काट भव कि विष्कु भवत त्म थात्र मुक

cbicog मामदन निरंत 5'रम रचना भव अजीव रमारक-(पत जान-मञ्जूतरनत जम जाया जया चन्छो : यूव (पथलूम---**टमश्रीण दिन जाम जाग जाग है। ब्रेडिंट कर मक्क कि** °দেখা গেল না। ভেপ্ট্ফোভে ট্রাম ছেড়ে বাস धवटक इत्व। এक পাহার। ওয়ালাকে জিজাসা कत्रम्य-माडेथ (कन्मिरिंग् (षट्ड हार्ड,)कान् वादम एए दिश अथन अथारन मत है। य जात वारमत लाहेन এত বেশী যে সংক্ষেপে নশ্বরে উল্লিখিত হয়; কলকাতায়ও হয়ত এই রকম দাঁড়াকে, টাম আর একট্থানি প্রদার माक क्रुंबरम ; त्यमन, क्षीमनीकारतत माइनरक अरकत मार्चन, निग्रामान माहैनरक छ्हेरात माहेन, कामी-षांदित लाईनदक वाद्यांत्र लाईन वला- १३ तकम। भाराबा अयाना व'रन मिटन—यम्क नचरत ह'रज अग्राठीमु (हेमन व्यविध याव; मियादन वाम् वन्दल অসুক নম্বরে চড়ে হাইড্পার্ক কর্ণার; তারপর **टमथाटन आवात वाम वम्टल माछिथ टक्न्मिः हैन। ८७ फेटफारफ** वारम दाई मिन्न-किन्छ वडफ छिए, कामात्र मञ्ज किंदे वाल निरम कामना कता मुक्तिन र्'ल। उपिए एपाउँ (थरक्रे आंगल मधन; ७३, कि ख्यानक ग्राक्ट्र महत्र! এक्वाद्य नकुन व्यापनानी जामता: शथ गाँउ किहूर जानि ना ; त्याज मि७ व्हिएहि मकान अभारताही, अधन चारक लाग जिनहीं; किहू পাওয়া-দাওয়া হয় নি। ক্রমাণত রাভায় পর রাভা मिट्र वान् ह लाइ। अग्राहेक् हिन्द यथन लोहू-न्य, उथन (मधि, वाम वम्दन अश वादम हक्। मुकिल। **ख्यानक छि**छ: **डि**डेव-दिन हम्ह ना, रह दिन हल एक नो, अक्सांज वाम रू'com माथावय cकाटकत षाख्य, कारकारे এक अक वाम् अरम मैछिरिडरे e । b । b • सन टमाक छाट्ड एर्टनात जन्म धाका-धाकि करारक जानजा जामरा चित्र विशास शिष्टमूम: खांत्री गांश भिद्य शका भागमात्ना नाय हन्। वात्मव व्यक्तांना एएएए हे। की एक व्यक्त व्यक्तांना एक व्यक्त ना ; त्मर्य जिनम्बदन दकान्छ जकत्म अक्टो वादन हृत्क পড्जूम। इश्हेष्णाक कर्नाद्य नित्य या त्मथन्म ভাতে বিভীষিকা লাগ্ভে লাগ্ল। কি ভিড়, আর कि वाम ब्यान स्मिटितन स्मोड़। विस्तरमा क'रन

b 20.

रिश्नम्। आवात बार्म हिंद्यात रहे क्रा मख्य नम्। একটা ইংরেজ মহিলা আমাদের রাস্তা-হারিরে-বাবার মত ভাব দেখে বুঝতে পারকোন যে আমরা মতুন काममानी--- काथाय यादवा कान्टि हाइटलन। कांब्र নির্দেশমত একটু পুরে এক যোড়ার গাড়ীর আডড়। त्थाक व-शिरम এक कार्य निरम এन। स्थामना छिन জন তাতে উঠনুম--'পার মহিলাটী বাসের জন্য অপেকা कत्रिक्टन, किनिड ज्ञान अला द्योर छत्र मिरक यात्र मु গুনে তাকে গাড়ীতে তুলে নিলুম। এইরাশে ব্লেলী প্রায় পাঁচটায় ২১ নমর ক্রমওয়েল রোডে ক্রমিনদের व्यागमन। टमशादन सामनान हे जिल्लाम् अरमामिरममदनम रमरक्तिती क्षेत्रको एवक् काबाएमत व्यक्तार्थना कत्ररहान, (मशात्मरे शाकवात वावषा र'ल।

এই तकरम यक्षन (पीडून्स। (शहरम्ख (शक् ক্রমন্তয়েল রোড, এই তিরিশ মাইল আন্দাজ পথ আমরা त्व करत्र अरमिक् कांत्र अक्टो। जन्नेष्ठे ह्रांच भरनद भरमा तरगरक,— এथन लखरनंद्र व्यन्ति कात्रभा पूर्विक, क শহরটার সঙ্গে পরিচয় হচ্ছে, এর উপর একটা কেমন होनल इ'रत्र योटक्ह-किन्छ अई भविहत्र-मटपल अधम मिरनत मर्शनत छान या यासारमत सगरम न'एएएए मिरी किछ योत्र नि--- लाक-जन, नाड़ी चत्र, शिम-त्याष्टितत्र উদ্দান পতি, গাছপালায় আর মেয়েদের পোষাকে রছের থেলা, একটা রাজুনে আর আতি ভয়াবহ, সর্বগ্রাসী, जीदनत्थाङ, धाक्कांधाकि, त्यांकेत्रत्र त्थांपुत्र त्रव, त्यांपुत्र ভড়বড়ি এ সব মিলে মিশে একাকার হ'য়ে ফিউচারিস্ট বা ফিউবারিষ্ট চিত্রকরদের আজগুরি সৃষ্টির মত আব্ছা আবছা ভাবে চোখের সামনে ভাস্ছে।

আমাদের লওনে আসা এই রক্ষ একটু নতুন छार्व रु'ल। अध्य (थरक्रे गछन्य अर्गिएखर न्यामन অনুভব করতে পেরেছি। একটা ভারী অস্থতি বোধ इ'क अल्टान बोखाय वात इ'लाई र मटन इ'क ट्यन कि এकটা ভয়ানক चुनिशारकत्र টান মানুষকে টেনে निया य्यमट होत, यन मध्यन यांडा-कम नवाहरक পিৰে কেলতে চায়। ক্ৰমাগত রান্তা, মাইলের পর महिन, अफूत्रस त्रासा, वर्ष वर्ष वाषी—भा वाषा कत्रस र्ट्सि, क्षांथ वाथा क'बड दमस्य। बाखांब क'म्टि ह'म्टि

খালি বে পা পাটত তা ৰয়, চোখেরও বিরাম ছিল না, ছিরিকে ছ এক জন ভারিক ক'রলেন। জাহাজের বছুবের कानरका मार्कात्र शिक्टल इंड, मनल समर्गन्न कारल निविष्ठे रूप्क भावक ना-नाना विषय काटक होनाहानि ক'রে ব্যক্তিব্যস্ত ক'রে কেল্ভ। পাড়ার্গা থেকে কোন **एट्टिंग्स अरम हिस्सूत्र आ**त्र तक्ष्मादत , किट्ड मिट्न (वांश एवं जांच अभिन क्षेत्र हैं एवं। क्रिंच क्रिंच गर " वब्रमाख क'एव (१९ए६, न्यहर्वेद वर्ष के श्रीहिंह, এখন একে ভালই লাগছে।

ক্রমওয়েল রোডে আমরা পৌছতে আমাদের বাহা-

नामित्र यानवात्र अन्य व जा कछ कष्टी कत्रहित्सन, कि किहुई कवरण भारतन नि । द्वीईरकत सम् मध्य नावान व्यागमानि वद्य र'ल. जामातित्र ८७। क'मिन त्राशहरसन नमाम में अक्षम करत खिनिम मिवांत्र कांव क'त्राम । व्यामीतम्ब adventure-अत्र शास्त्र भारत माहास त्थारक वक्षुना मुक्तिमां करत्र এमে পढ़रनम। किन्न द्वेष्टिक তথন্ত থামে নি।

> শ্রীস্থনী ভিকুমার চট্টোপাধ্যায়। मबुखशक, कार्लिक ५७२१।

কোনো নেতার প্রতি

माल या' वर्कन करत, त्लारक वरण, त्महे आवर्कना; ভাই শিরোধার্য্য হ'ল ও ভাই হ'ল তব উপাৰ্জন প विषमात पत्रकात्र (भरत उक्ष् उक्तिष्टित कर्गा ८९८म शिव अकत्यां इ छ-भू है मिश्टर राज्य । चरमण এकमा माद्र मिर्स्नाष्ट्रण क्रान्त्र मुकुछ এ কি হায় সেই তুমি ? মর্যাদায় রাজার অধিক — ছिन (यह ? এ कि जिकावि आं । ध कि बूर्णभूषे— युष्ठा मचारनय णाशि मचानीय माधना. का थिक्। कौश्रद का निश्री-वार्श भूटि एक रम जातन मालाग्र, आहरू (मृद्व अर्व-(४४ : अठांश (म अर्थाश्वर मान ; ভাটেরা আপ্তক ছুটে, দলে দলে, ক্ষতি নাচ তায়, जुमि य जिएक मरम, এই माना, এই माना। ना नुकाट बक्क हिरू, ना खकाट नव्रत्न थानि, क्षयोग याम- ७ छ। (यट शिरा र'ल व्यामानी।

वीगरणास्त्राथ पछ।

চয়ন

পর্রার ফোটো

रथारत्व এ-कथा सन्दा (५८भ अफ़िर्म अफ़्रिय। वाकाय-- अमन कि कारि। (अनार ५७ वाशिक কিন্ধ বিলাণ থেকে স্থান জাখার কথান नामिथमा भूभिरत्व म रूप ह उद्योत (नारु अवार भोकांद्रा (संवर्गक गार्मंत्र गांका, कांद्रा भवाक निवास मार्गार वर्गा अंगरेन मंतर अंगरेन ।

भन्नोत्र क्यारिताचाक।—व्यक्ति वक्त विकास व्यक्ति कार्यात कार्य कार्यात कार्या कानाम्रमा ,

एक श्रांगनीरक क्यानिर्द्धतिन (य, मदल वाश्विक. এ-मव कथा विश्वांभरयांशा नम्र। देनमद्वर भागात प्रभर्भक वर्ष कामान्याद्यं आवि क्यांच क्यांच कर्मा कर्मा कर्मा कर् काक्षकार्य भाराद्र मान यांन करत्र ।। 'विद्यान कर्. च वन्टिन ना। किस जिन व्यवस्थित के विकास भ्रमान मध्यम माना नार । अन्य अधाक व्याप्ता करना विरम्पेकरण बाल्य-कार्ड यना मना गत्राव काल्य एक'का वर्गन व वााभाविष्य मर्था (कान-आरिक। थालि शरी ल - विभाग । नाम अयम काम स्थार्किय आविकास कव् अरादन रंग। छात्व क्जान फडल (मम्ब भमाव वा "(नारम" एवत वरा भीना या। व्यवक्ष विक्रमा त्व भाके वरम नामदन गरन धरवर हन।



चार्रे द्रिम ७ (वैटि वक्

र्यादमत्र कोकुश्ल श्रद, छाता राल-फिरमस्ट्यत अकथाना ছবি जूटल वाफीट किस्त अन्।

তারা বোল। काहेत्रिरमस वार्श विवार्ण्य छाना ध्यांना गरी तिथा शिव—नाट्य बारमारम একজন বিশিষ্ট ধাৰ্মিক লোক /

আইরিদ প্রায়ই ভার তাপকে এদে নাদ-ছয়েক পরে আর-একথানা ফোটোতে रम्ड त्य, ब्यामित्मन मत्य चत्नत लिखत बाहितियात मत्य এकि. "त्नार्भ"न मृद्धि গেলে সে পরীদের দেখা পায়—পরীদের সঙ্গে 'উঠ্ল, সেলালি নাচ্ছে না— সেইসলে বানীও जारपद वकुष रहारह। वना वस्ता बाहितरमद वास्तरिक।

कारमदा निया। आहेदिम छाउ त्यान फहेन खत्र भदीका क'रद्र मिर्थितन। जात न्यानिमरक जहाँ भुक्त-भारक विभिन्न,

क्षां याशाकिन न'ए ए तथर नार्यन! त्मरे हिवसाना तिय वान करकवाद विद्यास আসল ঘটনা সংক্ষেপে এই।— হতভগ হয়ে গেলেন। কারণ ছবির ভিতরে षार्शित्र ७ ष्यां नित्र पृष्टि • त्यायः निर्मातक ष्यां निरम्य कार्यमा अक्षण छोटे छोटे ভারা মেতে আছে !

বয়স যোগো বৎসর হ'লেও তার বাপ এ সব জোটোগ্রাকের ভিতরে অনেক সময়ে कथा छोटा कहाना व'रमहे छेड़िए। मिर्डन। "छन्न अक्टानामार्स"त बाता जाम-जूबाह्रि किन्छ आहेदिरमद मृत्य व्हमाग्छ धक छल। किन्छ "त्मरगिष्ठि" (मश्राम्हे स्म-त्रक्रम कथा खरन ७ जात्र व्यापमारचन मार्य भ'रक कालियां जिसा भरक यात्र। এই छ्यानि বাপ শেষটা মেয়ের হাতে একদিন একটি বিচিত্র ফোটোর "নেগেটিড" স্থার কথান ফোটোগ্রাফের



धक्कन श्रीमक विष्णमक्कदक्ष "(नर्गाष्ट्रेड" छ्थाना भन्नोकान कट्या म्हा हर। विनाटकत्र विथाक "ब्यटोडोडेन दकान्नानी" व्यवर है निर ७ श्रांट्यंत्र क्यांट्ये व्यव्याख कांत्रधानात्र गटक जांक जिल वर्गदत्रत छिन्त তাঁর ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক আছে। যত-বড় পাকা खूबाटांबर रहाक् ना रकन, जांब टाटब धूला (मध्या जनखर,—(कनना (कार्टिश्वारक्त्र ममख ७ छ क बारे जांब न बहर्मान । भिः स्त्रिक्र **जब जब क'रत भरीकांत्र भन्न वर्ट्टान—"এ**र 'निराणिक' छथाना একেবারে আসল,এর-মধ্যে नकरणत या काण-क्याद्वातत नामशंक (नहे।"

আহারস বলেছে, পরীদের উপরে তার दिकास मिक्कि स्मिष्टे। जिद्द रिम यथस वस्तित मादिश शिरा भारा जारव व'रम এकमरन भन्नीरमन कथा চিন্তা করে এবং ভারপর বুর থেকে যথন

একটা অস্পষ্ট শব্দ বা গতির ধ্বনি শুন্তে পায়, তথন পরীয়া আস্চে বুঝে তাদের সামর অভার্থনা ক'রে কাছে ডেকে আনে!

ज्यादन प्रांतरक जारत शारतन, ज्र लाक थाक्ट लाई इंडि स्टिश्हे क्विक भन्नी **७ '(नाम' (मथर७ (भरम (कन ?**

এর সোজা উত্তর, এই মেঞ্চেটিব ভিভরে ध्यम दकान कालोकिक मिक्क चारह, या काधिकाः म मासूर्यत्र मर्थाष्टे न्हे। इग्रटा আরো কত অজানা লোক এমন-স্ব বিচিত্র मुखा (मरथरह, किन्ह जावा शाक्राम्भाम स्वात जरम গুপ্তकथा कथा 'वाङ करत्र नि, किश्वा काङ्गत কাড়ে প্রকাশ ক'রে থাক্লেও সে তা शैंकाश्रुति व'ला উड़िया निष्मतः—कत्व मक्निमाधात्रप्र कार्ल व्याब-भगान भौहरात ऋरबाभ भाष नि।

मय-(हर्य श्रुद्धार्ग शह

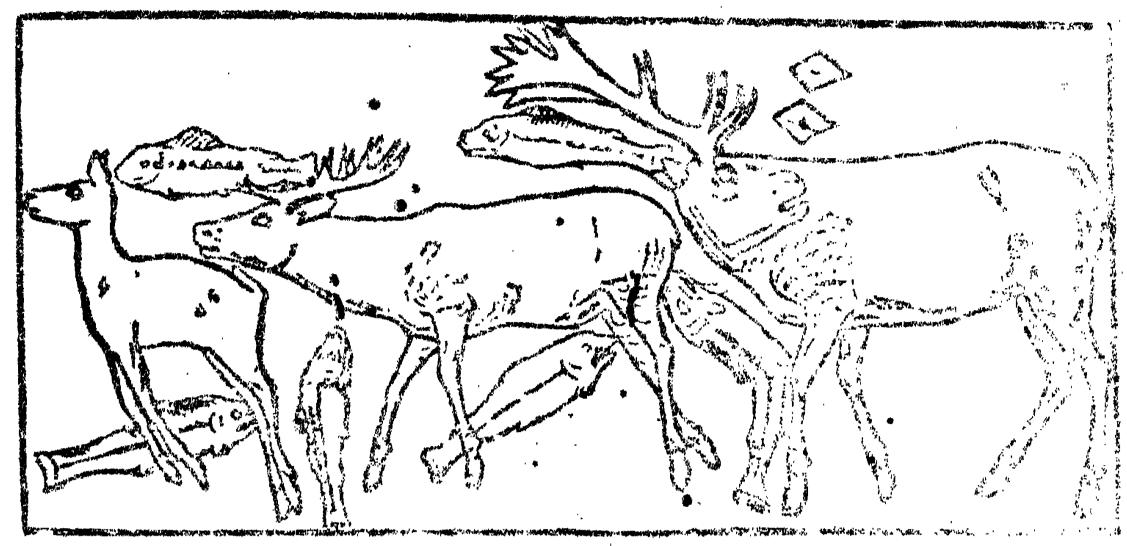
সব-চেমে পরোপো ছবি যে পটুয়া এঁকেছে, উপরে বসে বসে এই প্রথম ছবিথানি খুদে' আৰু থেকে বিশ হাজান বংসর আলে সে খুদে একৈছিল। পণ্ডিতদের মতে, ছবি-অন্তিম নিঃখাস ত্যাগ করেছে!

मारिक्ष्टीत व्यटनक व्यादगांत्रनात भन्न धके ভिक्त थ्याक, भनकारमञ्ज वावहाया व्यादश मिकार्ड डेशिइड इरम्राटन।

भारत माञ्चर्या भारता खराव वाम कत्रछ। श्रहात वाहेद्र छथन त्मकानकात्र সব ভীষণদর্শন অভি-কায় জীবজন্ত মানুষের সঙ্গে ভূষো মিশিয়ে ছবিভে মাথিয়ে, গাছের বাড় মট্কাবার জন্তে সর্বাল্ড প্রস্ত। ছালের পোষাক বা পশু-চর্শের উপরে এই সে-সৰ জীব আৰু পৃথিবীতে টিকে নেই। চিত্ৰের ছাণ মারা হোতো ব'লেই পণ্ডিভরা दीनं त्नरह

যতপুর জানা গেছে তাতে বলা যায় যে, 'সেই আদি শিল্পা একটি মুগ-শুঙ্গের আঁকাই ছিল ভার প্রধান কাজ।

প্রসিদ্ধ বৈজ্ঞানক পণ্ডিত ভার রে, দাক্ষণ-ফ্রান্সের একটি প্রকাণ্ড গুহার অনেক জিনিষের সঙ্গে এই ছবিথানি আবিষ্ণুও হয়েছে। এই ছবিখানি ছাপ মারবার জন্মে তৈরি করা হয়েছিল। চবির बाह्यभाग करत्रम। जलमिम भरत्र जकारमञ्



मय-८ हा भूद्रांत्ना भेडे

এই নকার 'ব্লক' থানি ছাপিয়ে চমৎকার সহজ নয়। রেথাগুলিও যথেষ্ট হাতের কাম্নার ছবি ভোলা গেছে।

(গলেও, এখনো এর নিপুণ অঞ্চন-পদ্ধতি মাছের রেখাচিত্র জাছে। বড় হরিপের मिथ्रम छात्रिक कत्र इस। अङ काम छेश्रत्न रे ए एटि ममहङू क रास ब्रायर्ड, ভাগেও শিল্পীরা যে কভটা স্বাভাবিক মৃতি পণ্ডিতদের মতে সে ঘটি শিল্পীর হাতের সই আঁক্তে পার্ত, না-দেখ্লে তা বিশ্বলি করা ছাড়া আর কিছুই নয়!

পরিচয় দিচেছ।

ছবিথানি জায়গায় জায়গায় ধারাপ হয়ে ছবিতে তিনটি হরিণ আর কতকগুলি

গত ১৯১৯ খৃষ্টাব্দের নোবেশের সাহিত্য- সেইজত্যে স্পিট্স্লার নোবেল পूर्यकात्र अ वरमदत्र कवि कार्ग न्भिष्मणात्रक (भारत्वात्र में भारतीत्र अधिकाः भ भारतीत्र अधिकाः भ भारतीत्र (म उम्रा र प्रारह।

ভাষায়। স্পিট্স্লার স্কুজারল্যাথের প্রবীণ প্রতিভাষান লেখক, তাও নয়; তবে উচুদরের কৰি। তিনি "Prometheus", 'Epime- কবি ব'লে স্বদেশে, কালে ও জার্মেনীতে theus" ও "Olympischer" নামে গ্রন্থভাল ক'বা:রসিকরা তাঁর প্রতি যথেষ্ট সমান রচনা করেছেন। তাঁর বয়স এখন পঁচাত্তর वदम्ब ।

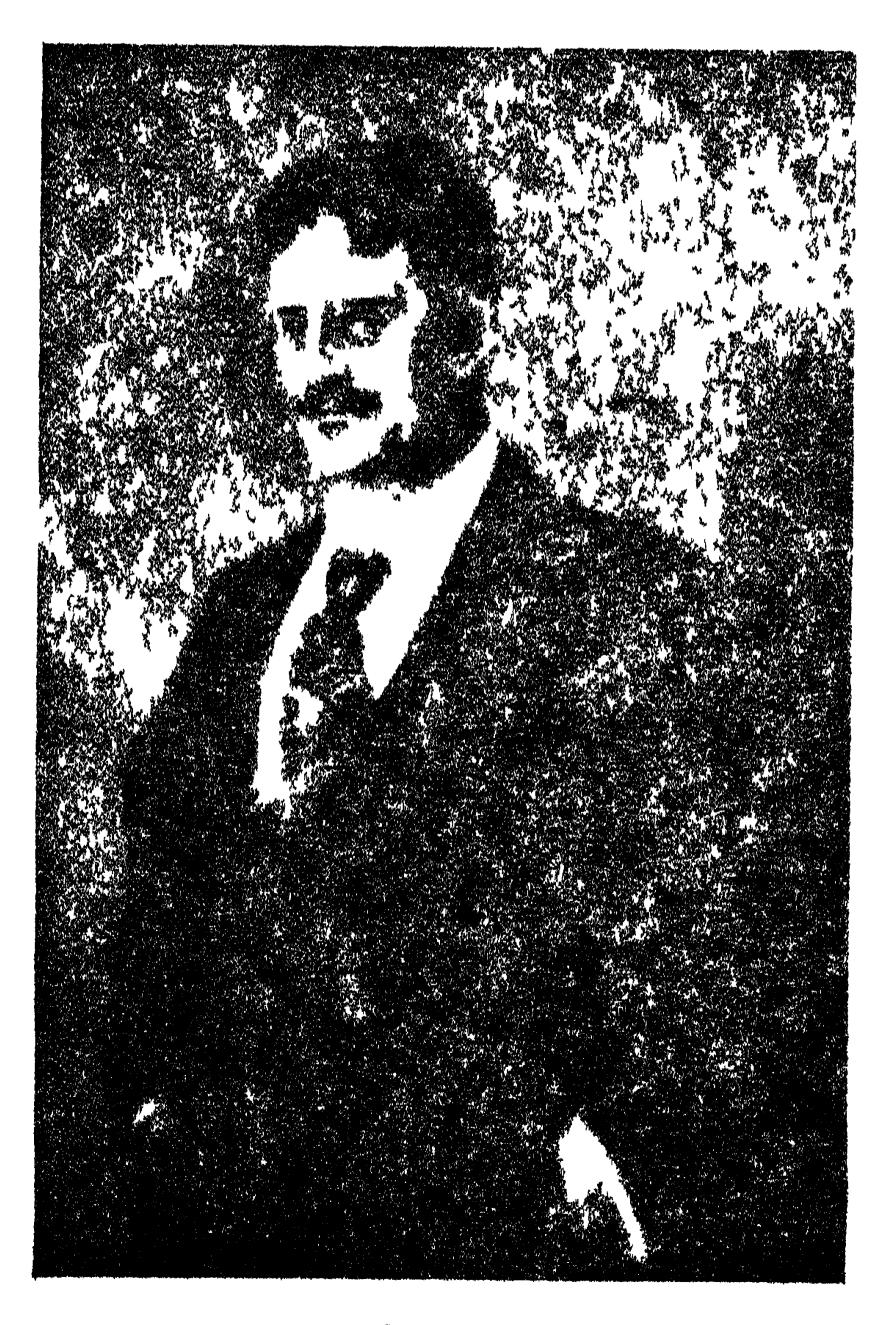
কারণ কুদ্র এক ভক্ত-মণ্ডলীর বাইরে, তাঁর লেখকদের শুক্রনীয়) নামে বিখ্যাত।

দস্তরমত বিশ্বিত হয়েছেন।

তিনি জাতে সুইস হ'লেও লিখতেন জামান স্তিক্ষতায় স্পিট্স্লার যে থুব একজন প্রদর্শন ক'রে থাকেন। ফ্রান্সে তিনি "স্থইস ফাবেয়ার" (ফ্রান্সের একজন ना अकारा তাঁর সম্বন্ধে বিশেষ-কিছু জানা যায় না। লেখক এবং মোপাদা। প্রভৃতি প্রদিদ্ধ नाम कारन वमन लाक भूव कम जारह। कार्यनीरक्ष कांत्र चरकत कवाव हियाना। किन दान गुरक्त नगरा जिनि कार्रानरम्त्र न्यरामी ज्वानी व्यक्ति कार्यानरम्त्र वारा निक्ति এहे कान्ताहारत्वत्र विकरक जानित श्रकाम कवित्र मन्त्र क्याबित्न, श्र ३৯১৫ चृष्टीरक करब्रिट्रिंगन व'रम, कार्यान एकत्रा नांक विश्व এक उरमदिव आरमासन क'रत-তার প্রতি বিরূপ হয়ে উঠেচেন। তাই তাঁর ছিলেন। .

'হাম্জুন্

১৯२० शृंष्टारमय नार्यामद्र मार्कित मार्थित मार्थित कार्य প্রकाর পেয়েছেন গুট্ शमञ्जून। काम्जून পার্চিক। ১৮৬० খুষ্টাকের ৪ঠা আগ্রন্থ মানে নরওয়ের বিখ্যাত ঔপত্যাদিক এবং লান কার জন্ম। । র বাপ-মা ছিলেন বড়হ



इष्टे शामकन

शरिव। CEC-Cवनांत्र मूठोद कांक कंद्रेट पिटनमांत्र मःवाप्तपट्न धात्रावाहिक छाटव कत्र छिनि कि विश्व छन। ১৮৭৮ यहास প्रकामिङ क्या ज्यानि भएड मकरम ভার প্রথম উপত্যাস ও কবিতাব বহ প্রকাশত 1 # \$

माश्य मा। व्यादिक गार्म किंग तिम केरामुख्य मा। विदेश करा प्रिकार केरा किंग करा करा किंग करा करा किंग करा करा क ट्टिए आरमिरिकाम गाडा कर्योग्ना . नाम ८७० काहिना। श काड़ा हाम्बूटमन [†]গয়ে তিনি চাকবের কাঞ থে'ব প্রক दर त्रामी। भारत । या छ को को का वस्ता । तारा। वा व विश्वास । कोचिकमेनदगढ कर्न्स। त भगवाण्य किल राष्ट्रान्यान्या कट्यान्ट्रान यार अद्या गा। ध प्रमुक्त । विक म विश्ववामात्र मट्टा । ०८० " न ०० व १८०० । १८० म (यांन मिट्सिक्तिन । नाय स रिविद्भक्ता भटनक वर्षात्रमः । । अभूगानामः इत्या । ध्वत भार किला भाषा भागा था। यह का स्था-माधनाश नियुक्त ७८, १९६ ० १। ति । १ भन

रिक यह च ना बर्ग नात नत विक्र कान मधा त्या एक पा करमार नाप्रपर कार का ना ना ना ना का ना कराधात्र नाम (केंद्र डेठ ७) द्र एश्व भागान (भरम किटन कामन (५ ००) किन Cकारभन्टक्टबंटन । त्या नशुः । व्यार्थेत क्षाक्रीतन कांत्र की बन धमन =अानक करप्र ५८% (ब. f • नि व्याद्वाहकार र एष्ट्रा करा कर में कर म

ভারপর বিশন সাহিত্যকে উপজাবিক। कारण व्यष्टन कत्रान्त । व्यथम व्यथम आहि । । कांत्र ८१८६व कुमा ८मछा८७ भारत-ान। किन्छ जिन युरमन कान । धक्थानि कान-নৌকায় বাস ক'রে তিনি Hunger নামে বে আত্মজাবনামূলক চিত্ৰ বা উপত্যাস্থানি नियरमन, ७१३८७३ छात्र यभ छात्रामरक ছिष्टित পড़न। Hunger প্রথমে একথানি

গতেক পথমশোলীর উপত্যাসক ব'লে **মাথ্য** - লে লেয়। এর গণ তিন ক্রমাগত বই किन मुठी। जा प्रत कार्क केरि जारमा • ग्लाया • क्रक कायन। जात नव-८५८म आधुनिक ""(sstin, "" dit i lange" 3 "The

> भेड़ देशका मन रिकारन किंक वाखरवज गान जारवड जारवन दवः खद्मवस जनाना इट्ट्र । महाल १.५४। यात्र। । धकां भटक रिंधनि ्यस्त "स्नात नम्ना थून निटम जामानिशदक अगध् जाराव सारका देश व करत नित्र খান, হান্ডাদ ক তেমান নালব-আত্মা নিয়ে निवटशक्कार्य अभारः किया करत्रन व्यवर गायुन्त का राजन ना का कि (मिष्ट्र), व्या ना , शक्त निर्माद-ना कर न इन्द्र दमन ।

> विकास काल काल काल मान्याम । 1007 034 र लाक्षावर रिवास भाग वा गरण के कात्र क्रिकात ল'লা বল্পাতে তা ক্ষা করতে পার্বোন। তার A's: "Mt the Door of the Wealthy", "()ucen Tamara" (eta (मन्ना नाउक) ও "Munken Vendt" প্রভৃতি নামের नाएक छान तमन विस्तरम स्ट्या द्वारा ७ व्यक्तन करबर्छ।

> কিন্তু- সাহিত্য-ক্ষেত্রে এমন প্রতিষ্ঠালাভ क'रत्र । हाम्कून छात्र निक्कन माधना-कूञ्च (५८६, वार्रेटवन कावटनाझारमन मध्या चान वांभ पिए७ ठान ना। भारि वा मधारनत তিনি কোনই তোমাকা রাথেন না। তার

भक्षांग खत्मारमत्वत्र मभरत्र **मिन्योगीता यथन** अथन छात्र वत्रम अक्षि वरमञ् । किन्ह "कोवल कविराव मर्था मर्काट्यान" व'राम जीरक का छिनमान मान कर्त्राष्ट्रण, ७थन छिनि বিজন বন-ভূমির মাঝখানে একথানি কুঁচে चरतत्र डि॰ द शिर्म वापनारक नुकित्म रिक टिक हिंचन । किन्न दिन विश्व हैं। विश्व ह দের উপদ্র স্থক কওয়াতে, তিনি বাঁরো मूद्र भागिएय शिक्ष, चाभमान टेममदनद्र এक क्वां जारकटबंद गर्था जांचारगां भन कर्ट व वांधा र्वाट्या

তান যে নিজেকৈ বুড়ো ব'লে ভাবেন না, 519 "A Wanderer Plays With the Saidine" नात्म डेপशारमङ ভার প্রমাণ (अर्थ प्राप्त व पामन (प्राप्त । जिन किन "Ilonor to the Young" नादम ब्रह्माम स्वोवदनत्र कर्श्य अद्याद भाषा कर्मन करत्रह्म। भार्रक क्षिन्द्रम, कामारमञ्ज त्रवीत्सनारथव मरक करनक বিষয়ে হাম্জুনের মিল তাতে।

পরলোকে টেলিফোন

ছাই হয়ে যায়, মানুষের আত্মা কি ৬খনো যে-সে প্রেভাত্মা এই যন্তের সাচায়ে মানুষের भन्नत्मादक खोनम रूप्त भारक १

देवज्यवात्र अभारत्रत वामिनाम्बत्र मरक वाकाभ-পবিচয় र मुट्ड भारत । विकारनय कला। (व यांगरा अभन भागान तकम रूपा ग्राज्य माशासा पृथिवीय यक मूत-प्रांखिय (शरक मःनाम व्यामान-श्रमान कत्र् भारि । **८ ज्या**न (कान रूषा ७ व यहात्र माद्यारा नत्राका क (शरक পরলোকের খবর পাওয়া সম্ভব কি না ?

अ-युश्रंत्र मक्द्रश्रं छेडावक मिः छेमाम, এ, এডিদন বলেন, "এমন বাাপাব অসম্ভব নয়।" তাঁর মতে বিজ্ঞানের ধারা এ সমস্তা সমাধান করা ধায়। ভিনি একটি নতুন-यकत्मत यञ्ज निन्धार्णत ८ छो। करत्रह्म । পরলোকে সন্ত্যি-সাভাই যদি আত্মার জুভিত্ব धारक, ভाৰলে এই यञ्जत मधाञ्चाम हैरलारक त्म वाक्या **अत्रम क**त्राक भागरम।

আগুনের শিখায় যথন নখব দেহ পুড়ে তবে এগানে একটি মস্ত "কিন্তু" আছে। मदम कथावार्छ। कहेट आवरव ना । शृथिवीएक আর পবলোকে আআর অভিত যদি যারা টেলিগ্রাফ বা বেভার টেলিফোন প্রভৃতি यक्ष वावशंत कब्र्ड कान्श, धर नक्न यद्ध (य वल जारमब्रेड भरनव कथा धवा मछव रुरव।

> এডিসন্ বলেন, এখন "মিডিয়ামে"র गांकात्या (य- शंदव (প্রভাবাবে আহ্বান করা इश्र. (म वालाविहा (समन बाक्क छाव, ८०म्बि বিজ্ঞান-বিরোধী। তথাকথিত অনেক "মিডিয়ান"ই জুয়াচোর;—অবশ্র সাধু "भिष्याम" ९ व्याष्ट्रन—। कन्न डीब्रा या (मर्थन ও যা শোনেন,সমস্তই আত্ম-সম্মোহনে আভভূত करत्र। এমনধারা ছেলেখেলা ক'রে কখনোই (अञ्चादक वार्का भावम गादव ना।

> কিন্তু সভিচ্টে যাদ প্রেতাত্মার অন্তিত্ব थारक ज्वः मद्रालंद कासकात्र रङ्ग क'र्व कोवत्नव ठाक्ष्टलात्र मर्था मर्नत्र छात कानावात्र कत्य यमि ভाता वास्त्रविक वाक्न रात्र अत्रे, তবে তারা জগতের ইণর-তরক বা অন্ত-

কোন শক্তির দারা এডিসনের উদ্ভাবিত এই

অনেকে ভাবতে পারেন, এডিসনের এই চেষ্টাও বার্থ চেষ্টায় পরিগ্র হবে। কিন্ত है जिमस्यारे विख्वान এই ধরণের আরো অনেক व्यम्खन्दक मञ्जव करत्रह्म । यद्यत्र माशाया এখন অনেক মাইল দূর থেকে বাতির আলোর তাপের পরিনাণ স্থির করা যায়।— আকাশের স্ব-চেয়ে দূরবর্তী তারার তাপপ্ত পुश्वीत यञ्ज भद्रा পড়ছে। এমন-কি কোন্ তারার বয়স অল আর কোন্ তারার বেশী, সেটা জানাও অসম্ভব নয়৷ পৃথিবার এক-প্রান্তের মাটি একটুমাত্র কাঁপলে অগ্র शास्त्रत यस का टिंद भाउमा गाम, ज अवत তো সকলেই রাথেন। রণক্তের পরিথার खाला चात-একরকম यक्ष উদ্ধাবিত হয়েচে। त्यात व्ययवमा। तात्व घृष्ट्यते व्यक्तकाद्वल, শক্রপক্ষের অধিকৃত শত শত ফুট দুরের পরিথার ভিতর থেকে কোন লোক যাদ এক-পলকের জন্মেও মাথা তোকো, তবে তার মুখের তাপ পেয়ে যন্ত্রটি তৎক্ষণাৎ সকলকে हेगात्रा क'रत मावधान र'एठ वल्द्र !

ष्मवश्च यात्रा अ-भव यद्भत वावरात कात्न না, এদের কাছ থেকে ভারা কোন কাজও

भारव ना। दकान डाकात्र वा डेकिन अकि ग्राह्म माशासा वार्छ। त्थात्र कत्र लात्र । दिनिज्ञाक-व्यापित्म निष्क निष्क ভারের থবর পাঠাতে পারেন না। ভাই এডিসনের মতে, একজন অজ্ঞ লোক যে ম'ল্লে পেলেই একেবারে সবজান্তা হয়ে উঠে বে-কেশ বৈজ্ঞানিক যন্ত বাৰহারে অভিক্রতা मिथाटिक भावत्व, এड वर्ष व्यम्ख्य कथा। এইজতোই এডিগন মতপ্রকাশ করেচেন যে, क्यानाव वित्यस्य ल्यादकत त्थानावाह তার মন্ত্রে সাড়া দিতে পারবে।

> মন্ত্রতির সমস্ত গুপ্তক্থা এতিসন এখনো প্রকাশ করেননি। ভবে ভিনি যেটুকু বলৈচেন, ভাতে স্পষ্ট বোঝা ধায় যে, তাঁর এই নতুন উদ্ভাবনাটি ভৌতিক বেতার-যন্ত্রের কাজ করবে—ভাবস্তের কাণে দে মৃত্তের কণ্ঠস্বর এনে শোনাবে !

যে হাত বায়স্কোপ আর গ্রামোকোনের স্ষ্টি করেচে, বর্তুমান ক্ষেত্রেও হয়ত সে হাত বার্থ হবে না। অদ্র-ভবিষ্যতে হয়তো পৃথিবীতে मत्रापत्र त्रश्य कात कछा छ थाकृत्व ना—कात्रण, चामारम्ब यथमि महकात इरव, उथनि दिनि-ফোনের হাতল টিলে পরলোকগত আত্মীয়-বান্ধবের সঙ্গে কথাবাতী কইতে পারব !

वी श्रमानमाम त्राम।

স্বানীয় সুরেশ্চন্দ সমাজপতি

সাহিত্য-সম্পাদক সুরেশচন্দ্র সমাজপতি সুরেশচন্দ্র যৌবন-বয়স ইইতেই বছসূত্র রোগে গত ১৭ই পৌষ তারিখে हेर्लाक जांश कत्रिप्राष्ट्रन। मृङ्गकोल जैशित व्यम अकास वरमञ्ज भाज इर्ग्नाছ्य । जिन निश्मखान ।

বাণীর সেবা করিয়া আসিয়াছেন। ভাঁছার মত একনিষ্ঠ সাধক যে বাংলা ভাষায় বেশী ब्याट्डन, व्यायाटार अयन विद्यांन माहे। সম্ভবত সাহিত্যের প্রতি এই গড়ীর নিষ্ঠা ভিনি তাঁহার সাতামহ স্বর্গীয় ঈশ্ববচন্ত কতক'লে আগে পড়িয়াছি, কিন্ত এথনো বিজ্ঞাসাগর মহাশয়ের নিকট হটতে স্বাভাবিক ভাবেই অর্জন করিয়াছিলেন।

ध्यमन चारनक (लशक (मशा यात्र, बाहारमञ् भक्ति यरथष्ठे, किन्दु मिनियार्डन कहा। ्धैरनत কাছ হইতে লোকে আশা কবে ঢের, কিন্তু স্মালোচৰ রূপেও সাহিত্য-স্মাজে ছুর্ভাগ্যক্রমে সুরেশচন্দ্র এই শ্রেণীর দেখক किरमन। माहिट्डाর मध्य এश्वन माकाए-मन्त्रक द्राधियाख, निष्क धमन শক্তिभद क्रेग्रां अ, माहिका-८ण एवं । जीन यादा भान করিয়া গিয়াছেন, তা সুঠা-ভরাও নয় এবং ভাহাতে ভাঁহাব ক্ষমতাব পূর্ণ পরিচয়ও পাওয়া যায় ना।

অথচ তাঁহার হাতের ভিতর দিয়া অনেক অযোগ্য 'মাসুষ' হইরা গিয়াছে। বরাবর जिनि लाशक टेर्जातत ८५ हो करिया व्यामियारधन এবং নিজের ভাষার শ্রাজালে অনেক কর্ম্যা (मथारक । जाभा त्या माकार्या সাধারণের চোণেব সাম'ন এলিয়া ধরিয়'-कटन कारन ममरविष्य त्य 'वाश्वा' (BA) তাহার প্রাপ্য, তাঁহারহ দৌলতে দেটা লাভ করিয়াছে অন্তো। এ কথা যে সভা, ম্বরেশচন্ত্রের ঘনিও বনুবা ভাহার সাকা मिटक भारतन।

লেথায় তাঁহার হাত যে কত মিঠা ছিল, মুরেশচজের ছোটগলগুলিই তাহার প্রধান व्यभाग। यक-माहिएडात नवगुरम व्यक्त (य কমেবজন লেণক প্রথম ছোটগল্ল রচনার खडी रहेग्ना इंटिंगन, अद्युष्टिक डॉक्स्प्रिय यहा অক্তম। তাঁহার রচিত "বাছের নথ" ও "প্রাইন্ডেট টিউটার" "কমলা" প্রভৃতি গল্প

সেগুলির কথা ভুলিয়া ষাই নাই। মনে इट्टिइ, "गाधना" । त्रवीतानाथ एकाउँ गन লেখার খ্রেরশচরের নিজস্ব নিপুণভাব প্রশংসা করিয়াছিলেন।

व्यामा-शृद्रदर्शन छेशानान शाव वर क्या छट्ट्रमध्यात शिव्ही व्याद्ध। "यानिक-সাহি •া সমাতে চিনা" ভাঁহার সম্পূর্ণ নিজের শ্রুনিষ। মানক পত্রে ভাঁচার আগে এ नार्भारतित्र अञ्चलंन जान ८ भन्न करतन नार । harde chiability "Allectina Aloi उन्होस्य मर्कुराख ५० मर्थकार मगरमाहमा शाठे करिए - वामग्राट्स्न। এक मराक्स मभारमाहना अन्छ। डेलर्खात्रा करवात कावन, हेश्य यक्तम विश्न ७ भी, ममुख्यम हाख्यम, অমুমধুর রঙ্গ-বাজ গ্রমন-কি বাঁহাকে लक्षा कविया वाजवान विकिश इहेमारह, िनि श्याञ्च म्हात इम-छेलाखारा । तम्न हर्गा का प्राप्त ना — (पहर) व भार क्रमाट्डब याम जनकारि भिर्देश (म (यमन ना शारेषा पाकिए) भारत ना, এও ८ भाग। भीषकार्षित्र आलाइनात्र जुलहुक थाका प्राज्यांचिक, ।कछ त्मार्य छर्ण अष्टारेग्रा এ३ "भामिक-माि छा-मभारमाहना" (य এकि অপূর্ব ও বিচিত্র অমুষ্ঠান এবং ইহার मार्थक छ। ও य अञ्चलम, शक्षा काला करमह অস্বাকার করা চলে না। তা ছাড়া এ জিনিষ্ট বাংলাব সম-সামায়ক মাসিক-সাহিত্যের এমটী স্চাপত্তের মতনও ছইয়া बार्गा स्नोर्घकारणं मर्था याःगा मानिक-माहिटकात धात्रा कथन् कान् भटब छूडिबाटछ, कर्द दर्मान् दम्थक आषा श्रकान काष्रप्राह्म,

क कि किनिय करेशा माहिटशस हाटि 'आमिया अमोभि जिनि हरे हाट्डिय आफ़ारम এ**डि**मिन माभग्राह्म, এ-मर उथा के गामिक-मोहिङ:- मध्यद खानाहेग्रा ग्राथिया **हिल्म, मि कथा** भगारमाछ । । इ छे भरत अकवाब-मांड । हो । वृष्णाव्यां ज्ञां व्याप्त । । त्य त्या व्याप्त গেলেই জানিতে পার যাইবে, স্থাবেশচন্তেব ধনীর অজন্ত সর্থ্যয়ও অধকাংশ সাম্য্রিক সমালোচনার সঙ্গে সকলের মাণের মিল না 'পরের জাবনকে দার্ঘ করিতে পারে না, সে থাকিতে পারে, কিয় ঐ্সব লাভও বড় দেশে এশ অভাবিত সাফল। সুরেশচয়ের যে সে मा अन्य।

मन्नामक क्राप्त श्राव्याताल व मिक वा ७-বড় শক্রও তাকার করিতে বাধা। বাংলা "সাহিতা" বরাধর বাংলা দেশের একথানি দেশের একজন ক্ষম নাবান ও প্রযোগা প্রাধান ও প্রথম শ্রেণীর মাসিকপত্র বালয়া সম্পাদক ব্লিয়া সাহিত্যের ইনিখাসে কাঁহার আদের ও সম্মান পাইয়া আসিয়াছে এবং नाम (नशा शांकिरत। रेमिनिक "वाकाना" ब्रवीन्त्रनाथ इटएक आवस कविया वाश्वात आव এবং সাপাতিক "বস্তমতী" ঠাতার সম্পাদ ম তার क नी छेन्नां जा क द्रिया हिंग. (म तथा ভথনবার পাঠকমাত্তেই বালতে পা। বেন। जाहां डा कि कि क्रुकान देविक "नां प्रदेन"न छ मक्रांशी मन्निक 'हरनन।

किल करत्रमहासात मध्या कानरनत खार्यान বার্ত্তি হচতেছে, মাাসক্ষত্র "সাহিনা"। ৬৯৭ वग्राम, विভाध वरमद्र ६६ए७ शिल स्मर (प "माक्र श्रद्र" (मनाव मन्जून जाव निष्कद हार अ कृषिया बह्यांकरवन, धावशय मुकानगाय खहवात পুরুমুক্ত পর্যাঙ্ড আপনার কগুরাপালনে ক্রটি कर्त्रन नाइ। डिनि धनो ६(लन ना-वतः निरक्त मात्रिए। अर्थ वर्ष वर्ष वर्ष কভ বাধা-বিল্ল, অভাব ও তাশ্চন্তার মধ্যে, কত ঝড়-ঝাপটা সহিয়াও "সাহিত্যে"র জীবন-

অপূর্ব সাহি । প্রতি এবং তুল ভ শক্তির পরিচয় দিলেছে।

मगत (अर्ह त्य नत्कत्र शत न होन जागत গায়ে অধিত মাছে। "নবাভারত" ছাড়া বাংগার আর কোন মাসিক-পত্রই এতকাল ধরিয়া কেবসনাল একজনের প্রোণপণ চেষ্টায় ও (मनाग्न वैािका थाकिएक भारत नाहे। **पाक** स्र्रिक्ट म्हा महा भाष्ट्र महा भाष्ट्र की वन-শৈখাও নিবিয়া গোল। বাংলা সাহিত্যেব পক্ষে এটা একটা মণ্ড ত্ঃথেব বিষয়; কারণ अध्यक्त काला मानिक कालक क्रें-। उनथानित्र (नना नाह।

অকালমুভ স্থরেশচন্ত্রের পরলোকগভ আ্যাত মঙ্গল-প্রার্থনা এবং ভাঁহার শােকভপ্ত পারবাব-বর্গেব প্রাত সহায়ভূতি প্রকাশ कार्या बायवा विषाय कठेणांच ।

औरहरमक्रमात्र नाम। .

গভ মাদের ভারতীতে "নান্তিকের গল্ল" खारक दिशक जीगुक जुरशक्रम हक्क वर्छो कौरान मृङ्गा भयाम यथन (मर्थन (म्यान खीवन (यट ठ वाको नाहे, ७थन छाउ वर्ष्ट्रापत पिटक ८५८४ वटलन "छत्रवान नामक ८०१न জিনিষ ভোমরা বিশাস কর 🕫 সকলেই राम डिठामन, "श्व—। मन, जीवन धाकरङ তুমিও বলে যাও, ভগবান আছেন. ক্ষমা পাবে।" তথন তকরাজ শেষ নিখাস নানতে होन्ट वरहान, "If there be any God, let Him forgive me" মুণুর গলা টিপনা (थरम जात मूर्ण कह नाम नाहित हम।" व्यामिक भाठाविष्टांत्र এक भावती मार्टिद्र वकुछात्र खनिशां हिलाम (य भिन विलशां हिलान

"If there be any God and if there be any soul, let God save my निश्विष्ठारहन, "भिन एर्क्स याफ हाउँदिय भिष , soul." किंग, এ भर्यास छन् हे साउँ भिन मश्कांख পুস্তকাদি পাঠ করিয়া এবং এ বিষয়ের অমুসন্ধান কবিয়াও এই উত্তির সভ্যতা निर्दार्ग कदिएक পাरिनाम ना। करत्रकलन দর্শন শান্তের অধ্যাপককেও এ বিষয় জিজাসা কবিয়াছিলাম কিন্তু তাঁহারাও এ বিষয়ে কিছুই অবগ্র লংক। আমার ধারণ এইরপ অমূলক উল্লি নাস্তিক-বিছেষী গামরা ছারা রচিত ও প্রচারিত হটয়াছে। লেখক যদি कान था। जनाभा त्यथरकत खन्न इ र ए ज जह উক্তির সভাতা প্রমাণ করিছে পারেন, ৩বে তাঁহার নিকট বিশেষ উপকৃত এবং বাধিত इडेव।

श्रीरयारगमहस्य ७ छ। हार्या।

তারকা ও ফুল

रम ডाकि' किन, भर्षिय धुनाय नुषि,' — সেকালির মত সককণ আৰি ছটি, 'লহ ওগো মোরে লহ, निष्ठेत कृषि नह।'— श्रम अ मृत, (कन डिटिक्टिंग कृष्टिं १ (कमरन कुषा'व १— ब्याषा (य व शक इहि ।

भ ভाकि' कहिल माँ त्यात अशतन कृष्टि', —ভারকার মত স্থাভার আঁথি ছটি, 'বন্ধু, ভোমারে চাই **बहे काकालित्र ठीहे।'--**

अमृत अभन, एक मिट्य व्यामाद्य छूछि १ মাটির ঢেলায় চাপা যে চরণ হটি।

সে যবে কহিল নখেতে কাৰুন খুঁটি', — রমণী আমার, আনত নম্বছটি, 'राषात्र निनीए। धिन्न, আমারে জাগামে দিও !' ভারা আর ফল এক সাথে ওঠে ফুটি'— वित्रक खनन, रिमान रम छ द्र मुठि।

শ্রীমোহিতলাল মন্ত্রদার।

भगादना हन

चां वर्षा वाद्यसम्भन्न अ

व्याधिका जारमा अन्य दाव विकास अभरमन अन कारमा स्वास्त विकास का नर्यन का विवास वार्षा नी ग्राकात्र मन्द्र**क एवं मन्द्रक किनाना दुनः वा**रू एवं मामस्कि कना किना करित। व (५१) बादान (वंव इन धकानिक कर्गाटिश वर्डे अश्रम, वर्ष क (b)। य गार्थक करुगाह, तम अन् मण्लाकि महानायत कथानगाय ७ गांगीवर हात छाता।

व्यातिया द्वारमस्यस्य वीवान शकामः वय (प्राप्ति पूर्व इय, ट्रिकिन क बन्द ज्ञांत्मनाथ काँकार वर्ष-नन्दन ध्रमान करवन । (भः जा अनमन-१ : यारायान मयरक ववी-भनाध विजयाि एतन, अस्य फिराइय रिशास প্রতিভার বিশাস্কট। ফাদশের নবপ্রভাচে উরোবন मकांत्र कतिर रहे। एकांन स्थाप ७ कर्यात मान अर्भाः চিরদিন ভূমি দেশ য়াতার পূজা কবিয়াল ...

সাহি গ্র পরিষদের সারাথ ভূমি এই রগটা ব নিরম্ভর विजयनरव क्रांमन। कार्याक। क्रेड प्रत्यांभा कार्या कृति अद्योद्धत बात्रा (जाभटक उप कवियोक, कमात्र क्षांत्री विद्याबदक वन कर्नत्रशंक, नीट्यांत्र क्षात्री अवमीनदक দুর করিয়াত এবং প্রীতির ঘানা কল্যাণকে আময়ণ করিয়াছ।...

व्यिश्गरन्त्र मस्या ८ गर्छ व्याय पूर्णम --- निधिगरन्त्र मस्या ध्यष्ठं निधि कुमि ... के नामि हलानि।

कविवदत्रव अरु कथार्खां य अक्रुं । निवाशि न किविक्सना नम्,—निष्क मछा, छोर। এই शक्षासर्गर मम्पर्छ छनि পाঠ क्रिक्स मिक वूबा गांच — এই গ্রন্থখানিতে ब्रांटमक्य्नादब्रब गर्वकोन পরিष्य পাওয়া যায়-পরিপূর্ণ माञ्चमिटक मण्यांषक प्रत्यंत्र (वाक्टक (वन द्वाहियां मित्रारहन । वाक्षांनी कर्या वाक्रांत्र भनशी आंठाया

পত্রে প্রকাশিত হয়, নেইগুলি এবং "আরিও কাম্যত্ন লগান নিষ্ঠায় মাতৃত্মি ও ভাষার সেহাং প্রেক্স-ानीयोत्र क्षांत्री व्यादशे करमकि आपक ग्लाशाहरा। गारेश क्ला ग्लाव आपर्न भूत्रम । १५० मालिव यसहामत ब्रांग्या वारमख्यस्य नेरम ध भः भः भ्या भ्यान भिष्ट में शिष्ट में शिष्ट में ने वर्ष ब्राह्मस्य सम्मान स - ८मवा विवयक्त ने, लोहात्र काटण मोमक-वाट्सव वक शं-च्छोटक एक वाप्रोत नाकावाल विव्यक्त निर्माधन पुष्क ও গ্ৰা

> महाभाग्या सीयुक इन्यामाम मं क्षो हा नह जारमक्टारक क्या मिक्क निक्र क्या मिल्ल क्या "बाम्सवाव वर छना। लक्षाति क्लान । निमान भर्त ना भाग छ। किल्मा एक - अको न के कि त कि । जो ।

'রামেরাবারু বড কোমলপ্রকৃতি চিতেন। -- ছি।র छिनान बारमान्न । वाशाप कासूनांश किया । छिन मस्ताह পডिए - न, रनपूर ३३१। পডिए उन, इक्स क्रियोत सम् পডि' जन, ३ अम ना कतिया छाप्टिकन ना। अह ष्यां करिन रिषय अन्यक्षेत्र वृक्षार्था গাবিং কন। •••

"রামেক্র দেশহিতের জক্ম ভিন্তি শত্রুঠান করিয়া शिश्वाद्यान - धकि भारिका-अदिनः, वकी भाषिका-मिश्रिमन, जादि अकिंगि माण्डि भिविष्य मिन मिन है। ...

"ভিনি যদি কলিকাভায় ভানিয়া বিজ্ঞার উপাসনা न। क्रिया मा मधीन छंभानना क्रिएडन, त्रांध क्रय मक नक छोत्। सामियां यांन्ट इन, — डीहाय ममस्यत अत्नक लाक छ अभन द्राचिद्रा शिशाष्ट्रन। किछ তিনি মহাবীরের মন্ত সে প্রলোভন হইতে আত্মরক্ষা कशिवान।

'लाटक राम त्रांदमस्य नांत्र Nationalist किलान । এ দেশ-হিতৈষিত। তিনি নেতাদের নিকট পান নাই।

व्याहाया त्रारमञ्ज्ञा श्रीयुक्त निवनीतक्षन पश्चिक मन्पानिक। दनमण युक क्लान्पानि, क॰मः कलक द्वीरे मार्क्रे, कलिकाला, ১৩२१। मूला इर होका।

কারণ, কোতাদের সহিত ভিনি বড় একটা মিশিতেন না। কলেজ, খর, আর সাহিত্য-পরিষদ, এই তাঁহার স্থান ছিল।"

পরিচমটুকু কুটিয়া উঠিয়াছে,ভাষা হইতেই রামেশ্রুফ্নরকে অনেক ভাব "আছে, যাহা ইউরোপের মাপ কাঠির পরিপূর্ণভাবে বৃষ্ধিবার স্কুযোগ পাওয়া ঘায়।

त्रारमञ्जयम्बर ७५ विद्धारनेत्र जारलाहना महेगा कांख डिएमन ना : उंशित ग्रांश प्रांमिक शकारम বিরল। তিনি তাঁহার বিবিধগ্রন্থে বিজ্ঞান ও দর্শনের বছ জটিল তথ্যের এমন স্থলর আলোচনা করিয়া তাহার সহজ সমাধান করিয়াছেন, যে তাবিশেষজ্ঞ পঠিকও তাহার রস সমাক্ উপলব্ধি করিতে পারেন।

व्यशां पक चरशनानाथ यथार्थ है विविद्यार्टिन,—(मर्भ-বিশ্রুকীত্তি রামেশ্রস্থেশর আমাদের চিন্তা-জগতের প্রায় সর্ববিভাগেই ভাহার মুদ্রাক রাখিয়া গিয়াছেন সাহিত্যে তাঁহার স্থান কত উচ্চে, তাহা বলিবার সময় षाप्त नार् ।

শীযুক্ত পাঁচকডি বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয় রামেল-অন্নরের জীবনের 'নিশন' বা 'দাধনা' তিনভাগে বিভক্ত कत्रियांट्स्न ३---

"১। প্রথম ভাগ,—ইউরোপের বিজ্ঞান-প্রচারের ভাগ। । - । जाधूनिक मार्यस्म कि मद भगार्थ- जस्त्र कि সব নৃতন তথা আবিজ্ঞ হইয়াছে তাহারই সমাচার जिमि वाषाणी शार्ठकरक मिट्ड धाथम रघोवरन উৎস্ক हरेगा हित्यन।...जिनिरे धार्थम वात्रामीत्क त्मशारेगा वान ८६ इडिस्तार १५ मारमस्मात कथा रकमन योक्षामा গছে। জিখিলে ভাহা বহুজন-বোধা হইবে।...

২। রামেশ্রের মনীধার বিভীয় পর্যায়ে তিনি हिष्ठद्वारभन्न क्यान-विकारनन कष्टिभाषरन खान्नकवर्यन •**দর্শন**শান্ত ও রদায়নাদি ক্ষিয়া কইবার চেটা ক্ষরিয়া-ছिলেन। এই সময় তিনি ইউরোপ ও ভারতবর্ধকে সমালোচনায় ভুলিত করিয়া উভয়ের যাচাই করিতে প্রায়ুত্ত হইরাছিলেন। এ বাচাই চেষ্টাও রানেজের পক্ষে অপূর্ব্ব।

🖜। ভূতীয় পর্যায়ে রামেন্ডের ব্রাহ্মণ্য শুভিভার भून विकाम घटि। এই मময়ে তিনি যে कार्यानि

S. Jan

পুত্তক গিথিয়াছেন ভাহার সাহাযো বাজালার হিন্দু-मयांक्र के जिनि व्यादेवांत्र छिट्टो कतिष्ठाटलन, इউर्त्राटलन বিদ্যার মাপকাঠিতে ভারতের বিদ্যা মাপিলে ছোট ত শান্ত্রী মহাশয়ের এই কয় ছত্র লেখায়,রামেক্রপ্রনারে যে হইবেই না, উপরস্ত ভারতে এমন অনেক জিনিস আছে, বাহিরে; ইউরোপ এখনও ভাব-জগতে প্রবেশ করিতে পারে নাই : এই দক্ষে 'শক্ষকথা' কর্মকথা' প্রভৃতি পুত্তিকাগুলিরও উল্লেখ করা যাইতে পারে।"

> কলিকাভা বিশ্ববিত্যালয় তাঁহাকে কয়েকবার বস্তুতা দিবার জন্ম অমুরোধ করেন; কিন্তু তিনি প্রতিবারই বঙ্গভাষা ভিন্ন অন্ত কোন ভাষার বক্ততা দিতে পারিবেন না বলিয়া দে অমুরোধ প্রত্যাথ্যান করেন। পরে বিশ্ববিদ্যালয় ভাঁহাকে বাঙ্লা ভাষাভেই বক্তা দিতে बर्णन- डोड्। तरे • कर्ण त्रारमस द्रमद "युद्ध" मयरक वङ् ङ। थानान करवन। कारन-ष्टारय-ष्टायाय वङ्ग छ।याव काश अयुना ।

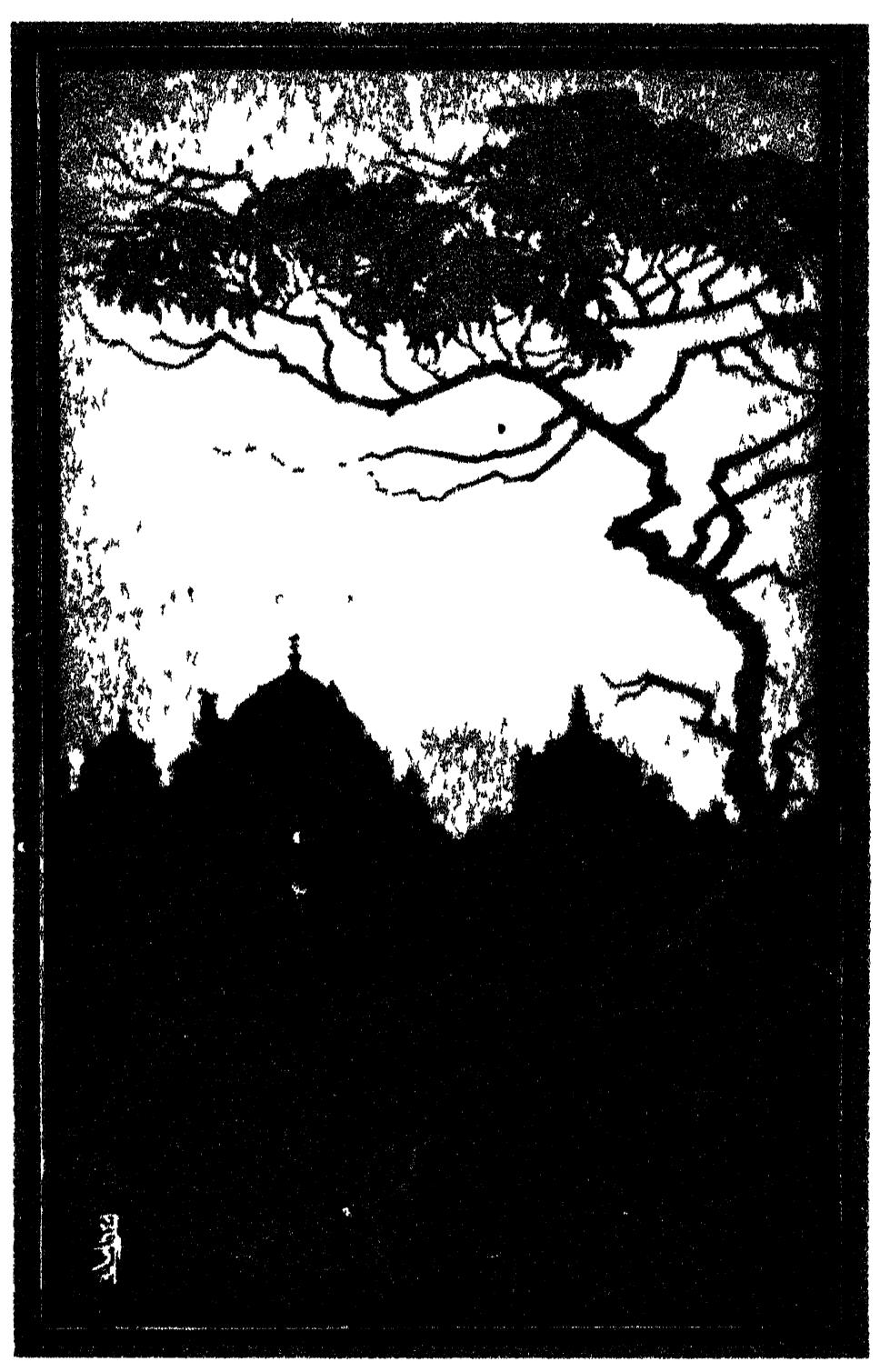
> ध मव भिंग केशित खाना जुतान ७ घटमण- ध्यापत কথা; কিন্তু তবুও তাঁহার পরিচয়ের মেটুকু বাকী थारक स्थीलनाथ তाहा वामग्रा निशाएन—जिर्वनी মহাশম বাঁটি বাজালীর বেশভূষা করিতেন; তিনি বাঙ্গালীর কলেজে পড়াইতেন, তিনি বাঙ্গালীর মত সরল ভাবে সরল প্রাণে সকলের সহিত আলাপ করিতেন, তিনি থাঁটি বাঙ্গালীর জীবন যাপন করিতেন —তিনি বাঙ্গলা দেশকে ধক্ত করিয়াছেন। আজ এই नन्-(का-अभारतभारमद्र-(कालाहर सद्द विदन विद्वनी মহাশয় একজন অনুকরণীয় সারণীয় পুরুষ।

> याखिवक এইখানেই রামেশ্র-চরিত্রের প্রধান গৌরব आब विट्रायश्च-बाट्य काश्यरनावादका वाजानी प्रितन। च्यांत्र अहे साग्रहे विरमय कतिया अहे व्यामर्ग मनयीत এই জীবন-কথা এই চরিক্রালোচনা বাঙালী মাজেরই भौता। व अन्न भारते चरमभ-दश्चरमञ्जाभन मञ्ज भिका হইবে, মতুষাত শিক্ষা হইবে। এ গ্রন্থ বাঙ্গালী শাতেরই গৃহ-পঞ্জিলার মত গৃহে রাথা কর্তবা।

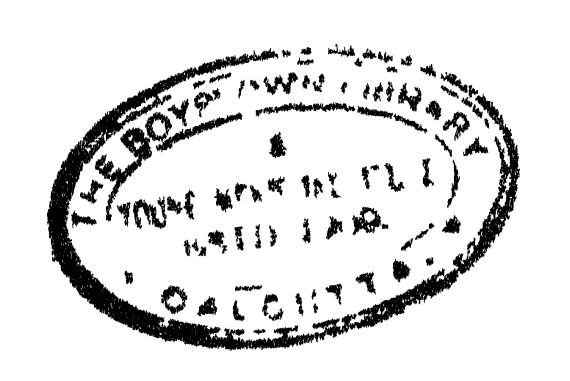
এ গ্রন্থ অকাশের ইন্স সম্পাদক মহাশয়কে আমরা আন্তরিক ধ্যাবাদ জ্ঞাপন করিতেছি।

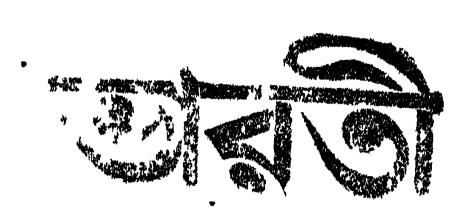
শ্রীলোরাশ্রমেছন মুখোপাধ্যায়।

AND BENEFIT OF A PART OF SECULAR SE



•





88শ ব্য

श्लिमुन, ১৩२२

222 462 Il

প্রভাগন ও উপনিবেশ স্থাপন

चार्थ आक (निर्म जिल्ला नमनाम नहता । हेटात भाग नानाभावित भक्षाना भाषक भ्या न् न न न जन मक्कद का वि वेखन है। छन्। व र क्राम यथन करम दिसात राजा ना न इड्राट्स, ७थन (भ⁶शटफ ४।६३१ सप्त्र ्य, का, विभगे बाबावय अका क्रां ्रम्म भ्रमा लट्न निवस्त सम्ब कविशा (वडा॰ ट॰ ट्रक् । । म विकारि वाभार, मध्य कक्षनाव आदम मा। आक्रकांनकांत्र में किंदी बागि, अक्षा होक ७ जक्ता । यहांना भागा, १५ (१०१३ পাঁচ চয়তী দীফ, পাঁচ চ্যান বিদানা অ क उक्खांन (भाउं न देनि मन्सः (देन हित्रिया বল্লাইবার পাত্রে हाडम कांना ना छ। स्ट्रेट एम ख्यंत्र मधुषु । लिविष्ठ आत ना हम फिरुवों कि जिले उपाय खणकरन नम। न গৃহস্থালা কে গৃহস্থালা, সাবা একে ব্যার

र्दे िकारम शांक करा गांध एवं मगर्य-नगर्य मश्माद अस्म बाह्य जला गांधा हि 9 माना नह-अमुख छ। ि श्रामित (मुम भारकाशिक किया कि महा। एक (मूम केर म कार्या भाष দেশ্যা। আৰ কভা-ঘাটেও স্থেৰ দীমা जिला की पह (य भिराधन समान्य क प्रान् * भ भ वल जो स्मित्र नेमानवाष्ट्रांस bक्षण ने कि का , त्रयाम - मां, कशानन धकारी निस्म, गर्मा मुखाला हिन्छ शासन Wanderin's of People of বলেন ्य, ना ०० वफ शक्ति दिन्नस कुद्ध (अभारमद्रहे नाम हर का । 'काकशन प्र 'न कर्यन कह मा किन (अमाध्र तरे अनुदार ने धिन क्या क्या क्या भा भग गाँछ। आ मा विकश्न नाक्त्रहे का भक न । ७ व । वार्या क्राइम किमारहे, अथन जनाम निष्टेरना यास कि करिया ? श्र ॰ **छ**। न A CHM **3569** अभगात्रन ला ग्रांखाला । (य (सम् न) गर के त्सर सा, (मशाटन एक शांकरत वर १ क. चन हमा कार्ड (अड क म (बरार- मान अर'- 'घर'त

यांग-करनत्र काञाव इट्रेंच ना। दकाशांत्र আছে সে সোনার দেশ 🕈 খুজিয়া বাহির কর। শেষে ঘুরিয়া খুরিয়া সেই বাঞ্ডি **टिल्प्स मकान (मटल ; अमनि मक्टल शिश्रा** সেইখানে উপস্থিত হয়।

ঞাতি বাস কবিতেছে বছযুগ ব্যাপিয়া। যদি শিকার করিয়া থাইত, ভাহাদের অবস্থাও ভাহায়া সুস্থ সবল থাকে, তবে প্রাকৃতিক নিয়মে তাহাদের বংশবুদ্ধি হহতেই থাকিবে। আর ভাগরা যদি চাষ করিয়া খায়, তবে क्रक मिन धतिकी माक क्रवाव मिया विमित्व,--বাছারা, ভোমাদের জন্ম আর আমি শস্ত প্রসব করিয়া ভোমাদের শিয়ও-বর্জনশীল গ্রাদের বাবস্থা করিতে পারিতেছি না। বাস্তবিক বিকর্ষণ শক্তির থেলা। ভূমির উৎপাদনী শক্তিরও তো সীমা কোন জাতি যদি অমুর্বার প্রদেশে বাস আছে ৷ যে যথন সমগুণ শ্ৰেচ়ীতে (geometrical progression) माञ्चरव वः भव्कि र ै कि ভৰনই সমান্তর শ্রেড়ীতে (arithmetical progression) ভূম ३३८० আश्रीया वश्वत ष्मामनानि क्य । তবেই স্পষ্ট বোঝা যাচতেছে, **छामत उ**९भागना भक्ति छेख्दशंख्य <u>द</u>ान পাওয়াতে আহার্যোর অসম্ভাব হয়। তথন भगार्थ की वन त्रका वाजी ज जात उभागास्त कि शांकिए भारत ? ख्र मासूय बाहे कविशा कान प्रम ছाডिया बाहर हारह ना। व्यानकिमन धक काश्राम शांकरल (मन वित्रा धक्छ। बारूक्रि कमन बामिश পড़ে। भिष ना मिथ्रा भार क्र याहेट हाट ना— हाई व्यावात्र कृषित काटक माधा-माधना हिगटक थारक। ভূমির উৎপাদন-শক্তি বৃদ্ধি করিবার

निः भिष इहेटल मिथान इहेटल विनाग नहेटल হয়। আঞ্কালকার উৎকট সভাতার যুগে "পুজ্লকন্তারূপ প্রবল বন্তার" গতি-নিরোধকারী ক্তুত্রিম উপায়ু দে যুগের লোক লইতে শিথে নার। শিণিলেও যে নির্বাসন হইতে थकन, এक मोमानिर्फिष्टे প্রদেশে একটী বক্ষা পাইড তাই। বলা बाग्न ना। याकाता তাদুশ। থাইয়া থাইয়া মানুষ জালোয়ার-বংশের একরকম উচ্ছেদ করিয়াই বসিয়াছিল; ভাহার উপৰ ভাহাদের পীড়া-বাাধি ভো ছিলই। স্ত্রাং তাহাদেরও সংখ্যা হ্রাস इटेट नाशिन। जाजा मासूबरक (महे (महे প্রদেশ হইতে সারয়া পড়িতে হইল। হচাই

অর্থ-নীতিবিদ্রা নাকি বলেন করে, তাহা চইলে তাহার সালিধ্যে যদি উর্বের কৃষিক্ষেত্র অথবা শস্তশ্যামল উপত্যকা Create शास्त्रा यात्र, कार्श केरल প्राथरमाख्य প্রদেশের জাভ শেষোক্ত জাতির দেশ আক্রমণ ব্রিয়া ভ্যায় বাস করিতে প্রালুক হয়, ইহাই आवर्षन-मंछि।

ভূতত্ত্ব-বিবরণ-পাঠে অবগত হওয়া যায় যে, হিমানীযুগের অস্ত্য অংশে যুরোপের মধ্য ভাগে বল্লা হারণ (rein decr) বড় বড় দল বাদিয়া বেড়াহয়া বেড়াইত আর ফ্রান্সের দক্ষিণ ভাগে আদি প্রস্তব-যুগের মান্ত্রৰ ভাষাদিগকে শিকার করিত। কিন্ত pleistocene (আধুনিক) যুগে আবহাওয়ার निवस्त भविवस्त कहाल शास्क, खरा धरे পরিবর্তনের অনুযাণী গাছপালা ও জন্ত-জানোয়ারের ইতন্তত প্রব্রজন चटि । যা-কিছু কৌশল জানা আছে ভাহার প্রয়োগ বুক্ষ-লভা-গুল্প ও পশু-পক্ষীর সহিত মাত্রের

তাহাদের অপসারণে মানুষেরও क्रिम। অপসারণ অবশ্রস্তাবী হইয়া উঠিল। ব্রদ-যুগে এসিয়ার ভূভাগ ছোট-বড় অসংথা হ্রদে আবৃত ছিল। শেষ ছিম্বানীযুগে প্রাকৃতিক। নিয়মবশতঃ ভাহাদের আমুকাংশই অন্তর্হিত क्रेश्राष्ट्रिण। এই বিশোষণ-প্রক্রিয়ার ফল ঐতিহাসিক যুগেও অনুভূত ইইয়াছে। মধ্য धिनमात्र वित्भावन खानानी प्राप्तन शाकिरन বোধ হয় উরাল-অলতাই জাতি, মোঞ্ল ও তুর্কদিগের ইডস্ততঃ প্রব্রজনের একটা কারণ পাওয়া যায়। আর ঠিক সেই অবস্থা-পরম্পরার জন্তই যুরোপের ধৈ অংশে সভাতা স্প্রতিষ্ঠিত ছিল, তথায় পরবতীকালের জন-मानदित्र हिरू व्यविध मूर्थ इहेग्राष्ट्रिण।

এখন স্থুলতঃ তুইটা কারণ প্রব্রজন ঘটায় :--প্রথম, মানুষের অতিরিক্ত বংশরুদ্ধি ও তল্পিবন্ধন আহার্যোর হ্রাস ও দিতীয় আবহাওয়ার ক্রমিক অথবা আকস্মিক পরিবর্ত্তন। ইহা ছাড়াও ছই-চারিটা ছোট ছোট কারণ লক্ষিত হয়। সমিহিত জাতি আচ্য ও হৰ্বল হইলে অসভ্য জাতির তাহাকে আক্রমণ করিবার একটা লালসা জাগিয়া উঠে। সমতল ক্ষেত্রে বাস করিয়া স্কৃষি भ्रम्भन भृतिक य छाछि छोविक। निर्माह করে, তাহাদের শান্তিতে ও উন্নতিতে দিন-শুলরান হয়, সভ্যভার ক্রমবিকাশ হইতে थाटक ; किन्द भिरं भित्रभाष्य कारण मिह कां कि इर्वन ७ होनवीया हहेश १८५। **७**थनरे जाहारमन थन ७ (मोर्काना मिहिङ অসভা জাতি-সমূহকে প্রসুদ্ধ করিরা ভোগে। हेजानीत कथा यहा याक्—त्य हेजानीत

থাত্ত-থাৰক সম্বন্ধীয় একটা সম্পৰ্ক দাঁড়াইয়া- শৌৰ্যো তদানীস্থন জগৎ চমৎকৃত হইয়া গিয়াছিল, দেই ইভালী উত্তরকালে নিবীৰ্যা হইয়া পড়ায় গণ, হুন, ভাণ্ডাল প্রভৃতি অসভ্য কাতিরা ভাহার সৌন্দর্যা ঐশর্যা ७ প্রাচুর্যো অক্টিই হইয়া আমমাংসলোভী ভোনের মত আসিয়া ইতাশীর হান্য-রক্ত (भाषण कत्रिश्राष्ट्रिण। कवि वाहेत्रण जारक्रश কৰিয়াছেন—"কি হতভাগিনী, তুমি ইতালী!" কথন কথন এমন ঘটে যে, বিজেতা জাতি বিজিত জাতির সভাতা রীতি-নীতি আপনার করিয়া লইয়া একসজে মিশিয়া যায়। তাহাতে प्रहें के का इस,— এक, जमलादी में इस, আর চুই, বিজিতের ধমণীতে নুতন রক্ত-নিষ্ক্ত হইয়া তাহাকে সবল করিয়া তোলে।

> ভামর জন্ত একটা অশান্ত কুধা যথন कान कान जारिक भारेश वरम, उथन म খাই-থাই করিয়া ভূমি-লাভের জুক্ত নিরস্তর थादक ।

জাতিতে জাতিতে সংখৰ্ষ উপস্থিত হইলে তুইয়ের মধ্যে এক জাতি পরাভূত হয় ও পরাভূত জাতি ইতস্ততঃ বিকিপ্ত হইয়া পড়ে। মধ্য এসিয়ার উচ্চ তৃণ-সন্থুল অমুক্রি প্রদেশ হইতে নানা জাতির বিচ্যুতি ও বিকীরণের কথা অবিদিত নাই। খৃষ্ট-পূর্ব দিতীয় শতাকীর ভৃতীয় शास हित्रष्ठ-स्र नामक এक वावावत्र काण्डि मिरे একই মূল গোষ্ঠীর যুএচি নামক আর একটা श्राजिदको-मस्भारत्रत्र महिल सीवन युक्त करत्र। তাহার ফলে যুএচিরা পরাভূত লইয়া হিম্বস স্থ-গ্ৰ কৰ্তৃক চীনদেশের উত্তর-পশ্চিমাংশ হইতে বিতাড়িত হয় ও বরাবর পশ্চিমে তাহায়া चरूण्ड इरेट्ड थाक। এर शका मान्गारेट ना भारिया व्यावास्यक्रवनिका भीत नक हरेएक দশলক মুঞ্চর জ্রোভ টাকলা-মাকান ব্যাবিলোনিয়ার উপর প্রভুত্ব বিস্তার করে। (अर्थाए গোবি) मझन्न উপন্ন দিয়া প্রবাহিত পরে আর্থা মিতানীগণ আসিয়া তাহাদিগকে हेरेग्राहिल। , এই खाতোবেগ প্রথমে বৃ-স্থন পরাভূত করেন। ঋথেদে আর্যাসভাতার যে ও পরে শক জাতির উপর আসিয়া পড়িল। অগভা শকগণ নিজ চারণভূমি য়ু-এচিদিগকে ছाড়िয়া मिতে वाधा रहेग। आत्र । मिक्ति আসিয়া শকগণ ভারতের ঘারবত্মে পঞ্পালের शांत्र कड़ रहेगा शाठक कारनन (य, अरे জাতি-বিক্তের ফলে ভারতের রাধনীতিক ভাগ্যাকাশে কিরুপ মেধের উদয় হইয়াছিল। শক ও যুঞ্চি নুপতিগণ ভারতের সিংহাসনে

रुदेशाहित्वन ७ हिन्तू निशीय (Indo-Scythian) রাজবংশ ভারতে প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছিল। ভাষাদের ভিতর হইতেই ক্রমে রাজপুতগণের আবিভাব হয়।

এই বু-স্থন এবং ভাহাদের হাভি শক, পশ্চিম শিথীয় ও উত্তর্ রুরোপের নডিকদের मध्य काष्ट्र विष्ट्राच्य . १, १२ । त्रा वावावत्र জাতির লোক ও ক্ববি-গীবিকা অপেকা ইহারা পশুচারণ করিয়া জীবনধারণ্ট অধিক্তর পছল করিত। ইহারা সামহিত জাতিদের একটা বিরাট অশান্তির কারণ হইয়া माफारेश्राहिन।

মেসোপটেমিয়ায় একসময় যে আশ্চর্য্য সভ্যতা বিশ্বমান ছিল তাহা লেয়ার্ড, বটা (Layaerd, Botta) প্রভৃতি মনীষিগণের कलार्ग काराव्य अविभिन्न नारे। आनितीय्रान

হয়। এই ক্যাসাইটগণ মিডিয়া এলাম ও নিদর্শন পাওয়া যান, মিতানীগণ ভজ্ঞপ ুসভাতায় অগত্ত ছলেন।

যুরোপে ভূমধ্য-সাগরের উপকৃলে বছ জাতির উদ্ভব হয়। তাহাদের নানা শাথা-खमाचा खावाम मिन गुरतान, नरम शन्तिम युर्वाभ ७ विधिम दीपशुरक जारम, उपन ভাষাদিগকে নব প্রস্তর্যুগের লোক বলিয়া धरा क्रेब्राबिन। ब्राहेका त्रान्म् (Rica Holme) दाकान (य, शृष्टे-भूकी : ४०० व्याप व्यामिशाहिन बार्कित (बार्किता दिएएना द्याक्ष था जूत का मनानि करत्र ध्रवः थृष्टे-भूका ৮०० अरक কেল্টিক জাতিগণ ঐ দ্বীপপুঞ্জ আক্রমণ করে। वरूकान धतिया एक गाँउ का जि बाहेन न सब निकर्टे मनवस रुरेशा भारत छेरा भांत रुरेश आएम আসিয়া উপস্থিত হয় ও গৃষ্ট-পুকা সপ্তম শতাকীতে दिन का किया वरम। शृष्ट-भूक सर्व निजामीटि ভাহারা বোধ হয় স্পেন অধিকার করে এবং ইভালীভেও সেই সময়ে আবিভূত হয়। পশ্চিম জন্মাণীতে অবস্থিত কেলটিকগণকে **डिडिडेन्सन विस्नी अनित्रिडिड आशा निमाहिन।** এটুকু লক্ষ্য করিবার বিষয়, ব্রিটনেও স্যাংশ্রো-সাাক্সনগণ পরাজিত ব্রিটনদিগকে Walas বা অপরিচিত বিদেশী বলিয়া व्याचााठ कत्रिशाहिन। जाहा हट्टिह कामानाइंडेगन कर्ज् क विक्रिष्ठ ७ मिनिक जोशामत्र ६ जाशामत तिल्ला नाम Welsh জাতিতে পরিণত হইয়াছিল, বাবি- ও Wales হয়। ভাহার পর টিউটনজাতির লোনিয়াগণ হিটাইটগণ কভূক পরাভূত হয়; ইতস্ততঃ পরিভ্রমণ ক্ষুক্ত হইল। খুই-পূর্ম ইহারা আবার কাদাইটগণ কড় ক বিভিত চতুর কিংবা ভূতীয় শতাকীতে ভাহারা , कन्हिन निर्म करिया मिया वर्ष कर्ष कर्ष कर्ष कर्ष कर्ष कर करिया जिल्ला भारक পথাস পাইতেছিল। খুষ্টায় বিগায় শংক্ষার उद्यशक्त छ। नयून नामद्र भोगास्य विकेतनश াষণ গাৰে চাপিয়া আসিরাছিল, কিন্তু মাকাস আরালয়াসের জন্ম ভাষা 🔊 তটা আশকাব ব্যাপার হইয়া ভঠে নাহ। 🐚 র পর গণগণ রোমানাদগের সহিত ক্ষুষ্ণাগবের নিক্ট যুদ্ধ कार। शृत्कार इनराम क्रांनी भाक्रमान स्माकृष्ठा वस्त क्रांन, व्यान वस्त्री। क्षा वालग्राहि।

ममाध यथन (वर्ष श्रायो क्य, उपन्छ गाय भारता उक रक मण (काक (मण एक त्या अवस्था विश्व विष्य विश्व विश्य विष्य विष नाम किर्यानद्यम-क्ष्मन। कार्नु तक ग्रा व ना थे। न इव द्राह्मा का का एक का क रहित मा। जाकिराककांत्र श्राण धानन जान भाग ता जिक काम्रण कराज लक जाक छो। । । । । व्यक्त साम्भाग वनवाभ कंप्रट श्रेट । क मन या व स्टिम् छेल। नर्दमे छालर न कथा श्वारमाहना कतिर्ण ভाशत कानन अनाराम किस्तित्र ६३८७ भटिया **अध**म जीमाधनीय छेनानद्यम-खंबद कथा सता याक्। नागावक मिर्गत मध्या ज्यानक ममम् शृश्यिताम উপन्तिक कहेता একটি দলের নির্বাসন হংত। কখনও क्यून ८ (माक-मश्या तुक्त भाई (म व्ययमा খেদাখেদি হহতে গরিতাণ পাইবার নিামত -जिथ्या कु-मामन इडेएक पृत्त थाकियात कञ्च व्यत्नदयः विकारण शिश्रा थात्र कविछ, छ। हार्ह चर्निय में अर्डी क्षांक्ष वैधि धना नियमित অত্যাচার থাকিত না। সাধারণতঃ যেখানে वावमारमञ्जूषिना इन्हेलं स्मर्थारम्हे निम्न ভাহারা উঠিত। কথনও কথনও নগর-यामिशन-- ५ में छ। यूनक म्थापाया क नश्र

कांक्का बाक्नालिक क्षिणात्व न क्षेत्रांग-Lan & Adian (अम्मिक्सिय प्राप्ता Calue मन्नक था। ४७ -।--- छेछ। ४३ छ ७ । इत् न्यनगीन। भाष्ट्रवाहें ७ ছो० छ्-श्राह्मेव मस्या ধথাচ একটি বন্ধন থাকিক্ট—ভাহা बाक्ना इव वक्तन नव, धरक, व्यप और बक . উভয়ের মধ্যে একচ ধ্যাসম্মান । বচার आधारा "रिम्म यमगार्या प्राचन राप्त-(पर्या-इ शक्ष मान्ता इक्ट, श्रांटन यक्षीय लाइट द "रू " ६दे छ । आत्र यथन माज-वाटका श्रम न श्रमान सम्भादन । १०५, छन छ ६७-বাঞা তথায় প্রতিশেধ বাচ্চয়া মর্বাদে श्रीपंछ। व्याद्यं पृष्टे ब्रांटका युक्ते वाथा व्यर्भटक অস্বাভাবিক ও পবিত্র বন্ধনের ডল্লজ্খন বলিয়া मत्म कविरख्म। किन्न ७.जांठ त्यांबरख शांके त्व (Countle) किव्य ५ क्वकार बाज मत्था शांकिम १ युक्त वार्षभाष्टिया नृ अन छ्रानिद्वम স্থানে গিয়া ত্রীকগণ প্রথমেন্ট নগর স্থাপন কারত এবং ধন্ম ও সামাজিক জীবন নিৰ্বাহেন নিমিত্ত যে সমস্ত বাড়ী-ঘরের দরকার হচত শহা নির্মাণ করিয়া কেলিত। माकु-ब्राष्ट्रि (व मन्छ ष्यद्यांन र्व्या छान थादिक, डेलानट्यटम्ड डाङावङ অञ्चल (नथा याहक। कारकह उपनित्यम-अमुर्क जनिक-विवारच जन्मत्र ज्ञान समामानात्र, नार्गावकन्नरनत्र -প্রকাষ্ট সভাত্ত, বায়ামাগার ও ন্টাশালা স্থাপি: হইত। তবে ইহাতে বিশেষ শক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে, উপনিবেশ-সমূচে श्रधानकः गन्धक्षत्रहे श्राटिष्ठ। पृष्टे व्हेक, कथरना कथरना माज्यारद्वेत भूर्याहे जारा

ক্ষত 'এবং অভিজ্ঞাত-ভন্ত বড একটা সে
ক্ষমিতে ফলিত না। আর ইলা হওয়াই
আভাবিক—বেহেতু প্রথম উপনিবেশ স্থাপনেব
বে কষ্ঠ ও গুরুত্ব তালার সমান অংশ
সকলেই লইত; অভএব সামাই ভালাদের মন্ত্র
লইয়া উঠিত। দিলিশ ইতালীতে উপনিবেশ
স্থাপিত হইল ভালার নাম হইল বহুৎ গ্রীস।
আরও দেথি যে, নৃহন নগর স্থাপিত হইলে
পুরাতন নগরের নামান্থ্যারেই ভালার নামকরশ
হুইত। যথা এসিয়ার Ædlic 'Cymeএর
নামেই ইতালীর Cumae নাম হুইয়াছিল।

(त्रामानएकत्र উপनिद्यम क्तिश हिल १ मुला ३ हे हो द वर्ष, हारी पिरान द राया ; कि स বস্তুতঃ ভাষা ছিল না। রোমীয়গণ শক্রিগকে পরাঞ্জিত কবিলে তাহাদিগকে সম্পূর্ণ কবলে রাথিবার নিমিত্ত ভাহাদের দেশে চর্গের মধ্যে रमञ्जापन कत्रिछ। इंशर्ड छाशास्त्र উপনিবেশ। সাম্রাজ্য স্থপ্রতিষ্ঠিত ক্রিবার हेरारे हिल छार्रात्म अञ्चलम छेलाम। आत একটি—হুদুর রাস্তা নির্মাণ। আর ব্রিটেন-ব্দরের পরে এই তুই উপায়ই তাহারা অবলম্বন করিয়াছিল। রোমের ইতিহাসে পড়া যায় যে, নাগরিকগণ নৃতন জমি পাইবার লোভে গৃহত্যাগ করিয়া দুরে গিয়া উপনিবেশ স্থাপন করিত। রোমেব নাগরিক হওয়ার জন্ত ভাহাদের যে অধিকার ও স্থবিধা থাকিত, ভাহা ২ইতে কেম বিচ্যুত হইত না ; এবং ঘটনাক্রে রাজধানীতে উপস্থিত হইলে পূর্বের মত ভাহারা ভোট দিতে পারিত, যেন ভাহারা **(बाम छा। करब नाहै। (महे नम्दाह**े ভাহারা মাতৃরাষ্ট্রের আদর্শ-অন্তুক্বণে নিজে-दात्र नुखन एव शिक्षां गरेख। जकन तकरमरे বেন ভাহারা একটি ভোটখাট বোমে আসিয়া বাস করিতেছে— এমনি ভাবেই রোমের রাজনীতি ভাহারা গ্রহণ করিত।

এথন ভারতবর্ষের কথা আলোচনা করা याक्। कार्याद्रा'। शृष्टेत कत्याद कृष्टे महस्य কবিয়াছিলেন। বহু শতাক্ষী ধরিয়া ভাঁচারা **পक्षनरम** छेपनिरयम **ऋ**। पन कतिया छ्छाङ्या অন্ত এই ক্রম-বিস্তায় পতিয়াছিলেন। বাজপুতানার মরু ও খন বনানীতে ঠেকিয়া গিয়া বাধা পাহয়াছিল। যথন তাঁহারা বেশ এक त्रकम व्हिंड इह्माइिट न ७ शक्षन ए সভাতার স্ষ্টি করিয়াছিলেন, তপন তাঁচারা দক্ষিণ ভাষত্বর্ষ, লক্ষা ও ভারতীয় দ্বীপপুঞ্জে উপনিবেশ স্থাপন করিতে বেশ প্রায়াস পাইয়া-ঐতবেষ ব্রাহ্মণ পাঠে অবগত ছिल्न। क ७ जा यात्र, कुमात कीम विका भात करेगा আসিয়াচিলেন ও বৈদর্ভকুমার আখ্যা লাভ করিয়াছিলেন। বিশামিত্রের পঞ্চাশ পুত্র পিতৃকর্ত্ক অভিশপ্ত হইয়া "সামান্তে" বাস किशां ६८ तन ७ वन्तर आपिम साविभित्रत সহিত বিবাহ-স্ত্রে বন্ধ হইয়াছিলেন। हैशद्राहे व्याक्त, श्रामिक ও শবद्र প্রভৃতি জাতির পূর্বাপুরুষ বলিয়া খ্যাত হন। মহাভারত ও রামায়ণে ইগরা দক্ষিণ-ভার্তবর্ষের জাতি বিশিয়া পরিচিত। পাশি গ্রন্থ স্ত্রিপাতে লিখিত আছে যে, বয়রিণ নামক একজন वाक्य अक्र छेखत स्ट्रेट यानिया यथक ब्राह्मा वनवान करत्रम। विष्यद्खाता वर्णन (य. মথুরার নিকট পাতু বলিয়া এক আব্য ক্ষতিয় জাতি ছিলেন এবং দক্ষিণে যে পাণ্ডাদের বিবরণ পাওয়া যায়, ভাঁহাদের সহিত এই পাঞ্দের

এक है। সংযোগ আছে। अथा। भक का खांत्रकत বলেন (Carmichael lectures) বে, মেগান্থিনিস যে বলিয়াছেন যে, দক্ষিণ পাণ্ডা'দগেব সহিত বমুশা ও মথুরার একটা সম্পর্ক আছে, ভাঞ্জী সত্যের উপর পাৰ্ষ্টিত; যেতেতু প্লিনি ও ট্লেমি প্ৰভৃতি जीक टमकरान वरमन त्य, मिक्स भाषारम्य রাজধানী মহুরা। মাদ্রাজ বিভাগের একটি क्षमात्र नामल जै। मिक्स्पित शास्त्राता एव তাহাদের রাজ্পানীকে মাধুরা বলিয়া আভহিত করে, চহাতেই স্পষ্ট প্রেডীয়মান হয় যে,ভাহারা ভত্তরের এমন একটি দেশ হহতে আসিয়াছিল ষাহার রাজধানী মথুরা। নৃতন স্থাপিত **छिभ'नर्वरम्व नामकत्राण (य मनाउन क्षण)** অহুস্ত হয় ভাহারও বাভিক্রম ২য় নাহ विভাগেব নাম পুরাতন নগর ও বিভাগের नात्मह त्राथिया थाटकन।

সিংহলে ভূতীয় 'মথুরা'(Motura) ৭ পুর্ব দ্বীপপুঞ্চে চতুর্থ 'মছরা' পাওয়া যায়। সিংহলের পুরাতন নাম ভাত্রপণী হছতে বুঝা যায় যে, हित्रिक्ल (क्लाइ (य डाअभनी ननी चाइ ভাষার উপকৃশাস্থত বাজিগণ গিয়াই সিংহলে उभानत्यम-स्थाभन कात्रश किल--- (यमन मिस्तम **इंडेट ज जिल्हा अ माम र**∽शांटि । त्यर्केश वर्खमान निकारमत वारका পिएठोन वा रेपठान বলিয়া একটা নগর আছে। গঙ্গা ও ধমুনার সঙ্গমস্থানে বছ পূর্বে একটা প্রতিষ্ঠান নগব ছিল। छिन्निर्वन-सानन कथरना कथरना करवंद करन হটত। যেমন পূকের উদাহরণগুলি। শান্তির সময়ে ধর্ম প্রতার ও বিস্তার করে ভ্রমণ ও কোন কারণে নির্বাসন ও অগ্রাপ্ত হেতু।

ভাষার সাক্ষ্য (পালি) যদি লওয়া যায় ভবে निःमत्मरङ् विलट्ड भात्रा यात्र (य, आर्थात्रा দক্ষিণ-ভারতে উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছিলেন ও জাবিড়ীয় ভাষাৰ উচ্ছেদ-সাধনে সমর্থ না रुवेटन अ मांकरन वादा-ভाষার চলন रुव्याछिए। প্রাচীন এবং অর্বাচীন তুই যুগেই পুরাতন महत्वत्र नामाञ्चात्त न् ७न महत्त्रत्र नाम-कत्रव প্রথা একরকম সার্ক্তিক। 'আপনারা ভাগল-পুরের মিকুট ৮ম্পা-নগরের নাম শুনিয়া थाकिर्वन। हम्भानमीय छेभन्न खेनग्र हिन (এथन डाकाय नाम ठण्या नाना क्रमाछ)। এহ নগরটা বাদ্ধফু ছিল এবং আমরা জাতকে পাড় যে, মগণেব দহিত চহার ঝগড়া ছিল ও পবে हेरा यगस्त्रहे अञ्च क हरेया यात्र। মিষ্ট অপচ উত্রাগন্ধ চম্পক ফুলের জন্ম এই স্থানটা অর্থাৎ ঔপনিবেশিকগণ নুত্র নগর অথবা বিখ্যাত ছিল। যথন ভারতীয় ঔপনিবেশিক-গণ কোচন-চায়নায় যান, তথন ঠাঁচারা शक कि उभागायाम्य नाम अहे विशास नगरतत নামেই বাধিয়াছিলেন। এই ছিতীয় চম্পার व्यभिवामिशन (बोक्त फिर्णन। এशान এक छै। कथा वना जञ्जामिकिक इस्टर ना त्य, (वोष्ट्रता চম্পক বৃক্ষকে বছৰ পবিত্ৰ জ্ঞান করিতেন— (कन नां, এই हम्लोक कार्छ इटए उट्टे वृष्टादिय वर मूर्खि गठिंछ २२७। मधार्य किमयु ननी द উপকৃলে অযুথিয়া নামক নগব। কেছ কেছ वलान ८४, व्ययूषिया = व्यत्याक्षां ७ हिमयू == সরযু। কভোজ হহতে ভারতীয়গণ যাইয়া कारबाडिश अथवा कांग्छाञ नामक উপনিবেশ স্থাপন করেন। খুষ্ট পূকা ১৬র্থ শতাকাতে এই काष्याध्यात्र (वोद्धश्य धार्यन गांड कांत्रशा किन वानिया मदन इया थुष्ट-शूक्त ७० **जारक ভারভারগৰ যবদাপে যান ও সেই দেশের**

, वारक निष्ठ कारह (व, १৮ कथरा ১>৮ খুষ্টাব্দে একজন ভারতীয় রাজকুমার ভাগায় कारुवादी (১৯২०) मःभाव Indian Antiquaryto Sir Richard Temple बिश्चिम्राटकन त्य १० ८ ८५१ शृहेशकत मत्या यवणील, व्यानित ७ जमाजांत्र टैनव हिन्दुरचव আ'বর্ভাব হয় ও সমাত্রায় একটি কিনুৱাকা थि। हिंद के क्षेत्र के वा के विकास कर के विकास कर के हहेट यव ७ ख्याबात्र ८वोक , महायान उत्त नोक इम्र ७ ०৮৪ ० २०४८ युद्धारकाम भाषा धनदौर्ण किन्द्रवन्थ ब्राह्मच करत्र। स्कावश्रम चामन् मिश्ह्रण डेक्स्पना ७ क श्वनान्य (मिथिट । छक्रिया अभव वृक्षत्राप्त শাকাগ্নি সমাাধলাভ কারয়াছিলেন বোধ-प्राप्त म्यात । एक भ्वनागारम वृक्तान वर्षवात यद्यान्द्रम् निद्राष्ट्रियन ।

त्यत. इ.जात ति के क्या लभारी परंत कर्य १० ३৫ ३ थुहेरिक ८ एक । छ - ग्रामिका छत्र कि। बर ड मग्रनिधितादशा श्राद्यम काशन ५ दबन। व्यापन-<u>क्सिन्छ। ज्ञातालक क्रेड</u> कर्छाचा क्रिन खाटक निन्द्रस् हेका (क्ले.चर स्थाभक कार्डावाद नामाद् कवाबह स्थाभिक हे मा किल।

ध्यापम मधाकोति करवर्ण देशान्द्रम ञ्चापन कतियात এका उपमार भारताक । इस । त्यांमन रुष्यक त्य्यादन स विदारे व्यागाए। ধ্বণ্দ বিয়া তাহার সমদোগিপত্য ছনপ कात्रयां बाइल, अन्तिम ६३८७० शकु ० अखादव देश्मरखद डिमानरमन-इामन द्रांक পাহতে গাণিল। শীভ-প্রপীত্ত নিডফাউও অধিবাসীদিলের সাহত ইংরেণগণ শ্রীতিপূর্ব

ল্যাণ্ড প্রদেশে উপনিবেশ স্থাপনে ক্লভকার্য্য ना इर्लंड এउছ्लिमा ख्रांत्र उद्यान व मार्ग क्य'क शिमवाटिंस नाम **हिव अस्ती**स क्टेस थाकिरवः। मात् अव्यवहात्र ज्ञातिषात्र উত্তর-উপকৃষ / ক্রাকার করিয়া তথায় लिश्नित्यम क्षार्नेन-भानम् वे काश्र्वाणि शहक कांत्रशाहित्यन। डेश्यरखन्न नानी अध्यक्षाद्यथ क्यात्री भाका ८०५ के कांत्रशांत्र नाम रान গিল, ভাজিজনিয়া। ইহা ছাড়া তথনকার व्यार्कितम् । एवं है- शिक्ट्रि शिक्ति है निर्देश निर्देश निर्दिश त উপর বড় নাবাজ ছিলেন; ভাঁচার শাসন का कि कहे व्या शवास व्यासक शिक्षेत्रियान क्रिक्टिक क्रेश्वरवाशामना कविएक शहरतन वामग्र (मम गांग करवन। ३७२० युष्टात्सव करे (मर्ल्डियर (म क्षेत्रात नामक काकारक खारवाइन कविया भराधिक नवनावा ५ मिछ আধুনিক যুগেও আমরা দেখিতে পাসমাউথ বন্দর ত্যাগ করিয়া যায়। ভাহার नाम (ब, बहे ज्ञानरवम शामा, रम्लान, रमान कर नामक शास सवस्व करिया छक अर्क् जाम ७ रमा ७ रमा १ प्रवाहरा ह सामिति साम जिन नु न शाम्या छैप। अर न्यामभाग श्रीश्रामा fathers विषय भित्रिष्ठ ।

> **एमम जानि करिया विस्मानामान कावस** (क ० व्या क्या काम्प्री বন্ধন হচতে মৃক্তিগাভ ক্রিবাব জন্ম ও श्वरम्दान्त्र विविक्तिक व वाक मामन भविष्टाद्यव र्मायल के अरमरक । भाग कार्श करवन । त्यापुन म श्वार के कथाना कि के वका नाम वह में भी वाम ভাডিয়া কেপ অফ শুড হোপ অথাৎ উত্তমাশা अरुवादेश आभिया थात्र कदवन । डेराटिन नाम व्यव । किस ३৮३८ थृष्टात्म উठ्यांमा हेश्त्राक-क्रित्रय कार्यान इंडरन (महे (कार्यात क्यानिम

वावशांत्र नो कर्त्रा ८२७ डिकोत्रा ठित्रा ब्यात्रक इत्र । ১৪৯৯ बृष्टीत्म व्याप्तित्रित्रा (कन्नशृष्टि नुरुन উত্তরে চলিয়া সিয়া নেটালে ও অরেঞ্জ এনী वाम कतिएछ थाएकन।

नमरह हैश्टब्रक्क १व किमानरवर्षे छापन व्यापादक বেশ-একট্র অগ্রসর হটয়াছিলেন। ১৬৬০ चुलेट्स बिडीय ठार्लम् छाराव करत्रकसन वक्वाक्तरक द्वातिषात्र किश्रमः मान कत्राटक, তাঁহারা কুভজ্ঞতা প্রকাশ করিয়া রাজার নামেহ फॅर्नान्दर**म**त नाम दाशिदनन, काद्यानिना। "न्डन देश्नाख" नाभीष উপনিবেশের कथा कामका कानि। कार्यातकार न निष्ठ कामहे-र्जाम" नाटम खनमाकत्मत्र এक नि छे भनिदनम ছिল। कि ५ ५७७८ यृष्टी त्य ४ १ दब्र का ता व्याविष्कृष्ठ क्ट्रेटल काशत नाम भान्द्रीहेश नुकन नाम ताथा इरेण निष्ठ रेशक । है: ८१ छ (नी-বাহিনীর ংগ-পোতাধাক ডিডক অব ইয়র্কের (যিনি পার বিতীয় কেম্দ্ হইয়া ভিলেন) নামে उद्देश नामक दल इस् । ১৬৮১ शृहारक टकार्स-काव धर्यानमधी উইলিয়ম পেন "तामाइंडी (अक्षम्" मामक कडक छाँग यक् गरेश छेपानिर्दम शांभन कर्यन-- (भरत्य नार्यके काहाय नाय हम পেনসিশভেনিয়া। ১৭৩৩ খুষ্টাব্দে কভক-গুলি ঋণগ্ৰস্ত ও উৎপীড়িত জার্মান প্রোটে-है। केटक बाध्यम निम्ना (अभूम अभ ल्यान्य अकि। উপনিবেশ স্থাপন করেন ও ভদানীস্তন हेश्मरश्चमात्र विकोष कर्ष्कत नाटम छेशरक किन्द्रा नात्म किन्छिक करतन। विथान दानी - ভিক্তোরিয়ার নামে অষ্ট্রেলিয়ার ভিক্তোরিয়ার नामकत्रण इत्र। हेशांत्र त्राक्रधानी उत्तानीसन प्रधान मधीन नात्म दमनत्वार्ष विषया पाणिक्ञ

জগতে পিয়া উপস্থিত হন ও নিজের নামারুসারে উহা আমেরিকা বলিয়া আখ্যাত করেন। खेशाङ्य वाषाङ्ग्री बाख नाहै। देश वीकटनह व्यापम रक्षम्म, क्रम स्टार्श्व ७ विकीय ठार्लरमत्रं यर्षष्ठे इहेर्टन र्य, कि श्रवाकन कि न्कन मन युर्गिक ऐपिनिर्दर्भन नामक्ष्म जह छार्वहे रहेश जाभिएट ।

> षाष्ट्रिणियात्र উপनित्यमं श्रांभत्न त्कान कावा-्कान '(तामाका' नाहे। >१४४ पृष्टारम (वाष्ट्रीन (व-८७ (ब्बटनंत्र करम्बी भाशता रहेशाहिन,— त्यमन ভারত হইতে আকামানে करमणी भाठान कम्र। व्यञ्जाव छेहा करमणीत्मन व्याप्त इहेग्रा माँ ए। हेल । এक नमरत्र कर्मिश्व হট্যা পড়িল। কিন্তু বিলাতে যথন স্যন্ত্র ववार्ड शील मखिविध चाहरनद मन्द्रात कदिरमन, তখন করেদীব নির্পাদন স্রোভ কিঞ্চিৎ মন্দীভূত महिला व्यक्तियात छैस्त्रका अभिक, काटकर (मगारन खेनानेश्वानकगरनत्र जाममानि ক্রমেই বাডিয়া চলিল। আর উর্বের ক্ষেত্রে শস্যের অভাব না হওয়াতে লোকসংখ্যা বুছ পাইতে লাগিল। তথন তাঁহারা অষ্ট্রেলিয়াকে करमिरितत्र जाएए। कवात्र विक्रा ध्वा প্রতিবাদ জুড়িয়া দিলেন। তথন কইতে हामस्मिनिदार्ड कर्यमी हामान स्ट्रेंड मानिम। चार हो लिया के इन्हिन भारत व्यवस्था किया স্বায়ন্ত শাসন লাভ করিল।

"Deserted Village"এর কবি আক্ষেপ क विद्राट्य त्य, थनी किमिनाद्रशन निरक्टमत अत्यादमामान किवाद कक निदोह अवादिशत्क উৎপাত করিয়া দেশতাাগে বাধ্য করিয়া-हिर्णन। अभिगादत्रत्र काजातात्रत दिर्शनदिष

স্থাপনের গৌণ কারণ বলিরা ধরিতে পারা यात्र ।

ইংলভের উপনিবেশ-সমূহের মেশ-মাজুকার প্রতি সপ্রান দক্ষিত হুর; ভাহার প্রমাণ, প্রভৃতি প্রেলিবার, জন্ত থেলোয়াড়য়া বিশাতে बुदबारभव क्करक्क — बाहाब किवापूर्णिक कामिया शोरकन 🏃 , व्यथन अन्भूर्व निर्वाणिक इम्र नारे। भूटर्व अश्यूष्ट प्रेनिट्यम-श्राभटनम ककक्षानि গ্রীকেরা বেশন

Olympian অথবা অন্ত কোন জাতীর क्वीए प्राप्त यात्र मान क्रिक, তেষ্ন ক্যানেড। বা অষ্ট্রেলিয়া হইতে ক্রিকেট

উপনিবেশ হইতে স্থূল কারণ নির্দেশ করিলাম।

क्षेकामीशम विका

व्यवस्य कीवन

कित्रमात्र उन करके द्वांडे अकथानि किंद्रकांडे वाशान। विनेटकत पंकरण टकांड अक्यांनि वाड़ी, वांगारनत निटक शंबान्या। वाबान्या त्थरक नामवात्र किन्छि। क्षिया का पाय मामा क्षेत्र कि एक एक विकास कि विकास वित्रमिटक **टियाय,** जात्र मध्या अक्यानि आत्राम-द्वीकि। পিছনে বাম পক হ— তা শব্দে বাগান আর बोखांत्र मात्वं 🕏 💆 त्रिवाः। पूरत्र शाक्तित्र शाक्ति। आत ভূণাজ্ঞাদিত ভূমি। শরভের গোড়া, দিন প্রায় শেষ হয়-হর। বাগানে পভীর গুরুতা। र्भान (बादबामान সুলগাছের কেরারি তৈরি করছে। বুড়োমানুব, তার नफ-नफ हुन माना इत्य रशहा क्रिक काउमराज्य स्वादक क्षा बहरायां स्पटक मिष् पिरव नामरयन। छात्र नर्दिम आत्र गाँछ, पाछि रणीक পরিষ্কার कामारना, मापाछून एकां कोटन के कि।, कावजूषि किन्न अवत्ना करून आहर । भव्रत्य अकृष्टि मामानिष्म कारला त्यायाक, हिटलहामा शांद्य दवन मानित्यदह। माथाय अकृष्टि मछ काटला हिलि।

राष्ट्रमध्यत्रकत- এই य वाद्यामान, जात्ना @ ?

Cवारवामाम—सम्बात मणाहे। षाव गरदात्र मिदक शिरमिस्टान वृद्धि ? राउग-ना।

(वार्या—षाख विरुक्त वाशास कांकि থেলেন না, তাহ ভাবছিলুম হয় ো বা…

हिन्ता, त्याकात ७११ अस्त्र। माणाहे। এक है ধবে ছিল। কি কর্ছ এখন ৭ সমস্ত ৰাগান (अ) श्रीष्ठ (कांशारना इरब्र (त्रल ।

त्वादवा—ना हत्न हत्न कह ? कदव রাত্তিরে ভূষাব পড়বেবলা যায় না ভো। অক্টোবর মাস পড়ে গেল। এখন আর ष्यानात्थङ्। मिर्न हन्दना। २० मारमञ् मत्र काम गरन शर्फ ट्या है मक्तार्यमा व्यामहा वाहरत यस किनूम—२৮ व्यक्तित रमिन, भद्रमिन ভোর তিনটেয় সে की क्रात्रहाई अस्ता। ५१, ५४ माला (मह अकहे द्रक्म। ना मणारे, পরিষ্কার দিন দেখে আর ভুগি না।

राउन-- किंक कथा (वाद्यामान। (डान्न काल (मध्ट गांगरणन) अधारन कि भांजा र्ष । (भड़ोत्र विखात्र जिनि मन र्रणन, क्राक्श कर्रामन ना)

त्याद्या—क्रिक क्षे कथारे जाभनांदक वनटल छारे— করতে--

(वादमा- (क्यांक इत्म) कारक क्यांक वादम थादम किनि यमरणन) कथा क्लाइ—ब्राह्म अवस्ति वार्यन क्लाइक- व्याद्य-(हमटक क्रिके, काक्नाकाफ़ि त्नर्कत्र मानि। अकट्टे डात्र खमद बार्ट, माश्रात्र हेनि थूरण) बाहा-हा-मणाहे-डाहेर्डा छ। रहाक, लाकि अकट्टे कारन-त्यारमध वरहे। — (कन्काम डेस्ट्स निकाक) टक डाटव পড़िएह— जात्र टनगटकत अभव शाउँग—है।। आग्र जिन कथरना वाहरत विभशाना वा छात्र ८५८वछ ८वणी ८कछाव जामद्वन ना द्वादेवामाम, जामारमञ्ज मरम छोषा षाट्या छाई छाटक मार्थि भार्य प्रथक्षी कथा किछात्रा कत्रि—जाटक कार्य धमन भाग 4-

হাউস— (ওনে) না—ইয়া হাঁ৷ তাই করা উচ্ভ · · ।

(वारता—बारक कि कत्रया र

किছ्याज अमल त्नहे।

(बारबा—(बारबा कावां क हरत) कारक (बारबा—कारक, का वरहे।

हाउन-(পূर्क्त मछ) ठारे कबारे ठिक, पिन वाटा। व्यक्त भाग मत्मर कि ?

मणारे...

T BURUS

ना त्मम (छ। बिरक्षम कवि—कछिनमिनद- छाँदक (छ। वृद्धा वरण' मरन एक ना। धवारत গিয়ী কি ভালো নেই? (হাউসভেরকের গরমের সমর তিনি বথন ভারি রোগা আর निक्रम्बर, (बारबामान वाश्राक्त) बारक कामि काकारण हरते शहरनन-ज्यम रनारकत्र

(बार्यामान य कि केवन निर्म रमितक छावित्रमूम-छिनि योगन बाहरत वितिस-ছিলেন ভারপন প্রায় তিন হপ্তা হবে পেল—

शांक्तिम्। जांक क्यांक्षत्र माज छाथा शक्ति-किनि मात्रा श्राह्म-कृषि य * তাঁর খোঁজ নিচ্ছ তাতে খুসি হলুম—কাউন-राउँम- (व्यक्तमनक्षांक) रक ? मिनद-शिशी मादा श्राहन, व्याल १ (टिविटनद

कत्राज् ।

(वाद्या-काटक এ॰ कि मख्य। উनि যে এতটা অব্রন্ধ তা তো ভাবিনি! (মাধা (नएए) जात्र वरत्रमहे वा क्षान कि हरप्रहिल।

हाउन-कि वरझ ध्वाद्यामान ? वरमन इश्रमि ? जावच जामात्र ८५८वर गांक वहरत्रत्र राउन- त्म या बरमरह । आमात्र छाट्ड (हार्डे हिर्दिन) उन्हर्मात्र बरमण्ड व्याप याउँ दशन।

मणारे, व्यामि एका अथरमा किছू विणिमि। हाउँम-७वूब, ल्लाटक खत्र एटरम् द्विमी

(वाद्रा—चाटक डाटक महामस्ना বোরো— (রীতিমত ভর পেরে) আত্তে, দেখতুম—গত পনেরো বিশ বছর একর্মশ্ল প্রায় ব্লোজই দেপতুম—তাই—

हाउन—(त्यन त्यत्य किंद्रान) कि हाउन—है। विन वहत्र कार्य कामग्री मवाहे व्यक्षवहांन हिनुस वर्षे !

(याद्या—चाटक, वृत्यिहि—चान्यां यमि (वाद्या—किन्न छहे दान वहृद्यक देक

ভাষা আশ্চয়ি। ছিল না – আজে আমিই धकानन, मरका उथन यानककन उउरा (शरह, क्टेक भाव हर्ष (यरङ व्यरङ डॉरक **(मथनूम अशांदन यरम' मरम्राह्म, मरम हम—** व्यर्णत्राय त्नाट्यन ना---जथन मान इषा निक्तत्रहें कां डेनिमिनत-शित्रीत (ছाট বোন বসে' আছেন।

काउन—(क्रमकान हुन करत्र' (शत्क) है। (वाद्यामान, ভারপর आमारमंत्र (ममारक বন্ধু ফ্রাঞ্জ কি বল্লে বল १

(वाद्या-- चाटक ना ना, तम-मद कर्षा যলে' আর এখন বিরক্ত করবো না। (তার হাত নিয়ে চুমো থেয়ে) এ বে কত কট তা আমি বুঝি, আমারও একদিন জা ছিল, তাকেও মাটির তলায় - (হঠাৎ যা বলেছে ভা ভেবে সে শহিত হয়ে উঠ্গ) আজে ভার मारन- कामि वलिल्य कि-

হাউস—বুঝেছি বোরোমাস। (আবার क्रमकाम भव हुनहान)

বোরো — আর ছেলেটি মশাই ? हाडेम- (क १

यगिछ। ७३ की ख्यानक। यर्थन छारि সারা গেল বছর তিনি তাঁর মাকে কেমন करत वाहरत जामरङन, ভারপর जावात मरका (बनाय जामरजन जारक नित्य (बरज-

राष्ट्रम— डा वटि । (वठावा !

আসেন না ? ভারও কি অহখ না কি ?

তো রোজই আশা করাছ তিনি আসবেন। ভিনি বেড়াতে গিয়েছিলেন, এখানে ভো হাউস—কিছু ভো করা চাই বোরোমাস।

- এলেই হল একদিন। তার বিশ্রাম দরকার र्द्राष्ट्रग--- निर्वाक अकट्टे ठाका करते रमध्या मत्रकात्र — जावात्र डांटक कांटल मानट स्टब ভো ৷

त्यादत्रो—चार् कं.हँग छ। देवकि । वित्मव তার মত কাজ যৈ সব লোকের---

राष्ट्रम-कांक वरण कांक-कवि! (দাঁডিয়ে উঠলেন) কবি! ভার মানে কি कारना १

(वाद्रा—चाटक हैं। कानि देव कि मनाय---

हाछेन-ना ना जुभि खान ना-किहुरै कान ना। जामश ७ महस्स (क उँहे कि छू জানি না—সাধারণ মাত্র আমরা—আমরা क्या भारि निकारमञ्ज वाशास्त्र वरमे वक्यक করতে---

,, (वाद्या—चाटक दम कि चटनन, चार्शम তো এক সময়ে—

राष्ट्रम--- वन्छ এक नमर्प्र आभित आज কিছু কর্তুম 📍 তা-ও এখন ধা করছি তার চেয়ে আর কি ভালো? সহরে আপিদের (फाइ (वमा चारेरा (शक इती भर्गास, কথনো কথনো ভিনটে-চারটে পর্যান্ত বদে' शाककुम, এই তো १

বোরো— ওঃ রোজ রোজ একই আয়গায় ए'यनी धरत्र' वरम' थाका कम कष्ट नहा ভথন আপনার জন্তে আমার ভারি ছঃখ হোত, বাগানে এনে ৰসতে আপনার কত হাউস—না না অসুথ কেন হবে ? আমি দেরী হয়ে যেত ! আর তারপর শীতের **733**

আমি যতাদিন কাজে লেগেছিলুম সে-ও যদি জ্যোতি-মণ্ডল বর্ণনা করছে। ভতদিন থাকে তো পেন্তান্ পাবে, তখন শোকের পবিচ্নানে হেনার বেড়ার ওপাশ আর একজন তার আয়গার এসে ভতি দিয়ে চণে গেল। মাথা নত করে' অভিবাদন हरन। ७ कात्रगाहोरक, रक चन्रदन कारक करते रम बाकीरक निरम कररम। किहूरे जारम यात्र मा, औ-कि अवकन रामहें राजेमा एतर का कांत्र निर्माणक स्थानिक हन। किन्न कवि--- (म (क्रामान-जामात्र (भरक সম্পূর্ণ আলালা ধরণের লোক, বোরোমাস! अञ्चलत्र করতে লাগলো।) भ स्थन कास (भरक कार्मत स्मित्र उथन (वार्या—कारक काशनि य**कि कार्**मिक আর অমন চট্ করে' তার জায়গায় বসাবায় (नाक चूँटक भाउमा याम्र ना---(म-काम्रणा कवि (य, जांत्र विटम्ब मावशास भाका मतकात, सगरखत मवारे छा-हे जामा करत---व्याल (वादवामान १

त्वाद्या—चार्ड्य हैंगा, वृत्य⁵ ।

व्यमाशावन किছु ? जात्र माथात जांत्रांबटक এक है। ट्यां जित्र म खन छाट्यांन १ ना रमछ १ यश्चाम । (वाद्योगान जानां के निद्य थीटत करवरे टका, फ्रारथा, कुमि किछ् त्याया ना थोरत द्वित्र रागा। दन्नित टिविरमत्र मिरक এ সব। (বোরোমাস কাসলে, ভারপর এগিরে এল। কাউসভেরফের দাঁড়িয়ে গন্তীর হয়ে গেল) আমার সমুদ্ধে অভ ভেবো ना, (वारत्रामाम। जामाय माथा ठिक जाएह। जोत्र कांज धत्ररणन) ঐ যে জ্যোতিব কথা বল্লম সেটা সত্যিকারের হাউস—আবার ফিরেছ তা হলে 🕈 नव, काज्ञानिक। कृति क्याम स्थएक शार्या (हनवि—हैंगा। এक नैर्श्वात क्वित्रया ना—किन्द ७व मा (मथर७ (পट्टन।

(वादत्रा-चाटक, चार्गान कि वनटल চাইচেন তা বুঝোচ। মিষ্টার ফেনরি সম্বন্ধে काशरक এक कथा (मरथ, य'मख डॉइ बरयूम এত অয়—আন লোকেও তার সম্বাদ্ধ কত व्यारमाठना करत— এইভো ? (तुम माथात চারিদিকে হাতথানা খুরিয়ে আন্লে বেন

গভীর क इटनन, (वाद्यामामक (ठाव नित्य जांत्र

करत्रन—चामि जयस्म उँटक कानावात्र অবসর পাহনি, আমি কত ছঃাথত…(হেনরি वाष्ट्रीत मरशः ८५८क वात्रामात्र वात्र रूटम এল)

काउन—षा अ ना, এथन गिर्म वर्णा— ৰলো ওঁব জন্মে তুমি ছঃৰিত। (বোরোমাস হেলরির সঙ্গে সাক্ষাৎ করবাব জন্তে অগ্রসর श्री अन्युत्विष्ठ किष्ठू वायान। इन, द्रमित्र मिष्ठ विषय वातान निष्म अदम ৰুড়োর হাতথানা ধরলে)

> 🚃 दृङ्गति— मञ्जवाम, (वादत्रामाम — वृद्याह । উঠকেন, ভারপর ছ'একপা এগিয়ে গিরে

र्ভाविति। बाफ़ीटल भाग वज्रः ভाटना---

হাউস—(খাড নেড়ে) ভূমি সেদিন मद्बार्यमारे हत्म' शिख्हित्म १

द्गित्र-है।। नमाधिकृषि (४८क वाष्ट्री क्टित का अफ़-८६१अफ़ वर्गार्श भूरत्रहे द्यात्रस् পড়লুম। সে রাভির বাড়ীতে কিছুতেই কাটাতে পারতুম না।

হাউস—তা তো বটেই। তা কোথায় মিউনিচে। ভেবেছিলুম পুরোনো ८गरम १

र्मित्र—थाथरम शिनुम **आन्म्**रार्थ । হাউস—সংগ্ৰ

ভারি একটি সাম্বনা পাই ওখালে।

राउन--- এরকম সহর আছে না কি ? ভাহলে ভো ভালো ৷

ट्निति---**बाटक** हो। जाटक, उटन कारक व्यवश्वाविष्ट्या क्ष्रीय आन्न्यार्थ शिष्य कार्डम--(তাব कार्ड्यानि धरत', व्यारत्रकात्र পডिন। আমার একটু অভিজ্ঞতা আছে— (চয়ে পিশ্ব করে) বেশ ভো। বলো, সাত আট বছর আগেকার, ভারি ত্রুথের— व्याणीन ट्या कारनन चर्डनाया—ट्यिक्यम कात्र काहित्य छेठेटक भारत्या ना। जागि **हरल (अमूम श्राम्यार्थ । जार (मर्वे क्रिनेड** হেলব্রানের চমৎকার বাগানে विटक्टन अकना (त्याटक (त्याट व्यामात्र प्रःथि। ধেন হালকা হয়ে এল। পরের দিন সকালে হেনরি—আমি বেশ বুঝতে পারি যে यत्न रूग—षावात्र षामि काटल (लटन ८भगुम ।

হাউস-এও কি সম্ভব ?

(हमर्त्र—निक्तरहे। आभात्र वस्त्रम ज्थन कुष्ठि इत्र नि, जात कान्छे हिन वनख---त्म कथा जुरझ हमस्य मा।

हाछम-- ७ का वटि !

८हनित—िक ख वर्गात्त्र क्लांटनां ख्रथ (भनूम ना-कि हुई ना-वत्र छात्र छेएँछ।।

हाउँग—जाग्राम ध्यम ममग्र चार्छ ग्यम दश्यवान कि क्रू करण भारत ना १ छान्म्वार्थ কডদিন ছিলে 🕈

क्वि स्टब माखना भारवा। श्राहीन भिनारका-থেকে গেলুম---সেধানে আমার প্রিয় ডুরের चात्र (ङ्गिट्यस्त्र इवि चार्छ— (मथान পেলুম। (কিছুক্ল থেমে) এট সব কথা वन कि वटन' कि ह महम करवन ना। जाननादक ममल पुरम वर्गा विट्नियं मवकात इत्य পত্ডেছে · · ·

यटना ।

ट्रिन्दि— वर्धवाहः। (उपरिचन कत्रता) দেখুন মিষ্টার হাউসডেওফের—আমার ভাবি इ:थ क्य--- এक चालान चात्र काम- हेलानी यन भागवा जाति उकार रस भएक्छि।

হাউস—তাব মানে ?

ৰখন জেগে উঠলুম তথ্ন বেশ হস্ত সবল আপনি—অনেকাদন আগে আমি যথন ছোট हिन्म, बात के गाठ (क्ला कत्रपुत्र- कथन व्यागाप्त (यमन ভালোবাসভেন এখন আর **(ज्यम बादमन ना ।**

> राउन-र्गा-त्म (ठा व्यत्किम्दनम কথা হেনরি। আর ভূমি অনশ্র স্বীকার কয়ৰে ৰে ভূমিই প্ৰথমে—অবশ্ৰ ভূমি যে ভোষার ইচ্ছামত করবে এটা কিছু অস্বাভাবিক নয়। এ জায়গাটা ভোমার মত व्यवन्यक्षि (मारकत जाना माना मक----তা ছাড়া ভোমার নিজের বন্ধবান্ধব আছে। किष णामि एका कथरना का निरम्र पश्चरवाश कांत्रनि-करत्रोहि कि ?

द्रमंत्र—णामि भरतम भिन हरण श्रिम् ट्रमंत्र—णास्क ना, छ। यणिह ना। किस

আমি আপনাকে বলতে চাই—এবারকার এই নিক্ষল কোরাখুরির পর—অক্ত স্বার চেমে আপনি আমার কত অন্তর্জ। আপনি गामात्र कथा तुषा ७ भारत्यम। , जाभाम कात्मन कालमात काटक भागि कि भर्गाञ्च । अत्मक्ष्म ধাণী। আমার মা'র যে আপনি কভগানি ছিলেন ভা আমি জানি—ভার জীবনের শেষ भगग्रे वाणिन कि सुमात्र भार्षक करते कुरमहिर्मन ।

हाउन-(প্রতিবাদের ভঙ্গাতে) আছে। चाक्।---(म क्षा भाक---(जामात्र क्षा वत्ना এখন। क्रिमिकिन्टि शिष्ट्र होन दिन्धला १ कात होत स्मर्थ मास्त्रा भारत १

८इमीय—हैं।, य उक्कण ८मई भार सिद्ध क्रवात भरशा किल्या भर्ष त्यक् नात क्ल्य, व्यावाय (य-८क-८मर्थ। व्याव ठाउभव मध्या-खला—का निकान, को पार्च—ध्यन जात् व्यक्ष मृजात आलात्र व्यवदाद प्राकात स्मात आमात्र त्तर । ভाবতে ८५ष्टा कश्चम—कामख्य । किन्युबन् कारमन १ मदन कम जामाव मत्था मव-कि (यन मद्र) वाडम—कि १ গেছে। (ক্ষণকাল থেনে দাঁড়িয়ে উঠে) হেনরি—তিনি বল্লেন—আরো গ্রতিন

হাউস-ভারি কষ্টকর-বিশেষত কাজ করা যাথের অভ্যাস—

(नरे। (मर्हेटिक स्ट्राइक मूक्ष्म। क्रुगेलन ध्रदा **এ**दक्षम हनाटक शास्त्र १---বছরের মধ্যে কিছুই কারান। আপনি হেনরি-ই্যা। ভাহলে কিন্তু অবস্থা **८**का कारनन—

गाउँम---शा कानि।

ट्रिनांत्र—्धटकवादत कामख्व। वाँदक कारमार्थाम, (मश्र्षि मह मा कहे भाष्ट्रम- मागारमध मर्था नगर किन कछ छ। ला-আর তাও কি যেমন-ভেমন কষ্ট—আর বাসতেন। (শুরু আরাম চৌকির পানে তারপর বুঝাছ কোনো আশা নেই—আর দৃষ্টিনত করে' গাড়েরে রহবো)

जिनि ९ जा व्यट्मन—(महेटिहे रजा अग्रानक। गत्काप्र गमत्र ठाँव विद्यानात भाष्म वर्ग शरफ ' भानाध्य चात्र छात्र छ गव्यत्न ए । हारथत्र मर्था (मथर७ भाष्क् जिनिश्र निरक्षय व्यवस् চুপ करत' (थरक) तम चत्रहा (ছড়ে দিয়েছি।

राजिम—ह्हिए भित्रह र ट्यामात्र धक्यात शक्क मञ्ज वर्ष पत्र ।

क्नित्र — छ। छ। छ। च चरत्र मर्था जामि এক ছত্রও লিখতে পারতুম না। রাতের পর রাভ আমার মনে হোড পাশের ধর থেকে বেন গোঙানির শব্দ শুনতে পাড়ি। সেই मक आमात वृत्कत मत्था (यम (कर्ह वरम' বে৩—কাজ করবার ইচেছ বা শক্তি আর किहु अक्ड मा—दिंदि थावा अक्टेक्ब মনে হোত। হা ভগবান- (ওৱতা) তার

কতকাল এ-ভাব থাকবে কে জানে। বছর হয়তো এই ভাবে চলতে পারে।

हाडेभ—(हमदक डेटर्र - आप्न त्यन वागड-ভাবে) আরো গুভিন বছর পামলে र्ट्नांत्र—चन्नाम वक्काम चन्नाम निरम् । किनि वहान चादा इ'ाउन वह्न

> আরো থারাপ হোত। তিনি বরের বার হতে णात्ररक्तं ना—वाहरत जरम (व वन्हे। करमक वरम' थाकरञन छा-छ मखर रहाठ ना— এই

সহরে থেতে পারতুম—কি বগ ?

PER

(क्निव-(निष्कु क्छार्य) किंक वर्ष्ट्रम मिष्टीत हाउँ मट्ड तरकतः क्रिम एक वर्णा नटकत्र कथा है वन्छि - जामात वर्गम बहा - जामात **किं किं विद्युद शाकरमञ्ज स्वाकरण शाद्य--**কিন্তু আপনি—আপনি কতটা হারিয়েছেন

হা উস — ই্যা আমি অনেক হারিয়েছি। हिल्लन हा खान। यत्रायत्रहे खानकुम-८मझे कछ वहत्र कार्शख।

इडिम—डभनव—

নয় যথন ভিনি - যিনি আমার বাবা ছিলেন-व्याग'रमन्न ज्यान कटन्न यान।

ठा छेन - है। - है।।

८इन्नात--- (मिन्नित कथा कथाना कायात मत्न भट्ड, मा (यिन वदल्न क्रांना গেছেন। যথন তিনি ফিরলেন না তথন ভাষলুম তিনি মারা গেছেন। তাই ৮েবে রাভিরে এক একদিন ভারি কাঁদকুন। ভার পর একদিন তাঁকে রান্তায় দেখলুম সেই অন্ত **(मर्थित मरक—्यात छत्य छिनि मारक** जान करतं यान। थ्व ছেলেবেলাভেই वृत्यिष्ठिम्य व्यामात्र या व्याधीन--विधवा हटन त्यमन श्राधीन एव (मिन ।

হাউস-ভাহলে-বোধহয়-ভূমি আমাদের क्यां करत्ह ?

হেনরি—(একটু বিরক্তভাবে) মাপ করবেন, আমি হয়তো ঠিকমত মনের ভাব প্রকাশ করতে পারিন। (আবার উৎসাহিত इत्य) चार्खाविक त्रांकां कथा कामना (थाना- कृमि मिटक एकथा विचान कर्नामा ।

हाडेग—जामि व्यवश्र कथाना कथाना थूलि ভाবে वनाया ना कन, विष्येष এই प्रक्रम ममरत्र। (ছেলে ধেমন করে বালের হাত ধরে তেমনি করে' আপনার হাতথানা চেপে थब्ट हेटक क्याह—चामि ट्ला खानि मा व्यापनारक कल देशांगवामरकन! (व्यक्तकात्र चनिएम এन। धारक धारक ब्रान्डाब चारना-खरमा बदल छेउटना)

হাউস—ভালোবাদা ৷ সেটা এমন কিছু द्धर्मात—मा (य व्यापनात कर् व्यापक्ष न्या। वर्शम यथन वक्षम थारक ख्यन महरकहे ভালোবাসা আসে। আমরা বছু ছিলুম হেনরি-- ছই বুডোমামুবের বন্ধা তার (इनरिय—चामि का ख्यम विषय (काहे कार्क ख-कपान काम म'रनहें (नहें १ ठिक ठिक, जूबि कि करते वृक्षरव १ एकन ट्यांबरा—नामर्य नमश्च खगर्छ। भर्छ' द्राप्तर्€ — ভবিষাৎ ভোমাদের পারের তলে— আর ভূমি, ভোমার শাক্ত ভোমার মনীধা ভাব্যাতের जामा- जन्मा नित्र कि करत्र वा-

> হেনরি—আপনি ভুল করছেন মিপ্তার হাউসভেরফের, আমি বৃঝি। আমি যাদ তাঁকে আপনার কাছে ফিরিয়ে আনতে পারত্ম — আমাদের কাছে — আহা! মাকে यि िकात्रस्य अदन व्यावात्र क्षेत्रारम वनारक পার্ভুম-অন্তত কেবল একটা সন্ধোর ক্রেও — ওঃ ভার জঞ্জে কী-না দিতে পারি!

> हाडेम--(किक्क शांद) की त्मरव खाँच १ (हमति—(हें छ छ क दक्ष) भागात व्यथन मन्न रग्न कामात्र मयश्व ভবিশ্বৎ, या-किছু व्यामि कत्र का त्रि क्र कत्र वात्र कामा त्राचि मम्बद्धे विकर्षं मिट्ड भाषि।

हाउन-दब्नित, ज्ञान त्कारता ना-किन

प्ति छेशात्र थाकट्डा-

তামাব শক্তি পাকলেও নাম, তোমায় তারণর তথ্ডায়ে,) স্থা—আমার মনে হয় कानि— (नामारमत्र मक, नवाक्टक निक— कामि वृगरक नाति—कारमक जात्मा (भाक ভোমরা সব আটিষ্ট, ভোমাদের ধরণ ধাবল যাদণ এ সব ন্যাগারে আঁত কৈ এতেন। বেশ কানি।

८-नांद--आभारमञ्ज भवास्टक भ व्यानि

क्षत्रत मभाष भा वाक्यां भाग थायाया। अकतार जाद देश्य नवन पर वसमारहें भाषाद्या क्रांपला। त्यांकित बाम प्रमाम। ात वना माल ८०८म याना यात्र - गाक्रमान भ्रेष्ट्रात रकिता का विषय रहरू वर्ष कारक कार क्या. (म कांच भाव भाज नात्व न्याक्र (वर्गाक कार्यका) मनामन कार किर्याणीयराम (म भाइर अन्। आमि जारमञ कर मिम निभरम महाधलाँ कामा-ाय कर्छा भागा। रंशदय (भाग गण ग्निमाना वाकारकः भाव (मः घःवड धक्याव भग एकरना वारकात भरशा १ एक • एकराक । काराज खरव हिकर७९ (म भाग्य नो, वाकार७३ नागरमा — नाभावा व्याभाव भिटक अक्रिशानि दर्शकतः व्याख-नामन करते किमाक्षम करते (भ नहा - आकि उथन छात्र निष्टा निरय मार्ट्यान-- ७४ भिष्टात का जिन्दा कर्ता कर नाम द दना ने एक ग्लाब उत्पत्न केम्मा -- इति। अथुन गार्षेत्र अस्।"

হেনরি—করতে যদি পাবত্য—কর্বাধ মন্ত্রা চেলেটা কফিনের মধ্যে—ভাষো একবার -—ভামি ভো দেখে পানে থ মেরে গেলুম—

इंडिंग—ना, दन्नित्र, ७ कथा मिंडा नम- दन्नित—(प्र आंतरहत्र मरक खनरना।

भाउँम--षा ड एक ६८३० १ हैं। जा किंक 166

छात्र कार्य अवस्थानिक कत्ररण ठारेना। " । २ नीय - न्यान्ता विशेष द्ये प्रतास्त्र एक्स, टारिम—गा. सारा कारया खवावानांक रुन्न (साथ आभारक, उ.इ मर लाएकर अभन ्राम्य क्रमा कर कर वा विष्य यथन वाका कि १००मा इस मा १- यात्री ध्यम करत्री न्या व लाग्त्र (योग कर) (मान) कन्न कामक कारमत । ग्राइत मरगा, कारमंत्र मरगा आरंश यांगाय वर्गामाम दवल्य त्यांक कि -- स्थाय विरंग भारत र-- स्थाय विरंग यांगाय विरंग । कार्या इसकान कामा आर्ट्ड यात क्रिकारन, राजा लात्मन कृश्याक धकरा क्रमन मुर्छ मान ग्रा भारत - ८क्तम कारनको वार्थ कथा-भार्या कर्ड म

> अफिंग-ाक यहा ? छ भटन अनाव मुर्डि भान कराव । जाहरू कि यदा माञ्चरक सिरिएस माला याप्र १

८-मिर---(।।११४४ काम ८४८वा ७ माम हो। । अक्षां क्षिणि (स । श्रिक्टन स्थान ल्माकरक करखंड चा॰ना धार्थिए छेठर छ পারে। কিন্ত এই কি আমাদের সম্ল नश - ता भाषातात कार १ वार्षान कि क्याशकांत अल्ह राष्ट्र व्यालनात्र वात्रारन्य • भीया यहां करदयन ना है आगि एन भाड़ रिकाल का कार्या कर्ष के बर्ग व्यापाद करिक " । ।। अपना अभागा (क्यान-'कड़ अकछ। यहना क १८ क ना इरना। छान अरवाय भारत भाषा त्याधारमा काका ख्राष्ट्र कि ।

में इंटि भार्य।

হেনরি—এও তো ভবিতব্য। হাউস-- না-না---

হেনরি—(একট্ট বিশ্বিতভাবে) না ভো कि १ खे-नव हिन्दा करत्र' कष्टे भान ८कन १ এक है ८वना गाखांत्र मदक्ति—नकारन त আপনি তো নিজেই ডাক্তারের সঙ্গে—এই আগেই মৃত্যু—পরিবারের সকলে গো প্রস্তুতই मामामा एक चारन , कथा कारप्रकन-िन তো আপনাকে সভা কথাই বলেছিলেন—মৃত্য व्यवश्राची हिन।

হাউস—কিন্তু এত শীগ্রির নয়। আরো भद्र ।

হেনরি—কি কবে' আপনি ও-কথা বলতে পারেন মিষ্টার হাউসডেরফের
 সাপান वनाट होन ना निम्हर — ८४ ८ काटनात्रक स राष्ट्रत कि चरिष्टिश—

হাউস—না না, ভা নয়, আমায় মাপ যা করবার ভা সমন্তহ ক্রা क (त्रा क्रमाह्न ।

्रुमि - जरन १

হাউস—কুমি কি নিজেক আমায় একমাত্র বল্লেনা যে তিনি আরো তু'তিন বছব হয়তো বাঁচতে পারতেন গ

ভাক্তার তো বলেই বেথেছিলেন যে মৃত্যু সব ভয়ানক রাত্রে আমি যে কতবাব নিজেকে *তো আপনিও জানেন।

अफिन-इरोद १ हैंग-छ। इर्राट अमिछिन বটে। (ইওন্তত করে'—তারপর মন স্থির करत') তবে श्वाভাবিকভাবে এসেছিল কি না (महा जानामा क्या।

ছেনরি—(চমকে উঠে) কি p কেন p হাউস—হেনার!

राष्ट्रिय—र्कावल्यात शास्त्र—हैं। (मक्था — व्याश्राम এतकम कथा (कमन केंद्र वनर्क পারেন বৃষতে পারিনা—কিছুমাত্র সন্দেষ থাকলে ডাক্তার তো নিশ্চয়ই বুঝতে भाराञा-

> भाष्ठम— (कन (म व्याद्य १ (कमन करत्र° १ 150-

(क्रमाद—-क्षांठा जाशीन जमन (क्रांट्यय मर्क वनरहन— आभात मा कि कर्याना उ जयस्य- १

राउँम—आगाव जुल रुग्रीन— এই বলেন (नाथ क्रम घटवाष्ट्रे हरव।

(इनर्त्र — आপनि यथन + এতটা বলছেন मिष्टोत ह। देनएडवर्यन, जाभनात रवाया एउट বে আসি—

হাউস—আমি কি বলছি তা আমি বেশ कानि — (यना किंदू आंत्र किट्डिंग (व रियोन ।

হেনবি—আপান নলতে চান জার ডেয়ের ওপরের চিঠিথানায়---

कार्ष्टम—(धां ५ (लट्ड) है।। (क्रनकां न इभ्राभ)

হেনরি—(শীত সন্দেহারিত) সেই চিঠি ? ভেনার—ইয়া, তা ভো বলেছি। কিন্তু ভ—তাতে আব আশ্চর্যা কি আছে? সেই প্রশ্ন করেছি— আপান হয়তো শুনে আতকে উঠবেন তবুও আমি এখন স্বীকার করবো— আমি নিজেকে জিজাসা করেছি হতভাগ্য মাত্র আমরা এত ডঃথ কেন ভোগ করি---যথন এ সমস্তহ এক মুহুর্তে শেষ করে' দেবার উপার আমাদের হাতে বয়েছে।

यमि छोडे करत्र' थारकम डांश्ल डिनि ठिक्हे — बात वृक्ष ७ (পরেছিলেন বলে'— करत्रहरून।

शंडेम-- ८२ मित्र ! . . .

राष्ट्रम—किस दश्निति जाम कान ना माहित्नन! यथार्थ नााभावता कृषि जान ना। र् किन (नैटिह থাক্তেন - এত কণ্ড সহা করেও— ভগবান ষভাদন তাঁকে রাথতেন—াত্নি আমান জভ্যে व्याव डांच निर्धित कर्ज (वेरहरे शाकर हम--এছ বাগানেব মধ্যে প্রভাহ ঘন্টাক্ষেক আমার দঙ্গে বাটাবার জন্মে-- १ । বাগান, या आभारमञ्ज त्योवरनज्ञ म । ज्ञेभसृष्ठिविक रि । তিনি মবেছেন তোমার জগে, কেনার। এখন व्वारण १ जिल ८ जामात्र कर्ज मरवर्ष्ट्रन ।

জন্মে—আমার জন্মে গ আপনার কথা আমি মোটেই ব্রতে পার্ছিন। আমাব জভে ভার মানে ?

হাউস—সভ্যি বুঝতে পারছ না ৭ কল্পনা ना ?

cरुनिय—िक वसूत्र ?

হাউস—এইমাত্র ভূমি আমায় বল্লেনা বছরখানেক ধরে' তোমার মনে কি ভাব জাগছিল গ ভামে কি ভাবো ভোমার মা ভা **८** उत्र शानि १

क्मित्र-कि छित्र भारवन १

হাউন—যে তিনি পীড়িত হয়ে পড়াতে লিখতে পাধনা—ভোষার ভাষনা হচ্ছে ভোষাব জন্তে—আমি তাহলে তাঁর—ভগৰান! মা। खिं जिल्ला नहें हरत्र शिन—ए विके कि माता क्षेत्र । (ब्लाताम को कि त मामरन हैं। है शिक्

टब्निब—चार्थान या वगर्डन चार्यात मा পড़्ट्नि—िकान एम ममञ्जे तुस्र के **टब्सिइलिन**

क्मिरि-- (में के खिश ना-ना-ना, धा कथरना मखन नम्र।

হেনরি—আমার সুভাকার মত ভাই। " হাউগ—খুব সম্ভব—তিনি যে ভোমার

क दहनांत्र—मा-ना छ। इट्ड পार्य ना। মিষ্টার হাউদভেরফের, আপনি শোকেব ভাড়-নাধ অভাগ কথা ভাষচেন। অবশ্ৰ আমি খাকার কবি আমার মানসিক অবস্থা মার অজ্ঞাত চিল্লা—যদিও সেটা তাঁব কাচ থেকে গোপন করতে যথাসম্ভব চেষ্টা করেছিলুম। কিন্তু ভাব কল্মেই যে তিনি—না-না ভা অসম্ভব ৷

হাউন—(সক্রোধে বাধা দিয়ে) তুমি তেনবি—াক্রমশ উত্তোজভ হচ্ছে) আমার আমায় বিষাস করচনা কেন ? আমি কি **८**शभात्र कांट्र भिर्णा क्या वर्णाहर कि मूत्रकात्र ष्याभात्र ! (भटक छ एथरक एक भाना हिठि नात्र करवे') এक नाख भरेषा-- भरख' छारथा। मखादन दलका िति— এक िति श्रीत एक स्वत ७ १ वर्ष पात्र । ८ मञ् ८ भव भिन मक्ता-दिनाय **এই छिठि । हार्थन—आ**त **आध पन्छी भर**त — পড়ো, পড়ো, দব কথা ওঙে আছে— তুমি বর পাচ্চ দেখে—বুঝ চ ্ তিনি তোমার कष्टे (मर्थ---धार्मारमञ्ज ८ हर्ष (शर्मन--- छात्र ममय कृरदावांत्र चार्णके। এथन वृदारण (कन जिनि भादा श्राटकन ?

> হেনরি— (ভাড়াভাড়ি চিঠি পড়ভে गांशरणां) मा । मा । (तम वरम शक्रणां, (यन (७६७ পড़्टमां) आयात्र कट्य-आयात्

গেল। হাউসভেরফের নত দৃষ্টিতে ভার দিকে ८५८म्र धीरम-धीरव माधा माइए७ लामरलमा वहत्रण एक्ट्रबंध भोत्रव। जन्दस्य दश्निव माजिय डेटरे बार-इ-बार-इ बनर कार्शिका)

হেনরৈ— আমি ধাচিছ। বুঝতে পারাছ व्यागाटक वर्षान तथा श्रामात भटन क কষ্টকব। এই চিঠি (চিঠিখানা তথনো হার शाटक)---मकारन दम्या जाद जटक महा वर्षा षाटि। এट षात्र मानार (नर्। (এक-इन्छ हें अप कर भी कि से बड़ अविषे मज आंग-नाटक बार्गियाटक शर्मित कि श

श्राष्ट्रम—देक, दकान्षि १

८इन्**त्र**—क्षेत्र ८य, ८यथाटन या व्यापनारम मिर्मा व उट्डम क । किंद्र विषय कराटना व्यामान ना कानारक। (पडटड लागरका) "वाभि মিলাত কবি—" ভিলি মিলা ব্বাচন व्याणनात कार्फ, छीत मुका चानाति है जातक करम्रह् . व्यानाच कह विश्वाम त्यन अहं । क्ष िठि दर्भन कामनान कट्यर ८ था, व्यामात्र कर्छ कर्ड नर्।

হাউস—কিন্তু আমার হচ্ছে যে ়াম এ-কথা জানো। এব দায়িছ আমি নিঞি। किছু তেবনা, ভূমি এ ধাকা বেশ সামলাতে शांत्रद्य।

কেনবি—আপনার এচ কাজ ার ইঞা-মৃত্যুর, তাঁব মহৎ আহত্যাগেশ স্কল গৌনব महे करते मिर्टा जिम ज्ला करतर्गाम ध আমি তাঁকে हত্যা করলুম এ-গাব যেন আমার मत्न थाटक — व्यक्तिमध्यत मक व्याग्म कीयन কাটাই। একদিন হয়তো আপান ব্ৰতে भारत्या, कलवफ व्यक्तांश व्याभान करणान।

বসে পড়লো। মাথাটা চৌকির ৭পর বুটিয়ে কেবল আমার প্রতি নয়, তাঁর প্রতিও—সে অভায় আখার অতুটিত অতায়ের চেরে কোনো व्यार्थ करा नम्।

> ठाउन- चनाय यन क्दर थाकि छ। তা মাথা পেতে নিচিত, হেন্দ্রি— ভোমার মত (माकटक (मकथा अमरकारक वगटक भारत। ज्य त्यह, त्य पाम कृषि निकाक भाषी मत्न कत्रायमा---(वण प्रेटह्यर्छ शोकरव- काञ्च-कण कवाय - ब-वार्यायावारक नित्र केश्रेट्र द्वनात किए गर्भ बहना करवे क्लिट्र ।

(महों गांभांड कर्छवा। खयन कांभांत भरक कार किंद्र के स्थाय प्र---अप व्याचाचा हो अख्य , विद्या भागांग कड़ा ध्यांचात्र भात्र भूका वियय 李十四!

शहम - (क्नार्ता यह जिन्भाम कारिश (शंभाव मा ८नेटि । किटलन, अमन करा। श्रीम नजट्ड भाव १ । । । ८ डामान छाछ जाया-चारिको क्टनन क्रिन हो गाट्स साग्टरना १ फिल कर्यक भरत एक जारन क्या र जीव डावरव (त for कार क खवार करश्राह्म । (कमन कि नग्र ८ शमना व्यक्ति (भागता भन नगान- एहा है वर्ध सामानि नव अक उक्य-माण्डिक---शर्मा अयो । ट्यांमांत्र मा स्थन अथारन क्षक आवान-किर्ण नरभ आंभारमञ्ज मरम গहा क्रवर्णन किया । भोनग्रथ नरम' शाकर्णन — किस । जान अथारन हिर्णन- (वेंटि हिर्णन —ভদনকার তাঁর জাবনের সেই রকম একটি ঘণ্টার তুলনায় ভুচ্ছ ভোনার সব রচনা। তা कुभि यक वड़ भनीयहै कछ।

ছেনরি—জাবন ? লোকান্তরিভকে যারা मरन मारथ जावा यजिन वाटि जजिनिह (मध वाटा (स भवरणादक ! मृङ्कात भरत्र । व्याभनात मरण मार्था कत्राया । भाग्नरणत प्रक्रिक या अञ्चान ७ উच्छन तार्थ দে কাজ ভুঞ্ নয় ব্যর্থ নয়। তবে আসি হিষ্টার হাউস্তেরফের। আরু শোকের তাড়নার আপনি আমার ওপর অবিচার করবার অধি- . कात्र (भरत्राष्ट्रम । तमास्य काशनांत्र वाशान আবার যথন গাছে-গাছে সুল ফুটবে, বিজ শাখার সবুজ পাতার বাহার থুলবে, তথন

व्याथनि ७ (वैटिन्टे धाकर्यन कि इ यादा यादन ना। (वादान्ताव माचा पिट्स टम हटला टमला। राष्ट्रीय महस्रा त्यरे थुट्स कामनि बद्दत साम्ल (शरक এकि । अनुष्ठ जालात्र श्रां असकात्र वां शास्त्र गरमा जरम शक्रा)*

[यवनिका] ञ्चरत्रमञ्ज यत्नाभाषाम् ।

কন্দপের প্রসার

প্রথম বসস্ত দিনে বন পথে **5८ण मनमथ** ! गलरम मामब-- (नमा,--क्नक्न চরণে প্রণত ! कुरक कांजन होना-- आंकर्न (म **इ'** छ याँ थि-शाट ; ফুলের ধনুকথানি, খর প্রেম-পুষ্প-শর হাতে ! পিক-কণ্ঠে বণ্টে নিভি স্থললিভ েখামের প্রকাপ, নকাধরে চুম্মিয়া সে প্রীতি-রাগে उद्घटि शानाभ । त्योवत्नित्रि मधुत्रिभा कृत्म कृत्म-वत्न वत्न हाना, यनम् हर्ण भग,—कामनात्र উভ তীর আলা।

अञ्जादन तथा अग्रा कृत-- १९ भारम क्टि कंड पूथि, नित्रक्रन तन-পश-स्नौत्रव একান্ত নিভতি! मितिन গাছের ডালে সেই मर्व পিক ডাকে 'কুছ'— বিরহীর ব্যথা যেন গুমরিয়া उद्धं 'डेब-डेब'! যুথিকার কথাখানি গুন্ গুনি' বসোরার কাপে त्मित्र खना'न कनि,—कामरमय भटत्रत मकाटन তুলিল ধন্তকথানি,—বায়ু গেল মর্শ্বর করি, বাখানিল কভ কথা, মুকুলের চাপা মন হরি'!

मुक्न-कृतिन मूथ,---थुटन (शन क्षेत्रशामि,---

বনস্থলে কড ভাষা—কত কথা হয় কাণাকানি।

मधु (5एम मिष्ठे चाटक, व्यक्तां निक स्मिन नृत्य,

সেইদিন পোড়া মন অপরেব মন মরে খুঁজে!

আপনার ছায়া দেখি' সেই দিন ভেবে মরে মন.

দোস্থ করিব এরে ইথে মোর করেছি মনন।

কারো স্থথে গাসবারে, কারে ছথে লুটাইতে হায়.

কি জানি কি কথা মন বারে বারে জানাইতে চায়।

গোলাপ-বনের কাছে মনমথ দাঁড়ো'ল কৌভুকে, •

ভূলে নিল ধন্থানি, খোঁজে ফুল-শর হাসিমুখে!

म्हि भरण हरण वामा—सथुमग्री, सहामन चांचि,

গোলাপী অধরে তা'র সোহাগেব ডেউ মাথামাথি;

গোধুলি আঁচিলে বাঁধা, রূপদীর আলো-করা রূপ---

মদনের আথি-পাতে যেন সেই করিছে থিজাপ!

চকিতে বকুল মালা খোঁপা হ'তে খসে' গেল পড়ি,'

खरनत उनीत-रमभ कांथा मिरत्र कांथा भिग वित्र'! নোয়ায়ে গোলাপ-শাথা চাক হাতে সদয়ের শার

দেখে বামা সবেনা সে—তরুণীব প্রণয়ের ভর!

মদনের শর[°] চেয়ে খর শর রমণীব চোখে,

भाषि । त्र चौथि-वाव श्रम हूरिं । विद्या विद्या विद्या ।

মনমথ-হিয়া ক্ষত করিল সে— আঁথি পালটিতে.

বিম্ময়ে মদন দেব চেয়ে র'ল কুণ্ঠা-ভরা চিতে।

गटम क्ंम थन्न, भव कार्या विद्या भटम उक्षीत्र,

চোরা ধন ফিরে চায় কামদেব পার্য়ে কামিনীর।

"কন্দা। আমার নাম রতিদেবী" হেসে কয় বামা;—

মনমথ কহে, "প্রেয়া, চমকিত করিয়াচ আমা !—

জ্র-ধন্থ কি মনোরম। পুল্প-ধন্থ ছার মনে হয়।

থর আথি শর কাছে ফুল-শর কিছু নয়— নয়!

ত্যক্ত-ফুল ধছু-শর লুকাইছে লাজে মরি মরি,

স্থ-ক্র। তোর টানা ভুক্স, মোহনীয় দিঠিতে স্থন্দরি।

মদনের এই জালা, এ বিরহ, এই বাথা স্থি,

বেন আমি ত্রিভ্বনে—জনে জনে নিধিলে নির্থি।"

বসম্ভের কোন্ পাথী আবিশ্রাস্ত ७३ मद्भ (कैंटम । রাত কহে, "আপনাবি তীর স্থা' व्यापनाटव (वेटसु ।" শিশিরে স্থালিত পাঠা গোলাপের— क्षान cottaca." विदाह्य नाथाशांन मिटक मिटक **८क (श्ररथरफ लिएस !**

লিয়াগি শৈবালের মথমলে वांत्रला इन्मत्री ;--कांश्रत काश्रन खाना (क छड़ा'न मुठा मुठा जीत'। মনমণ অল্পুরাগে চুমিল দে রাতর অধ্বে, শ । हुमा हाहाकात करते हैं छ निथिन अञ्चरका खारकार्धितस्माण वामार्भाशक

আদর্শের বিডম্বনা

হয়ে ওঠে, তথন তার অক্ষনতার আর সাম। হস্তম—স্বরিরাজ্যের সমস্ত বিলাস-ঐশ্বর্যা এবং णादक न — ठाव मार्वेदिक मञ्जि, जाव मान সিক থায়া, ভার স্মৃষ্টি করবাব ও কলা করবার ক্ষতা সবহ ক্ষাণ হয়ে যায়। মন ९ (नर यथन ८कान कहाना-बद्धार्ड क्रथ (भवात চেষ্টা কবে ৩খন একটা আদশ ভার অওবের मस्या कन्ननाम मृख करम ५८५—७१६ (मिथ्र मामाजिक, बाह्येय वा পाविचावक को बरनव ममस्य किया कमार्थं बायता धक्छ। बामम বস্তুকে মনশ্চক্ষে পরতে পরতে থাড়া করে (রথেছি—কাজেই মন (য অক্ম হচ্ছে আমরা গ্র প্রমাণ পাহ আমাদের কলনা-শক্তির হীনতায়, আমাদের আদর্শ স্পৃষ্টির দৈন্তা।

একদিন ধ্থন ভারতন্ধে মামুধেব মত মাত্র ছিল ভারা কল্পনা াদরে গড়োচল সভ্যিকার দেবভা,জার পূজা করেছিল প্রাণের প্রবল বিশ্বাদে ও নিষ্ঠায়। তারা গড়েছিল

বাহবেব ঢাপে মাপুষের মন যখন চুক্লে শিবকৈ—সেহ সর্কাচ্যাগী মহাদেবকৈ—ইত্রেব দেবোচিত ভক্তার সকল ওক্মা-গানিজের (शोद्व यात्र कार्ष्ट् कुट्ट, नशना। এই আদর্শ দেবতা গড়বার শক্তির জন্ম জাবনের প্রতি অবিচাৰত শ্ৰদ্ধায়, মোহগীনভায় ও অন্তব-জাভ সত্য দৃষ্টিতে। কোন দেশ বা সাহিত্য এমন-ধারা দেবতা কি মানুষ এ পথান্ত স্থান করতে शास्त्र नि। श्रनायत এই मनस्मार्न केन्द्रक তাবা বল্পনাও বরজে পারে নি—অথচ সেই ভারতবধের শৈব সেচ অপুকা নিষ্ঠা কোন্ অতলে বিসম্জন দিয়ে ছ্যাবেশী ভণ্ড, মিথ্যা দেবতার পশ্চাতে চুটে গভার আয়প্রসাদ লাভ • करत्रहि।

> जकामन ज प्राप्त त्वाक कि करत्रिक ा नित्य करकाद्य व्यामात्मत्र माठीटक व्यात প। পড়ে না, অথচ সেই মহতীশ ক্তি ও উচ্চ कामर्भ व्याक वर्षमान कामः भटरनव कथा अन्नग

करिएय मिटन अप्तक अनार्गात भिताय भिताय আর্যা রক্তের প্রবাহ এত ফত ও প্রচণ্ড হয়ে लार्क त्य त्मिश्याक छिर्क राम करमक श्रुक्या क फिल्म करत गानि ना मिटन ट्रिकां स-प्रभारमत **(कान मछावना भारक ना। मछ-वड जानात** কথা এই যে এত গালাগালিতেও অনেকে কর্ত্তব্য পেকে ভ্রন্ত হয়নি।

चामारभेत्र रम्ब स मन रच ज्ञान करग्रिक ভার একটা নিদর্শন আঁমাদের দেবতা স্ভানেব কল্লা-শক্তির হানতায়—অসভা হটকটি পুজো করে-প্রাকৃতিক শক্তিকে দেবতা বলে ভুল করে—ভয়ে, আত্মবক্ষার চেষ্টায় , আব माञ्च शुका करत तक-माः मत जामर्ग श्रुक्य क ভয়ে নয়, শ্রদ্ধায় এবং ভাকিতে; এবং প্রাক্পণ ८६ छ। न द्य वाल । निष्ठा प्र प्राप्त प्राप्त क অফুসরণ করতে।

किन्छ कामना ८म कथा ज्ला ছिन्न ए छ किनकासक हिंदिखरक रमन्छ। कार कुर्ण- नथा, "काला किन भालर बारहम, का निर्म हिन्य- जानभेश्रक्यत्क सम्-वाद्यत्र मन् युधिष्ठित्तव मक माधात्रव लाटकत मट्या वार्या वात्रा, करमा, हावित्वा, गमन को वर्तिक मधिक অভিজ্ঞতায় এমন কোন আদশের প্রতিষ্ঠা कर्तन नि—यारक जामना मकरणहे कोवरनन শ্রেষ্ঠ বস্তু বলে আকত্তে ধরতে পারি।

कार्वाह्मा क्रवाब छ ज-मन क्याब मार्थक्डा 'প্রমাণ্ড হবে, অন্ততঃ আলোচনার কলে সভাবস্তর সাক্ষাৎও মিলতে পারে। ঠাজার यहरबात श्रांत्मा यटल हे त्य दिनान जिल्लाम या কোন লোককে বড় বলে মানতে ৬বে— ধন্ম-ভাক্ত ভিক্রমমাজে মুথবা সংখাদ-পত্রিকার জান-সুগের শিক্ষিত মাত্র মে কথা বলবে दिनान निष्क्राय ? जव धिर्मिय क याहा है करा

যে তার কাজ—সব জিনিষ বাজিয়ে নেয় वरमञ्च क कांत्र कारक मवन महन हरत्र फेठहरू— भिक चार हमए ना, सुरिषेत्र कात्रवात्र नका।

এक छ। कथा अथारन बना श्रास्त्रन। কাব্যের চরিত্র নিয়ে নিচার করণ কাব্যবসিক मगारमाठक। आगि (महे युधिवरक आगरत নামাতে চা= -- গার নাম আমার দেশের वाश्यवमाधात्रण दमनदिक दमादन এवः व्यापन श्रुक्रय-ल्वारन याँटिय निष्कितिहास निग्रं अका निर्वासन करता।

ष्यानिक वनार्यम, ilead limited निरम क्टबंब काटि देवनाताव आत्राक मत्रकात्र। काशिक किंग्यों भरन भरन ८४म कारनन कारमंत्र मिक्निन मन १ किनियर dead बरन मरन कवटल कारमंत्र भारवर्गतक ना मार्गाहक भन । म कवांग आरक्षो माडा (मग्र ना -कांवव भागरित धाक्न^ण अवन्। श्रुव थाँछि, १८व जागाव रक्ता अहे. यांम अंदा dead lion-ठन তবে এ দের সম্বর্জ শেষ কথা নলতে **লো**ষ कि १ आत योह ना इन, ७८५ आयात कथांग कि ह ते तियों इर्स यादन ना ; हा के कि चर्य-(भरक्ष डारभन्न शांकीनकान कार्नारक (य मुबिष्ठिरवर मक ज्यामर्ग श्रक्रावर जीवन कगरकत मान क्रांस उट्ठाइ जा श्रुरा-मुहित (यटक भारत।

> क्षामाधिक मा-नाभ मुश (क्रव्राटनन, ठाव-বেন, এ ৬ নর ৷ ধ্যাপুশ্র জেনেও তাকে ববৰ करत्र निर्ण भारत्यम ना ८कन ५ जाभारत्र निका 9 भवायांकत उप्र अध्यव हिन ना ८वाध कांत्र।

শিশুব অক্স ভাইদের কথাই, আনরা কেবল শুনেছি, এই বললেন, তাই করলেন, কিন্তু থেচেছু তিনি ধত্মপুল, বোণ করি সেই ১০ কুই । তান আমাদের গুরুগালের স্পরাধ বালকটির মত স্বার পিছনে তার শারারক ও মানসিক অস্বাস্থ্য ও জ্বলিতা । নয়ে সাবা শৈশ্ব হ যোবন চুপ কবেচ কাটালেন।

ভারপর আমাদের আদর্শ পুরুষ বড বগসে কি করেছেন, ভাব বিচার করা যাক। যদিও শৈশবের নমনা দেখেই পরে কেমন হবেন সেটা অনেকটা বোঝা যায়।

নৃষ্ঠিরের অন্ত ছটি ভাই তাঁদের শৌষাবার্যা ও অন্তান্ত গুলাবলার জন্তে যত লা কার্চি
অজ্ঞন করেছেন, যুরিষ্ঠির তান বেশা পশ্পা
লাভ করেছেন নেতিক চ'রণের দাবাতে।
বু'দ্ধানন লোক কোন কিছুর সংক্ষানিরে নাণা
বামান না, এবং আমিন্স তা কবনার ক্রেষ্টা
করব না। নৈতিক চারত বহো কি নোঝার
তা আমি ঠিক জ্ঞান না, কেন্দ্র মাণ্টিরের
বিশেষ গুণের মধ্যে তার সভাবাদিতার উল্লেখ
নিয়ত হয়ে থাকে। কথার বলে, সভাবাদী
ব্যাধ্ঠিব। জাবনে সত্যের প্রাণ্ঠ বে মহতা
শদ্ধা তিনি দেখিয়েছেন, তার প্রিচন্ন তার
আচরণে আমবা পাহান কি চ্

মিথাবাদার অখ্যাতি মজ্জন করে শরাই.
কাজে-অকাজে মিথাা বলাল ঘাদের স্থাব;
কিন্তু বিপদের দিনে আত্মরক্ষাব জলো মিথাা
এমন কি অর্দ্ধ সত্য বা সভ্যের লগত যে
প্রশংসার বস্তু হয়ে ওঠে, সত্যের প্রাত শ্রন্ধা
কিং এটা কেমন করে স্ক্রব হল ? সত্যের
আদেশ যদি সেকালে কোনপ্রকারে ক্রা

তোত তবে যৃথিছিরের এ প্তনকে অগ্রাহ্ন করা চলতো; কিন্তু অর্জুন-সম্বন্ধ ভীম ব'লে ছিলেন, তিনি পরিহাস ছলেও মিথা। বলেননি, অথচ মহাপ্রজানের সমন্ন সকলেরই কোন না কোন কারণে পতন হলো— পতন হলো না শুরু বাব্যবাগীল এই অক্ষম মহাপুরুষের। সাধানণ মায়ুষের পক্ষে আদর্শ থেকে ভ্রন্থ হওয়া যু, সহজে কমা করে চলে, আদর্শ প্রকাষর পক্ষে আদর্শকে অক্ষ্মণ ও পবিত্র বাধাই তার জাবনের ব্রত। ভামকে আমবা যে কারণে পুরুষ করি, প্রতাপকে আমবা যে কারণে শুরুষ করি, প্রতাপকে আমবা যে কারণেই কি শুরুষ করি, প্রতাপকে আমবা যে কারণেই কি শুরুষ করি, প্রতাপকে ব্যামবা তে কারণেই কি শুরুষ করি। করা যান্ন প্র

গ্ৰাকার কালে ক^{তি}ত্তায়ের লক্ষণ ছিল— माम वक्षाहे । गुर्ध विक्रमः --- मखना-मडाध কাৰ কত্ৰাণ বৃদ্ধি থবচ হ'ত, তা আমবা (कन, जात्मरक र कार्यन मां , किस गुरक छोत्र निक्टबत छत्निश ना कवाई शंदना! यमि बदनक जाकोडियो (मना, बज्जून, जोम, बिकुक श्र इत्र विना मश्र श्र श्र श्रुक स्म पहिल्ला, उत्व टेनाक र नरम युक्त-खरगत क्या जाकांत्र क्या (यछ। किस जामन्ने नकरमह जानि, दर्गाउक नत्मय वकुटाय बाका-देजीव भाषा ठत्म, मठा-कार युक्त क्रम वामव विद्रम्म श्रीमान वादि । गूटका विवाश वा नियाम ३ ७३। मछव अर्ज्यू निय यट वीदत्रव, गृधिष्ठिदत्रत्र नश—शिन **आळीवन** পরের বারত্বকে আশ্রয় কবে ছিলেন--এমন াক াৰবাকে পর্যান্তও এ নিয়মের বাতিক্রম घटेटल दमनीन ।

य्धितित हिंदिका बात्र है प्रें किंग

আছে যেটাকে আমরা কোন নীতিবান্ লোকের আদর্শ ব'লে মানতে পারি না। আমি त्राका युधिष्ठिदतत कथा वन्छि-- लाक्वरमन স্বামী যুধিষ্ঠিরের কথা রগছি। ইতিহাদে আমরা এমনধারা ঘটনার কথা খুব কমট পড়েছি, যেথানে রাজা পাশা থেলার পণ রেথেছেন তাঁর রাজ্য এবং এমন দেশও খুব ক্ষ দেখেছি যেখানে প্রজারা সে-রাজাকে व्यानर्भ वर्ण' शृक्षा करत्र छ । व्यामारतत्र स्म রাজ্য ছিল রাজার হাতে ন্যস্ত ধন, সে ধনে রাজার অধিকার ছিল অনেক, কিন্তু পণে বসিয়ে দেবার নয়। ভা ছাড়া স্থাসনের कत्य जिनि द्रक्र-(यजन (প्राजन, कार्किन তিনি ছিলেন রাজ্যের কর্ণধার কর্মচারী— ভার পুরো মালিক নন্। হয় যুধিষ্টির এ কথা ভূলেছিলেন, কিম্বা তখন হয়ত এ নিয়ম ছিল না। কিন্তু তা হলেও যুধিষ্ঠির রেছাই পান না। কারণ সে রাজ্যু তাঁর একার সম্পত্তি নয়; পাঁচ ভাইমের। তাদের অনুমতি নেবার অপেকা তিনি রাখেন নি—শুধু তাই নয়—অমুমতি নেবার আগেই সন্ত্রীক ভায়েদের পণে বসিয়ে দিয়েছিলেন! এবং তাঁর ভারেরা আমাদের प्राप्त भावेषां वा अप्रां अप्रां अपार्व में পিঞ্জরের মধ্যে দিব্য আসন নিয়ে ভ্রাভূমেহের व्यक्तम् ७ व्यनिका महिमाम यए । व्यापा-श्राम অমুভব করবোন ৷ স্ত্রীর কথা বলা নিপ্রয়ো-क्रम (वाध क्रब्रि—वना वाक्ना, এ क्रीअ তিনি স্বয়ম্বর সভার পরীক্ষায় জয়লাভ ক'রে

অর্জ্জন করেন নি! নীতি-বিশারদ কিন্তু
স্থাক্ষে ত্-একটা কথা বলতেও পারেন—
তিনি বলতে পারেন যে তাঁর ভাববার সমর
নিতান্ত পার, অথবা আত্মসম্মান কুলগোবব
যথন অপম নের সীমায় এসে দাঁড়িয়েছে, তথন
ঐ কম সময়ের মধ্যেই ভেবে দেখলুম যে,
রাজ্য-ভাই সব গিয়েছে,বাকি আছে পাঁচভায়ের
একমাত্র ত্রী, তাকে পথে বসিয়ে দিলুম—
আদর্শ স্থানী নয় কি!

পদে পদে ভ্রান্তমতিত্বের দৃষ্টান্ত দেখিয়ে আর কথা বাড়াতে চাই না—যুধিষ্ঠির হয়ত ठाँत मगांक ७ कालाञ्यायी काक करत्र ছिल्न, पृष् किहूरे करत्रनि ; किन्छ वर्छमान नमस्य এমনধারা ভ্রাস্তমতি হুর্বল-চিত্ত ঝুটো মাহুষকে निय बामारमञ्ज এ कि विष्यना ! त्नरे-सामात्र (हरत्र काना मामारे गारमंत्र এकमाछ नवन, মাহুষের মত মাহুষকে পূজা করবার যাদের শক্তির অভাব, এই সব আদর্শকে নিয়ে ভারা আত্মপ্রসাদ লাভ করুক; কিন্তু মারুষ যারা,—তেজের উপর সত্যের উপর পবিত্র कीवरनत्र 'भरत्र यारमत्र काशांध ७ विषष्ठ याका, অন্তরে বাদের সার্থক জীবনের অসীম উৎসাহ, ভারা কেমন ক'রে এ মিথ্যাকে এ वार्थठाटक मठा व'ला जामर्ग व'ला भारत त्नर्व ? यनि প्राচीन काल मत्नत्र मञ जानर्ग না মেলে ক্ষতি কি! নতুন দেবতার প্রতিষ্ঠা कत्र! यूटी नित्र षात्र जूटण त्थरकाना।

- প্রবোধ চট্টোপাধ্যায়।

গান ও প্রাণ

मवादा खधारे एएक, कि मिवि दा मान १ বুলে তাবা, দেব গান।… ্ভ্ৰমর গুঞ্জরি' যায়, শিরোপরে পাথী যায় গেয়ে • বেশী কি দিবি রে এর চেয়ে প শুনে ভাবা বাহিরার পথে। व्यक्ति वक्षमा ९८ठे, हत्कित्र वर्षत्र क्रात्रत्थ, গগনের চন্দ্রাতগ-তলে গ্ৰহ রবি শশা পলে পলে भाय भाग हत्न जान मित्रा, গমকে গমকে কাপে মুগ্ধ ত্রাদে ধরিত্রীর হিয়া।

घारत घारत कांच পाणि, याँग, তোরা কে কি मिवि मान १ বলে ভারা, দেব প্রাণ। •• মরণ আসিয়া বলে পরিকাসে চোণ ঠেরে কেসে. — সে ত চের দেওয়া হলো যুগ যুগ ধরে দেশে দেশে; किছू नां ए निट्न (परकु, किছू निर्दे क्ट छ, अर्थन क दिश्रा भारत किटन किटन श्र कि सांग्र ८वटफ़ ! শুনে তারা— **८७८७ शिख गवरनरव करब्र (मन-ছाঙা।** दैशि (ছডে প্রাণ বলে, প্রাণ এল ধড়ে, কি কাজে লাগিতে হবে, বল জরা ক'রে। শীস্থীবকুমার চৌধুরী।

অবতার

(य-जगरत्र প্রকৃত কৌণ্ট লাবিন্সিকে, গাড়িতে উঠাইয়া গিয়া—কথন্ কৌন্টেসের ফুরসৎ হয়, তাহারই দেয় এবং কৌন্ট নিজের ভূম্বর্গ হটতে তাড়িত প্রতীক্ষা করিতেছিলেন। হইয়া অক্টেভের বাসা-বাড়াতে আসিয়া

উপনীত হন—সেই সময় রূপান্তরিত অক্টেভ नाविन्षि-शामारमत्र ভृত্তाয়। ধ্বধবে-সাদা একটা কুদ্র বৈঠকথানা মরে

চিম্নীর আশ্বহানটা ফুলে গুরা; সেই

চিমনীর সাদা মার্কেল পাথরে ঠেদ দিয়া, অনিন্দিতা রূপদীর সংসর্গে আমার চির को**न्छ (म**हधारों) चारकेल चालनात श्राक्षिय चालनाय सूर्व हरेता দেখিতে পাইল। আয়নাটা সোনালি পায়া- সেই চুড়ান্ত মুহুর্ভ যভই কাছাকাছি खन्नामा (मम्रात्म-मात्रा এक। द्वारिक एवे छे छे । इन्हें माणिन, उन्हें छोहांत्र मरनत छैर्दिश भानानमध् तकरम यमारना । यभिष्ठ कारकेष्ठ । वाष्ट्रिक नाशिन। প্রকৃত প্রেমের ধে দেহ-পারবর্তনের ভিতরকার শুপ্ত কথাটা জানিত, তথাপি, ভাগার নিজেব আকৃতি হইতে এই প্রতিবিশ্ব এত ওফাৎ যে, সে সহসা যেন বিশ্বাস করিতে পারিতেছিল প্রতিষ্ঠিক না। অক্টেভ এই অপবিচিত ছায়ামুখিটা একদত্তে দেখিতে লাগিল, উহা হইতে চোখ ফিরাইতে পারিতেছিল না।

(म (पिथा উठ) जाद धरकरनद ছায়া-মৃত্তি। ইচ্ছা-নিরপেক্ষভাবে সে একবার रथांक कतिया (मिथिन, को के उनाक िर्मानम কাছে তাহার পালে দাঁডাইয়া আছেন কি না, "বা টোকুরালা, আপনাব অভর্থনার জন্ত এবং তাঁহারই ছায়া পড়িয়াছে কি না। কিন্ত প্রস্তুত আছেন"। (म এक नाइ चाह्य। निम्ह ग्रह এह ममस्ड निष्ठान bनिन, (क नन। (म এह প্রাদাদেব ডাক্তার শেরবোনোর কাও।

करत्रक मिनिष्ठे भरत, कारकें छ-। एक नारिन्थि,— खास्त्रारङात चामीव भन्नीरत्र মধ্যে ভার আত্মা যে প্রবেশ করিয়াছে এহ তাহুসরণ করাই শ্রেয় বিবেচনা করিল। চিন্তা হইতে বিরভ কইয়া ভাহার চিন্তার গতিকে বর্ত্তমান অবস্থার কতকটা অনুযায়ী করিয়া এণিল। সমত সম্ভাবনার বহিভুক এই আবিশাশু ঘটনা, যাহা স্বপ্নেত কগন ভাবা यात्र मा, छाहे कि मा घाँगा अथनह (महे यक्षित्वत्र व्यात्राधा (प्रयोज मन्यूर्थ व्याप উপস্থিত হইব, তিনি আর আমাকে

সফোচ ও ভাক্সতা, ভাই আদিয়া আবার **(मथा मिल—ध्यन के एक्षम क्षयाना अस्किट्ड** व व्यनामुक, कोन (मर्ह्य मरश्रे व्यवस्थि क्षिर्छ।

না, আয়নাৰ এই প্রতিবিদ্ধ ভাষার্থ মুখেব বাণার পরিচারিকার আগমনে, এই সমস্ত চিন্তা ও উদ্বেগ অপসারিত হইল। ধবন প্ৰিচারিকা । নবটে আসিল, তখন কৌণ্ট-দেহ অক্টেভেব বুক ধড়াস্ ধড়াস করিতে লাগিল, ভাহাব দেচের সমস্ত রক্ত যেন अर्पिएक कामिया क्या इस्म भाविष्ठाविका বলিলঃ—

काशांक्ट (मंबए० भारेम ना। (मधिन- क्लेक्ट-(म॰ अट्डिंट भारतांत्रकांव भिट्टन व्यक्तिर्मक किट्टे कानिक ना। भग्ठाननाव হতস্তত-ভাব দেখিয়া পাছে ভার অভগ্র প্রকাশ হইয়া পড়ে এইজন্ত সে পবিচারিকার পরিচারিকা ভাষাকে একটা ঘনে লইয়া (शिषा। घडिषे। (ये । अके के विक अकरमय। এটি রাণার প্রসাধন-কক্ষ। প্রসাধন-টেবিল সম্ভ স্কুমাব বিলাস-সামগ্রীতে বিভূষিত। উৎকৃষ্ট থোদাই কাজ-করা কতকগুলা आनगरी; धानभाती छना माहिन, मथमन, মলমল, জরি প্রভৃতি নানাপ্রকার সৌথীন প্রভ্যাথ্যান করিবেন না! সেই অকল্ফ পরিচ্চদেঠাসা। ঘরের দেয়াল সবুজ সাটিন দিয়া মোডা। মেজের গুক্তা বিচিত্র
মোলায়েম রডে রঞ্জিত এক পুরু কোম।
গালিচায় আফাদিত। প্রসাধন টেনিলে
সংগদ্ধ-নির্যাসের কটিক সিস্পুলা বাহাব
আলোম বিক্ষিক্ কারতেছে।

খনের মধান্তলে একটা সন্ত্র মথমলপা দানের উপর অভ্নত গঠনের হস্পাত্তের
কাজ করা একটা বুছৎ ভূষণ-পেটকা—
াহাতে বিবিধ রত্বালস্কাব সজ্জিত রহিয়াছে।
কিন্তু এই সব অলক্ষার পেটকাতেঃ প্রায়ণ বদ্ধ
দাবি + ,—বেশিনেশ কাচৎ কথন শহা
বাবহার কারতেন। নারা-স্থল্ড আলাক্ষত
স্থল্চি তাঁকে বলিয়া দি - বর অলক্ষারে
রপসার প্রয়োজন হয় না। কপের চ্টাব
কাচে গ্রাথ্যের হটা অতাব ও চ।

ভানং। ১হতে গদা লাক ভাছে নিতে
পুটাহ্যা পভিয়াছে – সেই জানলার কাছে,
একচা বহু আয়না ও প্রসানন-টেবিলেব
ছহ ভেলে বৈঠকী ঝাঙের ছ। বাতির আলাের
ড্রামিত। তাহাবহু সন্মুথে কৌন্টেম্
প্রাম্থাভি-লাবিন্ত্রা রূপলাবলাের ছটা বি শাণ
করিয়া উপাবিষ্টা এক লঘুস্বছে বহিরাভাদনেব
নাচে কার্পাদেব একটা শিথিল বন্ধনহান
নৈশ পরিচ্ছেদ। তুষার শুল্র হংশাভন সভাঙ্গম
মরাল কণ্ঠ বহিরাছাদনের ভিতর ংশত দেবা
যাহতেছে। ক্রুল দাসাতে মিলিয়া তাহার
প্রচুর কেশগুন্ত ভাগ কবিতেছিল, মস্থা
কবিভেছিল, কুঞ্চিত করিনেছিল, কালের
ঘর্ষণ না লাগে —এই লাবে সাব্ধানে তেলিল।

ষথন এই কেশ-বিভাসের কাজ চলিতে-ছিল, রাণী জবির কাজ করা সাধা-মখ্নলের

এবটা ছোট চটিজ গায় অগ্রভাগ মৃথ মছ্
নাচাহতেছিলেন। বথন কথন বিশ্বাবয়ণবিশ্বের কাজ একটু সারয়া গিয়া, ৽্যায়-শুশ্র
নিটোল বাভ বাহিয় হন হোছল, এবং বোল
কেশগুদ্ধ স্থানট্য হল অতি শোভন
ভগীতে হাত দিয়া গাহা সরাহয়া দিতেছিলেন।

তাহার সমস্ত শরীরে থেকপ একটা শোভন এলানে; ভাবভন্ধী ছিল তাহা কেবল প্রাচীন প্রীব্ পাষাণ মৃতিতেই লক্ষিত হয়। একপ লবী ধরণের তরুণ সৌন্দর্যা, স্থণর গঠন আর বুর্রাাপ দেখা যায় না। য়বেলের বাগান-বাভীতে অক্টেভ কোন্টেসকে যথন দেপিয়াদিল ভাহা অপেক্ষা এখন কৌন্টেস্ আর্ব চিত্ত মোহিলা হং রাছেন। যদি অরেভ পুর্বেছ লিব ক্লে নৃগ্ধ না হলতেন, কাহা হলে তাহাকে এখন দেখিয়া নিশ্চয়ই মৃগ্য হলেন। কিছু সৌলাগাক্রেমে আরও কিছু যোগ কবিয়া অসীমের বুদ্ধি করা যায় না।

কোন একটা ভাষণ দৃশ্য দেখিলে ষেদ্রণ হয়, কৌনটেশকে এইরপ মুন্তিতে দোন্ধা, কৌন্টদেহধাবা অক্টেভের হাঁটুতে ঠেকাঠেবি হুছতে লাগিল,—সে একেবারে যেন আত্মহারা হুইয়া পড়িল; মুখ শুকাইয়া গেল। মনে হুছতে লাগিল, বে যেন হাত দিয়া ভার গলা টিপিয়া ধাব্যাছে। লোহি এবল ভারিশিখা যেন ভাহার চক্ষের চারিধাবে ভরাক্ত হুছতে লাগিল। এই রূপদী, ভাহাকে মুগ্ধ কাব্যাছে।

এই আত্মহারা ভাব, এই সৃঢ্তার ভাব কোন প্রত্যাথাতে প্রণয়ার পক্ষেই সাক্ষে, কিন্তু কোন স্বামীর পক্ষে নিতান্তই হাস্তজনক —এই মনে করিয়া কোন্টদেহ অক্টেড সাহস করিয়া দৃঢ়পদক্ষেপে কৌন্টেশের অভিমুখে অগ্রসর হইল। দাসীরা তথন তাঁহার বেণী রচনা করিভেছিল; তাই কৌন্টেশ মুখ না ফিরিয়াই বলিলেন, 'আ! তুমি ওলাফ! কি দেরী করেই এসেছ আজ!" তার পর, বহিরাবরণ-বল্লের ভাঁজ হইতে তাঁর স্থলার একটি হাত বাহির করিয়া, অক্টেভের দিকে বাড়াইয়া দিলেন।

কোণ্টদেছ অক্টেভ কুস্ম-কোমল এই হাতথানি লইয়া জলস্ত আগ্রহের সহিত দীর্ঘ টানে চুম্বন- করিল—যেন ভাহার সমস্ত অতঃকরণ ভাহার ওঠাধরে অসিয়া তথন কেন্দ্রীভূত হইয়াছিল।

আমরা জানিনা, কি-এক স্ক্র বোধশক্তি
হইতে, কি এক স্বর্গীর লজাশীলতা হইতে
হাদরের কি এক যুক্তিহীন যুক্তি হইতে,
কৌন্টেস ধেন পূর্ব্ব হইতেই সমস্ত ব্যাপার
জানিতে পারিয়াছিলেন; লোহিতবর্ণ উচ্চ
গিরিশিথরস্থ তুকারয়াশি উষার প্রথম চুম্বনে
ধেরপ হয়, সেইরপ তাঁহার মুথ, তাঁহার কণ্ঠ,
তাঁহার বাছ সহসা রক্তিম রাগে রঞ্জিত হইল।
আর্দ্ধ অভিমানের ভাবে, অর্দ্ধলজ্ঞার ভাবে,
কাঁপিতে কাঁপিতে তাঁহার হাতথানি ধীরে
ধীরে সরাইয়া লইলেন। অস্টেভের ওঠাধর
ক্রাপে তাঁহার মনে হইল, তাঁহার হাতের উপর
ক্রে ধেন অগ্নি-তপ্ত লোহার ছাঁকা দিল।
তথাপি তিনি চিত্তকে সংষত করিয়া, তাঁর
সেই শিশুবৎ মধুর হাসিটি মুথে আনিলেন।

"ওলাক, তুমি কোন উত্তর দিচ্চ না কেন? আমি যে ছয় ঘন্টায় উপয়েও তোমাকে আজ দেখতে পাইনি।" পরে ভৎসনা স্বরে বলিলেন—"তুমি আমাকে এখন বড়ই অবছেলা কর, পূর্বে ত তুমি অনেক রাত্রি পর্যান্ত আমার্কে এই রকম করে এক্লা ফেলে থাক্তে পারতে না। তুমি কি আমাকেই শুধু ভাব ছিলে?"

किंग्हें मह चार्छे छ छेखर करिन :--

—"তোমাকেই। তোমা ভিন্ন আর কাউকেনা।"

—"না, না, সব সময় আমাকে ভাবনি;
যে সময়ে ভূমি আমার কথা ভাব, আমি দুরে
থাক্লেও তা জান্তে পারি। এই মনে কর,
আজ রাত্রে আমি একলা ছিলাম, সময়
কাটাবার জন্ম পিয়ানোয় বসে একটা স্তর
বাজাচ্ছিলাম। যথন স্তরগুলো থব জমে
উঠেছিল, ভোমার আত্মা কয়েক মিনিট ধরে'
আমার চারিদিকে একবার ঘুর-পাক দিয়েছিল;
ভারপর কোণায় যে উড়ে গেল,কিছুই জানতে
পারলাম না—ভার পর সে আর ফিরে আসে
নি। মিথ্যে কথা বোলো না। অমি যা ভোমাকে
বলচি—সে-বিষয়ে আমি খুব নিশ্চিন্ত।"

বস্তুত প্রাম্বোতির ভূল হয় নাই; এই
সেই মুহুর্ত্ত, যে মুহুর্ত্তে ডাক্তার শেরবোনার
বাড়ীতে, কোণ্ট ওলাফ মন্ত্রপুত জলপাত্রেয়
উপর নত হয়ে একাগ্রচিত্তে তাঁহার আরাধ্য
দেবীর মূর্ত্তিকে আহ্বান করেছিলেন—তার
পরেই তিনি সম্মোহন-নিদ্রার অতল সমুদ্রের
মধ্যে নিমজ্জিত হইয়া পড়েন। জ্ঞান তাঁর জ্ঞান,
তাঁর ভাব, তাঁর ইচ্ছা—সব বিলুপ্ত হইয়া যায়।

দাসীরা কৌন্টেশের নৈশ প্রসাধন সমাপন করিয়া চলিয়া গিয়াছিল। কৌণ্টদেহ অক্টেড সেইথানে বরাবর সমান দাঁড়াইয়া থাকিয়া কৌন্টেশ প্রাক্ষোভির উপর জলস্ত দৃষ্টি নিক্ষেপ করিতেছিল। এই লালসা-দীপ্ত দৃষ্টি সহ্ করিতে না পারিয়া কৌণ্টেস তাঁর স্বাঙ্গ লোপ পায় নাই। কি-একটা অজ্ঞাত বিপদ व्यानशास दिण क्तिया व्याक्तामन केविटनन, ८करम माथाछ। ८थामा वाश्म। बक्करमाशम নামে সেই সন্ন্যাসীর মন্ত্র-বল্পে ডাক্রার শেব- এই "বিতায় দৃষ্টির" প্রভাবে বাহা অনুমান বোনো গ্রহ আত্মাকে স্থানীচ্যত করিয়াছেন— • হহতেছে ভাহা অগ্রাহ্ম কবা ঠিকু নহে। এकथा खर् शास्त्रांच (कन-- कान व मान्यत्र অন্তনান করা অসম্ভব। কিন্তু প্রাক্ষাতি, किंग्डिम अखिष्डत हार्थ, खनारकत महत्राहत চোণের ভাব, সের দেবোপম বিশ্বদ্ধ প্রশান্ত ধ্ব নিত্য প্রেমের ভাব দেখিতে পাহলেন না। কোণ্টদেহ অক্টেভের ঐ দৃষ্টিতে একলা পাগিব লালসাব আগ্রন জ্লিতেচিল। •াই ঐ मृष्टि (कोर्ण्डेम् वाशिः ई नाष्ट्र इन्धा भाष्य्राष्ट्रिया विक । क घरियार प्राचर १ ना পाविद्यां कांत्र भरम १ व धकला ,कडू निम्हग्रह घरिशाष्ट्र। नानाञ्चकाद अग्रुगान काइर्ड माशिक्न, তবে आमि कि धनन लगारकत कार्य खबु वका र ० द वमने, धक-का नी वावांक्या माज—यात्र काय्य वालमाय িনি উনাত্ত হয়েছেন। আমাদের আতায় আরায় কেমন একটি শৃক্ষর মিল ছিল--ছুই क्षमग्र-वाना टकमन मधुत्र छार्व धक स्ट्र বাজ্ত, না জ্ঞান কিসে এই মিলটি, এই ঐক্যভানটি ভেঙ্গে গেল। কিন্ত ওলাফ কি আর বাটকে ভাল বাসত প্রারিসের পঞ্চিল মলিনতা ঐ অকলক হাদ্যকৈ কি कथन कलिक करत्रिक १ " এই প्रश्ने छिन তার মনের মধ্য দিয়া জভভাবে চলিয়া গেল, কিন্তু কোন সন্তোষজনক উত্তর তিনি मिटि পाরিলেন না। ভাবিলেন হয়ত আমি উন্মাদগ্রন্ত হরেছি। কিন্তু তবু ভিতরে ভিতরে यन षञ्च कतिर् गांत्रिलन ए, जांत्र वृद्धि षांगारक जूमि कमा कर। किस एमथ, यपि

তাঁর সমুখে উপস্থিত—এই রূপ ভাবিয়া তাঁর অতান্ত ভন হত্ত। মনে করিলেন আত্মার

তান বিচালত ৭ আকুল-ব্যাকুল ২ইয়া উঠিয়া পড়িলেন এবং উঠিয়া তাঁহার শ্রন-कर्फन पिटक छाञान । कहेराना । कामोक ८कोण्डेड काँव मद्य मद्य हिल्ला। दकोर्ण्डेम् দরজার কাছে আদিয়া আবার ফিরিলেন। মহতের জন্ম থা।মলেন। তার পর প্রস্তর भृष्टिय गण माना अ मोजनकात्र (को व्हेम्, खे মুববের প্রাত ভাতি বিশ্বারিত কটাক্ষ নিক্ষেপ कविगा घरवत्र भरधा अरवम कांत्ररणन, धवः कर्ा वादया मवकाछ। वक्त कविया, थिन वाशास्त्रा । भटनन ।

"उ (४ व्यक्ति छत्र पृष्टि।" अहे क्या কুলয়া অন্ধ-মুচিছত তইয়া একটা কৌচের উপর শুইয়া পাছলেন। * চৈত্র ফিরিয়া व्यामित्न मान-मान वानात्ननः – व्याक्ति ध ८कमन करत्र' ठ'ं।, त्मठ मृष्टि—्य मृष्टित ভारते। आमि कथनङ ज्लावना—त्मर मृष्टि अनारकत thica (क्न बाक वार्त (मथरक (भगाम ?" সেহ বিষয় হতাশ জ্বধের আমার স্বামার তোথের উপর জলে উঠ্ল কি করে' গ অক্টেভেব কি মৃত্যু হয়েছে ? আমার কাছে চিরবিদায় নেবার জন্ত ভার আত্মাণিক মুহুর্তের জন্ম আমার সন্মুখে দপ্ यि आमि जून कर्द्र थाकि, या भागानद মত মিথাা ভরে আকুল হয়ে থাকি, ভবে

আমি আম রাত্রে ভোমাকে আলিজন করলাম—ভাবতবধের ডাইনা মন্ত্রে সেই নারী কর হাম, তাহণে আমার মনে হ'ত আমি হাবে অসহায় তাবে আমার কাছে ধরা দিনেছিল একজনকে আলিজন করিছি।"

विन्छ। जान कि ब्रह्म नाजादना इन्सार्छ किना, - पृष्ठ-ान किस इध्या, याशांव डेलब (य गर्भन निर्मिट ७ हिल. त्मर न्ये नहें। ज्ञानाङ्गा, কোন্টেশ গাত শিশুর মত গুঁডি-গ্রাড मात्रिया विद्यानाम अहेश पिड्रामन। कि এक चानिएक्स (चमना श्राय । व्यक्त । ममख बाजि निजा रुवा ना। (ভারের দিকে चुमारेया পড়িলেন। ক । অসংলয় অদুভ স্থা আসিয়া ভার গভাব নিদ্রার ব্যাঘাত করিল। আগুনেব মত ঘলও সেই **ष**रिष्ठ । व क्यामात जिन्द क्टर्ट — ंशित छेलत धकपुरहे शिक्षि आर्थ धवर তাহার উপর আগুনের হল্কা নিকেপ किरिड्रा वान भिर्म मध्य छामात्र भाउन लारह इन हो कारणामूहि— मुथ वाल-द्रावा व्याक्त, - ५५ भ्या विमा बाटक, वार्थार्ग छ ভাষায় বিভবিভ কবিয়া কি পলিতেছে, এই बाहु । बारा व वाक । बार । कि ब তার নিজের আরুতিতে নয়-ত্যন্ত আরুতি श्रीत्रम् ।

আক্তিভ যগন দেখিল, তার সম্বাধেই দবজা
বন্ধ হল, ভিতরকাব আর্গলেব কাচি-কোঁচ
শক্ষ শুলা গোল, তথন সে কিরাপ হতাশ হইরা
পাজল, হাহা আমরা আর বর্ণনা কবিব না।
ভাহার সেই চুড়ার মুহুর্ত্তের চরম আশা
আমহিত হইল। মনে মনে বলিল:—"আমি
কি কবিলাম। এক নারীর হুদম জয়
করবার অন্ত এক বাছকরেব হাতে আ্র-সমর্পণ
করে আমার হুহকাল প্রকাল সমস্তই নপ্ত

করলান—ভাবতবধের ডাইনা মন্ত্রে সেই নারী
অসগার গাবে আনাব কাছে ধরা দিনেছিল
কিন্তু আবার পালিয়ে কেল। আনি পুর্বের
প্রেমিক হয়ে প্রত্যাখাত হয়েছিলাম, এখন
'আবার স্বামা ইয়ে প্রত্যাখাত হলাম।
প্রাস্থোতর অজের সভাত্ব, যাত্করের সমস্ত
নারকা কুমন্ত্রণা-জাল ছিল করে দিয়েছে।
শ্যন-ক্ষের ত্বার্দেশে এক দেবীমৃর্তি
আবিভূত হয়ে যেন কল্ডিগ্-চিত কোন
ত্বাত্মাকে দুর করে দিলেন।

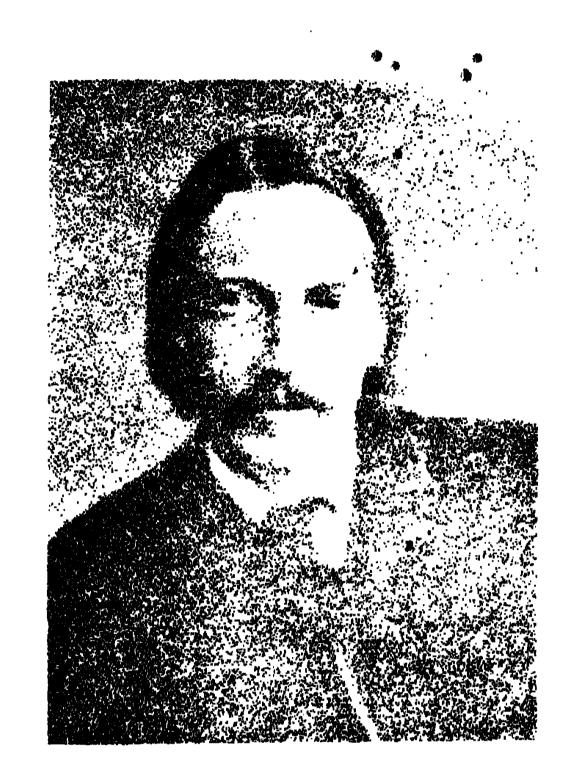
অন্টেভ সমস্ত কাবি এই অছুত অবস্থায় आत्र थाविटन भावन ना। तम दकोल्डित महन्धा यूर्विष्ठं लाशिया मावि मात्रि कार के चत्र भात क्रमा कावाभाष (भशिरक भाग्न,-काटाव चानिनिविभिष्ठ अवने छिरु आविक—- टामाट मश्मय नुष्मित्र । धर्मविष्ठि शका। काशिक खारम ५ मरनव आरवरश माखक्षाय ३०१ ८कान्ड ८४० व्यट्टेन ८मा भागःक्षव **५** भव ७६ या भी । म. – (भवरवादनाव উপর অভিশাপ ব্যব ক।রভে কারতে ঘুমান্মা পড়িল। भो जा जा कर, क्यां पर इस मरम স্পে ভাহার মনের অবস্থা একট্ট ভাল কইয়া উঠিল। সে পতিজ্ঞা কারল, —"এখন इम् (क वामि शक मिश्यक मध्य क्या हन्त ; अतिभ ज्यन मुष्टि । जाव मृत्यन भारम ८५८म भार्य ना ; श्वाभी व ध्रम-थावन भवनश्रम क्रव । **कोल्डिय পরিচানকের সাহায্যে অক্টেড** এक টু গম্ভীর ধরণের সাজ সম্ভা করিয়া, ধীর-পাদবিক্ষেপে থাবাব ঘরে প্রবেশ করিল। (महेशात्न कोल्डिन शांउर्डाब्दन छोशंत्र क्य भरभका क्षिर्गहरम् ।

(ক্রমশঃ)

প্রিল্যোত্রিজনাথ ঠাকুর।

চয়ন

ষ্টিভেন্সনের প্রিয়ত্না



ु ष्टिटनमन

When my wife is far from me,

The undersigned fails all at

sea, R. L. S.

নিষ্ণাত ঔপস্থাসিক ধ্রাট লুইস ছিলেনসন নিষ্ণের স্ত্রী-সম্বন্ধে এইভাবে নিজের মনের প্রেমকে ব্যক্ত ক'রে গেছেন। তিনি তাঁর এক বন্ধুকে লিখেছিলেন, "আজ যে কামি একটা উন্নতিলাভ করতে পেরোছ, তার একমাত্র কারণ আমার সম্প্রিমা। যথন আমার ভিতরে ঠক্ঠকে হাড় আর পক্ষকে কামি ছাড়া আর-কিছু দেশবার-শোনবার বিষয় ছিল না, যথন আমাকে দেখলে বাসরের বরের বদ্ধে ঘাটের মড়া ব'লেই মনে হোভো, এই কর্ষণাম্য্রী মহিলা সেই ङ्क्तिन्हे आमात्र. कर्ष्ठ वत्र-माना अर्थन करत्रिहरूना ।"

বান্তবিক, ফ্যানি অস্বোর্ণের সঙ্গে বিবাহের সময়ে ষ্টিভেনসনের অর্থভাগ্য ও স্থাস্থাভাগ্য এইই শোচনীর হয়ে উঠেছিল। বিবাহের ত্লামে ফ্যানি অস্বোর্ণেরও স্থা হ্বার কোন কারণ ছিল না। সভেরো বংসর বয়সে প্রথমে যে প্রক্ষের সঙ্গে তাঁর বিবাহ হয়েছিল—সে লোকটি ছিল একটি একের নম্বরের গুরাচার। অস্বোর্ণ স্থামী ত্যাগ ক'রে নিজের তিনটি সন্তান নিম্নে যুরোপে পালিয়ে এসেছিলেন। তাঁর সজে ষ্টিভেনসনের আলাপ হয় ফ্রান্সে এবং তিনি প্রথম দৃষ্টিভেই অল্বোর্ণের প্রেমে পড়ে

ন্তিভেনসনের বয়স তথন ছাবিশ আর

অস্বোর্ণের ছব্রিশ। ষ্টিভেনসনের শারীরিক

তর্বলতা ও যত্ন করবার লোকের অভাব দেখে,

অস্বোর্ণের মাতৃহদয়ে মসতার কুষা কেগে

উঠল। সেই মমতা ক্রমে গভীর প্রেমের
আকারে দেখা দিলে। ষ্টিভেনসন তথন
ভীষণ ফল্লাকাশে আক্রান্ত এবং বড়-ছোর

মাদকতকের বেশী তাঁর বাঁচবার আশা ছিল

মা। কিন্তু অস্বোর্ণ তবু তাঁকে বিবাহণ

করতে ইতন্তত করলেন না এবং বিবাহের
প্রেও একমাত্র তাঁরই সেল-যত্নে ষ্টিভেনসনের
নির্ন্নাপ্রায় জীবন-দীপ্টির শিখা চোদবংসর
কাল উজ্জল হয়েছিল।

অদ্বোর্ণের বাপ-মা ছিলেন अनमाम। आत्मितिकात्र देखिशात्नारभानिम নগরে তাঁর ক্ষম হয়।

विवाद्यत भन्न त्य कामन रमन ष्टिप्जनमन (वैंटि ছिलिन, ८मर्रे नमस्त्रत मधारे সাহিত্যক্ষেত্রে তিনি অমর কীর্ত্তি অর্জন करतन। ठाँत ভালো ভালো বইগুলি এই ममरब्रे (नथा।

স্বাস্থ্যলাভের ভ্রম্থে ষ্টিভেন্সন তার महसर्विंगीटक निष्य श्राप्त मात्रा शृथियो शयाहेन ক'রে বেড়ান। তারপর তিনি প্রশান্ত महानाभटतव नार्याका बीटल जिट्य क्राकी कन। **এবং এইখানেই, আজ থেকে ছাব্বিশ বৎসর** আগে তাঁর মৃত্যু হয়।

দক্ষিণ-দাগরের দ্বীপে দ্বীপে তিন বৎসরকাল ভ্রমণের সময়ে, তাঁর প্রেমম্মী স্ত্রী ষেকত কষ্ট সহিয়াও স্বামীর প্রত্যেক অভাবটি পূরণ कर्त्रिहरमन, रम काश्नी छन्रम भवगरक है अखिकुछ र'टङ रूट्य। श्राताविक सम्पन्त मम् अनिय अहारना, निर्णन बीरभन्न मरधा থাবার যোগাড় করা, জাহাজের থোজ निका, जातक पूर (शरक ऋश शामीत पर

वर्रनत स्ता निष्य शिक्षी-वाक्ष (एटक जाना, जाहारखद जाखन (शटक जामीत পাও লিপির পাঁট্রা বাঁচানো,—এম্নি কত ব্যাপারে অদ্বোর্ণ ছাড়া অসহায় ষ্টিভেনসনের আর বিতীয় গতি ছিল না ৷

এই নিঃস্বার্গ প্রেমের উপরে শেষ্টা হঠাৎ একদিন যবনিকা পড়ে গেল। তথনো সন্ধার আহার স্তক্ত্রন। বাংলোর বারান্ধায वरम ष्टिन्नमन धूव थूमि यदन जीव मरभ গল্পজন করছিলেন। আচ্মিতে আপনার মাথায় তিনি ছই হাত রেথে টেচিয়ে উঠ্লেন, "এ কি হোলো ?" তারপর ভাড়াভাড়ি জিজাদা করলেন, "আমার চেহারা কি ष्मकुल मार्गशास्त्र ?"—य'म्बरे लिनि खीत পাশে হাঁটু গেড়ে বদে পড়লেন। আজ কত বৎসর ধ'রে শান্তি-স্থ-আরামের জন্তে এম্নি ভাবেই তিনি স্ত্রীর মেহ-ভরা কোলের ভিতরে वार्थेत्र (हरत्र अरमहिन।—देवश्र (मश्र ভার মুথের উপরে মরণের অন্ধকার ঘনিয়ে এল এবং স্ত্রীর আলিসনের ভিতরেই তাঁর वक एक क'रत्र अखिम निःशाम रवित्रप्र ८गन।

नत्र ७ एयत ७ १ ४ द

নমওমের সর্বশ্রেষ্ঠ ভাক্ষর ষ্টিফ্যান স্থিতিংএর माभाक्ष পরিচয় দেওয়া হয়েছিল। গেল কয় वह्दत्रत्र मध्या जाँत शटजंत्र कांक नित्र वाद्यां ष्यदनक ष्यादगांहनां स्टब्र्ट्स । शाबदब्रब्स छेशदब्र क्रमन क'रत्र कविंछ। निषद्छ,—थानि नत्रश्रद्ध छाहेन निषद्छ यान। किन्न চरित्म वर्णत

চার পাঁচ বছর আগে "ভারভীর" চয়নে কেন,—একমাত্র রোদা ছাড়া এ-যুগের আর কোন ভাষর পারেন নি।

> তার সংক্ষিপ্ত জীবনী এই। চূডাতর वर्मन भारभ, शन्हिम नन्न ७ दश्य छात्र छन्। विश्वानरम्ब (मथाभए। मान क'रत जिनि व्यथरम



াস জিং

বয়সের সময়ে আইন ছেড়ে ভিনি লগিত কলার আশ্রেম আজ্মমর্পন করেন, জামনীর বালিন সহরে গিয়ে ভান্তর ভোল্ফের কাছে সিণ্ডিং শিল্পশিকায় প্রায়ুত্ত হন। ছয় সাত বছর সেখানে থেকে, ভান্তর্যো হাত অনেকটা তুরস্ত ক'রে নিয়ে, ভিনি আধুনিক লগিত কলার কেন্দ্র পাারী সহরে আগমন

পাারীতে থাক্তে থাক্তে ছাত্র-অবস্থাতেই দিন্তিং তাঁর অন্বিতীয় মৃত্তি Valkyrie গঠন করেন।

একবার একটি পাহাড়ে উঠবার সময়ে আচম্বিতে সিপ্তিংয়ের চারপাশে গভীর গর্জনে ঝটিকা ক্লৈগে উঠেছিল। তাঁকে বার বার ধান্ধা মেরে তীরের মতন ঝোড়ো হাওয়া বয়ে



विना भ



र प-र जिल

ब्राक्त नाग्न-मर्क भरक निर्विष्ठ वादाय निष्टि भकर्म मिश्वः गत्र नाम ऐक्ताद्र कवर्ष्ट्रन। नारकत्र यन्यनानत्र मार्य मिश्टित्रत्र भाद्क প্রাণের ভিচরে ঝড়ের যে রুদ্র মৃত্তি ফুটে উঠেছিল, এই "রণরঙ্গিণী" বা Valli, rie (७ ভারই স্থায়ী প্রকাশ আছে।

মুরোপের কলা-রাজ্যে সিজিংএব স্থান কোপার, ভাই নিয়ে এখন আলোচনা চল্ছে। খাপছাডা কোন-কিছুও নজরে পড়ে না।" কলাজগতের সর্বভ্রেষ্ঠ প্রতিভাধরদের সঙ্গেই

নেমে এল। সেই খন খন বিহাতের চমকানে বিখ্যাত ভার্মান 'বশেষজ্ঞ কুল নের মতে ও পাহাডেব গুহার পাহার পতিধ্ব'ন "রোদার সাল গুলনায় সিণ্ডি কিছু-মাত্র খাটো হবেন না। রোদাব সঙ্গে সঙ্য সতাই তার গঠন-পদ্ধতিরও অনেকটা মিল व्याष्ट्र । काधक ह नगरत्र नगरत्र द्वानात থেয়ালেব থেলায় যে সব অসক্তি প্রকাশ পে'য়ছে, সিভিংএর ভাতের কাজে তেমন

नत्र ७ नात्रीत्र मर्था প्रक्लात्त्रत्र व्यक्ति



যে গভার আক্ষণ আছে, রোদার মতন সিভিংও তা শিলাপটে চমৎকার কুটিয়ে তুলতে পেরেছেন। তাঁর বচিত 'রাত্রি'তে কিন্তু এ সম্মান পেয়েছিলেন তিনি প্রায় আমরা এই ভাবেরই ছবি দেখি। 'রাত্রি'র ভাব-ভঙ্গিতে কতটা প্রেমের ও ক্লেহের, এবং খুমস্ত মেয়েটির সর্বাজে কতথানি আয়-সমর্পনের রূপ বিক্সিত হয়েছে!

রোদার শিল্প-জাবনের অধিকাংশ সংগ্রামে পরিপূর্ণ। লোকে তাঁকে সহজে চিন্তে भारत्र नि। हार्तिष्ठि एथएक नाना वाधा-विष् हिश्मा-निका, जनामन ও প্রতিবাদের ভিতর (थरक दर्शमा वष्टकरहे निष्मत्र भथ करहे

नित्रं ने भे अश्वादन (भारकारक दगदत्र छिटनन । আখুনিক জগতের তিনি শ্রেষ্ঠ ভাস্কর বটে,— জীবনের সায়াহে।

মধ্যে নিজিত পুরুষের মুখের ও হাতের যদিও প্রতিভা-মাত্রেরই স্বরূপ চিন্তে मित्रि माल, তবু এ-कथा मठा (य, चरमा) নিজের নামকে প্রতিষ্ঠিত করতে, সিণ্ডিং তেমন বেশি কণ্ট পান নি। নরওমের আধুনিক শিল্প-সমাজে সিণ্ডিং গুরুর মতন जामत । अयान गांड करत्रह्म। अयः সমগ্র স্বাভিনেভিয়ার ন্বান কোন শিলাই নিভিংয়ের প্রভাব থেকে নিজেকে মুক্ত রাখতে পারেন-নি।

ভাবুকতার ক্ষমতা "

এই আগ্নেম্গিরিব পাদমূলে যে নিবিড অরণা, আলাদা হয়ে আছে। তার মধ্যে থাকে গরিলার দল।

জাবটি মাথায় আটফুট উচু, ওজনে পাঁচমণ পঁচিশদের; ভার বৃকের বেড় একষ্টি ইঞি। চল্লিশজন পালোয়ান মানুষ এক দঙ্গে আক্রমণ कद्राण ७ नक्षा कहे (म এक्षा है (मर्य-धर्य তুশো ধুনে দিতে পারে,—গামে তার এত (बार् ।

ছবির গরিলার ডানধারে, ওপরের হাত-ত্থানা গরিলার; আর নীচের হাত-ত্থানা মাহুষের। এই ছ-জোডা হাতের ভিতরে আস্ল ভফাৎ হচ্ছে বুড়ো-আঙ্গো। চিন্তাশজিব ঘারা মাহুষের কপালের মতন, হাতের বুড়ো-প্রভাত জমেই বিকাশলাভ করেছে। একরকমই দেখুতে।

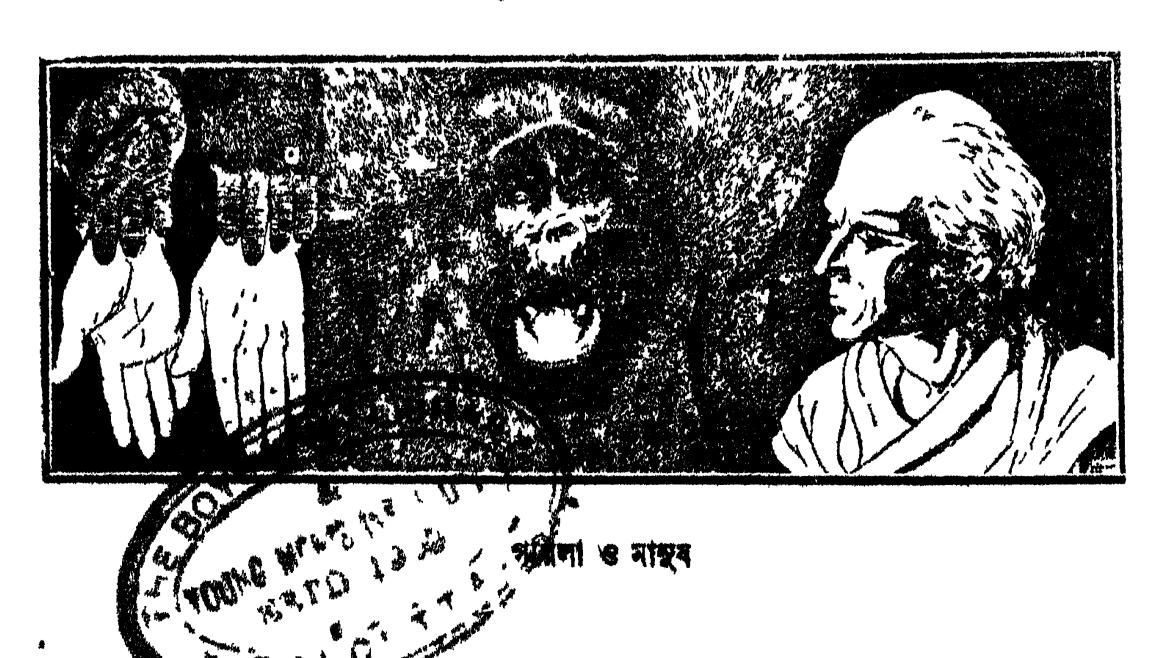
গরিলার ডানধারে একটি মান্তধের মূর্ত্তি। দশলক্ষ বংসর বা আরো আগে এই মান্তব

व्याक्षिकांत्र क्रांत्रमध्याति व्याक्षम् शर्वराज्यः । देखानिकामत्र मण्ड, धरे छ्टिरे छ्टे উপরে; চিন্ন-তুষারের সামাজ্য। ভার তলায় ঃভাত্তের মৃতি; এবং দশ্লক বৎসর আগে মিকিনো আগ্নেয়-গিরির পাধর-গলানো উভাপ; তথকে এই চুই ভাই পরস্পরের কাছ থেকে

পরিমাণে গরিলার ভিতরে কতক এইথানে যে পুরুষ-গরিলাকে বন্দী করা মহুষাত্ব এবং মাহুষের ভিতরে কতৃক পরিমাণে क्राहिन, नीति जात्र क्रिय मिन्सा भाग। এই "गतिमाष्ट्र" चाहि। कथांटी छन्छ धानायि ভালো লাগ্বে না—কিন্ত মুলে এটি সভা कथा।

> हिःमा-(इस ट्याट्धत मगरत गोस्ट्रित मूथ প্রায়ই এই গণিলাব মুণের মতন দেখতে হয়। ভাগো গরিলা-স্লভ সংস্কারের বিক্লজে মাহুষের মনে অবিরাম সংগ্রাম চল্ছে—ভাই তার মুথের উপরে আজ একটি প্রশান্ত শান্তির কান্তি ফুটবার অবকাশ পায়।

গরিশার দেহের ভিতবে হাড়ও অহাক্ত শারীব-যন্তের সংস্থান অবিকল মান্তবের মতন। এমন-কি উভয়ের মন্তিক্ষের গঠন পর্যান্ত প্রোয়



অত্যম্ভ অগ্ন।

গরিলার গামের জোর ভরানক,—দে অনায়াসে সিংহের সঙ্গে পড় তে, পারে। দাতের আর হাতের জোরে সে কারুকেই কেয়ার করে না! অভএব দে স্থু দাঁত আর হাত এবং পাশব শক্তিকেই সম্বল ক'বে রইল। সে কখনো চিন্তাশক্তির ছায়া মাড়ায় নি, কারণ চিন্তার সার্থকতা কথনো সে অমুভব করে-নি।

किन्छ त्मरे व्यापिम युर्ग,—गतिनान ভारे, অর্থাৎ যে মান্তবের আকার লাভ করে, সে, গায়ের জোরে আর শমায়-চওড়ায় গরিলার চেয়ে চের ছোট ছিল। হিংম্র উন্তরা অনায়াসে তাকে বধ কর্তে পার্ত। সে-সব জন্ত দেখে মাত্র ভয়ে সারা হয়ে উঠ্ভ—এখনো ওঠে। কাজেই এই তর্বল মামুধ-জন্ত গিরি-গুহার চুকে, গাছের টভে চড়ে নানান-রক্ম চিস্তাশক্তির দারা তাকে দেহ-শক্তির অভাব অভাবে গরিলার মুথ আঞ্চও যে-কে-সেই পুরণ ক'রে নিতে হয়েছিল। এইখানেই তার আছে; কিন্তু চিস্তাশীলতার শুণে মামুবের ক্রমোন্নতির স্ত্রপাত।

একই সমস্তা পুরণের চেষ্টা করছে। গরিলা পারে, ছবির এই সৃষ্টিছটি তারই জলস্ত প্রমাণ।

আর গরিলার ভিতরে মনের পার্থক্য ছিল ভাবছে—"আমি্যাকে দেখতে পারিনা, তাকে; কি ক'রে তাড়িরে দেব ? · · · · হত্যা করব ?" দেখুন, ছইহাত তুলে গরিলা শক্তকে ধ্বংস কর্তে উন্থত। কেননা এ-ছাড়া আর-কোন • পদ্ধতি তার সজ্ঞাত।

> याञ्च ভाবছে:---"जात्र ७ मानम-मिन्द षात्रा ८कमन क'रत्र व्यामि शामव-मक्टिरक प्रमन कत्य १ --- এ সখস্যা মানুধ সমাধান করেছে তাব মন্তিকের চিন্তাশক্তিকে কাজে খাটিয়ে। ফলে আজ সে নামগ্রা প্রপাতকে—দশলক গরিলাব জাের যার কাছে তুচ্ছ—অনায়াসে दिर्ध (कन्टिं भिरत्रहा। (व विद्युष्ट (मभ्रत পরিলা পর্যান্ত ভয়ে কুঁক্ড়ে পড়ে, মানুষ সেই विद्याद्दक ७ व्यनामाट्य निट्यत्र शोगांय क'दत्र রেখেছে। ছর্বল মানুষের এই চিন্তাশাক্তর কাছে মহাবল গরিল। আজ তৃণের মত তুচ্ছ।

শত শত যুগ আগে মাহুষের আর গরিলার বুদ্ধি থাটিয়ে আত্মবক্ষা কর্ত। তাই মুখে বিশেষ কোন ভফাৎ ছিল না। চিস্তাশক্তির মুখের চেহারা আজ কত উল্লভ!

এই ছবিতে আঁকা গরিলা আর মামুষ চিস্তাশক্তি বে কি অসাধ্য সাধন কর্তে

একশো-বচ্ছবের বর

বিখ্যাত লোক। তাঁর বয়স পাকা একশো তিনি নানাদেশী চিকিৎসা-শাস্তে স্থপভিত। বছর।

"অন্তত" বল্পন এইজন্তে বে, মিস বাণি হয়ে গেছে!

ভাক্তার মরিসন আমেরিকার একজন নিজের ঘয়সের কোনই হিসাব রাখেন না! সংপ্রতি এই একশো বছরের বরের সঞ্চে মিস্ বাণির বয়স অন্তত বাহাত্তর বৎসর। এই বাহাত্তর বৎসরের কুমারী ক্সার বিষে



বর আর বউ।

মিশ্ বাণি বলেন, "আমি অল্লবয়সের 'রোম্যাক্ষা' সম্বন্ধে যে গল-গুজোব শোনা যায়, তাতেও আমার কোন আস্থা নেই। আমার मटक, विचारकत ब्हारा मास्य कार (मामत---ख्य-५३८थत ष्याभात मर्बा करत--- এह मा व । ভাক্তারের সঙ্গে আমি যে বিবাহেব চাক্তপত্রে महे करत्रिक, ভাব कांत्रन आमारित छक्रान्य क्रि ७ श्रकांड जरतकम ,—कारबंद जामता প্ৰশারকে সাহায্য কব্তে পার্ব।"

डाक्टा व मित्रन मौर्यकावन महत्क वर्णन, "মাতুষ ভার মনের ধারাকে বন্ধ ক'রে দেয় , धावः करण जात्र (मर्ट्स कण-कखात्र भएक धरत्र यात्र । नानान् ভाষात्र चारणाठनात्र क्षात्रा व्यामि व्यामाय मनदक नर्कनार नठक दाथि व कारक थाउँ । श्रोक, नाविन, हिन्द 9 मरक्रा नत শক্ষেষ স্থাপ বাথতে এবং ফ্রাসী, ইতালীয় ও স্পেনীয় ভাষার অনেকটা-একরকম ।বভিন্ন

বাগ্ধারাকে মনের ভিৎতে পরস্পব থেকে বিষেতে বিশাস কবি না। যোবন-বিবাহের আলাদা ক'রে বাধ্তে পাব্লে, মানুষেব মন যোদ্ধার ভরোয়ালেব মতন মাজ্জিত হয়ে থাকে। कार्य माधावन लाटकता निकामन मन छ (महरक व्यक्षा (त्राथ (वर्थ (वर्ध) भएक धित्रदेश (भटल : आनाज वावमांगो ७ भिणामाज (बारकता व्याप-रामन मन्कार्ध शिखन गरमा धमन विष्मय जात्व किटकापत्र कावक त्राध्यन (य, तम मःकोर्न्छ। 'ब्यामिट्ड' त यञ्च उँ। प्रियः मरनव ' ित्राः' रक करेरा रमग्र। आमात्र रभना ডাকারী। কন্ধ সেজতো সঙ্গাতীলাণ কর্তে আমি বিমুগ চহনি বা আমার ডাক্তারীকে আমি আমার প্রেত-৩ত্ত, জ্যোতিষ শান্ত ও মনোনিজ্ঞান আলোচনাতেও বাধার মতন ६'८७ पिटनि। धर्मीन नानान निषद्य पाङ्ग्रष्ट थाकात म्रून धामात गत्नत छाउ २ मर्नारक है मभान कर्य करहा। होर्घक्षीतन लाए अंत्र कांत्र-একটি মস্ত উপায় হচ্ছে, প্রতিদিন হাসি-খুসিব

वावकां क'रब बाथा। व्यामि महस्य ८वरंग छोळांत्र मतिमन छात्र कीत्र माहाश निरम উঠি मा। आमि मानामिष्य পোষ্টাই थावाव এখন এমন একখানি পুস্তক-রচনার প্রবৃত্ত थारे जन्द आमात्र थाश्रमामशीएं थ्र-८०नी चाट्टन, या अकानिक रूटन विकिद्मा-माटक statch বা protein থাকে না। আমার যুগান্তর উপস্থিত হবে। মিস বাণি তার माज, व्यक्षिकाःम लाकरे एसमन (वेनी थात्र, । हर्ष-भएकत हो। ८७म्नि दिनी युगाय।"

হাড়ের 'কলম' •

বিভাগটা অতান্ত উন্নত হয়ে উঠেচে। স্থতগ্নং তেমন নরম ও নমনীয় হ'ত না, আর মানুষের এটা কিছুমাত্র বেচিত্র নয়।

হাডের কলম বসাতে ডাক্তাররা অস্চ্যাপকম क्तार्भाष (प्रशांक्त। **मः** श्रांष डे॰ विश्रम कम्छा । नाम अक्षन शाए। यात्न (प्र নিয়ে অন্ত্র-ডিকিৎসকরা যে কার্য্য সাধন करत्रहान, जाभनादा छ। खन्राम अवाक হবেন। অনেকদিন আগে পিঠের ওপর বোডার লাথি খেয়ে তার 'শরদাঁড়াটা আহত र्षि यात्र । यत्न शत त्वत्र आर्म्नक भक्षाचा । C甲의1 C甲科1

হাসপাতালের ডাক্তাররা তাব আহত मित्रमाँ छात्र थानिक छ। वाम भित्र, त्मथात्म शक्त शीक दाव धकशाना दां । विमर्त्र मिर्ड চাইলেন। কদ্গ্রোভ ১াতে বাজি হয়ে (शन।

७थन এकि विद्यावश्रमी शक् ८ तर्छ निष्य चाला পর্থ ক'রে দেশা হ'ল, দে নারোগ কারেল সাহেব তথনি সাংঘাতিক রূপে আহত

ণেল কয়-বছরের মধ্যে অন্ত চিকিৎসার কিনা ? গরুটির বয়স অল্প না হ'লে ভার হাড় প্রায়ট নতুন নতুন উদ্ভাবনাব কথা শোনবার দেহে তেমন থাপ খাইয়ে বসানোও চল্ভ না।

कर्ला खनमाधात्रण त्य डेम्ब्रॉव २८म्र शाक्टव, अक्रत्र त्मर त्थरक त्वामर्शक मधा এकथाना हा ५ ८व ८ जिरम. अथरम जा हे **ज्ञिम प**ण्डी प'रत्र পাশ্চাত্য অস্ত্র-চিকিৎসায় আজ কাল সেধানা সিক্ধ করা হ'ল। তারপর উকো দিয়ে ঘদে ঘদে ডাক্তাররা হাড্থানার গডনটা भाकृत्यत (मर्क्ट डेनर्यामी क'रत जून्रनम ।

> किरक यथानमस्त्र व म् छ। ट । ब्र অস্ত্রপ্রোগ করা হ'ল। ডাক্তাররা চুবি **5।। नर्य जात 193 हिंदत स्मक्रमर खन ममञ्जाहे** বার ক'রে ফেল্লেন। ভাবপৰ নানান বক্ষ অস্ত্রের ধারা চিকিৎসকবা কদ্গ্রোভের আহত (यक्षप्रध्य (ठाष्ट्राक्ष (करहे निष्म, (मर्ड टिम्पार्थि (भाराष्ट्रधाना जात त्वटर विनिद्ध पिटलन ।

গেল যুদ্ধের সময়ে ফ্রান্সের বিখ্যাত অস্ত্র-. िकिट्नक आलाखन कार्यन नार्ट्य धार-८५८४७ बद्ध ५ काटक निष्क र्रायट्न । टब्नार्सन क्याद्वत ए नर् उथाना विनिध्यत्म द्रन्टक्टल का्यात्मव (भागाच (ठाएँ) छए शिक्षिण।



না**মুধে**র পিঠে গরুর হাড়

একটি সৈনিকের ভানহাত কেটে নিয়ে, সেই হাতথানা সেনাপতির स्टि विनिध्य खुए पिष्ट्राह्न। হয়ত খুব-শীদ্রই আমরা এও শুন্তে পাৰ বে, নামের মাথা ज्यारगत धर्फ चरम भन्नमानरम হাস্ছে, ত্ল্ছে, হেল্ছে!

অন্ত্ৰচিকিৎসায় আজকাল অনেক নতুন উন্নতি হচ্ছে বটে, কিন্তু এ ব্যাপারটা মান্ধাতারও व्यारगत व्यारमान (थरक शृथिवे'रङ **हर्ल जाम्र्ट्ट। विरम्ब**ळका छामान मिस्त्ररहन त्य, त्मरे निना-যুগের (stone age) আদি মানুষ্ঠাও এ-বিষয় নিয়ে কিছু কিছু চেষ্টা কর্তে ছাজে নি ! **बी** श्रमान द्राय।

व्यागारमञ्ज व्याप्छात दमभारकाका नामछाक ছिल। त्मथात्न त्य এम आध्वकीत जग्र वरमर्छ, তাকেই वन्छ হয়েছে—ই। এक। আড্ডার মতন আড্ডা বটে! এক-একটি लादिक राम्हान अक अक-तकरमत, (कान ছটি লেংকের স্বভাবে মিল পাবার যো ছিল না। তবে এক জারগার আমাদের স্বারই মিল ছিল, আমরা সবাই ছিলুম লক্ষীছাড়া। হাড়-नमोहाए। ना रुटन दम्थादन दक्छ भाखा ८०७ मा। लाटक এই चाएए।त नाम निरम्भिन "लग्नीहाज़ान मल।"

থেকে বাব। শান্তিপুরে ধুন্তি, রেশমের ফতুয়া, ঢাকাই আদির পাঞ্জাবী, ভাল বার্ণিশের লপেটা এ সব ছাড়া সে এক-পা-ও নড়ত না। তার এই সব বিশাসিতার বিরুদ্ধে আমাদের বল্বার কিছু ছিল না, তবে জারী মাথার সেই मांग वात कता थाक्-काठा हुन छाउ। म्बल्ट ह व्यामार्गत रमकाक रयरका ठए। टेक्ट तरक এই চুল ছাটা সম্বন্ধে কিছু বল্তে গেলেই সে वन्छ - (नाटकत्र चाधीन देखात्र विक्रक्त माँणान ভোমাদের কেমক একটা বদ অভ্যেস—

विनाम क्यात ছिन टेखत्वत किन डेल्डा। <u>डिजराम्स हिल्लम वामात्मत्र मधा मर</u> त्म भव्छ श्रिक्या रमन, युक्त कह्न, तिहा माथा, গালি পা—বিলাস দিন কতক সন্ন্যাসীও হয়েছিল, বেশে আড্ডান্ন এসে হাজিব ২লেন। আমবা সম্প্রতি জঙ্গল ছেডে আবার সে সহববাসী ত তার চেহারা দেখে একেবারে অবাক। স্যাছে। হঠাৎ তার এই মত পবিবর্তনেব তাব মাথান্ন সেই একআনা পনেরে। আনা কারণটা আমাদেব কাছে ব্যক্ষ কবেনি

বাইবে এদেব দেমন পার্থকা ছিল তেমনি অন্থবেও তারা তুই বিভিন্ন ভাবেব বাজ্যে । বচবণ করত। ভৈরবের মুথে ছিল দিনবাত বেদান্তের ছড়াছডি। শান্তিপুবে ধ্রতিব কোঁচান কোঁচাটা বাঁ হাতে আলগোছে ধবে যথন সে বেদান্তের ব্যাখ্যা কবত তথন দেটা শোনবার না হোক একটা দেখবার জিনিষ হত বটে। আবাব ওদিকে গেরুয়া বসন পরা বিলাস যথন নেড। মাথা তালরে চাকাক দর্শনের সরল হুর্থ ও ভাবা ওড় ক এক আমাদের আঢ়াধানা ত্রুল চাকাকেব একজন উচুদ্বেব শিষ্য হলেও ঞ্চল হয়ে বলে উঠত—বিলাস দা একটু সাম্লে—

মহেক্রর বয়স ছিল প্রায় সত্তর। আমরা
সবাই তাকে দাদা বলে ভাব্তুম। দৈবৰ প
বিলাসের অন্তর বাইরের এই তাব্তমা নিয়ে
থখন আমাদের মধ্যে কথানার্তা হত, মহেক্র
দা তখন বল্ত—কি জানিস্! ওবা মাঝে
ম ঝে পাষাণ ভেঙ্গে দাঁডিপাল্লাটাকে ঠিক
করে নেয়—

এত রক্ষের লোক থাকা সত্তেও বোজই
একসঙ্গে মেলামেশার জন্ম আড্ডা মধ্যে মধ্যে
বৈচিত্র্যাহীন হয়ে পড়ত সেই সময় আমরা ধেযার এক একদিকে চলে ষেতৃম, দিনকয়েক
আড্ডাঘরের দবজায় চাবি পড়্ত।

ঠিক এম্নি একটা সময়ে যথন সবাবই ভণ্ড বলে ভাক্তে আরম্ভ করে দিলুম। প্রথমে মনে পালাই পালাই ডাক দিতে আবস্ত দিনকয়েক সে এই ডাকে কিছুমান আপত্তি করেছে সেই সময় একদিন ভৈরবচন্ত নতুন জানায় নি, ভারপর হঠাৎ একদিন ঘোরতব

বেশে আড়ার এনে হাজিব ংশেন। আমবা ত তার চেহারা দেখে একেবারে অবাক। তাব মাথার সেই একআনা পনেরো আনা চুল কি করে চৌবস হবে কদম ছাটে পবিণত ইয়েছে। গায়ে ফনাফনে আদির পাঞ্চাবীর বদলে একটা মোটা কুন্তা, আব তাব উপরে একথানা বোসাং বিছানাব চাদর, পবনে একথানা মোটা থান ধুতি পারে সাল বেলো-রাবী চামড়াব একজোড়া চটি আব হাতে শহর দশনেব এক থগু।

ভেরব বলো—বাস, সংসারের শক্ত তাব হতি হয়ে গেল। সে পাগণারই হিমালয়েব মঙ্গল মঠেব সেবক হয়ে সেখানে চলে যাচেচ। মঙ্গল মঠেব প্রতিষ্ঠাতা একজন ঘোরতব অব্দেহ্রবাদী ছিলেন। হার মনেব মধ্যে এখন এই বৈতাহৈতেব ভয়ানক লড়াই চলেচে, সেই সন্দেহটা কেটে গেলেই একদিন সে বেবিয়ে পডবে।

ভৈববেৰ মুখে এইসৰ লখা-চওড়া কথা ইতিপৰে আমরা অনেক শুনেছি কিন্তু তেমন মনোযোগ কথনো দিইনি। আমরা জানপুম ছনিয়াণ্ডল লোক মিখোবাদী আব আমবা সভাবাদী। ও-সৰ হৈতবাদী, অহৈতবাদী মারাবাদাৰ ধাব কথনো ধারপুম না। মহেল্র দদো বল্ত ও গুলো মিথোবাদীদেবই নামান্তর মাত্র।

আমাদেব এই অবহেলার ভৈরবচন্দ্র কিছু ।
মাত্র বিচঁলিত না হয়ে দিনে দিনে আবপ্ত
উৎসাহিত হয়ে উঠছে দেখে আমরা তাকে
ভণ্ড বলে ডাক্ডে আরম্ভ করে দিলুম। প্রথমে
দিনকর্মেক সে এই ডাকে কিছুমান আপত্তি
ভানার নি, তারপর হঠাৎ একদিন যোরতব

আপত্তি জানিয়ে বলে—আড্ডায় আসা তা'হলে ভাগি কর্তে হল—

ভৈরবের আপত্তির মূলে একট্ ইতিহাস হ্লাবে সে চম্কে উঠে বলে-ছিল। একদিন আমবা তাকে ভগু বলা মাত্র 'তৈরব এও টেচাফ্ কেন হে গ নফর তার প্রতিবাদ কবে বলে—কেন তোমরা' তৈরবের মুখে তর্কের কার ভকে ভগু বল গু

নক্রটা ছিল কিন্তু ভণ্ড চুড়ামণি। তার
মন ভাবত এক কথা, আব মুথ বল্ত আর
এক কথা। তার এই অসাধাবণ গুণেব জয়
আড়ো থেকে সব্ববাদীসম্মতিক্রমে তাকে
উপাধি দেওয়া হয়েছিল—অন্ত:সলিলা। সে
এইরকম কবে একজনেব পক্ষ নিয়ে তাকে
গলম করে দিও, তারপর তক অর্থাৎ ঝগড়াটি
ধথন বেশ পাকিয়ে উঠ্ত তথন নিশ্চিন্ত মনে
অন্ত লোকেব সঙ্গে গল্প জুড়ত।

নফবের কথা শুন্ আমাদেব সহিট মনে
হয়েছিল—ভাইড, ভৈরবকে ভগু বলাটা
বোধ হয় উচিত হচ্ছে না। তাই তাকে
একটু আপ্যামিত কর্বার জন্মে আমরা বলুম
—ভর নেই ভৈরব, ও ভগু সাজতে সাজতে
সাধু হয়ে যায়—

नफत्र रहा—कथनहे ना—

নফবের কথা শুনে তৈবব আরপ উৎসাহিত হয়ে উঠল। সে বর্লে—অসভ্য যার ভিত্তি তার উপবে কথনো কোন ভাল কাজ হতে পারে না—

তর্কটি জনিয়ে দিয়ে নফর চন্দ্র সারে সম্পন্ন কর্তেন। বাক্য ও কাষা বিজ্ঞানের পড় লেন। তৈখন তথন সংস্কৃত, বাংলা, প্রথম এবং সক্ষপ্রধান স্ব ১ঃ সিদ্ধ হচ্ছে, ঐ-ছটো হিন্দী, ইংকেজা বরেৎ ছেড়ে ভান কথার জিনিবের মিলন বেখানে সেইখানেই অনথ সভ্যতা প্রমাণ করবার চেষ্টা কর্তে লাগল। পাত। এক্ষেত্রেও সে নিয়মের ব্যতিক্রম বিলাস একমনে দেওয়ালে ঠেস দিয়ে হয় নি। মাতামহের পূর্বপ্রক্ষেরা এই বাক্য আফিংয়েয় নেশায় চুলছিল। থেকে থেকে গুলিকে কার্য্যে পদ্ধিণত করে করে তাঁদের

ভার মাথানা কোলের ওপব লুটিয়ে পড়ছে—
এই বকম ভাবস্থা। হঠাৎ ভৈরবের একটা
ভক্ষাবে সে চম্কে উঠে বলে—ব্যাপার কি।
ভৈবব এও টেচাফ্ড কেন হে গ

ভৈরবের মুখে তৃঠের কারণ শুনে বিলাস বল্লে—আছা আমাদের পক্ষে যদি আমবা প্রমাণ থাড়া করতে পাবি গ্

ভৈবৰ বল্লে—তা হলে অন্ততঃ ভর্কে তেবে গেলুম এটা স্বীকার করব।

বিলাস বল্লে—ভবে শোন—

আমবা বিলাসকৈ ঘিরে গোল হয়ে বসলুম।

অতুল মনে কবলে বিলাস ১য়ত চার্বাক

দর্শনেব কোন একটা অপ্রকাশিত অধ্যামের

ব্যাথ্যা স্থক কববে, গ্রাহ সে একটু ভয়ে ভয়ে

বল্লে—বিলাস দা একটু আন্তে ভাই, বাভাব
ভেডবে যেন শুনতে না পায়—

্বিলাস বল্তে লাগল—তোমবা স্বাই জান বে জপেন আমার সহোদর, কিন্তু তা নর।
আমি বাপেব একছেলে, জাপনও বাপের একছেলে, আমবা ছজনে ফাসতুত ভাই।
আমার মাতামহ গোষ্টি থুব ধনী ছিলেন।
আমি বে আজ চার্কাক দশনে এত বড়
একজন প ওত হরে উঠেছি—এই পাণ্ডিত্য
বংশ পরম্পরার আমে আমার মাতামহের দক
থেকে পেরেছি। তবে তারা চারু বাক্যগুলির
সঙ্গে চারু কার্যাগুলিকেও বেশ স্থচাকরপে
সম্পন্ন কর্তেন। বাক্য ও কার্যা বিজ্ঞানের
প্রথম এবং স্বাপ্রধান স্ব ১ঃ সিদ্ধ হচ্ছে, ঐ-জুটো
জিনিবের মিলন বেখানে সেইখানেই অনথ
পাত। এক্ষেত্রেও সে নির্মের ব্যত্তিকম
হয় নি। মাতামহের প্রপ্রক্ষেরা এই বাক্য

বিশাল বিষয়ের বোঝাটি যথন আমার মাতা-মহের পিঠের ওপর চাপিয়ে দিয়ে সরে পড়লেন कथन दिशा दिशा द्य, विषयात्र विश्वामिति ठिक আছে বটে কিন্তু তার ভেতরটার ঘুণ ধরে (शर्छ।

মাভামহের পুত্র সন্তান ছিল না। গরিবের ঘরে তুই মেয়ের বিয়ে দিয়ে জামাই-দের তিনি নিজের বাড়ীতে এনে রেথেছিলেন। জামাইরা গরীবের ছেলে, বড়লোক শশুর वाफ़ीटक এटम छ-मिटनई कांटम स विभागि । **हलन जावल करत रक्टलन। जावल कब्र**लन বটে কিন্তু প্রাবের হাড়ে তাদের সেটা আব সহা হল না৷ কাজেচ আমাকে আর জপেনদাকে জ্ঞান ১বার আগেই পিতৃগান ২তে হ্রেছিল। আমাদের মাতামহ মাবা যাবাব আগেই মার আব মাসীমাব মুগু হয়েছিল जारे नामामभारमत मृशानित्वरे পाउनामात-দের হাতে বাড়ীখানা ছেড়ে আস্বাব সময় দুশেক হাবের আংটি, ঘড়ির চেন, সোনা নিজের ভাবনা ছাড়া আর কারো ভাবনা ভাবতে হয় নি !

व्यारगरे यत्नि , शिकानम कथरना दनियनि, मानामभारमम वाफ़ीकि निक्षत वाफ़ी यरण জানতুম। তার প্রত্যেক থাম, এমন-কি क्रालाक रेवियानात मर्क जागातित क्रें जारेरवर्त এমন পরিচীয় ছিল যে, কেউ যদি আমাদের চোথ বেঁথে দিয়ে বাড়ীর মধ্যে নিয়ে যেত ত षामत्रा (म उम्राम क्लाम करत्र वर्ग मिर्ड शात-क्रम- এটা ठाकूत मानान, এটা मानामणाद्यव বসবার ঘর---

ছেলেবেলার এই থেলাঘম বেদিন ছাড়তে হল সেদিন আমি চোথের জল ধরে রাণতে ্র একটুখানি পরে গাড়ীখানা একটা भात्रिन। जामात्र ८ । देश जन दार्थ जल्म वाकाल करेक भात्र इरत जक वाकीत मध्य

मा तिमिन रामिन - 50म आंत्र वित्म कैंमिन নি, আমি বেঁচে থাক্লে ভোকে পঞ্চাশ্যানা বাড়ি বানিয়ে দেব।

टमरे मिन (थटक किन्छ क्रट्यनाव म्हा আমার ছাড়াছাড়ি হয়ে গেল। আমার বাবার ত্ই সকোদর ছিলেন, ভাঁবা আমায় নিয়ে গেলেন। ভ্রপেনদার পিতৃপুরুষের কেউ ছিল না, তাকে নিতেও কেউ এল না। সেই বয়সে সে যে কোণায় গেল, কার কাছে আশ্ৰয় নিলে তা জানি না !

এই ব্যাপারের দশ বার্থো বছর পরের কথা **नलिए जामि ज्थन लिथा पढ़ा दिए पिरा** কোন একটা সওদাগরি আপিসে পঁচিশ টাকা মাইনের কেরাণীগিরি করি। একদিন গড়ের मार्फ किरमज এकটा स्मना स्मथ्ट शिय बर्शम मानाव मरम (मथा—ভাকে দেখে ভ আমি চিনতেই পারিনি। তার হুইহাতে গোটা-বাঁধান ছড়ি —

मामा जिए क क जिल्म । नैं। हम है। का याहेरन न हाकती कति एस दम वरक्ष- पृत्पृत् ठाकती ८ ए पिरा यामात সঙ্গে বেরুতে আরম্ভ কর। বিশ্বাস করতে পারি এমন একটা লোক পাইনে, বড় মুস্কিলেই পড়েছি---

মেলায় একটুথানি ঘুরে তার গাড়ীতে शिद्य छेठलूम। প্राकाश्च कारना खूषि। शाफीन পা-দানিতে পা দেওয়া মাত্র ভেডরে বিজগী यां जिल्ला किंगा जामात्र क म्हिल करन **जाक् (म**र्ग याचात्र छेशक्तम रुग!

প্রাসাদের মত বাড়ী, যেমন বাড়ী हुक्ला। তেমনি তার আসবাব-পত্র। জপেনদা বল্লে कान **धक हैश्दर**क्व माक्षान नाड़ी (म किरनह्न, দাম কত-পতিশ না পঞ্চাশ লাথ কত বল্লে ঠিক भटन ८ नहे। जीनांत्र भटक करनेक कथा हन। (म मानानीटक विश्वव भन्नमा (वाक्याव करव. ভবে ভাব একজন সহকাবী না হলে ভাব চলচে না। বিশাদ কবে কার হাতেই বা কাজের ভার দিয়ে নিশ্চন্ত হয়, মাসঞ্ভ ভাই হলেও অমি ভার সহোদবেবই মতন हेगामि—

नाना कथांवार्ভाव পর সে বলে—িক চলে আয়, इहें खाइ रिय मिल আবাৰ আগো । त মতন থাকা যাবে।

প্रविष्य भूष्प्रादेश मध्य मध्य क्रिय দিয়ে দাদাব বাড়ীতে চলে এলুম। ছই-এক দিনের মধ্যেই ভাব সঙ্গে মোটর গাড়ী করে कारक दिक्रां बावध क्या दिन । माम प्रशंक পর্সা রোজগাব করত, আমাকে পেয়ে তার রোজগাব আরও বেড়ে গেল। তুই ভাইয়ে मिल चाकिम (थाना रूग। मानानी। छिन আমাদের প্রধান ব্যবসা, তবে তার সঙ্গে জাল জ্চুক্রি, বাটপাড়ি, জুয়া, ঘোড়দৌড় ইত্যাদি व्यदनक त्रकटम शत्रमा উপায় হতে नाগन। দাদা বলত—ত্নিয়াময় পর্সা ছড়ান রয়েছে শুধু কুড়িয়ে নিতে জানতে হয়।

वक्रत कृत्यदकत गृह्या धनी वटन कांगामिय নাম আছির হয়ে গেল। ব্যবসা অর্থাৎ জুচ্চ तिर्छ आमत्र। य अधिकीत्र म कथा महत्त्रव । প্রচলিত জাছে লোকে আমাদের ছই ভাইকে আপামর সবাই জেনে গেল।

श्रमा (य कि तकम आमर्गानी रूटक नांभन

তা বল্লে তোমবা বিশ্বাসই কৰবে না। এক একাদন আমতা লাখ টাকা প্রান্ত বোজগাব কবেছি। যেমন আমদানী প্রত্যহ তেমনি অজ্ঞ পর্সা থবচও করতুম। রোজ বাত্তে व्याभार नत्र वाफीशाना यन डेस्ट्रा श्री करत्र श्रीक छ। शास्त्राया, वाहेजीत नाहजान वाव वक्त-वाक्रवरमव शहाग्र रमने श्रामारमव मजन वाड़ी থানা একেবাবে জমজম করত। কোথায় কোন प्राप्त এक राष्ट्रको छाल माठ्य शाय, दकान বাজাব কাতে একজন ভাল গাইয়ে আছে এই मन थवर जुिंदिश चानवार छत्य चामात्मन महित्न কৰা মোগাঞ্চৰ ছিল, ভাৰা সন্থবৰ আনভ व्याव घं । हो ना ना ना ना निष्य । भारत निष्य व्यामा ३७। नवार मिवाख छेत्सीला नक छोक। मुख्या पिरम पिल्ली ८१८क देशको । वांवरक व्यानितम ভিল শুনে ভোমাদেব ভাক্ লেগে যায়, আৰ व्यामातिय डेडिडांग यथन त्यथा इत्व ख्थन (मर्था नक दोका मूखता मिर्य ९-वक्म मन्दी। বাইজী আমরা আনিয়েছি। আজকে আমার এই সিরীষ-কাগভেব মতন মোলায়েম গায়েৰ চামড়া দেখে ভোমবা সব ঠাটা কব, একদিন ध्ध काव शालांश कल मिस्स এই চামড়া পরিষ্কাব করা হত, আব এব পালিশ ঠিক রাথবার জন্ম কভ রকমের যে মলম লাগানে। হত তার নাম কবতে গেলে এখন একটা বড় অভিধান হয়ে যাবে।

यायमा यक कात हमरक मानम बाम জুচ্চ রিতেও ততই পাকা হতে লাগলুম। মাপতুত ভাহয়ের সম্বন্ধ নিয়ে যে একটা বচন দেথিয়ে সেই বচনেব সভ্যভা প্রমাণ করত।

आयामित खग्नाक लाकमान इर्प शिवा भिवा ११, भिवा ११, भिवा ११, भिवा भारत थाकद। छावनूय---এह वार्शित वार्ष या-कि नगर हिन हो, अ यस हनना, वार्गि भाग कहा (शरह, व्यात वाफ़ीथाना हरन रगुन। ऐं। का रयमन এवाव मन्नामोई रूप्रा याक्— জলেব মতন অংসত তেমনি জলেব মতন (विरिष्ठ (भेग। (नाकभान माम्या এक है দাভাতে না দাভাতে আবার লোকদান (थनूम। (लाकमात्मव ममम (लाकिव मांगाव क्रिक शांक ना, वृष्डा-षांशी वावमानादवशक ডিগবাজা थात्र र जामबा--- आमारित्य छङ्गत्व কারোই তপন ত্রিশ পাব হয়নি।

कान, कुछ ्वि, वाउनाडि इन्तानित्व कान भिक फिर्म मायगार ना त्यद्वं जकमिन गामवा कुङ्गान भारतमान का किर्म भरव পড়লুম। দাদাব এক মাড়োয়াবা বণ্ সামাজি তথন কি একটা নই পড়ছিলেন, বডবাজাবে থাকত ভাব বাডাতে মাদ কয়েক দাদা ও-বক্ম শ্রাটমাউ কবে গিয়ে পায়ের ना-हाका परम त्या किमन मत्या (तथा ७ करन रेनाइरम अछ। ८भन। भौनिएम कार्थाय या क्या करव (महा काना कारान क्रिक कर्व (वर्षांक्रम, आमि । करकार कर्त्राटक (म अकि । ध्यक निरंश वर्ष्ण—। क्षू क्षान एक ठाम्दन এখন, সোজা চলে আয়—

प्रकारन मन्न्यामा । एक निरम् । शावकशूरवव इथाना विकिन्न कितन दब्दल डिटर्स नमनूम। षिन पूरे भारत এक मासार्यमा (भारकभूरत (नश्य এक धर्याणाणात्र त्रां छठा। काछित्र भन्नान मकान (थरक व्यामवा दै। टिट व्यात्र ख कत्रन्य। मानात्र रानठान ८५८च भटन रून ७।व ७-मव ब्रांखा (यम (दम (दमा जारक। थानिकक्षण হাঁটার পর আমি আবাব তাকে প্রথ করায় त्म वरक्ष—**कामार**मत श्राप्त श र्द। श्यानम भाराए यामी मिक्तमानम

একবার দাদার একটা চালের ভূলে নামে এক সন্ন্যাসী আছেন আমবা গিয়ে তাঁর

কয়েকদিন অনবরত হেটে আম্রা मिक्तानम स्थायोव मर्छ शिर्य (भोइनुम। চাবাদকে ছোট বড় পাহাত সব আকাশ क्ट्र डेट्रेट्र, अंबर माबशानित छेप अंकाय চোট্ট খানকয়েক বাড়া--সন্নাদাদের থাকবার মতন জায়গা বটে।

माना क [†]शरप्रके आत दकान कथावांका ना वरण मिक्तानत्कव भा-इत्हा कि छित्र ध्र নলে—প্রভু আমবা মহাপাপী আমাদের কি উদ্ধাৰ হবে না—

ওপব পড়াতে তিনি চমকে দশহাত পেছিয়ে রোলেন। ভাবপর ভাক্ত দৃষ্টিতে আমাদেব । भरक किष्ट्रका (। एउस (भेटक **अकर्ट्रे** ८६८म यहान-यदम, ट्यामार्मिय कि छ अप त्नहे. अञ्च शारा भाराप्य भग्ना एक छि यात्र, ट्यां भारापत অহু শ্ব এসেছে, বিছু ভয় নেই —

मनामा मिष्ठियानक बहु 5 cगाक क्टिना। रयमन डाँच रशोववर्ष स्ट्रांन एक, रक्मान তার কণ্ঠস্বব। তার কণ্ঠস্ববে এমল একটা स्थारिनी माफ एक एव एव धकवान खनल्हे মোহিত হয়ে থেনে হত। কি জার গভীর छान, जापाठ । भाष्य मान्न महामा। वङ्गा করবাধ তাঁর যে অন্ত গ্রুগ্র ক্ষমত। দেখেছি আঞ পর্যাপ্ত তা কারো দেখিন।

মঠে আমরা পাঁচ সাভ জন সেবক ছিলুম। সকাল বেলা ঘণ্টাকয়েক শাল্লপাঠ হত তারণর আব কোন কার ছিল না, আমরা যে-যার পাথাড়ে পাহাড়ে পুবে বেড়াছুম।

(सथा (यङ ভोत्र माथात्र ज्ञ नमर्यहे वर्क জমে থাকত। পাহাড়ীরা এই পাহাড়টার नाम पिरमिक्त मठी। अहे मठी नाना हरत আমাকে এই পাহাড়েব বুকে আঁকড়ে বাথবার (छष्टे। क्रम्क । क्षान्न मिर्क यथन हे क्रिक्सिक् उपनचे (मध्यकि, भ नजून मास्क (मस्क तरप्रक । সকালে স্থা ওঠবার আগেই ভার চুডোটা সশজ্জ নববধুর মূধেব মতন গোলাপী রংয়ে त्र**डि**न इटा छेठेड। **यामात्र मन्न** इड मर्च्यातत ज्रापम व्यापम मछायद नव्य मठो (यन मण्डाय वाढा इत्य উट्टिइ। (कान काम बिन ज्ञार दिना ऋर्याय नान विमा भए পাহাড়টা এত লাল হয়ে ১টেঠত যে, তার मिटक ठा ७ मा । (म म म म द र जा द ८६ हात्रा ८ पटल भटन इंड ८ घन पटक्व पत्र वाद्र में जो दिन्यों के जिना कर्न किंगा कर्म উঠেছে এখুনি ভার ব্রহ্মরন্ধু ফেটে প্রাণটা বেরিয়ে যাবে, আব ভার বুকের তবল আগুন চার্দিকে ছিটিয়ে পড়ে পৃথিবাতে প্রাণয় কাপ্ত ञुक्त हरत। जमारशोत जक्षकारत यथन পৃথিবীর আর কিছুই দেখা যেত না তথনও जांत्र निरक ८५८म (मर्थिक, मरन क्रांग्रक, मठी रधन এकটा গাঢ় नौन वश्यव ওড়নায় मर्काक ८५८क कात्र महारन ८वित्राप्त शर्फा ह, खड़ना ८७म करत व्यवधरव जाना तर क्रि द्वित्र ए ए । क्या अने मर्न न्यात पूर्वत उरे সভী আমার সমস্ত মন প্রাণ গ্রাস করে ফেলতে লাগল। আমার অতীত যেন আমার मन (शरक मूर्ड द्यरक व्यान्छ करना

करम्रकमिन चार्शिह चामि य धक्छ। मञ्ज **मग्नजान, मंख क्याकात्र हिन्म (म कथा आमि** निष्करे ज्रान (यर्ड नाशनूम। ममर्थ ममरत्र আমার মনে হত যে, আমি খেন চিরকাল "এই পাহাড়ের কোলেই বেড়ে উঠেছি, আমাব চারদিকে এই যে ছোট বড় সব পাহাড় ওরা আমারই আত্মীয়। আমারই মতন একদিন তারাও এই বুকে খেলে বেড়াত कठाए कान बाह्न दबन माम्राम्ट खन म्लादर्भ खाना এই বকম নিশ্চল অসাড় হয়ে পড়েছে, আশার करन एक এमে সোনাব काठि हूँ देख जामत्र कांशिय (मर्न (मड़े व्यामां प्र ावां मिन खन्छ। मामात्र किन्धं ट्रियाटन शिर्ये उक्तान পরিবর্ত্তন হল না। সে রোজ সম্বো বেলা আমাকে দিয়ে ভাষিং আনিয়ে খেত। পাহাড়ীদেব ঘবে গিয়ে ভাদের সজে রকম বে-রক্মের নেশা করত। তা ছাডা আমি ভাব সঙ্গে মাঝে মাঝে ছই একটা পাছাড়ী মেয়েকেও দেখোছ। অবশ্য, সাচচদানন

সভিদানদের নিয়ম ছিল যে পাচ বছর
ভান্তব তাঁর প্রভাক শিধ্যকে তাঁব কাছে
জাবনের পাপ স্বাকাব করতে হবে। আমরা
সেথানে থাকবাব কিছুদিন পরে সেহ পাপ
স্বাকাবের দিন এগিয়ে এল। সেদিন মঠে
নিজেদের মধ্যেই একটা উৎসব করা হত।
পাপ স্বীকাবের বাবস্থা শুনে আমি ত চঞ্চল
হয়ে উঠলুম, দাদা কিন্তু নির্বিকার।
দেখলুম দে আফিংয়ের মাত্রাটা একটু বাড়িয়ে
দিশে মাত্র।

কিংবা তাঁব কোন শিষা ঘুণাক্ষরে এ-বিষয়ে

कानटि भावकना। वबर ८म निन-कटहरकत्र

मध्यारे सामोष्टित व्यथान भिषा ग्राम ।

श्रोकाव-উৎসবের मिन छ्टे আগে দাদা সে বোধ হয় আমার মনের কথাটা বুবাতে वामारक वाष्ट्रांटन एएटक नित्र शिर्ध यहा— (भरत यहा— ट्वांत किছू वन मिहे, कुई व्यागात्र এक हे धूरना ब्यागाफ़ करत्र पिट्ड वागी। ब्याग एक रिप्त वारा। পাবিস ?

হঠাৎ এত জিনিষ থাকতে তার ধূনোব কি উঠলেন। দেখলুম তাব কষ্ট দেখে তাঁর দরকাব পডল তাই ভেবে তাকে জিজেস চোথ জলে ভরে উঠল। কাওরম্বরে দাদাকে ক্বলুম—ধুনো দিয়ে কি হবে গ

—দে তো খানিকটা ধুনো, একটা ওমুধ তোৰ কৰভে হবে।

ভাডাব থেকে থানিকটা ধুনো তাকে দিয়ে আমি তকে কে ফিরতে লাগ্রুম। त्मशम्म (य, मोमा निष्कत्र चट्च शिद्य धूटना होट्च গুঁড়িয়ে তিন চাবতে গুলি পাকিয়ে টপ্টপ্ কবে গিলে ফেল্লে।

পর্দিনই দাদা অহুত হয়ে পড়ল। তাব छ'मन পবে মঠেব উৎসন। উৎসবেব দিন भागात व्यवश्रा वी उम्ह थावाभ क्रम मां एवं । তাব অন্তথেব জন্ম আমায় তার কাছে থাকতে হল বলে পাপ স্বাকাষের হাত থেকে মুক্তি (পয়ে । शनुष। मस्तात এक हे भरत भाषात অবস্থা লোচনায় হয়ে দাঁডাল। ক্রমে ভাব ८६१थ ६८६। नान रूर्य (काउँच ८५८क ८५८न বেবিয়ে আগতে আবস্ত কবলে। অবস্থা (पर्थ कार्याय मत्न २८७ लांगल त्य, ज्यांन তার প্রাণ বেংযে যাবে।

नाना वाबाय वहन-शाबोकित्व এकवात छाक। छाँव कार्ट्स भाभ श्राकाव भा कहरण আম শান্তিতে মবতে পাবব না। দাদা পাপ স্বীকাৰ করলে আমার অবস্থাটাও শিশেষ ञ्चानरथव करन ना एकरन कारक नश्चम—नामां ध मगग्र व्याव (कन---

স্বামীঞ্জিকে ভেকে আনলুম। তিনি আমার কাছে মঠের ভাঁড়াব থাকভ, কাছে এসে দাদাব অবস্থা দেখে শিউরে ডেকে তিনি জিজেন ক্রলেন—জপেন -বড कष्टे ६ एक वावा १

> দাদা হাপাতে হাপাতে বলতে লাগল— প্রভু, দেবতা, আমাব বোধ হয় সময় হয়ে धारमत्क, किन्न यावात च्यात्म च्यात्म त्य भाभ কর্বোছ তা আপনাব কাছে স্বীকার করে না ণেলে আমি মবেও স্তথ পাব না—

मिकिभानन वर्ह्मन, जात्र मिर्छ खा गरन পদলে আঞ্জও আমাব শরার রোমাঞ্চিত হয়ে হঠে। তিনি শেলন—ভীর্যাত্রার আগে यात्र छेपरभव शांक थ्रांम (कन वावा-भा श्रीकाव कवाव डिक्स्डि, ह्राट्यं माम्दन निक्षित को उति कियाना खनल हित (त्राय দেওয়া ভবিষাতে জীবনঘাত্রার পথে ঠিক হয়ে চলবাব একটা উপায় মাত্র। তেমিব আসা এগন जान एय भाषा निष्ठाव करतरह. (महीव । न उच उक्र त्व भाभ भूरगाव विष्ठात ্দেখানকার কোন লাভ নেহ। তুমি নিশ্চিম্ত 184

मिकिमानटनात्र अह मन कथा खटनक मानः शाल चोकाव कववात खरा, जिलादकार कवटक লাগাল। তাব সেই কাও দেখে আমার ज्यन इत्छ इछिल-मिह नगा। हित्य, भाम श्वाकारतत्र मञाछ। अकवात्र वात्र करत्र पिरे।

मानात्र (कम ८७१थ जामाकि जादक छात्र

করলেন—নিজের পত্নী ছাড়া কখন অগ্র কোন রাত-দিন কেবল দেই চিস্তাই করেছি, আব खीलांदकव---

मिक्तिनान्दन्तत कथा शामिएय मिएय मान। बह्म- शकु व्यामि व्यानवाहिक, छ। छाए। वटन ८न मिकिनानस्मन भा किएत धन्न । মাতৃগর্ভ হতে ভূমিষ্ঠ হবার পর শিশু দে স্বামীজি তাকে আশ্বাদ দিতে লাগলেন, বিষয়ে যেমন নিৰ্দ্যোষ থাকে ঐ বিষয়ে আমিও কিন্তু সে সব কথা কি তাব কানে যায়— সেই রকম নিক্লঞ।

দাদাব কথা শুনে ভ আমাব মাথাটা লাট্র মত খুরতে লাগল। ও: কা ভয়ানক। জীবন-মুত্যুর সন্ধিস্থলে দাঁড়িথে যে এচবকম তাব বুকে হাত বুলিয়ে দিতে লাগলেন মিথ্যে কথা বলতে পারে ভার গুণ নির্দেশ উত্তেজনায় তার খাস-পর্যাদেব ভ্যানক কা करवात्र मञ्ज विद्याय विश्वाय विश्वाय কোন ভাষার অভিধানেব মধ্যে পাওয়া याग्र ना ।

चुत्त्र शिक्षिण । । जिन এक हे हुल करत ए ठेल । ज्याम ভारनुम — चाराव कि इन ।

जारनक जमग्र कारनक जागर छलात्र व्यदनस्त লালদায় অভিভূত হয়েছিলে ?

প্রেশ্ন ভানে দানা বিকট একটা হাসির হাউ হাউ করে কেঁদে সে বলতে লাগ্ল— আরম্ভ করলে। প্রভু আমি অভি গোভী, বিবাহ না সামনে একটা নরহত্যা হয় দেখে স্বামীজি कत्ररम् कामात्र मश्मात हिन श्व बढ, भ्यान थ्वर केंद्र वाहेरत हरन श्रामा । কিলে কেমন করে আাম আমার বাপ মা, দাদার আগ্রহে আবাব তাঁকে ডেকে

দেহ লৈতে তথ্য হোৱে অৰ্থ উপাৰ্জন কবেছি। আমার কি মুক্তি হবেনা। এই

(म (परक एपरक खमरव छमरव दकॅरन छर्ट আব বলে—প্রাভূ আমাব কি হবে গ

मिकिनानम जाव दकांन প्रश्न मां कर इट्ड गांत्रण। ऋष्ठि पार्छ ट्रिंब इए व् । जारत रकत्व रम এक देशानि मास रम।

कि कूक्क विषे विषय करम पर् কথাটা শুনে বোধহয় স্বামীজিয়ও মাথা থেকে আনাব সে ভেউ ভেউ করে কেদে

থেদে তাকে বরেন—বৎস, এ বিষয়ে পুমি দাদা আবাব স্থক করতে—প্রভু সামি আমার চেরে চের উন্নত। তুমি ধন্ত। অতি পাপী, আমম অতি চোব, জোচেচাব---ভিনি আব্বর প্রশ্ন করলেন—আমি ধথন বাবসা কবভুম তথন একদিন হিসেব শুনেছি খুমি ব্যবসাদার ছিলে। ব্যবসায় মিলিয়ে বাড়ী যাবার সময় দেখি যে, কয়েকটা টাকা তবিকে বেশী পড়ে বয়েছে। বোধকর করতে হয়, তা ছাড়া অর্থের ওপরেও লোভ কেউ ভূলে বেশী দিয়ে গিয়েছে মনে করে অত্যম্ভ বাড়ে। তুমি কি কথনও সেই আমি আমার কর্মচারীদেব টাকাটা আলাদা করে রেখে দিতে বলেছিলুম। আজ মমে रुक्त देवादी के काउँक (मध्या र्यान ! व्याख्याक कत्राल, किन्छ এक मुदूर्ख भरत्रह व्यामाय कि हर्त १ — वर्ल म क् भाग हाभड़ार्ड

खारे, त्वानरमत्र **भू**र्थ फार्क्ट्रिक सांशर्फ शांत्रता आमर्फ रूग। এवाव रम खाँरक कि वर्स

स्रात ? विवाम धकवाब शवाछ। माফ करत टेलबरनत मिरक टिस अकट्टे नी हु । शनाम বল্লে—এবার সে কি বল্লে জান ? এবাব দাদা বল্লে—প্রভু আপনি বলুন আমাব দাবা পৃথিবীৰ কোন উপকার হতে পারহব কি? আমাব ইচ্ছা যে আমি এইথানেই আমাব পাপের প্রায়শ্চিত্ত করে যাই। আপনি যদি আশাস দেন ত এবারের মতন আমি মৃত্যুকে किरित मिटल भावि। जाभनात जाभीकारम আমার সে শক্তি আছে।

नामान এই कथा खटन जागान गांधान ভেতৰে কি বক্ষ একটা অস্বাভাবিক ষ্ম্ৰণা ३ एक नाग्न। दमथात्न आंत्र , माँ प्रिंप थावा বাইবে চলে এলুম।

ममन्छ वाजि भरव सामीजिए जात मानाएक कि कशांवां का कानित्न। मकागर्वना উঠে দেখি দে मिया हिंछ किय विश्व । আমার সঙ্গে দেখা হতেহ সে আমায় एएक वर्ण निर्ण-धूरनात्र कथांछ। कांफरक ব্যিস নি—

व्यामि मत्न मत्न छारनुम-- ९ वावा ! ধুনোর এত গুন!

এই ব্যাপ্যারের মাস্থানেক পবে আাম আর আমাদের মঠের আর একজন সেবক ত্রিকুট মঠের একজন সন্যাদীকে দেখতে গিমেছিলুম। দেখানে আমরা প্রায় ছ-মাস ছিলুম। এই ত্রিকুট মঠ আমাদের মঙ্গল মঠ (थरक मामथान्यरकत्र त्राष्ट्रा। এই जिक्ट मर्छ यम्बे जामना छन्छ (भन्म य जामारनन मर्छ जानम जामी नात्म এकजन मञ्ज जरिवल- कर्त्र निरंत्रह्म। उत्थम खनगूम - त्य जामात्र

मनामीटक खक्र करब्रष्ट्न। दमम-विदम्भ (थटक (मारक जर मश्जारक तम्बर्क जामरह । তিনি অনেক ছ্রারোগা বাধিও সাবিয়ে पिटिश्चन।

ু নিজেদের মঠে এমন একজন মহাস্থার সমাগম করেছে শুনে আমরা সেইদিনই ত্রিকুট ত্যাগ কবে মঙ্গল মঠের দিকে যাত্রা করলুম।

गर्छ धरम दमिष दम्थारम हाजिमिटक ध्रम धाष्ट्रांका (अर्ग शिर्ग्रिष्ट् । (मनकरतन थाकनात्र खग्र वर वर्ष वार्षे इरहा अक्तिक अक्षे বড় আতুর-আশ্রম খোলা হয়েছে, লোকে **ट्याकानगा।** जात गैरशा वर्ष ट्याकरे द्यनी। यामौ मिक्तिमानक मञ्जूषि खक्रम आक्रिक প্রচাবে গিয়ে অনেক অর্থ ও অনেক শিষ্য সংগ্রহ করে এনেছেন। আনন্দ স্বামীর থাকবার জন্ত হলর একথানা খেত পাথরের মন্দিব হয়েছে, স্বামাজি তার মধ্যে ধুনা बानिट्य परम व्याह्न।

यन्तित हृत्क श्रामीकित्क श्रानाय कत्त তার মুখের দিকে চেয়ে দেখি—হরি! হরি! चानक जामी चाव (कडे नन, चामाव नामा-बीयुक करशक्तनाथ मुर्थाभाषात्र—

মঠেব একজন সেবককে ব্যাপান কি ভা জিজেস করে জানলুম—স্বামীজি একজন ছ্মনেশী মহাপুক্ষ, স্চিদানন্দের তপ্তায় मण्डे रुष डाँक छ्नमा कर्राड धरमिस्सम। मिक्तिमानम् अकिमन चरत्र अहे कथा सान्दर পেবে সকালে উঠে তাঁর পারের ওপর পড়াতে তিনি সম্ভই হয়ে তাঁকে শিষাতে বরণ वाणी श्रुक्ष अरमहिन। महिलानम अहे चवर्डमात्म रम्पादन व्यक्ति रख

গিয়েছে। আনন্দকে একদিন সাপে ছোবল সেবকেরা বলে—স্বামীজি দেহত্যাগ মেরেছিল, আসল জাত সাপ। তিনি ধানিত্ব हरत्र ८७ विष नामिरत्र क्रिसिक्त। এই त्रकम অনেক অলোকিক কাগু ভিনি এই কয়েক-बारमय मर्था करत रक्राक्रम।

(य, এমন দাদাব ভাই আমি। কিন্তু সচিদা-নশের মতন অমন মহাপুরুষের সঙ্গে এই রকম ব্যবহার আমি কিছুতেই সহ্য করতে পারসুম না। একদিন দাদাকে আড়ালে পেয়ে আমি খুব গালাগালি দিলুম। গাল (थर्म दम कामाम द्यादिक्यम श्रीदान काः हि **षिरम वरहा— ७-७१मा निरम पुरे मश्मारव** ফিরে যা, বিক্রী করে যা হবে ভাতে ভোর मात्राकीयन ऋत्थ (कट्ट याद्य।

मठे (धरक व्यय्नक मल्कांक रूक लाभन, मारत। চারিদিক থেকে নতুন নতুন সেবক এসে বিলাদের গল্পের পর আমাদের সেদিনকার দাদার অহিফেন সেবন ও মাঝে মাঝে গাত্রে বল্লে—সে ত্রিকুট মঠে যাবার সমস্ত বন্দোবস্ত লুকিয়ে বেরিয়ে যাওয়া চলতে লাগণ। ঠিক করে ফেলেছে। একবার হঠাৎ ঠাণ্ডা লেগে তিন দিনের জরে व्यानम शक्य (भरमन।

करहान--- वाश्मा थवरत्रत्र क्रिक अप्रामात्रा निषरम — একে একে নিভেছে দেউটী— সমস্ত ভারতবর্ষ বল্লে—দেশের একজন মহাত্মা व्यक्रिक हरन (शरनन।

দেখে শুনে আমার মনে অহঙ্কার হল আমি সেইদিনই মঠ ছেড়ে কলকাতায় চলে এলুম। কলকাতার বীডন-কুঞ্জে মহতী সভা হল। অদৃষ্টের বিভূথনায় পড়ে আমায় সেই সভায় দাড়িয়ে একখণ্টা ধরে আনন্দেব खनावना वाचा करां अरमा जानम স্মৃতি-সামাভ ১ল, আনন্দ ধনভাণ্ডার থোলা হল। ভাণ্ডার-রক্ষকটী মাসক্ষেক হল টাকা-কডি মেরে দিয়ে কেরাব হয়েছেন।

এখনও এই আনন্দ স্বামীর নামে মঠ চলেছে, দেশ-বিদেশে এই মঠের শাখা পর্যান্ত বুঝলুম তার চক্ষ্লজ্জা এখন ভ কাটেনি। স্থাপিত হয়েছে। দলে দলে রোগী তার मकन मर्ठ आव आनम यागीव नाम पितन ममाधित পाल रूटा पित्र পড़ে थारक, দিনে চারিদিকে প্রচার হয়ে পড়তে লাগ্ল। তারা ওয়ুধও পায়, শুনেছি তাতে রোগও

কুটতে আরম্ভ করল। এত গোলমালের মধ্যেও মতন আছ্ডা ভাঙল। প্রদিন ভৈরব এসে

শ্রীপ্রেমান্থর আতথী।

হিন্দুস্থান

(भश्चाम हेक्वल)

ছনিয়ার মাঝে যত ঠাই আছে সব-সেরা কোন ঠাই ? হিন্দুস্থান। হিন্দুস্থান। হিন্দুস্থান। ভাই!

হাজার ফুলের ফুল-বাডা সে বে
নন্দন-সমঙল,
সে যে শ ংদল গোলাপের দেশ
মোরা তারি বুলবল।
যে দেশেতে ষাই পাকেনা যেথাই
যত ধন-মানহ পাই,
মন পড়ে থাকে হিন্দুস্থানে,
জ্বান্ন যেথানে গিয়েছে
সেথা যেতে আমি চাই,
হিন্দুস্থান। হিন্দুস্থান।
হিন্দুস্থান। ভাই।

হিন্তানে বিবাজে সে গিরি
জগতে যে অতুলন।
হিন-চুড়া যার অর্গত্যার
ছুঁরে আছে অমুখন!
সাম্রা মোদের সেই হিমালয়,
জুড়ি কেই নাই যার;
জগৎ হ'রেছে অবাক শোভার
ভারত-গোলেন্ডার!
কল-কল্লোলে ভারতের কোলে
থেলে শত নদা নদ,
ঈধার দহে অর্গন্ত যার
হেরি রূপ-সম্পদ!

সাগর পারায়ে যত দিই পাডি
যত দূরে দূরে যাহ
টানে মন প্রাণ হিন্দুস্থান,
হিন্দুস্থান, ভাহ!

গঙ্গা! তোমায় প্ৰধান্ত আজিকে . **९** इं ७ व कि.नाजा है, — [®]কত যুগ ধার বাস মোরা করি यत्न कि व्याट्ड (गा छात्र १ পুরাণ পত্থী কেরাণ-পত্থী श्टिल (भाष्य चत्र, सद्राय वानी ना (मथान्न, कानि, কণহ পরস্পর। ত্য্মান মোরা হারাম জেনোছ, চিনেছি প্রাতৃ-প্রেম, হিন্দের মোবা চির-বাসন্দা হিন্দু ও মোস্জোম। সময়-সাগরে বুদ্ধ হেন কত জাতি কত দেশ मर्ल क्लिया कालिया कारिया **२२० चन्न-(** भर ! মিশর বাবিশ মৃতের সামিশ जीन चात्र नाई जीन, হারায়ে আপন সাধনার ধারা श्रुंकिए कर्रान्य। , সানী রোম আরু হিম্পানীয়া, (म) चाट्ह लान नाहे, চির-প্রাণবান প্রাচীন মহান্ हिन्दान ! ভাই। वीगरणासनाथ । বাল্মীকির বাঙালী দোহার ক্রতিবাস ওঝা
সতীশের মনের কাণে বল্তে হাচ্ছিলেন
"আয়-পরীক্ষা!" কিন্তু ক্ষলার "না
হ'তে দহন তমু পতন হলল আলে!"
সতীশেব মনের চোর-কুঠুরীর অন্ধকারে
একটা অনাহত দ্বিধা বেমন নিমেষের মধ্যে
উদয় হ'রেছিল ভেম্নি নিমেষের মধ্যেই
ভলিয়ে পেল। অন্তর্যামী বল্পেন, "অগ্নি-পরীক্ষা নয়, অঞ্ব-বিলাপ।"

উচ্ছিসিত চোথের জলের প্রথম বেগটা সাম্লে নিয়ে মুর্ছাহত কমলার মুর্ছা ভাঙাবার জন্তে, তার ঘোন্টা-মুক্ত মাথাট আন্তে আন্তে তাল-পাকানো উড়নীর বাহিশেব উপর নামিয়ে রেথে, সতীল, একটু জলের চেপ্রায় ওঠ্বার উদ্যোগ কবটিল। ঠিক এই সময়ে একটা লালা মেঘা সংরে গিয়ে, একরাল টাদের আলো, কমলার নির্মাল মুথের উপর এসে পড়ল। সতীল উঠতে গিয়ে মুথের মন্তন বসে পড়ল।...

দেই কমলা। বিষের আলে, ষাটের পথে

যার পরাক্তার মতন ওচি-প্রনার মুখথানি

দেখে সতীলের সর্যাসী মন সংসারী হ'রেছিল।

নেই কমলা। তেম্নি স্থার, তেম্নি নির্মাণ।

বিষের রাতে ওড়াষ্টির সময়, তার উপবাসক্লিষ্ট

কচি মুখখানি যেমন দেখে ছিল, সতীলের

মনে হ'ল, আজও সে মুখ তেম্নিই আছে,

তেম্নি নির্মাল, তেম্নি নিক্লক। বিষের ফিরেন্
বছর, য়য়-ব্লতের সময়, বাপের বাড়ী থেকে

এলে এম্নি এক্লিন কমলা, সতীলের

জ্যোৎস্বাপ্লাবিভ বিছানার উপরে ঘুমিয়ে পড়োছল। সেদিন সতীপ বন্ধার মঞ্জিস্ त्थिक, ভार्षित्र कार्छ निष्कत्र गरनत्र क्यांत ভাধাবার জন্মে, বেশ-একটু বেশী রাভেই ৰাড়ী ফেরে। ছেলেমানুয কমলা, দবজা (थांका (वर्थ, इर्क हुर्क, स्मर्थ धूर्यिष পড়েছিল। निम्न-महरूल, জোৎসা-সায়রে এই कमलाक (मार्थ (मिन (यमन मङो म्ब স্বপ্নাবিষ্ট হাদয় ভার কুঞ্জিত ঠোট-ছাটকে ঘুমস্ক ক্ষনলার পুষ্পাধরের দিকে অভর্কিন্ডে আন্তে चार्ड (ऐरन निष्य शिरप्रिक्रण, मडौभ व्यार्ड পারলে, আজও ঠিক তাই ঘট্তে বসেছে। আর এ-কথাও বেশ বুনতে পার্লে, যে, যা ষটতে ব'সেচে, তা' রোধ করবার শকি, काञ्चानम वावाकोत खित्र निया देवत्रागा-वातील मठोमहत्सत्र এक-कष्टां । ঘুমন্ত-ছবি কমলাব পূরন্ত ঠোঁতছটির 'হরন্ত আকর্ষণে বৈরাগী সভীশের ঘাড় ভিলে ভিলে ঝুঁকে পড়তে লাগল। পেরুষায় গোলাপীর जात्मक छाथा मिटन। ममस्वत्र स्थ वीशांत्र সমস্ত ভার একসজে হঠাৎ স্পান্দিভ হ'য়ে डिठ्या धरे अक्टा मूहार्खन धक का छ। আত্তর হাজার জ্যোৎসা-রাত্তের হাজার शकांत्र खूँ हे-ठाटमाल, ट्यन, कांडांत्र पिरा कृटि डिंग।

ঠিক এই সময়ে মূর্চ্চিত কমলার নিম্পন্দ দেহ একটু ন'ড়ে উঠ্ল। স্বপ্নাবিষ্ট সভীলের হঁস হ'ল, সে দেখলে কমলা চোথ মেলেছে; মূর্চা-নাগিনীর নাগপাশ খুলে গেছে। ভার অসমাপ্ত চুম্বনের চুম্বক আকর্ষণে

কমলা চেতনাৰ রাজ্যে ফিরে এলেছে। সভাশ किन् किन् चरत्र डाक्टन, "कमना ।" कभना किছू बन्टल भार्रण मा, त्वाथ इस वलवात শক্তিও তার ছিল না। তার পোলা চোথ-इति (करण कृत्ण कृत्ण ज'तत्र क्षेत्रण। व्यायः তারপব টস্ টস্ ক'রে জল-গড়িরে পড়্ল।

वक्तवादक भागा बिद्य काबात्र द्वा ध्वर कामादक ठाना मित्र वक्क वा कथा, क्रमानक ठिणाठिणि क'रव, जारंग द्वितस পড्वाव वार्थ (5हे। क'द्रव, महोटनद कर्छत्र ममस्त्र निहा-উপশিরা-গুলোকে বাপায় চনটানয়ে ভুল্লে। সে কিছু না বল্ভে পেরে কেবল উচ্ছাসত ट्ठाट्यंत्र कटन कमनाटक चिक्ति कत्र्ट লাগ্ল। এইরকম ক'রে ভাবের প্রথম আবেগ কতক পরিমাণে শান্ত হ'লে সভাশ ভাঙা গলায় বল্লে, "किम ना। कमल, आमि কিতাশবাবুর কাছে সমন্ত শুনোর।"

কমলা ভার হারণের মতন আয়ত চোখ বিক্যারিত ক'রে বলে, "শুনেছ ১...এমন विश्व (यन भव्यत्र ना एव।" व'त्व मि क्यात्र यत्न ह'न, म जात्र शूर्यात्ना क्या कात्र ধারে ধারে উঠে বস্ল এবং ভার কল্কেভা প্রবাদের হতিহাস বল্ভে ক্স কর্লে। मिंहार्मित भन छात्र व्यक्षां जारत क्रमात्र রিপোটের সঙ্গে কিতাশবার্ম রিপোট প্রাতপদে মিলিয়ে চলাছল এবং মিল দেখে यूमा रुष्टिन, किस एम मूहूर्स्ट वह बालाइडी मडोटभंत्र कार्ष्ट न्लाष्टे हर्ष छेठ्न, रम स्वन निक्त कार्छ निक्न मिक्क कर्य वन्त, "पाक्, थाक्, ट्यामात्र कष्टे २८५६, कृमि ज्ञथन क्रास्ट আছ, আর ও-সব আমি 'সনেছি...সমস্তহ खरनिष्ठ।"

हानका, मठोमरक खर्कनी जूरण वर्गाहरणम कत्र्रक मा, रम म्लाइट वर्ण्य, "मध्य कथा

"বিশ্বাসং নৈৰ কৰ্ত্তব্যং জীযু"

किन्द जात्र किर्त्र-भाउमा ञ्चनत्री छोत्र श्चमत्र मूरथत माम्टन एम ठाष्टकात ध क्षां कि कूट कर मान्ट भात्र ना। ञ्चलब्रक मठीम मठा व'रण গ্রহণ করলে।

কমলা কিন্তু ভার এহ কথায় ধেন ঈষৎ সঙ্গতি হ'লে বল্লে, "ভা হ'লে ভূমি আমায় ... (चन्ना कत ना १... आश्वात्र कविश्वान कत्र ना १ (भर-कथांछ। উচ্চाরণ कর্তে ভার গণা किंग গেল, চোথ আবার **ছল্ছালয়ে** এল। मडीन क्षिश्च वर्षा पृष्ट्यत वन्ता, "त्यार्टेंहे ना, व्यायचात्र कत्र्वा, व्याखा (श्रंक, धृर्वा शास्त्र **७। यात्र मकारन काणि-गाँदत्र काम् २म ना।**

কমলা সোজা হ'রে সহজ হ'রে বস্প। व्यथमारम, वाञ्चनात्र, विकारत, व्यनाहारत, यात्र (मठ-मन ८७८७ পড़বাব জো क'रब्रिक्स, म जी लाब এহ কণট কথায় সে যেন মৃত-সঞ্জীবনী লাভ কবলে। তার সমন্ত ক্লান্তি, সমন্ত কষ্ট (यन क्राप्थित निरम्प क्रक्षियांन क्रफ्त र्लाण। ফিরে পেয়েছে। তাই তার প্রথম প্রশ্ন र्ग, "আগ্রা থেকে আস্ছ,... তা হ'লে থাওয়া হয়নি ?"

मठीन वरहा, "रम करव এसन, रखायात १ ভোমারও বোধ হয় হয়নি।"

क्यना हुन क दत्र त्रहेन। इक्टन बानिकक्रन भीत्रव र्'रत्र त्रहेण। ভाরপর হঠাৎ, विना किन्छानाम, मजीन जान पार्च विरुद्धान स्मीर्ष কতিহাস বলতে হুক কর্লে, উড়ো চিঠির क्षा, जीर्थ भर्षाहित्मत्र कथा, ब्याखात्र कथा, किछी (भन्न कथा। मलान किहुई (मानन

বল্তে কি উডো-চিঠিতে তোমার সম্বন্ধে যে শুনে, তুমি শুন্লুম, বাড়ী গিয়েছিলে... সব কুৎসিত কথা লেখা ছিল, সে সব ঠিক विशाम ना र'रण ७, यत्न (क्यन (यन এक हो ধোঁকা জমেছিল। কিন্ত কিন্তীশ যথন বল্লে যে তাব মায়ের চরিত্র সে যেমন निर्मान, त्यमन निफ्नम व'ता मत्न करत्र. ভোমার চরিএও ঠিক ভেম্নি ব'লেই মনে করে, ওখন, ভাব সেই কথা, ভার চোখের নিংশকোচ দৃষ্টি, ভার, স্বরের দুঢ়তা সমস্ত मिटन, मिक्टिन हाख्या (यमन स्थानाएँ क्याना কাটিয়ে জ্ঞার, তেম্নি ক'রে আমার মনের (धाँका काण्टिय भिट्य। यात्र मश्यक विस्पृयाञ সন্দেহ থাকে, ভার চরিত্রেব সঙ্গে কেউ निरक्षत्र मादेशत চরিত্তের তুলনা দিতে পারে না, এ আমার দৃত বিখাস।"

"তা হ'লে ভূমি আমায় বিশাস করো ?" সতাশ বল্লে, "নিশ্চয়।"

"बारशकांत्र मञ्ज १"

"निम्हन्।"

कमना श्राम क'रत शास्त्र भ्राम निर्छ গিরে চোথের জলে সতাশের পা ভাসিয়ে मिटिं नाश्न। थानिक भरत निस्करक माम्पा नित्त (हाथ मूट्ह (म वन्दा), "कृषि कविश्वाम कत्र ना. এই আমার ষ্থেষ্ট, এখন ম'লেও আর ছঃথ নেই

मडोम वम्टन, "शाक् छ-मन हारे कथा, हन वाफी बाई।"

কমলার বৃকের ভিতরটা ছাঁৎ ক'রে উঠল। সে বল্লে, "বাড়ী ?...বাড়ীতে কি মা चायांत्र कावशा (स्टबन १"

मिटि इदि ।... जादिनां कथा, यात्र जाद्य त्राद्धि कमनादक कन्नाभाश्रदात शर्थ (मर्थ, (म

ভ"রপর 🕍

কমলা খুব দ্ৰুভ অথচ খুব ছোট্ট ক'রে षाफ् नाफ्रल, त्याप्याय, जात त्वाथ हम्बन् क'रब छेठ न।

সতীশ বল্লে, "ও! বুঝেছি, মা তোমার দেবা গ্রহণ করেন নি। আন্তা সে সব ঠিক হ'লে যাবে এখন।... ভূমি যথন বাড়ীতে যাও, তথন মা এক্লা ছিলেন, না আর কেউ ছিল গ ... ছिल, ... छ । वृत्यिकि, । পাডाর खन्म्भौ গোবর-সোহাগীর দল কাছে থাকুলে মা যেন আর এক মাথুৰ হ'বে যান...এই স্থাধনা, মা তো তোমায় অভ ভালোবাস্তেন, কিন্তু, ওদের मञ्जनाम ज्यामान ज्यांचान विरम (भवान श्रुप्ता कुलिकिलन। कि नम्हान, ना वर्डे वर साला वक्क छिट्दा राम व्यवह रक्का क'म ना।... याक्,...चामि तम भव ठिक क'रत्र त्नव। শুচিবাই ছোঁশ্বাচে বোগ; গোবন্ধ-সোহাগীদের चाव-राउम्रा (भरक मदिरम चान्ट भात्रकरे মা বেমন স্নেহময়া ছিলেন, আবার ভেম্নিহ হবেন; তাম দেখে নিও। মায়ের মত করবার ভার আমার—এথন চল—চল্তে পার্বে ত ?"

कमना मूर्थ वन्त "পात्रव", किन्छ श्रारमञ् ब्राखा ध'रब हन्ए हन्ट প্राडिशरमञ्जू বুঝতে পার্ছিল যে, কমলা আব পারছে না। ভাই সে প্রস্তাব করলে, "আজ হাট-বার; হাটের ফির্ভি গোরুর গাড়ার ক্তে মোড়ে এগিয়ে অপেক্ষা করা যাক।"

देगळ-मणारक्ष वाडी मूत नम्र, किन्छ मछील "আমায় বদি ভান অবিভি ভোমাকেও সে কথার উল্লেখ পর্যান্ত কর্লে না এত

हि नुषा एक ल्यादिका, बाल्य बाकी कमना শ্রের পার নি। একবার ভাবলে প্সাজা रिकरे कामी मभूरत्र तासा धंरत स्कान भा रिन ८६८न हम् एक माश्म।

धु९८द्रा कृटनद्र त्यादन त्राष्ठा-वर्षक जानाका मूटकार्ड्स (थल ए । विश्वी. াকছে। ফুর্ফুরে বাভাদে বকুল গাছের ार्जाखरमा ना-टिभाटिमि कर्हा आत দ্রু স্থির জ্যোৎসার অকুল পাণারে । जिल्हा हत्मह इंडे शानी; व्यक्तांड, नक्षणक, निःमाकाछ। कमलात्र मान काश्हिल अटाइन विद्युत वाटलन कथा, निम्न-वाटलन म्या, मिनिन अम्न क्यां वा विकिन ध (यन ठिक (महेनिन! ारन गदामिन उभवादमव भद्र दममिन ९ भदी ब्रह्मादक এম্নি হাজ। খোধ হচিছল, মন জুড়ে চিল धामकात महा जानात चानन, चाज ९ ठिक ঙাই।

সতীশের মনেও ষে ঐ কথাত উঠ্ছিল ত।' তার কথাতেই প্রমাণ হ'য়ে গেল; (म तल्ला, "कमना, जाक (भागत छित्भाव आनाव छ छिलाय ; मान भए विद्यव निन १— मिनि अध्नि इक्टने के जिल्ला व्याक व्याभारम्य न इन विदय — क्रित-क्रिता ।

कमला मूक् ८०८म वल्टल, "है। फि.इ-ফির্তি।"

कठाए पूर्व भवात्र चाड्याक भाड्या (भन, क खान्त्रन ट्वाहरू शक्टिक

"अरह मीनवस् इति । একবাব ভাষা দাও, রাজ্য রণ ছ'খানি॥

গোকর গাড়ার থবরাথবর পাবার আশার भ होमा ७ कमना भग्रक मिष्ठान। रनाकछ। हरन शिक्टबर बार्टि, किन्न এक ब्रांख िकटि এल, मजीन बन्दल, "अटक माएटनव न्टियंत्र काटना नाफ़ीर दिनाजनोटल थाय ना, ता, विनिद्द भाकत नाफ़ी-छाफ़ी बाम्दल ু থেছ ?"

> লোকটা গানের বসভঙ্গ হ্বার ভয়ে শুধু , कहा "ना" व'लाई श्रुकावर किं। एक Chatco ा ल (शवा।

मलीम कमलाटक वल्टम, "टमाकछाटक ात्न (शरश्रेष्ट ।"

कमला वन्दन, "हादमत जादना दमस्य कृष्डि नरनरक ।"

म ोम वन्दल, "एँ-छै-छै, कूछ व'दम कूछि, । दिन्यादेव श्राच-कवि माफिट्स श्राटक, भौनव्यू ति'त मरक "ताछ। हतन-इथानि" मिल् मिर्फ, मथ्छ मा।"

कमना इन्ह-मिला भाव भाव भाव ना, कि এই न्लाहे जन्ममानों म नोम यथन किएम मिटन, उशन (में अ दहरम फेंग्रेंग।

हल्द कि खेशातक मां डिस्स भाषीत মপেকা কর্বে ঠিক কর্তে না পেরে इक्रान हे के उठ क क्रिक् अयन ममस्य क्रमना वल्दल, " ५० (मामा, -- प्रावाद भान- এवाद किन्छ । शाक्त शांधां व माध्य मार्क होकां व मक्ख खन्द अर्थि ।"

मठोम कान (পতে छन्टन मिडाई शाषी व्याम्त्र । शार डीयान शांडेटक,

"गां ९ (इ, यां ६ (इ, ७ कानाठाम ! কুমি আব এস না আমার বাড়ী। এবার এলে আমার বাড়ী मिव द्यामात्र भाश्यात्र वाडी।" विश्म भंडाकीय कांगाठाँदिय अरे प्रकम

वीखरम जाखार्यनाम्र मखीम शमदव कि कैमिरव ঠিক কর্তে পার্লে না। এমন সময়ে গাড়ী মোড় কিরে প্রায় কাছে এলে পড়ল, তথন সমস্ত অপমান সহু করেছে, কিন্ত আর পার্লে गार्षात्रान गारेटह—

"বাইরে তোমার লখা কোঁচা ঘরেতে চড়েনা হাঁড়ি। (তোমার) থেতে মাথতে তেল জোটেনা का।--- हा--- निरन বাগাও তেড়ি—ই—ই !"

धरे গাড়োয়ান-কুলের তানসেন নিকটে এলে অনেক কাকুতি-মিনতি ক'রে, শেষে এक ठाकात्र त्रका क'रत, मडीम कमगारक নিম্মে ছইয়ের ভিতরে গিয়ে, বস্প এবং "পথে একবার নক্ডো ময়রার দোকানে गाफ़ींगे (यन माफ़ कन्नात्ना इन्न," এই प'ल গাড়ী ছেড়ে দিতে বল্লে।

গাড়োয়ান "এত্তে" व'लে, देवश्रोकञ्चलान উপর টেকা দিয়ে মুর্জার গমুজে জিহ্বা টক্কত क'रत रक्ष छ'/छारक भाकछ। अल-क्रंड मुर्जिना क-जन्न উচ্চান্ত শেখাতে শেখাতে, কানের वषरण (वहाजारभन्न नामक मन्द्र मन्द्र कन्नो न-পুরের রাজার বওনা হ'ল।

9,

বিনাদোৰে বার্ম্বার লাজনা সহ্য ক'রে इरब्रटनब्र मन्छ। ज्यानक निन (थरक है विखाही क'रब উঠেছিল। किस आक्ष एकत এই পিছ-ক্তুত অপমানে ভার শরীরেত সমস্ত রক্ত যেন विव रुख छेठे न। सम्छ निर्दा-छेशनिद्रा छटना বেন বিহাৎ-ভরা ভারের মতন ভাকে প্রকাশ-হীন বিহ্বলভার যন্ত্রণায় অস্থিয় ক'রে ভুল্ভে णांश्रंण। वित्रकारणत मःकारतत्र यस्य दम दम वार्यत कथात्र दकान जवावरे बिटल भात्रत्व ना । द्वाटित

উপর ঠোঁট চেপে কাপ্তে কাঁপ্তে বেরিয়ে চ'লে গেল। এতকণ ধ'রে সে সমস্ত অবিচার मा। তात ममञ्ज जार्यम, बर्खन मजन कार्या , উপরে প৾৸ড়, কিছু একটা ভেঙে-চুরে, ভছ্ নছ ुक'रत रक्षणवात्र कर्छ ভাকে পাগল করে তুল্ছিল। তাই যথন সকলের আক্রোশ কুমলার উপর গিয়ে প'ড়েছে তথন সে নিজেকে একটা কুৎমিত অকাও থেকে বাঁচা-বার জন্মে, কিছু না ভেবে-চিস্তে ভ্যাবছা হাউইয়ের মতন অন্ধ বেগে বেরিয়ে পড়ল। र्ह्या भारत भारत प्राण भनी मूथ्रियारक ; त्मरे मिथाविनी— ८**म**ङे नग्रजानहे ८७। ४७ न**८**४ त মুল। হরেন ভার সঙ্গে বোঝাপড়া করবার কন্তোর রাগের খাপ্রা মাথার মধ্যে জালিয়ে निरक्षा काहाती-वाफीत मिरक এकत्रकम कू एके शिरम का**बिय के न। स्था**रन शिरम গুন্লে শশী অন্তথের অজুহাতে চুটি নিয়ে বাড়া हर्ण (शर् ; अक्सन चाम्मा अहमरण अहा । रदिनदि कानिय मिल, य, कक्ष किना-মাত্র। রাতের টেপে ম্যাজিষ্টেট কালীগাঁরে चाम्टिन, काटबरे मकलटक এक টু বেশীমাত্রায় चाक तोष-वीश कत्रक हत्व; मनी किन्न मोफ्याँ प सार्छेरे भक्ष करत्रना, माफ्रिय मां फिर्य मां मां मां एं एक श्व शार्त्व, भरवं देशव भाष्ट्रणो कद्राञ्च क्याम किन्द्र काटलद्र द्वलाय हृ । তाই আগে-ভাগে অস্থের অছিলার সরে भएएएए। *करत्रन (मय-भर्याखं ना खरनदे म*मीत्र वाफ़ीत्र निद्क द्रश्ना इ'न। त्मशान हाकित हरत्रहे हरत्न हांक किरण "मूथ्र्या।" जाणां-क्षेत्र कांक रू'रबरे वस रूप श्रम। (कड

न्भिष्ठे ८५८व्रहिन । *(म विम वृद्धाः* भाक्या भनी नित्म। एक्याथाव्र क्रम करव्रत्मव **क्रम क्रम** বাড়ীতেই আছে, ভাই ফের ডাক্লে, "ওছে मृथ्रा वाफ़ी काह, ना (कार्श चुमुक्ह !" कारनक চেঁচামেচির পর, কাণে-ছাট্র ফইমছের মডন একটা ঘুন্তি-পরা আংটাদেলে, ওক্তলার মতন একটা আমসত্তের ফালি লালায় ভিজাতে ভিজাতে ভড়াং ভড়াং ক'রে বেরিয়ে এল ।

হরেন বল্লে, ''এই পট্লা, তোর বাবা কোথায় ?"

ছেলেট। আমসত্বের দিকে জিভ্ বাড়াতে वाफ़ाटल धीरत-ऋष्ट वन्दन, "द्वावा १-- चाँग १ —वावा १—वावा घटड—ना, ना, व्याष्टिय গৈছে।"

''তবে রে শুরোর, মিছে কথা ?" ব'লেই ''কেন ? সে বাড়ীভে নেই ?'' रुएत्रन (यमन छाव कान सत्रूट याद च्यम्नि (इटनहें। इहे क'रत्र याथाहे। नाविरत्र निरत्र সমস্ত আমসভটা একসঙ্গে মুপে পুরে দিয়ে হুড় হুড় ক'রে বাড়ীর ভিতর চুকে দরজা বন্ধ क'रत्र पिरम ।

क्रिन मन्नाम এक है। माथि त्यर मन्किरम क'मिन थाक्रव ?" এह कथाहै। हो दकां त्र-श्रद्ध कानित्र मित्र अक्ट्रे क्काट भी-क्दर अक्टो আমগাছের ছারার গিয়ে বস্ল।

अभूनि व्यत्नकक्ष यस्म ब्रहेम। शांट्य ছाम्राश्वरणा माथात्र छेणत्र त्थरक, शूर्व रहरन, व्यास्य वास्य गिरुष प्रकारीपत यखन मधी काहिएक काहिएक क्रांगरत्र व्हमभः गया रूप मिलिएम (४८७ मान्स। स्या फून्ण। रूटब्रन चित्रक रूटब्र क्टर्ड श्र्ण। यायात्र मभन्न चारत्रकवात्र मनीत महकात्र गांचि

कवाव मिर्ल ना। किन्न इरवन थएरमव भक्त स्मर्क, इन् इन् क'रव वर्फ व्रान्तांव मिरक साफ् (य, त्रांगिंग कमात्र मध्य किएमों। कावात्र (यम বেশ-একটু স্পষ্ট হয়ে উঠেছে। তাই থম্কে ्रें। फिरत रहे भरन शिष्ट्र भाका दत्र के छेर्छ यम्दर কি ভার আগে চাট থেকে কিছু থাবার भः श्रद्धित (BB) (मण्द्रव, a विवास a) कि মামাংসার জন্তে মনিব্যাগটার ভিতরের থবর তলিয়ে দেখছে, এমন সময় পিছন থেকে কে **डाक्टन, क्टबन मां!**

> हरतन हम्रक छेठ्न, किरत रमभ्रम काकृत्।

''অক্লণ।"

"हैंगा रुद्रान पा", पिपिटक थूँ अहि,— তাকে তাম এমিকে ভাগনি ?"

जाक्र गूच काकारण क'रत वज्राण, ''ना, यावा ভাকে বার ক'রে দিয়েছেন; আমাদের कां डिक, " ভাকে भूँ क्छ भर्याञ्च स्टि श्रान्नि, তিনি বাডী থেকে বেরুলে ভবে বেরুভে পাৰলুম।---কিন্ত তাকে খুঁজে তো কোথাও भाष्टि नि। यावात ममन् यावा मिनिटक वलिছिलान "ह्लाय या"—मिनि वफ् अखिमानी —সে কি সত্যি সতিটি—" **অরণ আ**র বল্ভে পার্লে না, ভার চোথ ছল্ছল্ ক'রে **डिर्ट** न, रम यूथ कितिय निरम ।

करतम जान्छात्र मायाबादन बूटनात्र खेनत्र बटन পড়ল, সে যেন সমস্ত ভাবনার ক্ত হারিরে क्टिलाइ, किन्नू तुवाटि भात्रह नां, टक्वन **कां**त्र क्रान्टक्टन ভाकानि बाक्टनंत मूर्थन উপन ममर्यमनाव व्यामन युगिरम तम्याव यार्थ (छष्टी १ अग्रह

থানিকক্ষণ শুদ্ধ থেকে অৰুণ নিজেকে এक हे नाम्टन निया वन्दन, "পाड़ात कारता-बाफ़ी यादवना, जाहे कादवा वाडी (थांक করিনি, ভবে থিড়কার বাগান, পঞ্চানন **डगा, त्यां १-यां ५ कत्र ममेख डेंहे एक भावे एक** (मर्थक्, (काषां 8 (नहें।"

रदान वहा, "विना लाख कि भाषि, मारिया।" व'लाडे जावात्र जावनात्र काजरन व'ता डिठेम, "इम्टिन इ मिटक यात्रान एक। १---मज्ञा ।"

"द्रिमरनम । १८क वावा এङ माळ ८ १८ लन, ष्यामि याव ना, ष्यामात्र त्मथ्टण ८ इटल एक्टवन ।"

কে একজন যজমান নাকি মবণাপর। তার ঘোমটা টেনে অসভঙ্গী সহকারে অঙ্গ-প্রায়শ্চিত কর্ত্তে হবে, ভাই ডেকে নিয়ে ধরেছে।:---त्रिण ।— कामि श्रीमत्क याव ना,— शामात्र । গুদিকে যাওয়া—"এই পর্যান্ত ব'লেহ অক্লণ

हरतन जूक कुँठ्रक कि-एवन एकरव निरम (आभाम) नाठ्रक व'रन मवाहे भिरन বলে, "আমার জন্মে ভাবতে হবে না, এই हम्। आत्र जिनि जो भिराम माजिए स्नर, ভোরই বা ভয় কি ?"

(बंदम (शंग।

অরুণের পা-ছু'টো বেন ইভন্তভ কর্তে কর্তে হরেনের পিছন পিছন চল্তে লাগ্ল। দীড়াতে মানা কর্লে। তাড়ির গন্ধ নাকে থানিক দুয়ে গিয়ে হরেনকে সম্বোধন ক'রে যাওয়ায়,ছজনেই ক্রমাগত থুপু ফেল্তে কেল্ভে সে বশ্লে, "হরেন দা", ভোষার থাওয়া দাওয়া এগিয়ে চল্ল। মাঝে মাঝে ম্যাজিট্রেটের रुप्रनि (वाथ रुप्त ?"

भूरभत्र श्रीम् एकरण हरण एशक,--- जोके भा ममछ च्छं ७-७ वकाती (शाक्र क भ'त्त्र विस्त्र हिन ।" "তাহতো অঙ্গণ,—'আমার জন্তে ভাবি নি,- ৩হ ছেলেমাগুষ সমস্ত দিন থাস্নি--চল্, कार्ट / शटक किছু (श्राम निर्वि **ह**ल्। । । राष्ट्र-वात्र, कल-ष्टल, थावात्र-छावात्र मव छोष्ट्रका।" "আর তুমি ?"

"(म হবে এখন—(ष्टेमन (४८क এट्रा" যেন তলিয়ে গেল। মিনিটখানেক পরে এই ব'লে ছ্র'জনে আবার নীববে চল্তে व । श्री

हम, द्विमारनेत्र क्रिक छ। वक्र वाव श्रांक छ। वा कर्यन व्याप व्यक्त द्विमारने ते श्रेष (घर क शास्त्र कार्फ यथन (भोष्ठल ख्यन मक्ता হ'য়ে গেছে। এক জায়গায় জনকয়েক লোক ভাডি থেয়ে খুব মাদল পিটছে, ভার हरतन वरक्ष, "दकन १ रहेमरन दक्न १" मर्था এक अन र्थमाक त्राप्त म्इन रक्ष्म् "एडेम्प्स क्रिक नम्, द्रिण-लाइरेन्च अभाद्य, मिर्म क्रिक भ'रत्र भीक भाष्ट्र उभाष्ट्र ज्ञाप-

> "थ्व क'ल नाठन मामि ! वावुता छक्म मिला, लिशा शान नाह-भागत्मत्र गामि। कब्दल माधामाधि। (ভাই) লেচে লেচে ধর্ণ মাজা (এथन) माह् एक वन्त कामि।"

माভाव्यत ভिড़ দেখে कर्न व्यक्न विक শুভাগ্যনের জ্ভো নার্কোল পাতার ভোরণ "ना— पूरे १— ভোরা (यहिंছ्म् १" . टेजवी रु'छ्ह, क्यांगाह्त कवस्त्र छे १त "डिंग, ज्यामना ८कडेरे थावेनि, निनि प्यारमात्र यायमा रहकः। इरन्नतन त्मानरक

(अंशाम त्नहें, त्म व्यक्तंगरक किছू थाहेर इत्यात कत्य हेव्यि कत्यत्र मकात्न • हिथ कृत्वी विकाबिक क'ति हैलिए।

এবার একেবারে পো্ক।রণা , ভাঙা হাটে রাগেব বেগ অর্দ্ধেক কমে গেল। ভিড়ের হঠাৎ এমনধারা লোক-সমাগম কেন, ভা कान्वात्र कटळ, ट्लिमाय्य करून व्यावात ভিড়েব ভিডর সেধিয়ে পড়ল, পিছনে পিছনে हरत्रस्छ एक्न। ভिড ঠেলে এক টুখান এগিয়েই (मथ्रम, क्लारम रक्षि-वाँधा এक छन छोरनाक कैं। मृट्छ आत्र शानाशानि । मट्छ ।

"চ'লে আয় অরুণ, কি দেখ্রি" ব'লে रूरब्रन ष्वक्रनंदक निरम्न दुर्वाद्ररम् ष्वाम्दर् এমন সময় শুন্তে পেলে মাতালেব গণায় वन्छ, "भनमात्र (ठोकोमाव। याग्मा CA ক'য়ে বামুনের গায়ে হাত। ছুপ নে वर्ताक, अवधाद। यदमत्र वाको (यदक कदन ना दिन भारत दिन मनीदक दिनम मक्त क'दवके ভেবেছিদ্। রামুনের গায়ে হাত। শাঝ-মগ্রিব ভয় নেহ দু খবদাব !"

क्रात्र व मान क'ण Cbना गणा। পর मूर्छंह, मिथ डि (भारत भारत को बाद कि नम्न, किद्र के मिनी बागु हे यद ही है हैन है व'ल भनी मूणुर्या । भनीत गना ८ । एत्रहे त्य जीदनाक ही व'भ हिल भ मैरिड़ाम् मार्भिय यखन थांछा ३'स्त्र श्रृंड त्र।— ७ कि।श्रृंड त्र – ना (७ कि म्क्त्र्।" केठ न, এवः कामदत का o निष्म कि। हिस व'ला — कथा छला क्रवतम् कार्त कोला क्रियात कारमह **डेठ न, "७:, डोन वामून, खेंद्र माँ। १९द्र कर्य** लाटक एका खिंदाय शिन !

> শাপে বামুন শাপে चामात्र नरथत्र कू नि कैरिन, ष्यामात्र (ठारथेत्र (कोत्रा कार्प। कायाव जुक्त दामा काँए।

वांध को को नाव वांध। हु की क अदक्वादन थून क"रत्र (करलटक् शा !"

'থুন' শুনে হরেন ভিড ঠেলে বাদের मञ्ज नाक्तिय जित्र मनीत जना हित्न धत्रता!

योजानि निष्ड शिष्त्र, इरवन हम्रक थानिक मूत्र जी गरित्र (मथ् ला, कावात्र ७७। ताल, लाक है। यन लालात्र मजन हाका, जात्र ভিতর একটা অফুট কলরব উঠ্ল—"ভোট वावू।" "(कांचे वावू।"

> टिकामाद्रक धमक मिरम जवर मनीरक আর একবার ঝাঁকানি দিয়ে क्राज्ञन किं किएक वन्दल, "Cotal এই व्यथनार्थि। कि এতগুণো লোকে গ্রেপ্তার কর্তে পার্ছিন্ त्म १ त्म, वाँध ।"

কলরব শুনে যারা পাতার গেট বাঁধতে বাঁধতে কাতাদড়ি আব কাটায়ি হাতে মজা দেখতে এদেছিল, ভাদেরি একজন দড়ি জুগেয়ে দিলে। চৌকীদার ছোটবাবুকে (वैरथ (फन्टन।

* হরন শশকে চৌকালারের হাতে সঁপে निष्म व्यक्तगरक कि वनवान व्यक्त निष्म উঠ्ग, "हम्।—এই या वारभन्न তেজ্যি-(महे चाथावत्रमा छीटगांकि हां **टबा**ड़ क'दत्र হরেনের পায়েব কাছে বসে প'ড়ে কাকুতির चरत वन्टि गाश्म, "तचा कत छाउँवानू, त्रका करा এই मक्वरमण विवृत्न वामुन আমার বোনকে খুন ক'রেছে! আমার माथा काष्टित मिरम्रह्म। अहे छार्था। ट्यम्बा मनिय, ट्यामता श्वार्था, ट्यामाराज सानामि, ভোমরা বিচার কম।"

তোমার বোন্কে ?--লাল কোণায় ?"

"এই एप मामां, এই मिरकत এই घरत (मरथ यां अकवात, कि का करत्रह !"

হরেন স্ত্রালোকটির পিছন পিছন যেতে य्या कार्याक विष्या, "कार्य, नाम भूमिएम চালান দেবার আগে তুমি, ভাই, একবার त्नोटक् फाड्नाज्ञवावृत्क अवत्र माछ।"

অকণও তাই চাইছিল, সে মৃতদেহ দেখতে নিভান্ত নারাজ। কারণ তারুভুতের **७३ (२म এक** हे श्रवन। इत्त्रान्त्र क्षांत्र ठात्र चाम मिर् बब्र ८ इ.ए (शन, ८म डेर्क्सचारम जिल्ल **पिटक जामुख्य रू**टम (श्रम ।

Os

य आधावत्रमी खीरणाकि ज्ञाभ छ। धावात कार्य कार्यनाक (एएक निया भाग, भाग, देन कार्य বোন কাত্যায়নী। এই মাতলিনীর সঙ্গে ঘনিষ্ঠতার অন্থেই হ্রনাথ মৈত্র একদিন শশী मुथुरषाटक ध्वकष'रत्र कतर्छ हिरम्न। इत्रनार्थत्र कार्त्नामरनत्र करम मेनी मुथ्रयाव त्रक्रिको त्रामी वर्षाद देकवर्खम्ब माज्यिनी, व्योगारतत्र कड़ा-स्कूरम आम ८ इ.फ् रावेजगात्र चत्र निष्ठ वांधा इ'त्यक्ति। •

সঙ্গে সজে মাতজিনীয় शिनि কাত্যায়নীর यूरिथानात्र (शाकानष्ठि), श्रान-পরিবর্তনের त्नाहिम ना बिरम्हे शक्तिमान करण हास्त्रित হ'রেছিল। কাজ্যাধনীর ভাতে শাপে বর হ'ল। ভিনধানা গাঁমের লোক ভার थितकात्र र'ग, छ। छाड़ा द्वेषत्वत्र द्वांखात्र **উপর ব'লে ছোট-বড় স্বার্হ পারের ধূলো** जात क्षाकारम भ**फ्रक मा**शम । **चात्र मरमक**

श्रम वम्रम, "धून क'रब्राह्म एक खन्छि— त्वर्ष राजा। किन वांश्वरोठा निर्म भनी मुष्या। ५म वम्ड जात्र कर्छारे (का এथान (माकान क'न। नित्रीक् 'टिकवर्खन स्मरमन् শশীর এ-কথার প্রতিবাদ কর্ত না। কথাটা ্ভন্তে ভন্তে ভাদের একরকম বিশ্বাসই कत्या शिरम्बिन। ठिक कथारे टा, मनीत्र करगुरे (छ। সব, नरेल अयन (बारकन्न कावृगाव (माकान रूटव, এ সংখ্র অগোচর।

> कात्रगांठा भनी मूथुरगांत भटक अक है जृत-পালা क'रण ७ जानार जाना उद्य क'न ना।

माउनिनौ ছिल कर्खाछका, मभी ছिल छात ভজনের কর্তা। কর্তার সমস্ত আবদার, সমস্ত উপদ্রব সমূ ক'রে তার সেবা ক'রে যেতে হয়, এই হ'ল কর্ত্তাভজা ধর্মের মর্মা-কথা। কিন্তু ধর্ম্মের এই স্কুম্পট আদেশসত্ত্বও हेमानौर किছूमिन (शरक याङ्क्रिनीय এक ए মাতির বোন কাতি, অর্থাৎ মাতলিনার ভাষান্তর উপস্থি হয়েছিল। সে আর আগেকার মতন তেমন ফনেব मार् মুখুযোর সেবা কর্তে পার্ভ না। এতে माङ्किनीटक विष्य जानताथ दशक्ता यात्र ना । माम-कडक चारा माडिमनी ठांत्र कम्रकडा-প্রবাসী মরণাপন্ন মাদার টেলিগ্রাম পেয়ে তার সেবার কল্কেভার যায়। काळायनी (नाकारनत लाकनान रूप प'रन, (यटक भाव्य ना। जारे द्रास्ता र'त्न छ, **मिमि थाक्एक यालिक्नीएक्टे (महे चनीत ट्रिया (इ.ए.) यामीत कन्न्या कन्न्र ट्रिया** ह'न।

> এবং মাসীর ৺হাঁদপাতাল-প্রাণ্ডর পর, উত্তরাধিকার-স্ত্তে, তার সোনার দানা, সোনার ভাগা, রূপোর চাবি-শিক্লি, থান-ছয়-সাত

तिनि. ७ म'-(मर्फ्क नगम ठीका जक्षण्य मार्छत मुख्ना, ছरशत वां जि ना खुड्रेक्, क'रत मांखिकनी गाँदा रक्षता " क्रुंदिना क्रुंप्रिं कृष्टि हि, रखा।"

প্রথম ভার ধন-দৌলৎ ভাথালে, সেইদিন দেওয়া কথা মোটেই সইতে পার্ড না। হয় থেকেই শশী জিনিসগুলি, হন্তগত কর্বার, তু'জনে ঝগ্ড়া বৈধে ষেড, নয় তো মুখ জত্যে টোপ ফেল্তে প্রক্লু কর্লে। শেষে অন্ধকার ক'রে মাতি ত্য্ত্য্ শব্দে নিজের বরে व्यत्नक किनिद्य, द्वाम पाछित्य छाका वाष्ट्रिय तिवात नाम क'रत किनिमर्खां विका क'र्र, ८मरे ठाकाम ननी निस्कत नारम विष्य-क्षक क्यो, यार्शन मिख्रित्रत्र এक्कन (भन्मात्र প্রজার কাছ থেকে দাঁও-মাফিক বাগিয়ে निरम। किन्छ मार्शिमीरक ध-मर क्था चुनाक्रदेश कान्टि निम्न ता। ८म विठात्रा श्रुतित्र खर्म भनीरक जानिन भिर्म, मनी जारक ञ्चान अप जानाव क'रत (नरव व'रन रहाक ाम ७। किन्छ औ भर्यान्छ।

ध विषश्चात धक्षा (३७८०७ क'रत्र ফেল্বার জ্ঞা মাতি আর কাতিতে •অনেক युक्ति भन्नामर्भ र्'रब्रह्र, किन्छ मि (भन्नाम्बर किन्छ्भ । नाम आन नाम विभाग अस्म वास्त्र যুক্তি। শশার কাছ থেকে একটা খোলসা खवान त्नवात खर्ण अत्नक्वात मर्गव यांची श्टाप्रक ; किन्छ मा। ७ सद्य (क १ भनीत मूर्यत कार्छ এগোর কে? क्योनात्री-भारत्रकात्र लाक, कलरमत्र कांहरफ़ इत्र-रक नम्र कत्रक भारत, ७८क घाँ छिए। नाएछत ८५८त भाक्नारनत मछायनाहे (वनी। এই-সব সাত-পাঁচ ८७८व कथा। थामा-ठाशारे ८५८क ५४७। তা' ছাড়া কাতি বল্ড, "মাসী ভালোবেসে তোকে সক্ষ দিয়ে গিয়েছিল, কিন্ত क्পালে ना थाक्रण ट्यारा इस्ना। नवह क्लाम। यामात्र ८क्ड किहूरे छाधनि, उत् या रहाक्, चंदत याम्वादवत्र मस्या ८क्छण कार्छत्र

ফিরে এসে মাতজিনী শশীকে বেদিন এতে মাতি আরো চ'টে যেত, সে ঠেস্-গিয়ে থিল এঁটে দিত। আজও অস্নি বোনের সজে শশীকে টাকা তাগিদ দেওয়ার • কথা ানয়ে থিটিমিটি ক'রে, মাওলিনী নিজের ঘরে **ट्रक** टैयमन कशाउँ निरश्रदह, व्यम्नि ननी क्राप्त मत्रकात्र थाका मिटन।

> মাত্রিকাী ধড়াস্ ক'রে থিলটা খুলে भिरम्हे यूथ क्लियरम, हाबिरकरनत माग्रन স্পুরি কাট্তে বস্ল।

यार्शकरीत्र त्रः हिटारहे, टिहात्राहि जकहि বিপুল কচ্চপের মতন। তার **श**ङ्थाना একটা প্রকাণ্ড কচ্ছপ, মুধ্যানি মাঝারি कछ्न ; फूला-फूला श्राज-भाश्रीन बाद्धा গজ-कछ्भी गाभात्र। छात्र कात्न गाछी-जारहेक दिश-माक्षी, नारक नक्ष्मी नाक-छावि। शणात्र जुलमीत कछी, याद्य याद्य মুজ্কীর সাইজের সোনার মাছলি। নীচে-मत्रा करभात्र जाउँ शाह्य क'टत वादनां शाह्य পোথ্রি। উপর-হাতে তারকনাথের তাগা, कारक अहि-ध्रे भना, खिहारत्रक मार्थान, अकिं। निम्रथात कन, जात-अकें। नक्षम्थी कृताकः। जाभाव यवना मुस्स्ता जास्हाज नच र'दत्र पूर्न्ट ।

माकारनंत्र मोगटक, ভाटकत्र भाटक निका । जक्रमाय। जक्याना कन-क्रोंकि, जक्रि

किं ज़-वांवा किंग केंद्रा, लाहे त मकन विभिन्न রভের একটি আল্না, তাতে পাচপেছে, जिन्दा का और भट्ड, माह्र भट्ड, क्नरभट्ड শাড়ার সঙ্গে বেগ্নী রঙের একথানা থেজুর-ছভি কাপড, चाहे-পাটি দাঁভ মেলিয়ে যেন गम्टा (भवारण थानकरत्रक द्वारा-वांधारना कानीचारित्र भि। এकिटाटि कानीय-ममन, वक्रोट भाशीत्मत्र वृक्षकत्र । धक्यानार ছুঁচোর কীর্ত্তন, গ্রাতে, একটা লোক লম্বা **(कां) यूनिय मां** इति याहा, जात निष्टान বোটা-পাঁচেক ছুঁচো পিছনের পায়ে ভর দিয়ে গম্ভীর ভাবে পোল-কর্ত্তাল বাজিয়ে কার্তন ञ्क करत्रहा आव এक्थानाव, भालिनौ कुन ए किएम अकछि वाव्-कहरमन माञ्चरक ভেড়া বানাচেছ। যে বাবুটিকে ভেড়া কৰা হচ্ছে তার মুঙুটি এখনো মাহুষের মতোই चाटल, वांका मिँ थित इन्ने भारम ट्राम्वारना शोक-खाड़ारक टिका नित्र नित्र जिक्छाडा न्निः श्वाथा निष्टाह्य । वायुत्र दमक्षि निक्षं अक-জোডা শাল হবার উপযুক্ত খন পশ্মে আছেয় रुष (गर्छ।

मनी यथन मांडिकिनोत पद्य ह्क्न, ७थन मका। इत्रनाथ रेमदात्र थिए कीत्र वाजान मञ्जक धकवात्र जीख पृष्टि छ (मर्प्श नित्त्र यन्त्म, থেকে ফিরে এদে পর্যাম্ভ তার মনটা কেমন (यन এकটা अञ्चास्त्रांचक अवश्वाच मध्या কমলা ডুবেচে। এতে তার খুসী হবার कथा, कात्रन, कमला श्त्रनार्थत्र ८मेट्रा, ছরনাথ শশীকে একখরে কর্তে চেয়েছিল।

হচ্ছিল তা'বোধ হয় খুদী জানাবার দোসর পाछित्र नी वर्णके। एम व्यत्नक कार्शके মাত্লিনার কাছে আনন্দ জাপন কর্তে আস্ত, किस (बार्शन गिखिर वृत्री (हां एका एक लिये। पत्रकात्र अन्ना मिरा 'जारक कक्-नाकक् मिवी कतिरा मिर्ल। इरत्रन 5'रल (यर 9हें मना श्रीन-त्राचात्र लाटकर बानाठ-कानाठ मिट्स माउनिनीत राष्ट्री এम शक्तित र'न এবং ঘরে চুকেট উদ্ধান-क जारना माजान भूती रवशम अत्रक्ष थारणचेत्रीत বোতলটি বাব ক'বে চুকুচুকু স্তৰু ক'বে দিলে।

1 ७२ हात्र भाज (भए भए प्रथम নেশা জন্ল না, তখন শশী মাত্রিশীকে একপাত্র প্রসাদ দিয়ে তরিবৎ ক'রে গাঁজা সাজ্তে বস্ধ। মাত্রিসনীর মন ভালো ाष्ट्रण ना, तम भनीत नित्क পिছन क'र्त्र পাত্র উপুড় ক'রে সমস্ত পসাদটুকু ডাববে (एटन मिटन।

শশী ভতক্ষণে কল্কেয় স্বাসি জড়িয়ে, क'रम छिटि- ७ स्मक मम नाशिय, कन्दक উপুড क'रव मिस्र आभनाय (ध्याल काम्र्ट সুক্র ক'রে দিয়েছে।

মাত্রিনী মুণ ঘুরিয়ে শশীব আপাদ-"यर्ग आज्ञ कि, खधु खधु (३८म मजा ३८६६ ८कन १

আন্চান্ কর্ছিল। সে মনে করেছিল শুলী চোপছটো শিবনেত্র ক'বে সমস্ত भन्नोत्रहे। जैयद क्लिय यन्त, "थूनो अ'लिहे हानि, हानि इ'लारे थुना, शनि-थुनो, হাসিখুসী।"

क्यमात मृङ्गाटक मनीत रमहे व्यवसारमंत्र साक्ष्मिनी वन्त, "हामियुभी रम थ्व व्यक्तिभाष। भंगी मत्न कर्ज़्ह्ल, भंगी (मथ्हि,---व्यथम ঢाकाछात्र कि ३'ल वन

এমন খবর তোকে মিতে পারি—ধার দাম नाथ होका, -- होकाई कथा कि वन्छिम् १--धानिम् निः; তবে শোन्- भिष्ठ भागा-काष्ठा नारतन्त वाणित भाषा ... कम्बि । व कम्बि ... ভূবে মরেছে ;...ভিনকুলে কেউ জারগা দিলে ना...माख्या ना-ना-नान ना,---वादव दकावाय —পুকুর-জলে ডুবে মরেছে—আমি স্বচক্ষে এই দেখে আস্ছি।"

यिष्ठ निर्मी कमनाटक पून्ट छाट्यिन, **जेतु (म (कात्र-शंगात्र वल्टन, "य)टक (मट्निः"। मनौत मलन याता भाका (बहनाग्राफ्)** जाक, ভারা নিজের চালেব ও নিজের বাৃদ্ধর উপব काराथ विश्वाम वार्थ जनः निकारभन्न <u>अक्रक्म मिवा मृष्टि-मञ्जाब व'त्वर भटन</u> কবে। আত্ম-কবিশাস এদের কুষ্টিতে लिए नि। এ विषय मनी भव्यान, भक्किन, कार्टकात्र, कामार्टिमा, क्राइन, क्राहिना, **८०ष्टिःम्, कि. अनवार्शत्र जायता-जा**ङे वा যাস্তুতো ভাচ। মনের মতন কলনাকে मिक्टल-दिकोम्पल कात्मकवात्र कोलास তুল্তে পেরেছে ব'লেই, সে ঠিক ক'রে (রথেছে, তার যা মনের মতন তা ফল্থেই। त्म म्लाहे एकथ एक लाकिहन, कमला मरब्राह, নির্ঘাৎ মরেছে, ডুবে ম'রে ভেদে উঠেছে। जाई तम वन्ति "आभि अठतक तमरथहि।"

माडिकनो ८ छाथ कथार्व जूरव थानिकक्ष हैं। क'रत राष्ट्रक व'राम छिठम, "वम कि मूथ्रया! इ फि फूरव मरत्रह् ?"

"रुं, फूर्य मरत्रष्ट्—षांश्वरंगा करत्रष्ट्— পেত্রী হবে—ফের টাকার তাগাদা করিচিশ্

भनी बन्दन, "आद्र टोका कि वन्हिन् कि छात बाफ छाछ दव !-- हैं हैं, वामूदनद কথা মিথো হয় না !"

মাভিন্নী চ'টে উঠে বল্লে, "থাড় আমার আজ কি হ'মেছে তা জানিস্?... ভাত্বেনা তোমার ভাত্বে?—ভূমিই তো ,वागुरनव (भरत्रव कार्य-- इत्र-ना-इत्र वहनाम বেঘোরে মারা গোল গা—ইন্তি হত্যে— বেশ্ব ≉ত্যে −ছিঃ।"

> শশা গাবছা ভাবে একটা কটাক কেনে वन्त, "भाज। जुरे माजान क्रिक्!"

भाक्षानी यकात मिर्म वल्टल, मूर्थ चाखन মাভালের,—ভোমার মদ ঐ ডাবরে—ইচ্ছে হয় ত'কে ভাথো;—ছিছি!—এত অনাচার धत्य महेर्व ना-्डि:।--मान्यरक थारन-গাবাপ কবা—ছিঃ—ছিঃ, বামুনের মন্তির ভয় (43---"

শশী ক্রমশঃ তেতে উঠছিল, সে তার ঘোলা চোপ টাকে বিকট রকম ঘুলিয়ে এবং मु'राय रिकालिय चात्र दशामा—"वामून—एः! বামুন খোলা কাটা থামুন—ভারি বামৃন— আমার কাছে আবার বামুন কোন্ ব্যাটা ? फूटल र मुगु है नमी मृथुर्यात नां कि मना मृथुर्या, व्याभाग्न किना व्याप्ती वरण अक्षरत कन्दर ? वाछि। भिखिरथाव भूक्र - এত-वड़ बाम्मिका शुक्र वाम्रानद ?—वाम्नां कवाम बामाव কাছে

 তথন সাম্লাও ঠেলা !"

মাতি মনে মনে ভার মা-গোঁসাইকে নমস্বার क'रत जुना वन्दल, ''अभन्नाथ माभ कारता মা-গোসাই, আমি এ নচ্ছারের ওপর আর ভক্তি-শ্রদ্ধা রাখতে পারসুম না। এতে আমার या भाभ क्य डा' हर्य।" श्रकारक वन्त, "गाल, गाल, जात वज़ारे कत्रट रूप ना।

উচিত কথা বশ্ব; ভাতে বদ্ধ বেগ্ডান, বেগ্ডাবেন। বলে—

'অশেষ পাপের পাপী পঞ্চম পাতকী ভাছার অধিক পাপী বিশ্বাসঘাতকী'

তুমি আবার বামুন, তুমি মহাপাপী! যে মান্ত্র ইহকাল-পরকাল থুইয়ে আ্যাদ্দিন ধ'রে ভোমার ঠাকুর-দেবা কর্লে, তার সববস্ব হ্রদের লোভ দ্বেষে কুস্লে বার ক'রে নিমে ফাঁকি দিলে, মেরেমান্থ্রের টাকা হজম কর্লে; তারপর আর এক ভালো-মান্সের মেরের নীমে মিছি-মিছি বদ্নাম দিয়ে তার একাল-আথের থেয়ে দিলে, তার আবার বাম্নাই ?—মুথে আগুন ভার;—গলায় দড়ি, সে আবার মান্ত্র ?"

मनी वन्त, "छाथ, माछि, त्रागाम् नि वन्छि,—आमि मिছिमिছि वननाम मिहेছि ? चहत्क (निथिছि!"

भाष्ठि वल्ला, "भव्रण व्याव कि, वरण 'ब्लाटन खटन भिर्या वरण, जाब भाणा नवरक मारण'!'—

মিছে ক'রে বদনাম দাওনি ক ম্লির নামে ?

মাসীর অহুথের সময় কল্কেতায় সোহাগ

ক'রে চিঠি লেথা হয়েছিল বে—তাতে কি

লিখেছিলে মনে নেই ?—দাওনি মিছিমিছি বদনাম ?—নও মিথোবাদী ?"

শশী মুখুযো রাগে গির্গিটির মতন মাথা ক'রে গর্গর্ কর্তে শাগ্ল।

মাতি বল্লে, "কি, গির্গিটির মতন থাড়া হ'রে উঠছ কেন ? চোথছটো খুবুলে নেবে নাকি ?"

हाथ श्वीत्वात्वात कथात्र काना-भनित जि क'रत्र बाथा चूरत्र श्राण। या क'रत्र अकछ। हक विषय बिरत्र श्रा कर्कन कर्छ य'रण केंक्र, "তরে রে পাজী, ছোটলোক, ক্যাওট, ষত-বড় মুথ, তত-বড় কথা।—আমি গির্গিটি ?"

"থবর্দার বামুন, বেরিয়ে যা' মর পেকে,
গায়ে হাত ভোল্বার ভূই কে ?—সর্বস্থ হজম
ক'রে—ভাধন 'ক্য়ভট—ক্যাগুটের ভাত মেরে
এখন ক্যাগুট—বলে 'ভাত-কাপড়ের খোঁজ
নেইক, নাক কাট্বার ঠাকুর।' দূর হ'য়ে,
য়া মর পেকে।"

"তাথ্, মাভি তুই বড় বাড়িরেছিন্;
তামীদার চাল কেটে দেশ-ছাড়া ক'রে দিছিল,
আমি যার ব'লে ক'য়ে হাটতলায় জায়গা
দেওয়ালুম, তাই মাথা ওঁজে থাক্তে
পেইচিন্।—কামার উপর ট্যাক্ ট্যাক্ ?—
সবুর কর্—মাথায় খোল চেলে দেশ-ছাড়া
কর্ছি – সবুর কর্।—বল্ছি জনীদারকে—
বড় বাড় বেড়েছিন্।"

प्लान-हानात कथात्र माछि एउटन-दिखदन
खर्म উठ्न, म् वन्टन, "अभोनात १—या'ना
खमीनादात्र काट्ड,— आमिछ म्थान द्यर्थ
कानि,—याव—वन्व—मव काम क'टत दिव — जात्र वाहित नाटम मिट्या वन्नाम निद्य जात्क ट्डिंडाशूड्र कित्रितिम्—मव वन्व — अमादात्र डिज्त शिद्य शिक्रिटाक्कनटक वन्व।—आमात्र जूटे हिनिम् नि।"

"যা, যা; যা'না, কস্বীর কথায় কে বিশাস করবে? হেঃ, যা'না, গিয়ে একবার মজাটা ভাগ না।"

মাত জিনীর সোথ চেপে জিয়েছিল, সে বল্লে, "বিখাস করে কি না করে, সে আমি বৃষ্ণব,—কল্কেতার দরণ সেই চিঠি নিয়ে যাব, গিয়ে গিয়ি-ঠাক্কণকে দেব,—বাবুদের ভাধাব,—সে চিঠি জামি ফেলিনি—কোনো

काशक व्यामि क्लिन नि—नव व्याहि—छ। प्रमक पिट नाश्न। माठिननीय व्याखनार ७ स्त्रामम्।"

হঠাৎ নরম হ'মে শ্বলী বল্লে, "মাভি, রাগ कत्रीं १

মাতি বল্লে, "রেখে দে- তেবি সোহাগ, কাতিব বোন্ মাতি তোর শুক্নো আদরে আর ভুল্ছে না।"

मनी वन्त्म, "मि ठिठि। काषा ३ : तर्था इन् ভাষা না।"

"हेम्!— **क्विश**ान वा खाशाव ना ; कि কর্বি ভুই বামুন,—--ভোর বিষ-দাত আমি লাঙ্ব,—আমার বৃক-ভরা সোনা হজম कर्त्राहम्—आभात्र मर्काश्व (थर्हे हिम् — मर वन्त —জোচ্চোব—বাট্পাড়—বেইমান বামুন!"

শশী বাগে ফুল্ভে ফুল্ভে বল্লে, শাদবি 12 2"

-11 120

"দি বি নি ?"

"at |"

"पिति नि ?"

यां जिनोत्र जिम् (वर्ष राम, म वात्रवात िनवात्र वन्दल "ना।" मदम शिकात्र मनीव মগজ একেই ভয়ম্বর তেতেছিল, তার উপর माङ्क्रिनीत এই-সব कांद्री कांद्री क्षांत्र छ চাক্রী যাবার ভাবী সম্ভাবনার সে একেবারে আগুন হ'মে উঠ্ল। চালাকি ক'রে, শ্সময় মঙন চিঠিটা বার ক'রে নেবার ভার चात उत् महेन ना! फिट्टन् ननी हर्शेष शौत्रारवत्र मछन माछिनीरक এक्वारत हिष क'रत (करण, जात बूटकत डिशन इसे हैं। हैं मिरम (काँटक व'रम भगाने। **मरकार**म हिरम

माङ्क्रिनोत्र पत्रका ঠেल पद्म हुक्ल, ङ्थन माञ्किनीत मम न्यस इ'रहा रशरह ।

"ছাড়, ছাড়, খুন করলে হতভাগা, খুন কর্লে" ব'লে কাজ্যায়নী চেচিয়ে পাডা মাথার করছে দেখে শশী মাভাঙ্গনাকে ছেড়ে বোভল हूँ एए कांग्रायनोटक षाद्यम कदत्र । कांग्रायनो चत्र (थटक ছूटि (व्जित्स हिंक्टिस, भाग मिर्स (कैंप्स मन्द्रायम क'रत कुँल्ट्स। मना এह স্থোগে দ'রে পড্ছিল, কিন্ত একে হাট-বার তায় ম্যাজিষ্ট্রেটের অভ্যর্থনাব জক্তে হাটনাট (माकान-भाषे माजारना कटळ (मरथ, जारनक हापुरित्र छ निक्षमी (माक मक्ता ह'स रगरम छ करेंगा क'रत काकिम सर्गटनत चारभकात्र ছিল। জন-দ্রই চৌকীদারও পুলিশের তর্ফ মাতজিনী মুধ ঘুরিয়ে বল্লে, "না দেব থেকে সাজানোর কাজ তদারক করছিল। कार्छ है ननीत मरनत है छा मरनहे त्रस राना। त्म अभीमात्र-मत्रकादत्रत्र त्लाक व'त्लख त्रत्राद (भरण न।। धर्षात कल त्नहाद वाजात्महे नए (गण।

90

ষে গাড়ীতে ম্যাঞ্জিষ্টেতেৰ কালীগ্ৰামে व्यामवात कथा हिन, म्म गाणीट किनि व्याप्तन् नि। स्थाप्तन । मस्ति । स्थाप्तन शिष्त्र (मथ्रान, जात बनरान जांद्र नारम अक कांद्र वात्र शास्त्र। जारक यां देश बार्क जारक जात मन्त्र हरक अहे (य, क्ठांद काइह हडवाव সাহেবের আম পরিদর্শনে আসা হ'ল না, भ्यात्म जिल्ल कृश्विक। कर्य व्यामा कर्द्रम, त्व, इ'ठाव मिर्निव मर्थाई किनि स्मरत केंद्र दन जयः कानीज्ञारम भारमम भूरना स्वरंग।

ভারতী

সমস্ত আয়োজন পও হওয়ায় এবং ধরচ দোকর হবার সম্ভাবনায় যোগেন মিন্ডির মনে মনে গম্ভরমতন বিরক্ত হ'রে, হাভীটা कित्रित्व नित्र त्यत्क क्युम मिर्य प्रमः हेम् টম্ হাঁকিয়ে আগেই গাঁমের দিকে রওনা र्'रमन। थानिकपूत शिरत्र है। एमत व्यारमात्र रुठांद रेमळ-मभाइएक प्रत्य गांडी यामात्मन।

"প্রাতঃপ্রণাম মৈত্র-মশাই, এত বাত্তে ?" "বেশের ভপারে ডোমাই-চণ্ডীতলায় একটু भवकात छिन,—এकজন ,यक्रमानित ष्यक-शात्रिकाखत कार्य एएक निरम् शिरम्हिल, लाकि । ज्ञानकि । ज्ञानकि । ज्ञानकि । ज्ञानकि গিমে শুন্লুম, মারা গিমেছে— ভাই ফিরছি।"

যোগেন মিভির বল্লেন, "আহ্ন আমার গাড়ীতে।" মৈত্র-মশাই একটু ইংস্ততঃ কবৃতে কব্তে গাড়ীতে উঠে পড্লেন। গাড়ী त्रिम-शास्त्रक शिद्य भाका त्रान्धा ८६८७ और ४व काँ। वास्त्र निला जथना हार्हेत्र किया १ রুগীর মতন, আর্ত্তনাদ কর্তে কব্তে, প্রচুর धूरमा উড়িয়ে হোঁচট থেতে খেতে গ্রামান্তরে **हर्ला** ।

ষোগেন মিভির স্বয়ং গাড়া হাঁকাচ্ছিলেন, হঠাৎ তাঁর সিগাবের ভৃষ্ণা প্রবল হওয়ায়, চণ্ডাঙলায় যেতে হবে, একটি রুগী আছে।" রাশ, চাবৃক, সিগার,দেশালাই নিয়ে ব্যতিব্যস্ত হ'রে উঠ্লেন, এবং জমীদাব ক'রেও বিধাতা ক'রে কেন যাবেন, তাঁব হ'য়ে গেছে। এই যে কেন তাঁকে চতুত্ব করেন নি, তা व्या एक - । १ १ रत व क है। भी पिनियान स्करन গাড়ী থামালেন। ভারপর অর্নেক রকম কায়দা ক'রে মেঠো হাওয়ার ফুস্মন্তর (शरक दम्मानाक्रेरम् भिथािंटक वाहिएम সগারটি প্রায় ধরিমেছেন এমন সময়ে

"রাথো। রাথো।" শবে তাঁৰ চমক ভাঙ্ল। माम्दन, तथर्वन छाख्यरत्रत्र भाव्यो। **डाकाव वाव शान्को (शांक न्याव श'ड्डे** একেবাবে উম্টমের কাছে হাজিব হ'লেন। সিগাবটা কাঁতে, ১চপে রাশ-চাবুক একসক্ষে नाक वत्रावत छैं हिएस स्थारशन मिखित वन्तानन, "প্রাটঃপ্রণাম, ভাক্টাব বাবু যে।" (দন্ত-পাটির ভাতি কলের মধ্যে দিগাব পাকলে তবৰ্গ স্থানে টবৰ্গ হয়,হতি ভাত্ৰকুট কৌমুদা।)

ভাতার বাবুটি কালীগ্রামে এসেছেন, জাতে ব্ৰাহ্মণ, তাই ব্যাসে যোগেন মিডিরের চেনে চের ছোট হ'লেও কারস্থ জমাদারের প্রাতঃপ্রণামের জবাবে তিনি क्रिक वाभाव्याम व ब्रह्मन कि 'वक' दिशाद्यान, ा' ज्लाह दक्य (वांचा (शहा मा। याँकः) বাড়াতে থাওয়ায় পর লোকের ঠেলাঠেলিতে এ টো হাতের উপর গায়ের শাল খ'দে পড্রার সম্ভাবনা হ'লে হাতের যে অপরূপ ত্র'একথানি গোরুর গাড়ী, নিদ্রোত্তত কেনে। ৩জা হয়, ডাঞাব বাবুর হাতের ভঙ্গীও (भगर७ व्यय्निका) (मर्क द्रवसके मैं प्रार्थ। চক্রাকার মুথথানিতে অহেতুকা-প্রফুলভার থাজার ভাঁজ যেন কামেম হ'য়ে থাক্বার জো হ'ল। ভিনি বল্লেন, "একবার ডোমাহ-

> যোগেন মিজির বল্লেন, "সে আর বন্ত **(य रेमक मनाय मिथान (थरक आम्**रिइन।"

> মৈত্র-মশায় বল্লেন, "ডোমাই-চণ্ডীতলার চৌধুর দের ন'কতা তো—তাঁব হ'য়ে গৈছে।"

ভাক্তারের টাদস্ট থাজাব মতন মুখ্থানি क्टांट द्याखन-त्याजात्र यसम नवा रु'त्र वृत्त

পড়ল। তিনি কিন্তু বে-পরোয়া ভাবে বল্লেন, অনেক ধ্বস্তাধ্বতি ক'রে ভার চৈত্র-সম্পাদন "याक।"

(मिडेडि पर्यास गिरा महासूज्ि क्रांनिय तान करव,—(म नन्ति य मना मूथ्या, আদ্বেন, ঠিক কর্তে» না শেরে, মিনিট- মাতাল অবস্থায় নোতল মেরে ভার মাথা शानक खाकांत्र वावु 'न यायो न ७एको ' অবস্থায় উষ্টমের খোডার পুচ্চ পর্যাবেক্ষণ কর্লেন। হঠাৎ ডাক্তারের মগজের ভিত্ব ভূতীয় পছা খুলে গেল। ভিনি বীলে উठ लान. "ভালো कथा, वल्ट जुलांछ, थाकाञ्चि-थानात मनी मुशुर्याद तक विशेष, লোকটা পুলিশের হাঙ্গামায় পড়েছে।"

যোগেন মিভির বিশ্বিত হয়ে বল্লেন "কি রক্ষণ সেতো এইখের নাম ক'রে ছুটি নিয়ে গেছে; আমার আম্লা পুলিশের হাতে কি-রক্ম p^{ec}

তথন ডাক্তার ভিজিটের শোক ভুলে পরম প্রগল্ভতার সঙ্গে আতোপান্ন সমস্ত বল্ভে अक व श्रमन।

তিনি যা বল্লেন তার মন্যটা এই রকম ;---दिश्वीरमञ्ज न-कछारक दम्य द्र यातान कर्छा वाफ़ी प्लिटक दर्वात्र । शाभ ठाउँ-छमात काछ-वर्धावत धारमाह्मन, धारम मगर्भ, देभख-मभौरम्य (कृटन व्यक्त हाभार हांभार মাঝপথে তাঁকে গ্রেপ্তার ক'রে হ টে এ টো জরুরি কেসের নাম ক'রে ডেকে নিয়ে যায়। তিনিও জরুরি কেস শুনে, তাব ভিজিটের টাকা কে দেবে, সে কথা না ভেবেচিন্তেই, ডাক্রারেব যা' কর্ত্তবা ভাই করেন। সেথানে যাকে ভাখবার জভে তিনি াগথেছিলেন, সে একজন স্ত্রীলোক। প্রথমে তাকে মৃত ব'লেহ মনে হয়েছিল, কিন্তু, পরে

क्या क्या

वाफ़ीत मिरक कित्रवन कि छोधुशीरमत बाद्यकि जीलाक, स्वाध इटक छात ফাটিয়ে দিয়েছে। এর আঘাত ভেমন মারাত্মক नम। व्यवस्थिक द्वीरमाकारिक वी-व्रक्य माञान व्यवसार्व्ह भना हिल्ल (भर्व रक्षनार्ह् দেখে দে ধর্তে গিয়েছিল, এচ তার অপীরাধ ডाक्टार वायू मारबागास्क थवर পाठान, जिन এদে इ'জ न जीलार कत्र अक्तरात्र निध निय्यट्टन। छाउनात्र वाव् ध मव वााभाद्रत বিন্দু-বিস্মতি জান্তেন না; কারণ ঘটনার সময়ে তিনি কালিগ্রামে কম্মগ্রহণই করেন নি। এজেহারে যা' গুনেছেন ভাই বলছেন। স্তরাং মৈত্র-মশাই যেন কিছু মনে না करत्न। এक्टिहार्य श्रकाम, मनी मूथुर्या द्र मक्ष अधारभाक औलाकि दिव व्यमिक िन ুএট ব্পাটা ক্রমশঃ রাষ্ট্র হ'রে ষাওয়ার মৈত্র-মশাই নাকি শনাকে একঘ'রে কর্বার চেপ্না করেন। শশীর রাগ ছিল। ভাই মৈত্র-মশাষের মেধে যথন কল্কেতার হারিয়ে याम, ७थन देभक्र क क्य क त्रात करण भनी একটা ামগ্যা-কলফ রটিয়ে প্রায়। আজ नांक (महे मन कथा निष्य छक्षान कि वहमा इया। স্ত্রালোকটি শশীর এই সমস্ত কার্ত্তির কথা कांभ क'रत (परव वरन। कार्व (मणात त्याँ रिक दारशर याणांत्र मनी जात शमा हित्य धरम । खीट्या कि वटन, हुए। प्रनि-याश्त्र मगर यथन (म खांत्र यामीत कार्छ क्लांक्लांत्र यात्र, তথ্ন নাকি শ্লী তাকে ভার এই কীর্তির कथा कांनित्य . এक विठि दन्द्य। देनज- মশাইকে জব্দ করবার সে যে অন্তুত উপায়
উদ্ভাবন ক'রেছে তা' সবিস্তারে লেখে।
সোচিটি সে কেলেই দিত, কিন্তু মাসীর দক্ষণ
টিনের তৈরী গঠনার বাক্সটার তলায়,যে কাগজখানা পাতা ছিল,তা মর্চে লেগে জ'রে যাওয়ায়
ও হাতের কাছে অন্ত কোনো কাগজ না
থাকাম সে গহনার বাক্সর কলায় শনীর ঐ
চিটিখানা বি'ছয়ে তার উপর গছনাগুলি
রেখে ছিল। সে চিটিও পাওয়া গেছে।

ভাক্তার বাব্র রিপোট শেষ হ'লে যোগেন মিজিরের ভুরু-ত্রটোর মাঝথানে যে জ্রকুটিটা এডজন কাম্ডে বসেছিল, সেটাকে উপরের দিকে ঠেলে কপালময় ছড়িয়ে দিয়ে,ভিনি ব'লে উঠ লেন, "হারামজাদার এত বড় আম্পর্কা, বাবের বরে ঘোগের বাসা! জেলে পচাব!
বাটাকে চাল কেটে দূর ক'রে দেব। ভবে
আমার নাম যোগেন মিভিক্!—ওঃ এত বড়
শয়ভান!"

মৈত্র-মশাইতের মুখ লাল, চোথে জল, কপালের শিরাগুলো সমস্ত ফুলে উঠেছে; ছঃথ-স্থাধের দোটানাম তাঁর ঠোটের চেহারা অন্ত হয়ে উঠেছে। তিনি ভাঙা গলাম শুধু বলেন শাষ্ত্রণ, আর কোনো কথা তার মুথ দিয়ে বেকল না।

ষোগেন মিন্তির ডাক্তারকে পিচনে আস্তে ব'লে, বেগে টম্টম্ ইাকিয়ে দিলেন।

ক্রিমশঃ)

শ্রীসভ্যেন্তনাথ দত্ত।

সমালোচনা

সৃহজ স্বাস্থ্যরক্ষা—প্রথম ভাগ। ডাক্তার হারাধন বসু, এম-বি প্রণীত। প্রকাশকু, এস্, কে, খন্ত, ২৭।১ কর্ণওয়ার্লিন খ্রীট, কলিকাভা। ভারত মিহির ত্রেসে মুক্তিত। মূল্য চারি আনা মাতা। এই কুত্র গ্রন্থণানি বালক-বালিকাগণের জন্ম রচিত। ইহাতে चुर महत्र ভाষার স্বাস্থ্যরক্ষাসম্বন্ধে প্রয়োজনীয় প্রায় সকল কথাই মোটামুটি বিশ্বত হইরাছে। সাহারকার যে সাধারণ নিয়মগুলি লেখক নির্দেশ করিয়াছেন, ভাহা भाजन कतिएक व्यर्वग्र रहेरच ना. व्यथह म्यक्षि दिन महस्य ७ এटक वादत्र वाढाणी शृह्ह खनमाथात्र पद भएक मिडाक्ट पदताका धन्नर्गत । त्यरणतिकां, करणतां, त्रांग, ৰম্ভ, ইন্যুলুমেণ্ডা, কুমি, প্রভৃতি রোগ ও তাহার অভিকারের সম্বন্ধে সংক্ষিপ্ত আলোচনাটুকু বিশেষ हिगकात्त्र वानित्य: ब्याटनाठा विषय पुर्वियात स्विधा-करण करत्रकथानि छिज्ञ अरच् मन्निविष्ठे इहेन्नार्छ। এই এছধানিক্পত্রত্যেক বিদ্যালয়ে পাঠ্য-তালিকাভূক হওয়া উচিত।

প্রধাকশ্বকার | —বা কণার Researcher প্রণীত। প্রকাশক, প্রীযুক্ত রাধারমণ রায় বর্মণ, ৫।৪ জরিফ লেন কলিকাতা । মূল্য কোথাও লিখিত দেখিলাম না। এই গ্রন্থে লেখক শাস্ত্র ও ইতিহাস रुटेट अभाग क्रियाट्सन, "यादाता लोरस्वर्गान ষাত্ৰ-রত্নঘটিত শিল্প-বিজ্ঞান-কর্ম্মে অলৌকিক গুণকর্ম-भागी इन्टेंडन, डांग्रांदन 'कर्मात्र' (प्रश्रीद धीकर्मा वा প্রধীকর্মকার) এই গৌরবান্ধক উপাধি হইত। পরিশেষে हिष्य में यष्टि रहेरल मामजिक ও গৃহস্থালীর প্রয়োজনীয় অন্তৰ্ত্ত-বন্ত্ৰ-ভৈজ্ঞস-আভরণাদির রচনা-কর্মকুশল এই কর্মার আখ্যা ব্রাহ্মণমণ্ডলী প্রধানতঃ ক্ষল্রিয়বর্ণে স্থান भारेत्रोहित्यन । श्राहीनकारम क्याजित्रनरात्र मस्या त्यमन व्यथिकार्म व्यभिष्ठां वक, त्यांथन वा जांकक हिएलन, त्मज्ञां কতকাংশ অসিকারক স্থকারু কুলিক ছিলেন।" কর্মকার জাতি বর্ণসঙ্কর নহে, ক্ষজিয়েরই একটি শাখা বিশেষ। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া আমরা বিশেষ প্রীতিলাভ করিয়ছি। এই साधीत सागत्रांत्र पिटन वादणात्र मकन साधिर व

ভেদান্তরালের মধ্য দিয়া আপনাদিগেয় লুখ্য পরিচয় উকার করিয়া দেখাইতে চাহিতেছেন, যে বিশ্বনীশায উচ্চাদের দাবী কতটা, ইহা ইলফণ, ক্ষবিষ্যৎ উন্নতির শুভ স্চনা। এ গ্রন্থ শুধু কর্মকার সম্প্রদান্ত কেন সমস্ত বাঙালীই পাঠ করন,—পাঠ করিলে এ কথা সকলকে, বলিতেই হহবে, আমাদের কেহ তুক্ত নর।

পাশ্চাভাধশ্ম ও বত্তমান সভা গা ৷— ভীযুক্ত সুধুমার হালদার প্রণিত। কলিকাতা, বুস্তলান (अरम मुखिछ। धाकानक और्छ मनएक्मात्र हास्नात्, রাচি। এই ক্ষুদ্র গ্রন্থে লেখক ইহাই ব্রাইয়াছেন, "ঈটরোপের সভাতা কোনো কালেই এীপ্রান্ধর্মের বিশেষ মুখাপেকী ছিল না, বরং খ্রীষ্টান ধক্ষের কাছে অনেক मभरत्र शक्रजत वाथा পেता এमেছে। आभाजजः (य ভাবে ইউরোপে ও আমেরিকায ধন্ম সম্বন্ধে আলোচনা अभिरय एटमट्ट म्ब्राभ यनि ८४मी । नन ben, जाञ्च পচলি - খ্রীষ্টানধর্ম যে কোথায় গিয়ে দাঁড়াবে ভা বশা কঠিন।" এই গ্রন্থপাঠে লেখকের প্রগাত ফদেশপ্রেম ত্যান ও চিস্তাশীলতার প্রচুব পরিচয় পাই। লেখক এই প্রসঙ্গে বাণার্ড শ'র ধে টক্তি উদ্ধ ত কার্যাচেন, তাহা मक्टा निकार वाद्याप्त । दम डिडिंग अरे-Lo offer a Hindoo so crude a theology as ours in exchange for his own, or our Jewish canonical literature as an improve ment on Hindoo scripture is to offer old lamps for older ones in a market where the oldest lamps like old furniture in England are the most highly valued

তিনদুনানা।— শীযুক্ত এবনে মুর প্রণীত।
প্রকাশক, শেখ মোহমাদ ইদরিস আলী, কোহিমুর দাই
রেরা, কালকাতা। বঙ্গনুর প্রেসে মুদ্রিত। মূল্য পাঁচ
সিকা। এথানি উপজাস, ইহাব লেখক মুদলমান—অবচ
গ্রন্থের নাম 'হিন্দুনারী'—কাজেই অনেকথানি কৌতৃহল
লইয়াই গ্রন্থানি পাঠের উজ্যোগ করিয়াছিলাম; ডাহার
উপর গ্রন্থেয় মুখপতে লেখক সাড়ম্বরে যখন বলিয়াছেন,
এ গ্রন্থ তিনি লিখিয়াছেন শুধু হিন্দু-মুসলমানে সৌহস্ত
ভাপনের ক্রন্থ, অপর কোন উদ্দেশ্যে নয়। এ উদ্দেশ্য

मरच्छ १३ मृथणदाङ त्नरवत्र पिटक दावियान, विक्रम-চল্রকে লেখক অনুর্থক বেশ একহাত লইরাছেন! ভার-পর গ্রন্থখানিব প্রাপম পারচেছদেই দেখি, শিপ্তাচাথের যে একটা স্বাভাবিক নিরম সকল সমাজে প্রচালত আছে, লেখক ভাহার মাধার লগুড়াঘাত করিয়াছেন। ভার পর এক মহ্যির শিষ্যভয়কে আসরে নামাইয়া ভাহাদের মুখ বলাই মাছেন, ভাহাতে লেখকের কচি ও সাহিত্যজ্ঞানের যে পরিচয় পাই, ভाहा व्याप्तिकालकात्र पितन, श्रु निया ना नमाई खाला। **टिन के किन्छाटात यहँना अंगिम किन्ना हिस्त्री** পক্ষ महीकीटङ আর সেহ সময়কার কথায় বলিভেছেন — 'সে সময় ভাৰতের কোন স্থানেই রম্পাগণ সভীত্ব-রক্ষা क्षेत्र विद्या । य गत्न क्रिड अज्ञान मत्न रुप्त ना। अगन কি সম্বাস্ত, পারবারেও ব্যাভিচারের স্রোভ যেন প্রকাশ্তে প্রবল বেশেই প্রবাহিত হইত। সেকালে মর-মারাগণ পণেবৎ ব্যবহার করিত।' ইত্যাদি। ইহার পর আর এ গ্রন্থ প্রাপ্ত থাকে না। লেখকের ভাষা ও সাহিত্য জ্ঞানের পরিচয় গোড়ার কর পৃষ্ঠাতেই যাহা পাই, তাহা একেবারে অপুরা! ইভিহাসেও এমনি জ্ঞান যে সাদা চোৰে ইতিহাসের পাতা কর্থানা श्रिषु छेन्द्रिक्या रात्वा कन् এयन वीक्यम माँए করানো কঠিন হয় বলিয়া আমাদের বিশ্বাস। এই জঘক্ত রাচর গ্রন্থ বাহিন্নে অকাশ করিলে সাহিত্যের व्याषांगट मार्कात्र कोन वावश नांश वहते, किन्छ तांज-ঘারে এই গ্রন্থ দেখাইয়া এই শ্রেণীর গ্রন্থ-প্রকাশের এक है। मौर्मा এখন । भागिया (मध्या बाहेट भारत। তবে এই আইন-আদালতের দিনে যে যা-খুসি লিখিয়া চালালো याग्र ना—এ বোধ याश्र नारे, डाशांक श्वृिष বা পরামর্শ দিতে যাওয়া শুধু বাতাদে অসি-অহার माव !

ঘব ও পর।—শীবুজ বসম্বক্ষার বন্দ্যোপাধার প্রান্ত। বিপ্র-ভাগ্রার, বসন্ত কুটার, গোন্দলপাড়া
চন্দননগর, কলিকাভা সাধী প্রেসে মুদ্রিত। মূল্য এক
টাকা। এথানি সন্দর্ভ পুত্তক। লেগক এই প্রয়ে সুদ্রমন্ত্রর
গতী কাটাইয়া মানুষকে এক বিরাট মহামানবভার
পারণত করিতে পরামর্শ দিয়াছেন। ভাহার আলোচনা

ইতিহাসের ধারাকে অবলম্বন করিয়া দার্শনিকত। ও
নামাজিকতার লক্ষ্য হারায় নাই। সর্বপ্রকার লৌকিক
স্থবিধার দিক দিয়াও কিনি এই বিশাস সহমর্মি হার
মৌজিকতা দেখাইতেও ক্রেটি করেন নাই। চিন্তের
ও দেহের সর্বাজীন বিকাশেই প্রকৃত মনুষাত্ব, সেই
মনুষাত্ব লাভের দিবেই সকলের লক্ষ্য রাথা কর্ম্বরা,
ভাহাতেই মানুষের উন্নতি ও কথ—মোটামুটি ইহাই
এই সন্দর্ভের প্রতিপান্তা। এ সন্দর্ভে লেগকেব
ভাবৃধ্ব । ও চিন্তাশীল হার পরিচ্য গ্রেব স্বাত্রই
পাই; সজে দল্লে যে যুক্তি-ত্রেকের অবতারণা হইয়াছে
ভাহাও যেমনি নিপ্র তেমনি অকাট্য।

লীভাগনত-গাহাত্যাম্। পতিত শ্রীমৎপ্রভূ গৌরহন্দর ভাগবত দর্শনাচাযোদ সংশোধিতম্। ভাগবত সেবক শ্রীরাধিকাপ্রদাদ দাস ঘোষেদ সম্পাদিতং। শ্রীবৃক্ত প্রমণ্ডরণ দেবশর্মা কর্ত্বক দেওঘর অবলভায়া হুইতে প্রকাাশত। মূলা আট আনা মাত্র। ইহাতে ভাগবত গ্রন্থের উত্তর বঙ্গ মূল ও প্যার ছন্দে রচিত ভাগবত গ্রন্থের উত্তর বঙ্গ মূল ও প্যার ছন্দে রচিত ভাগার বঙ্গাত্রবাদ প্রকাশিত হইয়াছে। অমুবাদেব ভাষা থুব সহজ—খাহানা সামাল্য লেখা-পড়া জানেন, ভাহারাও অনায়াসে এই অমুবাদ-পাঠে মুলের ভাবার্থ বুবিতে পারিবেন—ইহাই এ গ্রন্থের বিশেষজ্ব ভাগার্থ কাগজ ভালো। ভূমিকায় প্রকাশক মহাশেয় বলিবাছেন উৎসাহ পাইলে বহু-ব্যয়দাধ্য এই 'প্রিগ্রন্থ' তিনি সমগ্র

বিজ্ঞানের গল্প।— শীব্জ জগদানন্দ রায়
প্রশাত। এলাহাবাদ্ধ ইণ্ডিয়ান্ প্রেমে মৃদ্রিত। প্রবা
শক, ইণ্ডিয়ান্ পাব্লিশিং হাউস, কলিকাতা। মৃদ্যা এক
টাকা মাত্র। এই গ্রন্থখানিতে বিজ্ঞানের কতকগুলি
ভাতান্ত প্রয়েজনীয় কথা, এমন চমৎকার সহল ভাষায়
স্থললিত ভলীতে ও বিশদভাবে বণিত হইয়াছে, যে
ছেলেরা ইহাকে গল্পের বইরের মতই সমান্তর পাঠ
করিবে। পূর্যা, স্থ্যোর তাপ ও লালো, আলোর উৎপত্তি
শক্ষের উৎপত্তি, রন্তিন আলো, রন্তের থেলা, মেঘ ও
বৃষ্টি, মেধ্বের আকৃতি ও প্রকৃতি, গাছের ঘুন, রক্ত,
ব্যাভাচি, ব্যাভ, মাছ, আমানের খাতা ও শবীরের বিষ—
এই কয়টি বিষয় এই গ্রন্থে সমিটিই হইরাছে। বিজ্ঞানের

মত নীরস বিষয়ও দিবা মনোরম ভঙ্গীতে বলিবার
ক্ষমতা জগদানিল বাবুর অসাধারণ, এ গ্রন্থে সে পবিচর
সক্ষর পাই। এ গ্রন্থথানি শুর্ধু চেলেমেরেরা কেন,
তাহাদের অভিভাবকেরা অবধি পাঠ করিয়া আনন্দ
পাইবেন, উপকৃষ্ট ইইনেন। যে যে গৃহ্ণ ছেলে মেয়ে
আছে, দেহ-দেই গৃহমাত্রেই এ গ্রন্থ বিবাদ ককক।
পাঠের বিভাগিকা ত ছেলেরা ব্রিবেই না—আনন্দের
মহিত শিক্ষাও তাহারা প্রত্ব পাইবে। বহিধানির ছাপা
কার্গর চমংকার—অনেকগুলি ছবিও বহিধানিতে
সার্গির ইয়াছে, ছবিগুলি বর্ণনীয় বিষয়গুলিকে
আরো সপরিক্ষ ট করিয়া হহাব পাঠক পাঠিকাব তরণ
চিত্তে জ্ঞানের স্বৃত রেণা পাত করিবে।

निता । — नामूक कात्नक्य क दिलायाम अभी छ। श्रकानक नाश्तिमाम हट्डाभाषात्र, खन्मान हट्डाभाषात्र এও সন্স্ कलिकांछ। (ठात्रवांशान, कलिकांछा, वांशी **८**शाम भूषि भूमा भी । मिका। अर्थानिक ठिक উপস্থাস বলিচে পাবা ষায় কেনা বলিতে পারি না, তবে उपग्राटमवर मह। करम्कथानि प्रवाहति अञ्चलाव देशा ह "আমার্দের সমাজেব বর্তুমান সৎ এবং অসৎ ভাবের भावार्शन (प्रथाह्यात्र धन्नाम भावेशात्कन।" भगर्खनित्क অবলম্বন কবিয়া একটি প্লটও মন্দ শোড নাত। লেখকের लाक धिवाल अख्छा । আছে—वन्भान यूल (य नव তত্ত্ব অনেকেরছ চিত্তে আন্দোলন তুলিয়াছে, তাহার তরক পত্রভালর মধ্য দিখা বহিয়া গিয়াছে। লেখক ভাবুক— ভাহার প্রাণে কবিত আছে—পত্রগুলি পাত্রাব সময় পঠिকের চিত্তে বহু চিপার উদ্রেক হয, বহু ভাবে সারা চিত্ত ছলিয়া ওঠে। প্রভালতে এতাবভিন্ন ভাবের ধারা क्रुतिशाटक त्य উপস্থাদের দিক দিয়া বিচাব করিতে रहेटन এ कथा विनट उड़े रहेटव द्य डाहार्ड हिन्गारमञ গতি স্থানে স্থানে মন্দ কইয়া বসভক্ত কবিয়াছে, তবে বিভিন্ন ভাবে ধরিলে পত্রগুলি ভিত্তাক্ষক ও আটি তিক গ্রন্থানিতে লেখনের শক্তির পরিচয় क्ट्रप्राटक । भावेगाहि,—ममखर्वत विद्याराण कावात द्या भारतिका মোটের উপব বলিতে পারি, গছধানি ढेनस्थाना रहेब्राट्छ।

স্প্তিতত্ত্ব পুরাণ ও বিজ্ঞান।জ্ঞানেশ্রমোহন দাস প্রণীত। প্রকাশক শীর্ক্ত অনাথনাথ মুখোপাখ্যায়, ২১ নং ক্লাইভ রোঁ কলিকাতা,
কান্তিক প্রেসে মৃদ্রিভা। মূল্য আটি আনা। এই ফুল্ল
গ্রত্থে গ্রন্থকার তাহার অপূর্ব অধাবসায়ের বলে প্রাণ ও
বিজ্ঞানের ছায়ায় স্প্তিতত্ত্বের আঁলোচনা ক্লির্যাছেন।

कर्ग्यक्ता श्रीयूक किटमात्रीरमारुन द्वाप প্রণীত। প্রকাশক, রায় এম, সি, সরকার বাহাছর এও সন্স, হ্যারিসন রোড, কলিকাতা। এমারেণ্ট প্রিণিটং ওয়ার্কসে মুদ্রিত। মুলা মেড় টাকা। এই গ্রন্থে "অহিংসা পরমোধর্ম" এই বৌদ্ধ মতবাদের সনালোচনা করিয়া গ্রন্থকার কর্মফল নামে একটি বৌদ্ধ আখায়িকা বিবৃত করিয়াছেন। সেটি উপভাস নয়, লাখায়িকা মাত্র; তবে আখ্যায়িকাটা ঠিক অমুবাদও नग्र। जिलाबानि दिन को जुङ ल्याकी शक अनः (जशक ভাহাতে কোনরূপ উচ্ছাদ বা বাকোর আডম্বর বিস্তাদ करनन नाडे। এই 'উপখ্যানটিয়' ঐ হিসাবে মূল্যও चार्छ स्टब्रे: উপब्रानिट इट्ट जामन्न अहीन ভারতের সামাজিক ও রাষ্ট্রনীতির প্রচুর পরিচয় পাই— (न) द्वागुरशत्र मन्तानग्रवमण्यज्ञ धक्षि लोकिकं जामर्गवर्थ সন্ধান মিলে। "এ আদর্শটি বর্তমান মনুষ্য সমাজের ও শ্রেষ্ঠ আদর্শ—বেচছাচানী রাজশক্তির উপর জন-সাধারণের মতের প্রাধান্ত ও প্রভাব এই উপাণানে ञ्रुष्णांत्र रुहेया कृषियार्ष, व्यथि १ व्यापर्णिय जिखि रें जिशान ; कलानां नगा।

নূতন উপনিবেশ। শ্রীমতী চারুবালা সরস্বতী প্রণীত। প্রকাশক শ্রীসূত জনাথনাথ মুখোপাধাায় ১১শং ক্লাইভ রো, কলিকাতা। খ্রীপৌরাঙ্গ প্রেসে মৃত্তিত,
মূল্য ছয় আনা। এখানি ছেলে-মেয়েদের জন্ম রচিত
গলের বই। গল্লটি মামূলি সাপকথা নয়; জন্ত-ভানোয়ার
লইয়া লেখিক। ইহাতে নৃতন রক্ষমের বৈচিত্রোর স্থাষ্টি
করিয়াছেন। রচনার ভঙ্গী সহজ, সরল, ছেলেমেয়েয়া
পড়িয়া বিশেষ ক্লোডুক ও আনন্দ বোধ করিবে।
কয়েকথানি ছবিও বইযে আছে— ছবিগুলি চমৎকার
হইয়াছে। বহিপানির ছাপা-কাগজ ভালো।

ষড় অব তার। শীয়ক্ত নকেন্দ্রনাথ বহ প্রণীত। প্রকাশক শীযুক্ত ছবিদাস চট্টোপাখ্যার, ভরুদাস চটোপাধার এও সন্স কলিকাতা। ষ্টাণ্ডার্ড ডুগ প্রেসে মুদ্রিত। মূল্য বারো আনা। এই গ্রন্থে ছয়টি ছোট গঞ্চ সংগৃহীত হইয়াছে। ছোট গল বলিলে যাহা বুঝি এপ্রলি সে শ্রেণীর নয়। ছোট গছের মাপ-কাঠিতে मालिटन এগুनिর যাচাই ঠিক হইবে না; থোদ গলের তিসাবে বলিব, নতুন জামাই ও গোড়ায় গলদ গল ছুইটি বেশ কৌতুক-কর, মজার। তবে গোড়ায় গলদে আইনের প্রকটু গলদ আছে,—পুলিশের কাছে চুরির নালিশ करिया मामला हालाकेव ना विलिट कांक टहारक ना, মিথা নালিশ করার চার্ডেট পড়িতে হয়; গলের শেষে नाशक यङ मश्रक जार्शनात्क त्त्रश्हे निशास्त्रन, ७७ সহজে রৈহাঃ পাওয়া যায় নাল 'বিষম খদেশী' গলে মজা আছে বটে, তবে দমরেল্রর আকস্মিক পরিবর্তনের কোন কারণ পাওয়া যায় না, কারণ দেওয়া উচিত ছিল। "কলির কানাই","খুড়োর বরাত'' ও "নকলে আসল" গল তিনটি বিশেষত্ব-হীন। বহিথানির ছাপা-কাপত্র ভালো। শীসতাত্রত শর্মা।

5(9)

_

কিসে যে কি ঘটিয়া যায় কেন্ত জানে না।
সেই যে সেদিনকার ঐ ঘটনাটা ঘটিল, ইনার
পূর্বে এমন কাণ্ড ত কত্র ইয়া গিয়াছে।
বাগড়া-ঝাঁটি নালিস ফরিয়াদ এ বালকদম্পতীর সধ্যে সেই বিবাহের রাজি হইতে

কবেই বা না হটয়াছিল ? ভবে এবারই বা কি এমন বিশেষ ঘটনা ঘটয়াছে যে ভার জন্ম স্বটাই ওলোটপালোট হটয় যায় ?

সেই যে সেদিন উন্মিলা খণ্ডবকে **ব**ড়ি ভাঙ্গার কথা জানাইয়া স্থামীকে লাঞ্ছিত করাইয়াছিল ভাঙার পক্ষে এ কিছু নতুন নয়;

এমন কভবারই হইয়াছে, কিন্তু এবাবে এ कांबरों (म (य कि अशुक्रकां करिया ফেলিয়াছিল, তাহা ডাহার ভাগা-নিয়ন্তা যিনি তাহার বুদ্ধিকে ওই পথে পবিচালিত कत्रिश्राहित्यम, जिनिहे जात्ममः ज्य देशव ফলটা যে অকন্মাৎ এতথানি কটু হইয়া **CRNI जिरव एम यांज एम विश्राय अक है मान्जर** রাখিত তো নিশ্চয়ই এমন কমা সে কবিতে যাইত না। সেই যে সেদিন স্থগভীর ত্বণাভরে গুপ্তচর বলিয়া বিনয় তাহাকে নিজের ঘরে ঢুকিতে নিষেধ কবিয়াছিল, সেই মুহুর্ত इटेटिड উष्पिनात इटे भाषा ८क स्वन ब्लाव করিয়া একগাছা মোটা লোহার বেড়ি আঁটিয়া मिश्राष्ट्र। . विनम्न भिष्टे धकियात्र माळ शिक्स्या উঠিয়া বিচাতের ঝিলিক হানিয়াই সেই যে আবার পিছন ফিরিয়া বই লইয়া বসিয়াছিল, **(मर्डे एय विद्याद एम कानियादिन कार्य कार्य** कगट्डिय चात्र दकान सकत्मत मृद्यागण्डे दिनी নির্ঘাত নয়। শুনা যায় তাড়িতের প্রবাহেণ মতন অত শীঘ্ৰ মাত্ৰ্য মারিবার শক্তি নাকি আর কাহারও নাই! বিতাৎস্পর্শে এক মুহুর্ত্তের চেয়েও অল্ল সময়ে দেহের প্রত্যেক লোমকুপটিকে পর্যাস্ত হির রাথিয়াই कीवन চणिया यात्र, छारान मिटक ठाकिया দেখিবার মত কেহ সেথানে ছিল না তাই, व्यवश ठिक (महे सक्यहे स्ह्यारह। एहे একটা মুহুর্তেব প্রচণ্ড তির্স্কারের অবথা णब्जाम ভाराय युक्टी (यन काटना • হইয়া পুড়িয়া গেল ভাহাকে মবিয়া যাইবার कश (यन প্राणय-याएव शर्कात्मरे कार्या भाविया त्रामाचार वीरक विएाम छाए। देवा

আসিয়া তাহার কর্ণভূষা-সমেত কানত্ইটা বেশু কঠিন হত্তে মুচড়াইয়া ধবিত,—বেমন কতবারই किशाष्ट्र— চুলের মৃতি চাহিয়া ধবিয়া পিঠে व्यवस्य थावाम किन-पृथि नाभावे --- त्वि, ঠিক এইটা ; ছাড়া আর ষা-কিছু করিত, ভাহাতে উন্মিলাকে এমন কাবয়া মরার বাছাইটতে ইইত না। কতক্ষণ সে সেই **पत्रका**ं। धत्रिया **आफ्ष्टे** व्याकां हे क्रेश माँ फाइसा वश्चि,— (म (य कछछ। ममझ, (म व्यस्चित শাক্তও বোধ কার ঠিক তাহাব ছিল না। ভারপর সেইকাপ থাকিয়া অনেকক্ষণ পবে কতকটা আত্মস্থ হইয়া যথন সে মুথ ভুলিল, তখনও তাহার আততায়ীকে তাহাব সেই নিজস্বানেই ঠিক সেই একই অবস্থায় নিবিড মনোষোগের সভিত পাঠমগ্ন দেখিয়া সহসা ভাষার সেই মৃত্যুবাণাছত অস্তবের উপর যেন আবাব একবাব নুতন কবিয়া ভপ্ত শেলেব াবার লাগিল। এই অকথা লভাব যন্ত্রণা সহা করিতে না পারিয়া এবার সে ধারে ধাবে निः भन भाम ८म घत कहा वाकित हर्या भाग এবং নিজের ঘরের মধ্যে গিয়া একেবারে অন্ধকাবে বিছানার মধ্যে শুইয়া পড়িল।

বিপিনবাবুকে আজ আর কেহ আহার করিতে ডাকে নাই। জগদাত্রী কাজকণ্মের जनातक मातिया माला नहेमा त्यमन वरमन, তেমনি ব্যিয়াছিলেন, উঠিবার কোন তাগিদ নাই। নালার পর নালা ফিরিয়াই **छिला। वागून-त्मरम ब्रामाण्टक ब्रामा गाविमा** ঘুমে ঢুলিতে ঢ়ালতে বিরক্তিতে অন্থি হইতেছে, শেষকালে আর থাকিতে না व्यमान कतिन। এत ८५८म ८न यपि इतिमा अञ्च नमारेमा शृहिनीम উদ্দেশ্খে উঠিয়া আসিয়া হাঁক পাড়িল, "বলি, হাাগা মা, আজ কবছে। অহুথ হয়েছে না ছাই হয়েছে। আমানের বৌরাণী কি বাড়া নেই গু সব সারাদন দক্তিবৃত্তি কবিস, তাই লুমিয়ে থা ওয়া-দা ওয়া হবে কথন ?" পড়োছস। ওহা জানেই তো বলি বাছা যে

গৃহিণীবন্ত মনটা ধেন এই রকম একটা কিলেব সন্দেহের আমেন্দে জাপের সংখ্যা ভূল। করিতেছিল; তিনি তৎক্ষণাৎ 'নামের' নালা যোড়-কব-শুদ্ধ মাথায় ঠেকাইয়া উঠিয়া পাড়লেন এবং আছিকের সজ্জা যথাস্থানে তুলিয়া রাখিতে বাথিতে প্রশ্নের উত্তবে ঈষং চিন্তিতভাবে জবাব দিলেন, "কি জানি মেয়ে, আমিও তো তাই ভাবচি। বলি, পাগলীব বেটা আজি গেল কোথায় গু"

ভন্নাসে যথন জানা গেল ধ্য ভাষালা ভাষ শয়ন-কক্ষে নিদ্রিত, তথন গাহণীব আর ভয় ভাবনাব প্ৰিদীমা রহিল না। ওই पिक्ट (भर्यिन करक पुत्र त्य क ७ ५:८ थ छ च्यानिया फिटल इय, ८म ७ छोडान विलक्षणहे জানা আছে. নিশ্চয়ই বড়-বেশা অস্তুত্ত হহয়াই সে এমন তাদম্যে ঘুমাইয়া পাড়য়া থাকিবে। সূল শরীব ও ব্যস্ত মন লইয়া হাঁপাইতে হাঁপাইতে উপন্নতলায় উঠিয়া "উণ্মিলা" "উদ্যিলা" ইাক পাড়িতে পাড়িতে গিন তাহার घटन व्यामित्वन। छिन्त्रिमा त्याथ कति धुमार्रेग्रा ছিল, ডাকাডাকিতে তাহার ঘুম ভাান্যা গেল; এমনভাবে গা ভাঙ্গিয়া নিদ্রালস-জড়িত কর্পে "উ" বলিয়া একটা উত্তর দিয়াই সে আবার ভালো করিয়া গুইল এবং শাশুড়াব অজল প্রশেব অমুরোধেব শাসনের উত্তরে শুদ্ধমাত্র क्रवाय मिल (रा, जाय यफ् अञ्चल क्रिटिंग्स ; टम आब थाङेरन ना, উঠिবে ना ।

মা গায়ে হাত দিয়া দেখিয়া বলিলেন, "নে বাপু, ভলি রাখু, গা'তো ভোর কন্কন্ কবছে। অন্থ হয়েছে না ছাই হয়েছে।
সারাদন দক্তিবৃত্তি কবিস, তাই বুমিয়ে
পড়োছস্। ওই জন্মেই তো বলি বাছা যে,
বড় ইচ্চিস্, ছপুৰ বেলা আমার কাছে এসে
ছদণ্ড লো' বোস্, তা ত ভোর কুষ্টিতে
লেখেনি।"

উন্মিলা শাশুড়ীর হাতথানা অঞ্চ হইতে বাটকা দিয়া সন্নাইয়া দিল, এবং একটু চুপ হটরা থাকিয়া পরে বলিল, "জর তো আব আমাব হয়নি যে গা হাতড়াচেটা। আমার পেট বাথা কর্চে।"

গু'গ্ণীব বিলম্ব দে থিয়া অসহিষ্ণু হইয়া বামুন-মেয়ে উহাদেব সন্ধানে আসিয়া এই সময়ে घटव চুকিয়াছিল, সে অমনি নাঞ্চার দিয়া উঠিল, "কামড়াবে না পেট ! বলি, পেট ভো च्यात कााचिरभव वााश नम्न, स्य या धूभी ভাতে ভরে দিলেই হলো! বলবো কি ম', তোমায় বলে না পেতায় যাবে, দাদাবাবু व्याप এই जागारमय दक्ते मानी ही मा जाव कत्या (य (क ছिल्मन छ। (पनकानाई क्वारन, এমন-সব অথাতি দেখিনে যা ওঁদের পেটে যায় ना। कान प्रिश ना व्यामड़ा পाछा छ । वा চিঁড়ে ছিঁডে মুন দিয়ে খেতে লেগেছেন। আমি বাবণ করলুম বলে বৌরাণী তো আমার (७:८५ ८र्रः ८व कत्रत्न, मानावाव आवाव वरण कि, कारना ? वरण कि ना, त्थरम (पथरण वामून-दगरम, এ ८थरण आत्र कथरनाः ज्लाट शांत्र मा। जा ७-मव त्थरन जांत्र ८भछ-वाथा—"

छित्रिना हाज-भा हूँ जिया जिट्या महकार्य । है हो हे या जिलि, "मार्गा, वावार्गा, मका है भिर्म करे परमम मर्था है हो एक हुकरना। या छ শীগ্রির, না হলে আমি ছাদে গিয়ে দোর বন্ধ करत खरत्र थाकरवा, छा वरण मिक्टि।

काकाजी जक है मित्रश व्यामिश विगटनन, "ভাহলে একটু জোন্-ছনে था দেখি, না ' কেবল বিনয়ই 'শুধু এ বাড়ীর মধ্যে হয় জো—"

হয় তোঁ থানিকটা উত্থনের ছাই এনে দাও, थां कि — विनया काँ मिया (किनया श्रामक व्यवश्कामा-स्थान चर्च नित्र मानिन, "वनि আমার কিছু ভালো লাগচে না, আমার ছেড়ে দাও, সে কবে না। আমার অভ আদরে দবকার নেই, যাও দেখি ভূমি আমার ঘর থেকে।"-- বলিতে বলিতেই

তথন অপ্রতিভের এক-শেষ হইয়া স-পার্ষদ গৃহকর্ত্রী বধুব ঘর ছাড়িয়া বাহিরে আসিলেন, কন্ত সে রাত্রের অবশিষ্ঠ কাজ-কর্শ্যের মধ্যে আব যেন তিনি নিজের মনটাকে कानमण्डे मानाहर् भावित्मन ना। कर्छ। मक्तार्यमाम् वाश्यि थारेट शान नाहे, डाँहात्र শবীব বিষম বে-এক্তার হইয়া বহিয়াছে— भारमवा इम्र नाई, वाट्डन मनौत्र, वाथाम আড়ষ্ট, তার উপব বধুর অত্নন্থতার সংবাদ, মনটা বেন জাঁহাব কি বক্ম হইয়া গেল। था ७ शांत मर्था (कान वमङे भाई राजन ना,---সাত্রার করিয়া গৃথিণীকে বলিতে লাগিলেন, "হ্যাগা, পাগলী বেটির যদি সভ্যি সভ্যি (वनी व्यञ्च इत्र १ इंग्रांश हातमान छान्त्रावटक না হয় একবার ডাকাওই না।"

গৃহিণীর মনটা এ-বাত্তে শুধু একটু পেট

বাথার করে ডাকাব ডাকার হাসামা षात (পार्डिट मिल ना। किनि विलितन, করেচে বল্চি, ভা একটু রুমুতে দেবে না। "দেখা যাক, চুপ কবে থেকে সুমিয়ে যদি সেরে যায় তো আন অভ নেঠা কেন ?"

সকাপেকা নিশ্চিপ্তভাবে আহাব কাৰ্য্য সমাধা বধু এবার উঠিয়া বসিয়া সরোদনে "না কবিয়া নিজেব স্বতন্ত্র শ্রমাগাবে নিজা দিতে চলিয়া গেল।

বিছানায় পড়িয়া বালিসে মুথ গুঁজিল; ইছাব প্ৰ ছইতে চক্ৰেব গুভি যে কেম্নই मध्मा পবিবর্ত্তিশ হইয়া গেল, সে যেন এক हेन्छान। छिन्त्रिना भारत्व भारत्व भारत्व অপ্রত্যাশিত তৃঃসহ লজ্জাব বেদনায় এমনই মুষড়িগা পডিল এবং নিজের মনেব সংস্থাচে বিনয়েব সা মধাকে এমন কবিয়াই পবিহাব পুনশ্চ ছিগুণ বেগে সে কাঁদিয়া কোলল। কাব্য়া নেড়াঃতে লাগিল যে, এক এক সময়ে তাহাব নিজেব কাছে: এটা व्याक्तरा প্রচেলিকাব মত ঠেকিল। বিশ্বয়ে তাহার চিত্ত প্ৰিপূৰ্ণ হইয়া উঠিল। যা কেহ কথন পারে নাই, কেমন কবিয়া সে এই এত विक श्रुप्तक कार्गा जाभना इहर हा कि विरिक् পারিতেছে; ইহা ভাবিতে গিয়া ভাষার বুকেব মধাটা যেন এক প্রচণ্ড ব্যথায় টলটল कवित् थारक ; क उवावरे विवस्रोहारक अवस्तास ঠোলয়া ফেলিয়া চিত্তকে লঘু করিয়া তু'লতে চেষ্টা कविशाष्ट्र, यदन यदन अभिशा निष्क्रिक छौक বলিয়া গালি দিগছে, নিতান্ত সহজভাবেই ঝড়েব মত চুটিয়া বিনয়েব পাঠাগারে চুকিয়া পড়িয়া ভালোয়-মন্দে কলহে-কাতবভায় এই বিষম আভশপ্ত মৌন-বিদ্রোহেব একটা চৰম নিষ্পত্তি কৰিয়া ফেলিবাৰ জনা যে সে নিজের সমস্ত শরীর-মন-প্রাণকে কিরূপ উদগ্র

আগ্রাহে উন্মুখ করিয়া ধ্বিয়াছে, তাহ। তাহার অন্তার্থামী ব্যগত বাঝ দেনিজেও গ্রহা ভাগ কবিয়া জানিতে পাবে নাই। কিন্তু সেত य मिरिन्य नक्षिण्ड क्रियांच अव म्हर्ड বিনয়ের মুখখানা নিবেট কেছেব গভই কঠিন -হইয়া আছে, অ ৩ গোপন মন্তপণে সেত মুন-थानाव पिटक ट्रांथ श्रीमालङ छाग्रमाव बहेन হাণয় কেনহ যে পদ্মপত্রের সঞ্চিত জল-বিজ্ব म । उनमन कांवर थारक रम कथा । फ्रिक वुवा यात्र ना। व्यामण कथा (य कग्दा मजा-कांद भाग कर्य नांध, तम यिन एकछ। यथार्थ অন্যায় আচবণ কাৰ্য়া বসেতো শ্ৰ শাস্থি यला वाञ्च २३८० (म॰।।य, ७५८१का শতগুণ ভোগ কৰিয়া থাকে সে । নজেব মনে। এই যে অজ্ঞাত তাতনা সে অহবচ ভোগ

व्यावाव । प्रतिक रंग्य १ ज्ञा হাতহালে শিশ্বাস্বাত্কভাব দণ্ডেব বহব करा रुर्श डित्रिशा ज्या (म এक्वार वर्षित নত কঠিন হইয়াই স্থির কবিল যে, এই অমার্জনীয় অপবাধেব জন্ম হতিহাদ-সম্মত ভাবে यथन প্রাণদণ্ড দিবাব উপায় নাই, তথন অস্ততঃ উহাবহ কাছাকাছে পৌছানো व्यायान। खन्नहर्य (इट्याया वरकः वक्ट्रे বিশেষরূপে ঘুণা কবিয়া থাকে, ভাব উপব विनर्धव व्यादात स्मर घुणाव याता এक है অতিবক্ত সীমায় পৌছেয়াছিল। তাব উপব **जातात रथन (म (मंथल मित्नत शत मिन** কাটিলেও দেই অপবাধেনী স্থাপত জাব তাগাব **छ्टे शास्त्र श**िक्षा कमा ठाहित्त जागिल ना,

मिट्न अस्तर अव प्रवानिवास्त्र वाल একরকম পাগল ১হয়ট নিজেব মনেব কাছে শপথ ক ব্যা বাদল যে এ গ্রো আব কথনো खामाराष्ट्र शहाव भग कवा इहरत ना . . १ এই প্রতিজ্ঞাব পর্ব ২হতেই অসম্ভব নলোযোগ-সংকারে সে বিভালাতে যত্ননান হ-য় বহি चाँ छिया विश्व विश्वा वृश्वाभी मकरनय छ क्ल-माष्टेरियप हमक लाशाह्या फिला ।

हेराव शृश्कि जाव क्रश्ता (१) এमन घटि नार, जोड এ व क काखडा चिटि शिक्टन अ এই বালক-দম্পতাব প্রবীণ আভভাবকর্মেব िछि दर्भान मन्त्राध्य द्रियानां किर्व পাবে नाम। डिम्मिना भूथ कुलाम्या शांदक. বেশাৰ ভাগ সে বিচানতেই পডিয়া থাকে, এই वरम (भें वाशां, वर नाम भाषां यस्नाम कविया हिनन, दही वित्तरकद काइना। शान तान तान क्यां कि वान कि तान क्यां विवास काँ। एक विद्या प्रभाष्टे। यन कथा खनाहिया দেয়; খলব-শাশুড়ী ভো বউ লহ্য়া বিপন **३५ या १ फिल्म । (इरम ४ (य आइकान** পাঠা-গুস্তকে অথও মনোযোগ সঞ্চার হুহয়াছে. কোনোবকম বদমায়েসাব মধোহ আজকাল আব তাহার সাভা পাওয়া যায় না; হঠাৎ একদিন এচ তত্তা আবিষ্ণাবেৰ সঙ্গে সপেত যথন ইহাব মূল তথাটা যে তাহার ঘাড়েব অবিশ্বাটীর স্বন্ধ তাগে কবাহয়াছে এ টুকুও खा।। ए वाकि विश्व ना, — उथन धरे এक माज কাবণেত শুধু প্রিয়ভ্যা বগুটাব 'রুলায়া' পড়া-টাকে ঠাঁহাবা কণ্ঞিং স্হনায় কৰিয়া লইতে পাবিলেও মনে মনে ভাহার জন্ম ভাহাদেব আব উদ্বেগেব অস্ত বহিল না। বোগের কণ্ডেই যে সে ভাছার স্বামী-বহুটীকে ভূতের ববং তেজ দেখাইয়া সবিয়া বহিল, তথন মত অমুসরণ করা হইতে মুক্তি দিয়াছে,

क विषय भरमाद्य कि मार वा कि १ रेकां भित्र कि कि कि कि कि कि कि विषय कि विषय कि विषय कि विषय कि विषय कि विषय कि निवाम । नम्बाम तम कवि-वाकारक मार्थक मझन ३ म ३ १० इ ए । " প্রমাণ করিয়া জাহাদেব "যথন ১০তা ঝগ্ডা-ছুটোছুটি পাড়ার লোকে পুলিশ ভাকতো"— গোড়েব হুইয়াছে। আজ সহসা গুচাবা এড কি বড় হংল যে—

শিবপুরে গাথে ইঞ্জিনায়ারী পড়তে চাহ, আমা-(पर कुन ८५८क ठां ब्रब्सन ८ इंटनरिक श्री ठां एक, আমাবও খুব জান। আছে, মেতে দিন।"

াবপিন-শীল ভাবিয়া-দিন্তিয়া প্ৰামশ ক্ৰিয়া স্থলেব তেড-মান্তাবের সঙ্গে দেখা ক্রিয়া অনুমতি দিয়া ফেলিলেন।

अशकाओं कार्मा-कारमा श्रमान वान्यान, "र्गाना, ८६८ नितारक यानान जान काछ-छाछा একটুও।"

वरहेंहे, तम ७ वरहेंहें ; किन्छ कि कारना, एइ लिए। পড়াশোনায় তো তেমন নয়, অথচ এদিকে বেশ একট্ৰ শক্তি আছে, দেখলে না, সেদিন **চট্ট কবে সেই ভাঙ্গা ঘাড়টাকেই কেমন কাজ-**চলা-গোছ মেবামত কবে ফেলে। আৰু ওব যখন একটা স্বাভাবিক শক্তিই বয়েছে, আব ও নিষয়ে আবাব এমন একটা স্থযোগও উপাস্থ ন, তখন আব বাধা দেওয়াটা উচিত হয় না। (मथ, (शांविना कि आत वादत-वादतके आमा-

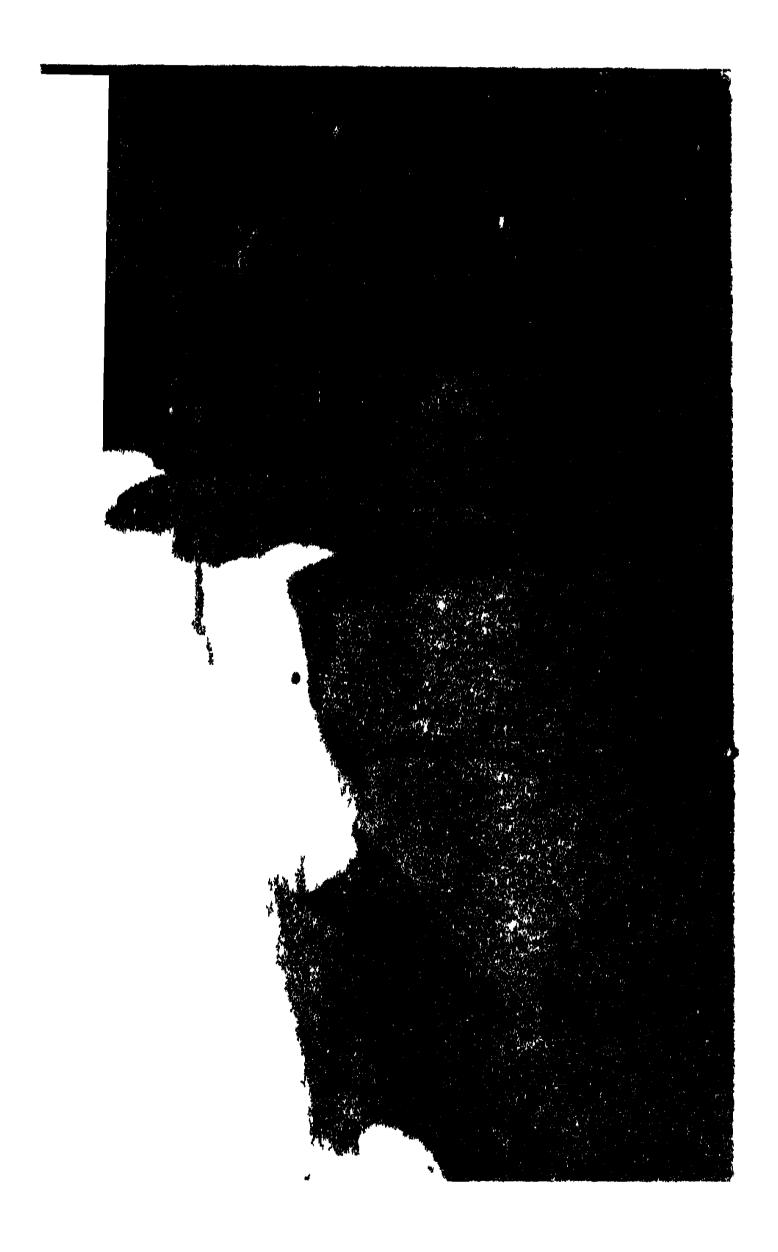
তথাপি মায়েব মন প্রবেধি মানিল না। बाँछि, कटला भाग्रन माठानाठि, — गां क । । । या या ८७८ वर्ग । एक का भिन्ना निमा भा ५८ ला ; ्रांमालन, "जांबि कांद्र निष्म भाकरना (व १ তোৰ মুখ , দখেই য়ে শুধু পাষাণে প্ৰাণ নেধে अरबारु।"

दिनम आभिया विनन, "वावा, आणि , किला भागम्य अनाव मिन. "(कन, ভোনাব ে। আব একজন বয়েছে। আনায যেতেঃ ২বে।"

শুনিয়া উাম্মলা চিলেব ছাদেব পালে গা ছডাइया निमा थानिक काँमिन, जानश्र भित्न वादन अभिक-तमिष्टिक छम्थुम काव।। ফিবতে লাগিল যে, যদি এই বিদেশ-যাণা प्लिनारक्त ग्रादात्व मसाकाव क्षा भ्राकाव শ্বতি ভগার্থ নাধ্য বেল প্রায়িত্র বিবাচ করতে চাহচো। তোমাব কি ভয় নেই প্রাণে মৌন শুন শুন্মম প্রোচারটা কোন মতে ভালিয়া পডে। যদি তেমন ঘটিতে ।। ।। বিপিন্তা মাপার টাকে হাত বুলাহতে ক্ষেত্র উল্মেলাব কাছে এই দার্ঘ লাব বুলাইতে সন্দিগ্ধভাবে বলিতে লাগিলেন,"মে ৩ ছাঙাছাড়িব নিদারুণ ভীতিও আনন্দ সংগদের মভই নধুব হস্য়া ওঠে।

কিন্তু তাতা ঘটিল না। উন্মিলার কর্ম नष्ड्राय द्यमनाटक श्राहण श्री नामना जुल का या তাগার বিশাসবাতকতাকে সব্বোচ্চ শ্রেণার ঐ। ७२१। मक ७१४। दाव कार्याव मध्य पूर्वा माष्ट्रीत्रबाक्ष मक्वाङ दल्टान एव क्रिक इव कवित्रा क्रान्या विनयक्रमाव खीत्र निकटि निष्टेव निःभक विमात्र গ্রহণ করিয়া শিবপুৰ যাত্রা করিল

> ক্রমশঃ শ্রীষ্ণরূরপা দেবী



ナイクトーだれ



333

88শ বধ]

रिहल, ১৩२१

[১২শ সংগ্যা

গ্ৰবতার

50

কোন্ট-দেহ অক্টেভ থানসামার পিছনে िছনে नोटि नामिश्रा **आ**णिण। अस्तिल वाशनांदक वाष्ट्रोत माणिक मत्न कतित्वक, वाफ़ीव मरधा 'थावाद चत्रते (काशाय, टम लानि । शावात मत्रो श्व वष्- এक-তালায় অবস্থিত। সেখান হইতে প্রাঙ্গণ দেখা याहर७एक्। तमग्रात्म ज्ञुन्त्र चत्र-काछा-काछा कारकेत्र कांक । (मध्रात्मत्र भारत्र स्र भूत भर्गाप्र অনুসারে প্রভ্যেক ঋতু-স্থাভ শিকাব-লব হত ভাব জন্তর দেহাবশেষের নিদশনসকল রাক্ষত इडेश्राट्छ। ट्डाक्स-मानात्र छ्र शास्त्र वड वफ् कार्षमक, ভाहात छेशत नाविनश्वि-वश्यात পুরাতন রূপার বাসন-কোসন সাজান বহিয়াছে। (मग्रात्मत्र प्र धारत मात्र मात्र मत्स मत्स मत्स (णानार-काक-कड़ा भाग्रा-विभिष्ठे गावाय-(हेरिन। माथांत्र डेशर्प्स धकें। त्रहर विट्यायापि बाफ् ब्रिगट ३ एक ।

টেবিলের উপর, কুলায় পরিবেশনের
ধরণ-অক্তমারে একটা নাল রজ্জু বেরের
মধ্যে নানাবিধ ফল পূর্বে ১ইতেই তাপিত
এবং মাংসাদি সমস্ত রারা ঢাক্নি ঢাকা
বাসনের মধ্যে রাক্ষত ১হয়ছে। পালিসকরা ধাতব ঢাকাগুলা ঝিকুমিক্ কবিতেছে।
টেবিলের মুখামুখা ছই আরাম-কেদারা,—
ভাঠাব পিছনে তুইজন খানসামা নিশ্চল ও
নিস্তব্যানে দুখার্যান—ঠিক্ যেন সাক্ষাৎ
গাইস্কোর ছই পাষাণ-মৃত্তি।

অক্টেভ বরের সমস্ত খুঁটিনাটি এক নজরে
দেখিয়া লইল; পাছে এই-সব অপরিচিত
নুতন সামগ্রী দেখিয়া তাহাব মুখে কথন
আনিচ্ছা-ক্রেমন্ত বিশ্বরের ভাব প্রকাশ পায়।
এমন-সময় পাণরের মেথেব উপব হহতে
একটা সব সর্ শর্ন,—রেশমি-কাপ্ডের
একটা খদ্খদ শক্ষ উঠিল। অক্টেভ পিছন
ক্রিয়া দোখলেন,—কৌন্টেদ্ আসিভেডেন।
ভাইেভ বাসলে পর, বছুভাবে অভিবাদনশ্বরূপ

ছোট-খাটো ইঞ্চিত করিয়া, তিনিও বসিলেন। মন-গোলাখুলি মধুব ঘনিষ্ঠতার সময়, ছিলেন। কপালের তুই পালে রানাক্ত কেশ-গুচ্চ একটা বন্ধনে আবদ্ধ হইয়া অবি-জড়ান বেণীৰ আকাৰে গ্ৰীৰাদেশে লুটাইয়া পডিয়াছে। কাঁখার মৃথের স্বাভাাবক গোলাপী রং, গভ পাারিস নগাবাসা অক্টেভ, লাটন ভাষা রাত্রির মনের আবেগে ও নিদ্রার ব্যাঘাতে একটু कँगकारण कडेग्रा शिश्राष्ट्र, छाँकाः ষে চোথ সচরাচর কেমন শাস্ত ও নিশ্ম÷— পডিয়াচে। তাঁহার মুখে একটা প্রান্ত ক্লাত অবসর চুলু ভাব লক্ষিত হহতেচে। এইরূপ বরিতে পারিত না। ফ্রোরেন্স নগবে म्रान प्राकात धावन कतान कांत्र (भोन्तधाष्ट्रि। (कार्न्डिम व्यरक्ष्टिव मञ्ज ववावत्र कवामा (यन बार ॰ मन्त्रांकिन । काशांक किश्वा इतिभी अच्यांकि क्या किश्वा । यर्गिय भन्नो भाषा छंडाइम्रा छेछ्छ। त विद्र १ इंश्वाट्या ।

অক্টেভ এইবাৰ একটু সাৰ্ধান হহয়াছে, সে শহাব চোবের আগুনকে ঢাকিয়া ए बर-। त फेक्ट्रांगरक श्रद्धन त्रांच्या এक। ওঁদাসান্তের ভাব ধারণ কবিল। জ্বেবে ঈষৎ আকাবে অম্বাদ করিতে প্রবৃত্ত চইল এবং কম্পানেব প্রায় স্বন্ধদেশ একটু নাড়াইয়া কোন্টেশ ভাঁছার স্বামীর উপর স্থিবদৃষ্টি নিবদ্ধ করিলেন। এখন তিনি অক্টেড্কে আপন স্বামী বলিয়াই মানিয়া লইয়াছেন। (कन ना शांख (य-मव ७४-७।वना, शृक्यर्टना, বিভাষিকা তাঁহার মনে জাগিয়া উঠিয়াছিল, भिवादमादक (म-मव कञ्चिक व्यक्षादिः। दको व्यक्त 'আছরে-পনা' করিয়া পোলাও দেশের ভাষায় উহা শাস্ত্রত অন্তহিত হইল। অক্টেভকে কি-একটা কথা বলিলেন।।।

বিশেষ ঠঃ ফবাসা ভূতাদের সলিধানে কৌণ্টেশ অনেক সমন কোণ্টেব মাতৃভাষায় কৌণ্টেব সহিত কথা কানতেন। ফরাসী ভূতিরা পোলোনী ভাষা জানিত না।

স্পেনায় ভাষ। ও ইংবেজীভাষার কতকগুলি দ্দ জানিত; বিভ শ্লাভ্ৰাভির ভাষা মোটেই জানিত না। পোলোনী ভাষায় সেহ চোথেব চারিদিকে ঈষৎ কালিম রেখা করবর্ণের বিরল্ভা ও বাজনবর্ণের প্রাচুষ্য शाकाम राक्षा किपाल नांशा मध्या है

এখন যেন সামান্ত রমণী হচয়া পডিয়াছেন , কোন্টদেহ অক্টেনের মান্তদের ভিতবে গিয়া क रुष्ठ काछ कादश वामन :---भगोदम्-শসা ফরাসাব অপরিচি । ও অঞ্তপুর ধ্বানসমূহ "শ্লাভ" ভাতীয় কাণেৰ মন্য দিয়া মস্তিক্ষেণ এমন পায়গায় পোছিল, যেগানে ওলাফের আত্মা উহা গ্রহণ করিয়া চিন্তার একপ্রকার ভোতিক ধরণের স্মৃতি জাগাহয়া कुलिस, के मकल ध्वनित्र कार्य গোলমেলে-ভাবে অক্তেব মাথায় আসিল; শক্তলা মন্তিক্ষের পাকচক্রের ভিতর দিয়া স্মাতর গুপ্ত मिवाद्यत मधा ज्यामिया खन खन कतिर्ड लागिल—(यन উত্তর **पि**याय **ज**ञ প্রস্ত ; কিন্ধ সাক্ষাৎ আত্মার সাহত ঐ সকল কোমল মধুর স্বারে সভী স্তার সমৃচিত একটু অম্পষ্ট পূর্বস্মৃতিব যোগাযোগ না হওয়ায়

আবার সমস্ত অসমত হইয়া পড়িল।

প্রেমিক বেচীরা ভয়ানক মৃদ্ধিলে পডিল। — শক্ত। ইা,বিদেশীর কাছে শক্ত ঠেক্তে ्राफे एलाफ-लाविन् ऋत्र मदात शहन कर्विवाव সমর অক্টেভ এহ-সব গোলঘোগের কণ শাবে নাহ। এখন বুঝিতে পারিল, আন্তর শরার ধারণ করায় অনেক বিশীপ আছে। তার পদে এই ভাষা শক্তা নয়।

॰ ६८मन। ভাবিশেন, আর কোন १५ छ। । এক মুহর্ত আমে যখন আলার মনে হয় ঐ মন নিকিপ্ত হওয়ায় হয় ত অক্টেভ জাঁর কণা , ভাষা আনি কিছুই জানি না। খানতে পাত্ন নাচ, এই মনে কবিয়া कार्लिम (मह वाकाछ। व्यासात भूव भौदत वादत व छिटेक्टः खदत वालदनन।

ने मक्छमार ध्वनि खनिए शाः रम ३, भाकिन धनरना एश्रांत्र कार्य अन्युक्षम कविर ७ ।।। तम ना। ष्रिभात कर्षण धनिनाव क्रम भाग," मिहे खाद्या कृत्य क्रम वात्र, व कि व । ब्लिट्न (5) के किट्र आर्शिन, किस शांत्रन -। কোন ফরাসা, -টালীণ ভ্যাণ কথা কৌণ্টদেই অক্টেভ আর কোন সঙ্গ -- रवि धन्द्वत द्वांनीय इायांत्र अवद्य भ्रम डाकवादिन विधित्र।— अनिष्ठामा । শাল লাল হুহয়া উঠিল, নিজেব ক্ষ্ দংশন "ওলাফ,আফি দেখ্ছ প্যাবিস্ ভোমাবে ব্রিতে লাগিল, এবং মুখরকার জ্ঞ ভাড়াতাড়ি ছুরি দিয়া প্রচণ্ডভাবে প্লেটের মাংসথগু কাটিতে আরম্ভ করিল।

কেণ্ডেশ বলিলেন—(এইবার করানী ভাষায়) :--

"প্রো। তুমি দেখ্ছি আমার কথা एउन्ह ना, किश्वा किছूर त्याह भात्ह ना, र'न कि ट्रांभाव १ .. "

को छ । अध्य अध्य कि विषय हिन् करिएक ना शाहिया व्याम्का-व्यामका करिया বলিল:-এই লক্ষ্মীছাতা ভাষাটা এমন শক্ত !

भारत, किन्न की कांचा चारक भारत्रत्र दकारण ष्यानम भिरम्रद्र, প्रान वासूत्र मण श्रवादक्व भडगात मूथ निया जासमा निःग्रंड हरस्रह,

কৌণ্টেশ অক্টেভেব নারবভায় বিশ্বিভ —ইা, সে কথা সতাি, কিন্তু এমন এক

—-ভূমি কি বল্চ ওলাফ গ কি। ভোমার পিতৃ-পিতাশতের শাষা, তোমার পবিত্র জন্ম-ভামর ভাষা, যে ভাষায় তোমরা অজাতীয় ভাহদের দিন্তে পার, যে ভাষায় সর্বপ্রথমে শ্ৰমাকে বলোছলে—"আমি ভোমায় ভাল সম্ভব 📍

ভাষা ব্যবহাবে অভ্যস্ত হণ্মায়" ••

"এবার তে भना त चर्च को ट्रिन विन्तिन-निश्ए मिश्राफ , भिर्म का छारे ७ थन भाषित व्याम् एक व्यामात्र हेटक छिन ना। जन्म दक कान ७ । य स्थामिक को को ना वन्कि यथन डांश्रा खवाटका किंद्र यादवन, ७थन टार्न প্রধানের আভনন্দনে তিনি নজ ভাষায় উত্তর দিতে পারবেন না ?"

(कोट्निय अनात मूथथान अकर् विवस ভাব ধারণ করিল। দেবাপ্রতিম নিশ্মল नगरिं এह मर्यश्यम धकें। इः स्थित हात्रा পডিল। এই অমুত বিশ্বতি, তাঁহার আত্মার মশ্মস্থল স্পার্ল করিল; ইহাকে তিনি এক-প্রকার বিশাস্থাভকতা বলিয়া মনে করিলেন।

আহারের অবশিষ্ট সময়টা নিশুক্তাবে चिं विशेष इंदेन ; कोल्डिन, शांक कोल्डे মনে করিয়াছিলেন সেই অক্টেভের উপর অভিমান করিলেন। অক্টেভের মনে এখন একটা বিষম যন্ত্রণা হইতেছিল; তার ভয় হইতেছিল, পাছে ভার উত্তর দিতে না भारत ।

, কৌন্টেশ গাত্রোখান করিয়া আপন মহলে **हिंग्यो (श्रामन**।

वैष्ठि महेब्रा क्लीफ़्किल नाफ़्किक के विटिश् हिन हिनि एश्विम । এমন সমন্ন একজন সহিস্ এক-একবার ইচ্ছা হইতেছিল, ঐ ছুরি আসিয়া মাথা নোয়াইয়া গভীর ভক্তি সহকাবে নিজের বৃকে বসাইয়া দেয়;—তার অবস্থাটা এতই অসহা হহয়া উঠিয়াছিল। সে মনে "আজ কোন্ খোডাটা হুজুরকৈ এনে কারয়াছিল, হঠাৎ এক নৃতন জীবন-ক্ষেত্রে সে দেখাব ?" প্রভু উত্তর করিতেছেন না প্রবেশ করিবে; কিন্তু এথন দেখিল, এই দেখিয়া,—পাচে গুষ্টতা প্রকাশ পায়, ভয়ে-অজ্ঞাত জীবনের অন্ধিসন্ধি তার জানা নাই; কেণ্টি ওলাফের শরীর ধারণ করিতে গেলে, আধার বলিল—"ভুল্টুর"কে আন্ব না পূर्ववर्डी সমস্ত শারণা ও সংস্কার, নিজের ভাষা, "রোন্তমকে" আন্ব ? আট দিন ওদের লৈশবের সমস্ত শুক্তি, মানুষের 'আমি' সোরারি হর নি।" किनिमिछ। यमकण क्मार्था शुरिनारि निम्ना গঠিত, নিজের অন্তিত্ব বাহা অন্তাক্ত অন্তিত্বের সহিত বিশেষ সমন্ধ ক্তে আবদ্ধ-এই সমন্ত विमर्कान करा व्यावश्राक ; अवः এই সমস্ভের জন্ত ভাক্তার বালথাজার-শেরবোনোর বুজ্রুরি বোয়া-দে-বুলং-এ বৈড়াইজে গেলেন। ৰথেষ্ট নহে। এ কি বিড়ম্বনা। এই স্বর্গের ভিতর প্রবেশ করিলাম, অপচ উহার ছারদেশ দূর হইতেও দেখা আমার পক্ষে একপ্রকার ধৃষ্টতা! কৌন্টেসের সহিত এক গৃহে বাস করিব, তাঁহাকে দেখিব, তাঁহার সহিত কথা কহিব, অথচ তাঁর সতাবের লজা ভাঙ্গিতে তুই ঘণ্টা প্রচণ্ড বেগে ছুটাছুটি করিয়া, অশ ও পারিব না, এবং প্রতি মৃহুর্তে এক-একটা অখারোহী প্রাসাদে

মৃচতার কাজ করিয়া নিজমুর্ত্তি প্রকাশ করিয়া (क्रियां) (कोर्लिंग आमारक कथनई छान-বাসিবে না – ইহা আমার অখণ্ডনীয় অদৃষ্টের লিপি! তথাপি মানব-গৰ্ককে ধৃলায় লুঞ্জি করিয়া 'আমি' বার-পর-নাই ভ্যাগ-স্বাকার ক্রিয়াছি। ,আমি নিজের 'আমি'কে বিসর্জন দিয়া, অপয়ের শবীর ধারণ কবিয়া ,প্রত্যের প্রাপ্য আদর-যত্ন দাবী করিতে সমত करेग्राहि।"

অক্টেড এখন একুলা,—একটা ছুরির অক্টেভের মনে-মনে এইরূপ স্বগতোভি জিজ্ঞাসা কবিশ :---

ভয়ে— অভি মৃত্তরে গুজ্তজ করিয়া সহিশ্

এইবার অক্টেভ উত্তর করিলেন-"রোগুমকে"।

অক্টেড, স্বায়ুর উত্তেজনা মুক্ত-বায়ু সেবনে প্রশমিত করিবার জম্ম খোড়ায় চড়িয়া

রোন্তম উচ্চকুলোন্তব প্রকাশু ঝাকালো ঘোডা; ভাকে কাঁটার আগতে উত্তেজিত করিবার কোন আবশুকভা ছিল না। সে সোরারের মনোভাব বৃঝিতে পারিয়া বাড়ী इटें वाहित इहेबावायाव जीद्वत मक कृष्टिंग। कित्रियां कामिन।

বেড়াইয়া আসিয়া অক্টেভের মন্তিষ্ক একটু চেয়েছিলে। কিন্তু ও-বিষয়ে আমার কোন ঠাতা इदेल। (बाङ्गंब नागारीम बिक्य को एक का आमि तम হটয়াছে ও গাঁত্র হইতে বাষ্পধ্ম উথিত জানি, তুমি আমাধে ভালবাস। এট इडेएडएइ।

उथा-कथिक दकोन्हें, देकीरन्हें भव शुरू श्राटनमा कत्रिश्रा (क्शिन, क्रिन, क्रिय, टेन्डेक-थानाध चाट्टम। একটা সাদা রেশমের পরিচ্ছদ পবিধান করিয়াছেন। আজ কিনা বুহস্পতি-বার: ভাই ভাজ অভ্যাগত লোকদিগকে व्य शर्थना कांत्रवाव कन्न श्रहर व्याह्मन।

একট মধুর হাাস হাগিয়া—(অমন স্থার ওষ্ঠাবরে অভিমানের ভাগ বেশীক্ষণ षाकित्व भारत ना) दकोन्छे (मह अरक्केड यानदगम ;---

"বোরার উপন্র-পথে ছুটাছুটি ক'রে ভোষার স্থাশ কি আবার ফিরে পেলে ?"

অক্টেড উত্তৰ কৰিন—

- -- "नाः, नारवनिकः, এक छ। "शामनोग्र कथा তোমার কাছে প্রকাশ করা হয়েছিল,—ঐ ভাক্তাকের হাতের মধ্যে কি আবশ্রক ।"
- "আমি তোমায় গোপনীয় মনের কথা शृक्ष २८७३ कि अव कानित्न ? कामारण्य মধ্যে এখনো কি কিছু ঢাকাটাকি व्याटि ?"
- —"(य ডाक्टारत्रत्र कथा ल्यारकत्र मूर्य এত লোনা यात्र, काल व्यामि त्महे डाव्हारत्रत वाका शिरबह्निणाम।"
- হা, সেই ডাক্তার বাল্থাজার (निवरवारमा एव कारनकामिन कात्र जवर्र किन। সে নাকি ব্রাহ্মণদের কাছ থেকে খুব আশ্চর্যা চৌষক শক্তির দোহাই দিয়া তাহার এই-গুপুবিতা শিথে এসেছে। তুমি তাকে একদিন আমার কাছে নিয়ে আদ্ভেও আপনাকে উদায় করিবে। কিন্তু এই

বিজ্ঞ। नके कामात्र भटक यटण है।"

— "ভिनि'आगाद माम्टन् ।य मव व्याभाव भवीका প্রয়োগ করে' দেখিয়েছিলেন, আশ্ভর্ষ্য কাও কবেছিলেন, ভাতে আমার ধন এখনো विक्रिक राप्त कार्छ। एक बाहु 5 फ्रांकाव কি-একটা অনিবার্য্য শক্তি প্রয়োগ করে এমন-এক গভার চৌধক-নিদ্রায় আমাকে নিনজ্জিত কর্লেন যে, যথন আমি জেগে ভঠলাম, তথন দেখি আমার সমস্ত মনো-বুতি লোপ পেয়েছে। অনেক জিনিসের স্থতি আমার - ই হয়েছে। আমাৰ অভীতটা (यम এकটा (जामरगरन (कांग्रामात्र ভिতর ভাস্চে। কেবল, ভোমাব উপর আমার বে ভালবাদা— দেহটিদ অকুপ্ল রয়েছে।"

—"ওলাফা তোমার ভারী ভুল থেতে আছে ? ঈশ্বর যিনি আত্মাকে স্ষ্টি कदत्रहरून, आज्ञादक न्यान कत्रवात अधिकात একমাত্র তাঁরি আছে। মামুবের এইরকম চেপ্তা করা মহাপাপ; আশা করি, ভূমি আব कथन७ (नथारन यार्व ना। कांत्र, यथन আমি পোলীয় ভাষায় কোন ভালবাসার কথা বল্ব, তথন আশা করি তুমি আবার পুর্বে-কার মত তা ব্রতে পারবে।"

্অক্টেভ যখন ঘোড়ায় চডিয়া বেড়াইভেছিল ख्यनह तम क्रे मदलव खाँ विश्वा**ष्ट्रिण** त्य, खाउनादत्रत्र সমস্ত ভ্ৰম-প্ৰমাদ-জনিভ বিপদ হইতে সে

थार्ने विशामत (भव ३ हेन ना।-- এक जन ভূত্য, দ্বাব উদ্যাটন করিয়া খনর দিল।

"সাভিলের সম্রান্ত গৃহস্থ অক্টেভ।"

কোন-না-কোন দিন এইরূপ স কাংকার विष्य मान मान कानिए ७, छ नानानिस শব্দগুলি শুনিবামাত্র প্রাক্তত অক্টেভেব মুখ পাঞুবর্ণ জন্মা গোল; মনে জন্তল ভাষার कार्णत, कारह, कठांद यन "अखिम-विहादत्रव" তুরী-নিনাদ হইল। সাহসের উপব খুব ভর कतिया, मत्न मत्न लाविन, এथरना ध्वमन অবস্থা দাঁড়ায় নাই যাহাতে আপনাকে একেবারে নিরুপায় বালয়া মনে হইতে পারে। অত্তবিভভাবে অক্টেভ একটা কৌচর পৃষ্ঠ-**(म**म भतिया किंगिन, এवर जोशांत छेपत खत দিয়া দাঁডাইয়া বাহাতঃ মুখে একটা শাস্ত ও দুচতার ভাব রক্ষা করিতে সমর্থ হচ। 'কৌণ্টেশ উত্তর করিলেন:—

षाक्रेंड-(महश्राज्ञी श्राप्त : किलेंडे श्राप्त -- "उपान-५िख १ ३'८७ मार्च। ना, ना, পুব নত হইয়া অ,ভবাদুন করিল।

व्यक्तिज्ञान कोन्छे, ७ कोन्छे एक व्यक्तिज हेकॅटलंद भद्रभारवंद मर्सा भविष्य कविया मित्रा, कोरण्डेन यांगरमन ;---

"र्होन नाविन्धित दकोन्छे—हिन माভित्नत অক্টেভ—।"

অভিবাদন করিয়া লৌকিক ভদ্রতাব মুখসের ভিতর হইতে পরস্পরের প্রতি একটা চোবা কটাক্ষ হানিল

চিন্ন-পরিচিত বন্ধুর ভাবে কৌণ্টেশ বলিলেন:--

"(मथ चार्छेड, व्यामि यथन क्रुट्यरण हिनाम তথন হতেই আমার সঙ্গে তোমার বন্ধুও।

्रामात (मर्रे चकुछित्र वसन এथना भराउ একটুও শিক্ষি হয় ন। ভূমি আমাব সেই বাগান-বাড়াতে তখন নিভা ্যাভায়াত কবতে। আমার ভূমি আপনাকে আমার वक्तरर्शन धककंग व'रमं मरन कन्नर्छ।"

व्यनोक व्यक्ति । अक्रु (वोन्टे अक्रु वाद्धा-वाद्धा श्रदन्न উछत्र कत्रितनः-

- "(मथून, कोर्न्डन, जामि जरनक लमन करब्रिक, व्यानक कष्टे मश् करब्रिक, ध्यमन কি পীড়িতও হয়েছিলাম—সাপনার সদয় निमञ्जन-পতा পেয়ে মনে করণাম, এই স্থযোগ ছাড়ব কি না। কিছ আমার একটু আশক্ষাও হ'ল, পাচে স্বার্থপর বলে আমার মত উদাস-চিত্ত ব্যক্তি আপনার নিকট াগ্যে আপনাব অমুগ্রহের অপব্যবহার করে।"

কৌণ্টেশেব দিকে অগ্রসর হটয়া তাঁহাকে উদাস-চিও নয়। তুমি ক্থন বিষায় রোগগ্রাস্ত ছিলে। কিন্তু তোমাদেব একজন কবি এই कथा वलान निक ?:-

> "बालस्थात भरत देशहै भर-८৮ स मात्राधाक व्याधि।"

चारकें अध्यादी को के विवास :--"অন্তোর ত্রংথকষ্টে পাছে মমতা করতে **এই प्रहे नाक्ति भवग्भवरक ठांखा ভাবে इय এই-जग्रहे जुली लाक्या এই खब**न त्रिट्यट्ह ।"

> *कोर्न्डेल* व्यन्धिक्य जात्र मरन य প্রেমের উদ্রেক করিয়াছিলেন ভক্তর যেন ক্ষমা চাহিতেছেন—এইভাবে चार्केड (महधारी) (कोल्डिन डेभन এकि विजीव মধুর দৃষ্টি নিকেপ করিলেন ভারপর বলিলেন:-

মমতা-শৃত্ত লঘুছিত্ত নই। প্রেক্ত তঃখ मिश्राण व्याभाद प्रशा इत्र. व्याद रम इःथकरहेत লাধ্ব না বর্তে পার্ণেও অস্ত ভার জন্ম সমবেদনা - দেখাতে পারি। দেখ অক্টেড, থাম সংখ্য হও এই হচ্চা আমি করতে পারভাম, কিন্ত কেন বল দেখি, ভূমি নিজের াব্ধপ্রতার মধ্যে আবিদ হয়ে এক গুমের মত कौरान त मगर इस, कौरान त मगर गार्था, कांवरन्त्र ममञ्ज क खेवा विमञ्जन भिर्दा ए भागात বণুত্র বা কেন তুমি প্রত্যাগ্যান করলে ৭"

এফ সাদাসিধা সরজভাবের কণাভাল

— आष्ट । पुरिवान, — वाजान वाफ़ाट । कोट्डिन विनिधान :--(को एएन १) व छेल व एवं भेख छ। कारी "बार्छ । विश्वा भागन रूप ।" ক্রিয়া'ছলেন, হহা তাহাবই দট সম্থ্ন প্রকৃত অক্টেড ডভার ক্রিল:— भावा। (कन्ना, धो स्रम्भन्न क्षेत्रिक । १ स्थानाम क्षेत्र । १ स्थान ক অল ও কলু । ইয় লাছ।

এ निर्क कोन्छ अनाक, ने कथा छान व मर्भा কেটেশের অপরিবন্ধনায় সভাত্তের আর-একটা

"কুমি যে-রকম মনে কর জামি ভভটা প্রমাণ পাইলেন। ভাবিলেন, কোন সয়তানি हळांख वा शैल, मि न शैर इन कथन है भलन इंडेंट अरिय ना। अह कथा मान इंडोमाक িচান ক্রোধে চরাত্ত হইলেন। আর এক আত্মাব দ্বানা আধক্ত নিজের মৃত্তিকে দোলগা এনং দেহ অলাক ব্যক্তি নিজের বাড়াভে অধিষ্ঠিত कन्यारक (भावता, किलि ए विद्या निया के द्वानाक कोरन्छेत्र हेि ठालिया धात्ररनान।

> "শ্রুর,ডাকাত, পাজ,—ক্রেনে আমার भद्री द्र।"

এই আশ্চয়া কাণ্ড দেখিয়া কোন্টেশ चन्छ। वाकारमा मिरणनः कडकखन ज्ञा ওচ শোভা বিভিন্নভাবে গহল কাবল। ছুটিয়া আসিয়া কৌণ্টকে ধরিয়া লহয়া গেল।

বীপলাৰণ্য নিশ্চয়ত অসাধান্তৰ !"

্রুমশঃ)

শ্রীজ্যোতিরি নাপ ঠাকুর।

ভাষার উৎপত্তিত্ত্ব

(প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য মত)

হহতে মহুষোর বিশেষয় দেখিতে পাইগা এবং ভাষাত্ত উদ্ঘটিত হওয়ার সঙ্গে সঞ্চেহ इहारक मञ्जा ७ जानन कोरवन माथा य मञ्चायत चामिन्रश्च छेम्यापि इहरव কারয়াছেন। স্তরাং ভাষাতত্তের মধ্যেই মুণীভূত এই ভাষা কিরপে বেকাশ লাভ যে মহুষাত্বের প্রাকৃত রহস্তা নিহিত করিয়াছে ভাহার তথ জানিবার জন্ম মহুষা

আচার্য্য মোক্ষম্লর ভাষাতেই অপর জীব বহিয়াছে—ভাষা আমরা ধ্বিতে পারিভেছি অমুল্লজ্যনীয় ব্যবধান বলিয়া নির্দেশ তাহাও আম্বা ব্যুক্তে পারিতেছি। ই প্রয়ত্তের

भारत दहे भन विष्मव को कुहन इश्वरा मन्मूर्ग हे नमज्ञ कार नामास्वर भाव। शिष्ठेश प्रांत्र স্বাভাবিক। আমরা এই স্বাভাবিক বাইবেলের স্মষ্টি-প্রকরণে ক্রমার কর্তৃক স্মষ্ট কোতৃহলেরই বশবতী কইয়া তৎপরিতৃপ্রির জন্ত এথানে এছৎ সম্বন্ধে প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য মতের আলোচনায় প্রবৃত্ত হইতেছি।

মোক্ষ্যুলর এইরূপে বিশ্বভাবে প্রকাশ করিয়াছেন "উটচেঃস্বরের চিস্তার নামই ভাষা এবং অহুচ্চস্বরের ভাষার নামই চিন্তা।" ("Speaking is thinking high and thinking is speaking low.")

ভাষার প্রকৃত উদ্বোধক। এইজগুই চিন্তার বিকাশের অন্তণাতেই ভাষার বিকাশ দেখিকে পাই। অসভ্য জাতিদিগের মধ্যে চিস্তার विकाम स्वयन क्य जाशामिरशत यसा मक-সংখ্যাও ভেমনই কম; সভাজাতিদিগের মধ্যে চিন্তার বিকাশ অধিক বলিয়া তাঁহাদের मस्या मकमःभात्रेष व्याधिका। ठिखा स्य মহুষ্যের একটা বিশিষ্ট লক্ষণ, সংস্কৃত মহু, मञ्चा, এবং ইংরেজী man প্রভৃতি নামেই ভাহার প্রকৃষ্ট প্রমাণ পাওয়া যায়। চিস্তা बाद्रा (यमन मञ्या, मञ् वा man क्हेब्राट्ड চিন্তা দারাই তেমন' মহুষ্যের ভাষা "বাচ্" বা voice eerice !

চিন্তা প্রথম ভাষাতেই আকার প্রাপ্ত रुत्र, ভাষাভেই চিনান এ**দা "শব্দ**র্কা" হইয়াই সৃষ্টি আরম্ভ হয়। পাশ্চাত্য Logose

বস্তুসকলের নামকরণেব যে বর্ণনা আমরা প্রাপ্ত হই, ভাহা হইতে ভাষা যে স্থির পূৰ্ববৰ্তী এবং ইছা যে ঐশ্ববিক নিয়মে গঠিত ভাষা-নিরপেক্ষ চিন্তা সম্ভবপর নয়, ইহা তাহাই আমরা ব্রিষতে পারি। মত্ম-যুক্তি-শান্তের প্রথম স্বতঃসিদ্ধ। ভাষা ও সংচিতাতেও আমরা স্টের প্রারত্তে বেদ চিন্তার এই সাপেক্ষ-ভাবটীকে আচার্যা হইতে বস্তসকলের নামকরণ হয় বলিয়া **উল্লেখ পাই यथा** ;—

> "मर्दिषाञ्च म नामानि कर्याणि ह भृथक् भृथक् । (वनमदम्बा धवारमो श्वक् मःश्वामा निगारम॥२>॥" মনুসংহিতা ১ম অধ্যায়।

'পরমেশ্বর স্ঠিন্তির প্রথমে বেদশব্দ সকল ভাষা ও চিন্তাব মধ্যে এই সম্বন্ধ হইতে হইভেই বস্তুসকলের নাম, কার্যা ও পৃথক্ আমরা ভাষা সম্বন্ধে এই মূল সভাটী লাভ শ্রেণী বিভাগ করিলেন। বেদহারা স্বাভাবিক করিতে সমর্থ হইতেছি যে, টেস্তার বিকাশ: শক্রাাশ বা ভাষাই আমরা বুঝি। 'বেদ অপৌক্ষেয়' ও 'শক্নিডা' প্রভৃতি ওল্ব ভাষার श्वाভाবिक ঈশর-নির্দিষ্ট গঠন-তত্ত্ব বুঝাইয়া থাকে বলিগ্ন আময়া মনে করি। যুক্তিশান্তে वखनक माइका ও শেণী विভाগ ভাহাদের গুণ ও কশ্মবোধক ভাষা ঘারা হওয়ার যে নিয়ম আছে এথানে আমরা ভাহারই আভাস পাইতেছি।

> চিন্তাকে মূল করিয়াই ভাষার বিকাশ रुटेशा थाटक ; हिन्द्वात भित्रिगंड व्यवशा रहेटन ভাষারও পরিণত অবস্থা হয় এবং চিস্তার অপরিণত অবস্থা হটলে ভাষারও অপরিণত व्यवशा रुष । এই व्यकाद्विर शृषिवौद्य मार्नामक অবস্থার ভারতম্যাত্সারে ভাষার পূর্ণতা ও चापूर्वा इहेम्राट्छ। देवनिक श्रीयगन दव ভাষার এই তত্ত্ব সম্পূর্ণরূপেই উপলাব্ধ করিতে পারিয়াভিলেন বেদের ভাষা উৎপত্তির

বিবরণেই তাহার যথেষ্ট প্রামাণ পাওয়া যায়। এথানে আমবা সেই বর্ণনা হইতে উদ্ধৃত করিতেছি:—

"वृहत्मारक व्यथमः बाटा यद देखक नामस्यकः मधानाः। यामसार त्वाकेः यमित्र व्यभागीय त्थानां केरमसार निहिकः

श्रकाति॥ ।॥

সক্ষেব ভিতউনা পুনতো যত্ৰধীয়া মনসা বাচমক্রত। অত্রা সংখ্যায়ঃ স্থানি জ্ঞানতে ভট্রেষাং সঙ্গীনিহিতাধি বাচি॥ ২॥

যজেন বাচ: পদবীর মায়ন্তামন্ববিদ্যন্ত্রির প্রবিষ্টাম।
শাসভিত্যা বাদধঃ পুরুত্রা তাংসপ্তরেজা অভিসংনবংতে॥৩॥
েত পশুর দদশ বাচমুত তঃ শৃত্যর শ্পোবত্যনাম।
তেনা ত্বৈয় তথংবি সম্রে জাবেব পত্য উশতীহ্যবাসাঃ॥॥॥
• শাহেদ ১০।৭১।

"কে বৃহস্পতি। বালকেরা সক্ষপ্রথম বস্তর
নামমাত্র কবিতে পারে, তাহাই তাহাাদগের
ভাষা শিক্ষার প্রথম সোপান। ভাষাদগের
যাহা-কিছু উৎরুষ্ট ও নির্দোষ জ্ঞান হাদরের
নিগ্ত স্থানে সাঞ্চত ছিল, তাহা বান্দেশীর
কন্ণা-ক্রমে প্রাকাশ হয়।

শ্বেমন চালনার দ্বারা শক্তকে পারস্বার করে, ভজ্জপ বুদ্ধিমান্ বুদ্ধিবলে পারস্কৃত ভাষা প্রস্তুত করিয়াছেন। সেই ভাষাতে বন্ধুগণ বন্ধুই, অর্থাৎ বিস্তব উপকার প্রাপ্ত হয়েন। গ্রহাদিগের বচন বচনাতে আভ চমৎকার লক্ষ্মী সংস্থাপিত আছে।

"বৃদ্ধিমান্গণ যজ্ঞদাবা ভাষার পথ প্রাপ্ত হয়েন। থাষাদগের অন্তঃকরণমধ্যে যে ভাষা সংস্থাপিও ছিল, তাহা তাঁহারা প্রাপ্ত হুইলেন। সেই ভাষা আহরণ পূর্বক তাঁহারা নানাস্থানে বিস্তাব করিলেন। সপ্তছন্দ সেই ভাষাতেই স্তব করে।" রমেশবাবুর অন্তবাদ।

এখানে ভাষা যে ক্ষর বা মনের মধ্য বস্তুতঃ মহুষাদিগেব "ব্যক্ত ভাষা" পরস্পর

হইতে বাহিরে পরিশ্যুট হইয়াছে তাহা আমরা শান্তই বুঝিতে পারিতেছি। পাশ্চাতা ভাষা-বিজ্ঞানে ভাষার প্রাকৃতিক জীবন শীক্ত হইয়াছে অর্থাৎ ইহা যে স্বাভাবিক বিকাশ, কুত্রিম গঠন নহে তাহাই সিদ্ধান্তিত হইয়াছে।

श्वरत्वत्र छाव व्यकाम कत्रिवात्र लावन আবেগের দারাই প্রথম ভাষার অভিব্যক্তি যেমন ভন্তীবাভায়ন্ত্ৰন্ন উপৰ ৰায়্ন কাৰ্যাদারা স্বভঃই ধ্বান উৎপাদিত হয়, তেমনই আমাদের প্রবল হাম্যাবেগেব দারা প্রোরিভ হইয়া প্রাণবায়ু যখন বাগ্যস্তের উপর আঘাত কবিতে থাকে তথনই তাহা হইতে শক निर्मी करेंग्रा थारक। এই मन वाक वा অর্থযুক্ত হইলেহ ভাহা ভাষা বলিয়া কথিত **३**हेश शांदक। **१७**भकौ विदेश মধ্যে হৰ্ষ-বিষাদ ভয় প্রভৃতির আবেগ ছারাই শক श्रकाम शाहर् (भथा यात्र। इहारम्य मक ব্যক্ত না হৃছবেও স্বর-বেলক্ষণ্যের ছারা वाक मार्य २३ जाग्र जाग्र जाव चार्य उद्यापक: ह (वाधनामा २हेम्रा शांटक। ऋजनाः हेशांक আমরা একপ্রকার "সহজভাষা" (Natural language) বলিয়া নিৰ্দেশ কবিতে পাৰি। मञ्दात প্রাণীদাধারণ প্রকৃতি হইতে প্রাণী সাধারণ সম্জাত ভাষারট প্রথম বিকাশ व्यामया ভाहां परभेत्र मत्या (मायट भाहे। এই সহজাত ভাষার শক্সকলত আমানের ব্যাকরণে 'অব্যয়' Interjection প্রভৃতি नाम श्राश भनेतारह। यह श्रकारतत्र महकार ভाষা যে মহুষ্য-সাধাৰণেরই ভাষা হহবে তাহা সাধারণ যুক্তিতেই বুঝিতে পারা ধার।

ভিন্ন হটলেও এই সহজাত ভাষার দারা প্रम्भार्यत मर्मद्र छात (वांश्श्रम्) इटेर्ड भारत । ষেমন পুলোক্ত স্বাভাবিক শক্ষারা व्याभारमञ्ज भरमद ভाব প্রকাশিত হইতে পারে, ভেমনই আবার বাহ্য আকারের পরিবর্ত্তন বা অঞ্চভগার দারা ও অপব স্বাভাবিক উপায়ে আমানের মনের ভাব প্রকাশিত হুইতে পারে। প্রথমটীকে আমরা স্থরমূলক ভাষা (Sound-স্বাভাবিক Language) ও ছিতীয়টাকে স্বাভাবিক সঙ্গেত-সুগক ভাষা (Gesture Languag.) বালয়া অভিচিত করিতে পারি এবং উভয়কে সহজাত ভাষা (Natural नारम 中 language) নামে অভিহিত করিতে পারে। इहा मकरमहे छात्नन त्य चत्नक न्यात्र नक ঘারা যাহা প্রকাশ করা যায় না, হাব ভাব বা व्याकात र्शाप्त लागा क्षाकाम भाग्या थारक। এই উভয় ভাষাত্র বাক্ত ভাষার প্রবেষ্টা। **ইহাদের অপূর্ণতা দূর করিবার আবশ্যকতা इहेर** इह ভাষাব স্ষ্টি হহয়ছে। ব্যক্ত স্বর্লক ভাষা ছারা আমরা <u> সীমাবদ্ধ</u> কয়েকটী ভাবকেই মাত্র প্রকাশ কারতে সক্ষেত্ৰমূল ক পারি। ভাষার ব্যব্দার चाट्याटकत मर्था ७ मझिक्टेवखी ऋक्ट गाज मछर्भन स्म। भाक ভाষा देशाभन्न উভয়েরই স্থাবতী হইয়াছে। এইজন্তই ব্যক্ত ভাষার অব্যয়শব্দে, অধ্যসুলক ভাষার এবং অমুকার ও রূপক শব্দে সক্ষেত্র্যাক ভাষার যথেষ্ট ানদর্শনই বর্তমান দেখিতে পাত্যা যায়। এথানে আমরা ভাষাভত্তিৎ পাশ্চাভ্য পণ্ডিছ স্কুটের (Swect) এ সম্বন্ধে মন্তব্য উদ্ভ করিয়া দিতেছি:--

"It is evident therefore, that ideas must from the beginning have been expressed by a Combina tion of gesture and sound. As gesture is duly available in the light of day or of the campfire and when the speakers are face to face, there would also be a tendency from the first to develop the more convenient sound signs and to extend then use as much as possible, till at last they constituted the majority of the words and what was at first an easily learnt natural language, became a complex traditional one of infinitely greater and range convenience of expression p. 4—

We have already seen that language proper or "traditional language" was preceded by what we may call "natural language" which consisted partly of gestures, partly of sounds and sound-groups directly associated with the ideas they represented. There threc are principal ways in which such associations can be formed, yielding three classes of imitative, interjectional and symbolic words, all of which have left numerous traces on traditional lauguage, p 33. History of Language, by Henry Sweet M. A. (Temple Primer)

किल किवन मार्कित हारा जाया क्र मा। भक्त मकन भवम्भद्र मश्च इन्ध्रा यकि दिनान পূর্ণাথের প্রকাশক হয় ভারেই ভারাদেব দারা ভাষা গঠিত হইতে পারে। পূণার্থ शकालक अवेज्ञान लक्-ममष्टिन नामरे वाका, প্তরাং ভাষায় আমরা শব্দ ও বাকা এই इंट्री यून डेभानाम পाईटिंছ। गुकि-শাক্র বিকাশ ব্যতীত এইরূপ সম্বর্জ निक প্রাথা হারা বাকারচনা কথনও সম্ভব-প্র হটতে পারে না। সুক্ত-শক্তির হাবা वाका भगेर भनारक महाबा (यान (अप করিতে পারে তেমনট শক্তক বাকো (यानानाक कतिर भारत। ज्यानान राज्या ভাষার বিকাশ হইছে, কিন্তু হতৰ প্রাণীতে এন যু'ও শ'ক্তব সমূচিত বিকাশ হয় না বাল্যা হাহারা যেমন বাকা হটতে শক্তের মন্তব্যের মধ্যেই মাল যে ভাষার অভিব্যক্ত ভেদ বুঝিতে অসমর্থ, তেমনই শব্দ যোজনা সম্ভব্পর তাতা আনরা প্রতিপাদন করিলাম। দ্বারা বাকারচনা করিতেও অসমর্গ। এহ এক্ষণে মসুষ্যের মধ্যে এই ভাষার প্রথম कमर काशास्त्र मर्या कार्याय विकास केहरण विकास किक्राल रूप्त कारार वास्त्रा व्यापता व्यापता भारत्र नार । ভाষা-বিজ্ঞানাবৎ পাণ্ডত স্ত্ৰত কবিব। ভাষার শক্ত ও বাক্য এই ওচটি এই मध्यक या मान्यान् मख्या कतिशाः छन তাহা আমরা এখানে উদ্ভ করা কতথ্য

"Language, then, implies duferentiation of words and sentence It is evident that until it has reached this stage, it cannot claim to be an efficient expression or instrument of thought: This differentiation has not been attained by animals. They can express ideas by sounds but they cannot combine these sounds together to express corresponding combination of ideas. Thus they can make a sound which serves whether intentionally or not to warn their companions of danger, but they can not as far as we know combine other sounds with it to indicate the nature of danger and if they indicate the source or locality of the danger, it is only by instinctive movements or glances." The History of Lauguage, by Heury Sweet M. I. P 2. (Temple Primer)

उलामात्ने कथा जानेत्रा लृत्क्य **উ**द्धिथ कांत्रप्रक्रि। क्डालिव भश्या भर्मिक कांचाब প্রথম বিকাশ কি বাক্যেই ভাষার প্রথম বিকাশ এই সথয়ে ভাষা-বিজ্ঞানবিৎ-দিগের मध्या म • ८ • म दिश्व । श्री श्री श्री । श्री मस्राप्ता नारक जागात त्राप्त विकास দোখতে পান—অপর সম্পোর বাকো ভাষার প্রথম বিকাশ দেখিতে পান। আচাষ্য स्याक्त्रमञ्ज अथम मस्यागारमञ्ज व्यव्यां विवर खशानक (महेम (Sayce) विजी अ मध्यनाद्यव

বলিয়া আমাদের, মনে হয়। ভাষা যথন 'দহজাত' অবস্থায় ছিল তথন মূলভাব একটা गांक जनिक्कि भक्त दात्रा श्रकाणिक इटेग्रा অবান্তর বা আহ্যাসক ভাবগুলি অস-সঙ্কেত দারা প্রকাশিত হটত। কিন্তু ভাষা যথন প্রকৃত 'ব্যক্ত' অবস্থা প্রাপ্ত হইল তথন সমস্ত ভাৰই বাক্যাকারে প্রকাশিত হুইল। স্থতগ্ৰাং বাকা বা বাক্চ ব্যক্ত ভাষার আদি হইভেছে।

প্রাচ্যগণ এই ভত্তী সমাক্রপেই অবগত ছিলেন বলিয়া বোধ হয় ভাষাতেই সংস্কৃতে ভাষার এক নাম বাক্ পাওয়া যায়, যথা व्ययत्रकार व्यक्तिशत्म

"ব্রান্ধীতু ভারতী ভাষা গীর্কাগ্বাণী সরস্বতা॥" বর্ণনা উপরে উদ্ধৃত করিয়াছি তাহাতেও ভাষার পরিবর্ডে বাক্ শক্টীরই ব্যবহার দেখা यात्र। हेश्द्रकीएक मञ्चा भएकत्र वाहक द्य Voice শব্দ প্রচলিত আছে এবং ইহার মূল Latin ভাষায় যে Vox, Vocis শক পাওয়া यात्र ७९ममखरे मृत्न वाठ् भत्मत्र महिल এकरे প্রাক্তিক শব্দ। এই voice শব্দে মহুষা ভাষা-উৎপত্তির ইতিহাস ষেন অতি স্পষ্টাকরে मुजि इहेग्रा त्रहिशा छ। এই Voice भव হইতে আমরা বু'ঝতে পারিতেছি বে মনুষ্য প্রথম বে শক্ষারা বাক্ত ভাষার স্ত্রপাত করে তাহা বাক্যরূপ শব্দ, কারণ Voice ও वाक्-ध मुगठः दकावन एक नारे।

প্রথম ভাষা গঠন যে অপণ্ড বাক্যাকায়ে ছিল किन्छ थल थल भकाकाद्य हिल ना সংস্কৃত 'ব্যাকরণ' শবেই ভাহার প্রমাণ

পূর্ব্বোক্ত উভয় মতেই সত্য আছে পাওয়া বায় বলিয়া আমরা মনে করি। ব্যাক্রণ শব্দের অর্থ বিশ্লেষণ। বাক্যকে বিশ্লেষণ করিয়া তদসাভূত শব্দ मकलरक পृथक् भारत शामनंग ও ভাহাদের পৃথকভাবে সম্বন্ধ নির্দেশ ইহাই ব্যাকরণের প্রধান কার্যা।

> তৈতিবীয় সংহিতার ব্যাক্রণ রচনার আদি ইতিহাস ও তৎ-প্রসঙ্গে ভাষার প্রথম প্রকাশের যে বুভান্ত পাওয়া যায় তাহাতে ष्यामार्मित्र वक्तरवात्र मण्लूर्व ममर्थनहे भाउग्रा যায় : আমরা বিশ্বকোষ ১২৩ে এতদ্বিয়ক আলোচনা উদ্ধ ত কবিয়া দিতেছি:---

"তৈতিবীয় সংক্তায় দেখিতে পাহ যে, मिहे षा ि शुक्तकारन याक तन त्रांठि इहेग्रा-ছिल এবং ই क्र भवर्गाम भाविक। यथा— আমরা ঋথেদের ভাষা-উৎপত্তির যে "বাক্বৈ পরাচী অভ্যার্ভা অন্দৎ। তে দেবা অক্ৰন্ ইমাং নো বাচং বাাকুরু। সোহত্রবীৎবরং রূপৈ মহাং চৈষ বায়াব চলত গৃহত। ইভি। ভত্মাদৈক্রঃ বায়বঃ সহতে। তামিক্রো মধাতোহবক্রমা ব্যাকরেছে। ভত্মাদিয়ং বাাকুতা যাগন্তপ্ততে তদেওদ্যাকরণস্য ব্যাকরণ্ড্ম্॥" "অস্থ পরাচী পুরাতনী বাক্ দেবরূপিণী অব্যাক্তা মেঘন্তনিত্বদর্থপ্রাকারা অবিদিত-পদ-বাক্য-প্রভেদেতি যাবং। তামিদ্রো भशुरकाश्वक्रमा विकिश्न এकार्यमणः वाकाः बारका टेंड्डानि भवानि भरत्यू टेंड्डाः श्रञ्ज्यः धटिक श्रायाहरणाव म्यक्मनः বাচোবিভেদনং ক্লুডোদি ॥" - • (ভাষা)

ভাবার্থঃ এইরূপ "পুরাতনী বাক অর্থাৎ (बन्तिभ वाका ध्वाधान स्मय शर्कानत शाम অথপ্রাকারে আবিভূতি ছিল। ভশ্নধ্যে कड़ों वाका, कड़ों। भन डाहा (कह वृद्धिड না। তখন দেবগণ প্রার্থনা কবেন যে সমরে স্বতন্ত্র শক্ত ছিল এবং স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র
বাক্য প্রকাশ করুন। ইন্ত্র বেদর্মন বাক্যকে ভাবে বাবহাত হইত কিন্তু কালে বিশেষ
মধ্যে মধ্যে বিচ্ছিল্ল কবিয়া বাক্য, পদ, বিশেষ শক্তের বিশেষ বিশেষ শক্তের সহিত
প্রত্যেক পদের প্রকৃতি, স্পষ্ট করিয়াছিলেন।" ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধবশতঃ সংযোগ হইতে ইখারা
বাক্য, পদ পদের অন্তর্গতি প্রকৃতি প্রত্যের বিকৃতি ও রাগ্যন্তর প্রাপ্ত হটরা বস্তমান
নিম্পন্ন শক্ষ বিশেষরূপে ব্যক্ত করাই ব্যাকরণের আকার গ্রহণ করিয়াছে। ক্রিয়া-বিভিত্তিকার্য্য।"

ভৈত্তিরীয় সংহিতার উপরের বর্ণনায় আমরা বাক্যেই যে ভাষার প্রথম উৎপত্তি ভাহার স্পষ্ট উল্লেখই পাহতেছি।

শক সকলঃ ভাষার মূল উপাদান। স্তরাং শব্দ সকলের মুগ গঠন সম্বন্ধে আলোচনা এন্থলে অপ্রাস্থিক বলিয়া বিবেচিত হইবে না। শব্দের গঠনে আমরা ব্যাকরণে প্রকৃতি, প্রত্যয় ও বিভক্তি এই करमकी व्यथान উপকরণের উল্লেখ পাহ। শব্দের মূল ধাড় বা প্রকৃতির সহিত প্রভায় (याश कतिशाहि नक निष्णन इहेशा आटक। শব্দের সহিত বিভক্তিযুক্ত হইলেই তাহা স্থবস্তপদ রূপে পরিশত হইয়া বাক্যের कांत्रकाश्म गठेन कतिया थाटक, धाकुत महिल অগুপ্রকার বিভক্তিযুক্ত হ২গে ভাহা ভিড্ড পদর্মণে পারণত হইয়া ক্রিয়াংশ গঠিত कतिया थारक। এইक्रिएंहे वारकात गठन मन्नामिङ इम, यथा ''ञ्चनिङ्कित्मा वाकाः किया वा कात्रकाविकः॥" शूर्व्याक श्रक्तक, প্রত্যয় ও বিভক্তি সকল প্রথমে ভাষায় কি আকারে বর্তমান ছিল ভাহা নির্ণয় কবা मर्जगाधा नष्ट। वर्खमान जाकारत हेरात्रा কখনও ভাষায় পৃথক্ভাবে বস্ত্ৰমান ছিল বলিয়া সম্ভবপর বোধ হয় না। ভাষা-বিজ্ঞান-वि९ मिर गन्न भर छ। इंदार मन मन छ। मह जक

সময়ে স্বতন্ত্র শক্ত ছিল এবং স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র धनिक मध्यस्यम् ७: मः । यात्र क्रेट क्रेश्र বিক্রতি ও রাগান্তর প্রাপ্ত হটরা বস্তমান আকার গ্রহণ করিয়াছে। ক্রিয়া-বিভত্তি-সকলকে ভাষা-বিজ্ঞানাবৎ পণ্ডিভগৰ বিভিন্ন शुक्षीय मक्त-नारमञ्ज ज्ञाशास्त्र विषया मन করেন। পুর্বোক্ত রূপন্তিরিত স্বানাম যোগে ক্রিয়া একটা সজ্জিপ্ত বাক্যে পরিণত হট্মাছে। ক্রিয়ার বর্তমান ধাওু অংশটা পুর্বেষ একটা अ ० ज कि हा- भक्टे हिल, भक्ताम हे शह मि ७ যুক্ত হইয়া ধেমন বিশ্বুত হইয়া বিভক্তিরূপ প্রাপ হহয়াচে তেমনই ইহাও বিক্তৃতি প্রাপ্ত হুহয়া ধাতুরূপে পরিশত হুইয়াছে। স্মাসবদ পদসকল পূর্বে শতন্ত শতন্ত বাক্য ছিল, मिक्किश्च रुट्या नमारमंत्र व्यक्तित भातन করিয়াছে। পাশ্চাতা ভাষা-বিজ্ঞানবিৎ পণ্ডিত পুইটের "ভাষার ইতিহাস্" (History of Language) নামক পুত্তকে পুৰোক্ত ওৰ-नक्न भात्रकात्रक्रभ विवृष्ठ इहेशाएइ, अथारन আমরা ভাষা হইতে উদ্ধৃত করিয়া দিতেছি:—

"An impartial study of the morphological development of languages makes it tolerably certain that all inflectional languages must once have been isolating and have passed through the agglutinative stage." p. 67.

"This period, again, must have been preceded by one of more or less agglutination, in which the cases were mere post—positions, and this period was preceded in its turn by an isolating period, in which grammatical relations we elimicated by word order and the use of particles p p 110-111.

Composition and derivation, though the result of the fixed order of words in sentences, are thus word forming and not sentence forming processes p, 42

"agglutination run mad" we may regard incorporation as inflection run madder still! It is the re ult of attempting to develop the verb into a complete sentence p. p. 65—6.

Composition—This "pre-adjunct—" order putting the adjunct
or modifying word—before its head
word that is, the word whose
meaning it modifies is evidently
very old in Aryaus, for it is the
basis of the Aryan method of
forming compound words. Such
compounds as the Sanskrit rajaputra, "king's son", Greek hippodamos "horse taming" theo-dotos,
"god-given, given by god" are
simply fragments of sentences—
they were originally groups of

words preserved from the preinflectional period of Aiyan, in which grammatical relations were shown by merely purting the ad junct word b fore its head word; in the above compounds the first elements are equivelent respetively genitives, accusatives and instrumentals or a batives. As the cornection between the members of such groups beg in to be more more intimate, the whole group came at last to have only one secent, a it it were a singl word, hance, when it become the rule that every noun and adjective must have its relations to the other words in the sentence shows by inflection the first elements if these groups were passed over and allowed to remain uninflected, and being regarded now as only parts of words, they lost their freedom of position in the sentence, and so, such a form as hippo could only fram-part of a word, and was no longer an independent word" p. 41.

छक् ० मस्रवा मकन इहर । साकाई (य छोयात बात्रख छाइनेत यस्पेष्ठ स्थमान्ड बामता स्थास इहेनाम। बामता छेभरत नम-मद्दि य बालाइनो कतिनाम, डाइन्ड मस मकन य बार्यक् इहेश बारका स्थमुक इस शहात উল্লেখ আমরা করি নাই। কর্থ প্রকাশের
কল্যুচ শব্দ প্রয়োগ হয়—স্কুলাই বাকোর
কোন শব্দই নির্থক চহতে পারে না, সকল
লক্ষ্ট সার্থক। অভ্যার—শব্দ ও আর্থর সম্বন্ধ
নিতা। তাহাতেই কালিদাস এই উপমাদিয়াছেল।
"নাগর্থা নিবসম্পৃত্তো"। শব্দার্থের এই নিলাসম্বন্ধ ঐখ্যিক নিরমেই হচরাছে, তাহাতেই
ক্রান্তে শব্দের আধার ও শেবকৈ ক্রের্থিব
নাধার ক্রেপে শাস্ত্রে বর্ণিত দেনা ধার, ধ্রা
ক্রাণ্ড নিবসম্প্রে স্বান্দ্রেলা। অর্থন্ত্রপণ
যদ খাং ধ্রে মুর্নেন্দ্রেল্থরঃ।"

পুর্বোঞ কথনায় আমরা শব্দ ও ভাম্ छएम, छव । नत्मय (को क्षांवक को ज्ञाम म त्रवक्त (मिश्रिट । भागा भारक्त के नामान वर्ष वा अक्रव। अक्रव प्रकल वा मर्थ वर्षामा कामरा "माक्या" भाग मास्य यां चार्य (प्रिया भाकृका-(प्रयो छ्नात गर नाम। मांड्री ३-८० छ्ट्मन वालागी वटनव लान में कृत्री। क्षाट अग्लिय न्यान्या (यमन स्य. श्रुक व्याप्तारक क्यो (य भटकात्र व्यापात विवया পূৰ্বে উক্ত হুইয়াছে, গাহাৰ সহিত্ত मामक्षण क्या किन्न भागता क्ये भारत्रत वांचा अल्बा ३ हेराव मर्या (४ এकी ণাতহাদিক ব্যাখ্যা আছে তাহা হহতেহ अधिक मठानाटक्त आभा कति। वर्ष ना वर्गाञ्चक मक मकन প্रথম মাতাৰ चाताङ উজারিত হয় বলিয়াশ ইহাদের নাম 'মাতৃকা' क्रम एक इंश्रं बामार्भित्र निक्र हेश्रे श्रेक्ट वारिया विध्या ८वाध क्या वश्चरः अश्वारमय निक निक्षित मत्ना जान कान्या তাহার সহিত আলাপের প্রয়োজনারতা **১২**তেহ মাতাকর্ত্তক শব্দ ও ভাষার স্থি

क्ट्रेसार्ह हैकाई जायात अथम अं उठाम वीलग्रा श्रामात्मत्र मदन ६४। मालां ७ मश्राप्तत ধেরণ ঘনিষ্ঠতা একপ মার কাহারণ নতে। স্থাত্রা সন্থানের সাহত স্বলি সংস্থা ১০৩ ध्ये महारमय मानम-भागम । भागा मा शहरी कर्तवा वालगा ध्र ममण्ड श्रामाध्र समाध्र জন্ম বা নাতাতেই পথ্য ভাষার বিকাশ क्टेंट्र कार्डा क्राह्म कार्डा पिरद्रोहिल হতবে না। আমরা প্রথম মাতার নিকট इ.इ.९ <mark>काश भिका क</mark> त विषय काशास्त्र শৈশবেৰ ভাষা "মাতৃ গাষা" বালয়া কাষত হয় एका मन रवार अवग । वास्तावाद माक्का नारमय कनकवाल "माक्काया" नाम कान्न व्याद्य विश्वा व्याप्त वर्ष। ই বেজা nather tongue কথাটিও এই लाटन वाबान कर्द्राटक।

ভাষা প্রথম প্রকাশত হুংয়াছে। কিন্তু পিতাব দারা শদের বা ভাষার প্রকৃত অর্থ প্রথম আবিদ্ধ ও প্রকাশিত ইইয়াছে. ग्राहाट **व्यापित कारात कारा वर्ष** হহরাছেন। মাতা ভাষার প্রথম গঠন প্রদান কাবয়াছেন; কিন্তু পিতা ইতার প্রথম विद्यासन ও याचा। कतिप्राट्या। এङ विद्यासन ও वार्वादरं नाम वाकित्रण वा भक्-भाज, खुनार । भना इक्ट उठ नाक्रा ना भक-भारत्वत डे९भांख क्षेत्रार्थ कामना वांबरक পারিভেছি। হহার প্রমাণ স্বরূপ আমরা उद्याश कांवर न भाषि त्य, निवदक कांग्रा अर्धित क्रांबहा हा स्वका स्मित्क भार, তাহাকেই আমরা ব্যাকরণেরও প্রণে গ । पिरिक भाषे। कैशिए एके क्षीय मरक्न नारम শমতেশ ব্যাকবণের" উল্লেখ পাঙ্যা যার।
পাণিনি সকীয় ব্যাকরণে মতেশ ব্যাকরণের
প্রভাহার-স্ত্র সকল উদ্ধৃত করিয়াছেন।
এই প্রভাহার-স্ত্র সকলে বর্ণসকলের বেরূপ
শৃঙ্খলা দেখিতে পাই, ভাহাতে বুঝিতে পারা
যায় যে ঐ ব্যাকরণ রচনার পূর্বেই বর্ণসকল
বিক্তমান"ছিল। ইহা মাতা হইতে বর্ণোৎপান্তর অন্তত্তর প্রমাণ বলা ঘাইতে পারে।
মহেশ ব্যাকরণ যে পাণিনি ব্যাকরণ অপেকা
কেবল প্রাচীন নহে, উৎকৃষ্টও ছিল, নিম্নোক্ত
স্থাতালত বাকাবারাই ভাহা প্রমাণিত হর,
যথাঃ—

'বাহ্যজ্জহার ব্যাসোমাহেশাদ্যাকরণার্ণবাং। কিন্তান পদরত্বানি সন্তিপাণান গোষ্পদে॥" 'ব্যাসদেব মাহেশ ব্যাকরণরূপ সমুদ্র হুইডে যে সমস্ত বত্ন উত্তোলন করিয়াছেন সেহ সমস্ত পদবত্ব কি পাণিনি রূপ গোষ্পদে আছে ?"

কেবল যে পতি কর্ত্কট ব্যাকরণ বিরচিত হওয়ার প্রমাণ পাওয়া যায় ভাষা নহে, পুত্র কর্ত্ত ব্যক্ষণ বিষ্ঠিত হওয়ায়ও প্রমাণ পাওয়া যায়। কাতয় ব্যাক্ষণ কুমান বা কাজিকের হইতে প্রাপ্ত বৃলিয়াই ইহার নাম কলাপ বা কোমার ব্যাক্ষণ হইয়াছে। ইহাতেও বর্ণসকলকে ''সিজ'' (বর্তমান) বিলয়াই ধরিয়া লয়য়া হইয়াছে। তাহাতেই ইহার প্রথম সত্ত হইয়াছে ''সিজো বর্ণসমায়ায়ঃ।'' ইহাতেও বর্ণসকলের সহিত বেন মাতার বোগের প্রমাণ পাওয়া যায়।

এই প্রকারে জগতেব আদি পিতামাতার
সাহত ভাষা ও অথের যোগ হইতে তাহাদেরই
বর্ত্তমান প্রতিরূপ আমাদের পিতামার সহিতও
তাহাদের যোগ স্ট্রাছে। এথানে জগতেব
আদি পিতামাতার সহিত কবিগুরু কালিদাসের
ভাষার আমাদেব পিতামাতাকে, আমাদের
ভাষা ও অর্থের জন্ম বন্দনা কাররা আমরা
আমাদের প্রবন্ধের উপসংহার করিতেছি:—
'বাগর্থাবিব সম্প্রকৌ বাগর্থ প্রতিপত্তরে।
জগতঃ পিতরৌ বন্দে পার্বতা প্রমেশ্ররৌ॥"
ভাষাত চক্রবর্ত্তী।

माट एक।

অতুল রূপণী রূষক-বালিকা
কথা কয় ভালা ভাঙ্গা,
নাকেতে বেসর, নয়নে স্থর্মা,
হস্ত মেহেশী-রালা।
বিবাহ না হ'তে, জানিতে পেরেছে,
ইমুক ভাহার বর,
দেখিলে লাজেতে করে মাথা হেঁট,
এক-পাড়াতেই হর।

বিবাহের সব হইরাছে ঠিক,—
সে সকল কথা থাক্,
প্রাণাই ক্ষকে সহসা পড়িল
সমরে ষাইতে ডাক।
নিটোল গঠন, জোয়ান যুবক,
বিশাল মরাজ বুক,
সমরে যাইতে তবুও কি জানি
মলিন হলো যে মুথ।

সোহাগে সাথীর কবছটি ধবি পরশি অধর তার, গোপনে বলিল "হয়ত স্থিবে हरत ना (का (प्रथा आहा" किन किर्मारी कैवर% (शरन ड (भटल এ भन्नम उर, নবান জীবন লভিয়া আমি ষে व्यक्त कलाय वर्ग পাচট দীর্ঘ বরষ কেটেছে किंतिष्ठ गुतक शारभ, छात्र शकांत्र वार्त्व नि छोठेट्ह ल्धु मारमकाव नाट्य। প্রবেশিছে গ্রামে, রাজা বাসে ঢাকা कार मु अल्ड यांग्र, मात्रा कुक शद्र क्लाभ छेठे किन १ भूरथ फिर्ड बाम्र नाम्र। গতে গ্রা ব্বা জানল ভথান "मा। मका शिवादक भावा, এथन छोहाय म्याधित थन कॅमिटि मक्न भाषा। গ্রাহারি অমতে পিণাদল ভার বিবাহ অপর দনে, डाश्ट्डर वृत्य डिপ्किंग (ब्राय माद्रम विधित भरन। ত্রদিনের এক ভনয় রাথিয়া हरण र्जिण धर्ना छ। छ. माक र'न वृत्ति, (मथाईट म्य हेन्द्रक फिद्रिष्ट वाड़ी। विदेशास्त्र दिलाटक केन्द्र क भरत्र है, "कुड धर्न-आभाव' वरन, क्षिन धरिया भारमका (केरमह কি প্রীতি ভাহাব সনে।

भ जो ब्र निनीरथ रमाभरन हे स्क क्षकाको ममाधि थुँ एउ, হাকেরের মত, একি এ কাও ! মৃত্তের নাম্মব পুরে। মতবার তার কাঁপি উঠে হাত ভাবে দেখিতেছে কেই, गाँगे करक धोरव वाक्रिय कथिया তরুণীর মৃতদেহ। कां किया का भटर् हुचन किया আছে কি সংজ্ঞা লেশ গ वुरकरं अक्षां स्मिनीव (पर च्युक गुडिल (मन। প্রাতে 'মাতোয়ালি' হোব সমাধিটী श्रन (मांभ मिन मांजी, ব্যৱল এ-সব প্রকাশিতে নাই 'क्रिन्द' काष्ट्र याँही।

সাত-বরষের পরে যে আবার

ত্যুক এসেতে ঘুরি,

সঙ্গে তাহাব রূপসী পত্নী

সজাব কনক হুরী।
গ্রামে কাণাকাণি করিছে সবাই
এই চ সাদেবা বটে,

মরা মাসুষের ঘরে ফিরে আসা

কেমন কবিরা ঘটে।

সাদেকার স্থামী প্রিয়ারে তাহার
পুনরায় কিরে পেতে,
ইমুকের নামে নালিশ করিল
অচিরেই আদালতে।
জানালো সাদেকা, জনম তাহার
স্বৃত্ত জোরান-প্রে,

७ यामीटब्र करे, ८५८नमा कारनमा, (मर्थिन कौरन श्रुत्र। স্বামী বলে তার "চিনি ওই রূপ, কপালেতে সেই তিল, मिहे वर्षे भार्त चात्र एक नम् छ्वछ य भव भिन्। ফ্মাধি তাহার তুলিয়া দেখেছি অন্থিও নাই তাতে. বুঝিতে পারিনে কেমনে জুটিল হেত। ইস্তকের সাথে।" ' বিচারক ক'ন "মুভ নটে দে ভ नाहि मत्नह-(त्रथा, সমাধি হইতে উঠিল কি মৃত করিতে আবাব 'নেকা' গ किय प्राथित विविद्यार मु

ट्याबिक करत्रह्म मर्व, একরণ হয়ে হুইটা প্রতিমা থাকিতে নাহিণিক ভবে ?" চতুর দে স্থামী কিছু নাহি বলি कामदर्क (मथान दाथि, জননার ছবি শিশু বালকেরে निक्छ जानिन छाकि। দেখি রমণীরে একমুখ হাসি' শিশু কাছে গেল সরি', নাহি চেনা তবু দাঁড়ালো তাহার माफ़ीत क्यांहन स्ति। হেরি মুখ ভার সহসা রমণী हां नया भाएन घूरम, এবার ইম্বক জাগাতে নারিল "শতবার মুথ চুমে। <u>ध्योकु मृत्रक्षन मिल् ।</u>

জহর খাওয়া

(判罰)

ঘন তেমনি ভাষণ। বনের পাশ দিয়ে অজগরের মত দেহটী বেঁকিয়ে বয়ে গেছে বয়ে বন-ধুঁছুলের গাছ মরের ভিতর অবধি क्रीणा **छेल छैटन** श्राख्या यथन (कर्ण ७८ठ, नरीत्र७ तृष्क ८७५- श्रार्वित शाधन कार्वित (मानाय-कार्वाय শুলো তথন মাতালেরই মত মন্ত-উচ্চাুপে বাদা বেঁধেছে একজোড়া পায়রা, তারা মুখো-८थरम भरक्।

বোগ্দাদ সহরের সীমান্তে সে বন—বেমন ছাউনির উপরটা তার আগাগোড়াই লতায় লগিত পাতায় সবুজ; বেড়াথানি ঝালানদী,—তর্তরে তার ধার, গিয়ে পৌছেচে। মটকার উপর বদে বদে তার জল। বনের বুকে বুকে খুছুটা যখন-তখনই তার প্রিয়ার কাণে কাণে ফুলে উঠে পাহাড়ের পায়ের উপর আছাড় সুথি বসেভাকে,—"বগ্ৰগুম-বগ্"—আর ভোর ना इट७ई अटन हृत्या ८४६व यांत्र ७३ नाजांत्र নদী-পাহাড়ির উপর ছোট্ট কুঁড়েথানি— মুথে এক রাশ সেনার আলো! কুটীরের

সাম্নে উঠানখানি ঘন সভেজ ঘাদে ঘাদে সেই স্বপ্ন-ক্রকুমার ভক্তথানিও বুঝি ভার একটানা সবুজ। দেখালে মনে ধ্র সভাব- বনান্তের বাতাসে ফুলেব মতই তুলে উঠছে। লক্ষা বুঝি কোন্ স্নাল গাড়ে স্নান ক'রে নার সমস্ত রূপথানি ছেয়ে একটা স্বাধীনতাব এসে সিক্ত শাড়ীথানি ভার এইথানে খেলে আলো সারাদিন খেলা করে—সে সৌন্দর্যা मित्र (शर्फ-वाना क्मीत भोना-caश्व, भिरु छोर्ग्योम **भा**त्र रेडिस्टिंग नेनेव धात्रा-দে কাপড়ের ঝলমলে মুযুব কন্ঠা পাড়টী यानारना ।

এই কুঁডেথানি জুড়ে -একটা শেকাথার সাধের ঘরকরা পাতা। শিকারী আব •ाव (वो—वृदक वृदक शांक्-छन छा छा । বাদায় যুগল বাছর নিবিড বেষ্টনে পাণে ल्यार्ग এक स्ट्रांच म्यान्डे श्रास्ट्रिट (महंशांत्म वाम करत्—आक कार्त वक्त्य।

ामकातीय नाम वाम् — **व**ष्टिक (म छाटक "গুরারী" বলে। গুবাবী সভাই স্থলবা। করে; নদার ও-পাবে সবুজ ক্ষেত্রে ধাব গোণাপ ফুলেব মত টক্টকে তার রঙ বিহাৎ ভেচ্ছে চুনিয়ে বাধা বাঝ ভার এজ। সাডালে কোনোথানে বা একটুক্বো মেথেব क्लिंग भन्न अन्न जूटल यदन अन्न टिनेमिन यक्त माना अवर्शायो पूर्मिय पारक, स्वाट्य মত ঢল ঢল ভার মুথখানি। নিটোল ছখানি গাল ঈষৎ একটু তোলা তোলা, মাঝথানটাতে (क वृक्ष-कांश-(भाता कुकूम हूँ एक (भरत्र छ। **डागं प्रकार कार्या कार्या** कार्या कार्या ; **७ क**रणंत्र युक्क ভारमायामात्र প्रथम मिरुत्रणंत्र মত চঞ্চল তার দৃষ্টি। একরাশ চুল ামশ্যেশে कारमा, केंद्र नाक, ऋरणाम शंच-भा,—भारमा व्यादा भव अमृनि या,— (भ व्यात्र वना यात्र ना। মরালীর মত বাঁকা গ্রীবাটীতে একগাছা মুক্রা রভেব পুঁভির মালা। কোমল বাছর মূলে পিতলের বাজু, মণিবন্ধে তাবি ছগাছি मक्र मक्र कैंकिन बाँछ। भाका खार्मत वरक्षत्र नौनाष्ट्रत्रोथानि शद्त छुत्राश्री यथन माध्याम এमে वरम, उथन म्हिप मान इस, युगव्योग व क्षा-काछ

(धाया र्शालाभ-क्रलंब यक्ष-ब्राटकाई खबु शर्फ ৭১বাব।

বনের উপর তুপুর বেলাটী ভপ্ত কুরে বনের হারণীটার মতন স্বাধীন গুরারী সেই কুটার থানির ছায়ায় ঝালা-ভীরে এসে বদে; স্থগৌব াপঠের উপর দিয়ে ভিজে ভিজে চুলের গোছা ছডিয়ে ওকোতে । सम्र। सामात्र ভোতের উপর তপ্ত কিবণ ভরা যৌবন নিয়ে থেলা मिर्य **क्रिन्**ठी फूर्छ भागामः; त्यारभन्न घन নীচে অচ্চ ছায়াথানা গাছের পাতার সবুজ वुरक करत्र हक् हक् करत्र— छात्र छे परत्र আন্ত্ৰ-জভার বৃক্তের সোনা ঝলক-মারা রোদের ফাকে টুক্রো হয়ে এলিয়ে পড়ে; লভার মুখে রস লীলায়িত ললিভ; গাছের মাপায় কি প্রঘন শ্রামলতা, ফুলের রঙে সেই কোন অজানা কাবিকরের নিপুণ ভুলির টান---(সই কোন্ অগোচরের সংগোপন থবর বলে যায় যে বর্ণ-রেখা, ছবারী তাকিয়ে তাকিয়ে সেই সব দেখে; কথনো বা পাতার উপর ছবি আঁকে, আলতার লাল আর পেস্তা পাতার সনুজ দিয়ে সে লেখার রঙ कनाम् । जावात्र कम्रट्डा कथरना दम्खमाना

खान जात्र शास्त्र ना, टांश इति छात्र करन ভরে আসে—পাথীটার প্রাণের স্থরে আপন অমুভব মিলিয়ে কি এক অব্যক্ত ব্যথায় বুরুথানা তার ভরিয়ে তোলে।

এমনি করে বায়ার বরের প্রেমের ছলাল इत्रात्री व्यापन मत्नत्र निर्जीक सूर्य मात्राणी मीर्च द्यमाः काष्टिय दमग्रः आत्य आत्य গোধ্লি-লগ্ন ফুরিয়ে গেলে ছরারীর টোখের माम्दन वत्नत्र मक्तां कारणा कर्य कारम ;---স্বামীর আশাধ্র পথের দিকে চেয়ে চেথৈ— "(म এश्नि वाम् त्य" — भाषा है। डेए म "धे वृत्ति त्म करणा" ! इत्रिण्छ। इत्हे भानाम-"ভারত ভো পায়ের শক"।— এম্নি ভেবে ভেবে मुध (यरमनी ভার একান্ত श्रमग्रथाना প্রাণেশেব ভাষনায় ভরে ভোলে। ধনের আলো নিবে পেলে সারাদিনের পর বালু ঘরে ফিরে তার পটেব মতন উঠোনখানির ছায়ায় দাঁডিয়ে এদেছেন—ভাবুই গড়েছে হাজার ড'হাজার। ভাকে—"গুরার"—ছুরারার বুকের ভিতর আবেগ কেঁপে কেঁপে নেচে ওঠে। দে অম্নি শাঞ্জাদার থেয়াল-ভরা চিন্ত তথের বছর-পরের চুটে এসে বারুর প্রাপ্ত ৮কু ডটির সাম্নে স্থ! জ্বুম করবামান্ত স্ব ভাষেল भिटक **अ**क्टिश (करम (करम। छत्रात्रोत लाक्काल मध्त-छणीन ५६६ कोलाइन ज्ञान मूर्थत (म काम काशांध क्तर्यंत कमात (ভঙে **উৎসের বে**গে বোরস্থে এসে বাস্ব গামে শ্রান্তি-হরা, আবেশ-ভরা ভৃপ্তির পরশ বুলিয়ে দেয়—তার সারাদিনেব ভ্রমণ-পবিভাম সার্থক হরে যায়---আর হরারীর সারা-হপুরের চিন্তা-মান কপোলহটীতে তথনি হটী চুম্বন গোলাপ क्लाज मक क्टि डेर्ट ट्राथानकांत्र नमख कारना मात्रदेक्टक नान क'रत्र रमग्र--- स्म श्वामीत्र भिकादर-धना भाषी खरणारक कूछीरत नित्र यात्र।

এমনি করে দিন-ভরা বিরুকে, আব রাত-ভরা মিলনে শিকারি-দম্পতার আনন্দের **घ**द-मःभात्र काटनक निन हेल्टमा—काद्रभन একদিন ছ্রারীর রূপ তার হুথের বিরুদ্ধে रित्ताह करत्र येमलां। चमुष्टिय कृत चाकारम ভার শাদা হাসি রক্ত-মেখ সেজে বার্র माकारना वागारन कुकान जूरण क्रिका - इंडिकार्ग বার, নিজেকে বাঁচিরে চল্বার জন্ম ভার द्वात्र ष्ववनत्र ५ (भटन ना !

বসপ্ত-প্রাত্তের রক্ত বরণ বনগশ্মীর পল্লব-लार्ल मिर्ट्स ७३६-सिर्द (यन ट्यार्ट्स ७३६नी इ **519-विश्व व्यवक्रक-(व्यया विश्व क्रि**सिक । कृष्ख बक्षत्रीत चूबक मूट्य हृत्या ८५८० हत्रव धर्व जात जामत-वध्व छका छात्रवन वानात তারের মত্ই বস্কৃত হয়ে উঠেছে।

वानभाकामा आब nation impica আমোদ क'रत পশুবধ, তাঙ আবাব লেগেছে এই নিবিড় বনের নীরব সামানায়।

वामणाकामा कत्रिण, वाच, भाषा व्यत्नक मिकाव कत्रदान। मिकारवत्र । अष्टरनः पूर्वे ए इए ८७ मिवित ८७८७ व्यानक मृत्र এम পড়পেন--- এদিকে বনের ক্ষিয় সকাণ-বেলা मिक्-एकवारमञ्ज आफ़ारम शिफ्र (यर७३ इश्रुदात का क्षम कर्म के हैं लो। धूमत अक हो থয়গোষ ভখন প্রাণের ভয়ে ভার কোমশ ভটী চোধের ভারা বড় বড় করে বাদশাকাদার मुक्त ८ हाटबब्र माभरन भिरम हुए है राग।

বাদশাজাদার নিষ্ঠুর বৃকে সে করুণতা-ভবা দৃষ্টি এতচুকুও ব্যথা ভাগিয়ে দিতে পার্লে না— । • नि जैय-शश्चक निष्म । अहे (छ। है वश्वरभाष्टीत অন্তর্গণের সম্ভত প্রোণচুকুর জন্ম कुछैदलन। ८०ठात्रा निर्दार व्यानी, व्यान्यान নৌ ড়নো—বাঝ তার পদার ८भौन नित्तन रमह सोन मियलां ठिवन- १८न शिस ्भोट्छिछिन-- अटनक पृद्व जिद्ध এव छै भागरक त्यारभन्न भाष्ट्रन काढारण कार्यात्र ज चिनित्य दशन, वामनाकामा आंत्र गटक दमग्रन ८५८मन ना। जाव वारा अभग्र सूर्य धन--काछ पट जिन (मण्यारन रम अफ्राना वार्य्ड क'हा वर वर्ष वामाम भाग नाझ व डिठानवाग्नर ७ ७१३। विष्यु माष्ट्रप्रिक्त. भाग कृष्टि । प्रमाणमा विष्यु खाला। भाभाव वि कृत्न देश नाममाश्मान आख (५८० भड्या करत (अल---ननम भारत भारत (बाल (जारह याद्य भार जारमंत्र अञ्चाए-नन्मदनंत्र व्याजिया व्याध्यमन कत्राम ।

वाममाकामा (कोकुटक कुकुग्रहाम वड पारनकष्मन पूर्विष्टिलन एउन जून वारम পডে(७न— जनमञ्ज (मञ्चाना चात्रारम वस्त्र ক ভদূবের সেত মুগধা-শিবিরে ফিরে যাবার काव क्वि कार क्षा ना न्या ८ (१८वान ना,--क्षा-भ्यात जानात्र मगरा (पर-मन অবদন্ন কাতর হয়ে উঠ্লো।

नाम ७ थन--- (बाकडे (यमन याम-- याम वार्य करम (अक्टलां। भि मिनु दयन दक्तन ত্বারার ক্রিউ ভাল লাগ্ছিল না—নে था ७ शा-मा ७ शा ८कारना भट भिष्टि स् के शिद्य स মেঝের বিচানাথ ন পুরু করে পেতে শুরে

পড়েছিল। भैत्रकात कांक निरंग भा कार्भद (अज्ञा योगाय भारहत जो ठकात हात अर्वाध ,तिविद्ध जात को प्रतिवृद्ध अर्थ-वर्गक योगन करवं पिष्टिम व्यान्यानानामात्र छेटछव मग्रत्य पृष्टिष्ठे। देव कि क क जिल्ला क जार्न ना। छिल खाक भाष्य भारत भार हत्न वात् व एका व कुर्फ्यानिव कार्फ शिया भो कुरनन. भोटि डिक्टिंग "এशार्न एक आटिश " कड डेड्र मिल ना।, वामनकामा **आवा**त दल्टलान — लहर्गा अकलन लाक नुमारक्परक (अभिरा ८क्ड जक्ट्रेका अप्र ८४८व १°

বন্ত চাকত কুব্ঙ্গিনীটাৰ মত ছুৱাবীর खानभाना क्ठांद **५मटक कें**द्रना, कठंदिन रचवा अधात दवछात्र नार्ग कारक दमन कावन-कारणा हाना छाना छहा । हारथव चाक्ना भिष्ठि वात करब मिर्। अभिष्क এक वाब मिर्म निर्धा -- (श्वम-मिक्ट कर्णारमञ्ज डेलर काँच গোটাক এক মালভা এল ভার পায়ের নীতে ক্লাগুর চিহ্ন কালো ধয়ে উঠেতে দেখে রূপসীব त्क गाना क क्रनांत्र छल्छी जट्स छेठ । ला---কিন্তু পারপূর্ণ আশার মত মে ভবা धोनरनन भूगक-एडा मुष्टित ज्ना नप्रत्न निर्म অমন প্রবাপ তরুণ মুসাফেরের তৃথাও চক্ষুর माभ्य माँ फ़ाटल मद्राय ७ ८ म निष्ठेरत উঠ্লো ভাব্লে, একলা সাকান সেবার (भन्नामा भूर्व (भरत मूमारकरवन आरमन (छड यि। कुन छा १ ८ ४३ - ८म । उपन পাগল ३८म शिष्म এकটা ভশানক কিছুই. করে বদে।

> বাদশাঞ্জালা ক্লান্ত কঠে আবার ডাক্লেন, " एरा।—" (क छ छ छत्र भिटन ना भिरम शिव्रक **किरत्र यम्**रणन, "(छामता कि ट्यामारमञ् वाषभाकातात्क जिक (भवाना भानीय विर्क

নারাজ, গোণ দে বড় প্রাস্ত, তেষ্টায় আভিজাত্যের গৌরব নষ্ট কর্বে কে সে

এবার ত্রারীর নারী-হাদয়ে আঘাত বড় পিপাসিত।" পড়লো—আর देशमा माনলে ना। मে ছরারী বল্লে—"এ আমার বড় মান,— विद्यानात्र উপत्र উঠে বর্ষে ভক্রা-শিথিশ ,শাজাদা। সামী আমার শিকারে বেরিয়েছে— कारमा भाषीशाना (ऐरन ८ऐरन भर्ग- मुनारकदरक आक आमात्रे श्टित भ्रा ভারপর নিদ্রা-অশস চোথের উপর দিয়ে নিতে হবে।" স্থ্যমার মোট। টান্টা বাঁচিয়ে পালকের । "মোসাফের ধন্ত হয়ে যাবে---" চাইতেও কোমল তার হাতের মোলায়েম म्मर्मशानि वृलिस निस्त्र ७ स ७ स थीरत शीरत (वात्रस्य क्रम)

वामभाकामा (मथ्टलन, मूत्र वनाञ्च-Cत्रथात (5ए३७ कारणा <u>क</u>्रलेत अरणा त्रांभ গোছায়-গোছায় ঘন বেঁধে উঠে তরজেরই মত লহর থেলে গেছে। বনের ভিতর বাস করে এক বেদেনী—ভার মুখের উপর এমনি ক'রে কুটীরখানার ছায়ায় কে এ অপরাপ রাপের রহস্তময় দীপটী (क्ट्रांक निष्त्र (शक्त, कात्र कीव्टनत जांधात-ब्राट्ड भेष क्षिर्य नित्र योगात कार्य भी ? वाषभाकातात्र शायत्र छेशत्र किट्य म्लानन গেল বিহ্যতের মত—রত্তের हरहे প্রবাহ ফু পিয়ে উঠ্লো ভরদের মত। তার **Бत्रण-एक्टलिय लघु जाएम जिनि खन्ट**णन, এক প্রেমের গানের সলয় ছন্দ-তার আঁচল থানার মৌন মর্মারে তিনি শুন্লেন, কোন্ अशरमारक व मिनक रर्छ-गा छत्रा गारम व मावनीन সুম্ভূনা—এক মুহুর্ছে মুগ্ধ হয়ে ভিনি একটা कि एडरव एक्ट्र्लन—(मरे नमग्र इताती यांगित मिरक जाबित जाता नीष्ट्र करत वरहा, "आणि (य त्वरमरम्ब (मरब— भिकाबीत परव्रव বউ। আমার হাতের—"

"তাতে ব্যে গেছে—শাজাদার। আমার

তার ছাতি ফেটে যাছে।" কমবণ ত। স্বদরি, একটু পানীয়—আমি

অরি দেরী নয়,— ছরারী তার যা-কিছু শোভন, সরস, খাঁটা, মিঠা,—তাই দিয়ে অভিথিকে ভুষ্ট কর্লে—বাদশাভাদা আছেন শুধু ঐ মুথবানির দিকে তাকিয়ে তার বুক থানার উপর কটাক্ষ হান্তে—ককোনীর কাছে হাতের वैकिहा अमन करत ग'एए-एम मिन्नी दकन এ রূপ তৈরি কর্লে।—ভাবতে লাগলেন।

वमरखत्र विद्यमणे। सिद्ध इत्य এता धे भतीद মতন মুখখানার দিকে ফিরে কিরে তাকাতে তাকাতে বাদশাজাদা বিদায় নিলেন— ত্রারীর চোথে কিন্তু সেই লালসানীচ দৃষ্টিটা ভাল टिक्टना ना।

তার পর একদিন ফাল্পনের সূর্য্য যখন व्याखरनत्र इका जूरण मिरनत्र माब-न्रक हूँ ए মারছিলেন, সেই সময় শাঞাদার আরাম-বাগের অন্যর-মহল থেকে খোজা এসে ভার হাতীর দাঁতের কাজ-করা তাঞ্জামের ভিতর जूरण-जूदादीरक स्वात करत धरत निस्त्र গেল। ছুরামী কভ মিনতি করলে, সেধে সেধে পায়ে ধ'র্লে, তার সবুজ উঠান थानित छे । तिस किस किस नुष्टित्र भएन कि ख হতভাগিনীর কাঁদা-কাটা শোন্বার প্রাণ তাদের কহ ?

যে মহলটীর চুড়া আকাশ-পানে উচু হয়ে ভাবে তার আদরের প্রবাধীব খোঁজ উঠেছিল, তারা তাকে সেইখানে নিয়ে চল্লো. করণে, সমস্ত বনগা তম তম করে হাত-—ভার সারা তুপুবের সাথা পোষা পায়রাটাও ভালে—আভিপাতি করে দেখ্লে—ভ্যা-ভাঞানের উপরে উপরে উটে তর্মারার সঙ্গে । শুদ-কণ্ঠে "ত্রারি, ত্রারি," বলে কও ডাকা-(शंग।

व्यामा व्यात এक थाँठा भागो नित्र घडत —क्रांख ट्ठारणत मग्नुरण এम ছ्वाती ७ किम क्तिवरण। वाजीत नोटि मीफिट्य (ब्राक्ट केंट्रणाना। যেমন ডাকে, আজও তেমনি করেচ তথন আখাদ হারা তার ভাঙা বুক্থানার ए। क्लि—"छ्वांत्र—" किन्नु छ्वांत्रो ८०: एवत्र एकवन्ने अक्छ। काम्र काम्र वास्य **य**द्व व्यक्त देखन मित्न ना । धन-वरनन समून त्मरम किर्न धरम ध्नात्वन भाषा रमण विश्वानान खबु नको। श्रान्थ्यान कि यन এक उपत्र मि खरा प्रकृत्या – विनिज का कर्छ आवात छाक्रम, "छत्राद्धा" देक, ना। काञ्चल-होला (हार्यंत्र शां गांत्र वाल्प्य श्रांत्र श्रांत्र मकार्य यात्र, यथन विकास (क्रिंड বিগ্রাৎ চমাক্ষেশ্ভার প্রব্যেব বাণী তে পৈচ বাংবে এল, গ্রন পূব আকাশের সোনালি ात्र जावमञ्च कार्यय मामरन क्या निरम ना। वाज्ञ, जावल ज्याका ज्याकोत्र कि रुटना, ना'स्टन १

वाज क्छीरत्र माम्स लाग-क्छीरत्र भवका त्थाला! नात्र काथयाना त्क किरम ভাল তাথের পাতায় জল এসে তার **उर्किन पृष्टि कि जिल्ला कुन्ता**

বার তাত্তে আন্তে কাম্পত পারে कृषीत्त्र एक्ला—(मत्थ भाषात्र छेभद भाषा विष्टानाथाना थानि शद् वाद्य-कृषिद्वत्र क्लात्नाभारनङ छत्राजी रन्हे। जात वृत्कत्र মধ্যে একটা তাত্র হাহাকার ভয়ন্ধব বেদনায় वार्खनाम कर्द डेठे्ला।

वामभाव दश्यशास्त्र भारम वामभाकामात्र निष्य कृष्टीरत्रत्र ठात्र थारत्र,—नमीत्र औरव ভাকি করলে—কিন্তু হায়রে, বেচারা। তার मक्तार्यमा २७ छात्रा यात्र এक शान मि छात्क प्राप्ति त्केष्ठ माणा पिरम ना।

अवानक यवत नरम छेठ रमा। यात्र त्र क कड कि छ।वर्ड मागरमा— (क्याटन ।

আঁচলায় রক্তরভেব ধুপছায়া কাজ কবে স্থা উঠেছে—কেবুগাছের পাতায় পাতায় ात्र नामिमान त्रश्न-मुखा ५४४ व ६४४ व्हे मबूटकत्र काटक काटक मिन्द्रव यावना বাবাজিল। আর বাসুর বুকে তথন রক্তের চেউ জমাত বেঁধে উঠে নিশ্বাস্টা হার চেপে धब्द । हा हो हे ल ; 'अयन मयश (म (मयदन,---কেলুব লাল পল্লবের উপর ছোট্ট ছোট্ট পা হুটা পেতে হ্বারার পোষা পার্রাটা বদে व्याष्ट्र। , जारक तमस्य वाज भागत्मत्र मञ र्कि: त्य फेट्रें ट्रा—"छत्रात्रों करु ? **जा**याव छत्रात्रों —বুকের গুরারা—আমাব কলিজার গুণারা— কই ?" পায়রাটী আন্তে আন্তে উডে এসে (म এक है। वड़ मभारन जास्त्र जानित वान न वान न वान व वान व

াল ছোড ছোট চোথ ছটাতে ছোট ছ'ফে টো खन- बात्र खानात मरम दौधा এकथाना कात्रक — खे त्रक्षः ताखाः

वाज्ञ वृदक काणांच हमक कडाक् करब 35 ला—त्म डाफ़ार्डाफ कान्नक्थांना भूरन (मध्य—এक**টी** ছবি আঁকা— আগাগোড়াই ভাব গুৱারীৰ হাতের দেই পরিচিত ভুলির টনি—ভার বেখায় রেখাম হতভাগা শিশারীর छ: थ- ছाफिटन इ । स्थ- (मो डारगा द कार्न मनर्पन कित्रमाथी जन्नानीय कालाय खळ ब्याद न करीन म्मारे हिरू कृष्टि छेर्छ खार्वित जानन क्रारनंत्र नुरकारना वाशांत्र काकिनी । गर्थ পাঠিকেচে—প্রথমটা একটা পিথরে—ভাতে त्मानाथ **लिक, गणित माछ—हजानी जा**थ-टबार्ड कावुणो ८९४।, कार्याचा जाख्य चटिन - शिक्षदेवत यात्य जकता यांनता-भएएर — व मन ব্যথার মুষ্ডে व्यवाध এक होना बाकारनव धन नी निमान নাচে কিন্ত প্রহল্প বচ সতক – বচ কডা তার দৃষ্টি—শে দিন রাভ অপ্রপ্রহর নজর बाथ एक --- भनिवाणि निक्लाग्र करत्र अधु टाट्यव करण युक छिक्छा প্রচোন এসিরীয় अरुवाय ८५ साव मोटि जम्मेर जकार व *द*नशा व्याटक्—"माञाना।"

ছবি দেশতে দেখতে র্ণায় বাল্র মন ष्टि- <u>चित्र पंठ ल्ला</u> — द्वारत ब्रह्म डेटर्र काब व्यानव रम्पार्ड प्रकृतिक (जाका वायाना वाय করে 'ঝাপন মনে সেই মাটার উপর

निएउस करम धर्म—एकामानित टाएँ मार रान्ता मा--- ८ । एव । पर्यकान खरू ज्याना भाना भानात्म (कन् कृत्नत्र राजाः দিয়েত ছবির উপর ছবি আঁক্লে—একটা ভর ভার-ধাব বাণ- পি জারের গোড়া থেকে माकामात्र वृत्क शिरम् द्रशेष्ट्रहा

ছবি আঁক্তে আঁক্তে মনটায় ভার কি भागि कि व्यक्ति विक्रांग डेकाय हरत डिठ ला –বাঘছালের আচকান এঁটে পাণীর भागटकन वाद्यां प्राप्त भाग भी दिभिष् महरवर मिरक वात्र ३८४ ८१ — সে কিন্ত পায়রাটা যে সেই ছবিখানা মুখে करव आवार आवाम नार्शय शास्त्र प्टिष् (अंग--दिम धनद नान् जायदन ना।

वामभात्र भूनी---(भ । भाषदत्र (6) महना **एक्टाक ८७०-८७०।---शग्र कांत्र व्याकार** व मण्यान (म कुष्क करत पिंक्टित एक्ट मोल क्रॅट क्यू कर अ फेरकेट — बार कार्य (मर्ल (व^रवर्ष वाम्र ५ ठांत्र के उपात अर्ताप्रांल सन्मान्द्र, (क्रन्लामात र्लासाक बाकर्रिटाय, व्याठारिया कांक नद्या छिखाय याथाय कां घटम भागता मिटक — भागरवत छिभन्न केक्-केक १९ कांच भागनात भक्त निरंदिधन চেয়েদ কডা – আবাতের চেয়েদ মশাস্থিব हरत-পणिक या चारुना भारवनाधीय পण-द्यारधन । विद्धांशन का<u>ति</u> क्वर् मिकाबी (मर्डे महत्वय माम्राम मां ५। ८७३ প্রচরার রক্ত চকু আজ আরও বিকাম हरत्र केंद्रे ला-करोष कर्न कर्न कर्न करत्र दम चन्दल—"এইয়ো দাঁডাও, ভোমাব কোতল কৰে।"

क्यन विकि कारमञ्ज रूप जात ममक मतीय मान रुश- ध क्य मूर्यन भिर्क जाकिए

আছে ৷ গশুলের নহবত-রাগিণী বন্ধ, গাড়ী- নিরপরাধের হত্যার রক্ত ফেল্ডে চাইনে---बाडा हन्टि ना, मिकानगाहे बाला नि— कुमि भागा।" সমস্ত রাজধানীটার উপর দিয়ে যেন এক কালো ছায়া আসম হয়ে এসেছে—বায় একটা অফুট কোলাহল সোনা গেল—ভার থাসতে আস্তেই তা অমুভব করেছিল,— ক্ত সে যে আজ মরিয়া—ম্পষ্ট করেই নিউয়ে সে জিজাসা কব্লে—"আজ সব নীরব (कन, भाक्षी ?" टमाक है। वाज अ मृत्थन भिटकु इश्वरह १" (म श्रेखीन श्वरत वल्टन—"वामश्रा-ক্রুর কটাক্ষে একবাব ভাকিয়ে ক্রুদ্ধ গলায় अवाव मिटन—"निर्द्वाध, क्वां के करव তে,মাব। কোনো প্রশ্ন করে। না।"

বাল্লর প্রাণের ভয় নেই,——সে বল্লে, "(कांडन कर्न। भव नोवन (क्रम, वन १"

नत्रम २ म वाज्ञ कारनत्र कार्छ मूथ नोष्ट्र भिर्व डा क्रिय थानिक व्यवाक इर्य (परक करत्र वरहा, "नाराञाना थून रूप्राष्ट्रन।"

বাস্র বুকের রক্ত হঠাৎ বাবা পেয়ে বুঝি পৃষ্টক গোলা সে চমকে ভাঠে অধু বলে, 'আা—" বড -ছ চোন ছটো ভাব ७ थन धक्षक वर र खरण छ। ठेर भाजा कि ना वृत्यं वन्ता, "हैं।-- वि छ वामनाव कड़ा छ्कूम, बाज ८कड পথে বেরোভে পার্বেনা—ভাম কি ক'রে এলে, হতভাগ্য এচ পুরীর দরজায় ৮—তোমাব কোওল **इ**द्द ।"

"(कांडल इरवे" हाफ़ा (म कथांत्र कांत्र ज्विक इत्रक्छ वाज्ञ ज कार्ण भी प्राप्त कार्ण ना प्राप्त कार्ण कार्ण कार्ण ना प्राप्त कार्ण क সে শুধু বল্লে- "কোতল হবে আমার। (थामा! दकांच्या कर्या। श्वानभाषामा यून (थरम् পटला, ठाउँ ठाउँ करत्र कैं।मरम-

অ'নি এই খুনের রক্তের উপর আবার আবার ছ' হাতে বুক্থানা ত্রে"

লোকটা ভাল। এর মধ্যে পুরীর ভিতর পর একটু স্পষ্ট—তার পর বেশ পরিক্ট— একজন অন্ত:পূর-চারী খোজা যাচ্চিল--- দাবের প্রহরা ভাকে ভেকে জিজাসা কর্লে, • "কি काशादक चून करब्राइन त्य कमनो इब्राबी বেগম, সেঁ কাবাব ভিতর জহর থেয়েছে। वामना याख्य छाटक (मथट७।"

বার গুপ্ত মাঘাতে আহ্চ হত্তাগোর ये अवधा विकि हो देकांत्र करत्र छिन्नशास এবাব যেন প্রহরা কি ভেবে একটু ছুটে পালালো—প্রহর্গা ছজন ছজনের মুখের শেষ একটা ঢানা নিশাদের সঙ্গে হুঞ্নেই वन्दन-"धिक।"

ু কুটারের দাওয়ায় ছরারী বেখানে আঁচল थानि निरुद्ध खर्म खर्म भक्तान काकारम मार्था र जात्र मानिरकत हुक्रता जरक जरक ষ্টে উঠ্তে দেখতো—ভমাললভার কচি বুক বোঁকয়ে গড়া জাফরার পাঁজর ভেঙে काष्या (यथान ८५विष्य এम धून्त्र वरकत मण्डे नाम इत्रादीय (ठाँछ इशानित তপর তরল আব রূপালি আভ লের পল্কা বেথায় হাল্কা ছায়ার আল্পনা ঢান্তো, ঠিক সেইখানটায় এসে বালু আছাড करश्राष्ट्रम १— एक थून कहाल छाटक, माञ्चो ?" वृत्कव छेलत ठालफ स्मारत हिंहिस हिंहिस "थरत भाउता यात्रांन धारांन क्षा कि कि कि कि निर्णा निर्धि थर्ध भक्त गार्गान

শ্রেত সমুদ্রের জোরারের মতই বুঝি ফেনিয়ে ববফ—তোমার শুধু হাহাকার। ক্লিয়ে চলেছি—ভার পব চিৎ হয়ে গুয়ে, গার পর থেকে রোজই এম্নি বাল চুপ করে কি গ্নিকটা ভাবতে ভাবতে থেখানে-দেখানে শুধু দেখে গুগারী—প্রাপের গেছে দে—শীল তার আঁথির তারা পিণ্দ রোজে, শিশিরে—ভি•বে-বাহিরে—ভ্রারী, ब्दम्रट्ड,—हिंदित लाग काकारण श्रा

শক্ত করে ঘিবে নিজের বাছমূল জডিয়ে কার্ডায় আর নিজে সে বেচারা রাত্রে धत्राण (म—पूर्व व्यागरता । शाहरी निम्मन कार्याय थाक छ। कि बादन न।। দাড়িয়োছল—সেই দিকে একদৃষ্টে ভাকেয়ে তুপুর রাত্রে যণন হারে-মহলের চুডায় (मधरक माश्रमा—"ঐ col—বেশুনে ভূরে বাবতার গজল চন চনিয়ে ওঠে, তথন হঠাৎ পরে বসে আছে ছুরারী—ঐ যে •ার বাদশাব ঘুন ৫৬তে যায়। শপশমের চেয়েও গণায় বনতুল্যার ক্ষ্বদা মঞ্জবীর নানা মোনায়েম সাঁর বিছানার উপর কিসের ছল্ছে--ঐ যে 'গোলা বন্ধ কটে গোলে খেন তাহুৎ স্পানে সাম্ভটাকে সব উল্বয়ে च्याम्(५-- १ । १ तथ व १ व्या या व्याप व १ व्या चित्र मिट्य"-- कूट७ शिरम ८५८श थटन (कैं। ४८) উঠ্লো—"গুরারী", "গুরাবী"—আলিখনের मरथा था। निर∞ वथा—ছामा। वालात नोरत হরিণটা এদোছল জল খেতে-ঐ তো ঝালার জল ছল ছল কর্ছে— পাথবের উপর শিং লেগে ঠন্ ঠন্ কর্ছে—ঐ না ভারি कांकराव कन् वन्-हा। छवावी-चाह, चाट्य- ध्य-इत्रात्री, इत्रात्री, (भन्नावी, म्बार्स काल, कामात्र कालका"—कमनि याँ पिरम विद्यं भेड़्ता। शहरत, (भाक-वाक्न, (क्यन व्यक्ति ५ श्रीयक — इतात्री कि चात्र चाटि क्र के नगरत्र कि शात्र, —

অহভব করলে—হতাশার ব্যথায় তপ্ত বক্তের — পার্বত্য নদীর ফটক-ভাঙা জল—শীতল

আবার টেচিয়ে দঠ্লো—"জহর থেয়েছে, ।৩৩র তার তবারী, বাহুব বাধনের ভিতৰ অহর থেয়েছে—অসাড়, হিম, নাল হয়ে অন্তরত করে—তরারী—আকাশে, বাভাসে, क्षध् ज्याची। "

গেছে—(চাথের কো আর পলক পড়ে না — বালু আব শিকার করে না—খাঁচা প্রাণের যে সাড়া নেই-- একেবারে নেই-- ভেঙ্গে পাখা সব ডড়িয়ে দিয়েছ, বিছানা-िक्रमित्मत कञ त्म न्या काम । काम काम । याना वानात कत्न कामित्म मिरम्रह्क, वन-উ: ফেটে গেল—বুক্পানা ফেটে গেল—" ক্পোতের জ্ঞানে চেগ্রারী বেঁধে বাসা গড়ে পাগল হয়ে গেল বুঝি বেচারা—ছই হাত দিয়েছে— তারা জোডায় জোডায় সেধানে বাঙ

> कांत्र धाद्रारमा कांहरम दर्वस वाममाव সমস্ভ ঘুমটুকু চুরি করে পালায়! মথমলেব বালিস দেডে তিনি থাটের যাজুর উপর মাথা রেখে এক মনে শোনেন-দরে বাদশা মহলের গোলাপ বাগিচার প্রাম্ভ রেখায় দীমাবদ্ধ স্থপুর মাঠেরও ওধার (थरक राउग्राम् (जरम जारम रम खन्न-कम्मान বক্তায় স্থান ক্যানো ভার আবেশ বুঝি মীডের্ विष्म मिल्म, मृष्ट् नात्र উচ্চाम वृष-भक्षा कान्नाव यात्रना याविदय (एय—द्रांक्ट डिक के

গোলাপ— निर्पुत जूमि हर्गा पिक्क, यर्फ्त जारक धत्र पाद्रल ना।--त्रक वामभात्र महा মত নিমেষে এসে পাপড়ি কটা ভাব চিড়ে ছুँ ए अतिरम्न भिरम शिला १ हा निर्माम ।

व्यनस्थ तरे यां औ तम वृत्त् वान (भरा भाषा कि ह कि वा, तक तम भाष्रक हाप्रात यह মেলে স্বাধীন স্বচ্চন্দ ভলিমায় উড়ে চলেছিল অলম্যে এসে বেহেন্ডের মদিরা-আখানো —কুর ব্যাধ, ভোমার বুকে এডটুকু ব্যুণা বাজ লো না—অমন বিষাক্ত বাণ মান্তল ভাকে তুমি, মশ্বহীন।

"শুধু আমারি শিষে শিষ্ দিত আর এচ ব্যাধের মোটা আঙ্লের কঙা ভু'ড়ভেই भांकरको भा भारप्रवा— भिञ्चरत एक राज्य भाग मृत करक प्राप्तर व्यवादिक भारतेत निएम वक्ता व ब्र्टन, धाम-गर्दन भागाव अपूत (मास— आकान र्यवादन दीका ठरम काउंटक,---वाधटक कार्ति । मर्प्र ८व दवहेमान,---भिक् दिंदक १— भिष्या व्यापारि भिक्दात्र

"তার জহর-খাওয়া মরপের তাঙ্র নাল তোমার খুনের রজে ামশে বেগুনে বিষের স্ষ্টি কর্বে—ভর্জরিত কর্বে ভোমার আত্মাকে,উচ্ছন্ন দেবে তোমাদের সাম্রাজ্যকে, --শাশান কর্বে ভোমানের মহলকে,—হতভাগা, দরিদের বুকথানা থালি করে মোতির মালা-গাছি নিয়ে গেছ়৷ ছনিয়ার মালিক তার একান্ত আত্মার আধাব পাঁজ্রা কথানা শুভো করে—তারি একমুঠো ধ্বংসের ভেজে গলিয়ে অভিশাপ গড়চেন,—দে জন্ম-জন্মান্তর किंद्रटव ट्यांत्रि भिक्टन, क्ल मिट्रा श्रेष ধহুর গন্ধ-মাথা ভূণের ভিতর ভোমারি মুত্যবাণ লুকিয়ে নিয়ে।"

সারারাভ ধরে কে বে এই গান গায়, टक्छ छ। वृक्ष एक भारत मा।—वामभात्र छक्रम

"वरनत भारत क्रिंहिन त्मर जक्ती राजात लात्रना क्रमसारन माग्रामा क्रिक करबर्फ -- मृजाय धनत छात बुरकत भीरह পর্যান্ত একটা তরোয়াশ্রের আখাত পৌছে "অনস্ত আকাশের সুনীলিম বিস্তার বেয়ে, দেয়—এ গান তাঁকে উন্মাদ করে তুল্লে— স্থরে মুদ্রে-পড়া দেকের, টুটে-পড়া প্রাণের काश्ना धमन कक्न सूर्व नत्न यात्र! व्यक्ता, तिथ् ए इत्, — (क छे भाषा ना भ शाग्रदकत तथाक १ ना। भवाछ युव লক্ষা করে গোপনে গোপনে এগিয়ে ষায়--मिर्भिष्ठ — (मर्डे निक शास भदा-भदा यात्र।

পোষা দোয়েল—জীবনে-মরণে সে আমা'ব! ছ্যাবেশে—সঙ্গে কেউ নেই! নিস্তব্ধ রাতের নিজন প্রহর কাপিয়ে মিঠা কপ্তের লহর-তোলা স্ত্রীর-কল্পোলে সে গান হাত্মায় হাত্মায় উদ্ধে উঠে বুঝি ঐ আকাশের ওপারকার কোন অগোচর দেশের শাহান-সার কাছে-কার काउन প্রাণের নিবেদন নিমে ছুটেছে!

> বাদশা প্রথমটা একমনে লক্ষ্য করে काव्याहात्र निर्मामा निर्मन-जात्र शस्त একটানা চলে গিয়ে পৌছুলেন – প্রায় আধ কোশ দুরের একটা বট গাছের আবছায়া অস্ক্রকার-তলায়। গান তথন সেথান থেকে चारनक पृद्र शिर्व डिटिंग्स । वामभा दिव (भरमन--- व शांत्ररकत उर्खाम ! तम इत्रवांना---वह कारह, वह पृरंत, वमनि करत्रहे स ভোল্বার সে সাধনা করেছে।

বাদশা গাছের ঝুরি খালে

উপরে উঠতেই দেখেন—একথানা বাঁকানো ভালের উপর ঝাপসা পাতার আড়ালে বসে **(क अक्बन। वाम्मा भागटकत्र मुहक्रिक** অধীশবের গান্ডাথেই, জিল্ডাসা করলেন—"কে তুমি—রাত্তির শুরুতা ভেঙে রোজ গান গাও ?"

করা মিছে বুঝে বাল্প আন্তে আন্তে বল্লে, ইমারত গড়ে পুলতে লাগ্লো, বাল্রই — শ্রামি ব্যথা-হত, প্রিয়া-হারা উন্মাদ— কুডেখানার পাশে—কেউ ব্যলে না—কেন দ আমাকে কেন ?"

"উन्नाम कृषि नख,—ऐन्नाम कामात्र रशम। কিন্তু যে গিয়েছে, তাকে কি আর পাওয়া যায় —হতভাগা। যাও, কুটারে ফিরে যাও—"

শ্পাওয়া যায় না ? কে বল্লে পাওয়া गात्र ना १ এই यে मে আমাব বুকের ভিতরে— এই গানের স্থ্র ভার অশ্রারী আগ্রা বয়ে এদে আমার বাছ-বন্ধনের ভিতর মুক্ত কবে मिटम (शटह।"

ষে তার প্রাণ্ট অধরের প্রান্তে আগার একান্ত ত্রাবা। ত্রারী ? না, না, নিছে কথা।" বরণ পাপড়ি ছটীরই মত।"

"এত প্রেম।—অগাধ—অভলম্পর্শ—এ त्य महान्। त्थ्रिमक, शृद्ध फित्व या ७—— व्याव নিত্য নিশি জেগে এমন আকুল কারা (केंद्रा ना। (थामा ८ शमात्र क ভालायामात्र वर्षात्रम कत्रदन, नहेल जिनि व्यामाहे नन्। **এস, নেমে এস, মুসাফের— ভোমার প্রণয়েব** রাণীর স্থেচাগ-ভরা বৃকের মধ্যে নিশ্চিস্তে ', िक्रि, याशन कत्वात कछ—एमरे विश्व-भिन्नी क्ष्मन द्वित्र स्मात्रक गए ए त्वन।"

বাদশার সঞ্জে সঙ্গে থানিকপুর এসে বারা তাঁর আরজি-ভরা অমুরোধ এডাতে ना (शर्व वरनव निरक हंटन दशन। वामभा व्यक्तत्त्र ह्क्ल्य ।

ভার পর দিন পেকে হাজার হাজার মজুর আর লুকোচুরি চল্বে না—আর গোপন দিন-রাভ থেটে জ্ঞল কেটে কালো পাথবের मनाहे वल्टल---वानभात्र (मोनटकत्र निकात्र।

বাড়া শেষ হয়ে গেছে। জ্যোৎসা द्रांखित मन्त्रा। रमिन পূর্ণিমার আলো নিয়ে वरनत भवक त्रांखात व्रक त्राम धन। বেচাবা পোমক কুঁড়ের দাওয়ায় এলিয়ে পড়ে চোখ বুজে স্থা দেখছিল—পরীব বাজ্য থেকে প্রাণ কিরিয়ে নিয়ে ত্রারী তার युक्त प्रेभव किर्त्र धन। (म गाकृन डा खरा চিত্ত-হারা আবেগে ছই হাত দিয়ে জড়িয়ে "তুমি তা অমুভব করছ <u>।"</u> ধবে চুরাবীর স্থলপদ্মেব খড গোলাপী "অমুভব না, প্রত্যক্ষ কবছি—এই ঠোটে -হঠাৎ ঘুম ভেঙে গিয়ে—"আঁ।!

চুম্বন ঘুমন্ত ভাব চোথের পাতা আন্তে আন্তে পিছন থেকে বাদশা বল্লেন—"হাা, এ মেলে দিচ্ছে—আধ-ফুটস্ত গোলাপের রক্ত- তুরাবী—মিছে নয় প্রেমিক, এই তোমার প্রেমের রাণী হ্রারী—এই তার রাজা— ঐ রাজ-পুবী—আমি গড়ে দিয়েছি—আয় দশলক আসর্ফি—আমি বাদশা—ভোমাব প্রেষ্ট জহর থেয়েছি আমি।"

> वान वन्दल, "ठाइटन, ठाइटन-कितिरम नित्र यां भागन्मा— ७५ कृष्ण्यांना मित्र या ७— (कांग्री (कांग्री कन्छ (कांग्री-नक्ष (य তাব লেখা-যোধা কয় না-- এমনো আসরফি ররেছে এই আমার বুকের ভিতর !"

> > विभगवा ठक वर्षी।

আখেরা

वटकशं किमाव ठूकिया कि ८व वहर-त्नास्य त्निय किलाए गु মজ্জাগত গোলাম-সমঝ শেষ ক'বে দে, শেষ ক'রে দে। क्षे कार्या माम नग्न क्रनिग्नाय, धर कथा **आक व**न्द कार्य, भिथा। मलील जारमत, याता भीवरक छार्थ कुछ क'रत। मनीन टारित वािन, बात्रा मान्यरक हात्र क अटि थार्ड़ा. হাম্বড়াই এর সংহিতা-কোড্ বেবাকু কাটো, বেবাক,কাটো। मनाडे ममान এট कशर ७ ८० छ ছোটো नम्र कार्ताड ५५८म. कार काट्ड कुङ नियाम् भाषां, खखटाराप कच्छारमट्ड १ मवार ममान व्यांकुछ चरत, वर्णत स्माक भिष्ठारे कत्रा, भवारे भवान नामान-धृत्ल, न धार्च धुत्रा मिछारे वर्ग । মিথ্যা গরব গোত্র কুলের মিথ্যা গরব রঙ্বা ঢঙেব, ভেদের ভিলক ভক্মাতে লোক সংখ্যা বাড়ায় কেবল সঙ্কের। नवन व'लिक शवन यारमव,—हांब्र नावीरमव भन्टि भारब, তৈসুরও যার শুলো মাত্রষ মবদ সে ক ? আয় প্রধায়ে। टिभिक द यात्र भीगृष काक्षाण भूक्य तम कि १ किछामा कत्र ; यारमर्भात (भवन-वर्ग रुख्ना यहर रुख्ना छात्र ।

কংস-জ্বাসন্ধ-রাবণ-সেকেনাব ও মিহিরকুলে
দেখে নে তুই কল্পনাতে প্রস্ব-ঘবে শ্রাশান-ধূলে।
মিছের ঝুলে আকাশ জুড়ে জাল প'ডে যে জম্চে কালি,
পুডিয়ে দে তুই সেই লুগাজাল ওহহাতে তুই মশাল জালি।
পুড়িয়ে দে তুই স্বর্গ-নরক পুণ্য-পাতক চাই ক'রে দে,
লোভের চিঠা ভয়ের বোকা জালিয়ে দে একদলে বেঁধে;
মেকীর উকাল মেকলে আর ভারত-ময়া ময়র পুঁথি
স্থার্থ-ক্লিল যে লোক ঘ্ণা বহ্লিকুণ্ডে দে আছাত।
ভার্যামি জার জিলোপনার চাই দিয়ে দে, কিনের দেনী ?
ছাই হ'য়ে যাক্ মর্দ-গরব, আল আথেরী, আল আথেরী।

ख्यांम मार्वी क्रद्राह्म काद्रा मूनि श्रीय न मार्गे (भाष् १ म्लाष्टे दिन देलका एनाच ५ तमान निर्- कराज एहए । थ। উरका मर्द्र कांनव क'रत अभाग्नास्त्र में विष्टिष्ट, ্বাক-বাধা জাত মিছার আবাদ, বিচাব-বুদ্ধি দেশ ছেড়েছে। कांकांत्र कांकांत्र वरुत्र भरव (मण्डाफ्) दकत । स वर्ष पर्म, ভয় ভেগেছে উষার আগেট দেশ জেণেছে স্বপ্ন-শেষে। (मण क्लारक् क्रिकार्ट्य वर्गाट वांध (भवांत क्यारम, পাটিকারী প্রেম থাউকো ভক্তি উচ্চিয়ে দেব অট্রকানে। लागा कारता এक रुटि नग, लास्त्र रच लासा भारत, मधी । यांन महर व'ला वर्षा छवानक शादव १ घुष (थरत्र (य कुविरत्र भिर्म भाग वाक्ष्म) व्यक्षकारव, वामून व'लिट शृष्व कि मिट घरत्र क्रमौत मर्जुन्तारत ? वागून व'लिই कत्रन जिल्ल है। म-८ । मार्द्रन शूर्वा कि क व्यवनाक्षेत्र व ग्राटक त्य मुन्यभारम शाहरण निर्क १ ৰামুন ব'লেই করব খাতির শুনঃশেপেব ঘুণ্য পিঙায় হাডকাটে যে নিজের ছেলে বাঁগতে রাজী, ধন যাম পার! पूर्यत त्रांछ। वश्व (मरथ वाकाम (एरक यख्वनारम পুত্র-বলির যুক্তি যে স্তার পুত্র ব কি সেহ থণ্ডহালে ? ক্ষা-প্রেমিক পুরুবে তাদের ক্ষা থারা ভাথায় লাথি ? ভিক্তানণ চাইতে চিছু দক্ষিণা কম মিল্ল ব'লে হর্ষেরে খুন করতে যে যায়, অ'লাভ ভাদের কই কি ছলে গ গুজুরাটেতে আব্রু নিরে দাঁত খিঁচিয়ে প্রস্পরে श्वरम्भ (यक्षन भन्नरक मिल्न भूक्ष्य कि भिरु विश्ववरत्र ? রাজপুতানার গড বিরে ধে, মুসল্মানের আভযানে, वाँधर्ड शक युक्ति मिला, शूक्त कि त्रहे पुक्षिमात्न १ "হর্মপথে তুল্সী ছড়াও, মাডাতে ভাষ নাববে মোগণ" এফন যুক্তি যাদের তাবাও ভক্তিশঞ্জন ? হায়রে পাগল। किन्द्रुष्ठा नन्द-कुमात्र,— (य পবালে তাঁরে ও काँगी, গলায়-দ'ড়ে রাম-ফাস্থড়ে তারেও দেব অর্থারাশি গ जूफ्र एक बाद मान्तानात्का जान्त रंग गिताहित भूभा रें एक वक्ष्या, भाव विश्व विश्व-भाष ?

পুणिम-छिछि तम्माम बाउँ गमाम गी-मात्मा मड़ विछ-विम्यक एउँ मा भाठक वामून व'लाई मान्व वड़ १ कालिमात्मत्र कावा व्यमत उँ त छत्न (मम बार्ट्ड का डाइ व'ला भाँडेक्छि-छनाव भारत्य धृत्ना दक् दिन्दन।।

ভাতের থাতায় সাফ স্তকৃতি দেখিয়ে শুধুই মন্ত হবে পূ कुक्क वि । मिडेलि क'र्त्त श्राम किरम करमात्रत्व,---ভারো विभाव চাচ্ছে জগৎ, দাবিল করো নাহক দেবী, প্রণাম দাবা ছাড়তে হবে নাহক দেরী, আজ আথেরা। শ্রদা ভাজন সাত্য যেজন ভারেং মামুষ শ্রদা দেবে, রাহাজ্যান করলে ভাক্ত বিশ্বমানব হিসাব নেবে। পাহকার। তে এরবে না আর জাতের টিকিট মাথায় এটে भ पुत्र (शाष्ट्र (म मिन (शष्ट्र, (म कुम्रामा याद्याः (कर्ष)। সেকাপীয়ারেব স্বজা ৬ ব'লে পুছুবে না কেউ কিপ লিছেরে (क्षि) भिष्ठ कवांत्र (वांगीं क्रिंग बाम्ट्र भिरत्र। वाक (भार्षांग महत वटन स्टब्ल क्राह्य शृक्र द्व तक्ता १ Co ग्रांत ८वथून यावलै व 'दंद (ट्रांटको (जावांत ठत्रन (मना व ক জ্ঞানেরে কেড দেবে না লঙ ক্যানিছের পাপ্য ক দু, न्छ् मार्टित्व भर्गामा कि नुष्ट्रिव हिस्मा भान्यो अ । टिस्मन श के नांत्र अथा काफ़ रन व ।। इ हथा कि हाम ? বেসাণ্ট্ সে নৈবেজ নেবে অপিতি যা' নিবেদিতায় প तः (मायरमञ् ७ ५ एक तिरव १ ८०मन निष्ध मा**० छ**निम्ना, ভিক্টোরিযার পাপ্য নেবে ভাষার প্রেমী চিষ্টিরিয়া १ মন্দ ভালো ভালিয়ে দেবে এম্নি কি মাখাত্মা তকে ? ফ্রমা বলেছ করব খাতির চম্ম-গুড় মহত্তকে গ (माकानी त्य त्वव की कूड़ांग, -- नाक कुरम त्राख-कांग्रमां करत তারেও কি বাজভক্তি দেব ? রাথ্র কা ধন বাজার ভ্রে ? অভদ্র থে রেলগাড়াতে, অভবা বে থেলার নাঠে, ভারেও নাকি করব থাতির অকথ্য যে রাস্তাঘাটে १ निनीए। याच राजन-नीकांत्र, किन दे नीकांत्र मिन दे भूदत्र, यात शत्राम कृतित श्लोका विच्छत्र क्य मछन च्छूरत,

রাস্তাতে বে বৃকে ইটার, নিরন্তে বে থাওয়র থাবি,
বোষ্টা থুলে ভার যে থুড় রাজপুজা সেও করবে দাবী ?
সাহেব ব'লেই করব সেলাম ? মন্দ ভালো বাছ্ব নাকো ?
মৃত্যারে যে করবে কারেম বল্ব তারে ক্রমে থাকো ?
থুনীরে যে দের থোলসা আইন, গ'ড়ে রাতার্র্গতি
প্রশস্তি তার পড়ব কি হার, প্রকাশ ক'রে দপ্তপাতি ?
গোবা ব'লেই গৌববে কি দিতে হবে শ্রীবৃট মৃড়ে ?
বামুন ব'লেই নাহক প্রণাম করতে, হবে হস্ত জুড়েন্?
মরদ ব'লেই মর্দানি কি সইবে নীবব মাতৃজ্ঞাতি ?
আত্মালাভের প্রসাদ-পবন জাগ্ছে রে, স্তাধ্ নাইক রাতি।
সঙ্গাচত চিত্ত জাগে দেখিস কি আর চিঠার চেরি,
হিসাব নিকাশ করতে হবে, আজু আবেরী, আজু আথেরী।

वृक्ष-भगरक्षत्र वङ एक राख्या शालांग-भगवा याटक हुए है, मारालकोत्र कत्रह मारा मर इनिया माफ़िए उठि ! मुक्ष विवास क वृष्ट जलव हा १ एड हिमाव हा हे एड हा वी, মাত্রৰ ব'লেই সকল মাত্রৰ ইজ্জতেরি করছে দাবী; ভাবৎ জাবে শিব যে আছেন রুদ্র ভিনি অবজ্ঞাতে नि'थल नरत तन् नाराइन পूना-भाककण कारछ। তাঁর সাড়া আজ সকল প্রাণে বর্ণ-জাতি-নির্বিশেষে বিখে নিকাশ-আথেরী আজ নৃতন যুগে, যুগের শেষে। हिनि व'ला हूप या था छत्रात्र हल्य ना छात्र मछमागती নিখুত হিসাব তেরী করে। রেখোনা ভূল খাতায় ভরি। মদের গেলাস আছ্তে ভাঙো মুক্রবিবদের ওড়াও হেসে। मन भूरण वन् मरमद्र कथा जम्र वृद्ध निम्दन घुना, यक्तरक वन् यक् रमाका, शानिम विना त्रमान् विना। माम-निक्रणन भान्तिय कत्र त्रीक य जात्र कन् त्र हूँ ए ; মধুফলে মিল্লে পোকা ঠাই হবে তার আঁতাকুড়ে। मका कथा वम् (थानमा, कदिम्दन ভर्म निम्मा-गानि, মিথ্যাবাদী নাম যারা ভাষে ভাদের মুখে দে চূণকালি।

পাওনা-দেনা ঠিক দিয়ে নে দিল-গোলামীর নিকাশ ক'রে, মাত্র আবার মাত্র হবে বিশ্বে বিশ্বনাথের বরে। कुक् निट , পাভার পাভার খরচু জনা তৈরা রাথো नामा-क्कूत ७ प्र द्यादा ना, हिक् भिरम्र ठिक् देवरी थादमा । र নতুন থাতাব বেদীগ পাতায় স্বান্তকে কে সিঁচর দেবৈ,— ভেরী থাকে।; অরুণ-উষায় নতুন জীবন আস্বে নেবে। नीमर अञ्चलाय प्रदा

পাঁচটা টাকা

देहल भारमद म ज्वान्छ। नवनीरा गर्भा- "बावाद किर्त चार्ड (श्रील (कन १" এসে জমা হয়েছে। দিনকতক আগে এসে "সে যে এক মন্ত কাণ্ড হয়ে গেছে रात्रा चारतेत्र छिभन्न (छाते (छाते कुँएए चन्न ८५१४ (शा मा।" न्डन चर्डिथिय च्याविडांव इस्य गांख निड्डन विम्हान, "कि इस्य हि स्य १" शका शेवरक दकानाइन-५क्षम कर्प जुरनएछ। चारत्र चारत्र भकलकात्र मुर्थने এर बाजारमत्र कथा हाए। जांत्र टकाटना बाटगाहना नार।

टिमान्त्र मान-वात् फिन्छ्यन वाद्यत्र छो भागमाना ब्राह्माचट्च नानाटन वटन जबकाबी কুটছিল। এমন সময় শাড়ার বি মজলা সেই সকাল বেলাভেই একমুখ পাণ চিবুতে চিবুতে वाकात करत किरत जामराउठे चत्र थारक वान्य भा बटन छेठ्टनन, "हारिव मनना, ভোর ५० (मत्रो इल (कनर्त्र ? (कान् कूरलाध वरम शंझ কবছিলি বুঝি ? রান্নাবান্না আঞ্জ হবে কপন, वन (मिथ !"

মঙ্গলা হাতেব মাছটা নামিয়ে বেথে বল্লে, "है। मा बाब এक है (मन्नों इरम र्शिष्ट, वांकांव থেকে খুরে আবাব ঘাটে গেমু কিনা, তাই—

शास्त्र भूनामार्डित कर्छ। मर्ल भर्म (बंक मङ्गा भङ्गा भिमूर्य बांड वैक्टिंग नम्हण,

ক ভকটা গুছিয়ে নিয়েছে, ভাদের ঘরেও গিলি বাগ ভূলে গেলেন, খুব আগ্রহ করে

कथां। ভালো করে শোনবার জন্তে মণি-মালাও বঁটির উপর থেকে হাত ভুলে সবে বদ্ল। মণিমালাব এই অল কিছু দিন আগেছ বিয়ে হয়েছে, একে নিভাস্ত গরিবের খরের মেয়ে, কাতে একটু বেশা বয়সে বিয়ে र्याट वर्ण (म এक्वान्त्ररे धत्र कत्रर्छ वात्रख करत्रह्, ७व वार्भव वाष्ट्रोत विष्कृत-ব্যথাটা তীক্ষ খোঁচার মত বুকে বিধে আছে, দেটা সে কিছুভেই ভুলতে পারেনি!

मजना वन्त, "क्टब्र कि (नान मा, चार्ड कान् शाकीत्मत्र मत्था नांक ्य लाता श्रह् বলে কাল বাভিরে ভোভ্ডমুড় করে অর্জেকের (छत्र (वनी लाकडे পानिয়েছে,তা গলাই বাুनির **६८व्र अकछ। काठ स्मर्य अर्फ्डिंग, यगरवा ्रिय** मा, (मरप्रेटें। (यन श्रिकत्मत्र मक सम्म ""

मिनाना वरन डेठ्टना, "क ड हेकू (मरत्र १ থুব ছোট্ট ?"

शासात वसनि, क्लिकांत्र मत कूँ एए थूँ एक करत्र किनि क हरण शिलन ; मिनानांत्र যাব মেয়ে । কে ধরবে বলৈ ঘুরছিল, ডাক্তার শাশুড়ী খনে ছুটে এদে বললেন,"বামুন ঠাককণ

গিলি বললেন, "ওমা,—তারপর ০ পেলে তামাসা হয়েছে বাপু।" भागीटक १"

"তা আর পাবেনা! ছেড়া কাঁথায় মুখ र्यु भए भए काम। शब्द न, को कमात्र গিয়ে ধর্লে, ডাক্তার বাবু গিয়ে গ্র'চারটে ধ-ক किटिंग (म**रब दिनाटन** कुरन निरम।"

গিলি আশ্চর্য্য হয়ে গালে হাত দিয়ে वन्त्वन, "वराक काछ। मा, ना, राजमी গো !"

শাশুড़ो এन টু সরে গেলে মণিমালা বল্লে, "সে মাগীটা কি রকম শঙ্গলা ? এই সব বোষ্টম याशीरमञ यजन ?"

रम्माव (५वी करत्र यामाव यथवाधी। এह मनम देकांकग्रट हां भा भाष है शिर्मि हन, এইবাবেই কিছু মুস্কিল হল। কেন-। সে ভিতরকার সম্প্রথাত হ ভাগিনীব নামে ७३ मानी'हे। क निष्कत (ठार्थ (म॰ वाद क्रिनिज आत्मानान मात्रा (मन्छा (जान्नाक) স্বিধে মোটেই করতে পায়নি, দেখাত গিয়ে কেবল লোকের মুখে শোনা তার কাহিনী টুকুই সংগ্রহ করে এনেছিল মাত্র, কাজেই মণি-मानाव कथात्र উखरन कि स्व वर्ष्ट छ। भ ভেবে পায় না, ভবু বৃদ্ধি জুটিয়ে ভাছিল্য प्रिथिष वन्त, "তা उभनिके क्र कि ! মুরে আগুন! পোড়াবপালী মরতে আর ঠাই পদ্মনা—"

্শিশ্ মুজলা মাছ কুটতে বস্লো, বামুন ঠাককণ ক্ষেমন ব্রেমে দেব ইাড়ি উন্নে বিশয়ে দিয়ে তথান কেবল গলার তরজ-ধ্বনির সজে একটা

वल्लन, " हार्गा दोशेव ऋन, कृषि वला मारक — यागि ह याहे वाटि এक ट्रे स्थ यागिरा !"

"ছোট্ট ন্য় আবার! সবে জন্মেছে, নাজ মণিমালার উত্তর শোন্বার অপেকা না নসে ছিলেন, রাজ্যির লোক জমা হয়েছে।" আবার গেলেন কোন্ আকেলে? ভাল এক

> ক্তি হতাশ হয়ে কিছুক্ষণ পরেই বাসুন ठाकन्न । फिन्न क्या है । क्या कि भागिन, चारे বল্লেন, "না, সে আবাগী মেয়ে নিয়ে ঘরে তুমার দিয়ে বসে আছে, কিছুতেই ছুয়ো Cकारलमा ।"

> न्यमा थाए फिरिएम वन्तान, "ও अमन करत्र जात्र कितन थाक्टन १ (भेडे जनारम भरत শাণ নই বেক্ৰে ভখনই দেখো ^ত

> বামুন ঠাক ৰুণ বল্লেন, "কন্ত লোকেই যে क क कथा वन एक, हिक कथा कि छ। वाब वाब (या .नरे।"

এমান করে বেলা চপুর হতে না ১০০ প্তিপাবনী গঙ্গার দৈবতে সেই বন্ধ কুঁড়ের रुख फें हुला किन्छ मिन्न प्रका दिनशांत्र की विष আব তিন দিনের মধ্যেও ছুর ছেড়ে বেবিয়ে काउरक (मभ मिला ना ।

যারা তামাসা দেখতে এসোচল, তারা **म्हिन्स प्रथानांत्र जाएन-भारम पूर्त किर्**त গেল, মধ্যে মধ্যে কুধার্ত শিশুর কারার শকও **(क्छे क्छे लिटन शिल, किछ मि मारियद शिला** (क छ खन एकं शिर्म ना।

यथन मर्ननाथीत मन या प्या-आजा क मान,

तुक-काति काञ्चाद्र भक्त (भाग भ्या । ज्या मिन नाकि नाकि नाकि भाग धक्ते। नियान (क्रांत থুব চাপা গলার স্থর, সহজে ধরা যায় না।

आदि क'। इन क्टि जिला (मिन्न ठिक ज्यूत दर्गा, जाविषिक विद्धाननी एक , जारन গুটি-ভবা আম গাছের ডালে লুশিলে শেষ वमरस्त्र कावित्तव कूरून-भीत इंडा भार (कामा माछा-अस काणां ८ तहे। श्रेथद বেশ যেন আগন বৰ্গণ বৃহিত, সঞ্লে লাছের জ্টার মত পানা ভাটাগুলো পট্ পট্ करव कार्ड পए हिन!

(मिनिटो ९ রবিবার। •বে টেশনে রবিবাব-(मामवाद्यत विठात न। भावरण ७ (मिन फिन-চুটি নিয়ে বাড়ীতে মশারর ভিতর দিবা-নিদায় मध हित्नन।

সে ঘুমায়নি। অন্ত ঘরে জন-িনেক সম্বুয়সী भारताम्य निरात्र (म '६क' (कर्छ क्छि (थलार इ वार्माह्य । वाष्ट्रीत भार्ष्य ए। जान नावृत वाष्ट्री: তাঁর মেয়েও মণিমালার সমবয়সা, সে সম্প্রত শশর বাড়ী থেকে এসেছে, ভারাণ সেই ঘাটের হতভাগিনীর কথা নিয়ে খুব হাসাহা স কর্ছিল, মাগীটার কাল্পনিক রূপ বর্ণনাও वान यात्र नि, जात्र य मात्रा शाद्य मात्री नित्य ना-इत्र जाना हन्स्टान त्राधाकुष् नायित हार् ष्पाट्स षात्र क्लाटनत উপব अधाधत्र कि देवकाव ভিলক আছে, এ-বিষয়ে আব কারো সঞ কারো মতের অমিল হল না।

নানা কণায় ভাদের গল্পেঐগতি অন্তদিকে कित्रन। এकि । तरम मनिमानां कि किकामा युमछ मिछ। मूहार्खित मधा जाता पूर्ण जिल्ला कंत्रल, "जूमि कि अथन वालित वांधी याद्य (य, जिनामनकात उँदर्शामित शत नमका मा

बन्धा, "। र करत्र नि,— कानित्न छ।, এ श পাঠাবেন रिक्त ना পাঠাবেন।"

• ডাক্তাব বাবুর মেয়েটি বলুলে, "কভাদন এসেড তুৰ্ন ভাং, বেশা দিৱ ও নয়!"

মিপিমালা একটু হেসে বললে, "কেন, যত-मिन विद्य करबरक छ • मिनई ७ आछि।"

সবাহ মিলে বলে উচ্লো, "ওমা, ও কে Gt. ?" .

मनियाना मूथ घि । अद्या (मथ त्या त्य, अवि शर- रवा शारमा उक्तरवा कृष्टेकृष्ट सम्बर्ग स्माप टरम जारमंत्र इकाटन द प्लाटम द्यांत्रीं च द्रव ज्यन वावन भंदोशी जान क्ल में नरन भन म न्यांत्र डेनद वर्ग नर्डक। टांत किंदि মুখখান ঘিরে রেশমের মত নরম কালো চুলের গোছা ঝুলছিল। বড বড় চোথ ছটি মাল্মালার দিনে ঘুমা'না তনভ্যাস, ভাত তা বিভাব যাতনায় ভারি। বিষাক শরে মরণ ১৩ চোথে যে আন্ত করুণ গতরতা ফুটে अंद्रे, शत मूर्थ मिना दिशा दिशा क्रि. **উঠোছ**ः।

> অসহা োদে পথ হেটে এসে সে ক্লান্ত-शास्त्र चाम एक हिल। । । । । । । । अर्थ अ कांकि बाम्र उहे भि वन्त, "এ १ कि এখনকার ডাক্তার বাবুর বাড়ী ?"

यिवाना वन्त, "ना,- (कन ?"

মেটো ব্যথিত কণ্ঠে বলুলে, কেন ? ভার माज जामात (5 र क्या जारक (य। এই বোঝাটাকে যে আমায় বইতেই হবে ,"

वज्यान मकरन (मक्रम त्य जांत्र (कारन বোদে-আঁচা মলিকান মত একটা শুল স্কর

(भाषा भाषा (वित्राय भाषा ।

এত টুকুও তো मिल्ला ना। এর গায়ের **कान-शाम्बर्ध कार्या कार्य कार्य कार्य** তিলকু-ফোটা কাটাও নেই,বরং মাথার এলো-মেলো চুলের মাঝে দিন দশ-বারো আগেকাব পরা সিন্দুরের চিজ্ঞ দেখা যায়। কাতে সধবার চিহ্ন লোলার আছে, কিন্তু এ স্বাব্যব-স্থার সজে ভার অবস্থানা এমনি বেমানান যে ७ हिरूख्याव मिटक एवन ३ इस्ब हिर्देश शर् ना। এ य निराष्ट्र किं, मन्नार कानशैना বালিকা মাত্র।

ডाउनाव वाव्य (मर्ब नम्रामन, "ডाउनाव বাবু ভার কি করবেন,বল ?— মেরে কি _ নামার নয় নাকি ? ভবে ওুমি তথন নিলে কেন ? বল্লেহ ভ পার্ভে—"

(मरः जी दें। भारक कां भारक वन्त्रक, करो, না, এ আমারদ, সে জন্তে আমি কিছু বলতে আর চাইনে, তবে মানুষ করতে হলে যে এর व्यत्नक किहुने महकाद्र।"

এक ही दमरत्र कम् करत्र वरण वम्रा, "(कन, त्यायव वान त्रात्मन त्काषाय १"

मदल मत्न करब्रिक त्य धरे मन्यास्त्रिक খোঁচা থেয়ে মেয়েটি বুঝি লজ্জায় মুগ ঢাকবার ठाँके युद्ध भारत ना, विश्व मा का कि हुने कत्राम ना, माधाछ। नोष्ट्र करत्र पूर्ण करत् वरम उठेग।

ধার্মানো বাণ ভার উপর ধর্ষণ হারু হলো।

সংখাচেব মাপা থেয়ে শাজ এট অভাগিনী কোথায় বেড়াতে গিয়েছিল, ফিয়ে এসে বাড়ীতে পা দিয়েই এই অগ'রূপ খেত-শতদলের কিন্ধ কলনাতে রং ফলিয়ে ভারা এর অ'র মত রূপগ'টিকে দেখে অবাক হয়ে দাঁড়াল। যে ছবি এঁকেছিল, আসশটার সঙ্গে ভার একটু পতে মেয়েদের সজে কথায় বার্স্তায় বুঝতে পেরে বল্লে, "তুমি এসেছিলে কাব मरक गा १ ७३ (मनाव मिरन गकांत्र चार्छ এক। তো আসোন।"

> ছল ছল্ চোথে মেয়েট বল্ল, "মান সজে এসেচিলুম, মা कल्लाश मारा পেছে, তাম একা বাড়ী যেতে পারছিনে।"

" তামার বাড়ী বোথায় গা p" "কালনায—"

"কালনায়। তা কপাল। কালনায় আর ক্মি নিজে যেতে পাবো না ৪ ষাবে ৪ আমি লোক দিতে পাাব।"

"না--" বলে সে একবার সকলের মুগ পানে চেয়ে দেখলে, ভাবপর নিজের মুখখানা कां हुमा हु करत नथ भिरम मानि थुँ छेट नाजरना। বোধ হয় এতকাণে দে বুঝা । পেৰেছিল যে, এদেব এসৰ কথা বাৰ্ত্তায় নিছক দয়া ছাড়া ঠাট্রায় ঢাকা মজা দেগাও ঢেব রয়েছে। একে ভো কুণা ভৃষ্ণায় ভাব সর্বশরীর যেন এলিয়ে পড্ছিল ভার উপব মনেও ভো কম ছঃখ छिन मा। कारक हे मूर्थ बाद रम अरमत कि वनद्व।

(मरम्होत मना स्टब्स मनिमानात किन्छ তথন ভারা দহা হল। এ দয়টো হদয়া তার উচিত কিনা সেটা আর ভার ভারবার অবসর হল না। মেডেটীর শুক্নো সান ठादिणिक एश्टक अध्य अभ्यान-विकारणत मुर्थन भारत रहेरा तम वन्त, "कृषि किছू খাবে ৮ তোমরা তো বোষ্টম 🕍

ব্ৰাহ্মণ—"

"তা—আমবাও তো বামুন, গাবে व्यागामित्र दोशा ?"

উপর শিথিল মাথা রেথে সে ক্লাস্তি জরা কাডে দাঁডিয়ে কি যে করবে ভাই ভাবছিল। ञ्दद वन्त, "आः मार्गा।"

নাড়া পেয়ে কোলের কচি মেয়েটা কথাই তাব ননে হল। ক্কিয়ে কেঁদে উঠ্লো তথন সে আবাব সেয়েটীর উপর তার দয়া হয়েছিল, শোড়া হয়ে বলে সেণকে বুকে চেপে নিলে। তাকে নিয়ে যান স্বামী ও কিছু বলেন, এই এণিয়ে দড়লে আব তার চলে না।

घत (शरक वांडाव शिक्षत शनात आख्यांक भाउगा । जात । जात धुम (ज्या कारन कार (क्रांच्य कांद्रांद्र भक्त रिशाह, किन ननादनन, "भक्तां, ९ काव ७ त्व कात्व, छाभ् छ। । । । । । এ य आगारमत नाष्ट्रीर ७३ मरन अफ्ड, छाथ ८ श त्क कारम !"

মণিমালা ভাড়া ভাড়ি ানজেব ঘলে দকে চাইলে, পাছে তার স্বামীবও ঘুম ভেঙ্গে গিয়ে थादक! नीश्तिय नीश्तिय ७८क विनाध कत्रवाव कञ्च भाषा पार्व शिर्म ५क लो, शाफ़ात अग्र (य (मरम्रा किन, **) त्रां ३** (मर्के मन्ध्र निष्कारमय वां छ। व मिर्क हरण रंगम । मिन्। मार्व শাশুড়ীর অথগু প্রতাপ ছিল, স্বাই তাকে ख्य कब्राहांग

9

একথানা কাপড় আব খুচরো কিছু পয়সা मिर्म डिथाबीटक विनाम कंत्रवात कर्छ गाँवमा ।। घटव हृदक्छिन ; किन्छ घटक शिद्ध म मिथान, তাব স্বামীর মুম ভেকে গিয়েছে, তিনি বালিশে दिशान मिट्रि (ठांच (ठांच वर्ग पार्टिन;

(म वन्दा, "ना, व्यायद्रा (वाष्ट्रेय नहें, व्यायद्रा) मूथथानि अर्थान व्यक्षकाद एव अर्ह बाद्ध छैदि ফাঁসির হুকুম পেছে।

স্বামীৰ দামনে কাপড বা প্রদা বের कराज भाग भाष्ट । कि। । आवाय कार्य (म क्षांत कार-। क्रीन ना मिर्य हाँदेव किछामा कर उरमन, ° এই ভ্রে দে বাকোর আণা বাকা বিচাতের ঝলকেন মভ,অনেক

> ভেখে সে স্বামাব কাছে কিছু বল্ভে পারছিল না। মেধেটী আবার ভাব বাড়ী বলেছে, কাল্নায়। এই কাল্নাব সঙ্গে ফণিভূষণের ক শান যোগ আছে ***** মাণ্মালা তানতো।

भ नभानारक विश्व कत्रवात्र आर्ध कान-ভূষণের চারত্রের স্থনাম বড় ডিল লা। **ठात्रज-(मार्यके वार्यि कार्ष्ट् कार्यिक कर्य** माभात्र वां डो काल्भां स शिर्य दम व्यक्तिक ছিল। দেখানে এফটা নি গ্ৰন্থ স্থাব স্থাবা विध् ११ त त्यादारक विषय कर ए ए न वाधा रुष् মামা মামা তার তথন এ বিয়েতে যোগ ালরে ছবেল বাল সাজত একরকম একবরে-. शाक् इत्य आत्र

र्भागमान व नाख्या এकथा श्रीकात করবার পাত্র নন, বামাকে বলতেই ভরসা र्य ना न्यु (मन्युक भनाई ध क्या वन्छा, কাজেহ নিঃসংশয়ে বিশাস না করতোও र नमानाच मान अक्षी भीतन जाना छिन।

श्वामीत नित्क निठ नित्र (ठात्रकत छावि খুণতে খুলতে সে বল্লে কি গো, অন্ন চূপ করে বদে আছ বে।

क्रिकृष्य पाष ब्लाइ वन्त, " এमनिहे---कि (वन्न कन्नदव १

कथाडे। यलके मेनिमानाम इस इन, त्रामा लाक एक्टम, "मन्या, खत्न स।" यिन प्यादा कि क्रू कि छाना करा वरमन! এই ডाक भारत है ज रम ভिवित्री स्मरत्र किन्छ कृष्ड्यण ब्याव किছू ना बरण हुन कर्त्रहे त्रहेण।

সহসা শাশুড়ীর ভীব্র কণ্ঠের ঝঙ্কার শুনে ভয়ে সম্ভত হয়ে মণিমালা ঘর থেকে বেবিয়ে **(मश्रम (य শाक्को (ताम मागवाव कर्य** मामादनम ছ्राद्रिय कार्छ छात्राम माँडिएम वम्टिन, "हा। मलना, कि जातिन বাছা,—ছি ছি, গেরস্থোর বাড়া-ঘর, দে ওকে **डिठि**रंग ८४,—वीगशीत ८ग्रंग, गाला, गड्यां ७ करत्रना अकडू।"

मांडित बार्ट, मूथथाना मड़ांत्र में माना; कक्करना। हिल्लिय के बाभीत स्मिक्षक ह्रित्वत्र मा नित्रीह् स्नम्त्र कात्थ ७ म- विस्त्रन्त त्वाया माम्र. त्वथा ह !" मृष्टि (यम अका-हार्या। जनाहाद-व्यानिका-क्रिष्टी मक्षना वनत्वम, "७। खेरमद्र मग्ना मा, यथन সম্ভ-প্রস্তি বালিকার শরারে আর এমন বিন্দু- যার ওপর দয়া করেন"— कुथानिक (म हेक्कात (वर्षा जिलास स्मा थूं एक (भरननना। मक्करन, छेरनत या थूमी সে দাঁড়িয়ে কাঁপছিল দেখে মণিমালা বল্লে, করুন, ভুগবেন এর পর নিজেরাই !" "বসো, বসো, তুমি পড়ে যাবে যে!"

हार ना-"

मक्नमा वम्हान, नारू भारव अरक, मिरम (यर्ज भात्रिक ना! মাওনা মা, অত বকা-ঝকার মরকার কি बाश्वा क्रिक्त काहेट अमिटि, जिस्क विस्त्र वांड, शिक्त वांवाव यदत हरक পढ़ लिन। विस्त्र " " " TO " " TO " " " ८कमन ६वट्मा ™...

গিলি বললেন, "সেই ভাল, যা মজলা, ঘর থেকে চাুবটি চাল এনে দে ওকে !"

মণিমালা একটু থতমত থেয়ে বল্লে, মঙ্গলা চাল আন্তে উচ্ছোর ঘরে ঢ্কৃতে "এই একখানা পুরোনো কাপড়!" বাবে, এমন সময়ে এ ঘর থেকে ফণিভূষণ

> **Бम्दक** हाति पटक (हस्य (पश्ट नाश्टना; এ যে তার সেই "হারা বাঁশীর সাডা"র মড অতি-পরিচত প্রিয় কণ্ঠ!

> সব অপমান, লজ্জা ও গ্লানর কথা এই একট্ট সাড়ায় যেন নিমেষে একেবাবে ভাকে ভুলিয়ে দিলে; মঞ্জা ফিবে এসে তার ভাতে भी हिं । तिका खर्म । मरम ; यक ठोटि लात বিত্রী স্লেষের হাসি।

शिक्ष (भाभ क्षारत कूरन वन्तन, "अभा, उ कि । शाह-शाहरी होका इन जिल्हा वात-মেয়েটিপা দিয়ে মাটি চেপে শক্ত হয়ে ব্রভো কর্তে ৩ আম চ'হলে অত পাইনে

মাত্র শক্তিও সঞ্চিত ছিল না যে তার পা 👚 😇 , তাইতো। দয়ার আর পাত্তর

ভিথিয়ী তথনো টাকা- হাতে করে গিলি বল্লেন, "তা বসো গে বাছা, ঐ দাঁড়িয়ে ছিল। যেন ঐ তার চেনা গলার স্বরে গাছ-ভলাতে, এ গেরস্তো-বাড়া আর বস্তে তাকে বাত্মশ্রে পাষাণ না কাঠের পুতুল করে क्टियरह, -- वक षदत्रत क्टिक एएस एम जात

> कड़ा (ब्राप्तवः चाँ ह महेट मा (श्रव ঘুমটুকু ভার তথনো শেষ হয়নি, তাই

वाकों हेकू त्मिय कब्रांक जिनि कावाद खाद हाउँ तिल, ति वलाल, "आह्या धारन हुन करत পড়লেন।

মাথা হেঁট কীরে আন্তে আন্তে মাণ্মালাও গিয়ে তথন ঘরে ঢকলো, পাছে ওর কাছে थाक्टल (मथरण माल्डी, कि शामी त्रांग करतन ।

मक्षमां ७ जांव (कांन कथा ना वर्ग একরাশ এঁটো বাসন নিয়ে মাল্ভে বসে र्शिण। त्म व्यत्नक निर्मित्र की, वावृत्र मुसात এঃ বাড়ম্ভ বছর দেখে গিন্ধির চেয়ে সেও বড কম জলে যায়নি, ভবে কিনা তথনো বাবু चात्रहे खार्मिह्रामन, कार्याहर मूच वक करत्रहे আপনার রোখ টা সে চেপে ছিল।

वामरन कां जित्र शक्रांत न्यां प्रतिश्व रम **(हरम दिन एक एक किल्कोड़ी अवस्त है। कर्द्र** ८५ देश कांक्ट्र बारक, -- ८म बार किছू वनामां, (कवन मान मान जावान, जादा কিছু চায় লাকি।

ঘরের ভিতর থাটের উপরে হাত ছবানা "বারে লাল হয়ে খেমে উঠুলো। উপৰ পানে ভুলে ভাকিয়া বালিশ ঠেমান দিয়ে क्षिष्यण (यमन दरम किन, (जमिन ब्रह्म, छोटक बाम्ए (मरथ म ार्क किडूर) वन्त न।

এकमर्क शांठ-शांठिं। होका मान करत ফেলে ভার মত পাঁচশ-ত্রিশ টাকা মাইনের লোকের যে নিয় ভূপ্তির আভাস জাগে হার মুখে ভার একটু রেখান ছিল না! মণিমালা रांति मूर्थ वल्ल, "ज्ञाम 🕬 तन्थिति मञ्ज विकल्पन पांडा इरा भए ला, मां किन्न वार्ड মোটেই খুসি হন নি।"

क्रिवृथ्व क्रांता छेख प्रक्रित ना (यमन চুপ কবে ছিল ভেমনিই এইল, দেখে মণিমালা আছ (कन, वन मिशि ?"

"। कि कद्रावा ?"

",কন, কৰবার বুঝি আর কোনো কাজ (नर्ग। धर (ज। धर्मि मान य ब्राल, भ (अ) একটা কাজ হল।"

"ा इव ।"

"না, না, সভ্যি করে বল না গো, অধু শুধু चा अ मा श करन १"

"किन कारात्र। छोका बाट्ड थाकरमञ् লোকে দাতা হন, এর আর সত্যি মিথ্যে কি। रहा । । इस्त कार का निष्ठ हिला निष्ठ हो है हिटन, আর মামার হাতে টাকা ছিল, দিলাম, মন্দ কি করেছি।"

"মন্দ কবেছ এমন কথা ত আমি বলিনি. — किन्न यिन श्राम ८ शामात्र मार्यत भाजिएक (प्रश्ट ड-

"আছা, থাক্"—ফণিভুষণের মুথ একে-

"হা হাল না শাবাব। কিন্তু তুমি এখনো শুয়ে থাকুৰ নাকি ?"

"না, এন ডঠি-- কটা বাজলো দেখতো।" मिन्याना मिं ५ (मर्थ नम्रान, "शांहिं।,---पदकरादव कै'होत्र काहात्र !"

"উঠি ভা হলে,—ও গান করছে কাবা ?" "ডাকাব বাবুর বাড়ীর ছেলেরা, জান্লাটা श्रुत्म (स्व ५

"नाउ' वरल क्षिन्यन উঠে कानलाव কাচে গিয়ে দাড়াল। 'ডাক্তার বাত্র বাড়ীর ছেলেরা তথন গাদছিল,

"আনি নিশিদিন ভোমায় ভালবারি জুমি অবসর-মত বাসিত্

व्याभाव व्यक्तिक ভिष्क (পर्य १ एवर १ एन এथारन এ (राष-।

উত্তর অ্যুকাশে ঘন কালো মেঘের সলল তার মুগও বেশ গভার হয়ে উঠ্লো। আশায় উনাথ দেখা চ্ছল।

ফণিভূষণের চোখ পড়লো উঠানের মুথে,ভিজে ভ্রমরের মত ছটি বিপন্ন সজল চোধ — হায়রে, এই তার স্বামী। ८ । ५ । ८ ।

নিজের ফাঁসির ভয়ে পালায়, তেমনি উদ্ভান্ত मात्र मां धाला। ७,व ८०१व-मृत्यत्र ममञ्जूषी थ २७ होका पाठहो पट बाह्ह।

পাঁচ-পাঁচটা টাকা। অপ্রত্যাশিত তথন একটা কর্ম্যা প্রবলভার চেকে গেল!

ভিশবিণীটা এথনো দাঁড়িয়ে থাক্বে, এমন ভার সরে যাবার রকর্ম দেখে মণিনাণ সন্দেহ তথন অন্নি কারো মনেই ছিল না। দেখতে গেল, বাপারটা কি ? তার ফলে ়ভার সন্দেহটাহ ঘেন চোথের উপর রূপ ধরে वांडेरत রোদের ঝাঝ তথন কমে এসেছে, कूটে উঠ্ছো। অপ্রিয় সভ্যের আবিফার করে

আভার একটি চোথ জুডানো সিগ্ধতা মাধা। তুর টু বিসূত ভাবে দাঁডিয়ে থেকে সে ভাক্তার বাবুব কুলবাগানে সমস্ত কুলণাছগুলিব ধ্রথন চুটে উঠানে এসে নামলো, তথন মেয়েটি মাথায় রোদ লেগে দেগুণিকে শেন" বৃষ্টির চলে গিয়েছে। চিনতে পেরে চোথে দেখেও সে তার পিয়তমের অনিচ্ছা অনাগ্রহ ব্রো তার স্থেব বাধা হ'য়ে থাকলো না। सावाशास, राथास विक्षिक श्राक्षित्र मक मान्यानाव हाथ क्टि कन এमে পडला,

তাব পানেই অতৃপ্ত দৃষ্টিতে চেয়ে আছে, –সে মাণমাণা অনেকক্ষণ কাঠের পুতুলেব मर्ड छित इस्स म्हिशालिइ माफिस बडेग,--হত্যা-কাগু শেষ কবে খুনে যেমন ভারপর ঘণন হঠাৎ ছঁস হল, ভণন সে (मथ्राः, 'अंत्र माम्राम्ड अक प्रे-म्राच मिनार्खन वाकिन हर, क्विन्यन कान्नात काह एथरक शक्य वास्तान नाम का छात्र वक्तांथा क्रिनव

बीनोहां त्रवामा (नवा।

চুড়ের আওয়াজ

চুডির আওয়াজ, আর কিছু নয়, একটু ক্লিঝুণি— ক ৩বার যে কভই হুরে বাজে । হাই শুনি। ্সানার হাতে সোনার চুড়ি, কে কার অশকার ? नम्र म् । । विश्व कारन हुफ़ि कि धन छात्र ! चू ब्राय भिर्द एका छै छ छि दर भन क ब-भून আভাল থেকে চম্কে দিয়ে করায় কত ভুল ! শক্ত-ভাড়িভ প্রাপের ভারে জানার কভ কথা, (कडे बारनमा नाख्क नधुर पृष्ठ मूथरणा !

4/87 B

নিশীপ-রাতের গোপন-গভীর মিলন-মধুর আদে
ভক্রণ যুবার ক্রিলাকাভর নয়ন মুদে' আসে;

চম্কে ওঠে, কোথায় বেন বাজ্ল কাঁকণ কার!
কই—কোথা নয়! ওই বে বাজে, গুন্ছি পরিষার!
সক্রী নীরবঠার মাঝে কি-ওই বাজে কানে;
ভ্রার-পাশে ওই যে বাজে, বাজ্ছে সে কোন্থানে
কাণ সে বাজায় আপন মনে, শাসন নাহি মানে,
সভিয়-বাজায় মিথ্যা-বাজায় প্রভেদ নাহি জানে।

এমন সময় ঝুন্ঝুনিয়ে বাজল নারান্দীয়
চুড়ির আসল সাঙতারাটি, তন্ত্রা ছুটে ষায়।
কি স্থা বাজে সকল শিরায় শির্শিরিয়ে বে।
একটু ঋধু রুন্ঝুন্ আর রিন্ঝিনিয়ে রে।
গুমট্-ভাঙা দম্কা-হাওয়ার পরশ লাগে গা'য়,
সকল ফুলেব সকল স্থাস জাগ্ল লহমায়!
আঁধার মরে আচামাতে জ্যোৎসা ফিনিক্ ফোটে,
শীতেব শেষে প্রথম যেন কোকিল ডেকে ওঠে।

মানভরে আজ আছেন তেনি কথা নাইক' মুধে,
তিনটি দিনের পরে বাধ হয় প্রাণ গলেছে ছথে।
দোষটি আমার ছিল বাহা, দেখেন তাহা নিজের,
বুকের বাধা বাড়ছে, তর বায় কি মানের সে জের!
খন খন বাজিরে চুড়ি সাম্নে দিয়ে বাওয়া,
আমার ঘরেই খুঁজুতে আসেন বায় না কি বে পাওয়া!
চুড়ি বলে, 'একবারটি কওনা কথা ডেকে,
জুড়াই ব্যথা বুকের পিনে মাথা বারেক রেপে।'
কইব কেন ? হ'বই আমি হ'বই বেবসিক,
ভন্ব চুড়ির মধুব আওয়াজ, থাক্ব এখন ঠিক!
বাজুক, এখন ঝন্ঝনিয়ে, বাজুক রেগে কেঁদে,
বাজুক আবার নরম হয়ে—'মার্ছ কেন বেঁধে ?'
মিথো করে' খুমিয়ে বখন পড়ব ধীরে ধীরে,
এটা-সেটা রাখার ছলে বাজুক খুরে ফিরে।

হাতের চুড়ি এমন যথন বল্ছে মুখের বোল, কাজ কি কথার ? শুন্ছি বেশ এই মধুয় গওগোল!

मन् भएक, (भववात मिहे धर्मकामिन प्र भक्।— वृरे.चरब्रा क क्षं का का कि, भागन वज़ है कि । " वन्दल ८७८क, काल मकात्ल घुमि छाडाव भन मुथि टिंगांत (मथात एन भारे भा कारमत। থাক্ব আমি জনার ধরে' তোমার জয়ার চেয়ে, मिश्व खधु এक छि भणक नास्क्र भाषा (भरत्र।' রাত্রি জেগে' ভোরের সে-ঘুম ভেডেও ভাঙে না, कारन चारम किरमत चा खत्राक ? (थरम अ थारम ना ! বুকের ভিতর কেমন বাজে চুডির রিনিবানি, ভোরের ভজন এ কোন্ স্থরে গাইছে ভিথারিণী! আকুল হ'রে কাঁদন যেন ফিরছে নিরাশায়— "ওগো জাগো, ডাকছি আমি, সময় বয়ে ধায়।" ত্যার থুলে' তাকিয়ে দেখি, বিউনি খোলার ছলে ভোমরা-কালো চুলের মুলে আঙ্ল জ ১ চলে। একে একে সাপ-काछ। আর চিরুণ, প্রভাপতি, , मव (नरमर्छ, रथैं। १४ तम कि अश्रुक छर्ना । थून्र ना क' फिलाब निवा, कामि मर्द हारन, व्यम्।न हुष्टि वानात्र 'शदा कि सकात्रहे हाता! व्यवाक र'स्त्र (भथ्य (हस्त्र हित्र हित्र हित्र हिन्द्र इष्टे চুডिব इष्टामी (म, न्डन मूर्डशानी! চুড়িব আওয়াজ, আর কিছু নয়, একটু রুনিঝুনি— কতই স্থরে কতবার সে বাজে ভাহাই শুনি। শ্রীমোহিতলাল মজুমদার।

বৈদ্যাতিক বিশেষণ

(Electrolysis)

मिरात्र यम এक कालिनव विदेनाचात्र। काक्ष्ठे भारत ना। यमि ठाशाम्बर यथा मित्रा एडिड হয়। ঘটনাটি "ভড়িত বা বৈত্যতিক প্রবাহ (clectric current) প্রবাহিত विश्लिष्य।" क्यान कठिन वा ७ वन भवार्थित अप्त, जाश अन्त शक्तास्य मध्य भूर्योक **म**८४१ তবে সেই পদার্থের মধ্যে এক বক্ষ রাসায়নিক ক্রিয়া (chemical action) যে পদার্থের মধ্য দিয়া ভড়িত প্রবাহ দেখিতে পাওয়া যায়। কঠিন বা ভরল পবাহিত হইলে ভাহাব বিশ্লেষণ ঘটে, ভাহার भमार्थ धार् (metal) इटल बामाय्रनिक ক্রিয়া (chemical action) ३য় ना। त्रामाम्बनिक क्तिनामञ्च भवार्थ, य मधानक-ষয়হারা ভডিত-প্রবাহ কঠিন বা তবল পদার্থে यभाक्राम आर्थेल क वाहित रहेश बाह्रेट्टर्छ, (महे मक्शानकदरत्र कामित्रा (मधा (मग्र। তড়িত প্রবাহ তরল পদার্থে প্রবেশ করে, त्महे मक्षांगरक कडकर्खांग उडिड विश्लिष्ट পদার্থ আসিয়া উপস্থিত হয়, এবং যে मकानक्षाता छाङ्ड खवार (current of electricity) কঠিন বা তরল পদার্থ হুইতে বাহির হুইয়া যায়, সেই সঞ্চালকে অপর কভকগুলি ভড়িভবিশ্লিষ্ট পদাৰ্থ (যথা ধাতু ও আজ্জন বা হাইছোজেন গ্যাস) আসিয়া দেখা দেয়। যে সকল দ্রব্য ধাতু (metal) नव, मिर्शन उड़िज-यहरन अममर्थ अर्थाए

खैनविश्म भृष्टीत्मत्र शाकीत्म देवकानिक एफि ១- श्रवाह खाहात्मत्र खेनत निम्ना शहर् যদি তড়িত-প্রবাহ প্রবাহিত ২য়, ভাবের কোন এক রক্ষমের রাসায়নিক ক্রিগ वां विस्मयन घडेश थाटक।

নাম "গড় গ্লেষ্যা" (electrolyte) পদার্থ। যে সঞ্চালক (conductor) ছারা ভাডত পৰাহ বিশ্লেষ্য পদাৰ্থের (electroly te) मत्था প্রবেশ বা বাহিব হটয়া যায়, ভাহার নাম "ভড়িছার" (electrode)। থে যুঞ্চালক দ্বারা "বিশ্লেষ্য পদার্থ" মধ্যে তড়িত অর্থাৎ যে সঞ্চালক (conductor)* দ্বারা প্রবাহ প্রবেশ করে, ভাইার নাম "মুদ্বার" (anode), আর যে সঞ্চালক ছারা ভড়িত প্রবাহ বাহিন হইয়া যায়, ভাথার नाम "कुश्रात्र" (cathode)। (य व्यनानी দ্বাবা ভডিত প্রবাহ-বলে কোন দ্রব্যকে विभिष्ठे कदिएक शदा यात्र, भार खानावि নাম "ভডিত বা বৈত্যতিক বিশ্লেষণ।" সকল धार्क्ड (metals) देवज्ञाङिक विश्लिष्णव পর "কুদ্বাবে" (cathode) আসিয়া দেখা (१य। 'आंत्र आंत्रिष् त्राष्टिक्न् "स्वात" (anode) इट्रांड डेल्न्ब हुन ; माम माम

^{*} बाहा बाबा छाउँ अबाह कठिन वा छत्रण भगार्थ अर्वण गांछ करत, त्महे मकागरक (Conductor) 465 |

ভড়িতহারে (electrodes) আর একটি व्यिकिया हिन्छ थारक। अहे व्यक्तिया-বলে, বিশ্লেষণে উৎপন্ন পদার্থ, (products of Electrolysis) হয় বিশেষ্য পদার্থের সহিত श्वनित्रा यात्र, (dissolved) मटिए ७ डिवादत्रत्र (electrode) সহিত রাসায়নিক যোগে মিশিয়া থায়। ভড়িছারের সহিত রাদায়নিক যোগে (chemically) মিশিয়া গেলে আৰু তাহাকে মুক্ত (free) অবস্থায় পাওয়া যায় না ; ভড়িছারের অঙ্গীভূত হইয়ী যায়। ध्यम धकि छिनाश्त्रण महेग्रा विठात कत्रा उबाबिकारमञ् (नान्किडेनिक् याक्। व्यामिष्डित । जारेनिष्डे जारन + मरभा (solution of sulphuric acid) পানিকটা कल (काँछ। करत्रक थाँछि (strong) नाल् किउतिक ज्ञानिष् मिनारेटनरे मान्किडेतिक এাাসিডের ডাইলিউট্ "দ্রবণ" প্রস্তুত হয়— क्छितिक् क्यांगिष्ड), विश्लिष्ठे इहेम्रा साम i

 $H_2 SO_4 = H_2 + SO_4$

ৰদি প্লাটিনাম প্লেটম্ম (electrodes) রূপে ব্যবহার হয়, তবে "কুছারে" (kathode) व्यक्तिन (हाहेएड्राइन) गुरायत्र বৃহ দ (bubbles) দেখিতে পাওয়া যায় ও "হুদারে" (anode) এগাসিড র্গাডিক্ল্ (radical) আসিয়া উপস্থিত হয়। "কুদারে" আর্ত্রিজন (हाहे छा छा न) (यमन भूक व्यवहात्र (free) **मिरिक পাওয়া यात्र, "ऋषादि" তেমনি এই**

এ্যাদিত্ র্যাভিকল্টা (SO,) দেখিতে পাওয়া ৰায়° না ৷ তাবণে (solution) ৰে क्रम चारक ভाहात महिङ त्रामात्रनिक क्रिया-ষশতঃ এই এয়াসিড্ র্যাডিক্শ্টী আবার , এ্যাসিডে পরিসত হয়। যথা

এ্যাসিড র্যাডিকেলের বদলে অক্সিজেন গ্যাস "হ্বারের" প্লাটিনাম প্লেটে বৃক্তগুড়ি রূপে দেখিতে পাওয়া যায়। কিন্তু "সুদার" (anode) প্লাটনাম প্লেট না হইয়া যদি তামার প্লেট হইত, তাহা হইলে এ্যাসিড র্যাডিকেল্(SO4) ভাষার সহিত রাসায়নিক ভড়িত-প্রবাহ চালাইলে ওয়ারিকায় (সাল্- যোগে (chemically) মিশিরা ভূঁতেরূপ (ভাষ্র ভল্বেড Copper sulphate Cu SO,) ধারণ করিত। অক্ষজন অক্সিজেন বাহির হইত না।

> মহামতি ক্যারাডে সাহেব বৈহাতিক বিশ্লেষণ (electrolysis) সম্বন্ধে বিশেষ कतिया भनीका ७ भर्यादवक्कन कनियाहित्वन। তাঁহার অমামুষিক সহিষ্ণুতা পরীক্ষা ও ধার পর্যাবেক্ষণ-ফলে তিনি বৈহাতিক বিশ্লেষণ সম্বন্ধে হুটা সূত্ৰবিধি (law) জগতে প্রচার করেন। বিজ্ঞান

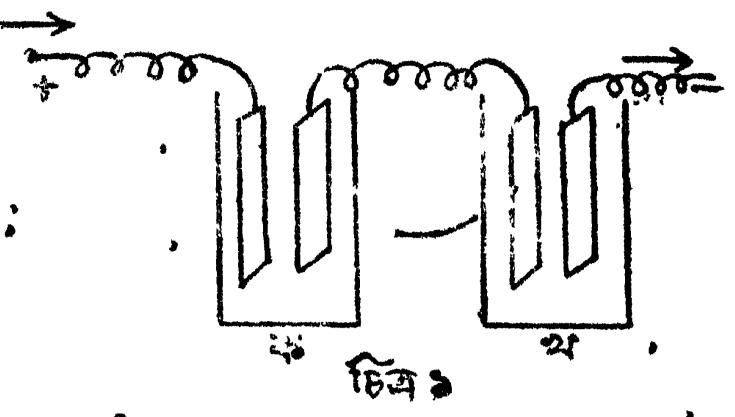
কোন তরণ পদার্থের সহিত অন্য কোন কঠিন বা ভরণ পদার্থ মিশ্রণে যে মিশ্র তরণ পদার্থ হয় कारण "अन्न" (solution) राज। नजा नाहजा छक्य शर्मार्थ राम क्रिया बाक्या हाई। जानि माहारक क्यम द्विम काठाया बादमक्ष बायू छाठारक "सवीखवन" विवशस्त्र ।

सगरक अहे इंडी विशि "कार्राताए বিধি" নামে প্রাস্ক।

বিধি-প্রথম ফ্যারাডে ाविध । विश्विष्ठाण छेदभन्न भगारथन পরিমাণ (১) প্রবাহ-নেপের (strength of current). (২) যে সময় ধরিয়া প্রবৃহ वहिट्ड थांटक टम्हे ममस्येत সহিত আহুপাতিক (proportional)।

ঘিতীয় বিধি। এক সময় ধাবয়া ध्यर्गाहर, এक है रुडि खाराइमात्रा उद्भन ভিন্ন ভিন্ন বস্তব পরিমাণ সেই বস্তর বাদায়ণিক সমতা"র (chemical equivalents) সাহত আহুপাতিক (proportional)।

ध इति विधि विस्मय कविशा भर्गात्माहना कतित्व कामता कानिष्क भाति एव, यनि निर्फिष्ट ममनवााणी निर्फिष्ट ७ फि.ज. व्यवाह প্রস্ত কোন একটা পদার্থের বিশ্লেষণ-পরিমাণ জানা থাকে এবং যাদ অস্ত কোন পদার্থেব রাসাহাল সমতা (Chemical equivalent) जाना पारक. তবে দেই দিতীয় পদার্থের বিস্লোহ্মবা-প্রিমাপ বাহিধ করিতে পাধা ধার। भाव এक हे विभागताम विषयि । अथय त्रमात्रण मगर्डा (Chemical equivalent) कांशिक वरन (नथा याक्। कांन এक मून পদার্থের (element) প্রামাণ্ প্রতালকে (atomic weight) তাহার মিলেনাক্ষ ঘারা (valency) ভাগ করিলে যাহা পাওয়া যায় ভাহাকে রাসায়ল সমতা বলে। মনে कत्र, कान निर्मिष्ठे भविमान उष्टिज-প্রবাহ সুক্ষরণে নির্ণীত করিয়াছে দুর্গ



(যে ভড়ি ৩-প্রবাচের পরিমাণ আমরা জানি) कान निष्मेष्ठ ममस्य **क्र**ण एटि ভिन्न । जन পাত্রস্থিত, (ক, গ, চিত্র ১) ভিন্ন ভিন্ন বিশ্লেষ্য পদার্থেব মধ্যে প্রবাহিত হয়, 'ক'-পাত্রের কৃষারে উৎপন্ন বিশিষ্ট পদার্থ-পরিমাণ यामे आगड़ा खानिट अभित, ध्वर 'य'-भाविष्ट कुद्धादि উৎপन्न পनार्थित वामाम्रग-मम्डा यनि आमामित काना शास्क, जस्व 'थ' भाजक 'क्'बादा উৎপন্ন পদার্থ পরিমাণ আমরা গণনা দারা স্থির করিতে পারি। এক সেকেও-ব্যাপী, এক এম্পিয়ার প্লরিমিত তড়িত-প্রবাহ প্রস্ত কোন পদার্থের পরিমাণকে ভাড়িত রাসায়ণ সমতা (electrochemical equivalent) বলে। তাহা इहेटन, এकाँ भिनार्थित अफ़िंड-ब्रामायन-সমতা জানিতে পাবিশে অন্তান্ত পদার্থের ভাড়িত-রাসায়ণ-সমতা স্থিব করিভে পারা याहेरव। किन्न औ এक वस्त्रत जाष्ट्रिक-রাসায়ণিক-সমতা অতি স্কারণে ভানা চাই; নচেৎ অপর পদার্থের তাড়িত-রাসায়ণ-সমতা रुश्रक्राल वाहित इहेंदे ना। वफ वफ বৈজ্ঞানিক মহাশধেরা রেশৈর ভাড়িভ-রাসায়ণ সমতা অতি সতর্কতার সহিত্য

ষ্থা, দ্যার মিলনাক" ("alency) = ২। তডিত প্রবীচ প্রবাহত করা হয়; এবং দশুবি অণু ওজন (atomic weight) = বিশ্লিষ্ট পদার্গেব ওজন শ্বির করা হয়। এবং ৬৫.৩ %। বৌণোর অম-ভলন = ১০৭ ম। সেই বিলিপ্ত পদার্থেব তাড়িত-রাসায়ন সমতা (बोम्पाव मिननाक = > ছিভ'য় বিধি অস্থায়া

দন্তার তাডিত-রসায়ণ সমতা দন্তার রসায়ণ-সমতা রোপোর ভাড়িত রসায়ন সমতা রোপোর রসায়ণ সমতা

: দন্তার তড়িত-রাসায়ন-দন্তা = €.60¢× ·

क्रेक्रा अग्रक अमार क्रांदा ए বিধির নিত্যতা প্রমাণ হয়য়ছে। ফ্যারাডে বিধিয় নিভাতা (coustancy of Faraday's laws) সমধ্যে আব কাহাবও मन्त्रक नाहै। धार्क भवार्थ इंट्र धार्-অংশটী ভড়িত প্রবাহ দ্বারা অনায়াসে অতি সহজে বিশিষ্ট হয়। স্গারাডে বিধির 'ন চ্যতা হেতুও তডিত প্রবাহ ঘারা ধাতুজ পদার্থ হইতে ধাতু বিশ্লেষণে প্রেয়াস হানভা-হেতু পদার্থ বিদ্যুণ ওড়িত্র প্রবাহ মাণিবার প্রস্থ "তড়িত শশিল্পোশন প্রাণালী" (atomic weight), মিলনাম্ম (valency) ' ्रेंद्रीश क्रिया भारकन। ८४ यदा माशस्या কেমন হৈছিল। পুৰাৰ্থকে ভড়িত প্ৰবাহ ৰামা নিম্নলিখিত চক্তে (table) প্ৰাৰত হইল।

পরা ালক রৌপোর তড়িত-রাগায়ণ সমতা বিল্লিষ্ট করিয়া বিল্লেষণ সম্বনীয় মাপ্যোগ = '००) ११७। हेशांक छेभवका कारमा करा स्म मिह सम्भक्त ज्ला आभिक আমরা অন্তান্ত পদার্থেব তাড়িত-রাসায়ণ- (viltameter) বলে। নিন্দিষ্ট সময় সমতা অতি স্করণে নির্ণয় করিতে পারি। ধবিয়া তাড়িল বিশ্লেষ্য পদার্থ মধ্য দিয়া यमि काना थाटक, खाङा इन्टेल । नम्मिश्च অঙ্কপাত হইতে ভডিত প্রবাহ পরিমাণ ক্রি করা যাহতে পারে। যদি ভড়িভ প্রেশ্চ পরিমাণকে 🖅 বলা হয়, ভাড়ি ৩-রাসায়ন मम्बादक यान 'दा वना इस, विश्विष्ठ भगार्थित प्टबन यमि 'ड' इय. मभटक्षत्र शतिमान यमि 'স' সেকেও হয় তবে

$R \times R \times S = S$

এই চারিটি রাশির মধ্যে তিনটি জানা থাকিক্ষেত চতুর্থটী বাহির করিতে পাবা যায়। বিজ্ঞানাগাবে সাধারণতঃ 'ভ' ও 'র' এই ছটি রাশি স্থির কনিবার জন্ম শিক্ষার্থী-मिश्र करा २४। '७' दिव क्रियात क्रिश

$$\mathfrak{G} = \frac{\mathfrak{G}}{\mathfrak{F} \times \mathfrak{F}}$$

সমীকরণ (equation) ব্যবহাত চট্মা থাকে। আব 'ব' ক্লিন করিবার জন্ম

मभीकद्रण वावश्रु ब्हेशा बादक।

ভিন্ন ধাতুর পরমাণু-ওজন রাসায়ন-সমতা ও তাড়িত-রাসায়ণ সমতা

তড়ি *-রসা ন-সমতা

| मूल शर्मार्थ | म्ल लमार्थत्र | यम् ७वन | <u> থিলনাক্ত</u> | । রসারন-সমত। | তডিৎ-রসায়ন-সমঙা |
|--------------------------------|---------------|-------------------------|------------------|---|--------------------|
| | ইং সঙ্কেত | Atomic, weight | Valency | Chemical Equivalents | in Practical units |
| আন্টিম্ণি | Sb | ५२०२ | 9 | The description of the second | |
| অক্ষ জন বা অক্সিজেন | •0 | ٥٥, ٩، ٩ | 2 | 4.90% | 2454000. |
| এালুমিনিয়াম | ΛI | \$9'. | 9 | \$ C & C | ,0000 U. U. C. |
| কুল্ছরিণ (ক্লোবিণ) গ্যাস | Cl | 24.84 | > | ©4.24 | .000029.5 |
| হা <u>ষ</u> | Cu | n 40.≎ | > 4 | , 950 2 | 6-48cm 000. |
| ভাষ দক্তা | Zn | ৬ १•৩৭ | ₹ | ೨>°₹8 | , o o o o o s |
| পোট্যামিয়াম্ | 15 | থ৯ : ১৫ | ર > | \$8.46 | 10000000 CC |
| নিকেন্স | Ni | C b • 9 | ર | ØÞ'₽8 | .0000080 |
| <u>ংগ</u> প্য | Ag | 209.20 | > | > • • • • • • • • • • • • • • • • • • • | .00227A3 |
| ্লা হ | Fe | € ? ` > 3 | ર | ३१ °१७ | .0005A2G |
| (ट)इ | | ** | ೨ | ३ चं ४ दं | ·0000000 |
| ম্বৰ্ণ • | Au | ५०. ० ६ >ॐ४,४ | ৩ | P 5.5 2 | 40 0 87 0 6 |
| সোডয়াম্ ক্লিড (১ চেলাকে ১) | Na ' | 2.0 8 · | • > | \$\$.Pd | P40,000' |
| फिन्न (शहाधादिन) भाग | 1.1 | | > | > | .00000088 |

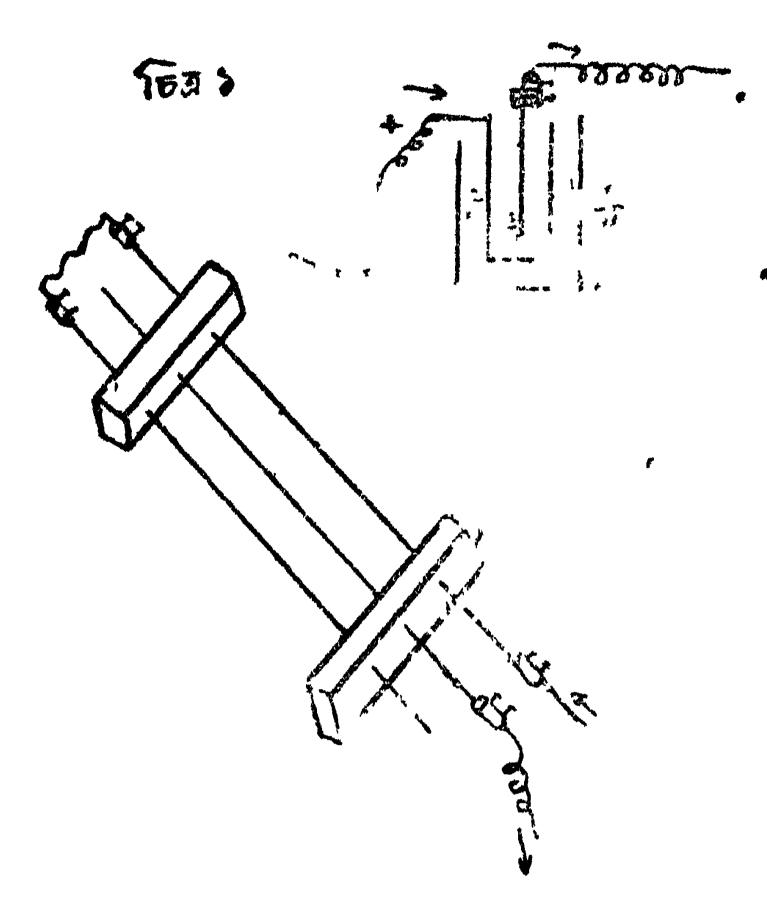
ভল্টা মাপক

(VOLTA METER)

এই তিনটি ভল্টা মাপকের বিশদ বর্ণনা গোলা হয়। এই প্রকারে আছত তুঁতে निश्च अन्छ इहेग।

>। ভাষ ভল্টামাপক॥

সাধারণতঃ বিজ্ঞানাগারে তিন রক্ম একটি কাচ পাত্রে (চিত্র ১,ক) ভূঁতে ভল্টা মাপক (Volta meter) ব্যবস্ত গোলা জল বাগা হয়। পার্ম্বার পবিত্র হইয়া থাকে। ষ্থা ভাশ্ৰ-ভল্টামাপক ভূতি দানা (crystals of Copper (दोभा-छन्টाমाপक ও जन-छन्টाমाপक। Sulphate) তাহার চার্তণ ওজন জলে जन्दन (Solution) करत्रक (कांछा बाहिस्स मान्किडेबिक् ब्यानिंख मिभारेशा क



রাথা হয়। একথানি পাত্লা তামার চাদব হহতে । ধার প্রস্তুত হয়। এই কুদারেব মাপ ष्यान्ताक ५३ है कि 5 छ। ७ औं 5 है कि नया। তাহার কোণ্ডলি উকাদ্বাবা ঘ্ষিয়া গোল করিয়া দেওয়া উচিত; নচেৎ দেইস্থানে ভামার কণাগুলি রেল গাডীর ডেলি भारमञ्जाद्रस्त्र यञ दकार्य दकार्य वामरञ দৌড়ায়। কাজেই কোণ-স্থিত আলগা কণাগুলি ধুহবার সময় পড়িয়া যাহবার मछावना। कुषात्रि, कू, এकि धिक पू-भाग भक्त ভाञ्च ভाর হইতে सूनान थाक। এই ছুই পাতের জ তাকের কালি (area) কুদ্রারের কালির সহিত সমান। যে চুই ভার

পাত একতা থোগে স্থারক্রপে বর্ত্তমান। যে তিনটি তার হইতে তাম পাত তিনটি ঝুলানো হইয়াছে, সেই ভিন্টী তার ছটী ী সক সক কাঠের মধ্য চাক্ষত্রা দেওয়া হর। গুটী কাঠ কাচ পাত্রের উপর স্থাপত। এখন ভাড়িত প্রবাহ यांप बाल्ड बाल्ड স্থার (anode) হইতে কুছারে (kathode) প্ৰবাহিত হয়, অৰ্থাৎ ভড়িত প্ৰবাহের বেগ(strength) যদি খুন বেশী না হয়, ভাচা হহলে কুছারে ভামার কণাগুলি বেশ সমভাবে ও দৃঢ়ক্সপে বসিতে

কিন্তু যদি ভাড ৩ প্রবাহে বেগ খুব भारत । বেশী হয়,ভবে অনেক ভামার কণা ভাড়াভাড়ি शानाशामि व विश्वा कुंबार्य वांगर श्यान, कार्छहे পরস্পাব গ্রস্পাবকে ভালা করিয়া আঁকিড়াইয়া ধরিবার স্থাবিধা পার লা। কুছারটি ধুইবাব সময় আলগা তামার কণাগুলি পড়িয়া যাহবার সম্ভাবনা। সেই জন্ম তড়িত বিশ্লেষণে মন্দ-বেশী তভিত প্রবাহ বাবহাত হইয়া থাকে। কুদারের প্রত্যেক ৫০ বর্গ সেটিমিটার পক্ষে এক এম্পিয়ারের অধিক প্রবাহ ব্যবহার করা উচিত লহে। বিশ্লেষ্য পদার্থ মধ্যে मिवान शूर्वि कुवात्र (वस श्रीतकात कता আবশুক। খুব মিচি বালির কাগজ দিয়া व्यथरम कुषादाद इके भिठ पायमा भदिकात ক্রিতে হয়। তারপর ভাহাকে গুরারিকায় ্কমন বিশ্বান আছে, তাহাবা সালফিউরিক্ এাসিড্ মিশানো জলে কয়েক কেমন বিশিক্ষ্ণ সংযুক্ত। এই ছই মিনিট ডুবাইয়া রাখিবার পর পরিষ্যার জলে

धुडेशा दक्षाटक रूम। यमि कूषादम जामान भगार्थन मस्म हिम-कमा रहेग्राह। जारान थाकिल क्लि ब्रिटि॰ कागरक ধরিয়া শুষিয়া যাইবে ভথন ভাহাকে ম্পিবিট न्यारम्भित मिथाम প्राप्त केकपूर छेभरत কিছুক্ষণ ধরিলে কুমার্টি নেশ শুকাহয়৷ ১ = তডিয়াপক (Galvanometer) साहेर्द। स्थित निक्रि था व । উচিত नग्न। কেননা, ভাষা হইলে ভামার অকসাহত হহবার সম্ভাবনা। কুদাবের সাহত সমকালি-বিশ্বষ্ট অপর একথান ভাষ্র পা ১ কুমা কপে विक्षां (clectrolytic cell) মধ্যে রা'বয়া তড়িত প্রেবাঞ্জ ব্যাপ্ত ব্যাপ্ত র = রোধ গাণ্ডার (1esistance-box) পাত্ট তুলিয়া বাখা হয়। এ, पःक পুশ্বাক্ত মনে কর, এখনকার হহার ওজন '৬' গ্রাম। ওজন হির কবিবার পর কুছাবটিকে (वरभ्रम्य-८कार्य वमारुया ८५ ३या ४४ ९ ८ ४६ मूह्र्एक चांफ्रि (मिथिया त्राया श्या श्रा श्र विक्रूकन भारत (यथा जास घन्छे।) पिक পুনরাম দোখরা কুবারটা ভাগুরা লহখা ধাবে थीरत পরিষ্কৃত জল-ধারায় তাহাকে ধুইয়া (क्ना ह्या अथन हजार हेटांत खात्र नाम जास क्या ममस क्षिप्रिंट युज्यानि उत्रथ

व्यक्मार्डेख घराव পরেও লাগিয়া থাকে তবে পর ক্লটিং কাগজের উপর থাড়া করিয়া সাল্ফিউরিক এ্যাসিডের ভাষার উপব কৈছুক্ষণ রাখিবার পর ভাষাকে পুর্বোক্ত तामाय्रीनक किया इस्याय, क्रक्मार्ड मलस्के हिलास्य सकाहेया अस्या क्या स्वाहियांत्र करेत्रा यात्र, ज्थन कटा धुकेटन मनर्थके कटन भाग भाग काकाटक कीर्वीत अक्षन कता क्या গুলিয়া যায় ও তামার পাতাটী বেশ পরিফার এখনকাব ওজন, মনে কর, 'ও' গ্রাম। বদি ह्या व्यक्तनारुष, তाषाह्यात क्रजारे ६ १ - मृष्टे न्यय-६ एवत व्यक्षत 'न' (नार्क्ष ह्यू, সাল্ফিরিক এ্যাসিড ব্যবহাও হ-য়া থাকে। ৭ তামাব ৩'৬৬ বাসায়ুন—সমতা যাদ রু তার পর একখানি সাণা ব্লটি॰ কাগজেব হয়, ভবুর তড়িত প্রাচ পরিমান, ত, উপর কুমারটীকে খাড়া কার্য়া থানিকক্ষণ নিম্নাধিত অঙ্কপাত হইতে বাহির করিছে পারা गায়।

$$\overline{5} = \frac{9 - 9}{7 \times 9}$$

क = वर्षक (Commutator)

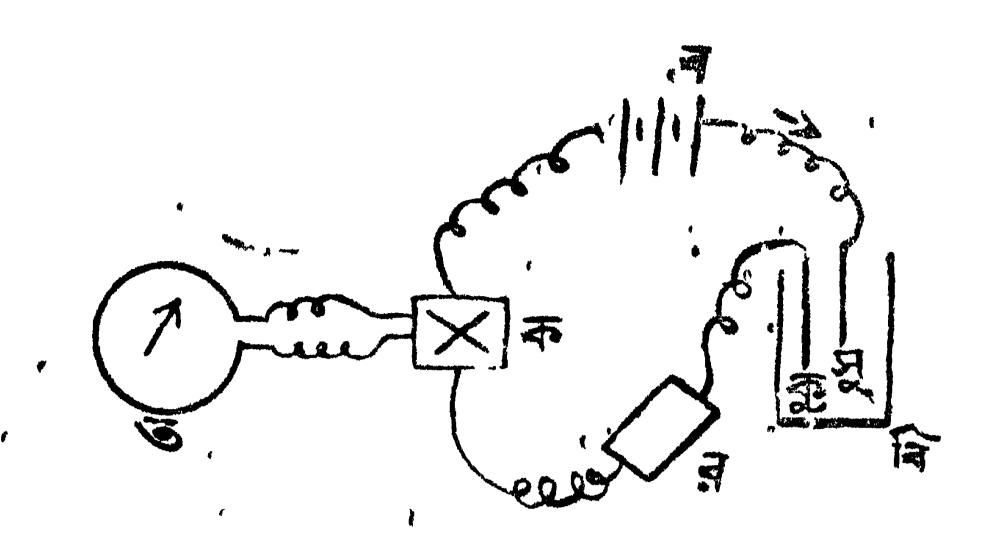
व = व्याष्ट्रांत्र

वि= विदेशमण-एकाव

কু = কুদ্বার

স্থ = প্রধার

রূপে নিয়ন্ত্রিত করা হর। তা, পব তাম বিশ্লেষণ প্রক্রিয়ায় কপার সাল্কেট ভড়িভ প্রবাহ দারা ত্ইভাগে বিশ্লিষ্ট হয়। পরিষ্ঠার কুদ্বারটির ওজন । স্থা কবা হয়। কপার (তামা, cu) ও সাল্ফেট (SO4) ত্ই বিলিপ্ত অংশ। ভাষাটি কুমারে (cathode) क्यां इय, आव मान्टिंग (SO,) उदारत व्यामिश উপश्विक क्या। সুষারটি ভাষার প্লেট বলিয়া সাল্ফেটে (SO,) ভাষাৰ সহিত রাসায়'নক্ যোগে युक्त वर्षेत्रा कथात्र मानटे दि भारत् वर्ष। कशात मान्दक छ दल अवनीत्र विदा करन खित्रा यात्र। जाश इंडेल (मथ, माम्यम् একটি অণু (molecule) জু



ছারা বিশ্লিষ্ট হটয়। গ্রাম প্রমাপুকে কুদারে ছাড়িয়া দিয়া স্থার হঃতে অপব একটি ভাষ পরমাণু জইয়া আবার কপার সালফেটের একটি অহুতে পরিণত হয়। স্থতবাং ভূঁতে জলের বা ভূঁতে দ্রবের ভূঁতের পরিমাণের ङ्गान-वृद्धि रुष्ट्र न।।

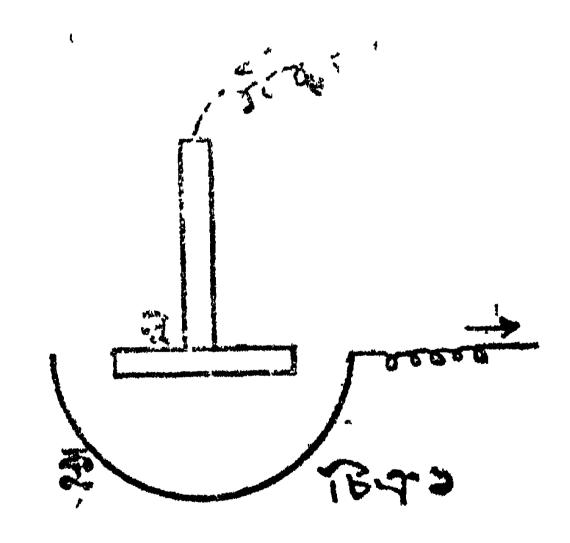
স্থাবের ক্ষয় কুথারের বৃদ্ধির সচিত ঠিক ममान नरह। कांद्रव स्वाच यथन कांद्रर ७ धारक, ॰९मः गध्र सम्मा (impurities) আলগা হুলা যাওয়ায় ভাষাও পাড়িয়া যার। কুম্বারের বুদ্ধি কেবলমাত্র তামা জমা হরবার मक्रवर रहेश थाटक किन्न स्वादात क्रश्र-ভাষার কর+ মরলা। কাজেই ক্রার-কর क्षात-वृक्तित महिक ममान करेट भारत ना। ত্ৰার ক্ষম কুবার-বৃদ্ধি অপেকা অধিক হইবে। স্তরাং তডিত প্রবাহ মাপিধার नमत्र कुषाद्य वृक्ति ना धविका द्यवाव-क्यत्र धविका भगना कतिरम जुन रहेरव।

পূর্ব-বর্ণিত ভল্টা-মাপক বিজ্ঞানাগারে धाम्-मानक (am-meter) ও ট্যানজেন্ট ১০০ গ্রাম পরিষার (pure) অলে পোলা গ্যাশ্ভান্ মাপক যাচাহ কবিবার অস্ত প্রচুর ্শিন্ধণে ব্যবহাত হটয়া থাকে। তাহার এই সিলভার নাইট্রেট গোলা জল বা

এবং ইহা দারা বেশ স্ক্রবণে তডিত প্রবাহ मां भट्ड भादा बाद्र।

রৌপ্য ভল্টা মাপকের কুমার (anode) প্লাটনাম নিৰ্ণাত একটি বাটি (চিত্ৰ ১,কু)।

রূপাব গোল প্লেট, স্থ, সুদ্বার (anode রূপে ব্যবহাত হয় া



১৫ হটুতে ২০ গ্রাম বিশুদ্ধ সিলভার नाहेट्डिंड (AgNOs)

रुव ।

क्ष्मन (क्षिणकि महत्वर खखड क्या वाय, मिन्छात्र नारेट्ट्रि खवन (solution) स्त्रोना

खन्छ। माभरक विस्नेश भनार्थक्ररभ वावछङ ना। खथ्छ स्वन (solution) किन्होत्र इरेश थाटक। त्रिल्डात्र नार्टेट्वेष्ठे जन् अधिनाम वाष्टिष्ठ , ताभा रुग्न। क्षेत्रे खबरणत मर्पा ऋषात्ररक, ऋ, बूलाहेबा वांचा ३४। ভড়িত প্রবাহ দারা সিলভার নাইটেট বিলিট হইয়া সিলভার (রৌপ্র) কুদারে প্লাটনম বাটির ভিতর দিকে এমা হইয়া থাকে। আর নাইট্রেট (NO,) স্কুলাবে আসিয়া স্থার হইতে রৌপা পরমাণু লইয়া আবার সিল্ভার নাইট্রেটে পারণত হয়। সিলভার नाहेर्द्धि अवगोत्र विनिद्या नवकां जिन्हांत्र नारेखें ज्ला क्षाया यात्र। काटक स्वर्गत्र জৰণ-ৰণ (Strength of the solution) ঠিক থাকে: ভাছার হ্রাস-বৃদ্ধি হয় না। যথন রৌপা প্লেট কইতে রৌপা পরমাণু একএক করিয়া থেমন রাসায়নিক ক্রিয়া-যোগে সিল্ভার নাইট্রেটে পরিণত হইতে থাকে, তৎপার্শ্বছাত मम्मा खनिष (impurities) चानगा द्रोभाकना धिमश्रा भ्राष्टिनाम याष्टिष्ठ পड़ा मख्य । य दब्रोभा ভড়িত প্ৰবাহ ছারা বিশ্লিষ্ট হইয়া প্লাটনাম वार्टिए सभा इन्द्राष्ट्र, ভारात्र एकन स्थान हाहै। कि स मत्रमा वा व्यामना द्रोभाकना রোপ্যপ্লেট হইতে থসিয়া প্লাটনাম বাটতে পড়িলে, তড়িত বিশ্লিষ্ট রোপ্যের ওজন र्भक्रा भा अवस्थ बाहेर्य ना। कार्यके याहारक मन्ना वा (त्रोगा-कना ञ्चात इट्ट धिनत्रा প্লাটিনাম বাটিতে পড়িতে না পারে ভাহার अक्टो वाक्षा कता चावश्रक। स्वाति किन्दोत्र कागरक कड़ाहेब्रा वाबिरन मब्ना वा (ज्ञोग)-क्यां अभिन्ना अभिनात मखावना शांक

কাগজের মধা দিয়া যাতায়ত করিতে পারায় ভড়িভ প্রবাহের গমনের পথে কোন वाशा পড়ে ना। তড়িত প্রবাহের পরিমাণ क्षारतव প্रकि वर्ग-(ज्ञाकि मिछादाव প्रकः • • • এ্যাম্পিয়ারের আধক বাবহার করা উচিত न(र।

প্রথমে পরিষ্কৃত প্লাটিনাম বাটির ওজন (मिथिया त्राथ-- मर्ग क्य, इहात खक्रन 'ख' গ্রাম; #ভাহার পর শিশভার নাইট্রেট দ্রবণ ইহাতে ঢালিয়া দাও। স্থবার যেন দ্রবণে **फ्**रिश शास्क छ कुद्यारत ना ঠেकिया यात्र व निषद विस्था विका का का नित्य। भरत बाक দেশিয়া ভড়িত প্রবাহ চালাইয়া মাও। इन्होन्छ नमन्त्रनात व्यानात विद्-तिथ्या তড়িত প্রবাহ থামাইয়া দাও। তাহা হইলে যতক্ষণ ভড়িভপ্রবাগ বিশ্লেষ্য পদার্থ মধ্যে প্রবাহিত হইল, ঘডি সাহাধ্যে এই সময়টি প্রাওয়া যাইবে। মনে কর, এই সময় 'স' সেকেও তাহার পর কুম্বার্টট অর্থাৎ প্রাটনম वां विवि পরিষ্কৃত জলে ধুইয়া, সামাগু তাপে শুকাইয়া, আবার ওজন কর। এথনকার ওজন ও আম। রোপ্যের তড়িত রসায়ন সমতা (electro-chemical equivalent) চক্র (table) হইতে দেখিয়া লও। ভার পর নিম্লিখিত অমুপাত সাহায্যে তড়িতপ্রবাহ পরিমাণ স্থির কর। যদি ত = তড়িত প্রবাহ পরিমাণ, 'র' ভড়িত রসায়ন সমতা হয়, ভবে

@ = 6-6, त्र×न

विकालियान जहाताया ।

লাজ

হে দেবতা,
কৈ কহিতে চাহি আমি, কৈ আকি কৰ তা
জানো তুমি আগে,
ভাই ত কহিতে কিছু ভালোঁ নাহি লাগে।
আনার এ গান,
কুড়ানো মুচ্চনা শুধু একটি ভন্তাতে কম্পমান
অসীমের শত ভন্তা হতে।
হাদরের পরতে পরতে
বা-কিছু সমৃদ্ধি আছে, কিছু লয়ে চলে না গরব,
কার এ থুসির দান, থেরালে পোয়াতে পার সব,
এ জীবন এত বড় ফাঁকি।

তুমি মোরে নিম্নে এলে ভাকি'
তে মার সভার মাঝে, গুণীজন সনে
পরিচ্না ক'রে দিলে,ভারপর বসায়ে আসনে
কোলে মোর সম্ভায়ে সাদরে
বাণাটি তুলরা দিলে আপনার করে,
ধন্ত হ'ল আমি।

তবুও কি বেদনায় আজি মোৰ গণন গেছে থানি'
কানো ভা ভূমি তা।
হিন্দুর বিধবা হয়ে আঁথিজলো নিশা হবে সারা,
ভূমি যে গো অসীমের পিতা,
— ভূমি সব;
কি আছে আমার, আমি কি ল'য়ে জুড়িব কলবব আমার সে কোটি হুয়া ভোমার ভয়ারতলে এসে,
এত আড়েম্বরে
পিতে কবে ওগো মহারাজ।

ভোষাব ভাঁডার ঘবে

যত ধন বত বস্ত আছে,

সকল মেলিয়া দিলে অধ্যমের কাছে,

এত দয়া তব।
হাডটি বাডায়ে কিছু ল'ব

নাহি সে শক্তি;

হে অন্তঃ এখর্ষোর পতি,
চিরকাল ভূমি হার্মা, চিরকাল আমি যে ভিথারী

এ লাজ সহিতে ন হি পাবি।

চাহি না সে ধন, হোক সে উঞাড়-কবা ধরণীর মাণিক রতন, প্রতিভার বংমাণা, প্রোয়সীর বাছমাণা আর, চিরজনমের নোব, যার পরে নাছ অধিকাব, গভি শুধু তব অনুগ্রহে।

— মোব এ দ এক জন্ম নহে।
কে বলৈচে চিরকাল যাবে শুধু তব দরা পেরে ?
হয় ক জন্ম ল'ব হয়ে কোণা পাডতার মেরে,
জন্স্ম হয়ম াতি, জন্মান্ধ ভিখারী,
পঙ্গু, বিকণান্ধ, কবা পূর্ণকালী বিতের নারী।

বুকে তনজের ত্যা ... আগুনের মাঝথান দিয়া
য'দ নাহি যেতে পারি, পাশ ঘেঁষে গিয়া
নিও ক্ষুদ্র স্থা ক'য়ে পাব না ভূপতি।
অনস্ত জাবন হ'রে যভ তঃথ ক্ষতি
সহিহাছে কোটি জীব, সব আনি স'ব,
কাট হয়ে পিপ্ত হব,
বুকুর হহয়া থাব গ্রাডা,
হিন্দুর বিধবা হয়ে আঁথিজলো নিশা হবে সারা,
দেন যাবে অনাদরে, অবজ্ঞার, শ্লেষে।

विञ्धीवक्षाव कोधूबी।

বারোয়ারি উপত্যাস

मारमय व माम भागाय भागाय ज्ञानाय ज्ञानम कराइय ज्ञानम कराइय । त्या भकरहेत्र প্রমায়ু ফুবিয়ে এসেছে, ভাষাৎ গল্লটি এগান ব্যক্তিক্ত বোধ হয় নি। এ পাড়ী সগড় केटि मारुष करत्र व्यन्शाच व्यामान काटण मा करत्र द्यापन करता—कमनात्र कथा, कमना এসে পড়েছে তার সমাপ্তি লাভ কবীবি নলবাব ও সভাশ শোনবার স্থযোগ পৈত জ্যু ।

হয় এক মৃত্যুতে; কিন্তু আমাদেব মনগড়। তাব জ'বনেব নুভন ইভিচাস ভন্ন তন্ন করে শল্ল শেষ হয় লালা বকমে। কোনটি শেষ বল্তে ক্রটি করে বি। দে বিবৰণ এত্তলে ক্য় ক্রায়, কোন্টি আত্মহন্যায় কোন্টি বিবাহে, কোনটি সন্ন্যাদে কোনটি নানায়, কোনটি হাসিতে। কিন্তু আমাদেব মনগড়া করতে পাবি নে। কেন - া গৱেব পবিণাত্ত ৭ অক্ষরে কাপ।" গল্পের নিয়হিত অধীন।

গেছে। কিছুদিন ধবে অদৃষ্টহ কমলা ও লেথায় এক চেহাবা আর মেয়েব হাতের সতা কৈ যে লুকোচুবি থেলাভিচল দে খেলা লেখায় আব-এক চেনাবা ধবে। কমলার ना दक्न, ভার জেব ना भिष्ठेरण ভা থক্স হয় থা। আমার পালা হচ্চে এ গল্পেব জের (महोदना ।

শেষ দেখা হয় তথন তাবা একথানি গরুর वरमवान[ि]भ काल धर्व बामब्रा॰ शाफ़ाट्ड भाषाव इरव कालीआंगां छम्र्य ধ্বে আসভি "এতদিনে তার" এই মন্তরগতি সাবোধা যুগলেব কাছে মোটেই না। একাব বলা বাজ্ঞ কমলার বলবাব কথা ত্র পৃথিবীতে মানুষের জীবনের গল্প শেষ অনেক ছিল আব সে তার স্বামীর কাছে লিপিবন্ধ করার একমান ফল হবে পুলিব . পাতা বাড়ালো। আতোপান্ত বৃভান্ত ভবে সভাশ ম ল-মলে বল্লেন— "গল্ল ভ আগেই গল্প আমবা ধেমন খুশা ভেমনি কবে শেত শুনেছি; এ ত ক্ষিতাশেব নিপোটেব অকরে

ाक छ किल इरम्छ किलीभ मख क्षांभनाया रत्न भावरक भारतन त्य, विनवर्णित माम्न ७ पैतवर्णित भार्षका কমলার উপাথ্যান ১৬ নাদেই শেষ হয়ে অবশুছিল। একই জিনিষ পুরুষের হাতেব একাদন অদৃষ্টই বন্ধ করে দিলে, পথের মাঝে বর্ণনাব লাহন-গুলো আঁকা-বাঁকা ও অক্ষর ছজনকে পুরস্পারেব কাছে ধবিয়ে দিয়ে। গুণো ছোটবড ছিল। এই কাঁচা হাতের क धार्या क्र १६ मार्च किंक इर्ज मान्त्र नर्माय को भारत तमायाक हिन ना यरन में जा नहा शृथियोव (य कान वाभाव काक किनोमित कथाव हाईट कमनाव कथा স গ্রীশের মনে বেশি করে বসে গেল। স্থো কথা-যে সভ্য সে বিষয়ে সভীশেব মনের कान कारण जिल्लाको म्लानक आत बहेन जाभनासित्र प्रत्रम कतिया पिष्टे या, ना। मजीम यत्न यत्न अजीकी कत्रम या, दुन्न আপনাদের সঙ্গে কমলা ও সভাশের যথন যাই ভাবুক, যে যাই বলুক, সভীশু জীজার্ম

यनवारमत भूगविख्य थान शांकरण्ख कद्रद्य ना। मडीरणव वावहारव, डांब कथांब (ছरणरक (भव-कथा वल्रान এই रव कमणांब হল বে, দে সেচ গলাপানের দিন পথশান্তিতে বাব করে দিতে চবে—নয় তার মাকে। খুমিয়ে পড়োছল এইমাত্র দে জেগে ভাব ছৈ ঘটেছে, দে মব ছঃস্থা মাত্র।

30

এই জ গেল তাদেব মনের খনব। তাঁর ছেলেকে যাত্র কবেছে। কিন্তু মান্তবেব দেহ বলেও একটা জিনিস चार्ट् यात्र मानी स्ट्रांश कान অবস্থাতেই মান্ত্র্য উপেক্ষা করতে পাবে না। खरे <u>त्रक्षे पित्र प्रदेश</u> मत्न क्रव्ला অভিভূত করে ফেলেছিল, ও কুধা তাদেব কবব না। कल्मूत शीफ़ा मिक्टिन। शाफी वाफ़ीत यङ । कथा खरन द्वीञ्चमत्री किट्टकर्णव কাছে আস্তে শাগল ভাবা ছম্বনে ততই জন্ম স্তম্ভিত হয়ে থেকে পবে অতি ধীবে चार्गाव ७ निजाब खर्म वाक्न रहा डेठेड माश्रम।

কিন্তু কি আহার কি নিদ্রা ভগবান लामन তाष्ट्रिय क्लाल (मार्थन नि। वना বাহ্ন্য সে রাভিনে বাড়ী ভাবা অবশ্র পৌচেছিল, কেন না গক্তর গাড়ীর আর যাই CRIT थाक--- এक छ। महा खन का छ। अक्र त পাড়ীতে আর গরুর গাড়ীতে কথন কলিসন इस ना—जाव यात्र इत छ। इत्न साभाव তেমন মারাত্মক হয় না।

বাড়ীতে আশ্রম পাম मि।

च्यानक वकाविकत्र अन्न छ्रशास्त्रकाती বার্তায়, তার কণ্ঠমবে, ভার ভান-ভঙ্গীতে হাতে জল তিনি কিছুতেই থাবেন না, তার क्रमणा वृत्रात्म (य जात्र श्वामीय श्वाम विश्वाम (म भाष्य এक তে वाम कि क्राइके क त्रवन ना। আবার ফিবে শৈক্ষেছে। তথন তার মনে স্থতরা দতীশকে হয় তাব স্ত্রীকে ঘর থেকে

কমলাব চবিত্রৈ কলক স্পর্শ করে নি উঠেছে। डेडिमर्था (य मन घটना मान এ कथा प्रशिञ्चन को कि कूछि विश्वाम कयरनन ना, किन ना मठौरनंत्र कथा छत्न छात्र मत्न এত বিশ্বাদ আত বন্ধমূশ হল যে, বউ সভীশ কাকুতি মিনতি কবে বাগ দেখিলে ধমক भिरम अ यथन (मथा) (य भव मा कमलाव ानाफाधिकांत्र किंद्रा ७३ विश्वाम कत्रावन ना, তথন তাঁর মুখ থেকে হঠাৎ এই কথা পাঠক সহজেই অনুমান করতে পাববেন, বেরিয়ে গেল যে কমলা সভাই হোক আর **आखि मडौम ७** कमगाव (महत्क कडमून जमडीह (हांक आमि अत्क किहूर इहे छा। श

वन्दानन,

"ভগবান যদি আমার কপালে তাই লিথে থাকেন ও তাহ হোক। আমি ছেলে ত্যাগ করতে পার্ব—কিন্তু ধর্ম-ত্যাগ কর্তে পাৰ্ব না।"

কমলা এতক্ষণ পটে-আঁকা-ছবির মত এক शार्भ मैफ्टिय़िह्न। धकि कथां कयां क्या নি। যথন ভার বাবা তাকে বার থেকে বার করে দিয়েছেন তথন তার শাশুড়ী যে তাকে घटत जूटन त्नराम मा, এতে जान्हर्यात गडीमठल यथन भारक जानाम करत छैटर्ड

वनरनन—"हम कमना, जामता याहे" खथन कहे (পতে হবে ना। कमना हरत्रत्मत्र यागात कमना किटळम कत्राम "ट्रकाशांत्र १" উত্তর ঠিকানা জানত। का, "भिष्ण दहरकुँ।" कमना ननरन "भिष्ण ভात्रा दिना दिन धरत (ছড়ে, সমাজ ছেড়ে, মা ছেড়ে বেরবার আগে নিজের মনে বুঝে দেখো যে ক্রাজ করতে যাচছ , তার পর, এক ভিকেনাড়ীতে আবোচী হয়ে ভার শেষ রক্ষে কর্তে পার্রে কি না 🐣

"আমি মনস্থির করেছি, এ গ্রাম থেকে এই মুহুর্ভেই বেরিয়ে পড়ব; ভোমাকে সঙ্গে হরেনের সঙ্গে দেখা কর্ভে গেলেন, আবার ভাববার এখন সময় নেই।" এর পর সভীশ ভার পৈতৃক ভিটার দিকে পিঠ ফিরিয়ে কমলার হাত ধরে দেই অন্ধকারের ভিতর নিকদেশভাবে বেরিয়ে পড়্লে।

96

অজানা পথের পথিক হওয়া পুরুষের পক্ষে স্থাভাবিক হতে পারে কিন্ত মেয়ের পক্ষে ভানয়। স্ত্রীশোক যদি এক ঘর থেকে বেরয় ত সে আরেক ঘরে ঢোকবার জন্ম। তাই कमना मिलारभव निकासभागावाव এक। मका निर्फाण करत पिरम। दिन हरना **जाता इक्टन** मठीटमंत कग्रन्थ गटक्रोटम किरत याद्य, कलकाओ इत्या नित्को छ्रामन পরে পৌছনতে কোনোও ক্ষতি নেই—কেননা কমলা যথন কলকাতা ঘুরে লক্ষৌ যাবার সভীশের ছুটি আজোও ফুরোর নি। তা প্রস্তাব করে তথন মনের কোণে এ আশা हाफ़ा कमना दिय हेश्टलाटक चाट्ह जनः कात স্বামীর আশ্রমে—এ সংবাদটা দে তার মা वावादक ना कानित्र (मन ८६८५ या छत्राछ। मण्ड मत्न कन्नता ना। প्रिम्प्या सामी-জীতে পরামশ করে স্থির করলে যে, তারা সিতাশের বাদায় শৌছবা মাত্র সতাশের कनकाजाम हरतरनत गरक (प्रथा करन कारक मिटब्रहे चवब्रों। स्मर्म भातिस्व स्मर्य। र्रिनरक पूर्व यात्र कत्र कार्य कार्य

मकांग (वणा कणकांकांग्र, शिर्म (श्रीह्न। यतायत (योवाकाटक स्टल्टन्स वामाय जिट्य উপস্থিত হল। সতীশ গাড়ী থেখে নেমে নিয়ে। শেষে যা হয় তা হবে; তার ভাবনা পাঁচ মিনিট পরেই ফিরে এদে খবর দিলেন (य इरत्रन ८१-वाशांत्र कात ८न्छे। किङ्क्तिन আগে ভার বাবা এসে সেখান থেকে ভার गालभव या किছू ছिल मव निस्त हल (शहन।

कमना जिल्डिन कत्रल—"रदान जयन काशाम थारक रमरमन रकछ कि छ। वन्र भारत ना ?"

সতীশ আবার ফিরে গিয়ে হরেনের হাল-माकिरमत मन्त्रांन नित्य जल। कमला वाखाव নাম ও বাড়ীর নম্বর গুনে বললে—"ও ত কিতীশ বাবুর বাসা।" সতাশ প্রস্তাব করলে, "5न (मश्रात्वे या अम्रा याक्।" क्यला ভाত কোনোও আপত্তি করলে না। সভ্য কথা वण ७ (गरण व्यश्नोकात कता ठरण ना (य, ছিল যে কলকাতায় গেলে চাইকি কিতীপ বাবুর সঙ্গে তার আর-একবার সাক্ষাৎ হলেও **इट** भारत ।

99

मटम अथम यात्र मान्या हमें दस र छ क्मनात ভাই অরুণ। কমলা গাড়ীতে বদে আছে, मडीरनंत्र मूर्य এই कथा खरन करून जानर म

এতই অধীব হয়ে পড়্ল যে সে ছুটে গিয়ে ভার मिनित काष्ट्र या तक्र जारान, जारक भागानव প্রকাপ ছাড়া আর কিছু বলা চলে না; কেননা দে-সব কথার ভিতর কোনবাপ শাথুনি, কোন क्रिश वैधि । विशेष क्रिय कर भव वाला-মেলো বকুনির ভিতা থেকে সালা ও কমা। · हे (या) कथा है। उद्याप कवरण (य मयण्ड रगान, हूटक शिरारक, नान मूथूरगात कान थव भट्फट्ट — श्राव शंद्र कमना ' द्वारना स्हाम ना ८५८व दगवमशालव, धार्णन मिखित, करवन ख कारून काल वाखित्र अभारन अ म (ने)रहर है। निर्फाषा कमना তाদে । দোষেই পথে দাঁড়িয়েছে এই জ্ঞান হওয়া লাগ নৈত্ৰমগাশয় ও মিভির महामग्न উভয়ে वि विमाल वृक्ति दिन শে.ল। উপণ্ডিত ক্ষেত্রে কিংকতবা কিছুই স্থির কর্তে লা পেরে তারা অরুণ ও হরেনেব পরামর্শ মত চলতে স্বাক্ত হালন। এরা कदश्रक । এवा बद्ध निर्दर्शक्रण (य कमरा घडेक मां " আব কাবও কাডে আশ্রয় পা গার তার কোনই मखावना हिन ना। यासूष यथन ५ ८० भएड़ पूर्व মরবার ভয় পায় ভখন সে হাতের গোড়ায় यारक भाग ভাকে ধবে বাঁচতে চেন্তা করে। তার চীৎকার কর্ত্তে-কর্তে কনগার হাত ধরে হিচভে টেনে কমলাকে কিভাশের সেই ঘবে গালে হাত निय-नाम ছिल्लिस ।

कात्र कात्रकारमय भिनान हरत राजा। देनय- धार्यन कि कत्रद्य क्रित कत्रद्य ?" मार्थीम

একটা ভেত্তে-ষাওয়া পরিবার **হ্বর্কিপাকে** रिषर्वत क्रभाव व्यावात रयमन हिल रङमनि **ख**ि दिश कांग्रगा ८म ८मङ्थाटन । वसानूम वरम ८मन। থালি তার বাহবে রয়ে গেল একমাত্র কিতীল। विमादमादमादम्य (क्या (वारक क्रिड) भ যে সরে পডেছিল অনেকক্ষণ কেউ ভা লক্ষ্যত य दश नि । ८ मथ छ। भिष्ठित्य हा भन्न ६ द्वन दक मिरन भि भौभादक ८७६क भौठारनन । किन्छोभ এলে ठाँक मध्याधन करव धार्यान गाख्य अस डा करन नगरमन-"। पश्न कि डी मनातु, श्र विनारिव कांग आनवा "उन्ह क्न्द्राह मण्जूर्व बाम्रा।"

किलोन (३८म उडर कर्तल-"जाननारभन **5ार्ट्ड द्वांथ क्य द्वांभ माग्री व्यागवा "ह्यूर** कृदावाण। व्यापि योग क्यमादक नागांत्र ना दल कैं।भभाषात्म (भी एक मिकूम ছজনে তাঁদের এথানে নিয়ে এসে উপত্তিত তাহলে এই ছোটখাটো ট্রাঞ্জেটি মোটেই

य'न बाबाइ जो ना कर्य बारक डाइरल ८। এ क्यान এ ३ मडा (य ८वर्ड आब ক্ষিতাশের হাবস্থ হবে, কেননা, ক্ষিতাশ চাড়া তার প্রাতশাদ কবলেন। ক্ষিতাশ অপ্রতেও ভাবে নীবব হয়ে রই। ৮েখে হরেন বললে— "য ঘটেছে তার জন্ত দায়া তুমি - নয়, আমিও अहे ; पात्रो जाभारत्य इंड्डांशा मगा**ड**ा" मडील वनल — "माय नगां जित्र । त्यां या जागां पत्र भन्न काक्न "(भाष এएमरक, भिष्म এएमरक" वर्षा अज्ञात्यत । कामवा त्यावनरक उन्न कवि काव खोल्गाकरक विश्वाम कांत्रस्म "

भटारमंत्र क कणा खरन वूरधात्री रक कि निया निया जुनाल- यथान जान नेकरन मान कर नन साथ द्वारमा जाजान निर्मन ना वंतर ७ प्यारमाठना ठापा प्रवात ज्ञ्य त्यारगन " শ্রিকারাব ভিতর দিয়ে কমলার সঙ্গে মিত্তিবসতীশকে জেজাসা করলেন-"বাবাজী,

वम्दन-"लाज ताजिदमरे नामो जना नित्र जानि। जात शत जात काटक विमात **E4** 1"

"(তামার মাকে" অথবরটা জানিয়ে যাবে কমলা হেলে বল্লে—" कि डोभवावूत न। १"

"কমলা একবার তার মার সলে দেখা না।"

व्यामि श्राटम त्यर् भात्त मा। व्यामात मनीत- मग्राड रार्गम। एधु जक्षम धरत तम्हण त्य यन এउটা व्यवमञ्ज इत्य भएफ्ट् य व्यामि त्म जात्र विवित्र महक वास्त्री गार्वह-गार्व। ज्ञथन किङ्गितित क्र क्र विश्वाम हाहे; म् ज्र क्र कार्त्रा विस्थय काथि इसना। स्थ्य

একট্ अট্কা লাগল। किस छात्रा कमलात महाभग्न । हत्त्वन ताखित्तत गाफ़ीटि वाफ़ी প্রতি যে বাবহার করেছেন তারপর কনলার কিরে যাবে। ইচ্ছার বিক্লে তাকে জোর করে কিছু কিতীশ সেদিন তার অতিথিদের জগু যে করাবার অধিকার তাঁরা যে হারিয়েছেন । সে জ্ঞান তাঁদের জন্মছিল; তাই তাঁরা কমলার কথার কোনো প্রতিবাদ না করে গম্ভার হয়ে बहेदनन ।

এই নীরবভার ভিতর সকলেই একটু व्यामाशि त्याथ कत्र का नानत्वन त्मर्थ कमला व्यावात्र वन्दन-

"তবে সত্য কথা বলি। এই ক'দিলের चिनात्र जामात्र मत्नत्र ८ए नम्म इरम्रट्ड छाट्छ व्यामि व्यात बीठात भाषी रूप थाक्ट भारत না এরপর আমি যে স্থানতা চাই তা েশে গেলে আমি পাবনা।"

नित्म कृषि गटको हता (यद्या।"

वाफीटड वर्शन वाम करत्रकि जात এक निमंड "आणनात्रा कानार्वन, बाजि वगरम आगत्र थाका উচিত नत्र। खरमहि रमवागरमञ् ভিনি বিশ্বাস কর্বেন না।" অভিথি ছ-রান্তিরের বেশি আশ্রয় পায়

करत बार्य ना ?" कमना वन्द्र "এ याजा नम्। এथन दिवात छिटी वृषा उथन जान श्रेष्ठादिहे अक्दन বিশ্রাম আমি দেশে পাবনা।" कथों । अत्म कमनात अक्रजनामत्र मत्म गाफीटक कूटन निरम्न रेमजमहाणम्, मिख

> মধ্যাহ্ন ভোজনের বাবস্থ। করেছিল ভাকে বিবীহের ভোজ বশ্লেও অত্যুক্তি হয় না।

व्याद्वातारक कमना, देमजमहालम् । विज-মহাশয় খুমুতে গেলেন। কিতীশ আর मठोन मार्चा (थनाटक यमरना, इरतन ७ काकन कारमत्र तथना तमथ्रक मात्रमा किहीम मिं एक कार्ट्स वाबित भन्न वाबि स्ट्रित (मन्द्री धारे यान (थमा (इए मिरम रम, जात रमभान भाषा धरतरह जाहे रम मन मिरम एथन्टज পারতে না। এতকণে প্রায় সংস্কা হয়ে करमट्ड एमट्स मजीम किजीमवावूटक बाम बाकाटङ अञ्चरनाथ कत्ररमा । टम अञ्चरनाथ এর উত্তরে মৈত্র মহাশার বললোন,— রক্ষা কর্তে কিতাশ কিছুতেই রাজে হল না। "(वण जाकरण ज्यारमरे जात र्मिन रथरक रम जान्ड जाकरक जात वालि वाकरव माकि-या । ट्यामान मार्क अभारमहे ज्यामन। स्टन, जान श्राकित किरन भएरन अबु जान

তুর্বজভার পরিচয় দেবার সাহস কিভাশের ८१८१ ছिन मा।

রাভির নটার সকলে মিলে হাওড়া ষ্টেলনে গিয়ে সতীশ, কমলা ও অরুণকে পাড়ীতে তুলে দিলেন। গাড়ী ছেড়ে গেলে रेगद्धमरागम, मिळमरागम ७ इरतम এकि ট্রেক্সীতে চড়ে সেয়ালদহ অভিমুখে রওনা হলেন। ষ্টেশনে একা পড়ে রইল ক্ষিতীশ। কেননা শৃশুগৃহে ফেরবার দিকে তাব মোটেই লোভ ছিল না। হঠাৎ কিতাশের মনে হল ষে, এ পৃথিবীতে সে নিতান্তই একা। এই कथा मान करत जान कि-त्रकम এको। जन সে নিজের মোটবে চডে কলকাতা সহরের এক প্রাপ্ত থেকে আর এক প্রাপ্তে ছুটে বেড়াতে লাগল—যেন সে নিজের কাছ **८**थिटक भागाचात्र ८० हो कत्रहा

ক্রমে ভার জ্ঞান হল যে, একটা কোন काक शांक ना नित्न तम ध शृथियोष्ट भिष्टा মিছি গুধু ছুটে বেড়াবে—তাতে তার মনের व्यमाखि वाष्ट्र वहे कमरव ना। किन्द कि कथनत श्रोकात करव नि। কাজ সে হাতে নেবে তা ভেবে কিছুতেই

टिएथित क्ल !-- जास्तरकत्र मिर्न निर्वत्र क्रिक कत्र भारत्न मे। ट्रिनमा के जिलू ह जीवरन ८७ (कारना कांक्ट्रे करब्रनि, धवर दकारना ७ काक कन्नवात कि भक्ति, कि श्रव्हि किहूरे অর্জন করে নি। তার কাছে এই সত্য ক্রন্থে স্পষ্ট 'হয়ে উঠল যে, নিতান্তই সে অকর্ষণ্য এবং তার সমগ্র শিকাদীকা তাকে আদর্শ নিক্ষা পুরুষ করে তুলেছে।

> যথন এই সত্য তার কাছে আর বিন্দুমাত্র গোপন থাকল না তথন তাব কালে এল—"মহাত্মা গান্ধিকি জয়।" সে मूथ कित्रिष (पथरन এक भाग ऋरनत (ছरन जे जग्रभानि कन्न् एक-कन्न् भाव दिए बाखा मिरम करनार ।

এই জয়ধানি শোনবামাত্র ক্ষিতাশ মোট-রের ভিতবেই লাফিয়ে উঠে বল্লে—"Thank God! আমার উপযুক্ত কাজ পেথেছে। आमि कामहे कलाब त्थाक नाम कांदिर नन् ्रका जनादबंधाव करव्र याव।²² , वना वाह्ना (म कत्रत्व ७ छ है, दकनना दकारना विषय निरम्ब इच्छा प्रमन कत्रवात कष्ट किछोन ष्मणाविध

मगा थ

बी श्रमण को धुत्री।

वाङ्वा (वट्ण!

मिबिन दात्व जुम्म जर्क, बाम-वर्कांगरक, आम विशक, षि भारत कार्या नाहिक मका, क्रगादबाछ। बादब-बादब,

श्वाम (त्रर्श कब्र---श्राद (त्र व्यक्ष ! वरगरह कि छाथ् स्ट्रांन वरना।, শ্রাম ভত পাড়ে গালি ও মন্দ, (बरक दबरक मारव मारव । জনশ: ব্যাপার হোলো সঙ্গীন,
ভটার উভরে সার্টে আছিন,
হাঁ হাঁ করে এসে ধরিল নবীন
ভিনিকে ভুহাত দিয়ে;
নইলে সে দিন মাথা কাট্রকাটি
হোভো এক চোট অভি পরিপাটি,
বাজনৈতিক কথা কাটা-কাটি
চোডভো চরমে গিয়ে।

রাম বলে—ছাড়ো। ওটা পাপিষ্ঠ, কী বোঝে দেশের ইন্টানিষ্ট। জ্ঞাথো দিল মোরে অভি অশিন্ট ভাষায় কিরূপ গালি। কহিল সে পুনঃ ফু সিয়া ক্লষিয়া, নাকে কিঞ্ছিৎ নস্ত ঠুসিয়া, "গুড়াভাম মাথা উহার ঘুসিয়া ভূমি বাধা দিলে খালি।

বলে কিনা নেতা সব বাটো চোর,
বাদ থালি যান যত গুধু ওঁর
গান্ধি চিত্ত নেক !
এই বে অর্দ্ধ-শতান্দী ধরে
দাড়ি পাঁকাইল দেশ দেশ করে
ছাইল কীর্ত্তি ভ্রন ভিতরে
চারনা হইতে পেক,

এত বড় ওটা পাৰও বোৰ

भित्र यक्का-मध्यत्र योत्र . मात्र यहरूस बीत्र शकीत्र . भारेण य भण मिल-मञ्जीत सङ्ग जिल्ला किरम, ভাবে অপমান ভাবে কিনা হেলা করে বেইমান গুলু-মারা চেলা এক কোট মিলে একজারী মেলা লেগেছে পিছনে কিংএ!

আরাম-কেনারা নিয়ে পিঠে ঠেস
অনেশ-উদ্ধার কলনা বেশ—
ভাবিরা দেখেছ এই কংগ্রেশ
কাহার হাতের গড়া ?
রাজনৈতিক ফুটবল-থেলা—
প্রথম সে বলে মারিল কে ঠেলা
থেরাল থবর নেই ভার বেলা
কথা আছে চড়া চড়া।"

কালো কুচ্কুচে চিকণ চন্ম
ছাইল বিন্দু বিন্দু বর্ম
মৃছিয়া রুমালে কহিল—"ধন্ম
একটা, তবুও আছে;
গগনে চন্দ্র ভারকা স্থ্য
উঠচে এখনো নবীন বুঝ চো
নক্ষার শেমো পূজ্যাপ্রা
কিছুই নাহি বাছে!

নহিশে ধরেছে মন্তিজ্য়
বলে নেতাদের কিসের জন্ত
ভীমর্মথি আর কত কি অন্ত
বা আসে মুখে তা কয়!
শুনে অলে ওঠে সর্ব্য অজ
শুপথ করিয়া উহার সঞ্চ
ভাতিলাম আজি এ পণ ভঙ্গ
ভীবন থাকিতে নয়!

দল বেঁধে দেশে ছশো ছস্মন্
বলে—স্বরাজের গোড়া-পত্তন
কর্তেই হবে, বিলাতী শাসন
অতি হীন অতি হেয়;
অত এব ছাড় কলেজ থৈতাব
ঘোরাও চরকা পোড়াও কেডাব
দাও করে আড়ি রেখো নাকো ভাব
ইংরেজ সাথে কেহ।

এইরূপে যদি পাকি স্বভন্ত অপিয়া দেশের ইষ্ট মন্ত্র ছদিনে ব্রিটীশ শাসন যন্ত্র

অচল বেকল হবে,—
ভাষা ভাইয়া বগলে
সাগবেম পার যাবে ওরা চলে
স্বরাজ আসিবে মোদের দ্বলে
ভাবনা আর না রবে।

মূর্থ উছারা বোঝেনাক কর্
চিরকাল দাস মোরা—ওরা প্রাক্ ওরা আছে তাই বাঁচোয়াটা তবু এথনো মোদের আছে;

নইলে ছিন্নজিন্ন আহত উলোট-পালোট থাইত নিম্নত কাঞ্ডারীহীন তর্ণীর মত

ष्यकुण माश्रम मास्य।

এ রকম করে যদি একযারী
মনিব উহারা ওদের ক্যাপাই
সৈন্য শান্ত্রী পাহারা সেপাই
পিছনে ছাড়িয়া দেবে;

ভথন কে আসি করিবে রকে .
সসের ফুল হেরিবে চক্ষে
নয়নের ধারা বহিবে বক্ষে
িস কথা দেখেছ ভেবে ?

থুসা হয়ে তাই যা পাও তা নাও
সদা উহাদের জয় গাল গাও
দেখেছ কথনো ভিথিয়ী কোথাও
কাড়া কি আকাড়া বাছে ?
মণ্টেগু তবু সয়েস বালাম
দিয়েছে মোদের ছাটা ও মোলাম
আমাদের মত নিমকহারাম
আর কি কোথাও আছে ?

কৈমন মোদের হাঙলা শ্বভাব
কিছুতেই আর ঘোচে না অভাব
গৈলিক্ছ বেহারে করিল নবাব
বাদসা বিলেভবাসী;
তবুও মোদের গেল না ছঃথ
হার বেইমান হার রে মুর্থ
মুখ ভার-ভার মেজাজ রুক্ষ
লালচ বিশ্বগ্রাসী।

অন্নবন্ত অগ্নিমৃল্যে

বিদ্ধান্ত নাত্ৰ কথা ভূলে

কোপল পাঠান যুগে

বিজ্গীর আলো জল্তো না রেতে

গ্রেণে ও মোটরে চড়তে না পেতে

অন্ধ্রে-বিস্থে ঠার মারা বেতে

হাতুড়ের হাতে ভূপো!

মোট কথা এই তাদের আমলে তথ কি শাস্তি ছিল না আসলৈ অত্যাচার ও পীড়নে সকলে

হাড়-ভাজা-ভাজা হোতো।
আপিসে চাকরী করিয়া এইন
স্থথে শাস্তিতে রয়েছি কেমন
অস্তিম কালে আধা-পেন্সন্
পাই তই চাবি শত।

মিছে গোলমাল কর হৈ চৈ
সবুরে ফল্বে মেওয়া নিশ্চয়ই
এথন আমড়া আমড়াই সই
কামড়া-কামড়ি ছেডে।"
হইল রামের বক্ত তা শেষ

হহল রামের বক্ত তা শেষ কেহ 'এনকোর' কেহ বলে 'বেশ' কেহ বা ভাকিয়া দিয়ে পিঠে ঠেদ বলিশ বাহবা বেডে।

এত শুনি শ্রাম উঠিল জ্বলিয়া বলিল ত্কান দিতেম মলিয়া নেহাৎ গুরুব আদেশ বলিয়া

চূপ করে শুধু রই;
রেমোরে কেয়াব করিনে টাপেন্স
মটো আমাদের নন্-ভাওলেন্স
নচেৎ উহাব এক ননসেন্স
কান পেতে আমি সই ?

রাজ্য জুড়িয়া প্রেভের নৃত্য চলেছে এই যে নিভ্য নিভ্য দেখিয়া শুনিয়া যাহার চিত্ত

किश नाहिक रह,

ধিক সে ভাহার জীবনে ঘুপ্ত নাই নিস্তার মরণ ভিন্ন সদেশের ভালে কালিমা চিচ্চ সম-সে লাগিয়া রয়।"

কিঞ্চিৎ কাল নীয়ব থাকিয়া
টানিয়া কোলেতে লইল তাকিয়া
সজোবে ছটান চুকট চাথিয়া
কহিল আবাব ফিরে—
"আর্যা গবিমা প্রাচীন কাঁতি
সে মহামাহমা অতুল দাঁথি
ভূলিয়া আমরা দাশু বৃত্তি
কলম্ব বহি শিরে,

বসনে ভূষণে সাজেসজ্জার করেছে প্রবেশ হাড়ে-মজ্জার দাসত্বপনা মরি অ**জ্ঞা**র

হায়ু মা ভারত-ভূমি। নাহিক আত্ম-সম্মান জ্ঞান করে বিদেশীব স্কৃতিগুণগান কেমন করিয়া হেন সম্ভান

বক্ষে বহিছ ভূমি ?

সৈক্ত-শান্ত্রী পাহারা সেপাই লালমুথে মাগো মোরা না ভরাই অন্তরে যদি, সাক্ষাৎ পাই

শক্তিরূপিণী ভোরে!

হিমালয় সম অচল অটল বক্ষ প্রসারি সম্ভান দল নেব লুফে যভ গোলা গুলি বল গোল ফোসের' জোরে ম্বণা শক্ত শোণিত-সিক্ত করিব না বাহ্য কলুম-লিপ্ত মার থেয়ে মোরা রহিব ভূপ্ত মারিব না তবু কভূ

(बाल-धाना भाभ हहेल भूर्व भक्ष-बम इट्य धार्भनि हूर्व कक्षन विहास भाभ ७ भूगा जुनिसास विह्न थेष्ट्र।"

জবং থামিয়া কঠিল সে পুনঃ
"বলিভেছি কথা মন দিয়া শুন
সব জবোর দর তিন-শুণো
না খাইয়া লোকে মরে,
পাঁচ সিকে ক'রে পোনা মাছ সের
সাত টাকা জোডা দাম কাপডের
অথচ বাড়তি নেই মাইনের

माालिया घरव घरत्र ,

গোরালিনী এত তথে ঢালে জল
গৃহিণী করিছে নিয়ত কোঁদল
মোদ্ধ-আনিটা এমনি প্রবল
মানে নাক কেউ জাতি;
ছেলেশুলো সব বেজার বেরাজা
সাত চিৎকারে দের নাকো সাড়া
বেজিয়ে বেড়ার এ পাড়া ও পাড়া
টো টো করে দিন-রাতই

थाकिएक ठावना जाव निक शारम महरत्र जामिया ठएक द्वीरम शारम मिरनमा जावना थिरवेटीत नारम किस्ताव जारम कन ; কচি ছেলেরাও নাহি রয় থির চুল ছিড়ে দেয় কোলে উঠে ঝিব ব্রিটীশ-শাসনশোষন-নীতির

-- এই সমস্ত ফ ।

ছোকরারা আর পায়ে নাছি হাঁটে আট আনা থরচে চুল দাডি ছাটে কজিতে তারা হাত-যড়ি আঁটে এমনি বিশাসীপনা,

মেরেরাও হায় এমনিই বাবু
কুটিতে পারে না কুমড়ো অলাবু
জানেনা রাধিতে বালি কি সাবু
ঘরে দিতে আলপনা;

রাধুনী চাকরে সব থায় লুটে পয়সায় আনে ছ-গণ্ডা ঘুঁটে তকু তারা ধদি একটুও উঠে •

একবার-থানি চায়।

শর-সংসার শ্রীকীন মলিন

কয় না এমন দিনকের দিন
কেরাসিন তেল পুবো একটিন

তিন দিনে নাহি যায়।

এই বিলাসীতা এই বাবুয়ানী
ক্রপোর বদলে নিকেল গুয়ানি
মামলা, মড়ক, পথে রাহাক্রানি
পরাধীনতার ফল।
দেশেতে পড়েছে শনির দৃষ্টি
থেজুরেব রলে নেই লে মিষ্টি
আকাশে সময়ে হয় না বিষ্টি

जानमद्भ रुष कन ;

ट्हाटि पद्माद्य उटक्त यात ভূকের প্রতি হোলো অবিচার দিতে প্ৰাভিশোধ নিভে প্ৰভীকাব চরকা কিনিয়া লাগো; गाउ-कोजिल ना शाहे व कि স্থাদেশের তরে পাত কর দেহ দেশবাসী প্রতি যদি থাকে ক্ষেত্র ঘুমাও না আর জাগো

व्यर्थार धन्न वर्ष्णन-नौकि हेश्दब माप्य दियानाटका श्रीि গাও স্বরাজের বন্দন'-গাঁড সকল কন্ম ছেছে।" হটল গ্রামের বক্তা শেষ . (कर 'अन्रकात' (कर वरण '(वन' **दकर वा जाकिया शिक्ष किएय छिन्** यनिन 'वाञ्चा (वर्ष ।' अर्थिक त्रणधन ठए देश भाषात्र ।

চয়ন

नाम निम्

व्याक्षकामकाव काव (कान मारि-एमनी डाँएमवर यक्ता मर्फ वार्यन তেমনটি পারেনান।

नि**धारम्य व्यार्थिक मा**न्नाम् ७३ त्राच्या • বিশ্বদাহিত্যে স্থানলাভ করেছিল। সাহিত্য-সেবায় টাকাও তিনি এত রোজগার করেছেন (य, व्यत्नक धनकूरवरत्रत्र ভाগোও তা घटि ना। কিছুদিন আগে কয়েক লক্ষ টাকার লোভ प्रिंश डाँक आर्मित्रकांत्र वक्कुं । प्रवात জন্মে আহ্বান করা হয়। কিন্তু দার্নসিও সে আহ্বান অগ্রাহ্ ক'রে জবাব দেন, "তোমরা यउ টाका जामाम त्मर्य यत्मह, जार्ड আমার তামাক থাবার ধরচই কুলিয়ে উঠ্বে ना ।"

कवाव श्वान व्यान कर्न कर्न करते, किन कथा छला ठिक माम नांम उरहे छे न या भी र्रिक्ट । कात्रन, त्य-त्थानीत्र त्नाक विकारनत

একহাতেই অসি আর মসা নিয়ে ইভালীর বিয়েতে লাথটাকা থরচ বরতে পিছপাও कवि-(याद्या नाम्र नाम ९ व्यमन नाम किटनएइन, नन, नाम्र निम्ब हि हिट्ड व विक्रिक है। ठिक अवाहन्य अञ्चि व्यानक कविने विनामी



मान्नु निम छ

ছিলেন বটে, কিন্তু দার নদিও তাঁদের উপরেও টেকা মেরেছেন। সাহিত্যক্ষেত্রে, রণক্ষেত্রে এবং বাজিগত জীবনক্ষেত্রে,—দার নদিওর্ক অপূর্বাত্ব সর্বাত্ত কি, তার এই অপূর্বাত্বের মাত্রা আবাব সময়ে সময়ে এতটা অভিরিক্ত হয়ে ওঠে যে, তাতে আগুরিকভাব চেয়ে অভিনয়ের ক্রতিমতাই বেশী ব'লে সন্দেহ হয়!

প্রথমে তার সাজশোষাকের কথাই ধরুন।
তিনি নিজের সুথেই মেনেছিলেন বে, লগৈরের
আগে তার গলাবন্ধ ছিল একশো বাহারোটি,
নানা আদর্শের বিভিন্ন পোষাকের 'স্থট'
বাহান্তরটি, দন্তানা বাহান্তব-জোড়া, দিনের
কামিজ বাহান্তরটি,বাতেব কামিজ আটচল্লিশটি,
রুমাল ছইশো চাল্লশথানা আর ক্ষুতা চল্লিশ
জোড়া। যুদ্ধের পরে তার পোষাকের সংখ্যা
বোধ হয় অসংখা হয়ে উঠেছে। তাহ তিনি
যখন-তখন জাক দেখিয়ে বলেন, "আমার
মতন সাজ্বর জার কোন লেখকের নেই।"

দাল্ল নিও যে পোষাক প'রে কবিতা লিখতে বসেন, সেটি অমূল্য বল্লেও চলে। দে পোষাকটির আগোগোড়া শক্ষা-চুমকিব কাজ করা!

তাঁর কাব্যের মত জীবনও প্রেম-বিলাসে
ভরা,—সম্রাপ্ত বরের অনেক স্থলরীর সঙ্গে
তার প্রেমের কাহিনা ইভালির পথে-ঘাটে
প্রচলিত আছে। কিন্তু অনৃষ্টের অভিশাপে
তাঁর স্থলর চেহারায় একটি মন্তবড় খুঁৎ হয়ে
গেছে। তাঁর মাধায় এখন একটি নির্দিয়
টাকের সঞ্চার হয়েছে। অনেক মহিলা-ভক্ত
কবির, স্থাত-চিক্ত রাথবার অস্তে টুকিটাকি
জিনিব, হাতের লেখা প্রভৃতি চেয়ে পাঠান।

এ-পব জিনি খুসি মনেই শেন, কিন্তু মাথা ছ-এক গাঢ়ি চুল চাইলেই তিনি ভারি চটে যান। গত যুদ্ধের সময়ে তাঁর একটি চোপদ নাকি কাণা হয়ে গেছে!

তাঁর থাক্থেয়া লিরও অনেক গল আছে।

একবার ছলভ একটি গোলাপফুল চয়ন
করবার জত্যে, ইতালী থেকে জলপথে তিনি
স্থার সাইপ্রাস দ্বাপে যেতেও কুন্তিত হন নি।

ণাল্লসিওর একটি পোষা লালমাছ ছিল। ভাকে এক হোটেলওয়ালার জিম্মায় রেখে किनटक अकवात विरम्दल व्यक्त इरम्रिका। विष्म ८५८क जिनि धवत ८१८मन ८ए, छोत्र লালমাছটি ম'রে গেছে। তিনি তথনি টেলি-গ্রামে ভকুম দিলেন যে, লালমাছটিকে যেন थून घड़े। क'रन कनन (मुख्या इस्र। (मुडेमरक সমাধি-শিলার উপরে লিখে রাথবার অভ্য তিনি একটি কাবতা রচনা ক'রেও পাঠালেন। কিন্ত দেই তকুম পেয়ে কোটেল্ওয়ালা মহা . ভাবনায় প'ড়ে গেৰা। কাবণ মরা লালমাছটাকে त्म (कत्म क्रियाहिन। পাছে काम निमंत টের পান, সেই ভয়ে সে ভাড়াভাড়ি ভথনি वाकांत्र (शरक अकछ। नामभाष्ट्र किरन अरन, ७१८क है (यदत कवव मिला। मान्नमिश ফিরে এসে নিজেব মাছ মনে ক'বে সেই কেনা লাশমাছের কবর দেখুতে গেলেন এবং মৃত আত্মার প্রতি সম্মান দেখাবার জন্মে টুপী थुरण, याथा (रुँछे क'रत्र नोत्ररव मांफ़िरत्र ब्रहेरमन !

একটি অভিনেত্রীকে মাদের পর মাদ ধ'রে নিয়মিত আধার-বিহারের দারা নিজৈর দেহ- দাঁত তুল্বে না, বটে! দাঁত তোলা তো ८क-८महरे उत्राम स्मृटक स्टब्रिंग!

मां । इन ना। त्रहे कृषिकी हि ते अखिता । भगास छे । एक क्ला वाकि इत्संहन, तम खारण कन्द्रण, मान्न्नित्र छाटक वन्द्रणन, थवत प्रित्र तार्था कि ?" "जागारक नाम्दान अकि। मांड ज़्ला रक्ताड अल-वड़ पृष्टारस्त के मिन्दानका काँ। **स्ट्र**ा

वनावाङ्गा, व्यक्तिवो তাতে व्राक्ति श्रकाम भाषान। श्लां ना।

माम्निम अ दब्दन है । इद्य वस्तान, "का । कृष्ट कर्णा, जामात्र नाहेटक जूमिकात्र डेभरवात्री আর-একথানি নাটকের একটি 'চরিত্রে'র হ্বার জন্তে, এক অভিনেত্রী-ভার একটি চোখ

• দাত পুল্তে আগ্রহ দেখেয়েছিল কিনা, তা

সভা অসভাতা

माक्षरभाषात्कत्र ভाব ছিল এদেশের তুলনায় কারণ নেই। (5त (वेगा। युरत्राभ नी ७ श्रधान (तन, कारकहे किन्नु कारानद त्रामानित अवन रमधान

বিশাভী সমাজে মামুষের দেহে এভাদন সেধানে বস্ত্রবাফল্য দেখে বিশ্নিত হ্বার কোন



"ৰল দেখি আমার গায়ে কি ?"

এতদুর বেডে উঠেছে যে, বিলাতী মহিলা- তাঁদেব পা এখন স্বছ্ন মোজার আবৃত (१) यान, डींबाई व्याककान डिफ्टममाटलंब मरका द्वरण नीटिव मिरक नाम्रहा ध्यमन गव माक्ट भाषां क व्याम्मानि कर्व एकन, नी हिवा शिला क कथा व्याम शास ना । काल्ड हैं कात्र मान्ट वाथा।



আঁকা গয়না

ममारक मञ्जानतम ७ स्कृति ठाँ छ। त त्नहे इत्य "आववर्णत" नामत्रका माज कत्रह, वन्दा अवाकि कर्व ना। क्रकामित नथ चान् वा क्रिके थाएँ। क्रम जिन्द्रिक जिल्ह, পদ দেখে যে कान्डिव ञ्चनशैद्रो लब्जाय मृद्धा आत्र शास्त्रव कामा वृक-পিঠকে একেবারে নগ

यात्र क एक अग्रामित প্রবাদ-বিখ্যাত "গওয়ার কিন্তু স্বাধীন গারও একটা সামা তো নিদিপ্ত ष्यारक। कारअंड युरब्रारमं भिष्ठे (मारक्रा

> এই निम ज्ज यरथध्य । हादत्र निक्रफ खनम आপত्रि পুলেছেন এবং ডাক্তাররাও वन्छिन (ब, এই नीख-প্রধান দেশে এমন পোষাক স্বাস্থ্যের পক্ষেত্ত মারাত্মক। क्य छेटक छ। मामत्वय বহার তাঁদের আপত্তি, যুক্তি ও বিপ্ততি গডকুটোৰ भूजन (७८भ या८५)।

বিল্বাতের লডের ঘরেব গুৰভী মেয়েও এখন त्रभागदम गाः एछ। इत्य नाहर्ल कान भाष इस ना এवर नग्न ७ का भाका भक ছট-হ**লিড**-বইশ নৃতাও (यात्र मान्स मोनस्यात्र कानई मल्लक (नहें) (य আজকাল অভ্যন্ত বেড়ে উঠেছে, विलाजी काशब-পত্ৰেব আন্দোলন প্রতিবাদ দেখে তা স্পষ্ট (वावा याटक् ।

একজন বিশেষক্ত পণ্ডিত

ইতিহাস থেকে অনেক উদাহরণ তুলে কিন্তু এ-সব ঐতিহাসিক প্রমাণের কথা मिथिय्याह्म या, शृथिवीरङ यथिन काम छीयन थाक्—जामरम व्याभावते। य वफ्टे कमर्या, সমর উপস্থিত হর্মেছে, যুদ্ধের অব্যহিত পরে তাতে আর কোনই স্মেছ নেই। তথনি সমাজের মধ্যে এম্নি অশ্লীলতা, কুরুচি রোম থেকে থবর এসেছে, সেখানে খালি ও লাম্পটা আত্ম-প্রকাশ করে। তার মুবতীরা নয়—সত্র-আশী বছরের বৃড়ীরা মতে, যুরোপীয় সমাজের বুর্তমান অধোগতির পর্যান্ত বুক নগ্ন রেখে পোষাক পর্তে স্থক্ প্রধান কারণও তাই।

श्रमार्गंत्र माहार्या (मिथ्रिस्ट्न (य, यथनि (कान অতি-উন্নত ও সভা জাতির মধ্যে এম্নি স্ব इनीं ७ वां छाद्रत नकन क्टोह, ज्यन তার পতন হয়েছে।



পৃষ্ঠ-পটে চিত্র-পত্র

क'दब जित्बद्धन। जृंशको এकवात वस्त्र वौजदम्ख वरहे!

> वागत्रा এখানে একেলে পোষাকের অপেকা-क्रिं मिं निम्ना निमाम। लका कब्दल म र रवन, এक शांन ছ विष्ठ मर्न क्ष আকর্যণের জন্তে, আছড় পিঠের ওপরে একটি পতঙ্গও আকা রয়েছে।

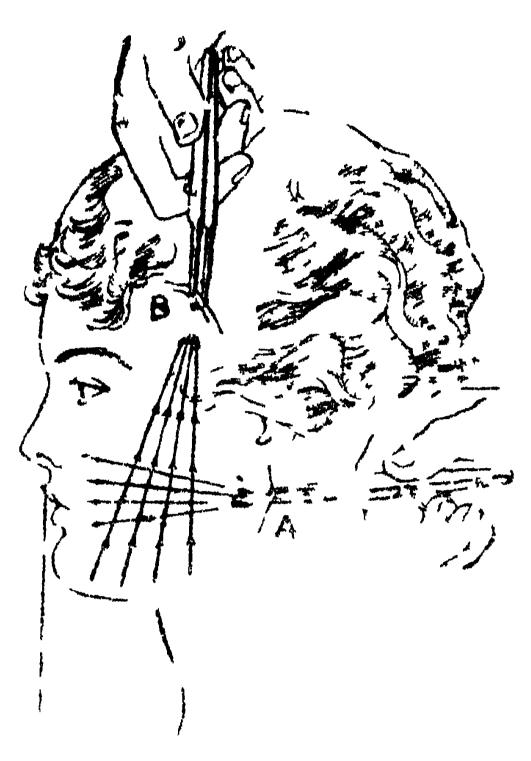
আর-একখানি ছবিতে নৃতন ফ্যাসনের मधा । कि कि विकि विका विका कि विक णिथिত यूवजीत कछित्र, वाल्त ७ भारमन **गम**रह গহনাই আসল नग्न, नकन পোনারও নয়—একেবারে, হাতের তুলিতে পাকা!

किन्छ नवाहरक छिका स्मरत्रह्म के स्मरत्रह — शिर्ठ यात बिखामात हिरू। डिनि खे हिन्न बाजा श्रज्ञ करत्रहरू—"यल स्विश आंभाज शास्त्र कि ?"—(मध्य योता खवाव मिट्ड शावदवन ना, छात्रा टकटन बाथून,—ध युवजीत शास्त्र कांभाका १५ या (पथा शास्त्र, जा वास्त्रिक नम्, काझनिक—वर्षाए, जिबकदत्रत्र कुनिएक तः मित्र काका। । वैत्राहे विनाट्डित ज्यमहिना এবং এঁরাই এদেশে এসে ভারতবাসীর নম্পদ (स्ट्थं नाष्क्रांत्र ष्यां १८कं ७८५न ।

চির্যোবনের প্রথম ধাপ

रेवळानिक डिकिৎमुकद्रा ज्यानक मिन (थटक इ माकूरमद (भी नन क आप्री वाथवाद অন্তে চেষ্টা করছেন। সংপ্রাত কেউ কেউ मार्थी करवर इन त्य, जारमञ्ज तिष्ठी प्र त्योवनरक সব উপায়ের দ্বারা যৌনন যথার্থই স্থায়ী হয় কিনা, ভার চাকুষ পরিচয় পেতে দেরি मार्ग।

কিন্ধ এবারে একদল ভাস চিকিৎসক কেবলমাত্র অন্ত পদ্মোগের দারা বুড়াকে यथार्थर हु ७१ क'रत जूलर७ (পরেছেন। माञ्चर नाक, कर्णान, 6ित्व ७ (6) आन প্রভাতর উপবে বা আন্দেপাশে যে-সব বাল রেথা পড়ে, তার জভ্রেহ মানুষকে gc 51 অন্তর্কিৎসকরা যন্ত্রের ८मचात्र। হাবা मूर्य क्र-भव (याना माश्म (हेरन ध'रब, हाब पिटमें ८कटि ए। नाम पिटका छात्राज ক্ষতের জোড় এমন স্থন্যর কার্যায় সেলার ক'রে দেওয়া হচ্চে যে, অস্তাঘাতের চিজ Cगारिंग Cवाका राय ना । अन्य श्री द्यार्थित समय यञ्जां ३ ३४ नी-कांत्रण एयरधर एए गुथ मां फ्रिय्र किंक नवयुव ौत्र मछन।



कत्र । भरत्र (कार्ट कार्टन) वक ८०८न वत्रा क्रिक

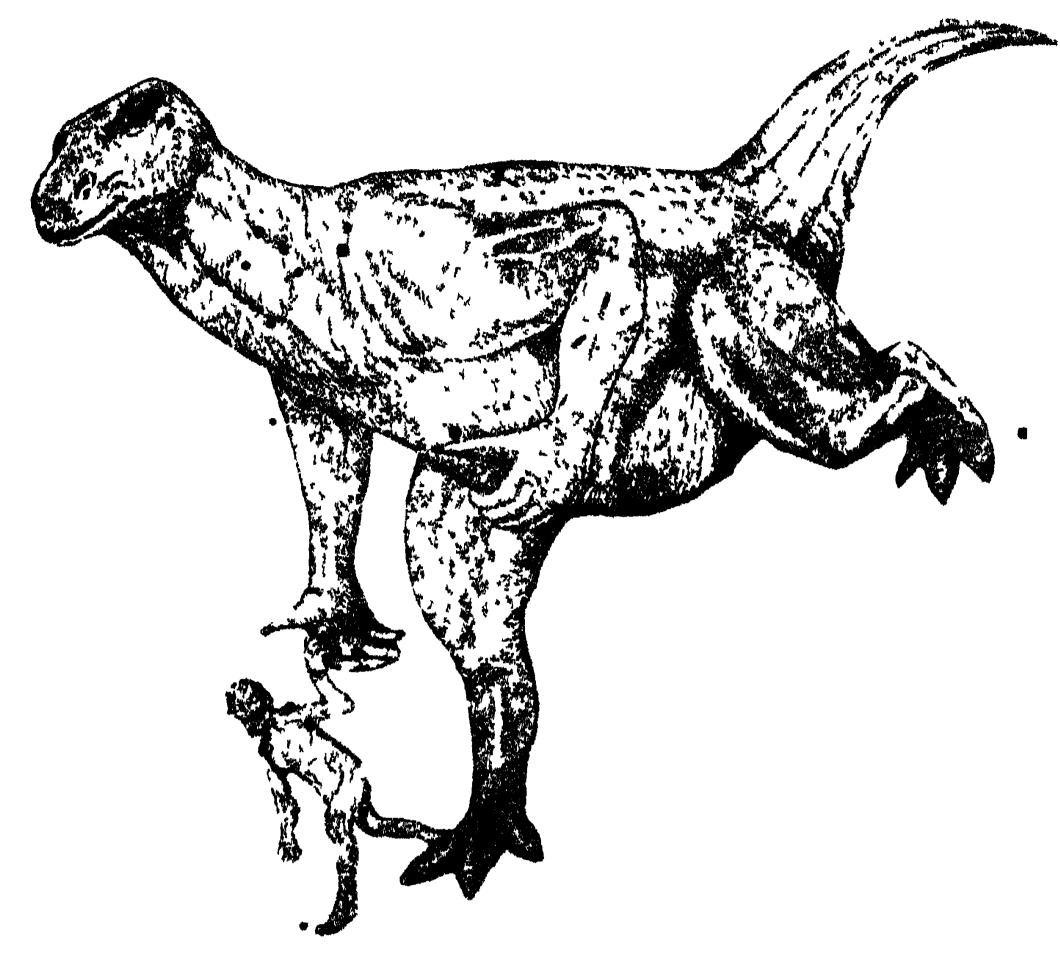
७ थन अमाफ श्रेष शास्त्र । এই न अन उभारम ভাটা-পড়া যোবনে আবার জোয়ার বওয়াবার कत्य विनाचा (मर्प्रदा चात्र (कप्प पर्वेट) है। करण मश्राहशातिक चार्रा यात्रा हिन (श्रोदह्र मजन (मथर७, আक ভাদেব (bহাবা कर्य

সেকালের দানব

क्रिक्यांत्र व्यान्य मान्यत्व क्या श्रहा बाब,—ভবে বৈজ্ঞানিকরা এতদিন ভাদের অভিত প্রমাণ করতে পাবেন ন। কিন্তু दिन किशारमञ्ज এक हि य बना व भनिएक, ১०७৮ क्कामावरमय भा अम्रा ८गटि, यात्रा ८वै। ८

পাক্লে পৃথিবী আজ মান্তধের দখলে আস্ভ ना ।

এই দানবের নাম ডাইনোসর হপ্তয়ানোডন। এরা উচুতে ছিল কুডি ফুট। এদের বাহু, হাও, क्षे नीति मिकालिय अपन छोषन मानत्वय आहुन ७ बूट्ध-आहुन किছूत्रहे अछाव ছिन না। এ হাভঙ্গো প্রায় মাগুবের মডনই



ञ्द्रात्नाडन ३ जाम यानव

(मग्र ७। । । वा भाग्रखंद मनम क्रमास्य जिन । भार्ष ४५ ए०, उत्र क्रें ४१ व, नार्डि ७ भन्न क-वान মাইল বেগে ছুট্তে পাবত।

বিশেষত্ব ভার হাতের বুডো-আন্ত লে। হাবাট মত ভারত ল্যাঞ্ একাদন অদুশ্য হয়ে ধেত। স্পেন্সার বলেছেন, হাতের বুডো-আড্লের তথন তার কাছে কিছুতেই মান্ত্র টিক্তে পারণাও দেখেত মান্তবের ক্মোল্লাতব পাব্যাল পার্ভ না। টিক্লেন্ত, আমাদেব সকলকে क्यों इर्यर्फ जात हार्डिय वावहारवन बाबा धनः (हार्डा—व्यक्तिमान ७ क्रिका कीव व'रम स्थांड़ा বুডো-আঙুল না থাক্লে ভার হাত অকেজো रक्ष थाक्छ।

হণ্ডয়ানোডন ধনি হাতের বড়ো আভ্লোর

मिरम का है । এस्तर शारम किन्रों के रेन धवर जे शाव्छ। करण आं अवां छ में निम्म আড়েল ছিল। ারা মনিটে অহতে এক- অহুসারে, তার এই প্রার-মান্ধুয়ের-মত হাতেব (आर्द आक अभिश्वितेव यरमा (अष्ठे क्रीव करम এই नव-व्याविष्ठ अख्यात्नाप्रत्नेत्र व्याप्तम मांष्ठा । क्रमाः चार्षित स्वाप्त गान्यस्य वुसा याथ्र। कावन, माञ्च कोवन-मरशास्म कथ्र र खग्नात्माष्ट्रत्य बाह्य वीक्षा थाक्र ও কুকুর আজ যেমন মান্তবের ছারে বাঁখা আছে।

কিন্তু ভাগো ইগুরানোডন তার ভাতের সদাবহার কব্ত, তবে কালে সে নিশ্চয় বুড়ো-আঙ্ল ব্যব্ধার করতে শেখে নি!

তरि তার বুড়ো-আঙ্ল ক্মে অকেলো ও आफ्टे करत्र अर्पाक्षा करण कीवन-यूक्त यासूर्यत्र (ठानात्रा (पश्या दशाला। इश्या-(वनीमिन (वैटि व्यञ्छिश-मक्ष्य्यत व्यात्म्) नाएमिव व्याप्त व्याप्त (मिड (कार्षि ইগুয়ানোডনের পতন হয়। মান্ত্র বড মানে বংসর পরে পুণিবাঙে এই-জাভীয় মান্ত্র मात्न (वैंटि (श्रष्ट्)

আদিম ছবিতে *ইগুয়ানোড়নের* ও বিচরণ কর্ত।

श्रमाम ताग्र।

ত্রা

(বিশ্ব)

অবাক চোধে-গোমাব মুগে চাহিয়া আছি পের, তে লালাময় বিশ্ব নহা, প্রবলভম বার। स्नीय ভोम मृत्य ३८ - शर्दान' दुवि' 'ठान भनात काँहै, ज्रांत्र नाम जाकृति ज्ञाकान कुटिएक वर्ग-कौरन त्यार बारणांकि ग्रा-ग्रा লক্ষ প্রাণ বংক্ষ ভুলি' মাণ্যা স্থ্র ছব।

(कोवन)

(म मोमा-भारण जुनन कारभ, काशिष्ट क ७ भाग, সে প্রাণমাঝে বিশ্ব নিভি করিছে গতি দান। श्रुत्य सूर्य प्रत्य ध्राय विश्वन चारना फून, ধবার জীবে জাবন একি চপল, বিভীয়ণ। আর্ত্তি, ভাঙা, অন্ধ মাঝে বিকাশি শভ রূপ জীবন জাগে প্রণয়ে প্রেফে গরিমাময় ভূপ!

(पाष्ट्रम)

विश्वभारता कृवन-वृष्टक कौरन-भाषावाद, ভাহারি' পরে মানব দোলে চেউর সম থার। ভাঙিয়া পড়ে, উঠিয়া চলে পাগল আগুয়ান, কিরণে ক্ষণে বিভাসি' উঠি' মরণে কবসান। বিশ্ব-নিতি জুবনে জুড়ি' জীবনে ছুটে যায়, জাবন নিভি মাহুষে লয়ে ধেলিছে মহিমায়।

उधी भाषी साहन स्मन्धक्ष ।

मकलन

বর্ত্তমানৈর সমস্থা

काम वाश्विद्यंत काशर अस्म विषया हिम्सान का नशा वन्यूक कामान महेबा जारवन (जारन ।य (ठनार्ट्स) भात्राभाति भाव्या कता । जिल्लाहरू । ७ मदाल १० है इ क्टिंद्यत माम्यन प्रिक्टिक्ट । कि छ माञ्चायत की स्टाद ভার স্বন্দাবে ভার সংস্কারে যে ভাসন উইয়াছে সেইটাহ यामन किनिय, व्यात महेणात मिटकहे मात्रमाधावर्णत नजर जामता भाग का-या वितान । া সুযের वाक्यां विक धन्त्र बिल्या त्य मन किनिय विवास वास्या থাসিয়াছি বাদের সম্বন্ধে মনে কব্রিয়াচি ভাহার। সনাতন गांबक्र अपियांकरतो किंक (मन मन जिल्हिक) विभन जलभन किया फिरियाटक मा अन है। आखन लिका व पिरनन व्ययान थान । नमाटलन नामूर्यन काक वारत हो। । यित्रात्र होनाहोनि भाष्यार वा म्रजा । होति । सामा नामा । जिस य भा मया कि टार्य भा दा ना छ तान नाक्षां नार । वन्नां प्राप्त त्य त्य विश्वास्त्य का नां भूष य गर आश्रमीय वालगा (वास करव ना दवन, श्राहा शाष्ट्र मानूरस्त्र आदि युव्हें तृष्ट इंडेन ना (कन (बान जिनियरकर उभन अहे। निश्म मन प्राचिया भागिया मछप्रा तुष्किभाष्यत वास इहराना। जांच विश्वकन । जिन्दित फेलदब्छ । वर्गादबन्न । व्यानाक द्यानि । इक्टब, माध्या हा था (भायतक इक्टब कामाय मार्क व अवानि, मुका व ७ थानि। न जुवा शास्त्र मा (भग ना এইজন্ম চোখ বুলেয়া প্ৰান্তন পার্রচতকে মাকাড়া। (य स्विमा स्रोकिट्न ६५%। क्रिया विभारमध्य इन्छ । म । एक्टिन भाषरव ना। बर्द्धांत्र स्त्रिमा भन्नेकाम भीता (मवीदक एडीर्न रहर ० हहेर्य। ५ छोडा भाव छलाग्र नाया

में में में एक व काउ श्रींडन ड कि वाचा बन है। म॰कांत्र इटेट उटक विवाह। इडेटब्राट्स इडिम्स्स् ने अध **छित्रांटह विवाद कि এउই व्यद्माञ्जनीय वज्ञाय किनिय १**

শিহ্রিয়া উঠিলে চলিলে न।। সমসার সংখীন হইতে হছতে, मन्त्रा हार्व आंत्राहना कांत्रश निर्म्ट भीमाःमा करिए इड्रेट्स। भारतवर्ष क मग्रांत भन्न वश्न । व्यास्मिनाङ। এथान्न उन्नेजन्ति दन्था मित्रांट्स এङ उन्जदक अवावीजनभूक जनकृषि। विवास्क योग मिरमक bcल कि ना लाश नग्न खान करेगांट **याथीन** क्ष्यां [†] १व। इ. क्ष्म हिंदियामात्र भारत विवाह आश्रीयस्कात्मत्र मिलग्रा विसाद जारभका जान वि न। भूताउदनक पिक कर्ट के बना कहता भारक पुतक प्तकीत । श्रामन विवाह बालविक भट्य इकेटकट्ट काट्यव विवाह, याधीन अध्यात्र विवार कराउट मध्याताद्वय विवास्। अख्य ব্যায়ান গুরুজনেরা চার্নিদক দেখিয়া অনিয়া স্বভাষ ार वालका मन स्थायन उन्न क्रिया, (य लाज । भागोत 'नल वडान्या (एन गर्शक क्टर्ड भार्य,--अस्त १ (विभी । मा । कार्य नाइ। व । इत्यात महावना आहर । । भर्म भिल बाजरयाहर । छालवामात नाटम यायोगकारव रम रिव रमण मागरकत्र साह, क्र मिर्न्ह का । अ यात्र, भटत न्या वश्च इस स्थात न त्र व्यक्तिल । * फ Carry (यमन मान्य ने कलड़, विवादलक्षन (divor () (भन । य स्विद्ध क उत्तर स्वाद्ध १ न न न न न सम विष त्लन, साधाननात ।।।। यहा यहा छ। मुला थाएए, ठडेक ना काम, ३५क ना कानिएकत्र ८ नाइ विश्व महा आयान याथीन हार राष्ट्र। भवाबीन-जात्व अक्षलात्व किक भाषा धना गत्थका साधीनगांत्व पू । भाष हमान थानक काल कारण वर्शान बादक অন্তরাস্থান জাগরণ আব ওখানে অন্তরাস্থার মৃত্যু, এখানে को रान्त्र ठांकना जांत्र उशास महत्वत्र भाष्टि। ভারপর নিজের পাওয়া ও দেওয়া ভাত বাসাটা কাম আর भरत्रत्र शांट भाष्या ଓ मण्डा किनियहोय कार नाई धेरे गो एक वीलार भारत ? छुट्टि खाकांना खारहमा এটি ছাড়া মামুৰের স্ভাতা, তাহার শিক্ষা-দাক্ষা-কি , জীবাক বে একসক্ষে করিয়া দেওয়া হয়, সেখানে ভ

व्यथरम कुर्रेष्ठि भन्नी तरक, भन्नीरतत अञ्चलक भूमारक এक-नात्थ कविश्रा दिख्या इडेशाटक व्याप्तित मत्नित्र मिल ज काना खनात्र कत्म त्य प्रकृष्टि कीय अक मात्य इंडेटड চায় সেখানে অন্ততঃ জ্ঞানতরক্ষের মিল भरन ४ ९ क्षको मिला। नजुरा क्षक मध्य १३८० छ। छ। उ छोड़िर्व (वन १ তারপর দাস্পত্য কলহ—দেটা আমাদের পরিবারে এ ১২ কি ১ল ভ জিনিয়াণ ইদ (ब्राप्ट्रा निवास क्रिया क्राप्ट्रिया व्यक्ति क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क किन्न जामात्मत्र ममात्म (महे। वाश्य इहेवात अथ ना भारेग लिखात **ভि**डात बाङ्ग । लियार भारा क কাহাবো চক্ষে পদে নাহ প

आंगारम्य रमरम विवास्त वास्तित्र । क्रिनिय नयः পটি সমাজ গড় জিনিষ। অগাৎ আমি বিবাহ বাব আমার জন্ম নয বিশু আমার পরিবারেব ক্যু, আমার भाशीम खळानत क्या. म्याप्त्र स्था। ণ্ জনাহ इक्ष्मार। यामा विवारण व वावका । वारमव मार्थ नार्थ মানুষের স্বাভশ্লটো বাদিধা যায়, ভাল গামাদের यात् अधीन मह स्वातीन रुक्ता मुख्यात आर्थर श्रव ও মেরেকে বাশিষা দেওখা হয়, । রবারের সমাজের जाता (अशा + प्रभावाश शिष्या याशाय केरमत यात्र अव সবিষা যায় পুথৰ অভিত আর না থাকে, পারবাবেব नगरिक्त विश्वा धारवरादि विकोज्ञ क्रांस्य । পুরুষের १ क काला ता । अवकान गृहाल वा महा भएतत भाष कार्य अन्य नया छान रूर्गाव मार्रा त्यायाक भावत कांत्रक क्या, क्याति घरन कांश्राक गरिया भितियो (जेशरिय केर्रिया अज्यात केन्स) यह केडेटल चान्या कार्या. यांच्या किया। इत्रहांम र वांव नमा (पढ़ों हरन ना। निक्तं निक्तं क्रिक्रं क्रिक्रं यि श्राक्त करन करन एवं या गुनो शरू कावर ने भारत ेशांट जारम, ममांटब निग्धनां। नमांट भागि, मुचाना, क्यारका दाश्याद क्या नमास्क यामार कीवत्व मांशीहिक भाग्य किया एगा कथार्थक वरतत्र ८५१थन विद्याधन, वत्रशक्ष कनात्र ८५१थन वर হাদমের অন্তরাস্থার মিলের সম্বর্ধ কি ? ব্যক্তির "নজেব রাশ টানিয়া না ধরে তবে সহজেই বিগড়াইয়া যায়।

(धर्गा नमार्जन स्विधान कारक, ना नमारजन मजरलन वारक्षेत्र वर्ग, वाहे वा विन मिरव এ कान कथा १ ममाख वड़ न। वाङि वड १ वाङिक थर्व कविशिष्ट कि मगाएक नीवृद्धि १ উভয়ের সামগুল্ঞ নাহ 🕈 वाष्टि ও ममष्ट्री मचना, बाष्ट्रिय मार्थी कि माग्निय कि, आव मम्बेतर ना पावि वि १ पानि कि--- এই শোঘার ভব লইয়া গোলমাল, ইহাও আন্ধকালকার বুগের ৭ক। মস্ত সমগা। আমবা ১ছের মধ্যে यार्ट ना उत्व अकादास्त्र একরকম ইহারই এবটা উদাহবাণর কথা বলিব। क्यांটা সমাজ **'क्रिय 'अ नातीत मधक।**

আল কালবার সমাল পুল্যের নমাল বলিলেও अञ्चारिक करा न। ममारक नांत्रीय यांचीन यज्ज जान नाहे, াহার ধর্ম কর্ম সমল্ফ পুরুষের সেবায় পুরুষের হব-श्वांवध डेभना वत छना निक्रि । । । श्रायोन महोव कोव यिष (कर्के शास्त करव (म श्राय) नावो (यन ५,कार्यक्र छ ६ धनमञ्लाखित अखा छ । नावश्रा का ७ वालान एक (अरम्बा भिकान दिनिय, तीवनकारा पश्चित । किनिय आहे नुक्षताटन पुरुवत्र जिन्ति। अय-• भी कि: व ।। श्रुक्तिशः (आन शक्ति • । शाक्ति। जात्र मानानक अरा प्रकाल Des 21165 कर्त होत्रामा अध्याका ५० ।। आर्ट्स् योना। विश्वान कावटड्न ना गाभारित मान रुप स्थानितित स्थान छ। सामानित नमाठ श्वकाल्य ग्व । एवा मह मठक । हता। भटगण्यत कि । ते ये ८ धिन्छ यटनरावेन्द्र । ए से की वी গালাদিগাবে ত্ৰবলহ ভুচ্চ তাচিছলা কৰা ১৯১, भ्रम कथा कवश वना । (कर ८म भर यार्ग करा रहेगाटि वा क्या हम स्था (यन अरनकेंद्री भयान मान , त्यरगरमन निष्करमन मानित रकारत नग्र। पखरा वला माइँएक পारत (भरवता (स अकस्यात त्यामा नग भात कात्रन जारमत यहाव। नात्रीत यकाव कर्जरक श्रुकायन आभारत श्रुक्रयरक स्निया छला, न्याकाता হইতেচে অবলা জাতি (well er sen), কাহাকে ৭ না ভর করিয়া দাঁচাইডে পারে না আর তাদের সভাবের গুণ—কিন্তু কুলশীল স্বভাব চরিত্র এ স্বলের সাথে মধে। মনেক থাবাপ জিনিষ আছে, পুরুষ যদি তার

बिलीय कथा, बाजरखाय योगा इन्हेंग्य नांत्रीरक बाजजा উচিত দেওৱা नग्न, मभारकत कथ्यान-करवा। कात्रन भारतता स्ट्रेटिए परतत लच्ची। जाहारक किस कित्रा পরিবারের সমাজের দানা বাঁধিয়া উঠিয়াছে। মুলে, খন্নে কেন্দ্রে যদি স্বাভন্তা দেওয়া হয়, মেয়েয়া বদি বৈরচারিণী হয় তবে পরিবার বঁলেয়া কিছু খাকে না, সমাজ ভালিবা চুরমার ভটরা যায়। পুরুষেয় পক্ষে সাধীনতা স্বাতস্থ্য, স্বেচ্ছাচার, এমন কি উচ্চ ্ডা-লতা অনেক সহ্য করা যায-তাতে সমাজের বিশেষ किছू जारम यांग्र ना-- शुक्ररमत्र कात्रयात्र त्य चाठितत्रत खन्द कड़ेगा: किन्छ त्यरसम्ब यरमा एक ब्राह्म জনিলে যে সমাজের ভিতরে প্রাণের মধ্যে মিগন-গ্রন্থীতে একেবারে ঘুণ ধরিতে আরম্ভ করে। এখন প্রস্থা, মেযেরা যে স্বাতন্ত্রোন যোগ্যা নয়, বা হউতে পারে নাই সেণা বাণ্ডবিক পক্ষে তার জন্মগত সভাবের भारवद्भ कल ना प्रधु मः सारवद्भ अन्त्रारमञ्जू कल १ । अकिता विर्मय वावकात्र मरशा शिष्या, এकिটा विरमय भिन्ना-দীক্ষার ফলে নারীয় গভাব অধর্ম এইরক্ষ হইয়া উঠিয়াছে, কিন্তু এইটিই ভার স্নাত্তন ধর্ম্ম—এষ পশ্ম: সনাতন: – তাই কে বলিতে পারেণ অফুরকম वावका, अञ्चत्रका भिका-शोकात कटन नातीत धर्य-कर्य অন্যরক্ষও ১২০ে পারেনাং আর তা যাদ সম্ভব हर उत्त, नात्रोत चाउत्सात पूर्व माधीनछात मधा कियाक সমাজ বা পরিবার আর একরকম ব্যবস্থায় প্রাবস্থা-তেই গাঁড়য়। উঠিতে পারে নাণ কিন্তু বাস্তবিক যদি क्टल कान ख्वावका नाई इय, उवछ ज़िल्हामा कता बाग्न ममारक्षत्र कि व्यथिकात्र व्यास्क त्य এको। विरागय অঙ্গের উপরু সে অনাায় অভাচার করিতে পারে ? পাছে উচ্ছ ছালতা হয় বলিয়া স্বাধীনতা পাত্সাটুকু इट्रेंट नात्री विद्धिष्ठ हरेरव क्निश ममास्क्रित मस्या व्याधि बिणया, नावी इहैयाछि विणया कि निस्मत केच्हा জিনিবটিকে সমূলে নিশ্ম ল করিতে ছটবে ? সমাজের क्षि जिन्न के जिन्म निर्वीया महनाइक कतिया वाशिक नमारक कुनुबन्दिनाहिएक भाव, भावि भावित পার, কিন্ত জীবন পাইখে, পুষ্টি বৃদ্ধি পাইবে ?

धर्मात्म कथा छेठित्व, छट्य ह्रांख म्बर्ड त्रकम भिका । जामाधित महन इत्र व्यामन मङ्ग्री अहे त्रकरमद

নেই রকম দীকা—শুধু স্বাধীনতা স্বাভন্তা বলিয়া **होरकात्र कतिरल इहेर्य मा, जात्र रमहस्र**नाहे खाहीन ব্যবস্থাকারও বলিয়া গিয়াছেন পুত্রের মন্ত কন্যাকেও অতি যত্নের সহিত শিক্ষা দিবে। নৃতন আর আময়া কি বলিলাম ? নুডন জিনিষ এই প্রাচীন শিকা মেয়েদের দাসত্ব জিনিষ্টাকেই ভাল করিয়া মুচারার্যপে করিতে শিপাইত, কেবল এই দাস্তকে ঢাকিয়া রাখিতে চেন্না করা হইত বড় বড় কথা **নিয়া**— यशा (मर्गा, यारशांष्मणी, विनम्न, सब्दा। किन्न नुस्न শিক্ষার একাই इইবে আন্ন প্রতিষ্ঠা, নিজেকে জানা, সাধীনভাকেশীনভার ভিতরের ভগবানকে কুটিয়া উরিতে দেওয়া। শিক্ষা আগে পরে স্বাধীনতা, একথা সভ্য इटेंटि शादा; किस এत চেমেও বড मडा इडेक्टफ, আণে সাধীনতা পরে শিক্ষা। স্বাধীনতার ভিতর দিয়া की रण भिका कृष्टियां है रहे।

কিন্ত অপর পক্ষ বলিতে পারে, নারীর অবস্থা त्य मबाटक अ तकम हरेगाएक, दम त्य क्रांम शेरियाएक, त्य ধর্ম-কন্ম অনুসরণ করিতেছে, এটা কি তথুই বাহির **হইতে আরোপ, শুধুই পুরুষের কার্যাঞি ? সমাজ** বুকি করিয়া কোন্ দিন এবক্স অত্যাচার আরম্ভ कांत्रल? वला याग्र नां कि, नांत्रीत अ त्रक्म वावष्टांत भञ्जून व्यन्नमा ७ हिन, ८० वत व्यन्नमा नत्र, १३ हिन मा बाइ ছিল তার পভাবের আনন্দ, নতুবা ও রকম ব্যবস্থা वारिनो छिर्भन इंक ट्यमन कवियो, स्टिन स्मान यूर्भ यूर्ण किंक क्र १ क्ष्र जीवन्ना व चावर हिलाम वामिन কেমন করিয়া ? একটা সভ্যের উপর প্রতিচিত না হ**ইলে** राषु माया राषु मिया। राषु जुपार्तित उपत्र अउ वड জিনিষ্টা গড়িয়া উঠিয়াছে / পুক্ষ গেমন পা**ধীন স্বভন্ত** इडेटड हाय, जाशनात वाङ्गिष्य कृष्टिशि जू लिएड वा.स. नातील कि ठिक दनमनि ठाश १ এ চাওয়াটা यनि नातीत সঙা হইত তবে ভাহা কি সমাজে, সমাজের ব্যবস্থার भारता कृष्टिया উठित्र । १ ममास्ति। श्रुक्तवत ममास रहेल (कन? नात्री পुরুষের ছায়া হইয়া থাকিতেই 'চায়, खरीम रखगढीर नावीत यांधीन रेका, अर्ज्ञर कि अप्र ?

প্রাচীন কালে এক সময়ে সমাজের গতি অনুসায়ে একটা आंशर्म कृषिशाहिल-मृश-शर्यात्र वर्ण शूरूव ७ नात्रीत উভয়েই এক একটা দত্যে প্রতিষ্ঠিত হইয়া আপন গার্থকতা পাইয়াছিল, সমাজকে একটা বিশেষ বিধি-ব্যবস্থা দিয়া সার্থক করিয়া ভূলিয়াছিল। সীতা-সাবিতীর যুগে নারী व्यापम वाक्तिकरक स्थान्यात्र पुरुष्यत्र वाक्तिरकत्र मर्थः ডুবাইয়া দিরাছিল, ভাহার অন্তরাতা আপনাকে নিঃশেযে **। जिन्न मिन्ना, शूक्रायम अख्यात्राएक हे उ**र्गाहरू क्रिया চলিত। নারী ছিল দাতা পুরুষ ছিল গ্রহীতা। পুরুষ ছাড়া আপনার ভিন্ন-অন্তিত্ব নারী উপলবি করে নাই, করিতে চায় নাই, তার কোন প্রয়োজনও অনুভব করে नाइ। (महेंचिंडे महे युर्भव किल धर्य। (कन এই त्रकथ धर्फ व्येष, ममाख्यत विवर्डरनत क त्रकम खरत অথবা মানবাত্মার কোন্ প্রেরণাকে কোন্ সভ্যকে প্রকাশ করিবার জন্ত, সে কুট-সমস্তা আমরা प्यारमाठना कत्रिय ना। एथ विनव, उपनकात पिरन পুরুষের ও নারীর সম্বন্ধ ছিল ভাহাদেরই ভিতরের একটা জীবন্ত আছর্ল, একটা সভ্য ধশ্মের ফল; সমাজের ব্যবস্থাও দিল সেইটিকেই ফলাইয়া ধরিবার कछ मङीव कांग्रेग। शद्य किछ म जानग मध्य লোপ পাইতে লাগিল, সমাজের ব্যবস্থাটা কিন্তু জেমনি कोटे बहिन: ए: ७१२ नव, अख्यान आपर्निटिक ধর্মটিকে বাঁথিয়া রাখিবার জগ্র সে ব্যবস্থাকে আগও বিশদ করিয়া খুটীনাটিভে ভরিয়া কঠোর করিয়া তোলা হইতে লাগিল। প্রথমে বে সম্বন্ধটা ছিল সহক

ও আনন্দপূর্ণ, পরে তাছা হইল শুধু অজ্ঞাসের, কর্জবার।
প্রথমে নাণী যে জিনিবঁটা দিত কেলের সানন্দে, পুরবত
লইত পূজাব দান রূপে, পরে পুরুষ লইতে আরম্ভ করিল
দাবিরূপে, নারীও দিতে আরম্ভ করিল অজ্ঞানের
সংস্কারের কলে। কেন এ-রকম হইল গে প্রমা ভূলিবার
প্রয়োজন নীই, কিন্তু এজিনিবটি যে স্বাস্থ্যকর নর, পুরুষ
ও নারীর জন্ত, সম্প্রের জনা যে ইহার পরিবর্তন চাই,
শুধু ভাই নয় আব একটা সত্য আর একটা ধর্ম আর
একটা আদর্শ যে পুরাতন জীর্ণ কাঠাম ভালিরা ফ্রিমা
উঠিতেতে ভারাই আমাদের বৃষ্ধিবার দেখিবার জিনিব।

দেটা হহতেছে পুরুষের বাজিছের উদোধন, সেই
সঙ্গে নারীরও ব্যক্তিছেরউটে ঘাধন। পুরুষের ছারা নাত্র
হইয়া নারী যে সভ্যকে পরিপূর্ণ কারয়াছে, ভাহা অভীজের
কথা। ভবিষ্যতের কথা, নারী পাইবে আপনার কায়া,
ফেলিবে আপনার ছায়া। পুরুষের সম্পর্ক ছাডাও
নারীর যে আছে একটা নিজ্ম সভ্যা— মাই কি । ভার
পরিক্ষ রণ বর্জমান যুগের একটা প্রধান সমস্তা। এই
সমস্তা সমাজকে পূর্ব করিতে হইবে, প্রুষকেও সে
বিষয়ে সাহাত্য করিতে হইবে। প্রাচীন ব্যবস্থা
উন্টাইতে গেলে সমাজে একটা বিষম পোলমাল হইবে,
ওলট-পালট ভাজাতুরা হইয়া ঘাইবে, পুরুষ ভার সনাতন
অনেক স্থেব অধিকার হইতে বিচ্যুত হইবে—এ সব
কারণ দেখাইয়া শান্তি ফ্রিকে চরম আদর্শ করিয়া থাকা
বুদ্ধিমানের কাজ হইবে না, সম্বেপরও হইবে না।

नात्रायन कार्यन, ১७२१। जीननिनोकार ७८।

Marie .

मगादलाइना

স্নাচার শিক্ষা।— শ্রীযুক্ত কামী নয়ানন্দ প্রনিত। শ্রীভারতধর্মমহামওলের শাল্তপ্রকাশ বিভাগ ভারা প্রকাশিত। কলিকাতা কাওয়ান আট ক্লেল মুদ্রিত। মূল্য চয় ঝানা। এই ক্লুল গ্রন্থে হেন্দুশাল্রাম্থ-মোদিত আদর্শান্ত্বারী আচার-বাবহানে, নিয়মাবলী সংগৃহীত হইয়াছে, কোন্ সময়ে শ্যাভ্যাগ করিতে হয়, শ্যাভ্যাগের পর শারীরিক ও মান্সিক কুল্যাদি গুরু

জন ও ভাই ভগিনীর প্রতি কেমন আচরণ করিতে হয়, আহারের নিয়ম ও খাল্যাখাল্য বিচার ব্যায়ামচর্কা প্রভৃতির বে আলোচনা করা হইরাছে, তাহা অনুশীলন-যোগা। এখনকার্মাননে এই নিরমণ্ডলি কতটা পালন করা বাইতে পারে, সে বিষয়ে মতভেদ থাকিলেও বাঁহারা গোঁড়ামি রক্ষা করিতে চান, ভাঁহারা এই গ্রন্থ হুইতে জনেক উপকার পাইবেন।

শ্ৰীসভাত্ৰত শৰ্মা।